Managing Editor
Shreechand Rampuria.
Director :
Āgama and Sahitya Publication Dept.
JAIN VISHWA BHARATI, LADNUN

V S 2031
Kārtic Krishnā 13
2500th Nirvana Day

Pages 1150

Rs 90/-

Published by the kind munifience of the members of the family of Sri Jaichand Lal Surajmal Gouti (Sardar Shahar) in sacred memory of Birdhichandji Gouti and Madan Chandji Gouti

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है उस माली का जो अपने हाथों से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमों का शोध-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगें। संकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूँ, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। संक्षेप में वह संविभाग इस प्रकार है—

संपादक :		**मुनि नथमल**
	सहयोगी :	मुनि दुलहराज
पाठ-संशोधन :	"	मुनि सुदर्शन
	"	मुनि मधुकर
	"	मुनि हीरालाल

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनने इस गुरुतर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

आचार्य तुलसी

समर्पण

पुट्ठो वि पण्णा-पुरिसो सुदक्खो,
आणा-पहाणो जणि जस्स निच्चं।
सच्चप्पओगे पवरासयस्स,
भिक्खुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं॥

जिसका प्रज्ञा-पुरुष पुष्ट पटु,
होकर भी आगम-प्रधान था।
सत्य-योग में प्रवर चित्त था,
उसी भिक्षु को विमल भाव से।

विलोडियं आगमदुद्धमेव,
लद्धं सुलद्धं णवणीयमच्छं।
सज्झाय - सज्झाण - रयस्स निच्चं,
जयस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं॥

जिसने आगम-दोहन कर कर,
पाया प्रवर प्रचुर नवनीत।
श्रुत-सद्ध्यान लीन चिर चिन्तन,
जयाचार्य को विमल भाव से।

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल संघ में मेरे मन में।
हेतुभूत श्रुत - सम्पादन में,
कालुगणी को विमल भाव से।

ग्रन्थानुक्रम

परिशिष्ट

और 'उ' का भेद करना कठिन होता है। यही कारण है कि आधुनिक प्रतियो मे बहुलतया 'ओ' के स्थान मे 'उ' मिलता है। जो प्रतिया भाषाविद् लिपिकारो द्वारा लिखी गई, उनमे 'ओकार' मिलता है, किन्तु जो केवल लिपिको द्वारा लिखी गई, उनमे 'ओकार' के स्थान मे 'उकार' हो गया। 'ओवामतरे' और 'उवामतरे' यह पाठ-भेद भी उक्त कारण मे ही हुआ है। देखे—सूत्र १।३६२ (पृ० ६६), सूत्र १।४४४ (पृ० ७७)।

८।२४२ सूत्र मे 'छेत्तेहिं' पाठ है। लिपिभेद होते-होते 'चित्तेहिं', 'छत्तेहिं', 'चित्तेहिं'—इस प्रकार अनेक पाठ बन गए। ८।३०१ मे 'तदा' के स्थान पर 'तहा' पाठ हो गया।

कुछ प्रतियो मे सक्षिप्त वाचना है। वृत्तिकार को भी सक्षिप्त वाचना प्राप्त हुई थी इसलिए उन्होंने लिखा कि अन्ययूथिक वक्तव्यता स्वय उच्चारणीय है। ग्रन्थ के बडा होने के भय से वह लिखी नही गई। वृत्तिकार ने वृत्ति मे सक्षिप्त पाठ को पूर्ण किया। कुछ लिपिको ने वृत्ति के पाठ को मूल मे लिखा और पूर्ण पाठ की वाचना सक्षिप्त पाठ की वाचना से भिन्न हो गई।

कुछ आदर्शो मे सक्षिप्त और विस्तृत—दोनो वाचनाओ का मिश्रण मिलता है। सूत्र २।४७ (पृ० ८८) मे 'खदया पुच्छा' यह सक्षिप्त पाठ है। किसी लिपिकार ने प्रति के हासिये (Margin) मे अपनी जानकारी के लिए इसका पूरा पाठ लिख दिया और उसकी प्रतिलिपियो मे सक्षिप्त और विस्तृत—दोनो पाठ मूल मे लिख दिए गए, देखे—५।१२२ सूत्र का पादटिप्पण (पृ० २०६), २।११८ सूत्र का प्रथम पादटिप्पण (पृ० ११२)। ११।५६ मे पूरा पाठ और 'जहा ओवाइए' यह सक्षिप्त पाठ—दोनो साथ-साथ लिखे हुए है। असोच्चा केवली के प्रकरण मे भी ऐसा ही मिलता है। कुछ प्रतियो मे वृत्ति मे उद्धृत पाठ का समावेश हुआ है, देखे—२।७५ सूत्र का दूसरा पादटिप्पण (पृ० ९९)। कही-कही वृत्तिकार द्वारा किया हुआ वैकल्पिक अर्थ भी उत्तरवर्ती प्रतियो मे मूल पाठ के रूप मे स्वीकृत हो गया, देखें—५।५१ सूत्र का प्रथम पादटिप्पण (पृ० १९४)।

पाठ-संशोधन मे दूसरे आगमो के पाठो को भी आधार माना जाता है। २।९४ सूत्र मे '[illegible]' इस पाठ के अनन्तर सभी प्रतियो मे 'वहूहि सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं' यह पाठ है। वहा इसकी अर्थ-सगति नही होने के कारण वृत्तिकार को '[illegible]' यह लिखना पडा, किन्तु ओवाइय और रायपसेणइय सूत्र को देखने से पता चलता है कि उक्त पाठ प्रतियो मे जहा लिखित है वहा नही होना चाहिए। उक्त दोनो सूत्रो के आधार पर आलोच्य पाठ का क्रम इस प्रकार बनता है—'ओसह-भेसज्जेण पडिलाभेमाणा वहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति।'

[illegible]।१ सूत्र मे सभी आदर्शो मे '[illegible] जाव केवल' पाठ लिखित है, किन्तु यहा 'जाव' का कोई प्रयोजन नही है। भगवती ८।२१३ तथा प्रज्ञापना के प्रथम पद के आधार पर 'जाव' के स्थान पर '[illegible]' पाठ स्वीकृत होता है।

पाठो के स्थान पर भी 'जाव' पद लिखा हुआ मिलता है। इस प्रकार के पाठ-सक्षेप लिपिकारों द्वारा समय-समय पर किए हुए प्रतीत होते है।

वर्तमान मे प्रस्तुत आगम की मुख्य दो वाचनाए मिलती है—सक्षिप्त और विस्तृत। सक्षिप्त वाचना का ग्रन्थ परिमाण १५७५१ अनुष्टुप् श्लोक परिमाण माना जाता है। विस्तृत वाचना का ग्रन्थ परिमाण सवा लाख अनुष्टुप् श्लोक माना जाता है। अभयदेवसूरि ने सक्षिप्त वाचना को ही आधार मानकर प्रस्तुत आगम की वृत्ति लिखी हे। हमने इस पाठ सपादन मे 'जाव' आदि पदो द्वारा समर्पित पाठो की यथावश्यक पूर्ति की है। उससे इसका ग्रन्थ परिमाण १९३१६ अनुष्टुप् श्लोक, १६ अक्षर अधिक हो गया हे।

शब्दान्तर और रूपान्तर

११४९	निगम	नियम	(ता)
११२२४	अप्पिया	अप्पिता	(क)
११२२४	एतेसिं	तेतेसिं	(क, ता, म)
११२३७	वइ०	वति०	(ता)
११२३९	वइ०	वयि०	(ता)
११२४५	मायो	माओ०	(ता)
११२७३	पोयत	पोदत	(क, ता, व, म, स)
११२७६	कज्जइ	किज्जइ	(व, स)
११२८१	पाणाइवाय	पाणायवाय	(स)
११२८१	नेरइयाण	नेरतियाण	(अ, व, स)
११२९८।२	उवओगे	ओवओगे	(ता)
११३१५	अहे	अधे	(ता)
११३५४	करेज्ज	करिज्ज करेज्जा	(क) (स)
११३५७	दुहिए	दुक्खिए	(क, ता, म)
११३५७	दुग्गंधे	दुगधे	(अ, म, स)
११३६३	आरिय	यारिय	(क, ता)
११३६४	चउ	चतु	(ता)
११३६५	पाओसिया	पायोसिया	(अ, व)
११३७०	[illegible]	सत	(ता)
११३७१	नधिज्जमाणे	मधेज्जमाणे	(ता)
११३८१	निगिट्ठे	निनट्ठे	(क, ता)
११३९१	[illegible]	कानियाए	(ता)
११३८५	पाणाइवाय०	पाणायवाय०	(व, म)

६।१६६	कालग	कालत	(क)
७।१७६	० जय ०	० जत ०	(ब)
७।२१३	अयमेयारूवे	अतमेतारूवे	(ता)
८।२४८	अणुप्पदायव्वे	अणुप्पतातव्वे	(ता)
८।३१५	गोय	गोद	(ब)
८।३४७	अणादीय०	अणातीत०	(ता)
८।४२०	सातणयाए	सादणताए	(क, ब, म)
८।४३१	इस्सरिय०	दिस्सरिय०	(म)
८।४३१	इस्सरिय	तिस्सरिय०	(म)
६।४३	सकसाई	सकसादी	(अ, ता)
६।६४	अहिओ (अ),	अहितो अधितो	(क) (ता)
६।१७४	मय०	मद० मत०	(ता) (ब)
६।१६६	सवणयाए	समणयाए	(अ)
११।१३३	धूव	धूम	(ता)
११।१३४	नीव	नीम	(ता, ब)
११।१४२	पउमसर	पदुमसर	(ता)
१६।११३	नियम	नितम	(ब)
१७।३८	एयणा	एतणा	(ता, ब)
१८।१००	मायिमिच्छ०	मादिमिच्छ०	(ब)
१९।८५	जति इंदियाणि	जदिंदियाणि	(ता)
३०।२२	गजोगी	गजोती	(ब)

प्रति परिचय

(अ) भगवती वृत्ति (पंचपाठी) मूलपाठ सहित (हस्तलिखित)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र १८९ तथा पृष्ठ ३७८ है। प्रत्येक पत्र १३½ इंच लम्बा तथा ४½ इंच चौड़ा है। पत्रों में मूलपाठ की १ से २३ तक पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ८० से ८५ तक अक्षर हैं। प्रति सुन्दर तथा कलात्मक ढंग से लिखी गई है। बीच में बावड़ी भी है। लिपि-संवत् नहीं लिखा गया है। अनुमानतः यह प्रति १५-१६ वीं शताब्दि की लगती है।

(क) भगवती मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति [illegible], लाडनूं के संग्रहालय की है। इसके पत्र ३३३ व पृष्ठ [illegible] है। प्रत्येक पत्र १०½ इंच लम्बा तथा ४½ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां

तथा प्रत्येक पंक्ति में ५२ से ५५ तक अक्षर हैं। प्रति सुन्दर और कलात्मक है। बीच-बीच में लाल पाठया तथा बावड़ी है। लिपि-संवत् नहीं दिया गया है। यह प्रति अनुमानतः १६ वीं सदी की है।

(ख) ताडपत्रीय मूलपाठ

यह प्रति जैसलमेर भंडार की ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) मदनचन्दजी गोठी सरदारशहर द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ४२२ तथा पृष्ठ ८४४ हैं। प्रत्येक पृष्ठ में ३ से ६ तक पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में १३० से १४० तक अक्षर हैं। अन्तिम प्रशस्ति में लिखा है—

॥ छ ॥ मंगल महा श्री ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ ग ॥

लिपि-संवत् नहीं दिया गया है। यह प्रति अनुमानतः १२ वीं शताब्दी की होनी चाहिए।

(ता) ताडपत्रीय मूलपाठ

यह प्रति जैसलमेर भंडार की ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) मदनचन्दजी गोठी सरदारशहर द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ३४८ तथा पृष्ठ ६९६ हैं। प्रत्येक पृष्ठ में ४ से ६ तक पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति में १३० से १४० तक अक्षर हैं। अंतिम पत्र पर चित्र किये हुए हैं।

अंतिम प्रशस्ति में लिखा है—

। छ। भगवई समत्ता ॥ ७ ॥ छ ॥ छ ॥ संवत् १२३४ विशाख वदि एकादश्यां गुरौ [illegible] लिखितमिति ॥

(ब) भगवती मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति गधैया सभा, सरदारशहर की है। इसके पत्र ४७८ तथा ९५६ पृष्ठ हैं। प्रत्येक पत्र १०½ इंच लम्बा तथा ४½ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १६ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ३८ से ४२ अक्षर हैं। प्रति सुन्दर तथा कलात्मक है। प्रत्येक पत्र में तीन स्थानों पर बावड़ी तथा लाल [illegible] है और [illegible] किया हुआ है। अंतिम प्रशस्ति के अभाव में लिपि-संवत् अज्ञात है। यह अनुमानतः १६ वीं शताब्दी की प्रति लगती है।

(स) भगवती सूत्र मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति [illegible], सरदारशहर की है। इसके पत्र ४८८ तथा पृष्ठ ९७६ हैं। प्रत्येक पत्र १०½ इंच लम्बा तथा ४½ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में १३ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४८ से ५२ तक अक्षर हैं। [illegible]

इसके अन्त में लिपि-संवत् दिया हुआ नहीं है, पर यह प्रति अनुमानतः १६ वीं शताब्दी की होनी चाहिए।

अतिम प्रशस्ति मे लिखा है—

॥ छ ॥ ग्रथाग्र १५७७५ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ श्री ॥

छ ॥ श्री कल्याणमस्तु ॥ शुभं भवतु ॥ छ ॥ श्री ॥ श्री ॥ छ ॥ छ ॥

प्रति मे अनेक स्थलो पर सस्कृत मे टिप्पण भी दिये हुए है।

(स) भगवती सूत्र (त्रिपाठी)

केशर भगवती नाम से ख्यात यह प्रति हमारे सघीय पुस्तकालय की है। इसके ६०२ पत्र तथा १२०४ पृष्ठ है। पत्र के मध्य मे मूल पाठ तथा ऊपर नीचे वृत्ति लिखी गई है। यह प्रति सुन्दर और काफी शुद्ध है। किसी पाठक ने मुद्रित प्रति को प्रमाण मानकर स्थान-स्थान पर हरताल लगाकर इसे शुद्ध करने का प्रयत्न किया है। जहा ऐसा किया गया है वहा प्राय शुद्ध पाठ अशुद्ध बन गया है। इसके प्रत्येक पृष्ठ मे मूल पाठ की ४ से १५ तक पक्तिया और प्रत्येक पक्ति मे ४५ से ५३ तक अक्षर है। प्रशस्ति मे लिखा है—

श्री भगवती सूत्र सम्पूर्ण ॥ छ ॥ श्री विवाहपन्नत्ती पचम अग सम्मत्त ॥ शुभ भवतु। ग्रथाग्र १५६७५ उभयमीलने ग्र० ३४२६१ ॥ श्री ॥ लिपित यती डाहामल्ल श्री नागोरमध्ये स० १८४८ माह शु १५।

वृ (वृपा) मुद्रित

प्रकाशक :—श्रीमती आगमोदय समिति।

सहयोगानुभूति

जैन-परम्परा मे वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाए हो चुकी हैं। देवर्द्धिगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नही हुई। उनके वाचना-काल मे जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि मे बहुत ही अव्यवस्थित हो गए। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्यश्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नही हो सका। अन्तत हम इसी निष्कर्ष पर पहुचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, तटस्थ-दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने-आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति मे अध्यापन-कर्म के अनेक अग हैं—पाठ का अनुसधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियो मे आचार्यश्री का हमे सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य मे प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर भार-मुक्त होऊं, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संबल पा और अधिक भारी बनूं।

प्रस्तुत आगम के सम्पादन में पाठ-सम्पादन के स्थायी सहयोगी मुनि सुदर्शनजी, मधुकरजी और हीरालालजी के अतिरिक्त मुनिश्री कानमल जी, छत्रमलजी, अमोलकचन्दजी, दिनकरजी,- पूनमचन्दजी, कन्हैयालालजी, राजकरणजी, ताराचन्दजी, बालचन्द्रजी, विजयराजजी, मणिलालजी, महेन्द्रकुमारजी (द्वितीय), सम्पतमलजी (टमकोर), शान्तिकुमारजी, मोहनलालजी (शार्दूल) और श्रीमल्लालाल जी बोरड का योग रहा है। पाठ-सम्पादन का कार्य सं० २०२९ पौष कृष्णा ९ (२८ दिसम्बर १९७२) को सरदारशहर (राजस्थान) में आरम्भ किया गया और वह सं० २०३० फाल्गुन शुक्ला ११ (४ मार्च १९७४) को दिल्ली में पूरा हुआ।

प्रति शोधन में मुनि सुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी और दुलहराजजी ने बहुत श्रम किया है। इसका ग्रन्थ-परिमाण मुनि मोहनलाल जी आमेट ने तैयार किया है।

कार्यनिष्पत्ति में इनके योगका मूल्यांकन करते हुए मैं इन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूं।

आगमविद् और आगम-सम्पादन के कार्य में सहयोगी स्व० श्री मदनचन्दजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नहीं किया जा सकता। यदि वे आज होते तो भगवती के कार्य पर उन्हें परम हर्ष होता।

आगम के प्रबन्ध सम्पादक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया प्रारम्भ से ही आगम कार्य में संलग्न रहे हैं। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने के लिए वे दृढ़-संकल्प और प्रयत्नशील हैं। अपने सुव्यवस्थित वकालत कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर अपना अधिकांश समय आगम-सेवा में लगा रहे हैं। 'अंगसुत्ताणि' के इस प्रकाशन में उन्होंने अपनी निष्ठा और तत्परता का परिचय दिया है।

'जैन विश्व भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्द जी सेठिया, 'जैन विश्व भारती' तथा 'आदर्श साहित्य संघ' के कार्यकर्ताओं ने पाठ-सम्पादन में प्रयुक्त सामग्री के संयोजन में बड़ी तत्परता से कार्य किया है।

एक ग्रन्थ के लिए समाज शक्ति ने जितने कार्य की सम्पूर्ति में सहयोग [illegible] का उल्लेख [illegible] है। [illegible] इस [illegible] परिचय [illegible] है और उसी का इन सबों [illegible] किया है।

अणुव्रत विहार
नई दिल्ली
१-१०-७४

मुनि नथमल

भूमिका

नामकरण

प्रस्तुत आगम का नाम व्याख्याप्रज्ञप्ति है। प्रश्नोत्तर की शैली में लिखा जाने वाला ग्रन्थ व्याख्याप्रज्ञप्ति कहलाता है। समवायांग और नन्दी के अनुसार प्रस्तुत आगम में छत्तीस हजार प्रश्नों का व्याकरण है[1]। तत्त्वार्थवार्त्तिक, षट्खण्डागम और कषायपाहुड के अनुसार प्रस्तुत आगम में साठ हजार प्रश्नों का व्याकरण है[2]।

प्रस्तुत आगम का वर्तमान आकार अन्य आगमों की अपेक्षा अधिक विशाल है। इसमें विषयवस्तु की विविधता है। सम्भवतः विश्वविद्या की कोई भी ऐसी शाखा नहीं होगी जिसकी इसमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में चर्चा न हो। उस दृष्टिकोण से इस आगम के प्रति अत्यन्त श्रद्धा का भाव रहा। फलतः इसके नाम के साथ 'भगवती' विशेषण जुड़ गया, जैसे—भगवती व्याख्याप्रज्ञप्ति। और शताब्दियों पूर्व 'भगवती' विशेषण न रहकर स्वतन्त्र नाम हो गया। वर्तमान में व्याख्याप्रज्ञप्ति की अपेक्षा 'भगवती' नाम अधिक प्रचलित है।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम के विषय के सम्बन्ध में अनेक सूचनाएं मिलती हैं। समवायांग में बताया गया है कि अनेक देवों, राजाओं और राजर्षियों ने भगवान् से विविध प्रकार के प्रश्न पूछे और भगवान् ने विस्तार से उनका उत्तर दिया। इसमें स्वसमय, परसमय, जीव, अजीव, लोक और अलोक व्याख्यात हैं[3]। आचार्य अकलंक के अनुसार प्रस्तुत आगम में जीव है या नहीं?—इस प्रकार के अनेक प्रश्न निरूपित हैं[4]। आचार्य वीरसेन के अनुसार प्रस्तुत आगम में प्रश्नोत्तरों के साथ-साथ छियानवे हजार छिन्नच्छेद नयों से ज्ञापनीय शुभ और अशुभ का वर्णन है[6]।

१. समवाओ, सू० ९३; नंदी, सू० ८६।
२. तत्त्वार्थवार्त्तिक १।२०; षट्खण्डागम १, पृ० १०१; कषायपाहुड १, पृ० १२५।
३. समवाओ, सू० ९३।
४. तत्त्वार्थवार्त्तिक १।२०।
५. [illegible]
६. कषायपाहुड भाग १, पृ० [illegible]।

उक्त सूचनाओ से प्रस्तुत आगम का महत्व जाना जा सकता है। वर्तमान विज्ञान की अनेक शाखाओ ने अनेक नए रहस्यो का उद्घाटन किया है। हम प्रस्तुत आगम की गहराइयो मे जाते है तो हमे प्रतीत होता है कि इन रहस्यो का उद्घाटन ढाई हजार वर्ष पूर्व ही हो चुका था।

भगवान् महावीर ने जीवो के छह निकाय बतलाए। उनमे त्रस निकाय के जीव प्रत्यक्ष सिद्ध है। वनस्पति निकाय के जीव अब विज्ञान द्वारा भी सम्मत है। पृथ्वी, पानी, अग्नि और वायु—इन चार निकायो के जीव विज्ञान द्वारा स्वीकृत नही हुए। भगवान् महावीर ने पृथ्वी आदि जीवो का केवल अस्तित्व ही नही बतलाया, उनका जीवनमान, आहार, श्वास, चैतन्य-विकास सज्ञाए आदि पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला है। पृथ्वीकायिक जीवो का न्यूनतम जीवनकाल अन्तर्-मुहूर्त्त का और उत्कृष्ट जीवनकाल बाईस हजार वर्ष का होता है। वे श्वास निश्चित क्रम से नही लेते—कभी कम समय मे और कभी अधिक समय से लेते है। उनमे आहार की इच्छा होती है। वे प्रतिक्षण आहार लेते है। उनमे स्पर्शनेन्द्रिय का चैतन्य स्पष्ट होता है। चैतन्य की अन्य धारायें अस्पष्ट होती है[1]।

मनुष्य जैसे श्वासकाल मे प्राणवायु का ग्रहण करता है वैसे पृथ्वीकाय के जीव श्वासकाल मे केवल वायु को ही ग्रहण नही करते किन्तु पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु और वनस्पति—इन सभी के पुद्गलो को ग्रहण करते है[2]।

पृथ्वी की भाति पानी आदि के जीव भी श्वास लेते है, आहार आदि करते है। वर्तमान विज्ञान ने वनस्पति जीवो के विविध पक्षो का अध्ययन कर उनके रहस्यो को अनावृत किया है, किन्तु पृथ्वी आदि के जीवो पर पर्याप्त शोध नही की। वनस्पति क्रोध और प्रेम प्रदर्शित करती है। प्रेमपूर्ण व्यवहार से वह प्रफुल्लित होती है और घृणापूर्ण व्यवहार से वह मुरझा जाती है। विज्ञान के ये परीक्षण हमे महावीर के इस सिद्धान्त की ओर ले जाते है कि वनस्पति मे दस सज्ञाए होती है। वे संज्ञाएं निम्न प्रकार हैं—आहार सज्ञा, भय सज्ञा, मैथुन सज्ञा, परिग्रह सज्ञा, क्रोध सज्ञा, मान सज्ञा, माया सज्ञा, लोभ सज्ञा, ओघ सज्ञा और लोक सज्ञा। इन सज्ञाओ का अस्तित्व होने पर वनस्पति अस्पष्ट रूप मे वही व्यवहार करती है जो स्पष्ट रूप मे मनुष्य करता है।

प्रस्तुत विषय की चर्चा एक उदाहरण के रूप मे की गई है। इसका प्रयोजन इस तथ्य की ओर इगित करना है कि इस आगम मे ऐसे सैकडो विषय प्रतिपादित है जो सामान्य बुद्धि द्वारा ग्राह्य नही है। उनमे से कुछ विषय विज्ञान की नई शोधो द्वारा अब ग्राह्य हो चुके है और अनेक विषयो को परीक्षण के लिए पूर्व-मान्यता के रूप मे स्वीकार किया जा सकता है। सूक्ष्म जीवो की गतिविधियो के प्रत्यक्षत: प्रमाणित होने पर केवल जीव-शास्त्रीय सिद्धान्तो का ही विकास नही होगा, किन्तु अहिंसा के सिद्धान्त को समझने का अवसर मिलता है और साथ-साथ सूक्ष्म जीवो के प्रति किए जाने वाले व्यवहार की समीक्षा का भी।

---

१ भगवई १।१।३२, पृ० ६।

२. भगवई १।३४।२५३,२५४, पृ० ४६४।

भगवान् महावीर ने पाच मूल द्रव्यो का प्रतिपादन किया। वे पचास्तिकाय कहलाते है। उनमे धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय—ये तीनो अमूर्त होने के कारण अदृश्य है। जीवास्तिकाय अमूर्त होने के कारण दृश्य नहीं है फिर भी शरीर के माध्यम से प्रकट होने वाली चैतन्य क्रिया के द्वारा वह दृश्य है। पुद्गलास्तिकाय [परमाणु और स्कन्ध] मूर्त होने के कारण दृश्य है। हमारे जगत् की विविधता जीव और पुद्गल के सयोग से निष्पन्न होती है। प्रस्तुत आगम मे जीव और पुद्गल का इतना विशद निरूपण है जितना प्राचीन धर्मग्रन्थो या दर्शनग्रन्थो मे सुलभ नही है।

प्रस्तुत आगम का पूर्ण आकार आज उपलब्ध नही है किन्तु जितना उपलब्ध है उसमे हजारो प्रश्नोत्तर चर्चित है। ऐतिहासिक दृष्टि से आजीवक सघ के आचार्य मखलिगोशाल, जमालि, शिवराजर्षि, स्कन्दक सन्यासी आदि प्रकरण बहुत महत्त्वपूर्ण है। तत्त्वचर्चा की दृष्टि से जयन्ती, मद्दुक श्रमणोपासक, रोह अनगार, सोमिल ब्राह्मण, भगवान् पार्श्व के शिष्य कालासवेसियपुत्त, तुगिया नगरी के श्रावक आदि प्रकरण पठनीय है। गणित की दृष्टि से पार्श्वापत्यीय गागेय अनगार के प्रश्नोत्तर बहुत मूल्यवान् है।

भगवान् महावीर के युग मे अनेक धर्म-सम्प्रदाय थे। साम्प्रदायिक कट्टरता बहुत कम थी। एक धर्म सघ के मुनि और परिव्राजक दूसरे धर्म सघ के मुनि और परिव्राजको के पास जाते, तत्त्व-चर्चा करते और जो कुछ उपादेय लगता वह मुक्तभाव से स्वीकार करते। प्रस्तुत आगम मे ऐसे अनेक प्रसग प्राप्त होते है जिनसे उस समय की धार्मिक उदारता का यथार्थ परिचय मिलता है। इस प्रकार अनेक दृष्टिकोणो से प्रस्तुत आगम पढने मे रुचिकर, ज्ञानवर्धक, सयम और समता का प्रेरक है।

विभाग और अवान्तर विभाग

समवायाग और नन्दीसूत्र के अनुसार प्रस्तुत आगम के सौ से अधिक अध्ययन, दस हजार उद्देशक और दस हजार समुद्देशक है[1]। इसका वर्तमान आकार उक्त विवरण से भिन्न है। वर्तमान मे इसके एक सौ अडतीस शतक या सतक और उन्नीस सौ पच्चीस उद्देशक मिलते है। प्रथम बत्तीस शतक स्वतन्त्र है। तेतीस से उनचालीस तक के सात शतक बारह-बारह शतको के समवाय है। चालीसवा शतक इक्कीस शतको का समवाय है। इकतालीसवा शतक स्वतन्त्र है। कुल मिलाकर एक सौ अडतीस शतक होते है। उनमे इकतालीस मुख्य और शेष अवान्तर शतक है।

शतको मे उद्देशक तथा अक्षर-परिमाण इस प्रकार है—

शतक	उद्देशक	अक्षर-परिमाण	शतक	उद्देशक	अक्षर-परिमाण
१	१०	३८८४१	४	१०	२४८
२	१०	२०८१८	५	१०	३५६६१
३	१०	२६२०७	६	१०	१८६४०

१ समवाओ, सूत्र ९३; नन्दी, सूत्र ८५।

Preface

The Title

The title of the Āgama under review is 'Vyākhyā Prajñapti' The work written in a dialogue-style is called 'Vyākhyā Prajñapati' According to 'Samawāyānga' and 'Nandi-Sūtra' the present Āgama has an exposition of thirtysix thousand queries[1] On the testimony of Tatwārtha-Vārtika, Satkhandāgama and Kasaya-Pāhuda the present Āgama contained an exposition of sixty thousand queries[2]

The present Āgama is a volume much larger than other Āgamas It is multifarious in its contents Probably, there is no branch of metaphysics, which has not been discussed in it, directly or indirectly From the aforesaid point of view, this Āgama was held in high esteem. The adjective 'Bhagawati' was, therefore, added to it's title, i e 'Vāyākhyā Prajñapti'. Many centuries before, the adjective 'Bhagawati' became a part and parcel of the title Now-a-days, the title 'Bhagawati' is more in vogue than 'Vyākhyā Prajñapti'.

The Content

Different sources provide copious information regarding the contents of the present Āgama 'Samawāyānga' tells us that many deities, kings and king-ascetics put different types of queries before the lord and he answered them in detail Swa-Samaya, Para-Samaya, Jeeva Ajeeva, Loka and Aloka have been explained in detail[3]. According to Āchārya Akalanka queries, such as whether the Jiva exists or not, have been answered in this Āgama[4] According to Āchārya Veerasena alongwith the queries and answers, predictive subha (auspicious) and asubha (inauspicious) have been described by ninetysix thousand Chinnachheda Nayas[5].

1 [illegible]
2 Tatwārtha Vārtika [illegible] page 101, Kasaya Pāhuda [illegible] page 125
3 [illegible]
4 [illegible]
5 [illegible]
6 [illegible]

The importance of the present Āgama may well be understood by the aforesaid indications Different branches of modern science have recently brought to light many mysteries When we go into the depths of the present Āgama, we find that these mysteries had been revealed some 2500 years before

Lord Mahavira has enumerated six groups of living-beings (Jivas) The living beings of the Trasa-kāya(mobile beings)group are self-evident. The living beings of the floral group (Vanaspati nikāya) are supported by the modern Science also The four groups of living beings—the earth the water, the fire, and the air have not been accepted by the modern science Lord Māhavira has not only cited the existence of the earth living-beings etc., but thrown enough light on their life-span, food habits, breathing, evolution of consciousness, perceptions etc. also. The minimum span of life of the living-beings of the earth group is of a Antar Muhrat only and the maximum of twenty two thousand years. They do not have a particular order of breath period. Sometimes it is less and sometimes more. They aspire every moment for food and take it. The consciousness of the touch-organ is quite distinct in them. The other currents of consciousness are indistinct.[1]

As man takes in oxygen in his breath-period, the living-beings of the earth group not only take in air, but the Pudgalas (matter) of all the earth, the water, the fire, the air and the flora[2].

Like the earth living-beings, the other living-beings of the water etc do breathe and take food etc Modern science has studied the different aspects of the floral living-beings and thrown light on their mysteries, but sufficient research has not been carried out on the earth living-beings Flora expresses anger and affection. The affectionate behaviour blooms it and the hateful behaviour fades it away These scientific experiments lead us to the maxim of lord Mahavira that there is ten fold consciousness in the floral-world

These ten folds are—Food consciousness, fear consciousness, co-habitation consciousness, hoarding consciousness, anger consciousness, ego consciousness, deceit consciousness, greed consciousness, 'Augha' consciousness and world consciousness Having these folds of consciousness the floral world behaves indistinctly the same way as man does distinctly.

---

1 Bhagavai, 1-1-32, page 9
2 Bhagawai, 9-34-253, 254, page 464.

This topic has been mentioned as an example. The object of it is to point out the fact that in this Āgama hundreds of such topics, that cannot be understood by common sense, have been expounded. A few of them have been so far understood with the help of the modern scientific research and many of them can be accepted as tenets for experiments.

The activities of the subtle living-beings (Sūkshma jiva) being perceivably proved, not only the biological doctrines are evolved, an opportunity to understand the doctrine of Ahimsā, and side by side to review the behaviour towards the subtle living-beings, is provided also.

Lord Mahavira has expounded the five principal substances They are named as Panchāstikāya In them dharmāstikāya, adharmāstikāya and ākāśāstikāya, the three being formless are invisible Though Jīvāstikāya too, being formless, is invisible, it is indicated by the activities of consciousness seen through the body. Pudgalāstikāya, being concrete, is visible. The multiformity of our world is a result of the union of Jīva and Pudgala A clear ascertainment of Jīva and Pudgala is found in this Āgama to such a great extent as is not available in the old religious and philosophical works The full text of the Āgama is not available today, but whatever is available discusses thousands of queries From the historical point of view, the chapters on Āchārya Mankkhali Gosāla, Jamāli, Śivarājarsi, Skanda Sanyāsi etc. are of great importance. From the angle of philosophical discussion Jayanti, Madduka Śramanopāsaka, Roha Anagāra, Somila Brāhmana, Lord Parswa's disciple Kālāsavesiya-putta, srāvakas of Tungīya City etc are the topics worth reading From the view point of Mathematics, discussions of Pārswa-patvīya Gāngeya Anagāra are of great value.

In the age of Lord Mahavira, there were different religious cults. Cultic bigots were almost un-heard Munis and Parivrājakas of one religious body went to engage themselves in philosophical discussions with the Munis and Parivrājakas of another religious body, and whatever was found to be acceptable, was accepted freely. There are many contexts in this Āgama to throw light on the true free-mindedness of religion prevailing in that age. In this way, with different view-points this Āgama is a work, interesting to read, inspirer of self-control and equilibrium and promoter of knowledge

Divisions and Sections

According to Samavāyānga and Nandi Sūtra, this Āgama contains more than a hundred Adhyayanas ten thousand Uddeśakas and ten thousand Samuddeśakas[1]. The present volume of it differs from the said account.

1. [illegible]

Presently, there are one hundred and thirtyeight Śatas (Śatakas) and one thousand and ninehundred and twentyfive Uddeśakas. The first thirytwo Śatakas are independent ones The seven Śatakas, from thirtythree to thirty-nine, are unions of twelve śatakas each The fortieth śataka is a union of twentyone śatakas The forty-first śataka is independent. In all, there are one hundred and thiryeight satakas In them, fortyone śatakas are cardinals and the rest are secondary ones

The Uddesakas and syllables in the Śatakas are as follows :

Śataka	*Uddesaka*	*Total syllables*
1	10	28841
2	10	23818
3	10	36702
4	10	753
5	10	25691
6	10	18652
7	10	24935
8	10	48435
9	34	45859
10	34	9907
11	12	32338
12	10	32808
13	10	21914
14	10	16033
15	—	39812
16	14	15939
17	17	8412
18	10	22443
19	10	8027
20	10	19871
21 (eight vargas)	80	1630
22 (six vargas)	60	1068
23 (five vargas)	50	715
24	24	39926
25	12	45103
26	11	4455

Sataka	*Uddesaka*	*Total syllables*
27	11	190
28	11	694
29	11	1027
30	11	4764
31	28	2344
32	28	363
33 (12 vargas)	124	3089
34 („ „)	124	8964
35 („ „)	132	4181
36 („ „)	132	731
37 („ „)	132	115
38 („ „)	132	87
39 („ „)	132	139
40 (29 „)	231	2734
41	196	3516
138	1923[1]	618224

The Language and the Style

The language of the present Āgama is Prākrit. Here and there the usages of Saurseni are also found. In some instances the use of Desi words (vernacular) is also found, like Khatta (खत्त), Donger (7/117 डोंगर), Tola (7/119 टोल), Maggao (7/152 मग्गओ), Bondi (3/112 बोंदि), Cikkhalla (8/357 चिक्खल्ल).

The expression of it is very lucid and sweet. Many topics have been dealt with in the style of fable narration. Reminiscences, anecdots and allegories are found through out the work. The difficult topics have been explained by citing appropriate examples in many places.

The present Āgama has been written down in prose style. Somewhere, the order is an independent discussion and sometimes it is an off-shoot of some incident. Some verse part is also available in the form of collected Gāthas to compile the ascertainable topic.

1 [illegible]

Accomplishment of the work

It took about a year and a quarter to redeem the text of the present Āgama In the accomplishment of this task, there has been the contribution of many Munis I bless them that their devotedness to the performances be ever more developed. On the occasion of this twentyfifth centinary of Lord Mahavira, I have a feeling of great pleasure in presenting to the people the biggest and most volumenous work pertaining to the life and teaching of the Lord.

Anuvrata Vihar **Ācharya Tulasi**

Delhi

Editorial

Introduction to the work

The Āgama Sūtras have two main divisions, i.e. the Anga-Pravista and the Anga-Vāhya. The Anga-Pravista Sūtras are considered to be the nearest to the original and most authentic of all as they are composed by the principal diciples of Lord Mahāvira. They are twelve in number : 1. Āchārānga, 2 Sūtrakrtānga, 3. Sthānānga, 4 Samawāyānga, 5 Vyākhyā-Prajñapti, 6 Jñata Dharma-Kathā, 7. Upāsaka-Daśā, 8 Anta-krita-Daśā, 9. Anuttaropapātika Daśā, 10 Praśna-Vyākarana, 11. Vipāka-Śruta 12 Dristiwāda The twelfth Anga is, at present, not available.

The eleven Angas, which are available, are being published in three volumes under the title of Anga-Suttani The first volume has four Angas, i e, 1. Āchārānga, 2 Sūtrakritānga, 3. Sthānānga and 4. Samawāyānga The second volume contains only the 'Vyākhyā Prajñapti' and the third contains the rest six Angas

The present work is the second volume of the Anga-Suttāni It has the original text of the Vyākhyā-Prajñapti with its recentions A brief preface has been added in the beginning An elaborate preface and the word-index have not been added to it It is planned to publish them in two independent volumes. Accordingly, the fourth volume will contain an elaborate preface to the eleven Angas and the fifth one will contain the word-index thereof.

The present text and the method of editing

The text of the present Āgama has been redeemed on the basis of the seven manuscripts (two being palm leaf manuscripts) and vrittis (commentaries) According to the method of text redemption in vogue, we do not proceed on the basis of regarding only one manuscript as [illegible], but redeem the original text with the help of Artha-mīmāmsā (critical meaning), former and later contexts preceding text (Poorva Pātha) and the text of other Āgama Sūtras and the explanation in the Vritti (commentary). The original commentary of the Bhagwati is extinct at present. The [illegible] [illegible] is available but we could not get it. We have made use of the [illegible] and [illegible] portions quoted by Abhayadeva Sūri and [illegible] [illegible] from time to time have [illegible] the text. [illegible]

of the abridgement are found. In the manuscripts used in the text-redemption, there are four different versions. The abridgement of the text found in them has been done in different ways (See, page 39). There have been mistakes also due to the difference in written forms of the letters. In sūtra 1/365, the reading Pāosiyāya' has been substituted for 'Prādoṣikī Kriyā'. In some manuscripts the reading is 'Pā-u-siyāya'. In the old script, it is difficult to differenciate 'O' from 'U'. This is why 'U' is abundantly found in the present manuscripts in place of 'O'. The manuscripts which were transcribed by the scholars efficient in the language, have 'O' but the copies, prepared by mere scribes have 'U' instead of 'O'. The recensions such as 'Owāsantare' and 'Uwāsantare' have taken place due to this fact only (See, page 66, Sūtra 1/392 , page 77, Sūtra 1/444)

In Sūtra 8/242, the reading is 'Čhettehin'. But, as the transcribing went on, many gradual alterations, such as 'Bittehin', 'Čhattehin', 'Čittehin' occured 'Tada' became 'Taha' in Sūtra 8/301 There is an obridged 'Vaćna' (lesson) in same manucripts The commentator, too, received the abridged 'Vaćna'. So he wrote 'Anya Yūthik waktawyata' is to be understood by one himself It has not been written down lest the work should get bulky[1]. The commentator completed the abridged reading in the commentary. Some transcribers have included same part of the commentary in the original text And, thus the reading of the full text differed from that of the abridged text.

In some specimens a mixture of the readings, abridged and full, has taken place In Sūtra 2/47, page 88, 'Khandayā' Puććhā' is the abridged text. Some transcriber wrote its full text in the margin of the manuscript for his own understanding. And, in the later transcriptions, the abridged and the full text were both included. (See, foot-note of Sūtra 5/122, page 209 , the first foot-note of Sūtra 2/118, page 112). In 11/59 the full and the abridged text 'Jahā O-wā-i-e' both have been written down. Such is the case in the chapter of Asoććā Kewali' also In some manuscript, the quotation given in the commentary has also been included (See, the second foot-note of Sūtra 2/75, page 99) In some instances, the secondary explanation, too, given by the commentator, was accepted as the original text in the later transcriptions. (See the first foot-note of the Sutra 5/51, page 194).

In the task of text-redemption, the text of other Āgamas also are taken as basis In all the manuscripts, after the text 'Ćiyatante uragharappawesā' in Sutra 2/94, the text reads as 'Bahūhin Sīlawwaya-guna-weramanapaćća-

1. Iha Sutra Anya Yuthika waktawayam Swayamuccaraniyam Grantha—gaurawa —bhayenalikhitatatwattasya taccedam, Vrittipatra 106,

khāna-pōs-hōwa-waschin'. Due to the inconsistency in its meaning there, the commentator had to write 'Tairyuktā iti gamyam', but, on seeing the Sutras 'owā-iya' and 'Rāyapaśena-iya', it is found that this reading should not be there where it has been written down On the basis of both the above-mentioned Sūtras, the order of the text in view is constructed thus—'O-saha-Bhesajjenam Padilābhemānā bahūhin Sīlawwaya-gūna weramana-Paććakhāna Posahowa-wāschin ahāpariggahi-e-hin tawokammēhin appānam bhāwemānā wiharanti'. In sūtra 2/1, in all the specimens, the text is sāralallāna Jāwa kewa-in' but 'Jāwa' serves no purpose here On the basis of 8/217 of the Bhagwati as well as the first stenza of the Prajnāpanā here the text is ascertained to be 'Jāwati, instead of 'Jāwa'.

In many instances, the meaning does not change by an alteration of letter but difficulty arises in understanding the meaning and sometimes it changes too In Sūtra 6/90, the reading is 'hawwin', and 'heṭṭhin' as well as 'hiṭṭhin' the two recensions are also found. The commentator Abhayadeva Sūri has given the meaning as 'Sama' there (See the commentary-leaf 271). In the sthānānga Sūtra (143), on the same topic, the reading is as, 'hitthin'. Abhayadeva Sūri has given its meaning there as 'below the Brahma-loka'. (See the Sthānānga-vritti leaf 410)

In same places the varient readings occur due to the mis-understanding of the transcriber and difference in characters in scripts. In Sūtra 9/195, the reading is is 'Odharémānī-odharémanī'. In some specimens this reading is found in the form of 'uwadharemānio-uwadharemānio'. In one copy, this reading is changed into 'uwari-dhare-manio-uwari-dhare-manio'.

A few examples of recensions have been cited here to show that manuscripts or only one particular copy cannot be taken as the basis in the redemption of the text. It can be redeemed only on the basis of various Āgamas, their commentaries and consistency of their meaning

The problem of abridgement and redemption of the text

It is a task to lay down authentically the method of abridgement adopted by Devardhigani at the time of writing the Āgama Sūtras. And, it is a task because many Āgamadharas have abridged the Āgama-text in later periods Probably, some transcribers too, for the sake of convenience of transcribing, have abridged the text

In the abridged text of Sūtra 13/25, the dawoddeśaka of the second Śataka has been referred to indicate the limits of Bhavanapati Devas etc., but the full text is not there (2/117, page 111) and the sthānapada of the Prajñāpanā has been referred to. Likewise, in the abridged text of Sūtra 16/33, the third

Śataka (Sūtra 27, page 130) has been referred to but the full text is not there. It is indicated there to refer to 'Rayapasena-ima' sutra.

The abridged text of Sūtra 16/71 refers to the chapter of 'Udrāyana (13/117, page 614) only not to find the full text there In the same way 16/121, 18/56 and 18/77 indicate regarding the full text, but it is not found at the places referred to

On the basis of these references, it is inferred that the texts, at the places referred to, were complete at the time of their abridgement. But after that, some Anuyogadhara Ācharya abridged those full texts also The words 'Jāwa', 'Jahā' etc. have been used for abridgement.

In some instances, the use of 'Jāwa' is more or less unnecessary. It is either due to negligence on the part of the transcriber or has been written as usual without discernment The transcribers have taken plenty of freedom in the use of 'Jāwa'. If someone transcribed 'Pāwaphala Jāwa Kajjanti, the other has written it as 'Pāwaphala virvāga Jāwa Kajjati'. Along with the short readings even such as 'winda' (7/196), 'Payoga' (8/17) 'Sahassa' (16/103) the word 'Jāwa' has been added The abridgements of the text, therefore, seem to have been done from time to time by the scribes.

The Āgama under review has two main Vaćnās, abridged and full The length of the abridged version of the work is regarded to be a total of 15751 Anustupa Ślokas The extent of the full version of the work is regarded to be a total of one lakh and a quarter Anustupa Ślokas Abhayadeva Sūri has written his commentary on the basis of the abridged version of this Āgama. In editing the text, we have, as far as needed, completed the texts introduced by the words 'Jāwa' etc, resulting the total length of the work to a measure of 19319 Anustupa Ślokas and 16 letters more.

Change of Word and Formative

1/49	Nigama	Niyama	(Tā)
1/224	Appiyā	Appitā	(Ka)
1/224	Etesin	Tetesin	(Ka, Tā, Ma)
1/237	Wai	Wati	(Tā)
1/239	Wai.	Wayi	(Tā)
1/245	Māyo	Māo	(Tā)
1/273	Poyantam	Podantam	(Ka, Tā, Ba, Ma, Sa)
1/276	Kajjai	Kijjai	(Ba, Sa)
1/281	Pāṇā-i-Wāya	Pāṇāyawāya	(Sa)

1/281	Nera-ı-yanam	Neratıyānam	(A, Ba, Sa)
1/298/2	Uwa Ogé	Ova oge	(Tā)
1/315	Ahe	Adhe	(Tā)
1/354	Kareȷȷa	Karıȷȷa (Ka) Kareȷȷā	(Sa)
1/357	Duhı-é	Dukkhı-e	(Kā, Tā, Ma)
1/357	Dugga ndhe	Duɐandhe	(A, Ma, Sa)
1/363	Āriyam	Yarıyam	(Ka, Tā)
1/364	ća-u	ćatu	(Tā)
1/365	Pa-O-sıā	Pāyosıā	(A, ba)
1/370	Saya	Sata	(Tā)
1/371	Sandhıȷȷamāne	Sandheȷȷa. māne	(Tā)
1/371	Nısiṭṭhe	Nısatthe	(Ka, Tā)
1/371	Kā-ı-ya-e	Kātıyā-e	(Tā)
1/385	Pānā-ı-wāya	Pānāyawāyao	(Ba, Sa)
1/389	Hṛıssı	Hussı Hṛıswı Hassı	(Ba); (Sa), (Ka)
1/415	Jahā	Jadhā	(A, Ba, Sa)
1/424	Sāmā-ı-yassa	Sāmātıyassa	(Tā)
1/425	Ja-i	Jatı	(A, Ka, Ba, Ma, Sa)
1/434	Kıwanassa	Kıwinassa	(Tā)
2/26	Māgahā	Māgadhā	(Tā)
2/41	Viyadda bhoī	Viyaddabhotī	(A, Tā, Ba, Ma, Sa)
2/57	Sāmā-ı-yama-ı yāın	Sāmā-ı-mādıy- ātım Sāmātiyamā- tiyāin	(Ka, Ba) (Sa)
2/66	Dhamavio	Dhawani	(Ka, Tā, Ba, Ma)
2/[illegible]	Pavarīye	Ratnīye	(Tā)
2/[illegible]	Āṭūhe-ı	Āṭōbhe-i	(Ka, Ma)
2/[illegible]	Khā-ria-Sāmam	Khatım-Sāt- mam	(Ba, Sa)
2/[illegible]	Sav[illegible]ewa	S[illegible]ewa	(Tā)
2/[illegible]	An[illegible]	An[illegible]	(Ma)
2/[illegible]	Khā[illegible] menam	Khā[illegible]- [illegible]	(Ba, Sa)

3/4	Ayameyārūwe	Atametārūwe	(Tā)
3/21	Isāne	Nīsane	(Tā)
3/25	Moya-o	Motāto	(Ka, Tā)
3/33	Khā-ıma Sā-ımena	Khātım-Sātı-menam	(Ba,Sa)
3/112	Sayanıjjā o	Satanıjjā o	(Tā)
3/112	Nıwatım	Nıpatım	(Tā)
3/143	Weyatı	Wedatı	(Tā)
3/148	Samaya o	Samata o	(Tā)
5/3	'Padına'	'Padına'	(Tā, Ma)
5/60	Ā-u-e	Ā-u-ge	(Tā)
5/79	Rayaharana māyā-e	Rataharana-māta-e	(Tā)
5/82	Weyāwadıyam	Wedāwadıyam	(Ba, ma)
5/110	Samayansı	Samatansı	(Tā)
5/139	'Lo-ı-ya'	'Lo-tı-ya'	(A, Sa)
6/63	Sakasā-ī-hın	Sakasādīhın	(Tā)
6/63	Sajogī	Sajotı	(Tā)
6/79	Nāgo	Nā-o	(Tā, ma)
6/90	Kanharātīo	Kanharāyīto	(Ba)
6/166	Kalagam	Kalatam	(Ka)
7/176	o Jaya o	o Jata o	(Ba)
7/213	Ayameyākūwe	Atametākūwe	(Tā)
8/248	Anuppadāyawwe	Anuppatātawwe	(Tā)
8/315	Goyam	Godam	(Ba)
8/347	Anādīyā o	Anātīta	(Tā)
8/420	Sātānayāe	Sādanatāe	(Ka, Ba, Ma)
8/431	Issarıyao	Dıssarıya o	(Ma)
8/431	Issarıya	Nıssarıya	(Ma)
9/43	Sakasāı	Sakasādı	(A, Tā)
9/94	Ahı-o	Ahıto (Ka),	Adhıto (Tā)
9/174	Maya	Mada o (Tā)	Mata o (ba)
9/169	Sawaṇayāe	Samanayae	(A)
11/133	Dhūwa	Dhūma	(Tā)
11/134	Nīwa	Nīma	(Tā, Ba)
11/142	Pa-u-ma-Sara	Padumasara	(Tā)
16/113	Nıyamam	Nıtamam	(Ba)
17/38	ćyana	cyana	(Ta, Ba)

18/100	Mayimiććha o	Madimiććha o	(Bi)
19/85	Jati indiyāni	Jadindiyāni	(Tā)
30/22	Sajogī	Sajotī	(Kh)

Manuscripts used :

(A) Bhagawati-vritti (Panćapathī) Manuscript with original Text

This manuscript is from the Gadhaiya Library, Sardarshahr. It contains 189 leaves and 278 pages Each leaf is 13½" in length and 4⅝" in width. There are 1 to 23 lines of the original text on each leaf and each line has 80 –85 letters The copy has been prepared in a beautiful and artistic manner. There is a 'Wāwaṛi' (hollow space) also in the centre The year of the transcription has not been given. It is estimatedly written in the 15th-16th century.

(Ka) *Bhagvati Text* (*Manuscript*)

This copy is from the Poonamchand Budhamal Dūdhoria, Ćhapar library. It has 333 leaves and 666 pages Each leaf is 10½" long and 4½". wide There are 15 lines on each leaf and each line has 52-55 letters. The copy is a beautiful and artistic one There are intermitant Pūs (full-stops) in red ink and wāwari (hollow space). It dates back probably to the 16th country

(Kha) *The text on the palm-leaf* (*Manuscript*)

This manuscript has been received from Madan Chand ji Gothi, Sardar Shahr. It belongs to Jaisalmer Library and is a photo print of the original written on Tala Patra It has 422 leaves and 844 pages Every page contains 3 to 6 lines and there are 130-140 letters in each line The concluding eulogy has been written as ćha Mangalam Mahā [illegible] ćha ćha [illegible] ćha [illegible] Rā"

The year of the transcription has not been given but estimatedly it should be of the 12th century

(Tā) *The text of the Palm-leaf* (*Manuscript*)

This manuscript belongs to Jaisalmer Library and is a photo print of the Sutra written on the Talpatra This, too, has been received from Madan Chand ji Gothi of Sardar Shahr. It has 34[illegible] leaves and [illegible] pages. Each leaf has 5 to 9 lines and there are 130-140 letters in each line The last leaf is [illegible]. The concluding eulogy reads as follows :—

[illegible] Bhagavati Samatta [illegible] ćha [illegible] ćha [illegible] Sambat 12[illegible] [illegible]

[illegible]"

(Ba) *The text of Bhagawati (Manuscript)*

This manuscript belongs to Terapanthi Sabha, Sardar Shahr. It has 478 leaves and 956 pages. Each leaf is 10½" long and 4½" wide There are 13 lines on each leaf and each line contains 38-42 letters. The copy has been attractively and artistically prepared There are three 'Wawadis' and red lines in it. 'Hartal' (orpiment) has been used. The concluding eulogy is not given in it and hence the year of script is unknown. Estimatedly, it dates back to the 16th century

(Ma) *Bhagwati Sutra Text (Manuscript)*

This manuscript is from the Gadhaiyā Library, Sardar Shahr. It has 482 leaves and 964 pages Each leaf is 10¼" long and 4½" wide Each leaf has 13 lines on it and there are 40-45 letters in each line There are intermittant 'Pāis' (full stops) in red ink and Wāwadīs (hollow spaces).

The year of the script has not been given in the end but estimatedly it dates back to the 16th century The concluding eulogy reads as follows :—

ćha ‖ Granthāgram 15775 ‖ ćha ‖ ćha ‖ ‖ ćha ‖ Srī ‖ ćha ‖ Srī Kalyānamastu ‖ Śubham Bhawatu ‖ ćha ‖ Śri ‖ Śri ‖ ćha ‖ ćha ‖

The script has notes in Sanskrit in many places

(Sa) *Bhagwati Sutra (Tripathi)*

Known as Kesar Bhagwati, this manuscript is from the Terapanthi Bhandar, Ladnun It has 602 leaves and 1204 pages. The text is in the middle of the leaf while the 'vritti' has been given obove and below the text. This is a beautiful and sufficiently correct copy. Some reader, taking a printed copy as authentic has used 'Hartal' in many places and has tried to correct the text of this manuscript. Wherever it has been done so, the correct text has become incorrect Each leaf of it has 4 to 15 lines of the text on it, and each line contains 45-53 letters.

The concluding eulogy reads as follows :—

Srī Bhagwati Sūtram Sampūrnam ‖ ćha ‖ Srī Vivāha Pannatti Pañćamam angam Sammattam ‖ Śubham Bhavatu ‖ Kalayanamastu Granthāgram 15675 Ubhaya Milane Gran. 34291 ‖ Srī ‖ Likhatayati Dāhāmallah Śrī Nāgore Madhye Sam. 1848 Māha Su. 15 ‖

Wr, (Wripā) Printed

Publisher - Srīmatī Agamodaya Samiti.

ACKNOWLEDGEMENTS

The 'Vāćnā' has a very ancient history in the Jaina tradition. There had been four 'Vāćnās' of the Āgamas to date in different periods in the last fifteen centuries. There was no well planned Āgama-Vāćnā after Dewardhigani The Āgamas, written in his Vāćnā-time, have become very much disordered during the long past period A well planned 'Vaćnā' was the need of the day again to set them in order. Āćārya Tulsī had tried for a well planned congreagational Vaćnā but it could not materialize. Ultimately, we reached the conclusion that if our 'Vāćnā' is investigative, researching, full of a well balanced view and diligence, it will itself become congraegational With this decision in view, our work on this Āgama-Vāćnā began

Āćārya Tulsī is the Head of this Vāćan. Vāćan means to teach There are many aspects of teaching in our 'Vāćnā', i.e. redemption of the text, translation, critical study etc etc. In all such activities, we have received active participation, able guidance and inspiration from the Āćarya. This is the source of strength below this great task.

Only the expression of gratitude to him will not suffice Better it is that I must achieve the grace of his blessings for future work and prove myself more worthy of my duties.

In the editing of the present Āgama Muni Sudarsanji, Madhukarji, Hiralalji have given constant help to me in various ways. Apart from their valuable assistance, we had co-operation from Muni Śri Kanmalji, Ćhatramalji. Amolakćandji Dinkarji. Poonamćandji, Rajkaranji, Kanhaiyā Lalji, Tārāćandji, Balćandji, Vijairajji. Manilalji, Mahendra Kumarji (second) Sampatmalji (Doongargarh). Śantikumarji. Mohanlalji (Śārdūl) and Manna lalji Botad. The work of editing the text was started on the 9th dark-moon day in the month of Poush in the year 2029 of the Vikrama Era (28th December, 1972), in Sardār Śhahr (Rajasthan) and was completed in Delhi on the 11th day of bright-moon in Phālguna in the year 2030 of the Vikrama Era (4th March, 1974)

Muni Sudarśanji, Madhukarji, Hiralalji and Dulaharajji took great pains in critically examining the press-copy. The counting of the total syllables of the work has been prepared by Muni Mohanlalji (Āmet).

Valueing their contribution to the accomplishment of the work, I express my gratitude to them individually.

On this occasion, the erudite Āgama scholar and active participant in [illegible] of the Āgama, late Śrī Madan Candji Gothi, is very much [illegible]

Had he been alive, he would have been highly contented to see this work accomplished

The Managing editor of the Āgama Śrī Śrī Chānd ji Rampuriā has been devoted to the task of the Āgama from the beginning He has dedicated himself to the sternous work of making the Āgama Literature popular and handy to the public after giving up his well established practice of an advocate He has highly shown his faith and dedication in this publication of the'Āgama Suttani'

Sri Khem Chand ji Sethiā, President of the Jain Viśwa Bhārati and his co-workers and the staff of the Ādarśa Sahitya Sangha have worked diligently in collecting the material utilized in the edition of the text

Accounting the order of contribution to the same activity of the persons marching towards one and the same goal is nothing more than a formality. Actually, it is a solemn duty of us all and this is what we all have performed.

Anuvrata Vihar

New Delhi

Muni Nathmal

भगवई विसयाणुक्कम

तइयं सतं सू० १-२८१, पृ० १२१-१८२

उक्खेव-पद १, देवविकुव्वणा-पद ४, तामलिस्स ईसाणिंद-पद २५, सक्कीसाण-पद ५४, सणकुमार-पद ७२, चमरस्स भगवओ वदण-पद ७७, असुरकुमारवण्णग-पद ७६, चमरस्स उड्ढमुप्पाय-पद ६७, चमरस्स पुव्वभवे पूरणगाहावइ-पद ६६, पूरणस्स दाणामपव्वज्जा-पद १०२, पूरणस्स पाओवगमण-पद १०४, भगवओ एकराइयमहापडिमा-पद १०५, पूरणस्स चमरत्त-पद १०६, चमरस्स कोव-पद १०६, चमरस्स भगवओ णीमापुव्व सक्कस्स आमायण-पद ११२, सक्केदस्स वज्जपक्खेव-पद ११३, चमरस्स भगवओ सरण-पद ११४, सक्कस्स वज्जपडिसाहरण-पद ११५, सक्क-चमर-वज्जाण गडविसय-पद ११७, चमरस्स-चिंता-पद १२७, असुरकुमाराण उड्ढमुप्पयणस्स हेउ-पद १३१, किरिया-पद १३३, किरिया-वेदणा-पद १४०, अतकिरिया-पद १४३, पमत्तापमत्तद्धा-पद १४६ लवणसमुद्द-वुड्ढि-हाणि-पद १५२, भाविअप्प-पद १५४, वाउकाय-पद १६४, वलाहक-पद १७२, किलेसोववाय-पदं १८३, भाविअप्प-विकुव्वणा-पद १८६, भाविअप्प-अभिजुंजणा-पद २०६, भाविअप्प-विकुव्वणा-पद २२२, आयरक्ख-पद २४४, लोगपाल-पद २४७, सोम-पद २५०, यम-पद २५६, वरुण-पद २६१, वेसमण-पद २६६।

•

चउत्थ सत सू० १-६ पृ० १८३-१८५

ईसाण-लोगपाल-पद १, नेरइय-उववाय-पद ७, लेस्सा-पदं ८।

•

पचम सत सूत्र १-२६० पृ० १८६-२३२

जबूद्दीवे सूरिय-वत्तव्वया-पद १, जबूद्दीवे दिवसराई-वत्तव्वया-पद ४, जबुद्दीवे उउ-वत्तव्वया पद १३, जबुद्दीवे अयणादि-वत्तव्वया-पद १७, लवणसमुद्दादिसु सूरियादि-वत्तव्वया-पद २१, वाउ-पद ३१। ओदणादीण किमसरीरत्त-पद ५१, लवणसमुद्द-पद ५५, आउ-पकरण-पडिस वेदण-पद ५७, साउरमकमण-पद ५६, छउमत्थ-केवलीण सद्दसवण-पद ६४, छउमत्थ-केवलीण हास-पद ६८, छउमत्थ-केवलीण निद्दा-पद ७२, गब्भसाहरण-पद ७६, अइमुत्तग-पद ७८, महासुक्कागयदेव-पण्ह पद ८३, देवाण नोसजयवत्तव्वया-पद ८६, देवभासा-पद ६३, छउमत्थ-केवलीण नाणभेद-पद ६४, केवलीण पणीय-मण-वइ-पद १००, अणुत्तरोववाइयाण केवलिणा आलाव-पद १०३, केवलीण इदियनाण-निसेव-पद १०८, केवलीण जोगचचलया-पद ११०, चाहसपुव्वीण सामत्थ-पद ११२, मोक्ख-पद ११५, एवभूय-अणेवभूय-वेदणा-पद ११६, कुलगरादि-पद १२२, अप्पायु-दीहायु-पद १२४, असुभसुभ-दीहायु-पद १२६, कयविक्कए किरिया-पद १२८, अगणिकाए महाकम्मादि-पद १३३, धणुपक्खेवे किरिया-पद १३४, अण्णउत्थिय-पद १३६, नेरइयविउव्वण-पद १३८ आहाकम्मादिआहारे आराहणादि-

पद १३६, आयरिय-उवज्झायस्स सिद्धि-पदं १४७ अन्नाउत्थिएहिं कम्मबंध-पद १४७, परमाणु-खधाण एगयादि-पद १५०, परमाणु-खंधाण छेदादि-पद १५४, परमाणु-खंधाण सअड्ढसमज्झादि-पद १६०, परमाणु-खंधाण परोप्पर फुसणा-पद १६५, परमाणु-खंधाण सठि-पद १६६, परमाणु-खंधाण अंतरकाल-पद १९५, परमाणु-खंधाण परोप्पर अप्पाबहुयत्त-पद १८१, जीवाण सारंभ सपरिग्गह-पद १८२, हेउ-पद १९१, नियंठिपुत्त-नारयपुत्तपद २००, जीवाण-वुड्ढि-हाणि-अवट्ठिइ-पद २०८, जीवाण सोवचय-सावचयादि-पद २२५, किमिदरायगिह-पद २३५, उज्जोय-अंधयार-पद २३७ मणुस्सखेत्ते समयादि-पद २४८, पासावच्चिज्ज-पद २५४ देवलोय-पद २५८।

•

छट्ठं सतं सु० १-८६ पृ० २२३-२७०

पगस्थनिज्जराए सेयत्त-पद १, करण-पद ५, महावेदणा-महानिज्जरा-उभग-पद १५, महाकम्मादीण पोग्गलबंधादि-पद २०, अप्पकम्मादीण पोग्गलभेदादि-पद २२, कम्मोवचय-पदं २४, कम्मोवचयस्स सादि-अनादित्त-पद २७, जीवाण सादि-अनादित्त-पद ३०, कम्मपगडी बंध ठिति-पद ३३, वेदगावेदगाण जीवाण अप्पाबहुयत्त-पद ५२, कालादेसेण सपदेस-अपदेस-पद ५४, पच्चक्खाणादि-पद ६४, तमुक्काय-पद ७०, कण्हराइ-पद ८६, लोगंतियदेव-पद १०६, नेरइयादीण आवास-पद १२०, मारणंतियसमुग्घाय-पद १२२, धन्नाण जोणि-ठिइ-पद १२६, गणणा-काल-पद १३२, ओवमिय-काल-पद १३३, सुसम-सुसमाए भरहवास-पद १३५, पुढवि-आदिसु गेहादिनिरूवणा-पद १३७, आउबंध-पद १५१, लवणादिसमुद्द-पद १५५, कम्मपगडिबंध-पद १६२, महिड्ढीयदेव-विउव्वणा-पद १६३, अविसुद्धलेसादि देवाण जाणणा-पासणा-पद १६८, दुक्ख-सुह-उवदंसण-पद १७१ जीव-वेयणा-पद १७४, वेदणा-पद १८३, नेरइयादीण आहार-पद १८६ केवलिस्स नाण-पद १८७।

•

सत्तमं सतं सु० १-२१२ पृ० २७१-३१४,

[illegible]

•

अट्ठमं सतं सू० १-५०४ पृ० ३१५-३६७

पढमं सतं

पढमो उद्देसो

मंगल-पदं

१. नमो[1] अरहंताणं[2],
नमो सिद्धाणं,
नमो आयरियाणं[3],
नमो उवज्झायाणं,
नमो सव्वसाहूणं[4] ॥

२. नमो बंभीए[5] लिवीए ॥

संगहणी-गाहा

रायगिहे १-चलण २-दुक्खे, ३-कंखपओसे य ४-पगइ ५-पुढवीओ ।
६-जावंते ७-नेरइए, ८-बाले[6] ९-गुरुए य १०-चलणाओ ॥१॥

३ नमो सुयस्स ॥

उवक्खेव-पदं

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं[7] नयरे होत्था—वण्णओ[8] ॥

५. तस्स णं रायगिहस्स नगरस्स बहिया[9] उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे गुणसिलए नामं चेइए होत्था ॥

६. सेणिए राया, चिल्लणा देवी[10] ॥

---

१. णमो (क) ।
२. [illegible] (क, ख, वृत्ता) [illegible] (वृत्ता) ।
३. [illegible] (ग) ।
४. [illegible] (क, ख, ग, घ, च, वृत्ता) ।
५. [illegible] (ग, घ) ।
६. [illegible] (ग) ।
७. णाम (क) ।
८. [illegible] ।
९. [illegible] (ग) ।
१०. [illegible] (ग, घ) ।

७ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे सहसंबुद्धे[1] पुरिसुत्तमे[2] पुरिससीहे[3] पुरिसवरपोंडरीए[4] पुरिसवरगंधहत्थी[5] लोगुत्तमे[6] लोगनाहे[7] लोगपदीवे[8] लोगपज्जोयगरे[9] अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए[10] धम्मदेसए[11] धम्मसारही धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी अप्पडिहयवरनाणदंसणधरे वियट्टछउमे जिणे जाणए बुद्धे बोहए मुत्ते[12] मोयए सव्वण्णू सव्वदरिसी[13] सिवमयलमरुय-मणंतमक्खयमव्वाबाहं[14] सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपाविउकामे जाव[15] •पुव्वाणु-पुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव रायगिहे नगरे जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ° ।।

८ परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ । पडिगया परिसा[16] ।।

९ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती नामं अणगारे 'गोयमसगोत्ते णं'[17] सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसभ-नारायसंघयणे[18] कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे[19] महातवे ओराले[20] घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी 'उच्छूढसरीरे संखित्तविउल-तेयलेस्से'[21] चोद्दसपुव्वी चउनाणोवगए सव्वक्खरसन्निवाती समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू[22] अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

१० तते णं से भगवं गोयमे जायसड्ढे जायसंसए जायकोउहल्ले उप्पन्नसड्ढे उप्पन्न-संसए उप्पन्नकोउहल्ले संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोउहल्ले समुप्पन्नसड्ढे

१ सय° (अ) ।
२. पुरिसोत्तमे (अ), पुरुमुत्तमे (व) ।
३. पुरिससीहे (ता) सर्वत्र ।
४. पुरिसवरपुंडरीए (ता) ।
५ °हत्थीए (अ) ।
६. लोगोत्तमे (अ, व) ।
७. °नाहे लोगहिए (अ) ।
८ °पईवे (ता, क) ।
९. °करे (क) ।
१० °दए बोहिदए (अ, ता) ।
११ धम्मदए धम्मदेसए धम्मनायगे (अ), धम्मदए, धम्मदेसए (क, ता, व), धम्म-दर्शनि पाठान्तरम् (वृ०) ।
१२. मुत्ते (व) ।
१३. सव्वदंसी (ता) ।
१४ °बाहमपुणरावत्तय (अ, व), सिवमचल-मरुज° (क) ।
१५ सं० पा०—जाव समोसरणं । ओ० सू० १९-५१ ।
१६ पू०—ओ० सू० ५२-८१ ।
१७ गोयमे गोत्तेणं (अ, ता, व), गोयम-सगुत्ते णं (क), गोयमगोत्तेणं (म) ।
१८ °रिसह° (क, म) ।
१९. तत्ततवे घोरतवे (क) ।
२०. उराले (अ, ता, व, म, वृपा) ।
२१. °तेयलेसे (अ); °तेअलेस्से (क); °तेउलेस्से (म), मूलटीकाकृता तु 'उच्छूढ-सरीरमंखित्तविउलतेयलेस' त्ति कर्मधारयं कृत्वा व्याख्यातमिति (वृ) ।
२२ उड्ढंजाणू (क, ता), उड्ढजाणु (म) ।

समुप्पन्नसड्ढे समुप्पन्नकोउहल्ले उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासन्ने णातिदूरे[1] सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे[2] पज्जुवासमाणे एवं वयासी[3]—

चलमाण-पदं

११. से नूणं भंते! चलमाणे चलिए? उदीरिज्जमाणे उदीरिए? वेदिज्जमाणे[4] वेदिए? पहिज्जमाणे पहीणे? छिज्जमाणे[5] छिण्णे? भिज्जमाणे भिण्णे? 'दज्झमाणे दड्ढे'[6]? मिज्जमाणे[7] मए[8]? निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे?

हंता गोयमा! चलमाणे चलिए[9]। °उदीरिज्जमाणे उदीरिए। वेदिज्जमाणे वेदिए। पहिज्जमाणे पहीणे। छिज्जमाणे छिण्णे। भिज्जमाणे भिण्णे। दज्झमाणे दड्ढे। मिज्जमाणे मए।° निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे ॥

१२. एए णं भंते! नव पदा[10] किं एगट्ठा नाणाघोसा नाणावंजणा? उदाहु नाणट्ठा नाणाघोसा नाणावंजणा?

गोयमा! चलमाणे चलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए, वेदिज्जमाणे वेदिए, पहिज्जमाणे पहीणे[11]—एए णं चत्तारि पदा एगट्ठा नाणाघोसा नाणावंजणा उप्पण्णपक्खस्स।

छिज्जमाणे छिण्णे, भिज्जमाणे भिण्णे, दज्झमाणे दड्ढे, मिज्जमाणे मए, निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे—एए णं पंच पदा नाणट्ठा नाणाघोसा नाणावंजणा विगयपक्खस्स ॥

नेरइयाणं ठिइआदि-पदं

१३. नेरइयाणं भंते! केवइयं[12] कालं ठिई पण्णत्ता?
गोयमा! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

---

१. [illegible]
२. [illegible]
३. [illegible]
४. [illegible]
५. [illegible]
६. [illegible]
७. [illegible]
८. [illegible]
९. [illegible]
१०. [illegible]
११. [illegible]
१२. [illegible]
१३. [illegible]

१४ नेरइया णं भंते ! केवइकालस्स आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? णीससंति वा ?
जहा उस्सासपदे[1] ॥

१५. नेरइया ण भंते ! आहारट्ठी ?
हंता गोयमा ! आहारट्ठी। जहा पण्णवणाए पढमए आहारुद्देसए[2] तहा भाणियव्व—

संगहणी-गाहा

ठिइ उस्सासाहारे, किं वाऽऽहारेंति सव्वओ वावि ?
कतिभागं सव्वाणि व ? कीस व भुज्जो परिणमंति ? ॥१॥

१६ नेरइयाणं भंते ! पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया ?
आहारिया आहारिज्जमाणा पोग्गला परिणया ?
अणाहारिया आहारिज्जिस्समाणा[3] पोग्गला परिणया ?
अणाहारिया अणाहारिज्जिस्समाणा पोग्गला परिणया ?

गोयमा ! नेरइयाणं पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया ।
आहारिया आहारिज्जमाणा पोग्गला परिणया, परिणमंति[4] य ।
अणाहारिया आहारिज्जिस्समाणा पोग्गला णो परिणया, परिणमिस्संति ।
अणाहारिया अणाहारिज्जिस्समाणा पोग्गला णो परिणया, णो परिणमिस्संति ॥

१७. नेरइयाणं भंते ! पुव्वाहारिया पोग्गला चिया ? पुच्छा—
जहा परिणया[5] तहा चियावि ॥

१८. एवं—उवचिया, उदीरिया, वेइया, निज्जिण्णा ।

संगहणी-गाहा

परिणय 'चिया उवचिया'[6] उदीरिया[7] वेइया[8] य निज्जिण्णा ।
एक्केक्कम्मि पदम्मि,[9] चउव्विहा पोग्गला होंति[10] ॥१॥

---

१. प० ७ ।
२. प० २८।१ ।
३. आहारिज्जस्स० (क) ।
४ परिणमयंति (ता) ।
५. भ० १।१६ ।
६. चिता य उवचिता (अ), चिन उवचिन (म)
७. उदीरित (ता) ।
८ वेतिया (म) ।
९ पदमी (व)।
१०. अतोग्रे 'ता' प्रतौ एतावानतिरिक्त: पाठो लभ्यते—
नेरइयाणं भंते ! पुव्वाहारिया पोग्गला निज्जिण्णा । तहेव ।

१९. नेरइया णं भंते ! कइविहा पोग्गला भिज्जंति ?
गोयमा ! कम्मदव्ववग्गणमहिकिच्च दुविहा पोग्गला भिज्जंति, तं जहा—अणू चेव, बादरा चेव ॥

२०. नेरइया णं भंते ! कइविहा पोग्गला चिज्जंति ?
गोयमा ! आहारदव्ववग्गणमहिकिच्च[1] दुविहा पोग्गला चिज्जंति, तं जहा—अणू चेव, बादरा चेव ॥

२१. एवं उवचिज्जंति[2] ॥

२२. नेरइया णं भंते ! कइविहे पोग्गले उदीरेंति[3] ?
गोयमा ! कम्मदव्ववग्गणमहिकिच्च दुविहे पोग्गले उदीरेंति, तं जहा—अणू चेव, बादरा चेव ॥

२३. सेसावि एवं चेव भाणियव्वा[4]—वेदेंति, निज्जरेंति ॥

२४. एवं[5]—ओयट्टेसु[6], ओयट्टेंति, ओयट्टिस्संति ।
संकामिंसु, संकामेंति, संकामिस्संति ।
निहत्तिंसु,[7] निहत्तेंति, निहत्तिस्संति ।
निकाइंसु, निकायंति, निकाइस्संति[8] ।

संगहणी-गाहा

भेदिया[9] चिया उवचिया, उदीरिया वेदिया य निज्जिण्णा ।
ओयट्टण संकामण, निहत्तण निकायणे तिविहकालो ॥१॥

२५. नेरइया णं भंते ! जे पोग्गले तेयाकम्मत्ताए गेण्हंति, ते किं तीतकालसमए गेण्हंति ? पडुप्पन्नकालसमए गेण्हंति ? अणागयकालसमए गेण्हंति ?
गोयमा ! नो तीयकालसमए गेण्हंति, पडुप्पन्नकालसमए गेण्हंति, नो अणागयकालसमए गेण्हंति ॥

२६. नेरइया णं भंते ! जे पोग्गले तेयाकम्मत्ताए गहिए[10] उदीरेंति, ते किं तीयकालसमयगहिए पोग्गले उदीरेंति ? पडुप्पन्नकालसमए[11] घेप्पमाणे पोग्गले उदीरेंति ? गहणसमयपुरक्खडे पोग्गले उदीरेंति ?

---

१. [illegible] (अ, ब) ।
२. [illegible] (ता) ।
३. उदीरेंति (ब) ।
४. [illegible] (अ, [illegible]) ।
५. [illegible] ।
६. [illegible] ।
७. [illegible] (ता) [illegible] ।
८. [illegible] ।
९. [illegible] (ता) ।
१०. [illegible] ।
११. [illegible] ।

गोयमा ! तीयकालसमयगहिए पोग्गले उदीरेति, नो पडुप्पन्नकालसमए घेप्पमाणे पोग्गले उदीरेति, नो गहणसमयपुरक्खडे पोग्गले उदीरेति ॥

२७. एव—वेदेति, निज्जरेति[1] ॥

२८. नेरइया ण भते ! जीवाओ किं चलिय कम्म बधति ? अचलिय कम्म बधति ?

गोयमा ! नो चलियं कम्म बधति, अचलिय कम्म बंधति ॥

२९. नेरइयाण भते ! जीवाओ कि चलिय कम्मं उदीरेति ? अचलिय कम्म उदीरेति ?

गोयमा ! नो चलिय कम्म उदीरेति, अचलिय कम्म उदीरेति ॥

३०. एव—वेदेति, ओयट्टेति, सकामेंति, निहत्तेति[2], निकाएति[3] ॥

३१. नेरइया ण भते ! जीवाओ किं चलियं कम्म निज्जरेति ? अचलिय कम्म निज्जरेति ?

गोयमा ! चलिय कम्म निज्जरेति, नो अचलिय कम्म निज्जरेति ॥

संगहणी-गाहा

> बधोदयवेदोयट्टसकमे[4] तह निहत्तणनिकाए ।
> अचलिय-कम्म तु भवे, चलिय जीवाउ निज्जरए[5] ॥१॥

३२. एव[6] ठिई आहारो य भाणियव्वो । ठिती जहा—

---

१. निज्जरति (ता, व) ।

२. निवत्तेति (ता) ।

३ अतोग्रे 'अ' प्रतौ एतावानतिरिक्त पाठो लभ्यते—
सव्वेसु अचलिय नो चलिय ।
'ता' प्रतौ च—सव्वेसु नो चलिय अचलिय ।

४. °वट्ट° (अ), ° व्वट्ट° (ता) ।

५. निज्जरिए (अ, ता, व), निज्जरइ (क) ।

६ अत्र विस्तृता वाचनापि लभ्यते । तस्या 'जहा नेरइयाण' इत्यादि समर्पणपदानि लभ्यन्ते, किन्तु पूर्ववर्ति—नैरयिकपदे तानि न विद्यन्ते, तेन सक्षिप्तैव वाचना मूलपाठरूपेणादृता । विस्तृता चैवम्—
असुरकुमाराण भंते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण दस वाससहस्साइ, उक्कोसेण सातिरेग सागरोवम ॥
असुरकुमारा ण भते ! केवइकालस्स आणमति वा पाणमति वा ? ऊससति वा ? णीससति वा ?
गोयमा ! जहण्णेण सत्तण्ह थोवाण, उक्कोसेण साइरेगस्स पक्खस्स आणमति वा, पाणमति वा, ऊससति वा, णीससति वा,
असुरकुमाराण भते ! आहारट्ठी ?
हता आहारट्ठी ।
असुरकुमाराण भते ! केवइकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ?
गोयमा ! असुरकुमाराण दुविहे आहारे पण्णत्ते, त जहा—
आभोगनिव्वत्तिए य अणाभोगनिव्वत्तिए

दुक्खत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ॥

काइयाण, नवरं ठिती वण्णेयव्वा जा जस्स, उस्सासो वेमायाए।

बेइंदियाण ठिई भाणियव्वा, ऊसासो वेमायाए।

बेइंदियाण आहारे पुच्छा, गोयमा! आभोगनिव्वत्तिए य अणाभोगनिव्वत्तिए य तहेव। तत्थ णं जे से आभोगनिव्वत्तिए, से णं असंखेज्जसमए अंतोमुहुत्तिए वेमायाए आहारट्ठे समुप्पज्जइ। सेसं तहेव जाव अणंतभागं आसाएंति।

बेइंदिया णं भंते! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति ते किं सव्वे आहारेंति, णो सव्वे आहारेंति?

गोयमा! बेइंदियाणं दुविहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा—लोमाहारे पक्खेवाहारे य। जे पोग्गले लोमाहारत्ताए गिण्हंति ते सव्वे अपरिसेसिए आहारेंति। जे पोग्गले पक्खेवाहारत्ताए गिण्हंति तेसिं णं पोग्गलाणं असंखिज्जइभागं आहारेंति, णेगाइं च णं भागसहस्साइं अणासाइज्जमाणाइं अफासिज्जमाणाइं विद्धंसमावज्जंति।

एएसि णं भंते! पोग्गलाणं अणासाइज्जमाणाणं अफासाइज्जमाणाण य कयरे-कयरे अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा?

गोयमा! सव्वत्थोवा पोग्गला अणासाइज्जमाणा, अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा।

बेइंदिया णं भंते! जे पोग्गला आहारत्ताए गिण्हंति ते णं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति?

गोयमा! जिब्भिंदियफासिंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति।

बेइंदियाणं भंते! पुव्वाहारिया पुग्गला परिणया? तहेव जाव चलियं कम्मं निज्जरेंति।

तेइंदियचउरिंदियाणं णाणत्तं ठिईए जाव णेगाइं च णं भागसहस्साइं अणासाइज्जमाणाइं अणासाइज्जमाणाइं अफासाइज्जमाणाइं विद्धंसमावज्जंति।

एएसि णं भंते! पोग्गलाणं अणाघाइज्जमाणाइं ३ पुच्छा।

गोयमा! सव्वत्थोवा पोग्गला अणाघाइज्जमाणा, अणासाइज्जमाणा अणंतगुणा, अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा। तेइंदियाणं घाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति।

चउरिंदियाणं चक्खि(क्खु)दियघाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति।

पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं ठिई भणिऊण ऊसासो वेमायाए। आहारो अणाभोगनिव्वत्तिए अणुसमयं अविरहिओ। आभोगनिव्वत्तिओ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तस्स, उक्कोसेणं छट्ठभत्तस्स। सेसं जहा चउरिंदियाणं जाव चलियं कम्मं निज्जरेंति।

एवं मणुस्साणवि, नवरं आभोगनिव्वत्तिए जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अट्ठमभत्तस्स, सोइंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति। सेसं जहा चउरिंदियाणं तहेव जाव निज्जरेंति।

वाणमंतराणं ठिईए नाणत्तं, परिणमंति अवसेसं जहा नागकुमाराणं। एवं जोइसियाणवि, नवरं उस्सासो जहण्णेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्कोसेणवि मुहुत्तपुहुत्तस्स। आहारो जहण्णेणं दिवसपुहुत्तस्स, उक्कोसेणवि दिवसपुहुत्तस्स। सेसं तहेव।

वेमाणियाणं ठिई भाणियव्वा ओहिया। ऊसासो जहण्णेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं। आहारो आभोगनिव्वत्तिओ जहण्णेणं दिवसपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्तीसाए वाससहस्साणं। सेसं चलियाइयं तहेव जाव निज्जरेंति (क, ता, वृ, प० २८।१)।

आरंभ-अणारंभ-पदं

३३. जीवा णं भंते ! किं आयारंभा ? परारंभा ? तदुभयारंभा ? अणारंभा ?
गोयमा ! अत्थेगइया जीवा आयारंभा वि, परारंभा वि, तदुभयारंभा वि, णो अणारंभा ॥
अत्थेगइया जीवा नो आयारंभा, नो परारंभा, नो तदुभयारंभा, अणारंभा ॥

३४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया जीवा आयारंभा वि, [1]•परारंभा वि, तदुभयारंभा वि, णो अणारंभा ? अत्थेगइया जीवा नो आयारंभा, नो परारंभा, नो तदुभयारंभा, अणारंभा° ?
गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संसारसमावण्णगा य, असंसारसमावण्णगा य ।
तत्थ णं जे ते असंसारसमावण्णगा, ते णं सिद्धा । सिद्धा णं नो आयारंभा, •नो परारंभा, नो तदुभयारंभा°, अणारंभा ।
तत्थ णं जे ते संसारसमावण्णगा, ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संजया य, असंजया य ।
तत्थ णं जे ते संजया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पमत्तसंजया य, अप्पमत्तसंजया य ।
तत्थ णं जे ते अप्पमत्तसंजया, ते णं नो आयारंभा, नो परारंभा,[2] •नो तदुभयारंभा°, अणारंभा ।
तत्थ णं जे ते पमत्तसंजया, ते सुहं जोगं पडुच्च नो आयारंभा,[3] •नो परारंभा, नो तदुभयारंभा°, अणारंभा । असुभं जोगं पडुच्च आयारंभा वि,[4] •परारंभा वि, तदुभयारंभा वि°, नो अणारंभा ।
तत्थ णं जे ते असंजया[6], ते अविरतिं पडुच्च आयारंभा वि[5], •परारंभा वि, तदुभयारंभा वि°, नो अणारंभा । से तेणट्ठेणं[8] गोयमा ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया जीवा[7] •आयारंभा वि, परारंभा वि, तदुभयारंभा वि, नो अणारंभा । अत्थेगइया जीवा नो आयारंभा, नो परारंभा, नो तदुभयारंभा,° अणारंभा ॥

३५. नेरइया णं भंते ! किं आयारंभा ? परारंभा ? तदुभयारंभा ? अणारंभा ?

---

१. सं० पा० — [illegible] ।
२. सं० पा० — [illegible] जाव अणारंभा ।
३. सं० पा० — [illegible] जाव [illegible] ।
४. सं० पा० — [illegible] जाव [illegible] ।
५. सं० पा० — [illegible] ।
६. असंजया (ता, ब) ।
७. सं० पा० — [illegible] ।
८. [illegible] (ख, ता), [illegible] (ता, ब, म) ।
९. सं० पा० — [illegible] ।

गोयमा ! •नेरइया आयारभा वि[1], परारभा वि, तदुभयारभा वि,° नो अणारभा ॥

३६. से केणट्ठेण ?

गोयमा ! अविरति पडुच्च । से तेणट्ठेण[2] •गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया आयारभा वि, परारभा वि, तदुभयारभा वि,° नो अणारभा[3] ॥

३७. एव जाव[4] पचिदियतिरिक्खजोणिया । मणुस्सा जहा जीवा, नवर—सिद्धविरहिया भाणियव्वा । वाणमतरा जोइसिया वेमाणिया तहा नेरइया[5] ॥

३८. सलेस्सा जहा ओहिया[6] । कण्हलेसस्स[7], नीललेसस्स काउलेसस्स, जहा ओहिया जीवा, नवर—पमत्तापमत्ता न भाणियव्वा[8] । तेउलेसस्स, पम्हलेसस्स, सुक्कलेसस्स जहा ओहिया जीवा, नवर—सिद्धा न भाणियव्वा ॥

---

१ स० पा०—वि जाव नो ।

२. स० पा०—तेणट्ठेण जाव नो ।

३. अणारभा एव असुरकुमारा वि जाव (ता) ।

४. पू० प० २ ।

५ भ० १।३५, ३६ ।

६ भ० १।३३, ३४ । 'सिद्धा न भाणियव्वा' इति अध्याहर्तव्यम् । 'सिद्धानामलेश्यत्वात्'—इति वृत्तिकार ।

७. किण्ह° (अ) ।

८ कण्हलेस्सा ण भते ! जीवा कि आयारभा ? परारभा ? तदुभयारभा ? अणारभा ?

गोयमा ! अत्थेगइया कण्हलेस्सा जीवा आयारभा वि, परारभा वि, तदुभयारभा वि, नो अणारभा ।

अत्थेगइया कण्हलेस्सा जीवा नो आयारभा, नो परारभा, नो तदुभयारभा, अणारभा ।

से केणट्ठेण जाव अणारभा ?

गोयमा ! कण्हलेस्सा जीवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सजया य असजया य ।

तत्थ ण जे ते सजया ते सुह जोग पडुच्च नो आयारभा जाव अणारभा ।

असुभ जोग पडुच्च आयारभा वि जाव नो अणारभा ।

तत्थ ण जे ते असजया ते अविरति पडुच्च आयारभा वि जाव नो अणारभा । से तेणट्ठेण जाव अणारभा ।

नीलकापोतलेश्याना एष एव गम ।

तेउलेस्सा ण भते ! जीवा कि आयारभा जाव अणारभा ?

गोयमा ! अत्थेगइया आयारभा वि जाव नो अणारभा, अत्थेगइया आयारभा वि जाव नो अणारभा, अत्थेगइया नो आयारभा जाव नो अणारभा ।

से केणट्ठेण ?

गोयमा ! दुविहा तेउलेस्सा पण्णत्ता, त जहा—सजया य असजया य ।

तत्थ ण जे ते सजया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पमत्तसजया य, अप्पमत्तसजया य ।

तत्थ ण जे ते अप्पमत्तसजया ते ण नो आयारभा जाव अणारभा ।

तत्थ ण जे ते पमत्तसजया ते सुह जोग पडुच्च नो आयारभा जाव अणारभा । असुभ जोग पडुच्च आयारभा वि जाव नो अणारभा ।

तत्थ ण जे ते असजया ते अविरति पडुच्च आयारभा वि जाव नो अणारभा । से तेणट्ठेण जाव अणारभा ।

नाणादीणं भवंतर-संकमण-पदं

३९. इहभविए भंते ! नाणे ? परभविए नाणे ? तदुभयभविए नाणे ?
गोयमा ! इहभविए वि नाणे, परभविए वि नाणे, तदुभयभविए वि नाणे ॥

४०. °इहभविए भंते ! दंसणे ? परभविए दंसणे ? तदुभयभविए दंसणे ?
गोयमा ! इहभविए वि दंसणे, परभविए वि दंसणे, तदुभयभविए वि दंसणे° ॥

४१. इहभविए भंते ! चरित्ते ? परभविए चरित्ते ? तदुभयभविए चरित्ते ?
गोयमा ! इहभविए चरित्ते, नो परभविए चरित्ते, नो तदुभयभविए चरित्ते ॥

४२. °इहभविए भंते ! तवे ? परभविए तवे ? तदुभयभविए तवे ?
गोयमा ! इहभविए तवे, नो परभविए तवे, नो तदुभयभविए तवे ॥

४३. इहभविए भंते ! संजमे ? परभविए संजमे ? तदुभयभविए संजमे ?
गोयमा ! इहभविए संजमे, नो परभविए संजमे, नो तदुभयभविए संजमे° ॥

असंवुड-संवुड-अणगार-पदं

४४. असंवुडे[1] णं भंते ! अणगारे[2] सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्व-दुक्खाणं अंतं करेइ ?

पम्हसुक्कलेस्याना एष एव गमः ।

अभयदेवसूरिभिः भिन्नमतमनुसृत्य कृष्ण-लेश्यादिपाठो व्याख्यातः । कृष्णादिषु हि अप्रमत्त-भावलेश्यासु संयतत्वं नास्ति एतद्मतमनुसृत्य तैरेव पाठरचना कृता—"कण्हलेस्सा णं भंते ! जीवा किं आयारंभा परारंभा तदुभयारंभा अणारंभा ?
गोयमा ! आयारंभा वि जाव नो अणारंभा ।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ?
गोयमा ! अविरतिं पडुच्च" एवं नील-[illegible]
[illegible]

(१) सूत्रकृता "अप्रमत्तसंयता न भणितव्या" इति निर्दिष्टं, [illegible] किन्तु "[illegible] न भणितव्या" इति न सूचितम् ।

(२) [illegible]

भंते ! कतिसु लेसासु होज्जा ? गोयमा ! छल्लेस्सासु होज्जा, तं जहा—कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए ।

अस्य वृत्तौ अभयदेवसूरिणा एतद् व्याख्यातमस्ति—[illegible] षट्स्वपि [illegible] (वृ) ।

(३) प्रज्ञापनासूत्रे [illegible] मनःपर्यवज्ञानस्य अस्तित्वं प्रतिपादितम्—कण्हलेस्से णं भंते ! जीवे कतिसु णाणेसु होज्जा ? गोयमा ! दोसु वा तिसु वा चउसु वा णाणेसु होज्जा (प० १७।३) ।
[illegible] (वृ०) ।

(४) [illegible]

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]

गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

४५ से केणट्ठेण[1] •भंते ! एव वुच्चइ—असवुडे ण अणगारे नो सिज्झइ, नो बुज्झइ, नो मुच्चइ, नो परिनिव्वाइ°, नो सव्वदुक्खाण अत करेइ ?
गोयमा ! असवुडे अणगारे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ, हस्सकालठिइयाओ[2] दीहकालठिइयाओ पकरेइ, मदाणुभावाओ[3] तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पपएसग्गाओ[4] बहुप्पएसग्गाओ पकरेइ, आउय च ण कम्म सिय बधइ, सिय नो बधइ, अस्सायावेयणिज्ज च ण कम्म भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइय च ण अणवदग्ग[5] दीहमद्ध चाउरत[6] ससारकतार अणुपरियट्टइ। से तेणट्ठेण गोयमा ! असवुडे अणगारे नो सिज्झइ, नो बुज्झइ, नो मुच्चइ, नो परिनिव्वाइ, नो सव्वदुक्खाण अत करेइ ॥

४६. सवुडे ण भते ! अणगारे सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाण अत करेइ ?
हता ! सिज्झइ,[7] •बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाण° अत करेइ ॥

४७. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सवुडे ण अणगारे सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाण अतं करेइ ?
गोयमा ! सवुडे अणगारे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ[8] धणियबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ, दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ, तिव्वाणुभावाओ मदाणुभावाओ पकरेइ, बहुप्पएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ, आउय च ण कम्म न बधइ, अस्सायावेयणिज्ज च ण कम्म नो भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणादीय च ण अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत ससारकतार वीईवयइ[9]। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सवुडे अणगारे सिज्झइ[10], •बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाण° अत करेइ ॥

असंजयस्स वाणमंतरदेव-पदं

४८ जीवे ण भते ! अस्सजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे इओ चुए पेच्चा[11] देवे सिया ?
गोयमा ! अत्थेगइए देवे सिया, अत्थेगइए णो देवे सिया ॥

---

१. स० पा०—केणट्ठेण जाव नो ।
२. ह्रस्स° (ता), ह्रस्स° (म) ।
३ ° भागाओ (ता, म) ।
४ ° सग्गाओ (व) ।
५. अणवयग्ग (अ) ।
६ चाउरन्त (व, स, म) ।
७ स० पा०—सिज्झइ जाव अत ।
८. ° प्पग ° (स) ।
९ वीतीवतति (क, व, म) ।
१० स० पा०—सिज्झइ जाव अत ।
११ पिच्चा (अ, क, व) ।

४९. से केणट्ठेणं[1] °भंते ! एवं वुच्चइ—अस्संजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे° इओ चुए पेच्चा अत्थेगइए देवे सिया, अत्थेगइए नो देवे सिया ?

गोयमा ! जे इमे जीवा गामागर-नगर-निगम[2]-रायहाणि-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासम-संणिवेसेसु अकामतण्हाए, अकामछुहाए, अकामबंभचेरवासेणं, 'अकामसीतातव-दंस-मसग[3]-अण्हाणग[4]-सेय-जल्ल-मल-पंक-परिदाहेणं 'अप्पतरं वा भुज्जतरं[5] वा कालं अप्पाणं परिकिलेसंति, परिकिलेसित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ॥

५०. केरिसा णं भंते ! तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा पण्णत्ता ?

गोयमा ! से जहानामए इहं[6] असोगवणे इ वा, सत्तवण्णवणे[7] इ वा, चंपयवणे इ वा, चूयवणे इ वा, तिलगवणे इ वा, लउयवणे[8] इ वा, णग्गोहवणे[9] इ वा, छत्तोहवणे[10] इ वा, असणवणे इ वा, सणवणे इ वा, अयसिवणे इ वा, कुसुंभवणे इ वा, सिद्धत्थवणे इ वा, बंधुजीवगवणे इ वा, णिच्चं[11] कुसुमिय-माइय-लवइय-थवइय-गुलइय-गोच्छिय-जमलिय[12]-जुवलिय-विणमिय-पणमिय-सुविभत्तपिंडिमंजरि-वडेंसगधरे[13] सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ।

एवामेव[14] तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएहिं, उक्कोसेणं पलिओवमट्ठितीएहिं, बहूहिं वाणमंतरेहिं देवेहि य देवीहि य आइण्णा वितिकिण्णा[15] उवत्थडा संथडा फुडा अवगाढगाढा सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति।

एरिसगा णं गोयमा ! तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा पण्णत्ता, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवे णं अस्संजए[16] °अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे इओ चुए पेच्चा अत्थेगइए° देवे सिया ॥

---

1. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव इओ।
2. नियम (ता)।
3. वृत्तौ '[illegible]-दंस-मसग' इति पाठो [illegible]।
4. [illegible] (क, ब)।
5. [illegible]
6. [illegible] (क, ख, ब, म)।
7. [illegible] (म)।
8. [illegible] (क, ख, ता, ब)।
9. [illegible] (ता); [illegible] (म)।
10. [illegible] (म)।
11. [illegible] (क, ख, ता, ब)।
12. [illegible] (म)।
13. [illegible] (म), [illegible] (ता)।
14. [illegible] (ता, म)।
15. [illegible] (क, ख, वृपा), [illegible] (वृ)।
16. सं० पा०—[illegible]

५१—सेव भते ! सेव भते ! त्ति भगव गोयमे समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरति ॥

बीओ उद्देसो

५२ रायगिहे नगरे समोसरण। परिसा णिग्गया जाव[1] एव वयासी—

कम्म-वेयण-पदं

५३ जीवे ण भते ! सयकड दुक्ख वेदेइ ?
गोयमा ! अत्थेगइय वेदेइ, अत्थेगइय नो वेदेइ ॥

५४. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगइय वेदेइ ? अत्थेगइय नो वेदेइ ?
गोयमा ! उदिण्ण वेदेइ, 'नो अणुदिण्ण'[2] वेदेइ। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—अत्थेगइय वेदेइ, अत्थेगइय नो वेदेइ ॥

५५. एव[3]—जाव वेमाणिए ॥

५६ जीवा ण भते ! सयकड दुक्ख वेदेति ?
गोयमा ! अत्थेगइय वेदेति, अत्थेगइय नो वेदेति ॥

५७ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगइय वेदेति ? अत्थेगइय नो वेदेति ?
गोयमा ! उदिण्ण वेदेति, नो अणुदिण्ण वेदेति। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—अत्थेगइय वेदेति, अत्थेगइयं नो वेदेति ॥

५८ एव—जाव[4] वेमाणिया ॥

५९ जीवे ण भते ! सयकड आउय वेदेइ ?
गोयमा ! अत्थेगइय वेदेइ, अत्थेगइय नो वेदेइ। जहा[5] दुक्खेण दो दडगा तहा आउएण वि दो दडगा—एगत्त-पोहत्तिया[6] ॥

नेरइयादीणं समाहार-समसरीरादि-पदं

६०. नेरइया ण भते ! सव्वे समाहारा ? सव्वे समसरीरा ? सव्वे समुस्सास-नीसासा[7] ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

---

१. भ० १।८-१० ।
२. अणुदिण्णं नो (म) ।
३. एव चउवीसदडगाण (म) ।
४ पृ० द० २ ।
५ भ० १।५३-५८ ।
६ पोहत्तिया । एगत्तेण जाव वेमाणिया । पुहत्तेण तहेव (ब, म, स) ।
७ °णिस्सासा (ता) ।

६१ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाहारा ? नो सव्वे सम-सरीरा ? नो सव्वे समुस्सासनीसासा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—महासरीरा य, अप्पसरीरा य। तत्थ ण जे ते महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारेंति, बहुतराए पोग्गले परिणामेंति[1], बहुतराए पोग्गले उस्ससंति, बहुतराए पोग्गले नीससंति, अभिक्खण आहारेंति, अभिक्खण परिणामेंति, अभिक्खण उस्ससंति, अभिक्खण नीससंति। तत्थ ण जे ते अप्पसरीरा ते ण अप्पतराए पोग्गले आहारेंति, अप्पतराए पोग्गले परिणामेंति, अप्पतराए पोग्गले उस्ससंति, अप्पतराए पोग्गले नीससंति, आहच्च आहारेंति, आहच्च परिणामेंति, आहच्च उस्ससंति, आहच्च नीससंति। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाहारा, नो सव्वे समसरीरा, नो सव्वे समुस्सासनीसासा ॥

६२ नेरइया ण भंते ! सव्वे समकम्मा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६३ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समकम्मा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य। तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते ण अप्पकम्मतरागा। तत्थ ण जे ते पच्छोववन्नगा ते ण महाकम्मतरागा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समकम्मा ॥

६४. नेरइया ण भंते ! सव्वे समवण्णा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६५. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समवण्णा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य। तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं विसुद्धवण्णतरागा[2]। • तत्थ ण जे ते पच्छोव-वन्नगा ते ण अविसुद्धवण्णतरागा•[3]। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समवण्णा ॥

६६ नेरइया ण भंते ! सव्वे समलेस्सा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६७ से केणट्ठेण[4] •भंते ! एव वुच्चइ—नेरइया• नो सव्वे समलेस्सा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य। तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते ण विसुद्धलेस्सतरागा। तत्थ ण जे ते पच्छोववन्नगा

१ [illegible] (ग)।
२ [illegible] (क ग)।
३. स० पा०— [illegible]।
४ स० पा०— [illegible]।

ते ण अविसुद्धलेस्सतरागा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समलेस्सा ।।

६८ नेरइया ण भते ! सव्वे समवेयणा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

६९ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समवेयणा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सण्णिभूया य, असण्णिभूया य । तत्थ ण जे ते सण्णिभूया ते ण महावेयणा । तत्थ ण जे ते असण्णिभूया ते ण अप्पवेयणतरागा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समवेयणा ।।

७० नेरइया ण भते ! सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

७१ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! नेरइया तिविहा पण्णत्ता, त जहा—सम्मदिट्ठी[1], मिच्छदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी[2] ।।
तत्थ ण जे ते सम्मदिट्ठी तेसि ण चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—आरभिया, पारिग्गहिया[3], मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया ।
तत्थ ण जे ते मिच्छदिट्ठी तेसि ण पच किरियाओ कज्जति[4], तं जहा—आरंभिया[5], •पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया°, मिच्छादसणवत्तिया । एव सम्मामिच्छदिट्ठीण पि । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समकिरिया ।।

७२ नेरइया ण भते ! सव्वे समाउया ? सव्वे समोववन्नगा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

७३ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाउया ? नो सव्वे समोववन्नगा ?
गोयमा ! नेरइया चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—(१) अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा (२) अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा (३) अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा (४) अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाउया, नो सव्वे समोववन्नगा ।।

७४ असुरकुमारा ण भते ! सव्वे समाहारा[6] ? सव्वे समसरीरा ?

---

१ सम्मा° (अ) ।
२ सम्मामिच्छा° (ता, म) ।
३ परि° (अ, म) ।
४ किज्जति (अ, क, व) ।
५ स० पा०—आरभिया जाव मिच्छा° ।
६ ° हारगा (अ, ता, व, म) ।

जहा[1] नेरइया तहा भाणियव्वा, नवरं—कम्म-वण्ण-लेस्साओ परिवत्तेयव्वाओ[2] [पुव्वोववन्ना महाकम्मतरा, अविसुद्धवण्णतरा, अविसुद्धलेसतरा। पच्छोववन्ना पसत्था। सेस तहेव][3] ॥

७५. एव—जाव[4] थणियकुमारा[5] ॥

७६. पुढविकाइयाण[6] आहार-कम्म-वण्ण-लेस्सा जहा[7] णेरइयाण ॥

७७. पुढविकाइया[8] ण भते ! सव्वे समवेदणा ?
हंता गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे समवेदणा ॥

७८. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समवेदणा ?
गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे असण्णी[9] असण्णिभूत[10] अणिदाए वेदण वेदेति। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समवेदणा ॥

७९. पुढविकाइया ण भते ! सव्वे समकिरिया ?
हंता गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे समकिरिया ॥

८०. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे मायीमिच्छद्दिट्ठी[11]। ताण णेयतियाओ[12] पच किरियाओ कज्जति, त जहा—आरभिया[13], °पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाण-किरिया°, मिच्छादसणवत्तिया। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समकिरिया ॥

८१. समाउया, समोववन्नगा जहा[14] नेरइया तहा भाणियव्वा ॥

८२. जहा[15] पुढविकाइया तहा जाव[16] चउरिंदिया ॥

८३. पचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा[17] णेरइया, नाणत्त किरियासु।

८४. पचिंदियतिरिक्खजोणिया ण भते ! सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

---

1. भ० १।६०-७३ ।
2. परिच्छेयव्वाओ (क, ख, ग, त), [illegible] (ता), [illegible] (म), [illegible] (वृ) ।
3. [illegible]
4. ठा० प० ३ ।
5. ° कुमारा [illegible] ।
6. ° [illegible] (म) ।
7. भ० १।६०-६८ ।
8. ° [illegible] (क, ता, म) ।
9. [illegible] (व, ब) ।
10. [illegible] (ता, म) ।
11. मायीमिच्छ° (क), मायीमिच्छा° (ता), [illegible]° (म) ।
12. [illegible] (ता), [illegible] (म) ।
13. सं० पा०—आरंभिया जाव मिच्छा° ।
14. भ० १।[illegible] ।
15. भ० १।[illegible] ।
16. ठा० प० [illegible] ।
17. भ० १।[illegible] ।

८५ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—पंचिदियतिरिक्खजोणिया नो सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! पंचिदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता, त जहा—सम्मद्दिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी।
तत्थ ण जे ते सम्मदिट्ठी ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—असजया य, सजयासजया य।
तत्थ ण जे ते सजयासजया, तेसि ण तिण्णि किरियाओ कज्जति, त जहा—आरभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया।
असजयाण चत्तारि। मिच्छदिट्ठीण पच। सम्मामिच्छदिट्ठीण पच ॥

मणुस्सादीणं समाहार-समसरीरादि-पदं

८६ [1]मणुस्सा ण भते ! सव्वे समाहारा ? सव्वे समसरीरा ? सव्वे समुस्सासनीसासा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

८७. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाहारा ? नो सव्वे समसरीरा ? नो सव्वे समुस्सासनीसासा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—महासरीरा य, अप्पसरीरा य। तत्थ ण जे ते महासरीरा ते वहुतराए पोग्गले आहारेति, वहुतराए पोग्गले परिणामेति, वहुतराए पोग्गले उस्ससति, वहुतराए पोग्गले नीससंति; आहच्च आहारेति, आहच्च परिणामेति, आहच्च उस्ससति, आहच्च नीससति।
तत्थ ण जे ते अप्पसरीरा ते ण अप्पतराए पोग्गले आहारेति, अप्पतराए पोग्गले परिणामेति, अप्पतराए पोग्गले उस्ससति, अप्पतराए पोग्गले नीससति, अभिक्खण आहारेति, अभिक्खण परिणामेति, अभिक्खण उस्ससति, अभिक्खण नीससति। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाहारा, नो सव्वे समसरीरा, नो सव्वे समुस्सासनीसासा।

८८ मणुस्सा ण भते ! सव्वे समकम्मा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

८९ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समकम्मा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य। तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते ण अप्पकम्मतरागा। तत्थ ण जे ते पच्छोववन्नगा ते णं महाकम्मतरागा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समकम्मा ॥

---

१. म० पा०—मणुस्सा जहा णेरइया नाणत्त जे महासरीरा ते वहुतराए पोग्गले आहारेंति आहच्च आहारेंति। जे अप्पसरीरा ते अप्पतराए पोग्गले आहारेंति अभिक्खण आहारेंति सेस जहा नेरइयाणं जाव वेयणा।

६० मणुस्सा ण भते ! सव्वे समवण्णा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६१. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समवण्णा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य। तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं विसुद्धवण्णतरागा। तत्थ ण जे ते पच्छोववन्नगा ते ण अविसुद्धवण्णतरागा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समवण्णा ॥

६२ मणुस्सा ण भते ! सव्वे समलेस्सा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६३ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समलेस्सा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य। तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते ण विसुद्धलेस्सतरागा। तत्थ ण जे ते पच्छोववन्नगा ते ण अविसुद्धलेस्सतरागा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समलेस्सा ॥

६४ मणुस्सा ण भते ! सव्वे समवेयणा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६५. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समवेयणा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सण्णिभूया य, असण्णिभूया य। तत्थ ण जे ते सण्णिभूया ते ण महावेयणा। तत्थ ण जे ते असण्णिभूया ते ण अप्पवेयणतरागा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समवेयणा॰ ॥

६६ मणुस्सा ण भते ! सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६७ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! मणुस्सा तिविहा पण्णत्ता त जहा—सम्मद्दिट्ठी, मिच्छद्दिट्ठी, सम्मामिच्छद्दिट्ठी।
तत्थ ण जे ते सम्मद्दिट्ठी ते तिविहा पण्णत्ता, त जहा—सजया, असजया, सजयासजया।
तत्थ ण जे ते सजया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सरागसजया य, वीयरागसजया य।
तत्थ ण जे ते वीयरागसजया ते ण अकिरिया।
तत्थ ण जे ते सरागसजया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पमत्तसजया य, अपमत्तसजया य।
तत्थ ण जे ते अपमत्तसजया, तेसि ण एगा मायावत्तिया किरिया कज्जइ।

तत्थ ण जे ते पमत्तसजया, तेसि ण दो किरियाओ कज्जंति, त जहा—आरभिया य, मायावत्तिया य ।

तत्थ ण जे ते सजयासजया, तेसि ण आइल्लाओ[1] तिण्णि किरियाओ कज्जंति, त जहा—आरभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया ।

असजयाण चत्तारि किरियाओ कज्जति—आरभिया पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया ।

मिच्छदिट्ठीण पच—आरभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया, मिच्छादसणवत्तिया ।

सम्मामिच्छदिट्ठीण पच ।।

९८. मणुस्सा[2] ण भते ! सव्वे समाउया ? सव्वेसमोववन्नगा ?

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

९९ से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाउया ? नो सव्वे समोववन्नगा ?

गोयमा ! मणुस्सा चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—(१) अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा । (२) अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा । (३) अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा । (४) अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाउया, नो सव्वे समोववन्नगा ।

१०० वाणमतर[3]-जोतिस-वेमाणिया जहा[4] असुरकुमारा, नवर—वेयणाए णाणत्त-मायिमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य अप्पवेयणतरा, अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नगा य महावेयणतरा भाणियव्वा जोतिसवेमाणिया ।।

---

१. जादिमाओ (क, ता, म) ।

२. ८६ सूत्रस्य पादटिप्पणगते समर्पणपाठे 'सेस जहा नेरइयाण जाव वेयणा' इति उल्लेखोऽस्ति, अतोनन्तर क्रियासूत्र नैरयिकसूत्रालापकाद् भिन्नमस्ति तेन समर्पणपाठे तद् ग्रहण न कृतम् । समायुषः सूत्र क्रिया सूत्रात् अग्रे वर्तते, किन्तु तद नैरयिकसूत्रालापकाद् भिन्न नास्ति तेन पूर्ववर्तिसमर्पणपाठेनैव तस्य ग्रहण कृतमिति गम्यते । तदस्माभि साक्षाल्लिखितम् ।

३ प्रज्ञापनाया (१७।१) अस्य रचना सुस्पष्टास्ति, यथा—वाणमतरा णं जहा असुरकुमारा ण ।

एव जोइसिय-वेमाणियाण वि । णवर ते वेदणाए दुविहा पण्णत्ता, त जहा—माइमिच्छद्दिट्ठिउववण्णगा य, अमाइसम्मद्दिट्ठीउववण्णगा य । तत्थ ण जे ते माइमिच्छद्दिट्ठोववण्णगा ते ण अप्पवेदणतरागा । तत्थ ण जे ते अमाइसम्मदिट्ठोववण्णगा ते ण महावेदणतरागा ।

४. भ० १।७४ ।

१०१ सलेस्सा णं भंते ! नेरइया सव्वे समाहारगा ?
ओहियाणं[1], सलेस्साणं, सुक्कलेस्साणं—एतेसि णं तिण्हं एक्को गमो ।
कण्हलेस्स[2]-नीललेस्साण पि एगो[3] गमो, नवरं—वेदणाए मायिमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य, अमायिसम्मदिट्ठीउववन्नगा य भाणियव्वा ।
मणुस्सा किरियासु सराग-वीयरागा पमत्तापमत्ता न भाणियव्वा ।
काउलेस्साण वि एमेव[4] गमो, नवरं—नेरइए जहा ओहिए दंडए तहा भाणियव्वा ।
तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा 'जस्स अत्थि'[5] जहा ओहिओ दंडओ तहा भाणियव्वा, नवरं—मणुस्सा सराग-वीयरागा न भाणियव्वा ।

संगहणी-गाहा

> दुक्खाउए उदिण्णे, आहारे कम्म-वण्ण-लेस्सा य ।
> समवेयण-समकिरिया, समाउए चेव बोधव्वा[6] ॥१॥

लेस्सा-पदं

१०२. कइ णं भंते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! छ लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा, तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा, सुक्कलेस्सा । लेस्साण बीओ[7] उद्देसो भाणियव्वो जाव[8] इड्ढी ॥

जीवाणं भवपरिवट्टण-पदं

१०३. जीवस्स णं भंते ! तीतद्धाए आदिट्ठस्स कइविहे संसारसंचिट्ठणकाले पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे संसारसंचिट्ठणकाले पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयसंसारसंचिट्ठणकाले, तिरिक्खजोणियसंसारसंचिट्ठणकाले, मणुस्ससंसारसंचिट्ठणकाले, देवसंसारसंचिट्ठणकाले[9] ॥
१०४ नेरइयसंसारसंचिट्ठणकाले[10] णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुन्नकाले, असुन्नकाले, मिस्सकाले ॥
१०५ तिरिक्खजोणियसंसार[11] °संचिट्ठणकाले णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—असुन्नकाले य मिस्सकाले य ॥

---

१ [illegible] १।६०-६२ ।
२ [illegible] (ता, म) ।
३ [illegible] (अ, ता, ब) ।
४ [illegible] (ब) ।
५ [illegible] (क, ता, ब) ।
६ [illegible] (क, ता, ब) ।
७ [illegible] (क, ब, म), [illegible] (स) ।
८ [illegible] १।[illegible] ।
९ [illegible] (अ, क, ता, ब, म, स) ।
१० [illegible] (ता ब म) ।
११ [illegible] (अ, क, ता, ब, म), [illegible] ।

१०६. [1]°मणुस्ससंसारसंचिट्ठणकाले णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुन्नकाले, असुन्नकाले, मिस्सकाले ।।

१०७. देवसंसारसंचिट्ठणकाले णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुन्नकाले, असुन्नकाले, मिस्सकाले° ।।

१०८. एतस्स णं भंते ! नेरइयसंसारसंचिट्ठणकालस्स—सुन्नकालस्स, असुन्नकालस्स, मीसकालस्स[2] य कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे असुन्नकाले, मिस्सकाले अणंतगुणे, सुन्नकाले अणंतगुणे ।।

१०९. तिरिक्खजोणियाणं सव्वत्थोवे असुन्नकाले, मिस्सकाले अणंतगुणे ।।

११०. मणुस्स-देवाण य[3] °सव्वत्थोवे असुन्नकाले, मिस्सकाले अणंतगुणे, सुन्नकाले अणंतगुणे ।।

१११. एयस्स णं भंते ! नेरइयसंसारसंचिट्ठणकालस्स[4], °तिरिक्खजोणियसंसारसंचिट्ठणकालस्स, मणुस्ससंसारसंचिट्ठणकालस्स, देवसंसारसंचिट्ठणकालस्स कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ?° विसेसाहिए वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे मणुस्ससंसारसंचिट्ठणकाले, नेरइयसंसारसंचिट्ठणकाले असंखेज्जगुणे, देवसंसारसंचिट्ठणकाले असंखेज्जगुणे, तिरिक्खजोणियसंसारसंचिट्ठणकाले अणंतगुणे ।।

अंतकिरिया-पदं

११२. जीवे णं भंते ! अंतकिरियं करेज्जा ?
गोयमा ! अत्थेगइए करेज्जा, अत्थेगइए नो करेज्जा । अंतकिरियापयं[5] नेयव्वं ।

११३. अह भंते ! असंजयभवियदव्वदेवाणं, अविराहियसंजमाणं, विराहियसंजमाणं, अविराहियसंजमासंजमाणं, विराहियसंजमासंजमाणं, असण्णीणं, तावसाणं, कंदप्पियाणं, चरग-परिव्वायगाणं, किब्बिसियाणं, तेरिच्छियाणं[6], आजीवियाणं आभिओगियाणं[7], सलिंगीणं दंसणवावण्णगाणं—एतेसि णं देवलोगेसु उववज्जमाणाणं कस्स कहिं उववाए पण्णत्ते ?
गोयमा ! असंजयभवियदव्वदेवाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं उवरिमगेवेज्जएसु । अविराहियसंजमाणं जहण्णेणं सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं सव्वट्ठसिद्धे विमाणे । विराहियसंजमाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे ।

---

१ सं० पा०—मणुस्साण य देवाण य जहा नेरइयाण ।
२ मीसा° (ता, ब, म) ।
३ सं० पा०—य जहा नेरइयाण ।
४ सं० पा०—°कालस्स जाव देवसंसार जाव विसेसाहिए ।
५ प० २० ।
६ तेरच्छियाण (अ, ब, स) ।
७ आभियोगियाण (अ, ब, म), आभोगियाण (स) ।

अविराहियसंजमासजमाणं जहण्णेणं सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे।
विराहियसजमासजमाण जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं जोइसिएसु।
असण्णीण जहण्णेण भवणवासीसु, उक्कोसेण वाणमतरेसु।
अवसेसा सव्वे जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेण[1] वोच्छामि—
तावसाण जोतिसिएसु, कदप्पियाण सोहम्मे कप्पे, चरग-परिव्वायगाण बभलोए कप्पे, किब्विसियाण लतगे कप्पे, तेरिच्छियाण सहस्सारे कप्पे, आजीवियाण अच्चुए कप्पे, आभिओगियाण अच्चुए कप्पे, सलिगीण दसणवावन्नगाण उवरिमगेविज्जएसु ॥

असण्णि-आउय-पदं

११४ कतिविहे ण भते ! असण्णिआउए पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे असण्णिआउए पण्णत्ते, त जहा—नेरइयअसण्णिआउए, तिरिक्खजोणियअसण्णिआउए, मणुस्सअसण्णिआउए, देवअसण्णिआउए ॥

११५. असण्णी ण भते ! जीवे कि नेरइयाउय पकरेइ ? तिरिक्खजोणियाउय पकरेइ ? मणुस्साउय पकरेइ ? देवाउय पकरेइ ?
हता गोयमा ! नेरइयाउय पि पकरेइ, तिरिक्खजोणियाउय पि पकरेइ, मणुस्साउय पि पकरेइ, देवाउय पि पकरेइ।
नेरइयाउय पकरेमाणे जहण्णेणं दस वाससहस्साइ, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभाग पकरेइ।
तिरिक्खजोणियाउय पकरेमाणे जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभाग पकरेइ।
मणुस्साउयं[2] •पकरेमाणे जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभाग पकरेइ।
देवाउय पकरेमाणे जहण्णेण दस वाससहस्साइ, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभागं पकरेइ° ॥

११६ एयस्स ण भते ! नेरइयअसण्णिआउयस्स, तिरिक्खजोणियअसण्णिआउयस्स, मणुस्सअसण्णिआउयस्स, देवअसण्णिआउयस्स कयरे[3] •कयरेहितो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा° ? विसेसाहिए वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे देवअसण्णिआउए, मणुस्सअसण्णिआउए असंखेज्जगुणे, तिरिक्खजोणियअसण्णिआउए असंखेज्जगुणे, नेरइयअसण्णिआउए असंखेज्जगुणे।

११७. सेव भते ! सेव भंते[4] !

---

1. उक्कोसेण (क, ता, ब, म, स)।
2. [illegible] (ता)।
3. सं० पा०—[illegible] जाव [illegible]।
4. सं० पा०—[illegible] जाव विसेसाहिए वा।
5. [illegible] (क, ब, म, स)।
6. भ० १।५१।

तइओ उद्देसो

कंखामोहणिज्ज-पदं

११८ जीवाण भते ! कखामोहणिज्जे कम्मे कडे ?
हता कडे ॥

११९ से भंते ! कि १ देसेण देसे कडे ? २. देसेण सव्वे कडे ? ३. सव्वेण देसे कडे ? ४ सव्वेण सव्वे कडे ?
गोयमा ! १ नो देसेण देसे कडे २ नो देसेण सव्वे कडे ३. नो सव्वेणं देसे कडे ४. सव्वेण सव्वे कडे ॥

१२० नेरइयाण भते ! कखामोहणिज्जे कम्मे कडे ?
हता कडे[1] ॥

१२१. °से भते ! कि १. देसेण देसे कडे ? २ देसेण सव्वे कडे ? ३ सव्वेणं देसे कडे ? ४. सव्वेण सव्वे कडे ?
गोयमा ! १ नो देसेण देसे कडे २ नो देसेणं सव्वे कडे ३ नो सव्वेण देसे कडे° ४ सव्वेण सव्वे कडे ॥

१२२. एव जाव[2] वेमाणियाण दडओ भाणियव्वो ॥

१२३ जीवा ण भते ! कखामोहणिज्ज कम्म करिसु ?
हता करिसु ॥

१२४ त भते ! कि १ देसेण देस करिसु ? २. देसेण सव्व करिसु ? ३ सव्वेण देस करिसु ? ४ सव्वेण सव्वं करिसु ?
गोयमा ! १ नो देसेण देस करिसु २ नो देसेण सव्व करिसु ३. नो सव्वेण देस करिसु । ४. सव्वेण सव्व करिसु ॥

१२५ एएण अभिलावेण दडओ भाणियव्वो, जाव[3] वेमाणियाण ॥

१२६ एव करेति । एत्थ वि दडओ जाव[4] वेमाणियाणं ॥

१२७ एव करिस्सति । एत्थ वि दडओ जाव[5] वेमाणियाण ॥

१२८ एव चिए, चिणिसु, चिणति, चिणिस्सति । उवचिए, उवचिणिसु, उवचिणति, उवचिणिस्सति । उदीरेसु, उदीरेति, उदीरिस्सति । वेदेसु, वेदेति, वेदिस्सति । निज्जरेंसु, निज्जरेंति, निज्जरिस्सति ।

सगहणी-गाहा

कड-चिय-उवचिय, उदीरिया वेदिया य निज्जिण्णा ।
आदितिए चउभेदा, तियभेदा पच्छिमा तिण्णि ॥१॥

---

१ ग० पा०—कडे जाव सव्वेण ।
२ पू० प० २ ।
३, ४, ५ पू० प० २ ।

१२९. जीवा ण भते ! कखामोहणिज्ज कम्म वेदेति ?
हता वेदेति ॥

१३०. कहण्ण[1] भते ! जीवा कखामोहणिज्ज कम्म वेदेति ?
गोयमा ! तेहि तेहि कारणेहि सकिया, कंखिया, वितिगिछिया[2], भेदसमावन्ना, कलुससमावन्ना—एवं खलु जीवा कखामोहणिज्जं कम्मं वेदेति ॥

सद्धा-पदं

१३१ से नूण भते ! तमेव सच्च णीसक, ज जिणेहि पवेइय ?
हता गोयमा ! तमेव सच्च णीसक, ज जिणेहि पवेइय ॥

१३२ से नूण भते ! एव मण धारेमाणे, एव पकरेमाणे, एव चिट्ठेमाणे, एव सवरेमाणे आणाए आराहए भवति ?
हता गोयमा ! एव मण धारेमाणे[3] •एव पकरेमाणे, एव चिट्ठेमाणे, एव सवरेमाणे आणाए आराहए° भवति ॥

अत्थि-नत्थि-पद

१३३. से नूण भते ! अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ ? नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमइ ?
हता गोयमा[4] ! •अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ । नत्थित्त नत्थित्ते° परिणमइ ।

१३४. 'ज ण'[5] भते ! अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ, नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ, त कि पयोगसा ? वीससा ?
गोयमा ! पयोगसा वि तं [अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ, नत्थित्त नत्थित्तं परिणमइ][6] ।
वीससा वि त [अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ][7] ॥

१३५ जहा ते भते ! अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ, तहा ते नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ ? जहा ते नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ, तहा ते अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ ?
हता गोयमा ! जहा मे अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ, तहा मे नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ ।
जहा मे नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ, तहा मे अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ ॥

१३६. से नूण भते ! अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज ? •नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज ?
हता गोयमा ! अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज । नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज ॥

---

१. [illegible] (अ); [illegible] (क म) ।
२. [illegible] (अ ब स), [illegible] (क), [illegible] (स) ।
३. स० पा०—[illegible] ।
४. स० पा०—[illegible] ।
५. [illegible] (अ ब स), [illegible] ।
६, ७. [illegible] ।
८. स० पा०—[illegible] ।

१५२. ज ण भते ! अप्पणा चेव उवसामेइ, अप्पणा चेव गरहति, अप्पणा चेव संवरेति, त कि—१ उदिण्ण उवसामेइ ? २ अणुदिण्ण उवसामेइ ? ३. अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म उवसामेइ ? ४. उदयाणतरपच्छाकड कम्म उवसामेइ ?

गोयमा ! १ नो उदिण्ण उवसामेइ । २ अणुदिण्ण उवसामेइ । ३ नो अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म उवसामेइ । ४ नो उदयाणतरपच्छाकड कम्म उवसामेइ ॥

१५३ ज ण भते ! अणुदिण्ण उवसामेइ, त कि उट्ठाणेण, कम्मेणं, वलेण, वीरिएण, पुरिसक्कार-परक्कमेण अणुदिण्ण उवसामेइ ? उदाहु त अणुट्ठाणेण, अकम्मेण, अवलेण, अवीरिएण, अपुरिसक्कारपरक्कमेणं अणुदिण्ण उवसामेइ ?
गोयमा ! त उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, वलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अणुदिण्ण उवसामेइ । णो त अणुट्ठाणेण, अकम्मेणं, अवलेण, अवीरिएण, अपुरिसक्कारपरक्कमेण अणुदिण्ण उवसामेइ ॥

१५४ एव सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, वलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१५५. से नूण भते ! अप्पणा चेव वेदेति ? अप्पणा चेव गरहति ?
हता गोयमा ! अप्पणा चेव वेदेति । अप्पणा चेव गरहति ॥

१५६ ज ण भते ! अप्पणा चेव वेदेति, अप्पणा चेव गरहति त कि—१. उदिण्ण वेदेति ? २ अणुदिण्ण वेदेति ? ३. अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म वेदेति ? ४ उदयाणतरपच्छाकड कम्म वेदेति ?
गोयमा ! १ उदिण्ण वेदेति । २ नो अणुदिण्ण वेदेति । ३ नो अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म वेदेति । ४ नो उदयाणतरपच्छाकड कम्म वेदेति ॥

१५७ ज ण भते ! उदिण्ण वेदेति त कि उट्ठाणेण, कम्मेण, वलेण, वीरिएण, पुरिसक्कार-परक्कमेण उदिण्ण वेदेति ? उदाहु त अणुट्ठाणेण, अकम्मेण, अवलेण, अवीरिएण, अपुरिसक्कारपरक्कमेण उदिण्ण वेदेति ?

गोयमा ! त उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, वलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि उदिण्ण वेदेति । नो त अणुट्ठाणेण, अकम्मेण, अवलेण, अवीरिएण, अपुरिसक्कारपरक्कमेण उदिण्ण वेदेति ॥

१५८ एवं सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, वलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१५९ से नूण भते ! अप्पणा चेव निज्जरेति ? अप्पणा चेव गरहति ?
हता गोयमा ! अप्पणा चेव निज्जरेति । अप्पणा चेव गरहति ॥

१६०. जं णं भंते ! अप्पणा चेव निज्जरेति, अप्पणा चेव गरहति, तं किं—
१. उदिण्णं निज्जरेति ? २. अणुदिण्णं निज्जरेति ? ३. अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं निज्जरेति ? ४. उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं निज्जरेति ?
गोयमा ! १. नो उदिण्णं निज्जरेति । २. नो अणुदिण्णं निज्जरेति । ३. नो अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं निज्जरेति । ४. उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं निज्जरेति ॥

१६१. जं णं भंते ! उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं निज्जरेति तं किं उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएणं, पुरिसक्कार-परक्कमेणं उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं निज्जरेति ? उदाहु तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेणं, अवीरिएणं, अपुरिसक्कार-परक्कमेणं उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं निज्जरेति ?
गोयमा ! तं उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं निज्जरेति । णो तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेणं, अवीरिएणं, अपुरिसक्कारपरक्कमेणं उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं निज्जरेति ॥

१६२. एवं सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार°-परक्कमेइ वा ॥

१६३. नेरइया णं भंते ! कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ?
जहा[1] ओहिया जीवा तहा नेरइया जाव[2] थणियकुमारा ॥

१६४. पुढविक्काइया णं भंते ! कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ?
हंता वेदेंति ॥

१६५. कहण्णं भंते ! पुढविक्काइया कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ?
गोयमा ! तेसि णं जीवाणं णो एवं तक्काइ वा, सण्णाइ वा, पण्णाइ वा, मणेइ वा, वईति वा—अम्हे णं कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेमो, वेदेंति पुण ते ॥

१६६. से नूणं भंते ! तमेव सच्चं नीसंकं, जं जिणेहिं पवेइयं ?
हंता गोयमा ! तमेव सच्चं नीसंकं, जं जिणेहिं पवेइयं ।
सेसं तं चेव जाव[3] अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१६७. एवं जाव[4] चउरिंदिया ॥

१६८. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जाव[5] वेमाणिया जहा[6] ओहिया जीवा ॥

---

१. भ० १।१५६-१६१ ।
२. पू० प० २ ।
३. भ० १।१५८-१६२ ।
४. पू० प० २ ।
५. पू० प० २ ।
६. भ० १।१४९-१६२ ।

१६९. अत्थि ण भते ! समणा वि निग्गथा कखामोहणिज्ज कम्मं वेएति ?
'हता अत्थि'[1] ॥

१७० कहण्ण भते ! समणा निग्गथा कखामोहणिज्ज कम्म वेदेति ?
गोयमा ! तेहि तेहि नाणतरेहि, दसणतरेहिं[2], चरित्ततरेहिं[3], लिगतरेहिं, पवयणतरेहि, पावयणतरेहि, कप्पतरेहि, मग्गतरेहि, मततरेहिं[4], भगतरेहि, णयतरेहि, नियमतरेहि, पमाणतरेहि सकिता कखिता वितिकिच्छिता[5] भेदसमावन्ना कलुससमावन्ना—एव खलु समणा निग्गथा कखामोहणिज्ज कम्म वेदेति ॥

१७१ से नूण भते ! तमेव सच्च नीसक, ज जिणेहि पवेदित ?
हता गोयमा ! तमेव सच्च नीसक, ज जिणेहि पवेदित ॥

१७२ एवं जाव[6] अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१७३ सेव भंते ! सेव भते[7] !

चउत्थो उद्देसो

कम्म-पदं

१७४ कति ण भते ! कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, कम्मप्पगडीए पढमो उद्देसो नेयव्वो जाव[8]—अणुभागो समत्तो ।

सगहणी-गाहा

कति पगडी ? कह[9] बधति ? कतिहि व ठाणेहिं बधती पगडी ?
कति वेदेति व पगडी ? अणुभागो कतिविहो कस्स ? ॥१॥

उवट्ठावण-अवक्कमण-पदं

१७५ जीवे ण भते ! मोहणिज्जेण कडेण कम्मेण उदिण्णेण उवट्ठाएज्जा ?
हता उवट्ठाएज्जा[10] ॥

---

१. हतत्थि (ता) ।
२ दरिसणतरेहि (क) ।
३ चरित्ततरेहि निग्गथतरेहि (क) ।
४ मततरेहि (अ, ब), × (क) ।
५ वितिगिच्छिता (ता) ।
६ भ० १।१३२-१६२ ।
७ भ० १।५१ ।
८. प० २३।१ ।
९ किह (अ, क, ता, म), कहिं (स) ।
१०. उवट्ठाएज्ज (क, ता) ।

१७६ से भंते ! किं वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
गोयमा ! वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । णो अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ॥

१७७ जइ वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, किं—बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? पंडिय-वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? बालपंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
गोयमा ! बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । नो पंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । नो बालपंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ॥

१७८ जीवे णं भंते ! मोहणिज्जेणं कडेणं कम्मेणं उदिण्णेणं अवक्कमेज्जा ?
हंता अवक्कमेज्जा ॥

१७९ से भंते ! °किं वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
गोयमा ! वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा । नो अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ॥

१८० जइ वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, किं—बालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? पंडिय-वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?° बालपंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
गोयमा ! 'बालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा । नो पंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा । सिय बालपंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा' ॥

१८१. '°जीवे णं भंते ! मोहणिज्जेणं कडेणं कम्मेणं उवसंतेणं उवट्ठाएज्जा ?
हंता उवट्ठाएज्जा ॥

१८२. से भंते ! किं वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
गोयमा ! वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । नो अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ॥

१८३ जइ वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, किं—बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? पंडिय-वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? बालपंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
गोयमा ! 'नो बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । पंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । नो बालपंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा' ॥

१८४. जीवे णं भंते ! मोहणिज्जेणं कडेणं कम्मेणं उवसंतेणं अवक्कमेज्जा ?
हंता अवक्कमेज्जा ॥

१८५. से भंते ! किं वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
गोयमा ! वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा । नो अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ॥

---

१. भ० वा० — नो बालवीरियत्ताए [illegible] ।
२. [illegible] — अवीरियत्ताए, नो [illegible] नो बालपंडियवीरियत्ताए (वृ) ।
३. [illegible]
[illegible]
४. [illegible] (वृ) ।

१८६ जइ वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, कि—वालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? पडिय-वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? वालपडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
गोयमा ! नो वालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा। नो पडियवीरियत्ताए अवक्क-मेज्जा। वालपडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा° ॥

१८७. से भते ! कि आयाए अवक्कमइ ? अणायाए अवक्कमइ ?
गोयमा ! आयाए अवक्कमइ, नो अणायाए अवक्कमइ—मोहणिज्ज कम्म वेदेमाणे ॥

१८८. से कहमेय भते ! एव ?
गोयमा ! पुव्वि से एय एव रोयइ। इयाणि से एय एव नो रोयइ—एव खलु एय एव ॥

कम्ममोक्ख-पद

१८९. से नूण भंते ! नेरइयस्स वा, तिरिक्खजोणियस्स वा, मणुस्सस्स[1] वा, देवस्स वा जे कडे पावे कम्मे, नत्थि ण[2] तस्स अवेदइत्ता[3] मोक्खो ?
हता गोयमा ! नेरइयस्स वा, तिरिक्खजोणियस्स वा, मणुस्सस्स वा, देवस्स वा[4] °जे कडे पावे कम्मे, नत्थि ण तस्स अवेदइत्ता° मोक्खो ॥

१९० से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ नेरइयस्स वा[5] °तिरिक्खजोणियस्स वा, मणु-स्सस्स वा, देवस्स वा जे कडे पावे कम्मे, नत्थि ण तस्स अवेदइत्ता° मोक्खो ?
एव खलु मए गोयमा ! दुविहे कम्मे पण्णत्ते, त जहा—पदेसकम्मे य, अणु-भागकम्मे य।
तत्थ ण ज ण[6] पदेसकम्म त नियमा वेदेइ। तत्थ ण ज ण अणुभागकम्म त[7] अत्थेगइय वेदेइ, अत्थेगइय णो वेदेइ।
णायमेय अरहया, सुयमेय अरहया, विण्णायमेय अरहया—इम कम्म अय जीवे अब्भोवगमियाए[8] वेदणाए वेदेस्सइ, इम कम्म अय जीवे उवक्कमियाए वेदणाए वेदेस्सइ।
अहाकम्म, अहानिकरण जहा जहा त भगवया दिट्ठ तहा तहा त विप्परि-णमिस्सतीति। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइयस्स वा[9], °तिरिक्ख-जोणियस्स वा, मणुस्सस्स वा, देवस्स वा जे कडे पावे कम्मे, नत्थि ण तस्स अवेदइत्ता° मोक्खो ॥

---

१. मणूमम्स (क, ता), मणुमम्स (व, म, म)।
२. × (अ, म)।
३. अवेदयत्ता (अ, व), अवेदत्ता (म, स)।
४. म० पा०—वा जाव मोक्खो।
५. स० पा०—वा जाव मोक्खो।
६. त (अ, क, ता, व, म, स)।
७ × (ता)।
८ अब्भोवमियाए (क)।
९. स० पा०—वा जाव मोक्खो।

पोग्गल-जीवाणं तेकालियत्त-पदं

१६१. एस णं भंते ! पोग्गले[1] तीतं अणंतं सासयं समयं भुवीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! एस णं पोग्गले तीतं अणंतं सासयं समयं भुवीति वत्तव्वं सिया ॥

१६२. एस णं भंते ! पोग्गले पडुप्पण्णं सासयं समयं भवतीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! °एस णं पोग्गले पडुप्पण्णं सासयं समयं भवतीति वत्तव्वं सिया° ॥

१६३. एस णं भंते ! पोग्गले अणागयं अणंतं सासयं समयं भविस्सतीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! °एस णं पोग्गले अणागयं अणंतं सासयं समयं भविस्सतीति वत्तव्वं सिया° ॥

१६४. °एस णं भंते ! खंधे तीतं अणंतं सासयं समयं भुवीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! एस णं खंधे तीतं अणंतं सासयं समयं भुवीति वत्तव्वं सिया ॥

१६५. एस णं भंते ! खंधे पडुप्पण्णं सासयं समयं भवतीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! एस णं खंधे पडुप्पण्णं सासयं समयं भवतीति वत्तव्वं सिया ॥

१६६. एस णं भंते ! खंधे अणागयं अणंतं सासयं समयं भविस्सतीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! एस णं खंधे अणागयं अणंतं सासयं समयं भविस्सतीति वत्तव्वं सिया ॥

१६७. एस णं भंते ! जीवे तीतं अणंतं सासयं समयं भुवीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! एस णं जीवे तीतं अणंतं सासयं समयं भुवीति वत्तव्वं सिया ॥

१६८. एस णं भंते ! जीवे पडुप्पण्णं सासयं समयं भवतीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! एस णं जीवे पडुप्पण्णं सासयं समयं भवतीति वत्तव्वं सिया ॥

१६९. एस णं भंते ! जीवे अणागयं अणंतं सासयं समयं भविस्सतीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! एस णं जीवे अणागयं अणंतं सासयं समयं भविस्सतीति वत्तव्वं सिया° ॥

मोक्ख-पदं

१७०. छउमत्थे णं भंते ! मणूसे[2] तीतं अणंतं सासयं समयं—केवलेणं संजमेणं, केवलेणं संवरेणं, केवलेणं बंभचेरवासेणं, केवलाहिं पवयणमायाहिं[3] सिज्झिंसु ?

---

1. पोग्गले [illegible] (ता) ।
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]

बुज्झिसु[1] ? •मुच्चिसु ? परिणिव्वाइंसु० ? सव्वदुक्खाणं अंतं करिंसु ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

२०१ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ [2]•छउमत्थे णं मणुस्से तीतं अणंतं सासयं समयं —केवलेणं संजमेणं, केवलेणं संवरेणं, केवलेणं बंभचेरवासेणं, केवलाहिं पवयण-मायाहिं नो सिज्झिंसु ? नो बुज्झिंसु ? नो मुच्चिंसु ? नो परिनिव्वाइंसु ? नो सव्वदुक्खाणं० अंतं करिंसु ?
गोयमा ! जे केइ अंतकरा वा अंतिमसरीरिया वा—सव्वदुक्खाणं अंतं करेंसु वा, करेंति वा, करिस्संति वा—सव्वे ते उप्पण्णणाण-दंसणधरा अरहा जिणा[3] केवली भवित्ता तओ पच्छा 'सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परिनिव्वायंति[4]', सव्वदुक्खाणं अंतं करेंसु वा, करेंति वा, करिस्संति वा । से तेणट्ठेणं गोयमा[5] ! •एवं वुच्चइ छउमत्थे णं मणुस्से तीतं अणंतं सासयं समयं—केवलेणं संजमेणं, केवलेणं संवरेणं, केवलेणं बंभचेरवासेणं, केवलाहिं पवयणमायाहिं नो सिज्झिंसु, नो बुज्झिंसु, नो मुच्चिंसु, नो परिनिव्वाइंसु, नो० सव्वदुक्खाणं अंतं करिंसु ।।

२०२. पडुप्पण्णे वि एवं[6] चेव, नवरं—सिज्झंति भाणियव्वं ।।

२०३. अणागए वि एवं[7] चेव, नवरं—सिज्झिस्संति भाणियव्वं ।।

२०४. जहा[8] छउमत्थो तहा आहोहिओ वि, तहा परमाहोहिओ[9] वि । तिण्णि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा ।।

२०५. केवली णं भंते ! मणूसे तीतं अणंतं सासयं समयं[10] •सिज्झिंसु ? बुज्झिंसु ? मुच्चिंसु ? परिनिव्वाइंसु ? सव्वदुक्खाणं अंतं करिंसु ?
हंता गोयमा ! केवली णं मणूसे तीतं अणंतं सासयं समयं सिज्झिंसु, बुज्झिंसु, मुच्चिंसु, परिनिव्वाइंसु, सव्वदुक्खाणं अंतं करिंसु ।।

२०६. केवली णं भंते ! मणूसे पडुप्पण्णं सासयं समयं सिज्झंति ? बुज्झंति ? मुच्चंति ? परिनिव्वायंति ? सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ?
हंता गोयमा ! केवली णं मणूसे पडुप्पण्णं सासयं समयं सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परिनिव्वायंति, सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ।।

---

१. सं० पा०—बुज्झिंसु जाव सव्व० ।
२. सं० पा०—तं चेव जाव अंतं ।
३. जिणे (अ, क, ता, ब, म) ।
४. 'सिज्झंति' इत्यादिषु चतुर्षु पदेषु वर्त्तमान-निर्देशस्य शेषोपलक्षणत्वात् 'सिज्झिंसु सिज्झंति सिज्झिस्संति' इत्येवमतीतादिनिर्देशो द्रष्टव्यः (वृ) ।
५. सं० पा०—गोयमा जाव सव्व० ।
६. भ० १।२००, २०१ ।
७. भ० १।२००, २०१ ।
८. भ० १।२००-२०३ ।
९. परमोहिओ (अ, क, ता, ब, म, वृपा) ।
१०. सं० पा०—समयं जाव अंतं हंता सिज्झिंसु जाव अंतं एते तिण्णि आलावगा भाणि-यव्वा । छउमत्थस्स जहा नवरं सिज्झिंसु सिज्झंति सिज्झिस्संति ।

२०७. केवली णं भंते ! मणूसे अणागयं अणंतं सासयं समयं सिज्झिस्सति ? बुज्झिस्सति ? मुच्चिस्सति ? परिनिव्वाइस्सति ? सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्सति ?
हंता गोयमा ! केवली णं मणूसे अणागयं अणंतं सासयं समयं सिज्झिस्सति, बुज्झिस्सति, मुच्चिस्सति, परिनिव्वाइस्सति, सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्सति° ॥

२०८. से नूणं भंते ! तीतमणंतं सासयं समयं, पडुप्पण्णं वा सासयं समयं, अणागयमणंतं वा सासयं समयं जे केइ अंतकरा वा अंतिमसरीरिया वा सव्वदुक्खाणं अंतं करेंसु वा, करेंति वा, करिस्संति वा, सव्वे ते उप्पण्णनाण-दंसणधरा अरहा जिणा केवली भवित्ता तओ पच्छा सिज्झंति[1] ? °बुज्झंति ? मुच्चंति ? परिनिव्वायंति ? सव्वदुक्खाणं अंतं करेंसु वा ? करेंति वा ? करिस्संति वा ?°
हंता गोयमा ! तीतमणंतं सासयं °समयं, पडुप्पण्णं वा सासयं समयं, अणागयमणंतं वा सासयं समयं जे केइ अंतकरा वा अंतिमसरीरिया वा सव्वदुक्खाणं अंतं करेंसु वा, करेंति वा, करिस्संति वा, सव्वे ते उप्पण्णनाण-दंसणधरा अरहा जिणा केवली भवित्ता तओ पच्छा सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परिनिव्वायंति, सव्वदुक्खाणं अंतं करेंसु वा, करेंति वा°, करिस्संति वा ॥

२०९. से नूणं भंते ! उप्पण्णनाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली, अलमत्थु त्ति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! उप्पण्णनाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली अलमत्थु त्ति वत्तव्वं सिया ॥

२१०. सेवं भंते ! सेवं भंते[2] !

पंचमो उद्देसो

पुढवि-पदं

२११. कति णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रयणप्पभा[3], °सक्करप्पभा, वालुयप्पभा, पंकप्पभा, धूमप्पभा, तमप्पभा[4], तमतमा ॥

१. भ० श० —[illegible] २. भ० १।५१।
[illegible]। ४. भ० [illegible]
३. [illegible]

२१२. इमीसे ण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए कति निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तीस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

संगहणी-गाहा

तीसा य पन्नवीसा, पन्नरस दसेव या सयसहस्सा ।
तिन्नेग पचूण, पंचेव अणुत्तरा निरया ॥१॥

आवास-पदं

२१३ केवइया ण भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चोयट्ठी असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

संगहणी-गाहा

एव—

चोयट्ठी[1] असुराण, चउरासीई य होइ नागाण ।
बावत्तरि सुवण्णाण, वाउकुमाराण छन्नउई ॥१॥
दीव-दिसा-उदहीण, विज्जुकुमारिंद-थणियमग्गीण ।
छण्हं पि जुयलयाण[2], छावत्तरिमो सयसहस्सा ॥२॥

२१४ केवइया ण भंते ! पुढविक्काइयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा असंखेज्जा पुढविक्काइयावाससयसहस्सा पण्णत्ता जाव[3] असंखिज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

२१५ सोहम्मे ण भंते ! कप्पे कति विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बत्तीस विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

संगहणी-गाहा

एव—

बत्तीसट्ठावीसा, बारस-अट्ठ[4]-चउरो सयसहस्सा ।
पन्ना-चत्तालीसा, छच्च सहस्सा सहस्सारे ॥१॥
आणय-पाणयकप्पे, चत्तारि सयारणच्चुए तिण्णि ।
सत्त विमाणसयाइ, चउसु वि एएसु कप्पेसु ॥२॥
एक्कारसुत्तर हेट्ठिमए[5] सत्तुत्तर सय च मज्झमए ।
सयमेग उवरिमए, पचेव अणुत्तरविमाणा ॥३॥

नेरइयाणं नाणावसासु कोहोवउत्तादिभंग-पदं

पुढवी ट्ठिति-ओगाहण-सरीर-संघयणमेव सठाणे ।
लेस्सा दिट्ठी णाणे, जोगुवओगे य दस ठाणा[6] ॥४॥

---

१. चोसट्ठी (व); चोवट्ठी (म, स) ।
२ जुवलयाण (अ, क, ता, व) ।
३. पु० प० २ ।
४. अट्ठ य (क, ता, म) ।
५ हेट्ठिमेसु (क, ता, म), हेट्ठिमएसु (स) ।
६ ठाणे (अ, व) ।

२१६. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि नेरइयाणं केवइया ठितिट्ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा ठितिट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—जहण्णिया ठिती, समयाहिया जहण्णिया ठिती, दुसमयाहिया जहण्णिया ठिती जाव असंखेज्ज-समयाहिया जहण्णिया ठिती। तप्पाउग्गुक्कोसिया ठिती ॥

२१७. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि जहण्णियाए ठितीए वट्टमाणा नेरइया किं—कोहोवउत्ता ? माणोवउत्ता ? मायोवउत्ता ? लोभोवउत्ता ?
गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्जा १ कोहोवउत्ता। २ अहवा कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य। ३ अहवा कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य[1]। ४ अहवा कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ते य। ५ अहवा कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य[2]। ६. अहवा कोहोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य। ७ अहवा कोहोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य[3]। ८ अहवा कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ते य। ९ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ता य। १०. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ते य। ११ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य[4]। १२ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, लोभोवउत्ते य। १३ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, लोभोवउत्ता य। १४. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य। १५ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य। १६ कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य। १७ कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ता य। १८ कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य। १९ कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य। २० कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य,

---

१ 'ब' प्रतौ—अत्रोऽग्रे एवं माया वि लोभो वि [illegible] अहवा कोहोवउत्ता य [illegible] [illegible] भंगा नेयव्वा।

२ [illegible] प्रतौ—[illegible] भंगा नेयव्वा।

३ [illegible] प्रतौ—[illegible] भंगा नेयव्वा।

४ [illegible] प्रतौ—[illegible]

[illegible] भंगा नेयव्वा।

मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ते य। २१ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ता य। २२ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य। २३ कोहोवउत्ताय, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य। २४ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ताय। २५ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ता य। २६ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य। २७ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य॥

२१८. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि निरयावाससि समयाहियाए जहण्णट्ठितीए वट्टमाणा नेरइया कि—कोहोवउत्ता ? माणोवउत्ता ? मायोवउत्ता ? लोभोवउत्ता ?

गोयमा ! कोहोवउत्ते य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ते य। कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य। अहवा कोहोवउत्ते य, माणोवउत्ते य। अहवा कोहोवउत्ते य, माणोवउत्ता य। एव असीतिभगा[1] नेयव्वा।

---

१. १—(८)—१ कोहोवउत्ते २ माणोवउत्ते ३ मायोवउत्ते ४. लोभोवउत्ते ५. कोहोवउत्ता ६ माणोवउत्ता ७ मायोवउत्ता ८. लोभोवउत्ता।

२—(२४)—९. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते १०. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता ११ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते १२. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता १३. कोहोवउत्ते मायोवउत्ते १४. कोहोवउत्ते मायोवउत्ता १५ कोहोवउत्ता मायोवउत्ते १६. कोहोवउत्ता मायोवउत्ता १७. कोहोवउत्ते लोभोवउत्ते १८. कोहोवउत्ते लोभोवउत्ता १९. कोहोवउत्ता लोभोवउत्ते २०. कोहोवउत्ता लोभोवउत्ता २१. माणोवउत्ते मायोवउत्ते २२ माणोवउत्ते मायोवउत्ता २३ माणोवउत्ता मायोवउत्ते २४. माणोवउत्ता मायोवउत्ता २५ माणोवउत्ते लोभोवउत्ते २६. माणोवउत्ते लोभोवउत्ता २७. माणोवउत्ता लोभोवउत्ते २८. माणोवउत्ता लोभोवउत्ता २९ मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ३० मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ३१ मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ३२ मायोवउत्ता लोभोवउत्ता।

३—(३२)—

३३. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ते
३४ कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ता
३५ कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ते
३६ कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ता
३७ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते
३८ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता
३९. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते
४०. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता
४१. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते लोभोवउत्ते
४२ कोहोवउत्ते माणोवउत्ते लोभोवउत्ता
४३ कोहोवउत्ते माणोवउत्ता लोभोवउत्ते
४४. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता लोभोवउत्ता
४५ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते लोभोवउत्ते
४६ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते लोभोवउत्ता
४७. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता लोभोवउत्ते

एवं जाव संखेज्जसमयाहियाए ठिईए, असंखेज्जसमयाहियाए ठिईए तप्पाउ-ग्गुक्कोसियाए ठिईए सत्तावीसं भंगा भाणियव्वा'[1] ॥

२१९. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि नेरइयाणं केवइया ओगाहणाठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा ओगाहणाठाणा पण्णत्ता, तं जहा—जहण्णिया ओगाहणा, पदेसाहिया जहण्णिया ओगाहणा, दुपदेसाहिया जहण्णिया ओगाहणा जाव असंखेज्जपएसाहिया जहण्णिया ओगाहणा । तप्पाउग्गुक्कोसिया ओगाहणा ॥

२२०. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि जहण्णियाए ओगाहणाए वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता ?
असीइभंगा भाणियव्वा'[2] जाव संखेज्जपदेसाहिया जहण्णिया ओगाहणा ।
असंखेज्जपदेसाहियाए जहण्णियाए ओगाहणाए वट्टमाणाणं तप्पाउग्गुक्कोसि-

---

४८ कोहोवउत्ता माणोवउत्ता लोभोवउत्ता
४९. कोहोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते
५०. कोहोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता
५१ कोहोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते
५२. कोहोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता
५३ कोहोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते
५४ कोहोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता
५५. कोहोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते
५६ कोहोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता
५७. माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते
५८. माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता
५९. माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते
६०. माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता
६१. माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते
६२. माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता
६३. माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते
६४. माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ।

४—(१६)—६५. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ६६. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ६७. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ६८. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ६९. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ७०. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ७१. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ७२. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ७३. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ७४ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ७५. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ७६ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ७७. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ७८ कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ७९. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ८०. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ।

१. [illegible]
२. [illegible]

याए ओगाहणाए वट्टमाणाण[1] सत्तावीस भगा[2] ॥

२२१. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए[3] °तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु° एग-मेगंसि निरयावासंसि नेरइयाण कइ सरीरया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिण्णि सरीरया पण्णत्ता, त जहा—वेउव्विए, तेयए, कम्मए ॥

२२२. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[4] वेउव्वियसरीरे वट्टमाणा नेरइया कि कोहो-वउत्ता ? सत्तावीस भगा[5] ॥

२२३. एएण गमेण तिण्णि सरीरया भाणियव्वा ॥

२२४. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[6] नेरइयाण सरीरया किसघयणा[7] पण्णत्ता ?
गोयमा ! छण्ह सघयणाण असंघयणी नेवट्ठी, नेव छिरा[8], नेव ण्हारुणि । जे पोग्गला अणिट्ठा अकता अप्पिया[9] असुहा अमणुण्णा अमणामा एतेसि[10] सरीर-सघायत्ताए परिणमति ॥

२२५. इमीसे ण भते ? रयणप्पभाए जाव[11] छण्ह सघयणाण असघयणे वट्टमाणा नेर-इया कि कोहोवउत्ता ? सत्तावीस भगा[12] ॥

२२६. इमीसे ण भते ? रयणप्पभाए जाव[13] नेरइयाण सरीरया किसठिया पण्णत्ता ?
गोयमा[14] ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—भवधारणिज्जा य, उत्तरवेउव्विया य । तत्थ ण जे ते भवधारणिज्जा ते हुडसठिया पण्णत्ता, तत्थ ण जे ते उत्तर-वेउव्विया ते वि हुडसठिया पण्णत्ता ॥

२२७ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[15] हुडसठाणे वट्टमाणा नेरइया कि कोहो-वउत्ता ? सत्तावीस भगा[16] ॥

२२८. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[17] नेरइयाण कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! एगा काउलेस्सा पण्णत्ता ॥

२२९. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[18] काउलेस्साए वट्टमाणा नेरइया कि कोहो-वउत्ता ? सत्तावीस भगा ॥[19]

---

१. वट्टमाणाए नेरइयाण दोसु वि (अ), वट्ट-माणाए जाव नेरइयाए दोसु वि (क, म), वट्टमाणाए दोसु वि (म) ।
२. भ० १।२१७ ।
३. स० पा०—पुढवीए जाव एगमेगंसि ।
४. भ० १।२१७ ।
५. भ० १।२१७ ।
६. भ० १।२१६ ।
७ किसघयणी (क, ता, म) ।
८. छिरा (ता, म, स) ।
९ अप्पिया (क) ।
१० तेतेसि (क, ता, म) ।
११. भ० १।२१७ ।
१२ भ० १।२१७ ।
१३ भ० १।२१६ ।
१४. 'नेरइयाण सरीरया' इति शेष. ।
१५. भ० ।२१७ ।
१६. भ० १।२१७ ।
१७. भ० १।२१६ ।
१८. भ० १।२१७ ।
१९ भ० १।२१७

२३०. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव' नेरइया किं सम्मदिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी ? सम्मामिच्छदिट्ठी ?
तिण्णि वि ॥

२३१. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव सम्मदंसणे वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता ? सत्तावीसं भंगा' ॥

२३२. एवं मिच्छदंसणे वि ॥

२३३. सम्मामिच्छदंसणे असीतिभंगा' ॥

२३४. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव' नेरइया किं नाणी, अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । तिण्णि' नाणाइं नियमा । तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए ॥

२३५. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव' आभिनिबोहियनाणे वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता ? सत्तावीसं भंगा' ॥

२३६. एवं तिण्णि नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं भाणियव्वाइं ॥

२३७. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव' नेरइया किं मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ?
तिण्णि वि ॥

२३८. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव" मणजोए वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता ? सत्तावीसं भंगा" ॥

२३९. एवं वइजोए ॥

२४०. एवं कायजोए ॥

२४१. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव" नेरइया किं सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता" ?
गोयमा ! सागारोवउत्ता वि, अणागारोवउत्ता वि ॥

२४२. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव" सागारोवओगे वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता ? सत्तावीसं भंगा" ॥

---

१. भ० १।२१६ ।
२. भ० १।२२७ ।
३. भ० १।२१७ ।
४. भ० १।२१८ पादटिप्पण ।
५. भ० १।२१६ ।
६. [illegible] (ता) ।
७. भ० १।२१७ ।
८. भ० १।२१७ ।
९. भ० १।२१६ ।
१०. भ० १।२१७ ।
११. भ० १।२१७ ।
१२. भ० १।२१६ ।
१३. [illegible]
१४. भ० १।२१६ ।
१५. भ० १।२१७ ।

२५१. बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाण जेहिं ठाणेहिं नेरइयाण असीइभंगा तेहिं ठाणेहिं असीइ चेव, नवरं—अब्भहिया सम्मत्ते। आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे य एएहिं असीइभंगा। जेहिं ठाणेहिं नेरइयाण सत्तावीसं भंगा तेसु ठाणेसु सव्वेसु अभंगयं ॥

२५२. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया तहा भाणियव्वा[1], नवरं—जेहिं सत्तावीसं भंगा तेहिं अभंगयं कायव्वं[2] ॥

२५३. मणुस्सा वि। जेहिं ठाणेहिं नेरइयाण असीतिभंगा तेहिं ठाणेहिं मणुस्साण वि असीतिभंगा भाणियव्वा। जेसु सत्तावीसा तेसु अभंगयं, नवरं—मणुस्साण अब्भहियं जहण्णियाए ठिईए, आहारए य असीतिभंगा ॥

२५४. वाणमंतर-जोतिस-वेमाणिया जहा भवणवासी, नवरं—नाणत्तं जाणियव्वं जं जस्स जाव अणुत्तरा ॥

२५५. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव[3] विहरइ ॥

छट्ठो उद्देसो

सूरिय-पद

२५६. जावइयाओ[4] णं भंते! ओवासंतराओ उदयंते सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति, अत्थमंते वि य णं सूरिए तावतियाओ चेव ओवासंतराओ चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति?
हंता गोयमा! जावइयाओ णं ओवासंतराओ उदयंते सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति, अत्थमंते वि [illegible] य णं सूरिए तावतियाओ चेव ओवासंतराओ चक्खुप्फासं[5] हव्वमागच्छति ॥

२५७. 'जावइय णं'[1], भंते! खेत्तं उदयंते सूरिए आयवेणं सव्वओ समंता ओभासेइ उज्जोएइ तवेइ पभासेइ, अत्थमंते वि य णं सूरिए तावइयं चेव खेत्तं आयवेणं सव्वओ समंता ओभासेइ? उज्जोएइ? तवेइ? पभासेइ?

---

१. भ० १।२१६-२४३।
२. [illegible]
३. भ० १।५१।
४. [illegible]
४. [illegible]
५. [illegible]

२७०. लोयंते भंते ! अलोयंतं फुसइ ? अलोयंते वि लोयंतं फुसइ ?

हंता गोयमा ! लोयंते अलोयंतं फुसइ, अलोयंते वि लोयंतं फुसइ ॥

२७१. तं भंते ! किं पुट्ठं फुसइ ? अपुट्ठं फुसइ ?

गोयमा ! पुट्ठं फुसइ, नो अपुट्ठं जाव[1] नियमा छद्दिसिं फुसइ ॥

२७२. दीवंते भंते ! सागरंतं फुसइ ? सागरंते वि दीवंतं फुसइ ?

हंता गोयमा ! दीवंते सागरंतं फुसइ, सागरंते वि दीवंतं फुसइ जाव[2] नियमा छद्दिसिं फुसइ ॥

२७३. [3]उदयंते भंते ! पोयंतं[4] फुसइ ? पोयंते वि उदयंतं फुसइ ?

हंता गोयमा ! उदयंते पोयंतं फुसइ, पोयंते उदयंतं फुसइ जाव[5] नियमा छद्दिसिं फुसइ ॥

२७४. छिद्दंते भंते ! दूसंतं फुसइ ? दूसंते वि छिद्दंतं फुसइ ?

हंता गोयमा ! छिद्दंते दूसंतं फुसइ, दूसंते वि छिद्दंतं फुसइ जाव[6] नियमा छद्दिसिं फुसइ ॥

२७५. छायंते भंते ! आयवंतं फुसइ ? आयवंते वि छायंतं फुसइ ?

हंता गोयमा ! छायंते आयवंतं फुसइ, आयवंते वि छायंतं फुसइ जाव[7] नियमा° छद्दिसिं फुसइ ॥

किरिया-पदं

२७६. अत्थि णं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ ?

हंता अत्थि ॥

२७७. सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?

गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जइ जाव[8] निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउदिसिं, सिय पंचदिसिं ॥

२७८. सा भंते ! किं कडा कज्जइ ? अकडा कज्जइ ?

गोयमा ! कडा कज्जइ, नो अकडा कज्जइ ॥

२७९. सा भंते ! किं अत्तकडा कज्जइ ? परकडा कज्जइ ? तदुभयकडा कज्जइ ?

गोयमा ! अत्तकडा कज्जइ, नो परकडा कज्जइ, नो तदुभयकडा कज्जइ ॥

२८०. सा भंते ! किं 'आणुपुव्वि कडा' कज्जइ ? अणाणुपुव्वि कडा कज्जइ ?

गोयमा ! आणुपुव्वि कडा कज्जइ, नो अणाणुपुव्वि कडा कज्जइ । जा य

---

1. भ० १।२५८-२६६ ।
2. भ० १।२५८-२६६ ।
3. [illegible]
4. [illegible] (क, ख, [illegible]) ।
5, 6, 7. भ० १।२५८-२६६ ।
8. भ० १।२५६-२६६ ।
9. [illegible] (ब, म, स) ।

रोहा ! सत्तमे तणुवाए य सत्तमे घणवाए य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा ! ०

३०६ एव' तहेव नेयव्व जाव' सव्वद्धा ॥

३०७ एव उवरिल्ल एक्केक्क सजोयतेण, जो जो हिट्ठिल्लो त त छड्डतेणं नेयव्व जाव' अतीत-अणागतद्धा, पच्छा सव्वद्धा जाव' अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

३०८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव' विहरइ ॥

लोयट्ठिति-पदं

३०९. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीरं जाव' एव वयासी—

३१०. कतिविहा ण भते ! लोयट्ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठविहा लोयट्ठिति पण्णत्ता, त जहा—१. आगासपइट्ठिए वाए। २. वायपइट्ठिए उदही। ३. उदहिपइट्ठिया पुढवी। ४. पुढविपइट्ठिया तस-थावरा पाणा। ५. अजीवा जीवपइट्ठिया। ६. जीवा कम्मपइट्ठिया। ७. अजीवा जीवसगहिया। ८. जीवा कम्मसगहिया ॥

३११. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अट्ठविहा लोयट्ठिती जाव' जीवा कम्मसगहिया ?
गोयमा ! से जहाणामए केइ पुरिसे वत्थिमाडोवेइ', वत्थिमाडोवेत्ता उप्पि सित बधइ, बधित्ता मज्झे' गठि बधइ, बधित्ता उवरिल्ल गठि मुयइ, मुइत्ता उवरिल्ल देस वामेइ, वामेत्ता उवरिल्ल देस 'आउयायस्स पूरेइ'', पूरेत्ता उप्पि सित बधइ, बधित्ता मज्झिल्ल गठि मुयइ। से नूण गोयमा ! से आउयाए तस्स वाउयायस्स उप्पि उवरिमतले चिट्ठइ ?
हता चिट्ठइ''।
से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—अट्ठविहा लोयट्ठिती जाव जीवा कम्मसगहिया।
से जहा वा केइ पुरिसे वत्थिमाडोवेइ, वत्थिमाडोवेत्ता कडीए बधइ, बधित्ता अत्थाहमतारमपोरुसियसि'' उदगसि ओगाहेज्जा। से नूण गोयमा ! से पुरिसे तस्स आउयायस्स उवरिमतले चिट्ठइ ?
हता चिट्ठइ।
एव वा अट्ठविहा लोयट्ठिई जाव जीवा कम्मसगहिया ॥

सत्तमो उद्देसो

देस-सव्व-पदं

३१८. नेरइए णं भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे, किं—१. देसेणं देसं उववज्जइ ? २. देसेणं सव्वं उववज्जइ ? ३. सव्वेणं देसं उववज्जइ ? ४. सव्वेणं सव्वं उववज्जइ ?

गोयमा ! १. नो देसेणं देसं उववज्जइ । २. नो देसेणं सव्वं उववज्जइ । ३. नो सव्वेणं देसं उववज्जइ । ४. सव्वेणं सव्वं उववज्जइ ॥

३१९. जहा नेरइए, एवं जाव[1] वेमाणिए ॥

३२०. नेरइए णं भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे, किं—१. देसेणं देसं आहारेइ ? २. देसेणं सव्वं आहारेइ ? ३. सव्वेणं देसं आहारेइ ? ४. सव्वेणं सव्वं आहारेइ ?

गोयमा ! १. नो देसेणं देसं आहारेइ । २. नो देसेणं सव्वं आहारेइ । ३. सव्वेणं वा देसं आहारेइ । ४. सव्वेणं वा सव्वं आहारेइ ॥

३२१. एवं जाव[2] वेमाणिए[3] ॥

३२२. नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो[4] उव्वट्टमाणे, किं—१. देसेणं देसं उव्वट्टइ ? २. [5]देसेणं सव्वं उव्वट्टइ ? ३. सव्वेणं देसं उव्वट्टइ ? ४. सव्वेणं सव्वं उव्वट्टइ ?

गोयमा ! १. नो देसेणं देसं उव्वट्टइ । २. नो देसेणं सव्वं उव्वट्टइ । ३. नो सव्वेणं देसं उव्वट्टइ । ४. सव्वेणं सव्वं उव्वट्टइ ॥

३२३. एवं जाव वेमाणिए ॥

३२४. नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे, किं—१. देसेणं देसं आहारेइ ? २. देसेणं सव्वं आहारेइ ? ३. सव्वेणं देसं आहारेइ ? ४. सव्वेणं सव्वं आहारेइ ?

गोयमा ! १. नो देसेणं देसं आहारेइ । २. नो देसेणं सव्वं आहारेइ । ३. सव्वेणं वा देसं आहारेइ । ४. सव्वेणं वा सव्वं आहारेइ ॥

---

1. [illegible]
2. [illegible]
3. वेमाणिया (म) ।
4. नेरइएसु (ता, म) ।
5. [illegible]

[illegible]

३३६. एव जाव' वेमाणिए ॥
३३७. जीवा ण भते ! कि विग्गहगइसमावण्णया ? अविग्गहगइसमावण्णया ?
गोयमा ! विग्गहगइसमावण्णगा वि, अविग्गहगइसमावण्णगा वि ॥
३३८. नेरइया ण भते ! कि विग्गहगइसमावण्णगा ? अविग्गहगइसमावण्णगा ?
गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्ज अविग्गहगइसमावण्णगा । अहवा अविग्गहगइसमावण्णगा, विग्गहगइसमावण्णगे य । अहवा अविग्गहगइसमावण्णगा य, विग्गहगइसमावण्णगा य । एव जीव—एगिदियवज्जो तियभगो ।

आयु-पद

३३९. देवे ण भते ! महिड्ढिए' महज्जुइए महब्बले महायसे महेसक्खे' महाणुभावे अविउक्कतिय चयमाणे' किंचिकाल' हिरिवत्तिय' दुगछावत्तिय परीसहवत्तिय' आहार नो आहारेइ । अहे ण आहारेइ आहारिज्जमाणे आहारिए, परिणामिज्जमाणे परिणामिए, पहीणे य आउए भवइ । जत्थ उववज्जइ त आउय पडिसवेदेइ, त जहा—तिरिक्खजोणियाउय वा, मणुस्साउय वा ?
हता गोयमा ! देवेण महिड्ढिए' °महज्जुइए महब्बले महायसे महेसक्खे महाणुभावे अविउक्कतिय चयमाणे किंचिकाल हिरिवत्तिय दुगछावत्तिय परीसहवत्तिय आहार नो आहारेइ । अहे ण आहारेइ आहारिज्जमाणे आहारिए, परिणामिज्जमाणे परिणामिए, पहीणे य आउए भवइ । जत्थ उववज्जइ त आउय पडिसवेदेइ, त जहा—तिरिक्खजोणियाउय वा° मणुस्साउय वा ।

गब्भ-पदं

३४०. जीवे ण भते ! गब्भ वक्कममाणे कि सइदिए वक्कमइ ? अणिदिए वक्कमइ ?
गोयमा ! सिय सइदिए वक्कमइ । सिय अणिदिए वक्कमइ ॥
३४१. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सिय सइदिए वक्कमइ ? सिय अणिदिए वक्कमइ ?
गोयमा ! दव्विदियाइ पडुच्च अणिदिए वक्कमइ । भाविदियाइ पडुच्च सइदिए वक्कमइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सिय सइदिए वक्कमइ । सिय अणिदिए वक्कमइ ॥

माउजीवरसहरणी, पुत्तजीवरसहरणी, माउजीवपडिबद्धा पुत्तजीवफुडा[1]—तम्हा आहारेइ, तम्हा परिणामेइ ।

अवरा वि य ण पुत्तजीवपडिबद्धा माउजीवफुडा[2]—तम्हा चिणाइ, तम्हा उवचिणाइ । से तेणट्ठेण[3] °गोयमा ! एव वुच्चइ—जीवे ण गब्भगए समाणे° नो पभू मुहेण कावलिय आहारमाहारित्तए ॥

माइय-पेइय-अग-पद

३५०. कइ ण भते ! माइयगा पण्णत्ता ?

गोयमा ! तओ माइयगा पण्णत्ता, त जहा—मसे, सोणिए, मत्थुलुगे[4] ॥

३५१. कइ ण भते ! पेतियगा पण्णत्ता ?

गोयमा ! तओ पेतियगा पण्णत्ता, त जहा—अट्ठि, अट्ठिमिजा, केस-मसु-रोम-नहे ॥

३५२. अम्मापेइए[5] ण भते ! सरीरए केवइय काल सचिट्ठइ ?

गोयमा ! जावइय से काल भवधारणिज्जे सरीरए अव्वावन्ने भवइ एवतिय काल सचिट्ठइ, अहे ण समए-समए वोयसिज्जमाणे-वोयसिज्जमाणे चरिम-कालसमयसि वोच्छिण्णे भवइ ॥

गब्भस्स नरगगमण-पद

३५३. जीवे ण भते ! गब्भगए समाणे नेरइएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ॥

३५४. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! से ण सण्णी पचिदिए सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए पराणीय आगय सोच्चा निसम्म[6] पएसे निच्छुभइ, निच्छुभित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णइ,[7] समोहणित्ता चाउरगिणि सेण विउव्वइ, विउव्वित्ता चाउरगिणीए सेणाए पराणीएण सद्धि सगाम सगामेइ ।

से ण जीवे अत्थकामए रज्जकामए भोगकामए कामकामए अत्थकखिए रज्जकखिए भोगकखिए कामकखिए, अत्थपिवासिए रज्जपिवासिए भोग-पिवासिए कामपिवासिए, तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झव-साणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए, एयसि ण अतरसि कालं

१. [illegible] ।
२. [illegible] ।
३. स० पा० —[illegible] ।
४. [illegible] ।
५. [illegible] ।
६. [illegible] ।
७. [illegible] ।
८. [illegible] ।
९. [illegible] ।

तओ भवइ दुरूवे दुवण्णे 'दुग्गधे दुरसे'[1] दुफासे अणिट्ठे अकते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे हीणस्सरे दीणस्सरे अणिट्ठस्सरे अकतस्सरे अप्पियस्सरे असुभस्सरे अमणुण्णस्सरे अमणामस्सरे 'अणाएज्जवयणे पच्चायाए'[2] या वि भवइ।

वण्णवज्झाणि य से कम्माइ नो बद्धाइ[3] •नो पुट्ठाइ नो निहत्ताइ नो कडाइ नो पट्ठवियाइ नो अभिनिविट्ठाइ नो अभिसमण्णागयाइ नो उदिण्णाइ—उवसताइ भवति, तओ भवइ सुरूवे सुवण्णे सुगधे सुरसे सुफासे इट्ठे कते पिए सुभे मणुण्णे मणामे अहीणस्सरे अदीणस्सरे इट्ठस्सरे कतस्सरे पियस्सरे सुभस्सरे मणुण्णस्सरे मणामस्सरे° 'आदेज्जवयणे पच्चायाए'[4] या वि भवइ ॥

३५८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[5] ॥

अट्ठमो उद्देसो

बालस्स आउय-पद

३५९. एगतबाले ण भते ! मणुस्से कि नेरइयाउय पकरेति ? तिरिक्खाउय पकरेति ? मणुस्साउय पकरेति ? देवाउय पकरेति ? नेरइयाउय किच्चा नेरइएसु उववज्जति ? तिरियाउय किच्चा तिरिएसु उववज्जति ? मणुस्साउय किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति ? देवाउय किच्चा देवलोगेसु उववज्जति ?

गोयमा ! एगतबाले ण मणुस्से नेरइयाउय पि पकरेति, तिरियाउय पि पकरेति, मणुस्साउय पि पकरेति, देवाउय पि पकरेति, नेरइयाउय किच्चा नेरइएसु उववज्जति, तिरियाउय किच्चा तिरिएसु उववज्जति, मणुस्साउय किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति, देवाउय किच्चा देवलोगेसु उववज्जति ॥

पडियस्स आउय-पद

३६०. एगतपडिए ण भते ! मणुस्से कि नेरइयाउय पकरेति[6] ? •तिरिक्खाउय पकरेति ? मणुस्साउय पकरेति ? देवाउय पकरेति ? नेरइयाउय किच्चा

---

१. दुगंधे (म)।

२. ? [illegible] (अ, क, ख, ब, म, स), [illegible] (वा० १०) [illegible]।

३. भ० १।७०—[illegible]।

४. ° [illegible] (क, ख)।

५. भ० १।५१।

६. भ० १।—[illegible]।

किरिया-पदं

३६४. पुरिसे ण भंते ! कच्छसि वा दहसि वा उदगसि वा दवियसि वा वलयसि वा नूमसि वा गहणसि वा गहणविदुग्गसि वा पव्वयसि वा पव्वयविदुग्गसि वा वणसि वा वणविदुग्गसि वा मियवित्तीए[1] मियसकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गता एते मिय[2] त्ति काउ अण्णयरस्स मियस्स वहाए कूडपास उद्दाति[3], ततो ण भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

गोयमा ! सिय[4] तिकिरिए, सिय चउकिरिए[5], सिय पचकिरिए ॥

३६५. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सिय तिकिरिए ? सिय चउकिरिए ? सिय पचकिरिए ?

गोयमा ! जे भविए उद्दवणयाए—णो बधणयाए, णो मारणयाए—ताव च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए[6]—तिहि किरियाहि पुट्ठे ।

जे भविए उद्दवणताए वि, बधणताए वि—णो मारणताए—ताव च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए[7], पारितावणियाए—चउहि किरियाहि पुट्ठे ।

जे भविए उद्दवणताए[8] वि, बधणताए वि, मारणताए वि, ताव च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए, पाणातिवाय-किरियाए—पचहि किरियाहि पुट्ठे । से तेणट्ठेण[9] •गोयमा ! एव वुच्चइ—सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय° पचकिरिए ॥

३६६. पुरिसे ण भते ! कच्छसि वा जाव[10] वणविदुग्गसि वा तणाइ ऊसविय-ऊसविय अगणिकाय निसिरइ—ताव च ण भते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ॥

३६७. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सिय तिकिरिए ? सिय चउकिरिए ? सिय पचकिरिए ?

गोयमा ! जे भविए उस्सवणयाए[11]—•णो निसिरणयाए, णो दहणयाए—ताव

१. मियवत्तिए (?), मियवत्तीए (?) ।
२. [illegible] (अ, ता, ब, म, स) ।
३. उद्दाइ (?, ?, ता, ब, म) ।
४. [illegible] (?, ता, ब, म) ।
५. चउ° (?) ।
६. पाओसियाए (अ, क, म) ।
७. पाओसियाए (ब) ।
८. उद्दवणाए (ब) ।
९. सं० पा० — तेणट्ठेणं जाव पंच° ।
१०. भ० १।३६४ ।
११. सं० पा०—[illegible]

मिय विधेज्जा, से णं भते ! पुरिसे कि मियवेरेण पुट्ठे ? पुरिसवेरेण पुट्ठे ?
गोयमा ! जे मिय मारेइ, से मियवेरेण पुट्ठे । जे पुरिस मारेइ, से पुरिसवेरेण पुट्ठे ॥

३७१. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ[1]—•जे मिय मारेइ, से मियवेरेण पुट्ठे ? जे पुरिस मारेइ, से० पुरिसवेरेण पुट्ठे ?
से नूण गोयमा ! कज्जमाणे कडे, सधिज्जमाणे[2] सधिते, निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिते, निसिरिज्जमाणे निसिट्ठे[3] त्ति वत्तव्व सिया ?
हता भगव ! कज्जमाणे कडे[4], •सधिज्जमाणे सधिते, निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिते, निसिरिज्जमाणे० निसिट्ठे त्ति वत्तव्व सिया ।
से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—जे मिय मारेइ, से मियवेरेण पुट्ठे । जे पुरिस मारेइ, से पुरिसवेरेण पुट्ठे ।
अतो छण्ह मासाण मरइ—काइयाए[5], •अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए, पाणातिवायकिरियाए०—पचहि किरियाहि पुट्ठे । बाहि छण्ह मासाणं मरइ—काइयाए[6] •अहिगरणियाए, पाओसियाए० पारितावणियाए—चउहि किरियाहि पुट्ठे ॥

३७२. पुरिसे ण भते ! पुरिस सत्तीए समभिधसेज्जा, सयपाणिणा[7] वा से असिणा सीस छिदेज्जा, ततो ण भते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?
गोयमा ! जाव च ण से पुरिसे त पुरिस सत्तीए समभिधसेति[8], सयपाणिणा[9] वा से असिणा सीस छिदति—ताव च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए[10] •पाओसियाए, पारितावणियाए०, पाणातिवातकिरियाए—पचहि किरियाहि पुट्ठे ।
आसण्णवधएण य अणवकखणवत्तीए[11] ण पुरिसवेरेण पुट्ठे ॥

जय-पराजय-पदं

३७३. दो भते ! पुरिसा सरिसया[12] सरित्तया[13] सरिव्वया सरिसभडमत्तोवगरणा[14] अण्णमण्णेण सद्धि सगाम सगामेति तत्थ ण एगे पुरिसे पराइणति, एगे पुरिसे पराइज्जति[15] । से कहमेय भते ! एव ?

---

१. स० पा०—वुच्चइ जाव पुरिस० ।
२. सधेज्जमाणे (ता) ।
३. निसट्ठे (क, ता) ।
४. स० पा०—कडे जाव निसिट्ठे ।
५. स० पा०—काइयाए जाव पचहि ।
६. स० पा०—काइयाए जाव पाओसि०, [illegible] (ता) ।
७. सयपाणिणा (क, ता) ।
८. [illegible] (ब, म, स) ।
९. सयपाणिणा (क, ता) ।
१०. स० पा०—अहिगरणियाए जाव पाणा० ।
११. [illegible] (क, म) ।
१२. सरिसया (ब) ।
१३. [illegible] (ब) ।
१४. सरिसभडमत्तोवगरणा (अ, ता, ब); सरिसभडग (म) ।

३९३. सत्तमे णं भंते ! तणुवाए किं गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
　　गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, गरुयलहुए, णो अगरुयलहुए ॥

३९४. एवं सत्तमे घणवाए, सत्तमे घणोदही, सत्तमा पुढवी ॥

३९५. ओवासंतराइं सव्वाइं जहा[1] सत्तमे ओवासंतरे ॥

३९६. 'जहा तणुवाए एवं—ओवास-वाय-घणउदही, पुढवी दीवा य सागरा वासा[2] ॥

३९७. नेरइया णं भंते ! किं गरुया[3] ? •लहुया ? गरुयलहुया ?० अगरुयलहुया ?
　　गोयमा ! णो गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया वि, अगरुयलहुया वि ॥

३९८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया णो गरुया ? णो लहुया ? गरुयलहुया वि ? अगरुयलहुया वि ?
　　गोयमा ! विउव्विय-तेयाइं पडुच्च णो गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया, णो अगरुयलहुया । जीवं च कम्मगं[4] च पडुच्च णो गरुया, णो लहुया, णो गरुयलहुया, अगरुयलहुया । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया णो गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया वि, अगरुयलहुया वि ॥

३९९. एवं जाव[5] वेमाणिया, नवरं—नाणत्तं जाणियव्वं सरीरेहिं ॥

४००. धम्मत्थिकाए[6] •णं भंते ! किं गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
　　गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ॥

४०१. अहम्मत्थिकाए णं भंते ! किं गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
　　गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ॥

४०२. आगासत्थिकाए णं भंते ! किं गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
　　गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ॥

४०३. जीवत्थिकाए णं भंते ! किं गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
　　गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए० ॥

४०४. पोग्गलत्थिकाए णं भंते ! किं गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
　　गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, गरुयलहुए वि, अगरुयलहुए वि ॥

४०५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—णो गरुए ? णो लहुए ? गरुयलहुए वि ? अगरुयलहुए वि ?
　　गोयमा ! गरुयलहुयदव्वाइं पडुच्च णो गरुए, णो लहुए, गरुयलहुए, णो

---

१. भ० १।३६० ।
२. [illegible]
३. [illegible]
४. [illegible]
५. [illegible]
६. [illegible]

हंता गोयमा ! अकोहत्तं अमाणत्तं[1] •अमायत्तं अलोभत्तं समणाणं निग्गंथाणं° पसत्थं ॥

कंखापदोस-पदं

४१९. से नूणं भंते ! कंखापदोसे खीणे समणे निग्गंथे अंतकरे भवति, अंतिमसरीरिए वा ?
बहुमोहे वि य णं पुव्विं विहरित्ता अह[2] पच्छा संवुडे कालं करेइ ततो पच्छा सिज्झति[3] •बुज्झति मुच्चति परिनिव्वाति सव्वदुक्खाणं° अंतं करेति ?
हंता गोयमा ! कंखापदोसे[4] खीणे •समणे निग्गंथे अंतकरे भवति, अंतिमसरीरिए वा ।
बहुमोहे वि य णं पुव्विं विहरित्ता अह पच्छा संवुडे कालं करेइ ततो पच्छा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिनिव्वाति सव्वदुक्खाणं° अंतं करेति ॥

इह-पर-भवियाउय-पदं

४२०. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति, एवं भासंति, एवं पण्णवेंति, एवं परूवेंति—एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो आउयाइं पकरेति, तं जहा—इहभवियाउयं[5] च, परभवियाउयं च ।
जं समयं इहभवियाउयं पकरेति, तं समयं परभवियाउयं पकरेति ।
जं समयं परभवियाउयं पकरेति, तं समयं इहभवियाउयं पकरेति ।
इहभवियाउयस्स पकरणयाए परभवियाउयं पकरेति,
परभवियाउयस्स पकरणयाए इहभवियाउयं पकरेति ।
एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो आउयाइं पकरेति, तं जहा—इहभवियाउयं च, परभवियाउयं च ॥

४२१. से कहमेयं[6] भंते ! एवं ?
गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव[7] एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो आउयाइं पकरेति, तं जहा—इहभवियाउयं च, परभवियाउयं च ।
जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, •एवं भासामि, एवं पण्णवेमि, एवं° परूवेमि—एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं पकरेति, तं जहा—इहभवियाउयं वा, परभवियाउयं वा ।

---

१. सं० पा०—अमाणत्तं जाव पसत्थं ।
२. [illegible]
३. सं० पा०—सिज्झति जाव अंतं ।
४. [illegible]
५. [illegible]
६. [illegible]
७. [illegible]
८. [illegible]
९. सं० पा०—[illegible]

अज्जो! सामाइए? के भे अज्जो! सामाइयस्स अट्ठे? जाव के भे अज्जो! विउस्सग्गे? के भे अज्जो! विउस्सग्गस्स अट्ठे?

४२६. तए णं थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी—
आया णे अज्जो! सामाइए, आया णे अज्जो! सामाइयस्स अट्ठे[1]।
•आया णे अज्जो! पच्चक्खाणे, आया णे अज्जो! पच्चक्खाणस्स अट्ठे।
आया णे अज्जो! संजमे, आया णे अज्जो! संजमस्स अट्ठे।
आया णे अज्जो! संवरे, आया णे अज्जो! संवरस्स अट्ठे।
आया णे अज्जो! विवेगे, आया णे अज्जो! विवेगस्स अट्ठे॥
आया णे अज्जो! विउस्सग्गे, आया णे अज्जो!° विउस्सग्गस्स अट्ठे॥

४२७. तए णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवंते एवं वदासी—
जइ भे अज्जो! आया सामाइए, आया सामाइयस्स अट्ठे जाव आया विउस्सग्गस्स अट्ठे—अवहट्टु कोह-माण-माया-लोभे किमट्ठं अज्जो! गरहह[2]?
कालासा[3]! संजमट्ठयाए॥

४२८. से भंते! किं गरहा संजमे? अगरहा संजमे?
कालासा! गरहा संजमे, णो अगरहा संजमे। गरहा वि य णं सव्वं दोसं पविणेति, सव्वं बालियं परिण्णाए। एवं खु णे आया संजमे उवहिते भवति। एवं खु णे आया संजमे उवचिए भवति। एवं खु णे आया संजमे उवट्ठिते भवति॥

४२९. एत्थ णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे संबुद्धे थेरे भगवंते वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एएसि णं भंते! पयाणं पुव्विं अण्णाणयाए असवणयाए अबोहीए[4] अणभिगमेणं अदिट्ठाणं अस्सुयाणं अमुयाणं[5] अविण्णायाणं अव्वोकडाणं[6] अव्वोच्छिण्णाणं अणिज्जूढाणं अणुवधारियाणं एयमट्ठे नो सद्दहिए नो पत्तिइए नो रोइए।
इयाणिं भंते! एतेसिं पयाणं जाणणयाए सवणयाए बोहीए अभिगमेणं दिट्ठाणं सुयाणं मुयाणं[7] विण्णायाणं वोगडाणं वोच्छिण्णाणं णिज्जूढाणं उवधारियाणं[8] एयमट्ठं सद्दहामि पत्तियामि रोएमि। एवमेयं से जहेयं[9] तुब्भे वदह॥

४३०. तए णं ते थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी—सद्दहाहि

---

१. [illegible]
२. भ० १।४५२।
३. [illegible]
४. [illegible]
५. [illegible]
६. [illegible]
७. [illegible]
८. [illegible]
९. [illegible]
१०. [illegible]

अज्जो ! सामाइए ? के भे अज्जो ! सामाइयस्स अट्ठे ? जाव के भे अज्जो ! विउस्सग्गे ? के भे अज्जो ! विउस्सग्गस्स अट्ठे ?

४२६. तए ण थेरा भगवतो कालासवेसियपुत्त अणगार एव वयासी —
आया णे अज्जो ! सामाइए, आया णे अज्जो ! सामाइयस्स अट्ठे[1] ।
•आया णे अज्जो ! पच्चक्खाणे, आया णे अज्जो ! पच्चक्खाणस्स अट्ठे ।
आया णे अज्जो ! सजमे, आया णे अज्जो ! सजमस्स अट्ठे ।
आया णे अज्जो ! सवरे, आया णे अज्जो ! सवरस्स अट्ठे ।
आया णे अज्जो ! विवेगे, आया णे अज्जो ! विवेगस्स अट्ठे ॥
आया णे अज्जो ! विउस्सग्गे, आया णे अज्जो !° विउस्सग्गस्स अट्ठे ॥

४२७. तए ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवते एव वदासी—
जइ भे अज्जो ! आया सामाइए, आया सामाइयस्स अट्ठे जाव[2] आया विउस्सग्गस्स अट्ठे— अवहट्टु कोह-माण-माया-लोभे किमट्ठ अज्जो ! गरहह[3] ? कालासा[4] ! सजमट्ठयाए ॥

४२८. से भते ! कि गरहा सजमे ? अगरहा सजमे ?
कालासा ! गरहा सजमे, णो अगरहा सजमे । गरहा वि य ण सव्व दोस पविणेति, सव्व बालिय परिण्णाए । एव खु णे आया सजमे उवहिते भवति । एव खु णे आया सजमे उवचिए भवति । एव खु णे आया सजमे उवट्ठिते भवति ॥

४२९. एत्थ ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे सबुद्धे थेरे भगवते वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एएसि ण भते ! पयाण पुव्वि अण्णाणयाए असवणयाए अबोहीए[5] अणभिगमेण अदिट्ठाण अस्सुयाण अमुयाण[6] अविण्णायाण अव्वोगडाण[7] अव्वोच्छिण्णाण अणिज्जूढाण अणुवधारियाण एयमट्ठे नो सद्दहिए नो पत्तिइए नो रोइए ।
इयाणि भते ! एतेसि पयाण जाणयाए सवणयाए बोहीए अभिगमेण दिट्ठाण सुयाण मुयाण[8] विण्णायाण वोगडाण वोच्छिण्णाण णिज्जूढाण उवधारियाण[9] एयमट्ठ सद्दहामि पत्तियामि रोएमि । एवमेय से जहेय[10] तुब्भे वदह ॥

४३०. तए ण ते थेरा भगवतो कालासवेसियपुत्त अणगार एव वयासी—सद्दहाहि

1. स० पा० — अट्ठे जाव विउस्सग्गस्स ।
2. भ० १।४२३ ।
3. गरहह (ता) ।
4. [illegible] (ता) ।
5. अबोहिए (ब, म) ।
6. [illegible] (म), पुनो [illegible]' इति [illegible] ।
7. अव्वोगडाण (क, ब, म), अवोगडाण (ता, म) ।
8. मुयाण (ता), x (म) ।
9. [illegible] (ता) ।
10. [illegible] (ता) ।

ज समय इहभवियाउय पकरेति, णो त समय परभवियाउय पकरेति ।
ज समय परभवियाउय पकरेति, णो त समय इहभवियाउय पकरेति ।
इहभवियाउयस्स पकरणताए णो परभवियाउय पकरेति ।
परभवियाउयस्स पकरणताए णो इहभवियाउय पकरेति ।
एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग आउय पकरेति, त जहा—इहभवियाउय वा, परभवियाउय वा ॥

४२२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति भगव गोयमे जाव[1] विहरति ॥

कालासवेसियपुत्त-पदं

४२३. तेण कालेण तेण समएण पासावच्चिज्जे कालासवेसियपुत्ते णाम अणगारे जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थेरे भगवते[2] एव वयासी—
थेरा सामाइय न याणति, थेरा सामाइयस्स अट्ठ न याणति ।
थेरा पच्चक्खाण न याणति, थेरा पच्चक्खाणस्स अट्ठ न याणति ।
थेरा सजम न याणति, थेरा सजमस्स अट्ठ न याणति ।
थेरा सवर न याणति, थेरा सवरस्स अट्ठ न याणति ।
थेरा विवेग न याणति, थेरा विवेगस्स अट्ठ ण याणति ।
थेरा विउस्सग्ग न याणति, थेरा विउस्सग्गस्स अट्ठ न याणति ॥

४२४. तए ण थेरा भगवतो कालासवेसियपुत्त अणगार एव वदासी—
जाणामो ण अज्जो ! सामाइय, जाणामो ण अज्जो ! सामाइयस्स[3] अट्ठ[4] ।
•जाणामो ण अज्जो ! पच्चक्खाण, जाणामो ण अज्जो ! पच्चक्खाणस्स अट्ठ ।
जाणामो ण अज्जो ! सजम, जाणामो ण अज्जो ! सजमस्स अट्ठं ।
जाणामो ण अज्जो ! सवर, जाणामो ण अज्जो ! सवरस्स अट्ठ ।
जाणामो ण अज्जो ! विवेग, जाणामो ण अज्जो ! विवेगस्स अट्ठ ।
जाणामो ण अज्जो ! विउस्सग्ग°, जाणामो ण अज्जो ! विउस्सग्गस्स अट्ठ ॥

४२५. तए ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे ते थेरे भगवते एव वयासी—जइ[5] ण अज्जो ! तुब्भे जाणह सामाइय, तुब्भे जाणह सामाइयस्स अट्ठ जाव[6] जइ ण अज्जो ! तुब्भे जाणह विउस्सग्ग, तुब्भे जाणह विउस्सग्गस्स अट्ठ । के भे[7]

अज्जो ! सामाइए ? के भे अज्जो ! सामाइयस्स अट्ठे ? जाव के भे अज्जो ! विउस्सग्गे ? के भे अज्जो ! विउस्सग्गस्स अट्ठे ?

४२६ तए णं थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी—
आया णे अज्जो ! सामाइए, आया णे अज्जो ! सामाइयस्स अट्ठे[1] ।
•आया णे अज्जो ! पच्चक्खाणे, आया णे अज्जो ! पच्चक्खाणस्स अट्ठे ।
आया णे अज्जो ! संजमे, आया णे अज्जो ! संजमस्स अट्ठे ।
आया णे अज्जो ! संवरे, आया णे अज्जो ! संवरस्स अट्ठे ।
आया णे अज्जो ! विवेगे, आया णे अज्जो ! विवेगस्स अट्ठे ॥
आया णे अज्जो ! विउस्सग्गे, आया णे अज्जो ! ० विउस्सग्गस्स अट्ठे ॥

४२७. तए णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवंते एवं वदासी—
जइ भे अज्जो ! आया सामाइए, आया सामाइयस्स अट्ठे जाव[2] आया विउस्सग्गस्स अट्ठे— अवहट्टु कोह-माण-माया-लोभे किमट्ठं अज्जो ! गरहह[3] ?
कालासा[4] ! संजमट्ठयाए ॥

४२८. से भंते ! किं गरहा संजमे ? अगरहा संजमे ?
कालासा ! गरहा संजमे, णो अगरहा संजमे । गरहा वि य णं सव्वं दोसं पविणेति, सव्वं बालियं परिण्णाए । एवं खु णे आया संजमे उवहिते भवति । एवं खु णे आया संजमे उवचिए भवति । एवं खु णे आया संजमे उवट्ठिते भवति ॥

४२९. एत्थ णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे संबुद्धे थेरे भगवंते वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एएसि णं भंते ! पयाणं पुव्विं अण्णाणयाए असवणयाए अबोहीए अणभिगमेणं अदिट्ठाणं असुयाणं अमुयाणं[5] अविण्णायाणं अव्वोगडाणं[6] अव्वोच्छिण्णाणं अणिज्जूढाणं अणुवधारियाणं एयमट्ठे नो सद्दहिए नो पत्तिइए नो रोइए ।

इदाणिं भंते ! एतेसिं पयाणं जाणणयाए सवणयाए बोहीए अभिगमेणं दिट्ठाणं सुयाणं मुयाणं[7] विण्णायाणं वोगडाणं वोच्छिण्णाणं णिज्जूढाणं उवधारियाणं[8] एयमट्ठं सद्दहामि पत्तियामि रोएमि । एवमेयं से जहेयं[9] तुब्भे वदह ॥

४३०. तए णं ते थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी—सद्दहाहि

१. सं० पा०—अट्ठे जाव विउस्सग्गस्स ।
२. भ० १।४२३ ।
३. [illegible]
४. [illegible]
५. [illegible]
६. [illegible]
७. [illegible]
८. [illegible]
९. [illegible]
१०. [illegible]

अज्जो ! पत्तियाहि अज्जो ! रोएहि अज्जो ! से जहेय अम्हे वदामो ।।

४३१. तए ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवते वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वदासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भ अतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पच-महव्वइय सपडिक्कमण धम्म उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए ।
अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध' ।।

४३२. तए ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवते वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता चाउज्जामाओ धम्माओ पचमहव्वइय सपडिक्कमण धम्म उवसपज्जित्ता ण विहरति ।।

४३३. तए ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुडभावे अण्हाणय अदतवणय[२] अच्छत्तय अणोवाहणय भूमिसेज्जा फलसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोओ बभचेरवासो परघरपवेसो लद्धावलद्धी उच्चावया गामकटगा बावीस परिसहोवसग्गा अहियासिज्जति, तमट्ठ आराहेइ, आराहेत्ता चरमेहि उस्सास-नीसासेहि सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे' सव्वदुक्खप्पहीणे ।।

अपच्चक्खाणकिरिया-पदं

४३४. भते ति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—से नूण भते ! सेट्ठियस्स' य तणुयस्स य किवणस्स' य खत्तियस्स य 'समा चेव'' अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ?
हता गोयमा ! सेट्ठियस्स' •य तणुयस्स य किवणस्स य खत्तियस्स य समा चेव॰ अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ।।

४३५. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सेट्ठियस्स य तणुयस्स य किवणस्स य खत्तियस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ?
गोयमा ! अविरति पडुच्च । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सेट्ठियस्स य तणुयस्स •य किवणस्स य खत्तियस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया॰ कज्जइ ।।

आहाकम्म-पदं

४३६. आहाकम्म ण भुजमाणे समणे निग्गथे कि बधइ ? कि पकरेइ ? कि चिणाइ ? कि उवचिणाइ ?

गोयमा ! आहाकम्मं णं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ', •हस्सकालठिइयाओ दीहकाल-ठिइयाओ पकरेइ, मंदाणुभावाओ तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पपएसग्गाओ बहुप्पएसग्गाओ पकरेइ, आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ, सिय नो बंधइ, अस्साया-वेयणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं° अणुपरियट्टइ ॥

४३७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—आहाकम्मं णं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ जाव' चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टइ ?

गोयमा ! आहाकम्मं णं भुंजमाणे आयाए धम्मं अइक्कमइ, आयाए धम्मं अइक्कममाणे पुढविकायं णावकंखइ', •आउकायं णावकंखइ, तेउकायं णावकंखइ, वाउकायं णावकंखइ, वणस्सइकायं णावकंखइ°, तसकायं णाव-कंखइ, जेसिं पि य णं जीवाणं सरीराइं आहारमाहारेइ ते वि जीवे णावकंखइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—आहाकम्मं णं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ जाव चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टइ ॥

फासु-एसणिज्ज-पदं

४३८. फासु-एसणिज्जं णं भंते ! भुंजमाणे समणे निग्गंथे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ?

गोयमा ! फासु-एसणिज्जं णं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ धणियबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ, •दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ, तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ, बहुप्पएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ, आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ, सिय नो बंधइ, अस्सायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणादीयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं° वीईवयइ ॥

४३९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—फासु-एसणिज्जं णं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ धणियबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ जाव चाउरंतं संसारकंतारं वीईवयइ ?

गोयमा ! फासु-एसणिज्जं णं भुंजमाणे समणे निग्गंथे आयाए धम्मं

---

१. [illegible] अणुपरियट्टइ ।
२. भ० १।४३० ।
३. [illegible]
४. [illegible]
[illegible] ।
५. भ० १।४३६

नाइक्कमइ, आयाए धम्म अणइक्कममाण पुढविकाय[1] अवकखइ जाव[2] तसकाय अवकखइ, जेसि पि य ण जीवाण सरीराइ (आहार ?[3]) आहारेइ ते वि जीवे अवकखइ। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—फासु-एसणिज्ज ण भुजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ धणियबधणबद्धाओ सिढिलबधणबद्धाओ पकरेइ जाव[1] चाउरत ससारकतार वीईवयइ ॥

४८०. से नूण भते ! अथिरे पलोट्टइ, नो थिरे पलोट्टइ ? अथिरे भज्जइ, नो थिरे भज्जइ ? सासए बालए, बालियत्त असासय ? सासए पडिए, पडियत्त असासय ?

हता गोयमा ! अथिरे पलोट्टइ[1], •नो थिरे पलोट्टइ। अथिरे भज्जइ, नो थिरे भज्जइ। सासए बालए, बालियत्त असासय। सासए पडिए°, पडियत्त असासय ॥

४८१. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[1] विहरइ ॥

दसमो उद्देसो

परसमयवत्तव्वया-पद

४८२. अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति[1], •एव भासति, एव पण्णवेति, एव° परूवेति—

चलमाणे अचलिए[2]। •उदीरिज्जमाणे अणुदीरिए। वेदिज्जमाणे अवेदिए। पहिज्जमाणे अपहीणे। छिज्जमाणे अच्छिण्णे। भिज्जमाणे अभिण्णे। डज्झमाणे अदड्ढे। मिज्जमाणे अमए°। निज्जरिज्जमाणे अणिज्जिण्णे।

दो परमाणुपोग्गला एगयओ[3] न[4] साहण्णति,

कम्हा दो परमाणुपोग्गला एगयओ न साहण्णति ?

दोण्ह परमाणुपोग्गलाण नत्थि सिणेहकाए, तम्हा दो परमाणुपोग्गला एगयओ नो साहण्णति।

तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति,

कम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति ?

तिण्हं परमाणुपोग्गलाणं अत्थि सिणेहकाए, तम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति।

ते भिज्जमाणा 'दुहा वि'[1], तिहा वि कज्जंति।

दुहा कज्जमाणा[2] एगयओ दिवड्ढे परमाणुपोग्गले भवइ—एगयओ वि दिवड्ढे परमाणुपोग्गले भवइ।

तिहा कज्जमाणा तिण्णि परमाणुपोग्गला भवंति। एवं[3] चत्तारि।

पंच परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, एगयओ साहण्णित्ता दुक्खत्ताए कज्जंति। दुक्खे वि य णं से सासए सया समितं[4] उवचिज्जइ य, अवचिज्जइ य।

पुव्विं[5] भासा भासा। भासिज्जमाणी भासा अभासा। भासासमयवितिक्कंतं च णं भासिया भासा।

जा सा पुव्विं भासा भासा। भासिज्जमाणी भासा अभासा। भासासमयवितिक्कंतं च णं भासिया भासा। सा किं भासओ भासा ? अभासओ भासा ?

अभासओ णं सा भासा। नो खलु सा भासओ भासा।

पुव्विं किरिया दुक्खा। कज्जमाणी किरिया अदुक्खा। किरियासमयवितिक्कंतं च णं कडा किरिया दुक्खा।

जा सा पुव्विं किरिया दुक्खा। कज्जमाणी किरिया अदुक्खा। किरियासमयवितिक्कंतं च णं कडा किरिया दुक्खा। सा किं करणओ दुक्खा ? अकरणओ दुक्खा ?

अकरणओ णं सा दुक्खा। नो खलु सा करणओ दुक्खा—सेवं वत्तव्वं सिया।

अकिच्चं दुक्खं, अफुसं दुक्खं, अकज्जमाणकडं दुक्खं, अकट्टु-अकट्टु पाण-भूय-जीव-सत्ता वेदणं वेदेंति—इति वत्तव्वं सिया॥

सत्तमपवत्तव्वया-पद

४४३—से कहमेयं भंते ! एवं ?

---

1. दुहि[illegible] ([illegible])।
2. [illegible] ([illegible])।
3. [illegible] ([illegible])।
4. [illegible] ([illegible])। [illegible]
5. [illegible] ([illegible])।
6. [illegible] ([illegible])।
7. [illegible]

एव परूवेति—एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो किरियाओ पकरेति, जाव[1] इरियावहिय च, सपराइय च ।
जे ते एवमाहसु । मिच्छा ते एवमाहसु । अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, एव भासेमि, एव पण्णवेमि, एव परूवेमि—एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एक्क किरिय पकरेइ, त जहा—इरियावहिय वा, सपराइय वा ।
ज समय इरियावहिय पकरेइ, नो त समय सपराइय पकरेइ ।
ज समय सपराइयं पकरेइ नो त समय इरियावहिय पकरेइ ।
इरियावहियाए पकरणयाए नो सपराइय पकरेइ ।
सपराइयाए पकरणयाए नो इरियावहिय पकरेइ ।
एव खलु एगे जीवे एगेणं समएण एगं किरिय पकरेइ, त जहा॰—इरियावहिय वा, सपराइय वा ॥

उपपात-पदं

४४६ निरयगई ण भते ! केवतिय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण बारस मुहुत्ता ॥
४४७ एव वक्कतीपय[2] भाणियव्व निरवसेस ॥
४४८. सेव भते ! सेव भते त्ति जाव[3] विहरइ ॥

———

जम्हा जीवे जीवति', जीवत्त आउय च कम्म उवजीवति' तम्हा जीवे त्ति वत्तव्व सिया।

जम्हा सत्ते सुभासुभेहि कम्मेहि तम्हा सत्ते त्ति वत्तव्व सिया।

जम्हा 'तित्तकडुकसायविलमहुरे रसे'' जाणइ तम्हा विण्णु त्ति वत्तव्व सिया।

जम्हा वेदेति य सुह-दुक्ख तम्हा वेदे त्ति वत्तव्वं सिया। से तेणट्ठेण' पाणे त्ति वत्तव्व सिया जाव वेदे त्ति वत्तव्वं सिया॥

१६ मडाई ण भते! नियठे निरुद्धभवे, निरुद्धभवपवचे', •पहीणससारे, पहीणससार-वेयणिज्जे, वोच्छिण्णससारे, वोच्छिण्णससारवेयणिज्जे, निट्ठियट्ठे°, निट्ठियट्ठकरणिज्जे नो पुणरवि इत्थत्थ हव्वमागच्छइ?

हता गोयमा! मडाई ण नियठे' •निरुद्धभवे, निरुद्धभवपवचे, पहीणससारे, पहीणससारवेयणिज्जे, वोच्छिण्णससारे, वोच्छिण्णससारवेयणिज्जे, निट्ठियट्ठे, निट्ठियट्ठकरणिज्जे° नो पुणरवि इत्थत्थ हव्वमागच्छइ॥

१७ से ण भते! किं ति वत्तव्व सिया?

गोयमा! सिद्धे त्ति वत्तव्व सिया। बुद्धे त्ति वत्तव्व सिया। मुत्ते त्ति वत्तव्व सिया। पारगए त्ति वत्तव्व सिया। परपरगए त्ति वत्तव्व सिया। सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिनिव्वुडे अतकडे' सव्वदुक्खप्पहीणे त्ति वत्तव्व सिया॥

१८ सेव भते! सेव भते! त्ति भगव गोयमे समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरति॥

१९ तए ण समणे भगव महावीरे रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइआओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ॥

खदयकहा-पदं

२० तेण कालेण तेण समएण कयगला नाम नगरी होत्था—वण्णओ'॥

२१ तीसे ण कयगलाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए छत्तपलासए नाम चेइए होत्था—वण्णओ'॥

२२ तए ण समणे भगव महावीरे उप्पन्ननाणदसणधरे'' •अरहा जिणे केवली जेणेव कयगला नयरी जेणेव छत्तपलासए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ जाव[१] समोसरणं । परिसा निग्गच्छइ ॥

२३. तीसे णं कयंगलाए नयरीए अदूरसामंते सावत्थी नामं नयरी होत्था—वण्णओ[२] ॥

२४. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए गद्दभालस्स[३] अंतेवासी खंदए[४] नामं कच्चायणसगोत्ते परिव्वायगे परिवसइ[५]-रिव्वेद[६]-जजुव्वेद-सामवेद-अहव्वणवेद[७]-इतिहास-पंचमाणं निघंटुछट्ठाणं—चउण्हं वेदाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं सारए धारए[८] पारए सडंगवी सट्ठितंतविसारए, संखाणे सिक्खा-कप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोतिसामयणे[९], अण्णेसु य बहूसु बंभण्णएसु[१०] परिव्वायएसु य नयेसु सुपरिनिट्ठिए या वि होत्था ॥

२५. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए पिंगलए नामं नियंठे वेसालियसावए[११] परिवसइ ॥

२६. तए णं से पिंगलए नामं नियंठे वेसालियसावए अण्णया कयाइ[१२] जेणेव खंदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खंदगं कच्चायणसगोत्तं इणमक्खेवं पुच्छे—मागहा[१३] !

१. किं सअंते[१४] लोए ? अणंते लोए ? २. सअंते जीवे ? अणंते जीवे ? ३. सअंता सिद्धी ? अणंता सिद्धी ? ४. सअंते सिद्धे ? अणंते सिद्धे ? ५. केण वा मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ?—एतावताव[१५] आइक्खाहि वुच्चमाणे एवं ॥

२७. तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते पिंगलएणं नियंठेणं वेसालियसावएणं इणमक्खेवं पुच्छिए समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने णो संचाएइ पिंगलयस्स नियंठस्स वेसालियसावयस्स किंचि वि पमोक्खमक्खाइउं, तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

२८. तए णं से पिंगलए नियंठे वेसालियसावए खंदयं कच्चायणसगोत्तं दोच्चं पि तच्चं पि इणमक्खेवं पुच्छे—मागहा !

---

१. ओ० सू० १८-२१ ।
२. ओ० सू० १ ।
३. गद्दभालिस्स (?) ।
४. खंदए (?) ।
५. [illegible] (?) ।
६. रिउव्वेद (?, ?, ?), [illegible] (?) ।
७. [illegible] ।
८. [illegible] (?, ?, ?, ?) [illegible] (?, ?), धारए (?) ।
९. [illegible] (?) ।
१०. [illegible] (?) ।
११. वेसालीसावए (?, ?), [illegible] (?) ।
१२. [illegible] (?) ।
१३. मागहा (?) ।
१४. [illegible] (?) ।
१५. [illegible] (?, ?), [illegible] (?, ?) ।

१. कि सग्रते लोए[1] ? •ग्रणंते लोए ? २. सग्रते जीवे ? ग्रणते जीवे ? ३ सग्रता सिद्धी ? ग्रणता सिद्धी ? ४. सग्रते सिद्धे ? ग्रणते सिद्धे ?° ५. केण वा मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ?—एतावताव ग्राइक्खाहि वुच्चमाणे एव ॥

२९. तए ण से खदए कच्चायणसगोत्ते पिगलएण नियठेण वेसालियसावएणं दोच्च पि तच्च पि इणमक्खेव पुच्छिए समाणे संकिए कखिए वितिगिच्छिए[2] भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने णो सचाएइ पिगलस्स नियठस्स वेसालियसावयस्स किचि वि पमोक्खमक्खाइउ, तुसिणीए सचिट्ठइ ॥

३० तए ण सावत्थीए नयरीए सिघाडग[1]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु महया जणसमद्दे[2] इ वा जणवूहे इ वा[3] •जणवोले इ वा जणकलकले इ वा जणुम्मी इ वा जणुक्कलिया इ वा जणसण्णिवाए इ वा वहुजणो ग्रण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एव भासेइ, एव पण्णवेइ, एव परूवेइ—

एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे ग्राइगरे जाव[1] सिद्धिगतिनामधेयं ठाण सपाविउकामे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इहसपत्ते इहसमोसढे इहेव कयगलाए नयरीए वहिया छत्तपलासए चेइए ग्रहापडिरूव ग्रोग्गह ग्रोगिण्हित्ता सजमेण तवसा ग्रप्पाण भावेमाणे विहरइ ।

त महप्फल खलु भो देवाणुप्पिया ! तहारूवाण ग्ररहताण भगवताण नामगोयस्सवि सवणयाए, किमग पुण ग्रभिगमण-वदण-नमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्सवि ग्रारियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स ग्रट्ठस्स गहणयाए ? त गच्छामो ण देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामो नमसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासामो । एय णे पेच्चभवे इहभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए ग्राणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्टु वहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा भोगपुत्ता एव दुप्पडोयारेण राइण्णा खत्तिया माहणा भडा जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई लेच्छईपुत्ता, ग्रण्णे य वहवे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिग्रो जाव[1] महया उक्किट्ठसीहनाय-वोल-कलकलरवेण पक्खुभियमहासमुद्दरवभूय पिव करेमाणा सावत्थीए नयरीए मज्झमज्झेण ° निग्गच्छति ॥

३१ तए ण तस्स खदयस्स कच्चायणसगोत्तस्स वहुजणस्स ग्रतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म इमेयारूवे ग्रज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—

'एव खलु समणे भगव महावीरे कयगलाए नयरीए बहिया छत्तपलासए चेइए सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ। त गच्छामि ण समण भगव महावीर वदामि नमसामि''। सेय खलु मे समण भगव महावीर वदित्ता, नमसित्ता सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासित्ता इमाइ च ण एयारूवाइ अट्ठाइ हेऊइ पसिणाइ कारणाइ' वागरणाइ पुच्छित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिदड च कुडिय च कचणिय च करोडिय च भिसिय च केसरिय च छण्णालय' च अकुसय च पवित्तय' च गणेत्तिय च छत्तय च वाहणाओ य पाउयाओ' य धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वायावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तिदड-कुडिय-कचणिय-करोडिय-भिसिय-केसरिय-छण्णालय-अकुसय-पवित्तय-गणेत्तियहत्थगए, छत्तोवाहणसजुत्ते', धाउरत्तवत्थपरिहिए सावत्थीए नयरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कयगला नगरी, जेणेव छत्तपलासए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥

३२ गोयमाइ' ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी—
दच्छिसि ण गोयमा ! पुव्वसगइय।
क' भते ! ?
खदय नाम।
से काहे वा ? किह वा ? केवच्चिरेण वा ?

३३ एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण सावत्थी नाम नगरी होत्था—वण्णओ''। तत्थ ण सावत्थीए नयरीए गद्दभालस्स अतेवासी खदए नाम कच्चायणसगोत्ते परिव्वायए परिवसइ। त चेव जाव'' जेणेव मम अतिए, तेणेव पहारेत्थ गमणाए। से अदूरागते'' बहुसपत्ते अद्धाणपडिवण्णे अतरा पहे वट्टइ। अज्जेव ण दच्छिसि'' गोयमा !

३४. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—पहू ण भते ! खदए कच्चायणसगोत्ते देवाणुप्पियाण अतिए मुडे

१. × (क, ता, ब)।
२. × (अ, ब, म)।
३. [illegible] (ता)।
४. [illegible] (ता)।
५. [illegible] (ता)।
६. [illegible] (वृ० ११७) सूत्रे 'पाउयाओ' इति [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
७. [illegible] (क)।
८. [illegible] (क, ता, म)।
९. [illegible] (अ, क, ता)।
१०. ओ० सू० १।
११. भ० २[illegible]।
१२. [illegible] (क) [illegible] (ब)।
१३. [illegible] (अ [illegible]) [illegible] (क)।

भवित्ता[1] अगाराओ[2] अणगारियं पव्वइत्तए ?

हंता पभू ॥

३५. जाव च ण समणे भगव महावीरे भगवओ गोयमस्स एयमट्ठ परिकहेइ, ताव च ण से खदए कच्चायणसगोत्ते त देस हव्वमागए ॥

३६. तए णं भगव गोयमे खदय कच्चायणसगोत्त अदूरागत[3] जाणित्ता खिप्पामेव अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठेत्ता खिप्पामेव पच्चुवगच्छइ,[4] जेणेव खदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खदय कच्चायणसगोत्तं एव वयासी—हे खदया ! सागय खदया ! सुसागय खदया ! अणुरागय[5] खदया ! सागयमणुरागय खदया ! से नूण तुम खदया ! सावत्थीए नयरीए पिगलएणं नियठेण वेसालियसावएण इणमक्खेव पुच्छिए—मागहा ! कि सअते लोगे ? अणते लोगे ? एव त चेव जाव[6] जेणेव इह, तेणेव हव्वमागए। से नूण खदया ! 'अट्ठे समट्ठे' ?[7]

हंता अत्थि ॥

३७ तए ण से खदए कच्चायणसगोत्ते भगव गोयम एव वयासी—'से केस ण गोयमा'[8] ! तहारूवे नाणी वा तवस्सी वा, जेण तव एस अट्ठे मम ताव[9] रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओ ण तुम जाणसि ?

३८ तए ण से भगवं गोयमे खदय कच्चायणसगोत्त एव वयासी—एव खलु खंदया ! मम धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगव महावीरे उप्पण्णनाणदसणधरे अरहा जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणए सव्वण्णू सव्वदरिसी जेण मम एस अट्ठे तव ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओ ण अह जाणामि खदया !

३९. तए ण से खदए कच्चायणसगोत्ते भगव गोयम एव वयासी—गच्छामो ण गोयमा ! तव धम्मायरियं धम्मोवदेसय समण भगव महावीर वदामो नमसामो[10] °सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाण मगल देवय चेइय° पज्जुवासामो।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंध ॥

४०. तए ण से भगव गोयमे खदएण कच्चायणसगोत्तेण सद्धि जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

४१ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे वियट्टभोई[11] यावि होत्था ॥

४२. तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टभोइस्स[1] सरीरयं ओरालं सिंगारं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं[2] अणलंकियविभूसियं लक्खण-वंजण-गुणोववेयं सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणं चिट्ठइ ॥

४३. तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टभोइस्स सरीरयं ओरालं[3] ॰सिंगारं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं अणलंकियविभूसियं लक्खण-वंजण-गुणोववेयं सिरीए॰ अतीव-अतीव उवसोभेमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए णंदिए[4] पीइमणे[5] परमसोमणस्सिए[6] हरिसवसविसप्पमाणहियए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ[7], ॰करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे॰ पज्जुवासइ ॥

४४. खंदयाति ! समणे भगवं महावीरे खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी—से नूणं तुमं खंदया ! सावत्थीए नयरीए पिंगलएणं नियंठेणं वेसालियसावएणं इणमक्खेवं पुच्छिए—मागहा !

१. किं सअंते लोए ? अणंते लोए ? २. सअंते जीवे ? अणंते जीवे ? ३. सअंता सिद्धी ? अणंता सिद्धी ? ४. सअंते सिद्धे ? अणंते सिद्धे ? ५. केण वा मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ? एवं तं चेव जाव[8] जेणेव मम अंतिए तेणेव हव्वमागए। से नूणं खंदया ! अट्ठे समट्ठे ?

हंता अत्थि ॥

४५. जे वि य ते खंदया ! अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—किं सअंते लोए ? अणंते लोए ?—तस्स वि य णं अयमट्ठे—एवं खलु मए खंदया ! चउव्विहे लोए पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ।

दव्वओ णं एगे लोए सअंते।

खेत्तओ णं लोए असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयाम-विक्खंभेणं, असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं पण्णत्ते, अत्थि पुण से अंते।

कालओ णं लोए न कयाइ न आसी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे णितिए[9] सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे, नत्थि पुण से अंते।

१. विगट्टभोइणो (ता, ब, म)।
२. मंगल्लं सस्सिरीय (क)।
३. सं॰ पा॰—ओरालं जाव अतीव।
४. × (ब, क, ता, म, स)।
५. पीइमणे (ब, स)।
६. परमसोमणस्सिए (अ, क, ता, ब, म, स)।
७. सं॰ पा॰—करेइ जाव पज्जुवासइ।
८. भ॰ २।२४-२५।
९. णितिए (अ क, ता), णिइए (ब)।

भावओ ण लोए अणंता वण्णपज्जवा, अणता गंधपज्जवा, अणंता रसपज्जवा, अणता फासपज्जवा, अणता संठाणपज्जवा, अणता गरुयलहुयपज्जवा, अणता अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण से अते ।

सेत्त खदगा[1] ! दव्वओ लोए सअते, खेत्तओ लोए सअते, कालओ लोए अणते, भावओ लोए अणते ।।

४६. जे वि य ते खंदया[2] ! •अयमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—

कि सअते जीवे ?॰ अणते जीवे ?

तस्स वि य ण अयमट्ठे—एवं खलु[1] •मए खदया ! चउव्विहे जीवे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ॰।

दव्वओ णं एगे जीवे सअते ।

खेत्तओ णं जीवे असखेज्जपएसिए, असखेज्जपएसोगाढे, अत्थि पुण अते ।

कालओ ण जीवे न कयाइ न आसी[2], •न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए॰ निच्चे, नत्थि पुण[1] से अते ।

भावओ ण जीवे अणता नाणपज्जवा, अणता दसणपज्जवा, अणता चारित्तपज्जवा, अणता गरुयलहुयपज्जवा, अणता अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण से अते ।

सेत्त खदगा ! दव्वओ जीवे सअते, खेत्तओ जीवे सअते, कालओ जीवे अणते, भावओ जीवे अणते ।।

४७. जे वि य ते खदया[1] ! •अयमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—

कि सअता सिद्धी ? अणता सिद्धी ?

तस्स वि य ण अयमट्ठे । एव खलु मए खदया ! चउव्विहा सिद्धी पण्णत्ता, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ॰ ।

दव्वओ ण एगा सिद्धी सअता ।

खेत्तओ ण सिद्धी पणयालीस जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खभेण, एगा जोयणकोडी बायालीस च सयसहस्साइ तीस च सहस्साइ दोण्णि य अउणापन्ने जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ता, अत्थि पुण से अते ।

कालओ णं सिद्धी न कयाइ न आसी[1], •न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवा नियया सासया अक्खया अव्वया अवट्ठिया निच्चा, नत्थि पुण सा अंता।

भावओ णं सिद्धीए अणंता वण्णपज्जवा, अणंता गंधपज्जवा, अणंता रसपज्जवा, अणंता फासपज्जवा, अणंता संठाणपज्जवा, अणंता गरुयलहुयपज्जवा, अणंता अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण सा अंता।

सेत्तं खंदया! °दव्वओ सिद्धी सअंता, खेत्तओ सिद्धी सअंता, कालओ सिद्धी अणंता, भावओ सिद्धी अणंता॥

४८. जे वि य ते खंदया[2]! •अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—

किं सअंते सिद्धे? अणंते सिद्धे?

तस्स वि य णं अयमट्ठे—एवं खलु मए खंदया! चउव्विहे सिद्धे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ।°

दव्वओ णं एगे सिद्धे सअंते।

खेत्तओ णं सिद्धे असंखेज्जपएसिए, असंखेज्जपएसोगाढे, अत्थि पुण से अंते।

कालओ णं सिद्धे सादीए, अपज्जवसिए, नत्थि पुण से अंते।

भावओ णं सिद्धे अणंता नाणपज्जवा, अणंता दंसणपज्जवा, अणंता[3] अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण से अंते।

सेत्तं खंदया! दव्वओ सिद्धे सअंते, खेत्तओ सिद्धे सअंते, कालओ सिद्धे अणंते, भावओ सिद्धे अणंते॥

४९. जे वि य ते खंदया! इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए[1] •पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—

केण वा मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा?

तस्स वि य णं अयमट्ठे—एवं खलु खंदया! मए दुविहे मरणे पण्णत्ते, तं जहा—बालमरणे य, पंडियमरणे य।

से किं तं बालमरणे?

बालमरणे दुवालसविहे पण्णत्ते, तं जहा—

१. वलयमरणे २. वसट्टमरणे ३. अंतोसल्लमरणे ४. तब्भवमरणे ५. गिरिपडणे ६. तरुपडणे ७. जलप्पवेसे ८. जलणप्पवेसे ९. विसभक्खणे १०. सत्थोवाडणे

---

१. [illegible]
२. [illegible]
३. [illegible]
४. [illegible]

११ वेहाणसे १२ गद्धपट्ठे—इच्चेतेण खदया ! दुवालसविहेण वालमरणेणं मरमाणे जीवे अणतेहि नेरइयभवग्गहणेहि अप्पाणसजोएइ, अणतेहि तिरियभव-ग्गहणेहि अप्पाणं संजोएइ, अणतेहि मणुयभवग्गहणेहि अप्पाणं सजोएइ, अणतेहि देवभवग्गहणेहि अप्पाण सजोएइ, अणाइय च ण अणवदग्ग[1] चाउरतं ससारकतार अणुपरियट्टइ । सेत्तं मरमाणे वड्ढइ-वड्ढइ ।

सेत्तं वालमरणे ।

से किं त पडियमरणे ?

पडियमरणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पाओवगमणे[2] य, भत्तपच्चक्खाणे य ।

से किं त पाओवगमणे ?

पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य । नियमा अपडिकम्मे ।

सेत्त पाओवगमणे ।

से कि त भत्तपच्चक्खाणे ?

भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य । नियमा सपडिकम्मे ।

सेत्त भत्तपच्चक्खाणे ।

इच्चेतेण खदया ! दुविहेण पडियमरणेण मरमाणे जीवे अणतेहि नेरइय-भवग्गहणेहि अप्पाण विसजोएइ[3], •अणतेहि तिरियभवग्गहणेहि अप्पाण विसं-जोएइ, अणतेहि मणुयभवग्गहणेहि अप्पाण विसजोएइ, अणतेहि देवभवग्गहणेहि अप्पाण विसजोएइ, अणाइय च ण अणवदग्ग चाउरत ससारकतार° वीईवयइ ।

सेत्त मरमाणे हायइ-हायइ ।

सेत्त पंडियमरणे ।

इच्चेएण खदया ! दुविहेण मरणेणमरमाणे जीवे वड्ढइ वा, हायइ वा ॥

५० एत्थ ण से खदए कच्चायणसगोत्ते सबुद्धे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भ अतिए केवलिपण्णत्त धम्म निसामित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध ॥

५१ तए ण समणे भगव महावीरे खदयस्स कच्चायणसगोत्तस्स, तीसे य महइमहा-लियाए परिसाए धम्म परिकहेइ । धम्मकहा भाणियव्वा[4] ॥

५२ तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[1] •चित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण°हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं,
पत्तियामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं,
रोएमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं,
अब्भुट्ठेमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं।

एवमेयं भंते! तहमेयं भंते! अवितहमेयं भंते! असंदिद्धमेयं भंते! इच्छियमेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते!—से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभायं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता तिदंडं च कुंडियं च जाव धाउरत्ताओ य एगंते एडेइ, एडेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता[2] •वंदइ नमंसइ, वंदित्ता °नमंसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं भंते! लोए, पलित्ते णं भंते! लोए, आलित्त-पलित्ते णं भंते! लोए जराए मरणेण य।

से जहानामए केइ गाहावई अगारंसि झियायमाणंसि जे से तत्थ भंडे भवइ अप्पभारे[3] मोल्लगरुए[4], तं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कमइ। एस मे नित्थारिए समाणे पच्छा पुरा य[5] हियाए सुहाए[6] खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ।

एवामेव देवाणुप्पिया! मज्झ वि आया एगे भंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे[7] वेस्सासिए सम्मए 'बहुमए अणुमए'[8] भंडकरंडगसमाणे, मा णं सीयं, मा णं उण्हं, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा णं चोरा, मा णं वाला, मा णं दंसा, मा णं मसगा, मा णं वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सन्निवाइय[9] विविहा रोगायंका परीस-

---

१. सं० पा०—हट्ठतुट्ठे [illegible] (ख)।
२. भ० २।३३।
३. सं० पा०—करेत्ता [illegible]।
४. [illegible]
५. [illegible]
६. [illegible]
७. [illegible]
८. [illegible]
९. [illegible]

एव तच्च मास अट्ठमअट्ठमेण। चउत्थं मास दसमदसमेण। पंचम मास वारसमवारसमेण। छट्ठ मास चउद्दसमचउद्दसमेण। सत्तम मास सोलसमसोल-समेण। अट्ठम मास अट्ठारसमंअट्ठारसमेण। नवम मास वीसइमवीसइमेण। दसम मास वावीसइमवावीसइमेण। एक्कारसम मास चउवीसइमचउवीसइमेण। वारसम मास छव्वीसइमछव्वीसइमेण। तेरसम मास अट्ठावीसइमअट्ठावीसइ-मेणं। चउद्दसम मास तिसइमतिसइमेण। पण्णरसम मास वत्तीसइमबत्तीसइ-मेण। सोलस मास चोत्तीसइमचोत्तीसइमेण अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेण दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेण अवाउडेण य ॥

६३ तए ण से खदए अणगारे गुणरयणसवच्छर तवोकम्मं अहासुत्त अहाकप्प जाव' आराहेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता वहूहि चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहि, मासद्धमासखमणेहि विचित्तेहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे विहरइ।

६४ तए ण से खदए अणगारे तेण ओरालेण विउलेणं पयत्तेण पग्गहिएण कल्लाणेण सिवेण धन्नेण मगल्लेण सस्सिरीएण उदग्गेण उदत्तेण उत्तमेण उदारेण महाणु-भागेण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे' निम्मसे अट्ठि-चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए' किसे धमणिसतए जाए यावि होत्था। जीवजीवेण गच्छइ, जीवजीवेण चिट्ठइ, भास भासित्ता वि गिलाइ, भास भासमाणे गिलाइ, भास भासिस्सामीति गिलाइ। से जहानामए कट्ठसगडिया इ वा, पत्तसगडिया इ वा, पत्त-'तिल-भडग-सगडिया' इ वा, एरडकट्ठसगडिया इ वा, इगालसगडिया' इ वा—उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी ससद्द गच्छइ, ससद्द चिट्ठइ, एवामेव खदए' अणगारे ससद्द गच्छइ, ससद्द चिट्ठइ, उवचिए तवेण अवचिए मस-सोणिएण, हुयासणे विव भासरासिपडिच्छण्णे तवेण, तेएण, तव-तेयसिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥

६५ तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नगरे समोसरण जाव' परिसा पडिगया ॥

६६ तए ण तस्स खदयस्स अणगारस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए' •पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—

एवं खलु अहं इमेण एयारूवेण ओरालेण[1] •विउलेण पयत्तेण पग्गहिएण कल्लाणेण सिवेण धन्नेण मंगल्लेण सस्सिरीएण उदग्गेण उदत्तेण उत्तमेण उदारेण महाणुभागेण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठि-चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए° किसे धमणिसंतए[2] जाए। जीवंजीवेण गच्छामि, जीवंजीवेण चिट्ठामि[3], •भासं भासित्ता वि गिलामि, भासं भासमाणे गिलामि, भासं भासिस्सामीति गिलामि।

से जहानामए कट्ठसगडिया इ वा, पत्तसगडिया इ वा, पत्त-तिल-भंडग-सगडिया इ वा, एरंडकट्ठसगडिया इ वा, इंगालसगडिया इ वा—उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ°, एवामेव अहं पि ससद्दं गच्छामि, ससद्दं चिट्ठामि।

तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए,[4] फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियम्मि अहापंडुरे[5] पभाए, रत्तासोयप्पकासे[6], किंसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे, कमलागरसंडबोहए, उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता[7] •णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्सूसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे° पज्जुवासित्ता समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंच महव्वयाणि आरोवेत्ता, समणा य समणीओ य खामेत्ता तहारूवेहिं थेरेहिं कडाईहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं 'सणियं-सणियं'[8] दुरूहित्ता[9] मेहघणसंनिगासं[10] देवसन्निवातं पुढवीसिलापट्टयं पडिलेहित्ता, दब्भसंथारगं संथरित्ता दब्भसंथारोवगयस्स संलेहणा-झूसणाझूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव समणे भगवं महावीरे[11] •तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे° पज्जुवासइ॥

१. [illegible]
२. [illegible]
३. [illegible]
४. [illegible]
५. [illegible]
६. [illegible]
७. [illegible]
८. [illegible]
९. [illegible]
१०. [illegible]
११. [illegible]

गोयमा ! मम अंतेवासी खदए नाम अणगारे पगइभद्दए[1] •पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसंपण्णे अल्लीणे विणीए°, से णं मए अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहेत्ता[2] •जाव[3] मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता° आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववण्णे ॥

७२. तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता तत्थ णं खंदयस्स वि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

७३. से णं भंते ! खंदए देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति[4] ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिति ॥

बीओ उद्देसो

समुग्घाय-पदं

७४. कइ णं भंते ! समुग्घाया पण्णत्ता?
गोयमा ! सत्त समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—१ वेदणासमुग्घाए २. कसायसमुग्घाए ३ मारणंतियसमुग्घाए ४ वेउव्वियसमुग्घाए ५ तेजससमुग्घाए ६ आहारगसमुग्घाए ७ केवलियसमुग्घाए। छाउमत्थियसमुग्घायवज्जं[1] समुग्घायपदं नेयव्वं[2] ॥

तइओ उद्देसो

पुढवि-पदं

७५. कइ णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—१. रयणप्पभा २. सक्करप्पभा ३. वालुयप्पभा ४. पंकप्पभा ५. धूमप्पभा ६. तमप्पभा ७. तमतमा। जीवाभिगमे[1] नेरइयाणं जो बितिओ उद्देसो सो नेयव्वो[2] जाव—

७६. 'किं सव्वे पाणा उववण्णपुव्वा ?'
हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो ॥

चउत्थो उद्देसो

इंदिय-पदं

७७. कइ णं भंते ! इंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच इंदिया पण्णत्ता, तं जहा—१. सोइंदिए २. चक्खिंदिए ३. घाणिंदिए ४. रसिंदिए ५. फासिंदिए। पढमिल्लो इंदियउद्देसओ[3] नेयव्वो[4] जाव[5]—

७८. अलोगे णं भंते ! किणा फुडे ? कतिहिं वा काएहिं फुडे ?

---

१. जी० ३।२।
२. [illegible]
३. [illegible]
४. प० १५।१।
५. [illegible]
६. प० १५।१।

गोयमा! नो धमत्थिकाएण फुडे जाव' नो आगासत्थिकाएण फुडे, आगासत्थिकायस्स देसेण फुडे आगासत्थिकायस्स पदेसेहि फुडे, नो पुढविकाइएण फुडे जाव' नो अद्धासमएण फुडे, एगे अजीवदव्वदेसे अगुरुलहुए अणतेहि अगुरुलहुयगुणेहि संजुत्ते सव्वगासे अणतभागूणे ।।

पंचमो उद्देसो

परिचारणा-वेद-पदं

७९. अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति भासति पण्णवति परूवेति—

१ एव खलु नियठे कालगए समाणे देवब्भूएण' अप्पाणेण से ण तत्थ नो अण्णे देवे, नो अण्णेसि देवाण देवीओ 'आभिजुजिय-अभिजुजिय'' परियारेइ, नो अप्पणिच्चियाओ' देवीओ अभिजुजिय-अभिजुजिय परियारेइ, अप्पणामेव अप्पाण विउव्विय-विउव्विय परियारेइ।

२ एगे वि य ण जीवे एगेण समएण दो वेदे वेदेइ, तं जहा—इत्थिवेद च, पुरिसवेद च।

'*ज समय इत्थिवेय वेएइ त समय पुरिसवेय वेएइ।

ज समय पुरिसवेय वेएइ त समय इत्थिवेय वेएइ।

इत्थिवेयस्स वेयणाए पुरिसवेय वेएइ, पुरिसवेयस्स वेयणाए इत्थिवेय वेएइ।

एव खलु एगे वि य ण जीवे एगेण समएण दो वेदे वेदेइ, त जहा°—इत्थिवेद च, पुरिसवेद च।।

८०. से कहमेय भंते ! एव ?

गोयमा ! ज ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति जाव' इत्थिवेद च, पुरिसवेद च। जे ते एवमाहसु, मिच्छ ते एवमाहसु। अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि भासामि पण्णवेमि परूवेमि—

१. एवं खलु णियंठे कालगए समाणे अण्णयरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति'—महिड्ढिएसु •महज्जुतीएसु महाबलेसु महायसेसु महासोक्खेसु॰ महाणुभागेसु दूरगतीसु चिरट्ठितीएसु । से णं तत्थ देवे भवइ महिड्ढिए जाव' दस दिसाओ उज्जोएमाणे पभासेमाणे' •पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे॰ पडिरूवे। से णं तत्थ अण्णे देवे, अण्णेसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय-अभिजुंजिय परियारेइ, अप्पणिच्चियाओ' देवीओ अभिजुंजिय-अभिजुंजिय परियारेइ, नो अप्पणामेव अप्पाणं विउव्विय-विउव्विय परियारेइ।

२ एगे वि य णं जीवे एगेणं समएणं एगं वेदं वेदेइ, तं जहा—इत्थिवेदं वा, पुरिसवेदं वा।

जं समयं इत्थिवेदं वेदेइ नो तं समयं पुरिसवेदं वेदेइ।

जं समयं पुरिसवेदं वेदेइ, नो तं समयं इत्थिवेदं वेदेइ।

इत्थिवेदस्स उदएणं नो पुरिसवेदं वेदेइ, पुरिसवेदस्स उदएणं नो इत्थिवेदं वेदेइ।

एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं वेदं वेदेइ, तं जहा—इत्थीवेदं वा, पुरिसवेदं वा।

इत्थी इत्थिवेदेणं उदिण्णेणं पुरिसं पत्थेइ। पुरिसो पुरिसवेदेणं उदिण्णेणं इत्थिं पत्थेइ। दो वि ते अण्णमण्णं पत्थेंति, तं जहा—इत्थी वा पुरिसं, पुरिसे वा इत्थिं॥

गब्भ-पदं

८१. उदगगब्भे' णं भंते! उदगगब्भे त्ति कालओ केवच्चिरं होइ?
गोयमा! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा॥

८२. तिरिक्खजोणियगब्भे णं भंते! तिरिक्खजोणियगब्भे त्ति कालओ केवच्चिरं होइ?
गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अट्ठ संवच्छराइं॥

८३. मणुस्सीगब्भे णं भंते! मणुस्सीगब्भे त्ति कालओ केवच्चिरं होइ?
गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं॥

८४. कायभवत्थे णं भंते! कायभवत्थे त्ति कालओ केवच्चिरं होइ?
गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं चउव्वीसं संवच्छराइं॥

८५ मणुस्स-पचेंदियतिरिक्खजोणियबीए ण भते ! जोणिब्भूए केवतियं कालं सचिट्ठइ ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण बारस मुहुत्ता ॥

८६. एगजीवे ण भते ! एगभवग्गहणेण केवइयाण पुत्तत्ताए हव्वामागच्छइ ?
गोयमा ! जहण्णेण इक्कस्स वा 'दोण्ह वा तिण्ह' वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तस्स' जीवा ण पुत्तत्ताए हव्वमागच्छति ॥

८७. एगजीवस्स ण भते ! एगभवग्गहणेण' केवइया जीवा पुत्तत्ताए हव्वमागच्छति ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयसहस्सपुहत्त जीवा ण पुत्तत्ताए हव्वमागच्छति ॥

८८ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ'—•जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सयसहस्सपुहत्त जीवा ण पुत्तत्ताए° हव्वमागच्छति ?
गोयमा ! इत्थीए' पुरिसस्स य कम्मकडाए जोणीए मेहुणवत्तिए नाम सजोए समुप्पज्जइ। ते दुहओ सिणेह 'चिणति, चिणित्ता' तत्थ ण जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सयसहस्सपुहत्त जीवा ण पुत्तत्ताए हव्वमागच्छति। से तेणट्ठेण' •गोयमा ! एव वुच्चइ-जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सयसहस्सपुहत्त जीवा ण पुत्तत्ताए° हव्वामागच्छति ॥

८९. मेहुणण्णं भते ! सेवमाणस्स केरिसए' असजमे कज्जई ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे रूयनालियं' वा बूरनालियं' वा तत्तेण कणगेण समभिद्धंसेज्जा, एरिसएण गोयमा ! मेहुण सेवमाणस्स असजमे कज्जइ ॥

९० सेव भते ! सेव भते ! जाव'' विहरइ ॥

९१. तए ण समणे भवग महावीरे रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ ॥

तुगियानयरी-समणोवासय-पद

९२. तेण कालेण तेण समएण तुगिया नाम नयरी होत्था—वण्णओ'' ॥

९३ तीसे ण तुगियाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे'' पुप्फवतिए नामं चेइए होत्था—वण्णओ'' ॥

८५. मणुस्स-पचेदियतिरिक्खजोणियवीए ण भंते ! जोणिब्भूए केवतिय काल सचिट्ठइ ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण बारस मुहुत्ता ।।

८६. एगजीवे ण भते ! एगभवग्गहणेण केवइयाण पुत्तत्ताए हव्वामागच्छइ ?
गोयमा ! जहण्णेण इक्कस्स वा 'दोण्ह वा तिण्ह'[१] वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तस्स[२] जीवा ण पुत्तत्ताए हव्वमागच्छति ।।

८७. एगजीवस्स ण भते ! एगभवग्गहणेण[१] केवइया जीवा पुत्तत्ताए हव्वमागच्छति ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सयसहस्सपुहत्त जीवा ण पुत्तत्ताए हव्वमागच्छति ।।

८८ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ[४]—•जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सयसहस्सपुहत्त जीवा ण पुत्तत्ताए° हव्वमागच्छति ?
गोयमा ! इत्थीए[१] पुरिसस्स य कम्मकडाए जोणीए मेहुणवत्तिए नामं सजोए समुप्पज्जइ। ते दुहओ सिणेह 'चिणति, चिणित्ता'[१] तत्थ ण जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सयसहस्सपुहत्त जीवा ण पुत्तत्ताए हव्वमागच्छति। से तेणट्ठेण[१] •गोयमा ! एव वुच्चइ-जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सयसहस्सपुहत्त जीवा ण पुत्तत्ताए° हव्वामागच्छति ।।

८९. मेहुणण्ण[१] भते ! सेवमाणस्स केरिसए[१] असजमे कज्जई ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे रूयनालिय[१०] वा बूरनालिय[११] वा तत्तेण कणएण समभिद्धसेज्जा, एरिसएण गोयमा ! मेहुण सेवमाणस्स असंजमे कज्जइ ।।

९० सेव भते ! सेव भते ! जाव[१२] विहरइ ।।

९१. तए ण समणे भगव महावीरे रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ ।।

तुंगियानयरी-समणोवासय-पद

९२ तेण कालेण तेण समएण तुंगिया नाम नयरी होत्था—वण्णओ[१३] ।।

९३ तीसे ण तुंगियाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे[१४] पुप्फवतिए नामं चेइए होत्था—वण्णओ[१५] ।।

९५. तेण कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जा थेरा भगवतो जातिसंपन्ना कुलसंपन्ना वलसंपन्ना रूवसपन्ना विणयसंपन्ना नाणसपन्ना दसणसपन्ना चरित्तसपन्ना लज्जासपन्ना लाघवसपन्ना ओयसी तेयसी वच्चसी जससी जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जियनिद्दा[1] जिइदिया[2] जियपरीसहा जीवियास[3]—मरण-भयविप्पमुक्का[4] •तवप्पहाणा गुणप्पहाणा करणप्पहाणा चरणप्पहाणा निग्गह-प्पहाणा निच्छयप्पहाणा मद्दवप्पहाणा अज्जवप्पहाणा लाघवप्पहाणा खतिप्पहाणा मुत्तिप्पहाणा विज्जाप्पहाणा मतप्पहाणा वेयप्पहाणा वंभप्पहाणा नयप्पहाणा नियमप्पहाणा सच्चप्पहाणा सोयप्पहाणा चारुपण्णा सोही अणियाणा अप्पुस्सुया अवहिल्लेसा सुसामण्णरया अच्छिद्दपसिणवागरणा °कुत्तियावणभूया वहुस्सुया वहुपरिवारा[1] पचहि अणगारसएहि सद्धि सपरिवुडा अहाणुपुव्वि चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा सुहसुहेणं विहरमाणा जेणेव तुगिया नगरी जेणेव पुप्फवइए चेइए 'तेणेव उवागच्छंति'[2], उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता ण सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति ॥

९६ तए णं तुगियाए नयरीए सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह[3]-महापह-पहेसु जाव[4] एगदिसाभिमुहा निज्जायति ॥

९७ तए ण ते समणोवासया इमोसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठ[5]•चित्तमाणदिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया अण्णमण्णं° सद्दावेति, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! पासावच्चिज्जा थेरा भगवतो जातिसपन्ना जाव[6] अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता णं सजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति ।

तं महप्फलं खलु देवाणुप्पिया ! तहारूवाण थेराणं भगवताण नामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-नमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासण-याए[7] ? •एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? त गच्छामो ण देवाणुप्पिया ! थेरे भगवते वंदामो नमसामो[8] •सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगल देवय चेइय पज्जुवा-सामो । एय णे पेच्चभवे इहभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामि-

यत्ताए° भविस्सति इति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडि-सुणेत्ता जेणेव सयाइं-सयाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया[1] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सएहिं-सएहिं गिहेहिंतो[2] पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता एगयओ[3] मेलायंति, मेलायित्ता[4] पायविहार-चारेणं तुंगियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति निग्गच्छित्ता जेणेव पुप्फ-वतिए[5] चेइए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छंति, [तं जहा—१. सच्चित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए, २. अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए, ३. एगसाडिएणं उत्तरासंगकरणेणं, ४. चक्खुप्फासे अंजलिप्पग्गहेणं, ५. मणसो एगत्तीकरणेणं][6] जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता[7] °वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता° तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासंति ॥

९८. तए णं ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं तीसे[8] महइमहालियाए महच्चपरि-साए चाउज्जामं धम्मं परिकहेंति, तं जहा—
सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं,
सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं[9] ॥

९९. तए णं ते समणोवासया थेराणं भगवंताणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा जाव[10] हरिसवसविसप्पमाणहियया तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता एवं[11] वयासी—संजमेणं भंते ! किंफले ? तवे[12] किंफले ?

१००. तए णं ते थेरा भगवंतो ते समणोवासए एवं वयासी—संजमे णं अज्जो ! अणण्हयफले, तवे वोदाणफले ॥

१०१. तए णं ते समणोवासया थेरे भगवंते एवं वयासी—जइ णं भंते ! संजमे अणण्हय-फले, तवे वोदाणफले। किंपत्तियं णं भंते ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ?

१. [illegible]
२. [illegible]
३. [illegible]
४. [illegible]
५. [illegible]
६. [illegible]
७. [illegible]
८. [illegible]
९. [illegible]
१०. [illegible]
११. [illegible]
१२. [illegible]

१०२ तत्थ णं कालियपुत्ते नामं थेरे ते समणोवासए एवं वयासी—पुव्वतवेण अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति ।
तत्थ ण मेहिले नाम थेरे ते समणोवासए एव वयासी—पुव्वसंजमेण अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति ।
तत्थ ण आणदरक्खिए नाम थेरे ते समणोवासए एव वयासी—कम्मियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति ।
तत्थ ण कासवे नाम थेरे ते समणोवासए एव वयासी—सगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति ।
पुव्वतवेण, पुव्वसजमेण, कम्मियाए, सगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति । सच्चे ण एस[1] अट्ठे, नो चेव ण आयभाववत्तव्वयाए ॥

१०३ तए ण ते समणोवासया 'थेरेहि भगवतेहि इमाइ एयारूवाइं वागरणाइं वागरिया समाणा हट्ठतुट्ठा'[2] थेरे भगवते वदति नमसति, पसिणाइ पुच्छंति, अट्ठाइ उवादियति, उवादिएत्ता[3] जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया ॥

१०४ 'तए ण ते थेरा अण्णया कयाइ तुगियाओ नयरीओ पुप्फवतियाओ चेइयाओ पडिनिग्गच्छति', बहिया जणवयविहार विहरति'[4] ॥

१०५. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नगरे होत्था—सामी समोसढे जाव[5] परिसा पडिगया ॥

१०६. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इंदभूई नाम अणगारे जाव[6] सखित्तविपुलतेयलेस्से छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

१०७ तए ण भगव गोयमे छट्ठक्खमणपारणगसि[7] पढमाए पोरिसीए[8] सज्झाय करेइ, बीयाए पोरिसीए झाण झियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसभते मुहपोत्तिय पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइ[9] पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणाइ पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइ उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे छट्ठ-क्खमणपारणगसि रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध ॥

१०८. तए ण भगव गोयमे समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडि-निक्खमित्ता अतुरियमचवलमसभते जुगतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रिय 'सोहेमाणे-सोहेमाणे'[1] जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरिय अडइ।

१०९. तए ण[2] भगव गोयमे रायगिहे नगरे[3] •उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमु-दाणस्स भिक्खायरियाए• अडमाणे बहुजणसद्द निसामेइ—एव खलु देवाणुप्पिया ! तुगियाए नयरीए बहिया पुप्फवइए चेइए पासावच्चिज्जा थेरा भगवतो समणोवासएहिं इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ पुच्छिया—सजमे ण भते ! किंफले ? तवे किंफले ?

तए ण ते थेरा भगवतो ते समणोवासए एव वयासी—सजमे ण अज्जो ! अणण्हयफले, तवे वोदाणफले त चेव जाव[4] पुव्वतवेण, पुव्वसजमेण, कम्मियाए, सगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति। सच्चे ण एस मट्ठे[5], नो चेव ण आयभाववत्तव्वयाए।

से कहमेय मन्ने[6] एव ॥

११०. तए ण[7] भगव गोयमे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जायसड्ढे जाव[8] समुप्पन्न-कोउहल्ले अहापज्जत्त समुदाण गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ नयराओ पडिनि-क्खमइ अतुरिय[9] •मचवलमसभते जुगतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रिय सोहेमाणे•-सोहेमाणे जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते गमणा-गमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता एसणमणेसण आलोएइ, आलोएत्ता भत्त-पाण पडिदसेइ, पडिदसेत्ता समण भगव महावीर[10] •वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता• एव वयासी—एव खलु भते ! अह तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे राय-

---

१. [illegible] (क, ता, ब)।
२. [illegible] (अ, क, ब, म, स)।
३. [illegible]
४. [illegible] १०३।
५. [illegible]
६. [illegible]
७. [illegible]
८. भ० १।११।
९. [illegible]
१०. [illegible]

गिहे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेमि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुंगियाए नयरीए बहिया पुप्फवइए चेइए पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो समणोवासएहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिया—संजमे णं भंते ! किंफले ? तवे किंफले ? तं चेव जाव[1] सच्चे णं एस मट्ठे,[2] नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए।

तं[1] पभू णं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं[2] वागरणाइं वागरेत्तए ? उदाहु अप्पभू ? समिया णं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए ? उदाहु असमिया[3] ? आउज्जिया णं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए ? उदाहु अणाउज्जिया ? पलिउज्जिया णं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए ? उदाहु अपलिउज्जिया ?—पुव्वतवेणं अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति। पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति। सच्चे णं एस मट्ठे, नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए।

पभू णं गोयमा ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए, नो 'चेव णं'[1] अप्पभू। •[2]समिया णं गोयमा ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए। आउज्जिया णं गोयमा ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए। पलिउज्जिया णं गोयमा ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए—पुव्वतवेणं अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति।° सच्चे णं एस मट्ठे, नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए।

अहं पि णं गोयमा ! एवमाइक्खामि, भासामि, पण्णवेमि, परूवेमि—पुव्वतवेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति। पुव्वसंजमेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति। कम्मियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति। संगियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति। पुव्वतवेणं, पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति। सच्चे णं एस मट्ठे, नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए॥

१११. तहारूवं णं भंते! समणं वा माहणं वा पज्जुवासमाणस्स किंफला पज्जुवासणा?
गोयमा! सवणफला।
से णं भंते! सवणे किंफले?
नाणफले।
से णं भंते! नाणे किंफले?
विण्णाणफले।
से णं भंते! विण्णाणे किंफले?
पच्चक्खाणफले।
से णं भंते! पच्चक्खाणे किंफले?
संजमफले।
से णं भंते! संजमे किंफले?
अणण्हयफले।
से णं भंते! अणण्हए किंफले।
तवफले।
से णं भंते! तवे किंफले?
वोदाणफले।
से णं भंते! वोदाणे किंफले?
अकिरियाफले।
सा णं भंते! अकिरिया किंफला?
सिद्धिपज्जवसाणफला—पण्णत्ता गोयमा!

संगहणी-गाहा

सवणे नाणे य विण्णाणे, पच्चक्खाणे य संजमे।
अणण्हए तवे चेव, वोदाणे अकिरिया सिद्धी ॥१॥

उण्हजलकुंड-पदं

११२. अण्णउत्थिया णं भंते! एवमाइक्खंति, भासंति, पण्णवेंति, परूवेंति—एवं खलु रायगिहस्स नयरस्स बहिया वेभारस्स पव्वयस्स अहे, एत्थ णं महं एगे हरए[1] अघे[2] पण्णत्ते—अणेगाइं जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, नाणादुमसंडमंडिउद्देसे, सस्सिरीए[3] पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे। तत्थ णं बहवे ओराला

---

१. ° [illegible] (ता)। ३. [illegible] — [illegible]
२. [illegible] (अ, क, ख, ब, म), [illegible]
[illegible]
[illegible] (वृ)।

वलाहया ससेयति समुच्छति वासति। तव्वइरित्ते य ण सया समियं उसिणे-उसिणे आउकाए अभिनिस्सवइ।

११३. से कहमेय भते ! एव ?
गोयमा ! ज ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति जाव जे ते एवमाइक्खति, मिच्छ ते एवमाइक्खति[1]। अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, भासामि, पण्णवेमि, परूवेमि—एव खलु रायगिहस्स नयरस्स बहिया वेभारस्स पव्वयस्स अदूरसामते, एत्थ ण महातवोवतीरप्पभवे नाम पासवणे पण्णत्ते—पच धणु-सयाइ आयाम-विक्खभेण, नाणादुमसडमडिउद्देसे सस्सिरीए पासादीए दरि-सणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे। तत्थ ण बहवे उसिणजोणिया[2] जीवा य पोग्गला य उदगत्ताए[3] वक्कमति विउक्कमति चयति उववज्जति[4]। तव्वइरित्ते वि य ण सया समिय उसिणे-उसिणे आउयाए अभिनिस्सवइ। एस ण गोयमा ! महातवोवतीरप्पभवे[5] पासवणे। एस ण गोयमा ! महातवोवतीरप्पभवस्स पासवणस्स अट्ठे पण्णत्ते॥

११४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ॥

छट्ठो उद्देसो

भासा-पद

११५. से नूण भते ! मन्नामी ति ओहारिणी भासा ? एव भासापद[1] भाणियव्व॥

सत्तमो उद्देसो

ठाण-पद

११७. कहि ण भते ! भवणवासीण देवाण ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जहा ठाणपदे[1] देवाण वत्तव्वया सा भाणियव्वा[2]। उववाएण[3] लोयस्स असखेज्जइभागे एव सव्व भाणियव्व, जाव[4] सिद्धगडिया समत्ता।[5]
कप्पाण पइट्ठाण, बाहुल्लुच्चत्त मेव सठाण।
जीवाभिगमे जो[6] वेमाणिउद्देसो[7] सो[8] भाणियव्वो सव्वो॥

अट्ठमो उद्देसो

चमरसभा-पदं

११८. कहि ण भते ! चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो[9] सभा सुहम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जबुद्दीवे[10] दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण तिरियमसखेज्जे[11] दीव-समुद्दे वीईवइत्ता[12] अरुणवरस्स दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयताओ अरुणोदय[13] समुद्द बायालीस जोयणसयसहस्साइ[14] ओगाहित्ता, एत्थ ण चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तिगिछिकूडे[15] नाम उप्पायपव्वए पण्णत्ते—सत्तरस-एक्कवीसे जोयणसए उड्ढ उच्चत्तेण चत्तारितीसे जोयणसए कोस च उव्वेहेण मूले दसबावीसे जोयणसए विक्खभेण, मज्झे चत्तारि चउवीसे जोयणसए विक्खभेण, [उवरि सत्ततेवीसे जोयणसए विक्खभेण,] मूले तिण्णि जोयणसहस्साइ, दोण्णि य बत्तीसुत्तरे जोयणसए किचि विसेसूणे परिक्खेवेण, मज्झे एग जोयण-सहस्स तिण्णि य इगयाले[16] जोयणसए किचि विसेसूणे परिक्खेवेण, उवरि दोण्णि

---

१. प० २।
२. भाणियव्वा [illegible] (क, ख, ग, ब, म, स), [illegible] (ता)।
३. उववाएण (क, ख, ब, म)।
४. [illegible]
५. [illegible] (क, ब, म, स)।
६. [illegible] (ब)।
७. वेमाणिउद्देसो (ग, ब)।
८. × (ब, म, स)।
९. असुरकुमार (क, ख, ब)।
१०. [illegible] (ब)।
११. [illegible] (ग, ब, म)।
१२. [illegible] (क, ख, ब, म)।
१३. [illegible] (क, ब)।
१४. [illegible]
१५. [illegible] (ब), [illegible] (ब)।
१६. [illegible] (ब)।

य जोयणसहस्साइ, दोण्णि य छलसीए जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण,[१] मूले वित्थडे, मज्झे संखित्ते, उप्पि विसाले, वरवइरविग्गहिए[२] महामउदसंठाण-संठिए सव्वरयणामए अच्छे[३] °सण्हे लण्हे घट्ठे मट्ठे निरए निम्मले निप्पंके निक्कंकडच्छाए सप्पभे समिरिईए सउज्जोए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे। से णं एगाए पउमवरवेइयाए, वणसंडेण य सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते। पउमवरवेइयाए वणसंडस्स य वण्णओ[४]॥

११९. तस्स णं तिगिंछिकूडस्स उप्पायपव्वयस्स उप्पिं बहुसम-रमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते—वण्णओ[५]॥

१२०. तस्स णं बहुसम-रमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे, एत्थ णं महं एगे पासायवडेंसए पण्णत्ते—अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पणुवीसं[६] जोयणसयं विक्खंभेणं। पासायवण्णओ[७]। उल्लोयभूमिवण्णओ[८]। अट्ठजोयणाइं मणिपेढिया। चमरस्स सीहासणं सपरिवारं[९] भाणियव्वं॥

१२१. तस्स णं तिगिंछिकूडस्स दाहिणेणं छक्कोडिसए पणपन्नं च कोडीओ पणतीसं च सयसहस्साइं पण्णासं च सहस्साइं अरुणोदए समुद्दे तिरियं वीइवइत्ता अहे रयणप्पभाए पुढवीए चत्तालीसं जोयणसहस्साइं, ओगाहित्ता, एत्थ णं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचंचा नाम रायहाणी पण्णत्ता एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं जंबुद्दीवप्पमाणा।

दसमो उद्देसो

अत्थिकाय-पदं

१२४ कति णं भंते ! अत्थिकाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच अत्थिकाया पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए ।।

१२५ धम्मत्थिकाए णं भंते ! कतिवण्णे ? कतिगंधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे,
अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।
दव्वओ णं धम्मत्थिकाए एगे दव्वे,
खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते,
कालओ न कयाइ न आसि, न कयाइ[1] •नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए•, णिच्चे ।
भावओ अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे ।
गुणओ गमणगुणे ।।

१२६ अधम्मत्थिकाए[1] •णं भंते ! कतिवण्णे ? कतिगंधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे,
अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।
दव्वओ णं अधम्मत्थिकाए एगे दव्वे ।
खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते ।

१२७. आगासत्थिकाए[1] •णं भंते ! कतिवण्णे ? कतिगंधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे;
अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।
दव्वओ णं आगासत्थिकाए एगे दव्वे ।
खेत्तओ लोयालोयप्पमाणमेत्ते—अणंते ।
कालओ न कयाइ न आसि, न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चे ।
भावओ अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे ।°
गुणओ अवगाहणागुणे ॥

१२८. जीवत्थिकाए णं भंते ! कतिवण्णे ? कतिगंधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! अवण्णे[2], •अगंधे, अरसे, अफासे°;
अरूवी, जीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते,—तं जहा—दव्वओ[3], •खेत्तओ, कालओ, भावओ°, गुणओ ।
दव्वओ णं जीवत्थिकाए अणंताइं जीवदव्वाइं ।
खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते ।
कालओ न कयाइ न आसि[4], •न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए° णिच्चे ।
भावओ अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे ।
गुणओ उवओगगुणे ॥

१२९. पोग्गलत्थिकाए णं भंते ! कतिवण्णे[5] ? •कतिगंधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! पंचवण्णे, पंचरसे, दुगंधे, अट्ठफासे,
रूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।

१. [illegible]
२. [illegible]
३. [illegible]
४. [illegible]

दसमो उद्देसो

अत्थिकाय-पदं

१२४ कति ण भंते ! अत्थिकाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच अत्थिकाया पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए ।।

१२५. धम्मत्थिकाए णं भंते ! कतिवण्णे ? कतिगंधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे,
अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।
दव्वओ णं धम्मत्थिकाए एगे दव्वे,
खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते,
कालओ न कयाइ न आसि, न कयाइ °नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए°, णिच्चे ।
भावओ अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे ।
गुणओ गमणगुणे ।।

१२६ अधम्मत्थिकाए °णं भंते ! कतिवण्णे ? कतिगंधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे,
अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।
दव्वओ णं अधम्मत्थिकाए एगे दव्वे ।
खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते ।
कालओ न कयाइ न आसि, न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए,
[illegible]
भावओ अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे ।
[illegible] ।।

१२७. आगासत्थिकाए[1] •णं भंते ! कतिवण्णे ? कतिगंधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे;
अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।
दव्वओ णं आगासत्थिकाए एगे दव्वे ।
खेत्तओ लोयालोयप्पमाणमेत्ते—अणंते ।
कालओ न कयाइ न आसि, न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चे ।
भावओ अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे ।°
गुणओ अवगाहणागुणे ॥

१२८. जीवत्थिकाए णं भंते ! कतिवण्णे ? कतिगंधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! अवण्णे[2], •अगंधे, अरसे, अफासे°;
अरूवी, जीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते,—तं जहा—दव्वओ[3], •खेत्तओ, कालओ, भावओ°, गुणओ ।
दव्वओ णं जीवत्थिकाए अणंताइं जीवदव्वाइं ।
खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते ।
कालओ न कयाइ न आसि[4], •न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए° निच्चे ।
भावओ अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे ।
गुणओ उवओगगुणे ॥

१२९. पोग्गलत्थिकाए णं भंते ! कतिवण्णे[5] ? •कतिगंधे ? कतिरसे° ? कतिफासे ?
गोयमा ! पंचवण्णे, पंचरसे, दुगंधे, अट्ठफासे;
रूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए, लोगदव्वे ।

१. अ० सं० — आगासत्थिकाए त्ति एवं चेव [illegible]
२. [illegible]
३. म० पा० — दव्वओ जाव गुणओ ।
४. म० पा० — आसि जाव निच्चे ।
५. अ० सं० — [illegible]

से समासओ पचविहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ गुणओ ।

दव्वओ ण पोग्गलत्थिकाए अणताइं दव्वाइ ।

खेत्तओ लोयप्पमाणमेत्ते ।

कालओ न कयाइ न आसि', •न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए°, णिच्चे ।

भावओ वण्णमते, गधमते, रसमते, फासमते ।

गुणओ गहणगुणे ॥

१३० एगे भते ! धम्मत्थिकायपदेसे धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्व सिया ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१३१ एव दोण्णि,' 'तिण्णि, चत्तारि'' पच, छ, सत्त, अट्ठ, नव, दस, सखेज्जा, असखेज्जा । भते ! धम्मत्थिकायपदेसा धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्व सिया ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१३२ एगपदेसूणे वि य ण भते ! धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्व सिया ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१३३ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—एगे धम्मत्थिकायपदेसे नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्व सिया जाव एगपदेसूणे वि य ण धम्मत्थिकाए नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्व सिया ?

से नूण गोयमा ! खडे चक्के ? सगले चक्के ?
भगव ! नो खडे चक्के, सगले चक्के ।
'•खडे छत्ते ? सगले छत्ते ?
भगव ! नो खडे छत्ते, सगले छत्ते ।
खडे चम्मे ? सगले चम्मे ?
भगव ! नो खडे चम्मे, सगले चम्मे ।
खडे दडे ? सगले दडे ?
भगव ! नो खडे दडे, सगले दडे ।
[illegible]

आगास-पदं

१३८. कतिविहे णं भंते ! आगासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे आगासे पण्णत्ते, तं जहा—लोयागासे[1] य अलोयागासे य ॥

१३९. लोयागासे णं भंते ! किं जीवा ? जीवदेसा ? जीवप्पदेसा ? अजीवा ? अजीवदेसा ? अजीवप्पदेसा ?
गोयमा ! जीवा वि, जीवदेसा वि, जीवप्पदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवप्पदेसा वि ।
जे जीवा ते नियमा एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अणिंदिया ।
जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा[1], •बेइंदियदेसा, तेइंदियदेसा, चउरिंदियदेसा, पंचिंदियदेसा°, अणिंदियदेसा ।
जे जीवप्पदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा[1], •बेइंदियपदेसा, तेइंदियपदेसा, चउरिंदियपदेसा, पंचिंदियपदेसा°, अणिंदियपदेसा ।
जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूवी य अरूवी य ।
जे रूवी ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—खंधा, खंधदेसा, खंधपदेसा, परमाणुपोग्गला ।
जे अरूवी ते पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, नो धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा; अधम्मत्थिकाए, नो अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए ॥

१४०. अलोयागासे णं भंते ! किं जीवा[1] ? •जीवदेसा ? जीवप्पदेसा ? अजीवा ? अजीवदेसा ? अजीवप्पदेसा ?°
गोयमा ! नो जीवा[1], •नो जीवदेसा, नो जीवप्पदेसा; नो अजीवा, नो अजीवदेसा°, नो अजीवप्पदेसा, एगे अजीवदव्वदेसे अगरुयलहुए अणंतेहिं अगरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासे अणंतभागूणे ॥

अत्थिकाय-पदं

१४२. •अधम्मत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ ॥

१४३. लोयाकासे णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ ॥

१४४. जीवत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ ॥

१४५. पोग्गलत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ° ॥

फुसणा-पदं

१४६. अहोलोए णं भंते ! धम्मत्थिकायस्स केवइयं फुसति ?
गोयमा ! सातिरेगं अद्धं फुसति ॥

१४७. तिरियलोए णं भंते ! •धम्मत्थिकायस्स केवइयं फुसति ?°
गोयमा ! असंखेज्जइभागं फुसति ॥

१४८. उड्ढलोए णं भंते ! •धम्मत्थिकायस्स केवइयं फुसति ?°
गोयमा ! देसूणं अद्धं फुसति ॥

१४९. इमा णं भंते ! रयणप्पभापुढवी धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइभागं फुसति ? असंखेज्जइभागं फुसति ? संखेज्जे भागे फुसति ? असंखेज्जे भागे फुसति ? सव्वं फुसति ?
गोयमा ! णो संखेज्जइभागं फुसति, असंखेज्जइभागं फुसति, णो संखेज्जे भागे फुसति, णो असंखेज्जे भागे फुसति, णो सव्वं फुसति ॥

१५०. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदही धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइभागं फुसति ? असंखेज्जइभागं फुसति ? संखेज्जे भागे फुसति ? असंखेज्जे भागे फुसति ? सव्वं फुसति ?
जहा रयणप्पभा तहा घणोदहि-घणवाय-तणुवाया वि ॥

१५१. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए ओवासंतरे धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइभागं फुसति ? असंखेज्जइभागं फुसति ? संखेज्जे भागे फुसति ? असंखेज्जे भागे फुसति ? सव्वं फुसति ?
गोयमा ! संखेज्जइभागं फुसति, नो असंखेज्जइभागं फुसति, नो संखेज्जे भागे फुसति, नो असंखेज्जे भागे फुसति, नो सव्वं फुसति ।
ओवासंतराइं सव्वाइं ॥

१५२. जहा रयणप्पभाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया[1] एवं जाव[2] अहेसत्तमाए[1] ॥ एव सोहम्मे कप्पे जाव[4] ईसीपब्भारा पुढवी—एते सव्वे वि असखेज्जइभागं फुसति । सेसा पडिसेहियव्वा ।

१५३. एव अधम्मत्थिकाए, एवं लोयाकासे वि ।

संगहणी-गाहा

पुढवोदही घण-तणू, कप्पा गेवेज्जणुत्तरा सिद्धी ।
सखेज्जइभाग अतरेसु सेसा असंखेज्जा ॥१॥

तइयं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१. केरिसविउव्वणा २. चमर ३. किरिय ४,५. जाणित्थि ६. नगर ७. पाला य।
८. अहिवइ ९. इंदिय १०. परिसा, ततियम्मि सए' दसुद्देसा ॥१॥

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं मोया नाम नयरी होत्था— वण्णओ' ॥

२. तीसे णं मोयाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे नंदणे नाम चेइए होत्था—वण्णओ' ॥

३. 'तेणं कालेणं तेणं समएणं' सामी समोसढे। परिसा निग्गच्छइ, पडिगया परिसा ॥

देवविकुव्वणा-पदं

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स दोच्चे अंतेवासी अग्गिभूई नाम अणगारे गोयमे गोत्तेणं सत्तुस्सेहे जाव' पज्जुवासमाणे एवं वदासि—चमरे णं भंते ! असुरिंदे असुरराया केमहिड्ढीए' ? केमहज्जुतीए ? केमहाबले ? केमहायसे ? केमहासोक्खे ? केमहाणुभागे ? केवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए ?

गोयमा ! चमरे णं असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए,' महज्जुतीए, महाबले, महायसे, महासोक्खे', महाणुभागे। से णं तत्थ चोत्तीसाए भवणावास-सयसहस्साणं,' चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं, तायत्तीसाए' तावत्तीसगाणं',

---

१. ०ए (ता)।
२. ओ० सू० १।
३. ओ० सू० २-१३।
४. [illegible] (ता)।
५. भ० १।६, १०।
६. केमहड्ढीए (क, म)।
७. सं० पा०—महिड्ढीए जाव महाणुभागे।
८. [illegible] (अ, क, ता, म)।
९. [illegible] (अ, ता, ब, म, स)।
१०. सं० पा०—[illegible]।

जाव[1] महाणुभागाओ[2]। ताओ णं तत्थ साण-साण भवणाण, साण-साण सामाणिय-साहस्सीण, साण-साण महत्तरियाण[3], साण-साण परिसाण जाव[4] एमहिड्ढीयाओ। अण्णं जहा लोगपालाण अपरिसेस।

८ सेवं भते! सेव भते! त्ति भगव दोच्चे[5] गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जेणेव तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तच्च गोयम वायुभूति अणगार एव वदासि—एव खलु गोयमा! चमरे असुरिदे असुरराया एमहिड्ढीए त चेव एव सव्व अपुट्ठवागरण नेयव्व अपरिसेसिय[6] जाव[7] अग्गमहिसीण वत्तव्वया समत्ता।

९. तेण से तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे दोच्चस्स गोयमस्स अग्गिभूतिस्स अणगारस्स एवमाइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठ नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एयमट्ठ असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव[8] पज्जुवासमाणे एव वयासी—एव खलु भते! दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे मम एवमाइक्खइ भासइ पण्णवेइ परूवेइ—एव खलु गोयमा! चमरे असुरिदे असुरराया महिड्ढीए[9] जाव[10] महाणुभागे। से ण तत्थ चोत्तीसाए भवणावाससयसहस्साण त चेव सव्व अपरिसेस भाणियव्व जाव[11] अग्गमहिसीण[12] वत्तव्वया समत्ता।

१० से कहमेय भते! एव?

गोयमादि! समणे भगव महावीरे तच्च गोयम वायुभूति अणगार एव वयासी—ज ण गोयमा! तव दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे एवमाइक्खइ भासइ पण्णवेइ परूवेइ—एव खलु गोयमा! चमरे असुरिदे असुरराया महिड्ढीए त चेव सव्व जाव[13] अग्गमहिसीओ। सच्चे ण एसमट्ठे। अह पि ण गोयमा! एवमाइक्खामि भासामि पण्णवेमि परूवेमि—एव खलु गोयमा! चमरे असुरिदे असुरराया महिड्ढीए[14] त चेव जाव[15] अग्गमहिसीओ। 'सच्चे ण एसमट्ठे'[16]।

११. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोच्चं गोयमं अग्गिभूइं अणगारं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेइ ॥

१२. 'तए णं से तच्चे गोयमे वायुभूति अणगारे दोच्चेणं गोयमेणं अग्गिभूतिणा अणगारेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव[3] पज्जुवासमाणे एवं वयासी"—जइ णं भंते ! चमरे असुरिंदे असुरराया एमहिड्ढीए जाव[4] एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए, बली णं भंते ! वइरोयणिंदे वइरोयणराया केमहिड्ढीए ? जाव[5] केवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए ?

'गोयमा ! बली णं वइरोयणिंदे वइरोयणराया महिड्ढीए जाव[5] महाणुभागे। जहा चमरस्स तहा बलिस्स वि नेयव्वं, नवरं—सातिरेगं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं भाणियव्वं, सेसं तं चेव निरवसेसं नेयव्वं, नवरं—नाणत्तं जाणियव्वं भवणेहिं सामाणिएहि य'[6] ॥

---

१. भ० ३।१० ।

२. नवरं से दोच्चे गोतमे अग्गिभूती अणगारे तच्चेण गोतमेण वायुभूतिणा अणगारेण एतमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामिए समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता तच्चेण गोतमेण वायुभूतिणा अणगारेण सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी (क, ता), [illegible]

३. भ० ३।४ ।

४. भ० ३।४ ।

५. भ० ३।४ ।

६. गोयमा ! बली वइरोयणिंदे वइरोयणराया महिड्ढीए [illegible] माणे विहरंति । से जहानामए एवं जहा चमरस्स तहा बलिस्स वि नेयव्वं, नवरं—सातिरेगं केवलकप्पं जंबुद्दीवं भाणियव्वं सेसं तं चेव निरवसेसं नेयव्वं, नवरं—नाणत्तं जाणियव्वं भवणेहिं सामाणिएहि (ख); गोयमा ! जाव महिड्ढीए [illegible]

१३ सेवं भंते ? सेवं भंते ! त्ति तच्चे गोयमे 'वायुभूई' अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासण्णे[1] •णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे° पज्जुवासइ"[2] ॥

१४. तते णं से दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जइ णं भंते ! बली वइरोयणिंदे वइरोयणराया एमहिड्ढीए जाव[3] एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए, धरणे णं भंते ! नागकुमारिंदे नागकुमारराया केमहिड्ढीए ? जाव[4] केवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए ?

गोयमा ! धरणे णं नागकुमारिंदे नागकुमारराया महिड्ढीए जाव[5] महाणुभागे। से णं तत्थ चोयालीसाए भवणावाससयसहस्साणं, छण्हं सामाणियसाहस्सीणं, तायत्तीसाए तावत्तीसगाणं, चउण्हं लोगपालाणं, छण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, चउव्वीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं, च जाव[6] विहरइ। एवतियं च णं पभू विउव्वित्तए। से जहानामए जुवती जुवाणे जाव[7] पभू केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं जाव तिरियं संखेज्जे दीव-समुद्दे बहूहिं नागकुमारीहिं जाव विकुव्विस्सति वा।

सामाणिया तावत्तीस-लोगपालग्गमहिसीओ य तहेव जहा[8] चमरस्स, नवरं— संखेज्जे दीव-समुद्दे भाणियव्वे ॥

१५ एवं जाव[9] थणियकुमारा, वाणमंतरा, जोईसिया वि, नवरं—दाहिणिल्ले सव्वे अग्गिभूई पुच्छइ, उत्तरिल्ले सव्वे वायुभूई पुच्छइ ॥

१६ भंतेत्ति ! भगवं दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जइ णं भंते ! जोइसिंदे जोइसराया एमहिड्ढीए जाव[10] एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए, सक्के णं भंते ! देविंदे देवराया केमहिड्ढीए ? जाव[11] केवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए ?

गोयमा ! सक्के णं देविंदे देवराया महिड्ढीए जाव[1] महाणुभागे । से णं बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साणं, चउरासीए[2] सामाणियसाहस्सीणं,[3] •तायत्तीसाए तावत्तीसगाणं, चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं°, चउण्हं चउरासीणं आयरक्खसाहस्सीणं, अण्णेसिं च जाव[4] विहरइ । एमहिड्ढीए जाव[5] एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए, एवं जहेव[6] चमरस्स तहेव भाणियव्वं, नवरं—दो केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अवसेसं तं चेव ।

एस णं गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते[7] बुइए, नो चेव णं संपत्तीए विकुव्विंसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा ॥

१७. जइ णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया एमहिड्ढीए जाव[8] एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए, एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी तीसए नाम अणगारे पगइभद्दए[9] •पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसंपन्ने अल्लीणे° विणीए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं अट्ठ संवच्छराइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए[10] संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सयंसि विमाणंसि उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्तीए[11] ओगाहणाए सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सामाणियदेवत्ताए उववण्णे ।

तए णं तीसए देवे अहुणोववण्णमेत्ते समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं[12] गच्छइ [तं जहा—आहारपज्जत्तीए, सरीरपज्जत्तीए, इंदियपज्जत्तीए, आणापाणुपज्जत्तीए, भासा-मणपज्जत्तीए[13]]

तए णं तं तीसयं देवं पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं[14] गयं समाणं सामाणियपरिसोववण्णया देवा करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति वद्धावित्ता एवं वयासी—अहो णं देवाणुप्पिएहिं

१. भ० ३।४।
२. चउरासीति (क, ता, ब)।
३. सं० पा०—सामाणियसाहस्सीणं जाव [illegible]
४. भ० ३।४।
५. भ० ३।४।
६. भ० ३।४-७।
७. [illegible] (अ, ब)।
८. भ० ३।४।
९. सं० पा०—[illegible]
१०. [illegible] (क, ब)।
११. [illegible]
१२. [illegible]
१३. [illegible]
१४. [illegible] (अ, ब)।

दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए। जारिसिया णं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तारिसिया णं सक्केण वि देविंदेण देवरण्णा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए। जारिसिया णं सक्केणं देविंदेण देवरण्णा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए। जारिसिया णं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए।

से णं भंते! तीसए देवे केमहिड्ढीए जाव केवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए? गोयमा! महिड्ढीए जाव महाणुभागे। से णं तत्थ सयस्स विमाणस्स, चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं, चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं, अण्णेसिं च बहूणं वेमाणियाणं देवाणं, देवीण य जाव विहरइ। एमहिड्ढीए जाव एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए। से जहानामए जुवती जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, जहेव सक्कस्स तहेव जाव एस णं गोयमा! तीसयस्स देवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, णो चेव णं संपत्तीए विकुव्विंसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा॥

१८ जइ णं भंते! तीसए देवे महिड्ढीए जाव एवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए, सक्कस्स णं भंते! देविंदस्स देवरण्णो अवसेसा सामाणिया देवा केमहिड्ढीया? तहेव सव्वं जाव एस णं गोयमा! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो एगमेगस्स सामाणियस्स देवस्स इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, नो चेव णं संपत्तीए विकुव्विंसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा।

तावत्तीसय—लोगपाल-अग्गमहिसी णं जहेव चमरस्स, नवरं—दो केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अण्णं तं चेव॥

१९ सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति दोच्चे गोयमे जाव विहरइ॥

२० भंतेत्ति! भगवं तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे समणं भगवं •महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता॰ एवं वदासी—जइ णं भंते! सक्के देविंदे देवराया

२३. एव माहिंदे वि, नवर—सातिरेगे चत्तारि केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे ।
एव बभलोए वि, नवर—अट्ठ केवलकप्पे ।
एव लतए वि, नवर—सातिरेगे अट्ठ केवलकप्पे ।
महासुक्के सोलस केवलकप्पे । सहस्सारे सातिरेगे सोलस ।
एव पाणए वि, नवर—वत्तीस केवलकप्पे ।
एव अच्चुए वि, नवर—सातिरेगे वत्तीस केवलकप्पे जबुद्दीवे दीवे, अण्ण त चेव ॥

२४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे समण भगव महावीर वदइ नमसइ जाव[1] विहरइ ॥

तामलिस्स ईसाणिंद-पदं

२५ तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ मोयाओ[2] नयरीओ नदणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ ॥

२६ तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नगरे होत्था—वण्णओ[3] जाव[4] परिसा पज्जुवासइ ॥

२७ तेण कालेण तेण समएण ईसाणे देविंदे देवराया[5] ईसाणे कप्पे ईसाणवडेसए विमाणे जहेव रायप्पसेणइज्जे जाव[6] दिव्व देविड्ढि दिव्वं देवजुति दिव्व देवाणुभागं दिव्व वत्तीसइवद्ध नट्टविहिं उवदसित्ता जाव जामेव दिसि पाउब्भूए, तामेव दिसि पडिगए ।

२८. भंतेत्ति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता । एव वयासी—अहो ण भते ! ईसाणे देविंदे देवराया महिड्ढीए जाव[7] महाणुभागे । ईसाणस्स ण भते ! सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे कहिं गते ? कहिं अणुपविट्ठे ?
गोयमा ! सरीर गते, सरीर अणुपविट्ठे ॥

२९ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सरीर गते ! सरीर अणुपविट्ठे ?
गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा णिवाया णिवायगभीरा । तीसे ण[8] कूडागारसालाए अदूरसामते, एत्थ ण महेगे जणसमूहे एग मह अब्भवद्दलग वा वासवद्दलग वा महावाय वा एज्जमाण

जलते सयमेव दारुमय पडिग्गहग[1] करेत्ता विउल 'असण-पाण-खाइम-साइमं'[2] उवक्खडावेत्ता, मित्त-नाइ नियग-सयण[3],-सबंधि-परियण आमंतेत्ता, त मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियण विउलेणं असण-पाण-'खाइम-साइमेणं'[4] वत्थ-गंध-मल्लालकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्त कुटुंबे[5] ठावेत्ता, त मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियण जेट्ठपुत्त च आपुच्छित्ता, सयमेव दारुमय पडिग्गहग गहाय मुंडे भवित्ता पाणामाए[6] पव्वज्जाए पव्वइत्तए। पव्वइए वि य ण समाणे इम एयारूवं अभिग्गह अभिगिण्हिस्सामि—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण उड्ढं बाहाओ 'पगिज्झिय-पगिज्झिय'[7] सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्स वि य ण पारणयंसि[8] आयावणभूमीओ पच्चोरुभित्ता सयमेव दारुमय पडिग्गहग गहाय तामलित्तीए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्ता सुद्धोदण पडिग्गाहेत्ता त तिसत्तक्खुत्तो उदएणं[9] पक्खालेत्ता तओ पच्छा आहार आहारित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[10] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते सयमेव दारुमय पडिग्गहग करेइ, करेत्ता विउलं असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता ततो पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे[11] भोयणवेलाए भोयणमंडवसि सुहासणवरगए तेण[12] मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणेण सद्धि त विउल असण-पाण-खाइम-साइम आसादेमाणे वीसादेमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागए वि य ण समाणे आयते चोक्खे परमसुइभूए त मित्त[13]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-°परियण विउलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-गंध-मल्लालकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, तस्सेव मित्त-नाइ[14]-•नियग-सयण-संबंधि° परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्त कुटुंबे ठावेइ, ठावेत्ता त मित्त-नाइ[15]-•नियग-सयण-

कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते तामलित्तीए नगरीए दिट्ठाभट्ठे य पासडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसगतिए य[1] परियायसगतिए य आपुच्छित्ता तामलित्तीए नगरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छित्ता पादुग[2]-कुडिय-मादीय उवगरण दारुमय च पडिग्गहग एगते एडित्ता तामलित्तीए नगरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णियत्तणिय-मडल आलिहित्ता[3] सलेहणा झूसणा झूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते[4] •तामलित्तीए नगरीए दिट्ठाभट्ठे य पासडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसगतिए य परियायसगतिए य आपुच्छइ, आपुच्छित्ता तामलित्तीए नयरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता पादुग-कुडिय-मादीय उवगरण दारुमय च पडिग्गहग एगते एडेइ, एडेत्ता तामलित्तीए नगरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णियत्तणिय-मडल आलिहइ, आलिहित्ता सलेहणाझूसणाझूसिए° भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमण निवण्णे ॥

३७ तेण कालेण तेण समएण बलिचचा रायहाणी अणिदा अपुरोहिया या वि होत्था ॥

३८ तए ण ते बलिचचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलि बालतवस्सि ओहिणा आभोएति, आभोएत्ता अण्णमण्ण सद्दावेति, सद्दावेत्ता एव वयासि—एव खलु देवाणुप्पिया! बलिचचा रायहाणी अणिदा अपुरोहिया, अम्हे य ण देवाणुप्पिया! इदाहीणा इदाहिट्ठिया इदाहीणकज्जा, अय च ण देवाणुप्पिया! तामली बालतवस्सी तामलित्तीए नगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभागे[5] नियत्तणिय-मडल आलिहित्ता सलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमण निवण्णे, त सेय खलु देवाणुप्पिया! अम्ह तामलि बालतवस्सि बलिचचाए रायहाणीए ठितिपकप्प पकरावेत्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अतिए एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता बलिचचाए रायहाणीए मज्झमज्झेण निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव रुयगिदे[6] उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णति, समोहणित्ता जाव[7] उत्तरवेउव्वियाइ रूवाइ विकुव्वति, विकुव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए 'उद्धयाए दिव्वाए'[8] देवगईए तिरिय असखेज्जाण दीवसमुद्दाण मज्झमज्झेण 'वीईवयमाणा-वीईवयमाणा'[9]

जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव तामलित्ती नगरी जेणेव तामली मोरियपुत्ते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तामलिस्स बालतवस्सिस्स उप्पि सपक्खिं सपडिदिसिं ठिच्चा दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवज्जुतिं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं बत्तीसतिविहं नट्टविहिं उवदंसेंति, उवदंसेत्ता तामलिं बालतवस्सिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे बलिचंचारायहाणीवत्थव्वया बहवे असुर-कुमारा देवा य देवीओ य देवाणुप्पियं वंदामो नमंसामो •सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं• पज्जुवासामो। अम्हं णं देवाणुप्पिया! बलिचंचा रायहाणी अणिंदा अपुरोहिया, अम्हे य णं देवाणुप्पिया! इंदाहीणा इंदाहिट्ठिया इंदाहीणकज्जा, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया! बलिचंचं रायहाणिं आढाह परियाणह सुमरह, अट्ठं बंधह, नियाणं पकरेह, ठिइपकप्पं पकरेह, तए णं तुब्भे कालमासे कालं किच्चा बलिचंचाए रायहाणीए उववज्जिस्सह, तए णं तुब्भे अम्हं इंदा भविस्सह, तए णं तुब्भे अम्हेहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरिस्सह॥

३९. तए णं से तामली बालतवस्सी तेहिं बलिचंचारायहाणिवत्थव्वेहिं बहूहिं असुर-कुमारेहिं देवेहिं देवीहि य एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं नो आढाइ, नो परियाणेइ, तुसिणीए संचिट्ठइ॥

४०. तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिं मोरियपुत्तं दोच्चं पि तच्चं पि तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति जाव अम्हं च णं देवाणुप्पिया! बलिचंचा रायहाणी अणिंदा •अपुरोहिया, अम्हे य णं देवाणुप्पिया! इंदाहीणा इंदाहिट्ठिया इंदाहीणकज्जा, तं तुब्भे णं देवाणु-प्पिया! बलिचंचं रायहाणिं आढाह परियाणह सुमरह अट्ठं बंधह, नियाणं पकरेह•, ठिइपकप्पं पकरेह जाव दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे •एयमट्ठं नो आढाइ, नो परियाणेइ• तुसिणीए संचिट्ठइ॥

४१. तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिणा बालतवस्सिणा अणाढाइज्जमाणा अपरियाणिज्जमाणा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया॥

४२. तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे कप्पे अणिंदे अपुरोहिए यावि होत्था॥

४३. तए ण से तामली वालतवस्सी वहुपडिपुण्णाइ सट्ठि वाससहस्साइ परियाग पाउणित्ता, दोमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसित्ता, सवीस भत्तसय अणसणाए छेदित्ता कालकासे काल किच्चा ईसाणे कप्पे ईसाणवडेसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूसतरिए[1] अगुलस्स असखेज्जइभागमेत्तीए ओगाहणाए ईसाणदेविदविरहियकालसमयसि ईसाणदेविदत्ताए[2] उववण्णे ॥

४४. तए ण से ईसाणे देविदे देवराया अहुणोववण्णे पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव गच्छइ, [त जहा—आहारपज्जत्तीए जाव[3] भासा-मणपज्जत्तीए][4] ॥

४५ तए ण ते वलिचचारायहाणिवत्थव्वया वहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलि वालतवस्सि कालगत जाणित्ता, ईसाणे य कप्पे देविदत्ताए उववण्ण पासित्ता आसुरुत्ता रुट्ठा कुविया चडिक्किया मिसिमिसेमाणा वलिचचाए रायहाणीए मज्झमज्झेण निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव[5] जेणेव भारहे वासे जेणेव तामलित्ती नयरी जेणेव तामलिस्स वालतवस्सिस्स सरीरए तेणेव उवागच्छति, वामे पाए[6] सुवेण[7] वधति, तिक्खुत्तो मुहे निट्ठुहति[8], तामलित्तीए नगरीए सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु 'आकड्ढ-विकड्ढि'[9] करेमाणा, महया-महया सद्देण उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एव वयासि—केस[10] ण भो ! से तामली वालतवस्सी सयगहियलिंगे[11] पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए ? केस ण से ईसाणे कप्पे ईसाणे देविदे देवराया ?—ति कट्टु तामलिस्स वालतवस्सिस्स सरीरय हीलति[12] निदति खिसति गरहति अवमण्णति तज्जेति तालेति परिवहेति पव्वहेति, आकड्ढ-विकड्ढि करेति, हीलेत्ता[13] •निदित्ता खिसित्ता गरहित्ता अवमण्णेत्ता तज्जेत्ता तालेत्ता परिवहेत्ता पव्वहेत्ता° आकड्ढ-विकड्ढि करेत्ता एगते एडति, एडित्ता जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया ॥

४६ तए ण ते[14] ईसाणकप्पवासी[15] वहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य वलिचंचारायहाणिवत्थव्वएहि वहूहि असुरकुमारेहि देवेहि देवीहि य तामलिस्स वालतवस्सिस्स सरीरय हीलिज्जमाण निदिज्जमाण[16] •खिसिज्जमाण गरहिज्जमाण अवमण्णिज्जमाण तज्जिज्जमाण तालेज्जमाण परिवहिज्जमाणं पव्वहिज्जमाण° आकड्ढ-

देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहंति[1] णं देवाणुप्पिया ! णाइ[2] भुज्जो[3] एवं करणयाए त्ति कट्टु एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेंति ॥

५१. तए णं से ईसाणे देविंदे देवराया तेहिं बलिचंचारायहाणिवत्थव्वएहिं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामिते समाणे तं दिव्वं देविड्ढिं जाव[4] तेयलेस्सं पडिसाहरइ । तप्पभिंतिं च णं गोयमा ! ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया[5] बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य ईसाणं देविंदं देवरायं आढंति[6] •परियाणंति सक्कारेंति सम्माणेंति कल्लाणं मंगलं देवयं विणएणं चेइयं॰ पज्जुवासंति, ईसाणस्स य देविंदस्स देवरण्णो आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठंति ।

एवं खलु गोयमा ! ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी[7] •दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते॰ अभिसमण्णागए ॥

५२. ईसाणस्स भंते ! देविंदस्स देवरण्णो केवतियं[8] कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

५३. ईसाणे णं भंते ! देविंदे देवराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं[9] •भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता॰ कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति[10] •बुज्झिहिति मुच्चिहिति सव्वदुक्खाणं॰ अंतं काहिति ॥

सक्कीसाण-पदं

५४. सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो विमाणेहिंतो ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो विमाणा ईसिं उच्चतरा चेव ईसिं उन्नयतरा[11] चेव ? ईसाणस्स वा देविंदस्स देवरण्णो विमाणेहिंतो सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो विमाणा ईसिं णीयतरा चेव ईसिं निण्णतरा चेव ?
हंता गोयमा ! तहेव सव्वं नेयव्वं ॥

५५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—

गोयमा ! से जहानामए करयले सिया—देसे उच्चे, देसे उन्नए। देसे णीए, देसे निण्णे। से तेणट्ठेणं गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जाव[1] ईसि निण्णतरा चेव ॥

५६. पभू णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवित्तए ?
हंता पभू ॥

५७. से भंते ! किं आढामाणे पभू ? अणाढामाणे[2] पभू ?
गोयमा ! आढामाणे पभू, नो अणाढामाणे पभू ॥

५८. पभू णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवित्तए ?
हंता पभू ॥

५९. से भंते ! किं आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे वि पभू, अणाढामाणे वि पभू ॥

६०. पभू णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणं देविंदं देवरायं सपक्खिं[3] सपडिदिसिं समभिलोइत्तए ?
हंता पभू ॥

६१. से भंते ! किं आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे पभू, नो अणाढामाणे पभू ॥

६२. पभू णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया सक्कं देविंदं देवरायं सपक्खिं सपडिदिसिं समभिलोइत्तए ?
हंता पभू ॥

६३. से भंते ! किं आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे वि पभू, अणाढामाणे वि पभू[4] ॥

६४. पभू णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा सद्धिं आलावं वा संलावं वा करेत्तए ?
हंता पभू ॥

६५. [5]से भंते ! किं आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे पभू, नो अणाढामाणे पभू ॥

---

१. [illegible]
२. [illegible]
३. [illegible]
४. [illegible]
५. [illegible]

बीओ उद्देसो

७७. तेण कालेणं तेण समएणं रायगिहे नाम नगरे होत्था जाव' परिसा पज्जुवासइ ।।

७८. तेण कालेण तेण समएण चमरे असुरिदे असुरराया चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरसि सीहासणसि, चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहि जाव' नट्टविहि उवदसेत्ता जामेव दिसि' पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए ।।

७९. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—अत्थि ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे असुरकुमारा देवा परिवसति ?

गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।

८० एव जाव' अहेसत्तमाए पुढवीए, सोहम्मस्स कप्पस्स अहे जाव' अत्थि ण भते ! ईसिप्पब्भाराए पुढवीए अहे असुरकुमारा देवा परिवसति ?

णो इणट्ठे समट्ठे ।।

८१. से कहि खाइ ण भते ! असुरकुमारा देवा परिवसति ?

गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीतुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए' एव असुरकुमारदेववत्तव्वया जाव' दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरति ।।

८२. अत्थि ण भते ! असुरकुमाराण देवाण अहे गतिविसए ?

हता अत्थि ।।

८३ केवतियण्ण भते ! असुरकुमाराण देवाण अहे गतिविसए पण्णत्ते ?

गोयमा ! जाव अहेसत्तमाए पुढवीए । तच्च पुण पुढवि गया य गमिस्सति य ।।

८४ किपत्तियण्ण भते ! असुरकुमारा देवा तच्च पुढवि गया य गमिस्सति य ?

गोयमा ! पुव्ववेरियस्स वा वेदणउदीरणयाए, पुव्वसगतियस्स वा वेदणउवसामणयाए—एव खलु असुरकुमारा देवा तच्च पुढवि गया य गमिस्सति य ।।

८५ अत्थि ण भते ! असुरकुमाराण देवाण तिरिय गतिविसए पण्णत्ते ?

हता अत्थि ।।

८६. केवतियण्ण भते ! असुरकुमाराण देवाण तिरिय गतिविसए पण्णत्ते ?

गोयमा ! जाव असखेज्जा दीव-समुद्दा, नदिस्सरवर पुण दीव गया य गमिस्सति य ।।

८७. किपत्तियण्ण भते ! असुरकुमारा देवा नदिस्सरवर दीव गया य गमिस्सति य ?

'ज मे' दोच्चे पुडए पडइ, कप्पइ मे त काग-सुणयाण[1] दलइत्तए। 'ज मे'[2] तच्चे पुडए पडइ, कप्पइ मे त मच्छ-कच्छभाण दलइत्तए। ज मे चउत्थे पुडए पडइ, कप्पइ मे त अप्पणा आहार आहारेत्तए—त्ति कट्टु एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए त चेव निरवसेस जाव ज से चउत्थे पुडए पडइ, त अप्पणा आहार आहारेइ ॥

१०३. तए णं से पूरणे बालतवस्सी तेण ओरालेण विउलेण पयत्तेण पग्गहिएण बालतवोकम्मेण[1] °सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठि—चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसतए जाए यावि होत्था ॥

१०४. तए णं तस्स पूरणस्स बालतवस्सिस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि अणिच्चजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अहं इमेण ओरालेण विपुलेण पयत्तेण पग्गहिएण कल्लाणेण सिवेण धन्नेण मगल्लेण सस्सिरीएण उदग्गेण उदत्तेण उत्तमेण महाणुभागेण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे जाव[1] धमणिसतए जाए, त अत्थि जा मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे तावता मे सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते वेभेलस्स सण्णिवेसस्स दिट्ठाभट्ठे य पासडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसगतिए य परियायसगतिए य आपुच्छित्ता वेभेलस्स सण्णिवेसस्स मज्झमज्झेण निग्गच्छित्ता, पादुग-कुडिय-मादीय उवगरण चउप्पुडय दारुमय च पडिग्गहग एगते एडित्ता, वेभेलस्स सण्णिवेसस्स दाहिणपुरत्थिमे दिसीभागे अद्धनियत्तणिय-मंडल आलिहित्ता सलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते वेभेले सण्णिवेसे दिट्ठाभट्ठे य पासडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसगतिए य परियायसगतिए य आपुच्छइ, आपुच्छित्ता वेभेलस्स सण्णिवेसस्स मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता पादुग-कुडिय-मादीय उवगरण दारुमय च पडिग्गहग एगते एडेइ, एडेत्ता वेभेलस्स सण्णिवेसस्स दाहिणपुरत्थिमे दिसीभागे अद्धनियत्तणिय-मडल आलिहित्ता सलेहणा-झूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमण निवण्णे ॥

ज ण मम इमाए एयारूवाए दिव्वाए देविड्ढीए[1] •दिव्वाए देवज्जुतीए॰ 'दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए'[2] उप्पि अप्पुस्सुए दिव्वाइ भोगभोगाइं भुजमाणे विहरइ—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता सामाणियपरिसोववण्णए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—केस ण एस देवाणुप्पिया ! अपत्थियपत्थए जाव दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ?

११०. तए ण ते सामाणियपरिसोववण्णगा देवा चमरेण असुरिंदेण असुररण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ[1]•चित्तमाणदिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण॰हियया करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु जएण विजएण वद्धावेति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एस ण देवाणुप्पिया ! सक्के देविदे देवराया जाव[2] दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ।।

१११. तए ण से चमरे असुरिदे असुरराया तेसि सामाणियपरिसोववण्णगाण देवाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते[3] रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे ते सामाणियपरिसोववण्णगे देवे एव वयासी—अण्णे खलु भो ! से सक्के देविदे देवराया, अण्णे खलु भो ! से चमरे असुरिदे असुरराया, महिड्ढीए खलु भो ! से सक्के देविदे देवराया, अप्पिड्ढीए खलु भो ! से चमरे असुरिदे असुरराया, त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! सक्क देविद देवराय सयमेव अच्चासाइत्तए[4] त्ति कट्टु उसिणे उसिणब्भूए जाए यावि होत्था ।।

११२. तए ण से चमरे असुरिदे असुरराया ओहि पउजइ[5], पउजित्ता मम ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता[6] इमेयारूवे अज्झत्थिए[7]•चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे॰समुप्पज्जित्था—एव खलु समणे भगव महावीरे जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सुसुमार-पुरे[8] नगरे असोगसडे[9] उज्जाणे असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टयसि अट्ठमभत्त परिगिण्हित्ता एगराइय महापडिम उवसपज्जित्ता ण विहरत्ति, त सेय खलु मे समण भगव महावीर णीसाए सक्क देविद देवराय सयमेव अच्चासा-इत्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता सयणिज्जाओ[10] अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता देवदूस परिहेइ, परिहेत्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव चोप्पाले पहरणकोसे

कत्थइ गज्जते, कत्थइ विज्जुयायते, कत्थइ वासं वासमाणे[1], कत्थइ रयुग्घायं पकरेमाणे, कत्थइ तमुक्काय पकरेमाणे, वाणमतरे देवे वित्तासेमाणे-वित्तासेमाणे[2], जोइसिए देवे दुहा विभयमाणे-विभयमाणे, आयरक्खे देवे विपलायमाणे-विपलायमाणे[3], फलिहरयण अवरतलसि वियट्टमाणे-वियट्टमाणे, विउब्भाएमाणे-विउब्भाएमाणे[4] ताए उक्किट्ठाए[5] •तुरियाए चवलाए चडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए देवगईए° तिरियमसखेज्जाण दीव-समुद्दाण मज्झमज्झेण वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव सोहम्मे कप्पे, जेणेव सोहम्मवडेसए विमाणे, जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छइ, एग पाय पउमवरवेइयाए करेइ, एग पाय सभाए सुहम्माए करेइ, फलिहरयणेण महया-महया सद्देण तिक्खुत्तो इदकील आउडेइ, आउडेत्ता एव वयासी—कहि ण भो[6]! सक्के देविदे देवराया? कहि ण ताओ चउरासीइसामाणियसाहस्सीओ[7]? •कहि ण ते तायत्तीसयतावत्तीसगा? कहि ण ते चत्तारि लोगपाला? कहि ण ताओ अट्ठ अग्गमहिसीओ सपरिवाराओ? कहि ण ताओ तिण्णि परिसाओ? कहि ण ते सत्त अणिया? कहि ण ते सत्त अणियाहिवई?° कहि ण ताओ चत्तारि चउरासीईओ आयरक्खदेवसाहस्सीओ? कहि णं ताओ अणेगाओ अच्छराकोडीओ? अज्ज हणामि, अज्ज महेमि, अज्ज वहेमि, अज्ज मम अवसाओ अच्छराओ वसमुवणमतु त्ति कट्टु त अणिट्ठ अकत अप्पिय असुभ अमणुण्ण अमणाम फरुस गिर निसिरइ।

११३. तए ण से सक्के देविदे देवराया त अणिट्ठ[8] •अकतं अप्पिय असुभ अमणुण्ण° अमणाम अस्सुयपुव्व फरुस गिर सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते[9] •रुट्ठे कुविए चडिक्किए° मिसिमिसेमाणे तिवलिय भिउडि निडाले साहट्टु चमर असुरिद असुरराय एव वयासि—ह भो! चमरा! असुरिदा! असुरराया! अपत्थियपत्थया[10]! •दुरतपतलक्खणा! हिरिसिरिपरिवज्जिया!° हीणपुण्णचाउद्दसा! अज्ज न भवसि, नाहि[11] ते सुहमत्थीति कट्टु तत्थेव सीहासणवरगए वज्ज परामुसइ, परामुसित्ता त जलत फुडत तडतडंत[12] उक्कासहस्साइ विणि-

वज्जे निसट्ठे[1]। तए ण ममं इमेयारूवे अज्झत्थिए[2] •चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे॰समुप्पज्जित्था—नो खलु पभू चमरे असुरिदे असुरराया[3], •नो खलु समत्थे चमरे असुरिदे असुरराया, नो खलु विसए चमरस्स असुरिदस्स असुररण्णो अप्पणो निस्साए उड्ढ उप्पइत्ता जाव सोहम्मो कप्पो, नण्णत्थ अरहते वा, अरहतचेइयाणि वा, अणगारे वा भाविअप्पाणो नीसाए उड्ढ उप्पयइ जाव सोहम्मो कप्पो, त महादुक्ख खलु तहारूवाण अरहताण भगवताण अणगाराण य अच्चासायणाए त्ति कट्टु॰ ओहि पउजामि, देवाणुप्पिए ओहिणा आभोएमि, आभोएत्ता हा ! हा ! अहो ! हतो अहमसि त्ति कट्टु ताए उक्किट्ठाए जाव[4] जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि, देवाणुप्पियाण चउरगुलमसपत्त वज्ज पडिसाहरामि, वज्जपडिसाहरणट्ठयाए ण इहमागए इह समोसढे इह सपत्ते इहेव अज्ज उवसपज्जित्ता ण विहरामि। त खामेमि ण देवाणुप्पिया ! खमतु ण देवाणुप्पिया ! खतुमरिहति[5] ण देवाणुप्पिया ! नाइ[6] भुज्जो एवं करणयाए[7] त्ति कट्टु मम वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ, वामेण पादेण तिक्खुत्तो भूमि विदलेइ[8], विदलेत्ता चमर असुरिद असुरराय एव वदासि—मुक्को सि ण भो चमरा ! असुरिदा ! असुरराया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स पभावेण—नाहि ते[9] दाणि[10] ममातो[11] भयमत्थि त्ति कट्टु जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि[12] पडिगए ॥

११७. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वदासी—देवे ण भते ! महिड्ढीए जाव[13] महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गल खिवित्ता पभू तमेव अणुपरियट्टित्ता ण गेण्हित्तए ?

हता पभू ॥

११८. से केणट्ठेण[14] •भते ! एव वुच्चइ—देवे ण महिड्ढीए जाव[15] महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गल खिवित्ता पभू तमेव अणुपरियट्टित्ता ण॰ गेण्हित्तए ?

गोयमा ! पोग्गले ण खित्ते[16] समाणे पुव्वामेव सिग्घगई[17] भवित्ता ततो पच्छा

१२३. सक्कस्स ण भते ! देविदस्स देवरण्णो ओवयणकालस्स य, उप्पयणकालस्स य कयरे कयरेहितो अप्पे वा ? वहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो उप्पयणकाले, ओवयणकाले सखेज्जगुणे ॥

१२४. चमरस्स वि जहा सक्कस्स, नवर—सव्वत्थोवे ओवयणकाले, उप्पयणकाले सखेज्जगुणे ॥

१२५ वज्जस्स पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वत्थोवे उप्पयणकाले, ओवयणकाले विसेसाहिए ॥

१२६. एयस्स ण भते ! वज्जस्स, वज्जाहिवइस्स, चमरस्स य असुरिदस्स असुररण्णो ओवयणकालस्स य, उप्पयणकालस्स य कयरे कयरेहितो अप्पे वा ? वहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?
गोयमा ! सक्कस्स य उप्पयणकाले, चमरस्स य ओवयणकाले—एए ण दोण्णि' वि तुल्ला सव्वत्थोवा । सक्कस्स य ओवयणकाले, वज्जस्स य उप्पयणकाले—एस ण दोण्ह वि तुल्ले सखेज्जगुणे । चमरस्स य उप्पयणकाले, वज्जस्स य ओवयणकाले—एस ण दोण्ह वि तुल्ले विसेसाहिए ॥

१२७ तए ण से चमरे असुरिदे असुरराया वज्जभयविप्पमुक्के, सक्केण देविदेण देवरण्णा महया अवमाणेण अवमाणिए समाणे चमरचचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरसि सीहासणसि ओहयमणसकप्पे चितासोयसागरसपविट्ठे करयलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठीए झियाति ॥

१२८. तए ण चमर असुरिद असुरराय सामाणियपरिसोववण्णया देवा ओहयमणसकप्प जाव' झियायमाण पासति, पासित्ता करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु जएण विजएण वद्धावेति, वद्धावेत्ता एव वयासी—कि ण देवाणुप्पिया ! ओहयमणसकप्पा चिंतासोयसागरसपविट्ठा करयलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया झियायह ?

१२९. तए ण से चमरे असुरिदे असुरराया ते सामाणियपरिसोववण्णए देवे एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! मए समण भगव महावीर नीसाए सक्के देविदे देवराया सयमेव अच्चासाइए । तए ण तेण परिकुविएण समाणेण मम वहाए वज्जे निसट्ठे' । त भद्दण्ण' भवतु देवाणुप्पिया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स जस्सम्हि पभावेण अकिट्ठे अव्वहिए अपरिताविए इहमागए इह समोसढे

दिव्व देविड्ढि जाव अभिसमण्णागयं। त जाणामो ताव सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो दिव्व देविड्ढि जाव अभिसमण्णागय, जाणउ ताव अम्ह वि सक्के देविदे देवराया दिव्व देविड्ढि जाव अभिसमण्णागय।

एव खलु गोयमा! असुरकुमारा देवा उड्ढ उप्पयति जाव सोहम्मो कप्पो ॥

१३२. सेव भते! सेव भते! त्ति' ॥

तइओ उद्देसो

किरिया-पद

१३३ तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नयरे होत्था जाव' परिसा पडिगया ॥

१३४ तेण कालेण तेण समएण' •समणस्स भगवओ महावीरस्स° अतेवासी मडिअपुत्ते नाम अणगारे पगइभद्दए जाव' पज्जुवासमाणे एव वयासी—कइ ण भते! किरियाओ पण्णत्ताओ?

मडिअपुत्ता! पच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—काइया, अहिगरणिआ, पाओसिआ', पारियावणिआ, पाणाइवायकिरिया ॥

१३५ काइया ण भते! किरिया कइविहा पण्णत्ता?

मडिअपुत्ता! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—अणुवरयकायकिरिया य, दुप्पउत्तकाय-किरिया' य ॥

१३६ अहिगरणिआ ण भते! किरिया कइविहा पण्णत्ता?

मडिअपुत्ता! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सजोयणाहिगरणकिरिया' य, निवत्त-णाहिगरणकिरिया' य ॥

१३७ पाओसिआ' ण भते! किरिया कइविहा पण्णत्ता?

मडिअपुत्ता! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—जीवपाओसिआ य, अजीवपाओ-सिआ य ॥

घट्टइ खुब्भइ उदीरइ त तं भाव° परिणमइ, ताव च ण से जीवे—'आरभइ सारभइ समारभइ'¹, आरभे वट्टइ सारभे वट्टइ समारभे वट्टइ, 'आरभमाणे सारभमाणे समारभमाणे'², आरभे वट्टमाणे सारभे वट्टमाणे समारभे वट्टमाणे वहूण पाणाण भूयाण जीवाण सत्ताण दुक्खावणयाए³ सोयावणयाए जूरावणयाए तिप्पावणयाए पिट्टावणयाए परियावणयाए वट्टइ ॥

से तेणट्ठेण मडिअपुत्ता ! एव वुच्चइ—जाव च ण से जीवे सया समित एयति¹ •वेयति चलति फदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ त त भाव° परिणमइ, ताव च ण तस्स जीवस्स अते अतकिरिया न भवति ॥

१४६. जीवे ण भते ! सया समित नो एयति¹ •नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ° नो त त भाव परिणमइ ?

हता मडिअपुत्ता ! जीवे ण सया समित¹ •नो एयति नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ° नो त त भाव परिणमइ ॥

१४७. जाव च ण भते ! से जीवे नो एयति¹ •नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ° नो त त भाव परिणमइ, ताव च ण तस्स जीवस्स अते अतकिरिया भवइ ?

हता¹ •मडिअपुत्ता ! जावं च ण से जीवे नो एयति नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ नो त त भाव परिणमइ, ताव च ण तस्स जीवस्स अते अतकिरिया° भवइ ॥

१४८. से केणट्ठेण¹ •भते ! एव वुच्चइ—जाव च ण से जीवे नो एयति नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ नो त त भाव परिणमइ, ताव च ण तस्स जीवस्स अते अतकिरिया° भवइ ?

मडिअपुत्ता ! जाव च ण से जीवे सया समित नो एयति¹ •नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ° नो त त भाव परिणमइ, ताव च ण से जीवे नो आरभइ नो सारभइ नो समारभइ, नो आरभे वट्टइ नो सारभे वट्टइ नो समारभे वट्टइ, अणारभमाणे असारभमाणे असमारभमाणे, आरभे अवट्टमाणे सारभे अवट्टमाणे समारभे अवट्टमाणे वहूण पाणाण भूयाण

१५९ मूल पासइ ? खंध पासइ ? चउभगो ॥

१६०. एव मूलेण[1] [जाव ?] वीज सजोएयव्व ॥

१६१. एव कदेण वि सम सजोएयव्व जाव वीय ॥

१६२. एव जाव पुप्फेण सम वीयं सजोएयव्व ॥

१६३ अणगारे ण भते ! भाविअप्पा रुक्खस्स किं फल पासइ ? वीय पासइ ? चउभगो[2] ॥

वाउकाय-पदं

१६४ पभू ण भंते ! वाउकाए एगं मह इत्थिरूव वा पुरिसरूवं वा [आसरूव वा[3] ?] हत्थिरूव वा जाणरूवं वा जुग्गरूवं वा गिल्लिरूव वा थिल्लिरूव[4] वा सीयरूव वा सदमाणियरूव वा विउव्वित्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । वाउकाए[5] ण विकुव्वमाणे एगं मह पडागासठिय रूव विकुव्वइ ॥

१६५ पभू ण भते ! वाउकाए एग महं पडागासठिय रूव विउव्वित्ता अणेगाइ जोयणाइ गमित्तए ?
हता पभू ॥

---

१. एवमिति मूलकंदसूत्राभिलापेन मूलेन सह कंदादिपदानि वाच्यानि यावद्बीजपदम् । तत्र मूलम्, कंद, स्कन्ध, त्वक्, शाखा, प्रवालम्, पत्रम्, पुष्पम्, फलम्, बीजम् चेति दश पदानि, एषां च पञ्चचत्वारिंशद् द्विकसंयोगा भङ्गा—

१. मूल कंद २. मूल स्कंध
३. मूल त्वक् ४. मूल शाखा
५. मूल प्रवाल ६. मूल पत्र
७. मूल पुष्प ८. मूल फल
९. मूल बीज १०. कंद स्कंध
११. कंद त्वक् १२. कंद शाखा
१३. कंद प्रवाल १४. कंद पत्र
१५. कंद पुष्प १६. कंद फल
१७. कंद बीज १८. स्कंध त्वक्
१९. स्कंध शाखा २०. स्कंध प्रवाल
२१. [illegible] २२. स्कंध पुष्प
२३. [illegible] २४. स्कंध बीज
२५. त्वक् शाखा २६. त्वक् प्रवाल
२७ त्वक् पत्र २८ त्वक् पुष्प
२९ त्वक् फल ३०. त्वक् बीज
३१. शाखा प्रवाल ३२. शाखा पत्र
३३. शाखा पुष्प ३४. शाखा फल
३५. शाखा बीज ३६. प्रवाल पत्र
३७. प्रवाल पुष्प ३८. प्रवाल फल
३९. प्रवाल बीज ४०. पत्र पुष्प
४१. पत्र फल ४२. पत्र बीज
४३ पुष्प फल ४४. पुष्प बीज
४५ फल बीज (वृ) ।

२ चउभगो एव (ता) ।

३. १७६ सूत्रे 'आसरूव' इति पाठो विद्यते वृत्तावपि तस्योल्लेखोऽस्ति, तेनात्रापि गृहीतः ।

४ [illegible]° (क) ।

५. वाउयाए (क, ता) ।

१७८. से भंते ! किं वलाहए ? इत्थी ?
गोयमा ! वलाहए णं से, नो खलु सा इत्थी ॥

१७९. एवं[1] पुरिसे, आसे, हत्थी ॥

१८०. पभू णं भंते ! वलाहए एगं महं जाणरूवं परिणामेत्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ?
जहा[2] इत्थिरूवं तहा भाणियव्वं ॥

१८१. [3]•से भंते ! किं एगओचक्कवालं गच्छइ ? दुहओचक्कवालं गच्छइ ?
गोयमा ! एगओचक्कवालं पि गच्छइ, दुहओचक्कवालं पि गच्छइ॰ ॥

१८२. जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीया-संदमाणिया[4] तहेव[5] ॥

किलेसोववाय-पदं

१८३. जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए,[6] से णं भंते ! किलेस्सेसु उववज्जइ ?
गोयमा ! जल्लेस्साइं[7] दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ, तल्लेस्सेसु उववज्जइ, तं जहा—कण्हलेस्सेसु वा, नीललेस्सेसु वा, काउलेस्सेसु वा। एवं जस्स जा लेस्सा सा तस्स भाणियव्वा। जाव[8]—

१८४. जीवे णं भंते ! जे भविए जोइसिएसु उववज्जित्तए[9]•, से णं भंते ! किलेस्सेसु उववज्जइ॰ ?
गोयमा ! जल्लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेस्सेसु उववज्जइ, तं जहा—तेउलेस्सेसु ॥

१८५. जीवे णं भंते ! जे भविए वेमाणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! किलेस्सेसु उववज्जइ ?
गोयमा ! जल्लेस्साइं दव्वाइं परियाइत्ता[10] कालं करेइ तल्लेस्सेसु उववज्जइ, तं जहा—तेउलेस्सेसु वा, पम्हलेस्सेसु वा, सुक्कलेसे वा ॥

---

१. भ० ३।१७३-१७८।
२. भ० ३।१७३-१७८।
३. सं० पा०—नवरं एगओ चक्कवालं पि दुह-ओचक्कवालं [illegible] भाणियव्वं।
४. [illegible] य (अ, क, म)।
५. भ० ३।१७४-१७८।
६. [illegible] (क)।
७. [illegible] (अ, म)।
८. जाव जीवे णं भंते जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जइ से भंते किलेसेसु असुरकुमारेसु उववज्जइ ? जल्लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसेसु असुरकुमारेसु उववज्जइ। तं कण्हनीलकाउतेउलेसेसु वा एवं जहा नेरइयाणं नवरं अब्भहियं तेउलेसेसु वा एवं जस्स जा सा भाणियव्वा जाव (ता), वृ० प० २।
९. सं० पा०—पुच्छा।
१०. परियाइत्ता (अ, व, म)।

१९२. माई ण तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते[1] काल करेइ, नत्थि तस्स आराहणा। अमाई ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते काल करेइ, अत्थि तस्स आराहण ॥

१९३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[2] ॥

पंचमो उद्देसो

१९४. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा वाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एग महं इत्थीरूव वा जाव[1] सदमाणियरूव वा विउव्वित्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१९५. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा वाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एग महं इत्थीरूव वा जाव[2] सदमाणियरूव वा विउव्वित्तए ?
हता पभू ॥

१९६. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा केवइआइ पभू इत्थिरूवाइ विउव्वित्तए ?
गोयमा ! से जहानामए—जुवइ जुवाणे हत्थेण हत्थसि गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा वेउव्वियससमुग्घाएण समोहण्णइ जाव[3] पभू ण गोयमा ! अणगारे ण भाविअप्पा केवलकप्पं जबुद्दीव दीव बहूहि इत्थिरूवेहि आइण्ण वितिकिण्ण[4] •उवत्थड सथडं फुड अवगाढावगाढ करेत्तए°। एस ण गोयमा ! अणगारस्स भाविअप्पणो अयमेयारूवे विसए, विसयमेत्ते वुइए, णो चेव ण सपत्तीए विउव्विसु वा, विउव्वति वा, विउव्विस्सति वा। एव परिवाडीए नेयव्वं जाव[5] सदमाणिया ॥

१९७. से जहानामए केइ पुरिसे असिचम्मपाय[6] गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा असिचम्मपायहत्थकिच्चगएण अप्पाणेणं उड्ढ वेहास उप्पएज्जा ?
हंता उप्पएज्जा ॥

१९८. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा केवइयाइं पभू अणिच्चल (पाय ?) हत्थकिच्च-गयाइं रूवाइं विउव्वित्तए ?
गोयमा ! से जहानामए—जुवइं जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, एवं चेव जाव विउव्विंसु वा, विउव्वंति वा, विउव्विस्संति वा ॥

१९९. से जहानामए केइ पुरिसे एगओपडागं काउं गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा एगओपडागाहत्थकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ?
हंता उप्पएज्जा ॥

२००. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा केवइयाइं पभू एगओपडागाहत्थकिच्चगयाइं रूवाइं विकुव्वित्तए ?
एवं चेव जाव विकुव्विंसु वा, विकुव्वंति वा, विकुव्विस्संति वा ॥

२०१. एवं दुहओपडागं वि ।

२०२. से जहानामए केइ पुरिसे एगओजण्णोवइयं काउं गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा एगओजण्णोवइयकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ?
हंता उप्पएज्जा ॥

२०३. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा केवइयाइं पभू एगओजण्णोवइयकिच्चगयाइं रूवाइं विकुव्वित्तए ?
एवं चेव जाव विकुव्विंसु वा, विकुव्वंति वा, विकुव्विस्संति वा ।

२०४. एवं दुहओजण्णोवइयं वि ॥

२०५. से जहानामए केइ पुरिसे एगओपल्हत्थियं काउं चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा एगओपल्हत्थियकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ?
एवं चेव जाव विकुव्विंसु वा, विकुव्वंति वा, विकुव्विस्संति वा ॥

२०६. एवं दुहओपल्हत्थियं वि ॥

२०७. से जहानामए केइ पुरिसे एगओपलियंकं काउं चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा एगओपलियंककिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ?
एवं चेव जाव विकुव्विंसु वा, विकुव्वंति वा, विकुव्विस्संति वा ॥

२०८. एवं दुहओपलियंकं वि ॥

भाविअप्प-अभिजुजणा-पदं

२०९. अणगारे णं भते ! भाविअप्पा वाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एग मह आसरूव वा हत्थिरूव वा सीहरूव वा विग्घरूव वा विगरूव[1] वा दीवियरूवं वा अच्छरूव वा तरच्छरूव वा परासररूव[2] वा अभिजुजित्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

२१०. अणगारे ण[3] •भते ! भाविअप्पा वाहिरिए पोग्गले परियाइत्ता पभू एग मह आसरूव वा हत्थिरूव वा सीहरूव वा वग्घरूव वा विगरूव वा दीवियरूवं वा अच्छरूव वा तरच्छरूव वा परासररूव वा अभिजुजित्तए ?
हता पभू° ॥

२११. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा (पभू ?) एग मह आसरूव वा अभिजुजित्ता अणेगाइ जोयणाइ गमित्तए ?
हता पभू ॥

२१२. से भते ! कि आइड्ढीए गच्छइ ? परिड्ढीए गच्छइ ?
गोयमा ! आइड्ढीए गच्छइ, नो परिड्ढीए गच्छइ ॥

२१३. [4]•से भते ! कि आयकम्मुणा गच्छइ ? परकम्मुणा गच्छइ ?
गोयमा ! आयकम्मुणा गच्छइ, नो परकम्मुणा गच्छइ ॥

२१४. से भते ! कि आयप्पयोगेण गच्छइ ? परप्पयोगेणं गच्छइ !
गोयमा ! आयप्पयोगेण गच्छइ, नो परप्पयोगेण गच्छइ ॥

२१५. से भते ! कि ऊसिओदय गच्छइ ? पतोदय गच्छइ ?
गोयमा ! ऊसिओदय पि गच्छइ, पतोदय पि गच्छइ° ॥

२१६. से ण भते ! किं अणगारे ? आसे ?
गोयमा ! अणगारे ण से, नो खलु से आसे ॥

२१७. एव जाव[5] परासररूव वा ॥

२१८. से भते ! कि 'मायी विकुव्वइ'[6]? अमायी विकुव्वइ ?
गोयमा ! मायी विकुव्वइ, नो अमायी विकुव्वइ ॥

---

१. वग्घ° (क, ता, ब, म)।
२. इतः अनन्तरं शृगालादिपदानि वाचनान्तरे दृश्यन्ते (वृ)।
३. सं० पा०—एवं बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू।
४. सं० पा०—एवं आयकम्मुणा नो परकम्मुणा आयप्पयोगेण नो परप्पयोगेण उस्सिओदय वा गच्छइ पयोदय वा गच्छइ।
५. भ० ३।२०९, २११-२१६।
६. मायी अभिजुंजइ" अधिकृतवाचनायां 'मायी विकुव्वइ' त्ति दृश्यते (वृ)।

२२५. अणगारे ण भते ! भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी[1] •वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभगनाणलद्धीए° रायगिहे नगरे समोहए, समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइ जाणइ-पासइ ?
हता जाणइ-पासइ ॥

२२६. [2]•से भते ! कि तहाभाव जाणइ-पासइ ? अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो तहाभाव जाणइ-पासइ, अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ॥

२२७. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नो तहाभाव जाणइ-पासइ ? अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ?
गोयमा !° तस्स ण एव भवइ—एव खलु अह वाणारसीए नयरीए समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रूवाइ जाणामि-पासामि । सेस दसण-विवच्चासे भवति । से तेणट्ठेण[3] •गोयमा ! एव वुच्चइ—नो तहाभाव जाणइ-पासइ°, अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ॥

२२८. अणगारे ण भते ! भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभगनाणलद्धीए वाणारसि नगरि, रायगिह च नगर, अंतरा[4] एग मह जणवयग्ग[5] समोहए, समोहणित्ता वाणारसि नगरि रायगिह च नगर अतरा[6] एग मह जणवयग्ग जाणति-पासति ?
हता जाणति-पासति ।

२२९. से भते ! कि तहाभाव जाणइ-पासइ ? अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो तहाभाव जाणइ-पासइ, अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ॥

२३०. से केणट्ठेण[7] •भते ! एव वुच्चइ—नो तहाभाव जाणइ-पासइ ? अण्णहाभाव जाणइ°-पासइ ?
गोयमा ! तस्स खलु एव भवति—एस खलु वाणारसी नगरी, एस खलु रायगिहे नगरे, एस खलु अतरा एगे मह जणवयग्गे, नो खलु एस मह वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी विभगनाणलद्धी इड्ढि जुती जसे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए 'सेस दसण-विवच्चासे'[8] भवति । से तेणट्ठेण[9] •गोयमा ! एव वुच्चइ—नो तहाभाव जाणइ-पासइ, अण्णहाभाव जाणइ°-पासइ ॥

---

१. सं० पा०—मिच्छदिट्ठी जाव रायगिहे ।
२. सं० पा०—[illegible] जाव [illegible] ।
३. सं० पा०—तेणट्ठेण जाव अण्णहाभाव ।
४. अतरा य (क, ता, ब) ।
५. [illegible] (क, म, व, [illegible]), [illegible] [illegible] [illegible] सम्मुखवर्तिषु आदर्शेषु 'जणवयवग्ग' इति पाठ आसीत् तेन तथा व्याख्यातोसौ लभ्यते ।
६. सं० च अतरा (क, ता, ब, म) ।
७. सं० पा०—केणट्ठेण जाव पासइ ।
८. से से दसणे विवच्चासे (अ, क, ब, म) ।
९. सं० पा०—तेणट्ठेण जाव पासइ ।

२३१. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा अमायी सम्मदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए रायगिहं नगरं समोहए, समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ॥

२३२. से भंते ! किं तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥

२३३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं रायगिहे नयरे समोहए, समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणामि-पासामि । सेस दंसण-अविवच्चासे भवति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥

२३४. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा अमायी सम्मदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रूवाइं जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ॥

२३५. से भंते ! किं तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥

२३६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ ? नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं वाणारसिं नगरिं समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रूवाइं जाणामि-पासामि । सेस दंसण-अविवच्चासे भवति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ[१] ॥

२३७. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा अमायी सम्मदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए रायगिहं नगरं, वाणारसिं च नगरिं, अंतरा य एगं महं जणवयवग्गं समोहए, समोहणित्ता रायगिहं नगरं, वाणारसिं च नगरिं, तं च अंतरा एगं महं जणवयवग्गं जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ॥

२३८. से भंते ! किं तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥

२३९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ ? नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तस्स णं एवं भवति—नो खलु एस रायगिहे नगरे, नो खलु एस वाणारसी नगरी, नो खलु एस अंतरा एगे जणवयग्गे, एस खलु मम वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी ओहिनाणलद्धी इड्ढी जुती जसे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए। सेसं दंसण-अविवच्चासे भवइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥

२४०. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं गामरूवं वा नगररूवं वा जाव[1] सण्णिवेसरूवं वा विउव्वित्तए ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ॥

२४१. [2]°अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगं महं गामरूवं वा नगररूवं वा जाव सण्णिवेसरूवं वा विउव्वित्तए ?
हंता पभू° ॥

२४२. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा केवइयाइं पभू गामरूवाइं विकुव्वित्तए ?
गोयमा ! से जहानामए—जुवतिं जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा तं चेव जाव[3] विकुव्विंसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा ॥

२४३. एवं जाव[4] सण्णिवेसरूवं वा ॥

आयरक्ख-पदं

२४४. चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो कइ आयरक्खदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि चउसट्ठीओ आयरक्खदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। ते णं आयरक्खा—वण्णओ[5] ॥

२४५. एवं सव्वेसिं इंदाणं जस्स जत्तिया आयरक्खा ते भाणियव्वा[6] ॥

२४६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[7] ॥

---

१. भ० ३।४२।
२. भ० ३।४० — [illegible] परियाइत्ता पभू।
३. भ० ३।१८६।
४. भ० ३।४२।
५. राय० सू० ६६४; वण्णओ जहा रायपसेणइज्जे (क, म); अयं च पुस्तकान्तरे साक्षाद् दृश्यत एव (वृ)।
६. प० २।
७. भ० १।५१।

सोमा नामं रायहाणी पण्णत्ता—एग जोयणसयसहस्स आयाम-विक्खभेण जबु-द्दीवप्पमाणा। वेमाणियाण पमाणस्स अद्ध नेयव्व[1] जाव[2] ओवारियलेणं[3] सोलस जोयणसहस्साइ आयाम-विक्खभेण, पण्णासं जोयणसहस्साइ पच य सत्ताणउए जोयणसते किचि विसेसूणे परिक्खेवेण पण्णत्त। पासायाणं चत्तारि परिवाडीओ नेयव्वाओ, सेसा नत्थि॥

२५२. सक्कस्स णं देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे देवा आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठति, तं जहा—सोमकाइया इ वा, सोमदेवयकाइया इ वा, विज्जुकुमारा, विज्जुकुमारीओ, अग्गिकुमारा, अग्गिकुमारीओ, वायकुमारा[4], वायकुमारीओ[5], चदा, सूरा, गहा णक्खत्ता, तारारूवा—जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया, तप्पक्खिया, तब्भारिया सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठति॥

२५३ जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण जाइ इमाइ समुप्पज्जति, त जहा—गहदडा इ वा, गहमुसला इ वा, गहगज्जिया इ वा, गहजुद्धा[6] इ वा, गहसिघाडगा इ वा, गहावसव्वा इ वा, 'अब्भा इ वा'[7] अब्भरुक्खा इ वा, सझा इ वा, गधव्वनगरा इ वा, उक्कापाया इ वा, दिसिदाहा इ वा, गज्जिया इ वा, विज्जुया इ वा, पसुवुट्ठी इ वा जूवे इ वा, जक्खालित्तए त्ति वा, धूमिया इ वा, महिया इ वा, रयुग्घाए त्ति वा, चदोवरागा इ वा सूरोवरागा इ वा, चदपरि-वेसा[8] इ वा, सूरपरिवेसा[9] इ वा, पडिचदा इ वा, पडिसूरा इ वा, इदधणू इ वा, उदगमच्छा[10] इ वा, कपिहसिया इ वा, अमोहा इ वा, पाईणवाया इ वा, पईणवाया इ वा[11], °दाहिणवाया इ वा, उदीणवाया इ वा, उड्ढावाया इ वा, अहोवाया इ वा, तिरियवाया इ वा, विदिसीवाया इ वा, वाउब्भामा इ वा, वाउक्कलिया इ वा, वायमडलिया इ वा, उक्कलियावाया इ वा, मडलियावाया इ वा, गुजावाया इ वा, झझावाया इ वा°, सवट्टयवाया इ वा, गामदाहा इ वा, जाव[12] सण्णिवेसदाहा इ वा, पाणक्खया, जणक्खया, धणक्खया, कुल-क्खया, वसणब्भूया मणारिया[13]—जे यावण्णे तहप्पगारा ण ते सक्कस्स देविं-

---

१. राय० सू० २०६-२०८।
२ भ० २।१२१।
३. [illegible] (अ, म)।
४ [illegible] (क), [illegible] (ग)।
५ [illegible] (क) [illegible] (ग)।
६ [illegible] (क, ख, ग [illegible] म, स)।
७ [illegible]।
८. °परिएसा (व, म)।
९. °परिएसा (व, म)।
१० उदगमच्छगे (व, म)।
११ स० पा०—पईणवाया इ वा जाव सवट्टयवाया।
१२. भ० ३।८६।
१३. मकारोऽलाक्षणिक.।

दस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो अण्णाया अदिट्ठा असुया अमुया अविण्णाया, तेसिं वा सोमकाइयाणं देवाणं ॥

२५४. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे देवा अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, तं जहा—इंगालए वियालए लोहियक्खे सणिच्चरे चंदे सूरे सुक्के बुहे बहस्सई राहू ॥

२५५. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सतिभागं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता। अहावच्चाभिण्णायाणं देवाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता। एमहिड्ढीए जाव महाणुभागे सोमे महाराया ॥

जम-पदं

२५६. कहि णं भंते! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो वरसिट्ठे नामं महाविमाणे पण्णत्ते?
गोयमा! सोहम्मवडेंसयस्स महाविमाणस्स दाहिणे णं सोहम्मे कप्पे असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं वीईवइत्ता, एत्थ णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो वरसिट्ठे नामं महाविमाणे पण्णत्ते—अद्धतेरसजोयणसयसहस्साइं जहा सोमस्स विमाणं तहा जाव अभिसेओ। रायहाणी तहेव जाव पासायपंतीओ।

२५७. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो इमे देवा आणा-•उववाय-वयण-निद्देसे• चिट्ठंति, तं जहा—जमकाइया इ वा, जमदेवकाइया इ वा, पेयकाइया इ वा, पेयदेवकाइया इ वा, असुरकुमारा, असुरकुमारीओ, कंदप्पा, निरयवाला, अभिओगा—जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया, तप्पक्खिया तब्भारिया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो आणा-•उववाय-वयण-निद्देसे• चिट्ठंति ॥

२५८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तं जहा—डिंबा इ वा, डमरा इ वा, कलहा इ वा, बोला इ वा, खारा इ वा, महाजुद्धा इ वा, महासंगामा इ वा, महासत्थनिवडणा इ वा, महापुरिसनिवडणा[1] इ वा, महारुहिरनिवडणा इ वा, दुब्भूया इ वा, कुलरोगा इ वा, गामरोगा इ वा, मंडलरोगा इ वा, नगररोगा इ वा, सीसवेयणा इ वा, अच्छिवेयणा इ वा कण्णवेयणा इ वा, नहवेयणा इ वा, दंतवेयणा इ वा, इंदग्गहा इ वा, खंदग्गहा इ वा, कुमारग्गहा इ वा, जक्खग्गहा इ वा, भूयग्गहा[2] इ वा, एगाहिया इ वा, बेहिया इ वा, तेहिया इ वा, चाउत्थया[3] इ वा, उव्वेयगा इ वा, कासा इ वा, 'सासा इ वा, सोसा'[4] इ वा, जरा इ वा, दाहा इ वा, कच्छकोहा इ वा, अजीरगा इ वा, पंडुरोगा इ वा, अरिसा[5] इ वा, भगंदला[6] इ वा, हिययसूला इ वा, मत्थयसूला इ वा, जोणिसूला इ वा, पाससूला इ वा, कुच्छिसूला इ वा, गाममारी इ वा, नगरमारी इ वा, खेडमारी इ वा, कब्बडमारी इ वा, दोणमुहमारी इ वा, मडंबमारी इ वा, पट्टणमारी इ वा, आसममारी इ वा, संवाहमारी इ वा, सण्णिवेसमारी इ वा, पाणक्खया, जणक्खया, धणक्खया, कुलक्खया, 'वसणब्भूया मणारिया'[7] जे यावण्णे[8] तहप्पगारा ण ते सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो अण्णाया अदिट्ठा असुया अमुया अविण्णाया, तेसिं वा जमकाइयाणं देवाणं ॥

२५९. सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो इमे देवा अहावच्चा अभिण्णाया[9] होत्था, तं जहा—

संगहणी गाहा

अंबे अंबरिसे चेव, सामे सबले त्ति यावरे ।
रुद्दोवरुद्दे काले य, महाकाले त्ति यावरे ॥१॥
'असिपत्ते धणू कुंभे'[10], वालुए[11] वेतरणी[12] त्ति य ।
खरस्सरे[13] महाघोसे, एते[14] पण्णरसाहिया ॥२॥

२६५. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो देसूणाइं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। अहावच्चाभिण्णायाणं देवाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता। एमहिड्ढीए जाव[1] महाणुभागे वरुणे महाराया॥

वेसमण-पदं

२६६. कहि णं भंते! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो वग्गू नामं महाविमाणे पण्णत्ते?
गोयमा! तस्स णं सोहम्मवडेंसयस्स महाविमाणस्स उत्तरे णं जहा सोमस्स विमाण-रायहाणि-वत्तव्वया तहा नेयव्वा जाव[2] पासायवडेंसया॥

२६७. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो इमे देवा आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठंति, तं जहा—वेसमणकाइया इ वा, वेसमणदेवयकाइया इ वा, सुवण्णकुमारा, सुवण्णकुमारीओ, 'दीवकुमारा, दीवकुमारीओ,'[3] दिसाकुमारा, दिसाकुमारीओ, वाणमंतरा, वाणमंतरीओ—जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया[4] °तप्पक्खिया तब्भारिया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो आणा-उववाय-वयण-निद्देसे° चिट्ठंति॥

२६८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तं जहा—अयागरा इ वा, तउयागरा इ वा, तंबागरा इ वा, 'सीसागरा इ वा, हिरण्णागरा इ वा'[5] सुवण्णागरा इ वा, रयणागरा इ वा, वइरागरा इ वा, वसुहारा इ वा, हिरण्णवासा इ वा, सुवण्णवासा इ वा, रयणवासा इ वा, वइरवासा इ वा, आभरणवासा इ वा, पत्तवासा इ वा, पुप्फवासा इ वा, फलवासा इ वा, बीयवासा इ वा, मल्लवासा इ वा, वण्णवासा इ वा, चुण्णवासा इ वा, गंधवासा इ वा, वत्थवासा इ वा, हिरण्णवुट्ठी इ वा, सुवण्णवुट्ठी इ वा, रयणवुट्ठी इ वा, वइरवुट्ठी इ वा, आभरणवुट्ठी इ वा, पत्तवुट्ठी इ वा, पुप्फवुट्ठी इ वा, फलवुट्ठी इ वा, बीयवुट्ठी इ वा, मल्लवुट्ठी इ वा, वण्णवुट्ठी इ वा, चुण्णवुट्ठी इ वा, गंधवुट्ठी इ वा, वत्थवुट्ठी इ वा, भायणवुट्ठी इ वा, खीरवुट्ठी इ वा, सुकाला[6] इ वा, दुक्काला इ वा, अप्पग्घा इ वा, महग्घा इ वा, सुभिक्खा इ वा, दुब्भिक्खा इ वा, कयविक्कया इ वा, सण्णिही इ वा, सण्णिचया इ वा, निही इ वा, निहाणाइं वा—चिरपोराणाइं वा, पहीणसामियाइं वा, पहीणसेतुयाइं वा, पहीणमग्गाइं[7] वा, पहीणगोत्तागाराइं वा, उच्छण्णसामियाइं वा, उच्छण्णसेतुयाइं वा, (उच्छण्णमग्गा इ वा?) उच्छण्णगोत्तागारा इ वा, सिंघाडग-तिग-चउक्क-

---

१. [illegible]
२. [illegible]
३. [illegible]
४. [illegible]
५. एवं सिसाग हिरण्ण° (ता)।
६. सुयाला (ता)।
७. × (क, ता, ब, म)।

२७३. नागकुमाराण भते ![1] •देवाण कइ देवा आहेवच्च जाव[2] विहरति ?°
गोयमा ! दस देवा आहेवच्च जाव विहरति, त जहा—धरणे ण नागकुमारिंदे नागकुमारराया, कालवाले, कोलवाले, सेलवाले, सखवाले, भूयाणदे नागकुमारिंदे नागकुमारराया, कालवाले, कोलवाले, 'सखवाले, सेलवाले'[3] ।।

२७४. जहा नागकुमारिंदाण एताए वत्तव्वयाए नीय एव इमाण नेयव्वं—
सुवण्णकुमाराण—वेणुदेवे, वेणुदाली, चित्ते, विचित्ते, चित्तपक्खे, विचित्तपक्खे ।
विज्जुकुमाराण—हरिकत-हरिस्सह-पभ-सुप्पभ-पभकंत-सुप्पभकता ।
अग्गिकुमाराण—अग्गिसिह-अग्गिमाणव-तेउ-तेउसिह[4]-तेउकत-तेउप्पभा ।
दीवकुमाराण—पुण्ण-विसिट्ठ[5]-रूय-रूयस-रूयकत-रूयप्पभा ।
उदहीकुमाराण—जलकत-जलप्पभ-जल-जलरुय[6]-जलकत-जलप्पभा ।
दिसाकुमाराण—अमितगति, अमितवाहण-तुरियगति-खिप्पगति-सीहगति-सीहविक्कमगती ।
वाउकुमाराण—वेलव-पभजण-काल-महाकाल-अजण-रिट्ठा ।
थणियकुमाराण—घोस-महाघोस-आवत्त-वियावत्त-नदियावत्त-महानदियत्ता ।
एव भाणियव्व जहा[7] असुरकुमारा[8] ।।

२७५. पिसायकुमाराण[9] •भते ! देवाण कइ देवा आहेवच्च जाव[10] विहरति ?°
गोयमा ! दो देवा आहेवच्च जाव विहरति, त जहा—

संगहणी-गाहा

काले य महाकाले, सुरूव-पडिरूव-पुण्णभद्दे य ।
अमरवई माणिभद्दे, भीमे य तहा महाभीमे ।।१।।
किन्नर-किपुरिसे खलु, सप्पुरिसे खलु तहा महापुरिसे ।
अइकाय-महाकाए, गीयरई चेव गीयजसे ।।२।।

एते वाणमतराण देवाण ।।

---

१. म० पा०—पुच्छा ।
२. भ० ३।८ ।
३. सेलवाले सखवाले (अ, क, म) ।
४. तेउसीह (अ) ।
५. वसिट्ठ (ता, ब), विसट्ठ (म) ।
६. जलरूय (अ), जलरूवे (ठा० ४।१२२) ।
७. भ० ३।[illegible] ।
८. [illegible] पूर्णो न [illegible] पाठो [illegible] । [illegible] —
सो १ का २ चि ३ प्प ४ ते ५ रू ६ ज ७ तु ८ का ९ आ १० इत्यनेनाक्षरदशकेन दाक्षिणभवनपतीन्द्राणा प्रथमलोकपालनामानि सूचितानि, वाचनान्तरे त्वेतान्येव गाथाया, साचेयम्—सोमे य १ महाकाले २ चित्त ३ प्पभ ४ तेउ ५ तह रुए चेव ६ । जल तह ७ तुरिय गई य ८ काले ९ आउत्त १० पढमा उ ।। एव द्वितीयादयोऽप्यभ्यूह्याः (वृ) ।
९. म० पा०—पुच्छा ।
१०. भ० ३।४ ।

२७६. जोइसियाणं देवाणं दो देवा आहेवच्चं जाव विहरंति, तं जहा—चंदे य, सूरे य ॥

२७७. सोहम्मीसाणेसु णं भंते ! कप्पेसु कइ देवा आहेवच्चं जाव विहरंति ?

गोयमा ! दस देवा आहेवच्चं जाव विहरंति, तं जहा—सक्के देविंदे देवराया, सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे । ईसाणे देविंदे देवराया, सोमे, जमे, वेसमणे, वरुणे ।

एसा वत्तव्वया सव्वेसु वि कप्पेसु एए चेव भाणियव्वा । जे य इंदा ते य भाणियव्वा ॥

२७८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

नवमो उद्देसो

२७९. रायगिहे जाव एवं वयासी—कतिविहे णं भंते ! इंदियविसए पण्णत्ते ?

गोयमा ! पंचविहे इंदियविसए पण्णत्ते, तं जहा—सोतिंदियविसए चक्खिंदियविसए घाणिंदियविसए रसिंदियविसए फासिंदियविसए । जीवाभिगमे जोइसियउद्देसो नेयव्वो अपरिसेसो ॥

दसमो उद्देसो

२८० रायगिहे जाव[1] एव वयासी—चमरस्स ण भते ! असुरिंदस्स असुररण्णो कइ परिसाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, त जहा—समिया, चडा, जाया। एव जहाणुपुव्वीए 'जाव अच्चुओ'[2] कप्पो ॥

२८१. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[3] ॥

४. तस्स णं ईसाणवडेंसयस्स महाविमाणस्स पुरत्थिमे णं तिरियमसखेज्जाइ जोयणसहस्साइ वीईवइत्ता, एत्थ ण ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सुमणे नाम महाविमाणे पण्णत्ते अद्धतेरसजोयसणसयहस्साइ, जहा सक्कस्स वत्तव्वया तइयसए तहा ईसाणस्स वि जाव[1] अच्चणिया समत्ता ॥

५. चउण्ह वि लोगपालाण विमाणे-विमाणे उद्देसओ, चऊसु वि विमाणेसु चत्तारि उद्देसा अपरिसेसा, नवर—ठिईए नाणत्त—

संगहणी-गाहा

आदि दुय तिभागूणा, पलिया धणयस्स होति दो चेव ।
दो सतिभागा वरुणे, पलियमहावच्चदेवाण ॥१॥

५, ६, ७, ८ उद्देसो

६ रायहाणीसु वि चत्तारि उद्देसा भाणियव्वा जाव एमहिड्ढीए जाव[1] वरुणे महाराया ॥

नवमो उद्देसो

७. नेरइए ण भंते ! नेरइएसु उववज्जइ ? अनेरइए[1] नेरइएसु उववज्जइ ? पण्णवणाए नेरइयाए तइओ उद्देसओ भाणियव्वो जाव नाणाइ ॥

दसमो उद्देसो

८. से नूणं भंते ! कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए, तावण्णत्ताए, तागंधत्ताए, तारसत्ताए, ताफासत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ?
हंता गोयमा ! कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए, तावण्णत्ताए, तागंधत्ताए, तारसत्ताए, ताफासत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति । एवं चउत्थो उद्देसओ पण्णवणाए चेव लेस्सापदे नेयव्वो जाव[1]—

संगहणी-गाहा

परिणाम-वण्ण-रस-गंध-सुद्ध-अपसत्थ-संकिलिट्ठुण्हा ।
गइ-परिणाम-पएसोगाढ-वग्गणा-ठाणमप्पबहुं ॥१॥

९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ॥

पंचमं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

> १ चंप-रवि २ अनिल ३ गठिय ४ सद्दे ५-६ छउमाउ ७[1] एयण ८ नियंठ ।
> ९ रायगिह १० चंपा-चंदिमा य दस पंचमम्मि सए ॥१॥

जंबुद्दीवे सूरिय-वत्तव्वया-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नगरी होत्था—वण्णओ[1] ॥

२. तीसे णं चंपाए नगरीए पुण्णभद्दे नामं चेइए होत्था—वण्णओ[3] । सामी समोसढे जाव[4] परिसा पडिगया ॥

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे गोयमे गोत्तेणं जाव[5] एवं वयासी—जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ[6] पाईण-दाहिणमागच्छंति, पाईण-दाहिणमुग्गच्छ दाहिण-पडीणमागच्छंति[7], दाहिण-पडीणमुग्गच्छ पडीण-उदीणमागच्छंति[8], पडीण-उदीण-मुग्गच्छ उदीचि-पाईणमागच्छंति ?

हंता गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ जाव उदीचि-पाईणमागच्छंति ॥

---

१. नातु (अ, म) ।
२. ओ० सू० १ ।
३. ओ० सू० [illegible] ।
४. भ० [illegible], ८ ।
५. भ० १।९, १० ।
६. पादीण° (अ, ता) ।
७. °पदीण° (ता, म) ।
८. उदीनि° (क, ता, व, म) ।

९. जया णं भते ! जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण अट्ठारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तया ण पच्चत्थिमे वि अट्ठारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ; जया ण पच्चत्थिमे अट्ठारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तदा णं जवुदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण साइरेगा दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ?
हता गोयमा ! जाव भवइ ॥

१० एव एएण कमेण ओसारेयव्व—सत्तरसमुहुत्ते दिवसे, तेरसमुहुत्ता राई। सत्तर-समुहुत्ताणतरे दिवसे, साइरेगा तेरसमुहुत्ता राई।
सोलसमुहुत्ते दिवसे, चोद्दसमुहुत्ता राई। सोलसमुहुत्ताणतरे दिवसे, साइरेगा चउद्दसमुहुत्ता राई।
पण्णरसमुहुत्ते दिवसे, पण्णरसमुहुत्ता राई। पण्णरसमुहुत्ताणतरे दिवसे, साइ-रेगा पण्णरसमुहुत्ता राई।
चोद्दसमुहुत्ते दिवसे, सोलसमुहुत्ता राई। चोद्दसमुहुत्ताणतरे दिवसे, साइरेगा सोलसमुहुत्ता राई।
तेरसमुहुत्ते दिवसे, सत्तरसमुहुत्ता राई। तेरसमुहुत्ताणतरे दिवसे, साइरेगा सत्तरसमुहुत्ता राई॥

११ जया ण जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढे वि, जया ण उत्तरड्ढे, तया ण जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ ?
हता गोयमा ! एव चेव उच्चारेयव्व जाव राई भवइ ॥

१२ जया ण भते ! जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण जहण्णए दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण पच्चत्थिमे ण वि; जया ण पच्चत्थिमे[1], तया ण जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ ?
हता गोयमा ! जाव राई भवइ ॥

जबुद्दीवे उउ-वत्तव्वया-पदं

१३. जया ण भंते ! जवुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया ण उत्तरड्ढे वि वासाण पढमे समए पडिवज्जइ; जया ण उत्तरड्ढे[2] वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, तया ण जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण अणतरपुरक्खडे समयसि वासाण पढमे समए पडिवज्जइ ?

---

१. पच्चत्थिमे ण वि (अ, क, ख, ब, म, स)। २. उत्तरड्ढे वि (स)।

१९. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढे वि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ; जया णं उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं नेवत्थि ओसप्पिणी, नेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो ?
हंता गोयमा ! तं चेव उच्चारेयव्वं जाव समणाउसो ॥

२०. जहा ओसप्पिणीए आलावओ भणिओ एवं उस्सप्पिणीए वि भाणियव्वो ॥

लवणसमुद्दादिसु सूरियादि-वत्तव्वय-पदं

२१. लवणे णं भंते ! समुद्दे सूरिया उदीण[1]-पाईणमुग्गच्छ पाईण-दाहिणमागच्छंति, जच्चेव जंबुद्दीवस्स वत्तव्वया भणिया सच्चेव सव्वा अपरिसेसिया लवणसमुद्दस्स वि भाणियव्वा[2], नवरं—अभिलावो इमो जाणियव्वो ॥

२२. जया णं भंते ! लवणसमुद्दे[3] दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तं चेव जाव[4] तदा णं लवणसमुद्दे पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं राई भवति ॥

२३. एएणं अभिलावेणं नेयव्वं जाव[5] जया णं भंते ! लयणसमुद्दे दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढे वि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ; जया णं उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया णं लवणसमुद्दे पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं नेवत्थि ओसप्पिणी[6], °नेवत्थि उस्सप्पिणी अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते° समणाउसो ?
हंता गोयमा ! जाव समणाउसो[7] ॥

२४. धायइसंडे णं भंते ! दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ पाईण-दाहिणमागच्छंति, जहेव जंबुद्दीवस्स वत्तव्वया भणिया सच्चेव धायइसंडस्स वि भाणियव्वा, नवरं—इमेणं अभिलावेणं सव्वे आलावगा भाणियव्वा[8] ॥

२५. जया णं भंते ! धायइसंडे दीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तदा णं उत्तरड्ढे वि, जया णं उत्तरड्ढे, तया णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं राई भवइ ?
हंता गोयमा ! एवं चेव जाव राई भवइ ॥

---

१. उदीचि ([illegible]) ।
२. भ० ५।३ ।
३. [illegible] समुद्दे (क, ब, म) ।
४. भ० ५।८ ।
५. भ० ५।१।१८ ।
६. सं० पा०—ओसप्पिणी जाव समणाउसो ।
७. अतोग्रे 'जहा ओसप्पिणीए आलावओ भणिओ एवं उस्सप्पिणीए वि भाणियव्वो' इति ५।२० सूत्रं अध्याहार्यम् ।
८. भ० ५।३ ।

२६. जया णं भंते ! धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरत्थिमे णं दिवसे भवइ, तया णं पच्चत्थिमे ण वि, जया णं पच्चत्थिमे णं दिवसे भवइ, तया णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं उत्तर-दाहिणे णं राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जाव भवइ ॥

२७. एवं एएणं अभिलावेणं नेयव्वं जाव जया णं भंते ! दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी, तया णं उत्तरड्ढे वि, जया णं उत्तरड्ढे वि, तया णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं नत्थि ओसप्पिणी जाव समणाउसो ?
हंता गोयमा ! जाव समणाउसो ॥

२८. जहा लवणसमुद्दस्स वत्तव्वया तहा कालोदस्स वि भाणियव्वा, नवरं—कालोदस्स नाम भाणियव्वं ॥

२९. अब्भिंतरपुक्खरद्धे णं भंते ! सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ पाईण-दाहिणमागच्छंति, जहेव धायइसंडस्स वत्तव्वया तहेव अब्भिंतरपुक्खरद्धस्स वि भाणियव्वा, नवरं—अभिलावो जाणियव्वो जाव तया णं अब्भिंतरपुक्खरद्धे मंदराणं पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं नेवत्थि ओसप्पिणी, नेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो ॥

३०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

३२. अत्थि ण भंते ! पुरत्थिमे ण ईसि पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायति ?
हता अत्थि ॥

३३. एव पच्चत्थिमे ण, दाहिणे ण, उत्तरे णं, उत्तर-पुरत्थिमे ण, 'दाहिणपच्चत्थिमे ण, दाहिण-पुरत्थिमे ण'[1] 'उत्तर-पच्चत्थिमे ण ॥

३४. जया ण भते ! पुरत्थिमे ण ईसि पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायति, तया णं पच्चत्थिमे ण वि ईसि पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायति, जया ण पच्चत्थिमे ण ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायति, तया ण पुरत्थिमे ण वि ?
हता गोयमा ! जया ण पुरत्थिमे ण ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायति, तया ण पच्चत्थिमे ण वि ईसि पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायंति; जया ण पच्चत्थिमे ण ईसि पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायति, तया ण पुरत्थिमे ण वि ईसि पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायति ॥

३५. एव दिसासु, विदिसासु[2] ॥

३६. अत्थि णं भते ! दीविच्चया[3] ईसिं पुरेवाया[4] ?
हता अत्थि ॥

३७. अत्थि ण भते ! सामुद्दया ईसिं पुरेवाया[5] ?
हता अत्थि ॥

३८. जया ण भते ! दीविच्चया ईसिं पुरेवाया[6], तया ण सामुद्दया वि ईसिं पुरेवाया[7], जया ण सामुद्दया ईसि पुरेवाया[8], तया ण दीविच्चया वि ईसि पुरेवाया[9] ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

३९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जया ण दीविच्चया ईसि पुरेवाया[10], णो ण तया सामुद्दया ईसि पुरेवाया[11], जया ण सामुद्दया ईसि पुरेवाया[12], णो ण तया दीविच्चया ईसि पुरेवाया[13] ?
गोयमा ! तेसि ण वायाण अण्णमण्णविवच्चासेण लवणसमुद्दे वेल नाइक्कमइ । से तेणट्ठेण जाव णो ण तया दीविच्चया ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायति ॥

---

१. दाहिणपुरत्थिमे ण दाहिणपच्चत्थिमे ण (ग)
२. एव विदिसासु (क, ग)।
३. [illegible] (ब)।
३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२. पू० भ० ५।३१।

४९. से भंते ! किं ससरीरी निक्खमइ ? असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ॥

५०. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ ? सिय असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! वाउयायस्स णं चत्तारि सरीरया पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए। ओरालिय-वेउव्वियाइं विप्पजहाय तेयय-कम्मएहिं निक्खमइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ° ॥

ओदणादीणं किंसरीरत्त-पदं

५१. अह णं भंते ! ओदणे, कुम्मासे, सुरा—एए णं किंसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! ओदणे, कुम्मासे, सुराए य जे घणे दव्वे—एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च वणस्सइजीवसरीरा। तओ पच्छा सत्थातीया, सत्थपरिणामिया, अगणिज्झामिया, अगणिझूसिया[1], अगणिपरिणामिया अगणिजीवसरीरा ति वत्तव्वं सिया। सुराए य जे दवे दव्वे—एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च आउजीवसरीरा। तओ पच्छा सत्थातीया जाव अगणिजीवसरीरा[2] ति वत्तव्वं सिया ॥

५२. अह णं भंते ! अये, तंबे, तउए, सीसए, उवले, कसट्टिया—एए णं किंसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! अये, तंबे, तउए, सीसए, उवले, कसट्टिया—एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च पुढवीजीवसरीरा। तओ पच्छा सत्थातीया जाव[3] अगणिजीवसरीरा ति वत्तव्वं सिया ॥

५३. अह णं भंते ! अट्ठी, अट्ठिज्झामे, चम्मे, चम्मज्झामे, रोमे, रोमज्झामे, सिंगे, सिंगज्झामे, खुरे, खुरज्झामे, नखे, नखज्झामे—एए णं किंसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! अट्ठी, चम्मे, रोमे, सिंगे, खुरे, नखे—एए णं तसपाणजीवसरीरा। अट्ठिज्झामे, चम्मज्झामे, रोमज्झामे, 'सिंगज्झामे, खुरज्झामे, नखज्झामे'[4]—एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च तसपाणजीवसरीरा। तओ पच्छा सत्थातीया जाव[5] 'अगणिजीवसरीरा ति'[6] वत्तव्वं सिया ॥

---

१. [illegible] (अ, म)। वृत्तौ [illegible]
२. [illegible]
३. भ० ५।५१।
४. सिंग खुर-नखज्झामे (अ, ता, स)।
५. भ० ५।५१।
६. अगणि त्ति (अ, म)।

इहभवियाउयस्स पडिसवेदणयाए परभवियाउयं पडिसंवेदेइ,
परभवियाउयस्स पडिसवेदणयाए इहभवियाउय पडिसवेदेइ ।
एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो आउयाइ पडिसवेदेइ, त जहा—इहभविया-उय च, परभवियाउय च° ।।

५८ से कहमेय भते ! एव ?
गोयमा ! जण्ण तं अण्णउत्थिया त चेव जाव परभवियाउय च । जे ते एव-माहसु त मिच्छा, अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि भासामि पण्णवेमि परू-वेमि—से जहानामए जालगठिया सिया[1]—•आणुपुव्विगढिया अणतरगढिया परपरगढिया अण्णमण्णगढिया, अण्णमण्णगरुयत्ताए अण्णमण्णभारियत्ताए अण्णमण्णगरुय-सभारियत्ताए° अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति, एवामेव एगमेगस्स जीवस्स वहूहि आजातिसहस्सेहि वहूइ आउयसहस्साइ आणुपुव्विगढियाइ जाव चिट्ठति ।
एगे वि य ण जीवे एगेण समएण एग आउय पडिसवेदेइ, त जहा—इहभवि-याउयं वा, परभवियाउय वा ।
ज समय इहभवियाउय पडिसवेदेइ, नो त समय परभवियाउय पडिसवेदेइ ।
ज समय परभवियाउय पडिसवेदेइ, नो त समय इहभवियाउयं पडिसवेदेइ ।
इहभवियाउयस्स पडिसवेदणाए, नो परभवियाउय पडिसवेदेइ ।
परभवियाउयस्स पडिसवेदणाए, नो इहभवियाउय पडिसवेदेइ ।
एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग आउय पडिसवेदेइ, त जहा—इहभ-वियाउय वा, परभवियाउय वा ।।

साउयसंकमण-पदं

५९ जीवे ण भते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! कि साउए सकमइ ? निराउए सकमइ ?
गोयमा ! साउए सकमइ, नो निराउए सकमइ ।।

६०. से ण भते ! आउए[2] कहि कडे ? कहि समाइण्णे ?
गोयमा ! पुरिमे भवे कडे, पुरिमे भवे समाइण्णे ।।

६१. एव जाव[3] वेमाणियाण दडओ ।।

६२ से नूण भते ! जे ज भविए जोणि[4] उववज्जित्तए, से तमाउयं पकरेइ, त

---

१. [illegible]—[illegible] अण्णमण्णघडत्ताए ।
२. [illegible] ।
३. [illegible] ।
४ विभक्तिपरिणामाद् यो यस्या योनावुत्पत्तु योग्य इत्यर्थ (व) ।

हंता गोयमा ! छउमत्थे णं मणुस्से आउडिज्जमाणाइं सद्दाइं सुणेइ, तं जहा—संखसद्दाणि वा जाव झुसिराणि वा ।
ताइं भंते ! किं पुट्ठाइं सुणेइ ? अपुट्ठाइं सुणेइ ?
गोयमा ! पुट्ठाइं सुणेइ, नो अपुट्ठाइं सुणेइ[1] ।
•जाइं भंते ! पुट्ठाइं सुणेइ ताइं किं ओगाढाइं सुणेइ ? अणोगाढाइं सुणेइ ?
गोयमा ! ओगाढाइं सुणेइ, नो अणोगाढाइं सुणेइ ।
जाइं भंते ! ओगाढाइं सुणेइ ताइं किं अणंतरोगाढाइं सुणेइ ? परंपरोगाढाइं सुणेइ ?
गोयमा ! अणंतरोगाढाइं सुणेइ, नो परंपरोगाढाइं सुणेइ ।
जाइं भंते ! अणंतरोगाढाइं सुणेइ ताइं किं अणूइं सुणेइ ? बादराइं सुणेइ ?
गोयमा ! अणूइं पि सुणेइ, बादराइं पि सुणेइ ।
जाइं भंते ! अणूइं पि सुणेइ बादराइं पि सुणेइ ताइं किं उड्ढं सुणेइ ? अहे सुणेइ ? तिरियं सुणेइ ?
गोयमा ! उड्ढं पि सुणेइ, अहे वि सुणेइ, तिरियं पि सुणेइ ।
जाइं भंते ! उड्ढं पि सुणेइ अहे वि सुणेइ तिरियं पि सुणेइ ताइं किं आइं सुणेइ ? मज्झे सुणेइ ? पज्जवसाणे सुणेइ ?
गोयमा ! आइं पि सुणेइ, मज्झे पि सुणेइ, पज्जवसाणे वि सुणेइ ।
जाइं भंते ! आइं पि सुणेइ मज्झे वि सुणेइ पज्जवसाणे वि सुणेइ ताइं किं सविसए सुणेइ ? अविसए सुणेइ ?
गोयमा ! सविसए सुणेइ, नो अविसए सुणेइ ।
जाइं भंते ! सविसए सुणेइ ताइं किं आणुपुव्वि सुणेइ ? अणाणुपुव्वि सुणेइ ?
गोयमा ! आणुपुव्वि सुणेइ, नो अणाणुपुव्वि सुणेइ ।
जाइं भंते ! आणुपुव्वि सुणेइ ताइं किं तिदिसिं सुणेइ जाव छद्दिसिं सुणेइ ?
गोयमा !° नियमा छद्दिसिं सुणेइ ॥

६५. छउमत्थे णं भंते ! मणूसे किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ ? पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ?
गोयमा ! आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, नो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ॥

६६. जहा णं भंते ! छउमत्थे मणूसे आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, नो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ, तहा णं केवली किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ ? पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ?
गोयमा ! केवली णं आरगयं वा, पारगयं वा सव्वदूर-मूलमणंतियं सद्दं जाणइ-पासइ ॥

---

१. सं० पा०—सुणेइ जाव नियमा ।

२. ण भंते ! (न) ।

छउमत्थ-केवलीणं निद्दा-पदं

७२. छउमत्थे ण भते ! मणुस्से निद्दाएज्ज वा ? पयलाएज्ज वा ?
हता निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा ॥

७३. [1]•जहा ण भते ! छउमत्थे मणुस्से निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा, तहा ण केवली वि निद्दाएज्ज वा ? पयलाएज्जा वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

७४. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जहा ण छउमत्थे मणुस्से निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा, नो ण तहा केवली निद्दाएज्ज वा ? पयलाएज्ज वा ?
गोयमा ! ज ण जीवा दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएण निद्दायंति वा, पयलायति[2] वा । से ण केवलिस्स नत्थि । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—जहा ण छउमत्थे मणुस्से निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा, नो ण तहा केवली निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा° ॥

७५. जीवे णं भते ! निद्दायमाणे वा, पयलायमाणे वा कइ कम्मप्पगडीओ बधइ ?
गोयमा ! सत्तविहबधए वा, अट्ठविहबधए वा । एव जाव[3] वेमाणिए । पोहत्ति-एसु जीवेगिदियवज्जो तियभगो ॥

गब्भसाहरण-पदं

७६ '[4]से नूण भते ! हरि-नेगमेसी[5] सक्कदूए इत्थीगब्भ सहरमाणे कि गब्भाओ गब्भ साहरइ ? गब्भाओ जोणि साहरइ ? जोणीओ गब्भ साहरइ ? जोणीओ जोणि साहरइ ?
गोयमा ! नो गब्भाओ गब्भ साहरइ, नो गब्भाओ जोणि साहरइ, नो जोणीओ जोणि साहरइ, परामुसिय-परामुसिय अव्वाबाहेण अव्वाबाह जोणीओ गब्भ साहरइ ॥

७७. पभू ण भते ! हरि-नेगमेसी सक्कदूए[5] इत्थीगब्भ नहसिरसि वा, रोमकूवसि वा साहरित्तए वा ? नीहरित्तए वा ?

गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्ज सत्तविह-[illegible] । अहवा सत्तविहबधगा य अट्ठविहबधगे य । अहवा सत्तविहबधगा य अट्ठविहबधगा य (क, [illegible], ब, स) ।

१ [illegible]—जहा [illegible] वा तहा नवर [illegible] उदएण निद्दा-[illegible] वा [illegible] वा, से ण केवलिस्स [illegible] ।

२ पयलाइति (स) ।

३. पू० प० २ ।

४ हरी ण भते ! हरिणेगमेसी (अ, क, ता); हरी ण भते ! हरिणेगमेसी (स); 'हरी ण भते ! हरिणेगमेसी' इति द्वयर्थक पद द्वयो र्वाचनायो. समिश्रणेन जातम् ।

५ सक्कस्स ण दूते (ब, स), सक्कस्स दूए (म) ।

महासुक्कागयदेव-पण्ह-पदं

८३. तेण कालेण तेण समएणं महासुक्काओ कप्पाओ, महासामाणाओ[1] विमाणाओ दो देवा महिड्ढिया जाव[2] महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं पाउब्भूया। तए ण ते देवा समण भगव महावीर[3] वदंति नमसंति, मणसा चेव इम एयारूव वागरणं पुच्छंति—

८४. कति ण भंते[4]! देवाणुप्पियाण अंतेवासीसयाइ सिज्झिहिंति जाव[5] अंत करेहिंति? तए ण समणे भगव महावीरे तेहिं देवेहिं मणसा पुट्ठे तेसि देवाण मणसा चेव इम एयारूव वागरण वागरेइ—एव खलु देवाणुप्पिया! मम सत्त अंतेवासीसयाइ सिज्झिहिंति जाव अंत करेहिंति।
तए ण ते देवा समणेण भगवया महावीरेण मणसा पुट्ठेण मणसा चेव इम एयारूव वागरण वागरिया समाणा हट्ठतुट्ठ[6] •चित्तमाणदिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण°हियया समण भगव महावीर वदंति नमसंति, वदित्ता नमसित्ता मणसा चेव सुस्सूसमाणा नमसमाणा अभिमुहा[7] •विणएण पजलियडा° पज्जुवासंति॥

८५. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नाम अणगारे जाव[8] अदूरसामंते उड्ढजाणू[9] •अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए सजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ। तए ण तस्स भगवओ गोयमस्स झाणतरियाए वट्टमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए[10] •चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—एव खलु दो देवा महिड्ढिया जाव[11] महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिय पाउब्भूया[12], त नो खलु अह ते देवे[13] जाणामि कयराओ कप्पाओ वा सग्गाओ वा विमाणाओ वा कस्स वा अत्थस्स अट्ठाए इह हव्वमागया? त गच्छामि ण समण भगव महावीर वदामि नमसामि जाव[14] पज्जुवासामि, इमाइं च ण एयारूवाइ वागरणाइ पुच्छिस्सामि त्ति कट्टु एव सपेहेइ,

---

१. महासमाणाओ (अ, व, म); महासग्गाओ (स)। एतस्मिन्नादर्शे 'महासग्गाओ' इति पाठो लब्धो, किन्तु समवायाङ्गसूत्रस्य सप्तदशसमवायस्य (१८) सदर्भे 'महासामाणाओ' इत्यस्य पाठः समीचीनोऽस्ति।
२. भ० ३।४।
३. महावीर भगवमा चेव (अ, स), महावीर मणसा (व, म)।
४. [illegible] (क, ता, ब, म)।
५. भ० १।२३।
६. स० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियया।
७. स० पा०—अभिमुहा जाव पज्जुवासति।
८. भ० १।१६।
९. स० पा०—उड्ढजाणू जाव विहरइ।
१०. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
११. भ० ३।४।
१२. पादुब्भूता (क, व, म)।
१३. देवा (ता, ब)।
१४. भ० २।३०।

अणुत्तरोववाइयाणं केवलिणा आलाव-पदं

१०३. पभू णं भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगएणं केवलिणा सद्धिं आलावं वा, संलावं वा करेत्तए ?
हंता पभू ॥

१०४. से केणट्ठेणं[1] •भंते ! एवं वुच्चइ—पभू णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगएणं केवलिणा सद्धिं आलावं वा, संलावं वा° करेत्तए ?
गोयमा ! जण्णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा कारणं वा वागरणं वा पुच्छंति, तण्णं इहगए केवली अट्ठं वा[2] •हेउं वा पसिणं वा कारणं वा° वागरणं वा वागरेइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—पभू णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगएणं केवलिणा सद्धिं आलावं वा, संलावं वा करेत्तए ॥

१०५. जण्णं भंते ! इहगए केवली अट्ठं वा[3] •हेउं वा पसिणं वा कारणं वा वागरणं वा° वागरेइ, तण्णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा जाणंति-पासंति ?
हंता जाणंति-पासंति ॥

१०६. से केणट्ठेणं[4] •भंते ! एवं वुच्चइ—जण्णं इहगए केवली अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा कारणं वा वागरणं वा वागरेइ, तण्णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा जाणंति°-पासंति ?
गोयमा ! तेसिं णं देवाणं अणंताओ मणोदव्ववग्गणाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमण्णागयाओ भवंति । से तेणट्ठेणं[5] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—जण्णं इहगए केवली अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा कारणं वा वागरणं वा वागरेइ, तण्णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा जाणंति°-पासंति ॥

१०७. अणुत्तरोववाइया णं भंते ! देवा किं उदिण्णमोहा ? उवसंतमोहा ? खीणमोहा ? गोयमा ! नो उदिण्णमोहा, उवसंतमोहा, नो खीणमोहा ॥

केवलीणं इंदियनाण-निसेध-पदं

१०८. केवली णं भंते ! आयाणेहिं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो तिणट्ठे समट्ठे ॥

[illegible]

१. स० पा०—केणट्ठेणं जाव पभू णं अणुत्तरोववाइया देवा जाव करेत्तए ।
२. स० पा०—अट्ठं वा जाव वागरणं ।
३. स० पा०—अट्ठं वा जाव वागरेइ ।
४. स० पा०—केणट्ठेणं जाव पासंति ।
५. स० पा०—तेणट्ठेणं जण्णं इहगए केवली जाव पासंति ।

हित्ता णं चिट्ठति, णो ण पभू केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थ वा पाय वा बाहु वा ऊरुं वा ओगाहित्ता ण° चिट्ठित्तए ॥

चोद्दसपुव्वीणं सामत्थ-पदं

११२. पभू ण भंते ! चोद्दसपुव्वी घडाओ घडसहस्स, पडाओ पडसहस्सं, कडाओ कडसहस्स, रहाओ रहसहस्सं, छत्ताओ छत्तसहस्सं, दडाओ दडसहस्स अभिनिव्वट्टेत्ता उवदसेत्तए ?

हंता पभू ॥

११३. से केणट्ठेण पभू चोद्दसपुव्वी जाव[1] उवदसेत्तए ?

गोयमा ! चोद्दसपुव्विस्स ण अणताइ दव्वाइ उक्कारियाभेएण[2] भिज्जमाणाइ लद्धाइ पत्ताइ अभिसमण्णागयाइ भवति ।

से तेणट्ठेण[3] °गोयमा ! एवं वुच्चइ—पभू ण चोद्दसपुव्वी घडाओ घडसहस्स, पडाओ पडसहस्स, कडाओ कडसहस्स, रहाओ रहसहस्स, छत्ताओ छत्तसहस्स, दडाओ दंडसहस्स अभिनिव्वट्टेत्ता° उवदसेत्तए ॥

११४ सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति[4] ॥

पंचमो उद्देसो

मोक्ख-पदं

११५ छउमत्थे ण भंते ! मणूसे तीयमणत सासय समय केवलेण संजमेण, केवलेण सवरेण, केवलेण बंभचेरवासेण, केवलाहि पवयणमायाहि सिज्झिसु ? बुज्झिसु ? मुच्चिसु ? परिणिव्वाइसु ? सव्वदुक्खाण अंत करिसु ?

गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । जहा पढमसए चउत्थुद्देसे[5] आलावगा तहा नेयव्वा जाव अलमत्थु त्ति वत्तव्व सिया ॥

एवंभूय-अणेवंभूय-वेदणा-पदं

११६. अण्णउत्थिया ण भंते ! एवमाइक्खति जाव[6] परूवेति—सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता एवंभूय वेदण वेदेति ॥

---

१. भ० ५।११२ ।

२. प्रज्ञापनासूत्रे भाषापदे 'उक्करियाभेएण' इति [illegible] पाठो लभ्यते ।

३. स० पा०—तेणट्ठेण जाव उवदसेत्तए ।

४. भ० १।५१ ।

५. भ० १।२०१-२०६ ।

६. भ० १।४२० ।

छट्ठो उद्देसो

अप्पायु-दीहायु-पदं

१२४. कहण्ण[1] भंते ! जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ?
गोयमा[2] ! पाणे अइवाएत्ता, मुसं वइत्ता, तहारूवं समणं वा माहणं वा अफासु-एणं अणेसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेत्ता[3]—एवं खलु जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ?

१२५. कहण्णं भंते ! जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ?
गोयमा ! नो पाणे अइवाएत्ता[4], नो मुसं वइत्ता, तहारूवं समणं वा माहणं वा फासुएणं[5] एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेत्ता—एवं खलु जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ॥

असुभसुभ-दीहायु-पदं

१२६ कहण्णं भंते ! जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ?
गोयमा ! पाणे अइवाएत्ता, मुसं वइत्ता, तहारूवं समणं वा माहणं वा हीलित्ता[6] निंदित्ता खिंसित्ता गरहित्ता अवमण्णित्ता 'अण्णयरेणं अमणुण्णेणं अपीतिकार-एणं'[7] असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेत्ता—एवं खलु जीवा असुभदीहा-उयत्ताए कम्मं पकरेंति ॥

१२७. कहण्णं भंते ? जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ?
गोयमा ! नो पाणे अइवाएत्ता, नो मुसं वइत्ता, तहारूवं समणं वा माहणं वा वंदित्ता नमंसित्ता जाव[8] पज्जुवासित्ता 'अण्णयरेणं मणुण्णेणं पीतिकारएणं'[9] असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेत्ता—एवं खलु जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ॥

रयण, बलदेवा, वासुदेवा, वासुदेवमायरो, पियरो, एएसिं पडिसत्तू जहा समवाए नाम-परिवाडीए तहा नेयव्वा (अ, क, व, स), एषु आदर्शेषु द्वयोर्वाचनयोः सम्मिश्रणं जातम्। [illegible]

१. भ० १।४१।

२ कहं ण (अ, ता, म), कहिं ण (क), । कह ण (व)।

३. गोयमा तिहिं ठाणेहिं त (व, स) सर्वत्र, द्रष्टव्य—ठा० ३।१७-२०।

४ °इत्ता (म)।

५ अनिवतित्ता (अ, म)।

६ फासु (अ, क, ता, म, स)।

७ हीलेत्ता (क, ता, व, म)।

८. वाचनान्तरे तु अफासुएण अणेसणिज्जेण नि दृश्यते (वृ)।

९. भ० २।३०।

१०. वाचनान्तरे तु फासुएण इत्यादि दृश्यते (वृ)।

१३१ गाहावइस्स ण भंते ! भंडं[1] •विक्किणमाणस्स कइए भंडं साइज्जेज्जा, धणे य से अणुवणीए सिया ?
कइयस्स ण भंते ! ताओ धणाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव[2] मिच्छा-दंसणकिरिया कज्जइ ?
गाहावइस्स वा ताओ धणाओ कि आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव मिच्छा-दंसणकिरिया कज्जइ ?
गोयमा ! कइयस्स ताओ धणाओ हेट्ठिल्लाओ चत्तारि किरियाओ कज्जंति। मिच्छादंसणकिरिया भयणाए।
गाहावइस्स ण ताओ सव्वाओ पयणुईभवंति ॥

१३२ गाहावइस्स ण भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स कइए भंडं साइज्जेजा, धणे से उवणीए सिया।
गाहावइस्स ण भंते ! ताओ धणाओ कि आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव मिच्छादंसणकिरिया कज्जइ ?
कइयस्स वा ताओ धणाओ कि आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव मिच्छादंसण-किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! गाहावइस्स ताओ धणाओ आरंभिया किरिया कज्जइ जाव अपच्च-क्खाणकिरिया कज्जइ। मिच्छादंसणकिरिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ।
कइयस्स ण ताओ सव्वाओ पयणुईभवंति॰ ॥

अगणिकाए महाकम्मादि पदं

१३३ अगणिकाए ण भंते ! अहुणोज्जलिए[4] समाणे महाकम्मतराए चेव[5], महाकिरिया-तराए चेव, महासवतराए[6] चेव, महावेदणतराए चेव भवइ। अहे ण समए-समए 'वोक्कसिज्जमाणे-वोक्कसिज्जमाणे'[7] चरिमकालसमयंसि इंगालब्भूए मुम्मुरब्भूए छारियब्भूए[8], तओ पच्छा अप्पकम्मतराए चेव, अप्पकिरियतराए

१ सं० पा०—भंडं जाव धणे य से अणुवणीए सिया ? एए वि जहा भंडे उवणीए तहा नेयव्वा।
चउत्थो आलावगो—'धणे य से उवणीए सिया' जहा पढमो आलावगो—'भंडे य से अणुवणीए सिया', तहा नेयव्वो।
पढम-चउत्थाणं एक्को गमो, बितिय-तइयाण एक्को गमो।

२. भ० ५।१२८।

३ भ० ५।१२८।

४ अहुणुज्जलिए (ता), अहुणुज्जलिए (व)।

५. च्चेव (ता)।

६. महस्सव॰ (अ, ता, ब)।

७. वोयसिज्जमाणे २ वोच्छिज्जमाणे २ (अ,स),वोकसिज्जमाणे २ वोच्छिज्जमाणे २ (ता); वोयसिज्जमाणे २ (म)।

८. छारभूए (अ)।

जीवा चउहिं, ण्हारू चउहिं, उसू पंचहिं—सरे, पत्तणे, फले, ण्हारू पचहिं। जे वि य से जीवा अहे पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे[1] वट्टंति ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पचहिं किरियाहिं पुट्ठा ॥

अण्णउत्थिय-पदं

१३६. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमातिक्खति जाव[2] परूवेंति—से जहानामए जुवतिं जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव जाव चत्तारि पच जोयणसयाइं बहुसमाइण्णे मणुयलोए[3] मणुस्सेहिं ॥

१३७. से कहमेयं भंते ! एवं ?

गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमातिक्खति जाव[4] बहुसमाइण्णे मणुयलोए मणुस्सेहिं। जे ते एवमाहंसु, 'मिच्छं ते एवमाहंसु'[5]। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि[6] •जाव[7] परूवेमि—से जहानामए जुवतिं जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया॰, एमामेव जाव चत्तारि पंच जोयणसयाइं बहुसमाइण्णे निरयलोए नेरइएहिं ॥

नेरइयविउव्वणा-पदं

१३८. नेरइया णं भंते ! किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए ? पुहत्तं[8] पभू विउव्वित्तए ?

गोयमा ! एगत्तं पि पहू विउव्वित्तए, पुहत्तंपि पहू विउव्वित्तए। जहा जीवाभिगमे आलावगो तहा नेयव्वो जाव[9] विउव्वित्ता अण्णमण्णस्स कायं अभिहणमाणा-अभिहणमाणा वेयणं उदीरेंति—उज्जलं विउलं पगाढं कक्कसं कडुयं फरुसं निट्ठुरं चंडं तिव्वं दुक्खं दुग्गं दुरहियासं ॥

आहाकम्मादिआहारे आराहणादि-पदं

१३९. आहाकम्मं 'अणवज्जे' त्ति मणं पहारेत्ता भवति, से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते[10] कालं करेइ—नत्थि तस्स आराहणा। से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेइ—अत्थि तस्स आराहणा ॥

१४०. एएणं गमेणं नेयव्वं—कीयगडं[11], ठवियं[12], रइयं[13], कंतारभत्तं 'दुब्भिक्खभत्तं, वद्दलियाभत्तं'[14], गिलाणभत्तं, सेज्जायरपिंडं, रायपिंडं[15] ॥

---

१. ओवग्गहे (ता)।
२. भ० १।४२०।
३. मणुस्स० (ता)।
४. भ० ५।१३६।
५. मिच्छा (अ, क, ब, म, स)।
६. भ० १।४२०—एवमाइक्खामि जाव एवामेव।
७. भ० १।४२१।
८. पुहुत्तं (ता)।
९. जी० ३; नेरइय-उद्देसो २।
१०. ॰लोतिय॰ (अ, स)।
११. कीयकडं (क, ब), उद्देसियं कीयकडं (ता)
१२. ठवियकं (क, ता), ठवितकडं (ब)।
१३. रतियकं (क, ब), रइयकं (ता)।
१४. ॰वत्तं वद्दलियावत्तं (ब)।
१५. × (क)।

सत्तमो उद्देसो

परमाणु-खंधाणं एयणादि-पदं

१५०. परमाणुपोग्गले णं भते ! एयति वेयति[1] °चलति फदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ°, त त भाव परिणमति ?
गोयमा ! सिय एयति वेयति जाव त त भाव परिणमति, सिय नो एयति जाव नो त त भाव परिणमति ॥

१५१. दुप्पएसिए ण भते ! खधे एयति जाव[2] त त भाव परिणमति ?
गोयमा ! सिय एयति जाव त त भाव परिणमति । सिय नो एयति जाव नो त त भावं परिणमति । सिय देसे एयति, देसे नो एयति ॥

१५२. तिप्पएसिए ण भते ! खधे एयति ?
गोयमा ! सिय एयति, सिय नो एयति । सिय देसे एयति, नो देसे एयति । सिय देसे एयति, नो देसा एयति । सिय देसा एयति, नो देसे एयति ॥

१५३. चउप्पएसिए ण भते ! खधे एयति ?
गोयमा ! सिय एयति, सिय नो एयति । सिय देसे एयति, नो देसे एयति । सिय देसे एयति, नो देसा एयति । सिय देसा एयति, नो देसे एयति । सिय देसा एयति, नो देसा एयति ।
जहा चउप्पएसिओ तहा पचपएसिओ, तहा जाव अणंतपएसिओ ॥

परमाणु-खंधाण छदादि-पदं

१५४ परमाणुपोग्गले ण भते ! असिधार वा खुरधार वा ओगाहेज्जा ?
हता ओगाहेज्जा[3] ।
से ण भते ! तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ?
गोयमा नो तिणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थ कमइ ॥

१५५. एव जाव असखेज्जपएसिओ ॥

१५६ अणतपएसिए ण भते ! खधे असिधार वा खुरधार वा ओगाहेज्जा ?
हता ओगाहेज्जा ।
से ण भते ! तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ?
गोयमा ! अत्थेगइए छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा, अत्थेगइए नो छिज्जेज्ज वा नो भिज्जेज्ज वा ॥

---

१ भ० पा० — [illegible] जाव त ।
२ भ० ५।१५० ।
३. ओगाहिज्ज (क, व, म, स) ।

गोयमा ! अत्थेगइए विणिहायमावज्जेज्जा, अत्थेगइए नो विणिहाय-मावज्जेज्जा।

से ण भते ! उदगावत्त वा उदगविदु वा ओगाहेज्जा ?
हता ओगाहेज्जा।

से ण भते ! तत्थ परियावज्जेज्जा ?
गोयमा ! अत्थेगइए परियावज्जेज्जा, अत्थेगइए नो परियावज्जेज्जा° ॥

परमाणु-खंधाणं सअड्ढसमज्झादि-पदं

१६० परमाणुपोग्गले ण भते ! कि सअड्ढे[1] समज्झे सपएसे ? उदाहु अणड्ढे अमज्झे अपएसे ?

गोयमा ! अणड्ढे अमज्झे अपएसे, नो सअड्ढे नो समज्झे नो सपएसे ॥

१६१ दुप्पएसिए ण भते ! खधे कि सअड्ढे समज्झे सपएसे ? उदाहु[2] अणड्ढे अमज्झे अपएसे ?

गोयमा ! सअड्ढे अमज्झे सपएसे, नो अणड्ढे नो समज्झे नो अपएसे ॥

१६२ तिप्पएसिए ण भते ! खधे पुच्छा।
गोयमा ! अणड्ढे समज्झे सपएसे, नो सअड्ढे नो अमज्झे नो अपएसे ॥

१६३ जहा दुप्पएसिओ तहा जे समा ते भाणियव्वा, जे विसमा ते जहा तिप्पएसिओ तहा भाणियव्वा ॥

१६४. सखेज्जपएसिए ण भते ! खधे कि सअड्ढे ? पुच्छा।
गोयमा ! सिय सअड्ढे अमज्झे सपएसे, सिय अणड्ढे समज्झे सपएसे।
जहा सखेज्जपएसिओ तहा असखेज्जपएसिओ वि, अणतपएसिओ वि ॥

परमाणु-खंधाणं परोप्परं फुसणा-पदं

१६५. परमाणुपोग्गले ण भते ! परमाणुपोग्गल फुसमाणे कि—
१ देसेण देस फुसइ २ देसेहि देसे फुसइ ३ देसेण सव्व फुसइ ४ देसेहि देसे फुसइ ५ देसेहि देसे फुसइ ६ देसेहि सव्व फुसइ ७ सव्वेण देस फुसइ ८. सव्वेण देसे फुसइ ९ सव्वेण सव्व फुसइ[3] ?

गोयमा ! १ नो देसेण देस फुसइ २. नो देसेण देसे फुसइ ३. नो देसेण सव्व फुसइ ४ नो देसेहि देस फुसइ ५ नो देसेहि देसे फुसइ ६ नो देसेहि सव्व

---

१. सअड्ढे (क)।
२ उदाहु (क)।
३. (१) देशेन देशम् (२) देशेन देशान् (३) देशेन सर्वम् (४) देशै देशम् (५) देशै देशान् (६) देशै. सर्वम् (७) सर्वेण देशम्। (८) सर्वेण देशान् (९) सर्वेण सर्वम्।

१७१. एगपएसोगाढे ण भते ! पोग्गले निरेए कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल। एव जाव असखेज्ज-पएसोगाढे ॥

१७२ एगगुणकालए ण भते ! पोग्गले कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल। एव जाव अणत-गुणकालए।
एव वण्ण-गध-रस-फास जाव[1] अणतगुणलुक्खे। एव सुहुमपरिणए पोग्गले, एव वादरपरिणए पोग्गले ॥

१७३ सद्दपरिणए ण भते ! पोग्गले कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग ॥

१७४ असद्दपरिणए[2] °ण भते ! पोग्गले कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल° ॥

परमाणु-खंधाण अंतरकाल-पद

१७५. परमाणुपोग्गलस्स ण भते ! अतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल ॥

१७६ दुपएसियस्स ण भते ! खधस्स अतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण अणत काल। एव जाव अणतपएसिओ ॥

१७७ एगपएसोगाढस्स ण भते ! पोग्गलस्स सेयस्स अतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल। एव जाव असखेज्ज-पएसोगाढे ॥

१७८. एगपएसोगाढस्स ण भते। पोग्गलस्स निरेयस्स अतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग। एव जाव असखेज्जपएसोगाढे।
वण्ण-गध-रस-फास-सुहुमपरिणय-बायरपरिणयाणं—एतेसि 'ज चेव'[3] सचिट्ठणा त चेव अतर पि भाणियव्व[4] ॥

१७९. सद्दपरिणयस्स ण भते ! पोग्गलस्स अतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल ॥

१८०. असद्दपरिणयस्स ण भते ! पोग्गलस्स अतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग ॥

---

१. [illegible]
२. [illegible] जहा एगगुण-[illegible]
३. जच्चेव (अ, क, ता, व, म)।
४. भ० ५।१७२।

°गोयमा ! एवं वुच्चइ—असुरकुमारा सारंभा सपरिग्गहा, नो अणारंभा अपरिग्गहा° ॥

१८६ एव जाव[1] थणियकुमारा । एगिदिया जहा[2] नेरइया ॥

१८७ बेइदिया ण भते ! कि सारभा सपरिग्गहा ? उदाहु अणारभा अपरिग्गहा ?
त चेव[3] बेइदिया ण पुढविकाय समारभति जाव[4] तसकाय समारभति, सरीरा परिग्गहिया भवति, कम्मा परिग्गहिया भवति, बाहिरा[5] भड-मत्तोवगरणा परिग्गहिया भवति, 'सचित्ताचित्त-मीसयाइ दव्वाइ परिग्गहियाइ भवति'[6] ॥

१८८ एव जाव[7] चउरिदिया ॥

१८९ पचिदियतिरिक्खजोणिया ण भते ! किं सारभा सपरिग्गहा ? उदाहु अणारभा अपरिग्गहा ?
त चेव जाव[8] कम्मा परिग्गहिया भवति, टका कूडा सेला सिहरी पब्भारा परिग्गहिया भवति, जल-थल-बिल-गुह-लेणा परिग्गहिया भवति, उज्झर-निज्झर चिल्लल-पल्लल[9]-वप्पिणा परिग्गहिया भवति, अगड-तडाग[10]-दह-नईओ वावी-पुक्खरिणीदीहिया गुजालिया सरा सरपतियाओ सरसरपतियाओ बिलपतियाओ परिग्गहियाओ भवति, आरामुज्जाण[11]-काणणा वणा वणसडा वणराईओ[12] परिग्गहियाओ भवति, देवउल-सभ-पव-थूभ-खाइय-परिखाओ परिग्गहियाओ भवति, पागार-अट्टालग-चरिय-दार-गोपुरा परिग्गहिया भवति, पासाद-घर-सरण-लेण-आवणा परिग्गहिया भवति, सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहा परिग्गहिया भवति, सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीय-सदमाणियाओ परिग्गहियाओ भवति, लोही-लोहकडाह-कडुच्छया परिग्गहिया भवति, भवणा परिग्गहिया भवति, देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्सीओ तिरिक्ख-जोणिया तिरिक्खजोणिणीओ परिग्गहिया भवति, आसण-सयण-खभ-भड-सचित्ताचित्त-मीसयाइ दव्वाइं परिग्गहियाइ भवति । से तेणट्ठेण ॥

१९० जहा तिरिक्खजोणिया तहा मणुस्सा वि भाणियव्वा । वाणमतर-जोइस-वेमाणिया जहा भवणवासी तहा नेयव्वा[13] ॥

---

१. पू० प० २ ।
२. भ० ५।१८२, १८३ ।
३, ४. भ० ५।१८३ ।
५. [illegible] (अ, क, त, ब, म, स) ।
६. [illegible] ।
७. भ० [illegible] ।
८. भ० ५।१८३ ।
९. पित्लव (व) ।
१०. तलाग (क, ता, ब, म) ।
११. °मुज्जाणा (क, ब, स) ।
१२. वणराईओ (अ, ता, स) ।
१३. भ० ५।१८४, १८५ ।

तए ण से नियठिपुत्ते अणगारे जेणामेव नारयपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नारयपुत्त अणगार एव वयासी—सव्वपोग्गला ते अज्जो ! कि सअड्ढा समज्झा सपएसा ? उदाहु अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?
अज्जो ! त्ति नारयपुत्ते अणगारे नियठिपुत्त अणगार एव वयासी—सव्वपोग्गला मे अज्जो ! सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ।

२०२. तए ण से नियठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्त अणगार एव वयासी—जइ ण ते अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा, कि—
दव्वादेसेण अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?
खेत्तादेसेण अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा [1]•समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?०
कालादेसेणं [2]•अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?०
भावादेसेण [3]•अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?०
तए ण से नारयपुत्ते अणगारे नियठिपुत्त अणगारं एव वयासी—दव्वादेसेण वि मे अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा,
'खेत्तादेसेण वि, कालादेसेण वि, भावादेसेण वि'[4] ।।

२०३ तए ण से नियठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्त अणगार एव वयासी—जइण अज्जो ! दव्वादेसेण सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा, एव ते परमाणुपोग्गले वि सअड्ढे समज्झे सपएसे, नो अणड्ढे अमज्झे अपएसे ।
जइ ण अज्जो ! खेत्तादेसेण वि सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, एव ते एगपएसोगाढे वि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपएसे ।
जइ ण अज्जो ! कालादेसेण सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, एव ते एगसमयट्ठितीए वि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपएसे[5] ।

---

१ [illegible] ।
२ [illegible] ।
३ [illegible] ।
४ एव खेत्तकालभावादेसेण वि नेतव्व (ता) ।
५ सपएसे ३ त चेव (अ, क, ता, ग) ।

ज्जगुणा, खेत्तादेसेण चेव सपएसा असंखेज्जगुणा, दव्वादेसेण सपएसा विसेसाहिया, कालादेसेण सपएसा विसेसाहिया, भावादेसेण सपएसा विसेसाहिया ॥

२०७ तए ण से नारयपुत्ते अणगारे नियठिपुत्त अणगार वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ सम्म विणएण भज्जो-भुज्जो खामेति, खामेत्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

जीवाणं-वुड्ढि-हाणि-अवट्ठिइ-पदं

२०८ भतेत्ति ! भगव गोयमे समण[1] •भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता॰ एव वयासी—जीवा ण भते ! कि वड्ढति ? हायति ? अवट्ठिया ?
गोयमा ! जीवा नो वड्ढति, नो हायति, अवट्ठिया ॥

२०९. नेरइया ण भते ! कि वड्ढति ? हायति ? अवट्ठिया ?
गोयमा ! नेरइया वड्ढति वि, हायति वि, अवट्ठिया वि ॥

२१०. जहा नेरइया एव जाव[2] वेमाणिया ॥

२११. सिद्धा ण भते ! पुच्छा ।
गोयमा ! सिद्धा वड्ढति, नो हायति, अवट्ठिया वि ॥

२१२ जीवा ण भते ! केवतिय काल अवट्ठिया ?
गोयमा ! सव्वद्ध ॥

२१३ नेरइया ण भते ! केवतिय काल वड्ढति ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग ॥

२१४ एव हायति वि[3] ॥

२१५ नेरइया ण भते ! केवतिय काल अवट्ठिया ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण चउवीस मुहुत्ता ॥

२१६ एव 'सत्तसु वि'[4] पुढवीसु 'वड्ढति, हायति' भाणियव्व, नवर—अवट्ठिएसु इम नाणत्त, त जहा—रयणप्पभाए पुढवीए अडयालीस मुहुत्ता, सक्करप्पभाए चोद्दस राइदिया[5], वालुयप्पभाए मास, पकप्पभाए दो मासा, धूमप्पभाए चत्तारि मासा, तमाए अट्ठ मासा, तमतमाए बारस मासा ॥

२१७ असुरकुमारा वि वड्ढति, हायति जहा नेरइया । अवट्ठिया जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण अट्ठचत्तालीस[6] मुहुत्ता ॥

२१८ एव दसविहा वि ॥

---

१ [illegible]—समन [illegible] एव ।
२ [illegible] ।
३ [illegible] ।
४ [illegible] ।
५ राइदियाइ (अ, क, ब, म), राइदिया ण (स) ।
६ अडतालीस (ता) ।

२३८. से केणट्ठेण ? गोयमा ! दिया सुभा पोग्गला सुभे पोग्गलपरिणामे, राइं[1] असुभा पोग्गला असुभे पोग्गलपरिणामे । से तेणट्ठेण ।।

२३९. नेरइयाण भंते ! किं उज्जोए ? अंधयारे ?
गोयमा ! नेरइयाण नो उज्जोए, अंधयारे ।।

२४०. से केणट्ठेण ?
गोयमा ! नेरइयाण असुभा पोग्गला असुभे पोग्गलपरिणामे । से तेणट्ठेण ।।

२४१. असुरकुमाराण भंते ! किं उज्जोए ? अंधयारे ?
गोयमा ! असुरकुमाराण उज्जोए, नो अंधयारे ।।

२४२ से केणट्ठेण ? गोयमा ! असुरकुमाराणं सुभा पोग्गला सुभे पोग्गलपरिणामे । से तेणट्ठेण । जाव[2] थणियकुमाराण[3] ।।

२४३. पुढविक्काइया जाव[4] तेइंदिया 'जहा नेरइया'[5] ।।

२४४. चउरिंदियाण भंते ! किं उज्जोए ? अंधयारे ?
गोयमा ! उज्जोए वि, अंधयारे वि ।।

२४५. से केणट्ठेण ? गोयमा ! चउरिंदियाण सुभासुभा य पोग्गला सुभासुभे य पोग्गलपरिणामे । से तेणट्ठेण ।।

२४६ एवं जाव[6] मणुस्साण ।।

२४७. वाणमंतर-जोइस वेमाणिया जहा असुरकुमारा[7] ।।

मणुस्सखेत्ते समयादि-पदं

२४८ अत्थि ण भंते ! नेरइयाण तत्थगयाणं एवं पण्णायए, तं जहा—समया इ वा, आवलिया इ वा जाव[8] ओसप्पिणी इ वा, उस्सप्पिणी इ वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ।।

२४९. से केणट्ठेणं[9] °भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइयाण तत्थगयाणं नो एवं पण्णायए, तं जहा°—समया इ वा, आवलिया इ वा जाव[10] ओसप्पिणी इ वा, उस्सप्पिणी इ वा ?
गोयमा ! इह तेसिं माणं, इह तेसिं पमाणं, इह तेसिं एवं पण्णायए, तं जहा—समया इ वा जाव उस्सप्पिणी इ वा । से तेणट्ठेणं जाव नो एवं पण्णायए, तं जहा—समया इ वा जाव उस्सप्पिणी इ वा ।।

---

१. राति (ता, ब, म) ।
२. [illegible] (अ, क, ता, ब, म, स)
३. थणियाणं (क, ता, ब, म, स) ।
४. पू० प० २ ।
५. नेरइया जहा (क, ता, ब, म), भ० ५।२३९, २४० ।
६. पू० प० २ ।
७. भ० ५।२४१, २४२ ।
८. ठा० २।३८७-३८९ ।
९. सं० पा०—केणट्ठेण जाव समया ।
१०. ठा० २।३८७-३८९ ।

तप्पभिइं च णं ते पासावच्चेज्जा थेरा भगवंतो समणं भगवं महावीरं पच्चभि-
जाणंति सव्वण्णू सव्वदरिसी ॥

२५६ तए ण ते थेरा भगवतो समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भ अतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पच-महव्वइय सपडिक्कमण धम्म उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए ।
अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध ॥

२५७ तए ण ते पासावच्चिज्जा थेरा भगवतो चाउज्जामाओ धम्माओ पचमहव्वइय सपडिक्कमण धम्म उवसपज्जित्ताण विहरति जाव[1] चरिमेहि उस्सास-निस्सासेहि सिद्धा[2] •बुद्धा मुक्का परिनिव्वुडा० सव्वदुक्खप्पहीणा । अत्थेगतिया देवलोएसु[3] उववण्णा ॥

देवलोय-पदं

२५८. कइविहा ण भते ! देवलोगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा देवलोगा पण्णत्ता, त जहा—भवणवासी 'वाणमतर-जोतिसिय-वेमाणियभेदेण'[4] ।
भवणवासी दसविहा, वाणमतरा अट्ठविहा, जोतिसिया पचविहा वेमाणिया दुविहा ।

संगहणी-गाहा

किमिद रायगिह ति य, उज्जोए अधयार-समए य ।
पासतिवासिपुच्छा, रातिदिय देवलोगा य ॥१॥

२५९. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[5] ॥

दसमो उद्देसो

२६०. तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नगरी, जहा पढमिल्लो उद्देसओ[6] तहा नेयव्वो एसो वि, नवर—चदिमा भाणियव्वा ॥

---

१. भ० १।४३३ ।
२. भ० पा०—सिद्धा जाव सव्व० ।
३. देवा देवलोएसु (अ, क, ता, ब, म) ।
४. वाणमतरा जोइसिया वेमाणिया भेदेण (अ, ता, म) ।
५. भ० १।५१ ।
६. अस्यैव शतकस्य ।

सुवामतराए चेव, सुपरिकम्मतराए चेव, जे वा से वत्थे कद्दमरागरत्ते ? जे वा से वत्थे खजणरागरत्ते ?

भगव ! तत्थ ण जे से[1] कद्दमरागरत्ते, से ण वत्थे[2] दुद्धोयतराए चेव, दुवामतराए चेव, दुप्परिकम्मतराए चेव, एवामेव गोयमा ! नेरइयाण पावाइ कम्माइ गाढीकयाइ, चिक्कणीकयाइ[3], सिलिट्ठीकयाइ[4], खिलीभूताइ[5] भवति । सपगाढ पि य ण ते वेदण वेदेमाणा नो महानिज्जरा, नो महापज्जवसाणा भवति ।

से जहा वा केइ पुरिसे अहिगरणि आउडेमाणे[6] महया-महया सद्देण, महया-महया घोसेण, महया-महया परपराघाएण नो सचाएइ तीसे अहिगरणीए केइ अहाबायरे पोग्गले परिसाडित्तए, एवामेव गोयमा ! नेरइयाण पावाइ कम्माइ गाढीकयाइ[7], •चिक्कणीकयाइ, सिलिट्ठीकयाइ, खिलीभूताइ भवति । सपगाढ पि य ण ते वेदण वेदेमाणा नो महानिज्जरा,° नो महापज्जवसाणा[8] भवति ।

भगव ! तत्थ जे से[9] खजणरागरत्ते, से ण वत्थे सुद्धोयतराए चेव, सुवामतराए चेव, सुपरिकम्मतराए चेव, एवामेव गोयमा ! समणाण निग्गथाण अहाबायराइं कम्माइ सिढिलीकयाइ, निट्ठियाइ कयाइ[10], विप्परिणामियाइ खिप्पामेव विद्धत्थाइ भवति । जावतिय तावतिय पि ण ते वेदण वेदेमाणा महानिज्जरा, महापज्जवसाणा भवति ।

से जहानामए केइ पुरिसे सुक्क तणहत्थय जायतेयसि पक्खिवेज्जा, से नूण गोयमा !

से सुक्के तणहत्थए जायतेयसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसाविज्जति ?

हता मसमसाविज्जति ।

एवामेव गोयमा ! समणाण निग्गथाण अहाबायराइ कम्माइ[11], •सिढिलीकयाइ, निट्ठियाइ कयाइ, विप्परिणामियाइ खिप्पामेव विद्धत्थाइ भवति । जावतिय तावतिय पि ण ते वेदण वेदेमाणा महानिज्जरा,° महापज्जवसाणा भवति ।

से जहानामए केइ पुरिसे तत्तसि अयकवल्लसि उदगबिदु[12] •पक्खिवेज्जा, से नूण गोयमा ! से उदगबिदु तत्तसि अयकवल्लसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव विद्धसमागच्छइ ?°

हता विद्धसमागच्छइ ।

---

१. से वत्थे (क, व, स) ।
२. [illegible] (व, म) ।
३. [illegible] ।
४. सिढिलीकयाइ (व, म) ।
५. खिलीभूयाइ (अ, म) ।
६. आउडेमाणे (अ, क, ता, व, म, स) ।
७. स० पा०—गाढीकयाइ जाव नो ।
८. °साणाइ (अ, स) ।
९. से वत्थे (अ, क, ता, व, म, स) ।
१०. कडाइं (अ, क, ता, व, म, स) ।
११. स० पा०—कम्माइ जाव महा° ।
१२. स० पा०—उदगबिदु जाव हता ।

अप्पकम्मादीणं पोग्गलभेदादि-पदं

२२ से नूण भते ! अप्पकम्मस्स, अप्पकिरियस्स, अप्पासवस्स, अप्पवेदणस्स सव्वओ पोग्गला भिज्जति, सव्वओ पोग्गला छिज्जति, सव्वओ पोग्गला विद्धसति, सव्वओ पोग्गला परिविद्धसति, सया समिय पोग्गला भिज्जति, सया समिय पोग्गला छिज्जति, सया समिय पोग्गला विद्धंस्सति, सया समिय पोग्गला परिविद्धस्सति, सया समिय च ण तस्स आया सुरूवत्ताए[1] •सुवण्णत्ताए सुगध-त्ताए सुरसत्ताए सुफासत्ताए इट्ठत्ताए कतत्ताए पियत्ताए सुभत्ताए मणुण्णत्ताए मणामत्ताए इच्छियत्ताए अणभिज्झियत्ताए उड्ढत्ताए—नो अहत्ताए°, सुहत्ताए —नो दुक्खत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ?
हता गोयमा ! जाव परिणमति ॥

२३. से केणट्ठेण ? गोयमा ! से जहानामए वत्थस्स जल्लियस्स वा, पकियस्स वा, मइल्लियस्स वा, रइल्लियस्स[2] वा आणुपुव्वीए परिकम्मिज्जमाणस्स सुद्धेण वारिणा धोव्वेमाणस्स[3] सव्वओ पोग्गला भिज्जति जाव[4] परिणमति। से तेणट्ठेण ॥

कम्मोवचय-पदं

२४ वत्थस्स ण भते ! पोग्गलोवचए किं पयोगसा ? वीससा ?
गोयमा ! पयोगसा वि, वीससा वि ॥

२५ जहा ण भते ! वत्थस्स ण पोग्गलोवचए पयोगसा वि, वीससा वि, तहा ण 'जीवाण कम्मोवचए'[5] कि पयोगसा ? वीससा ?
गोयमा ! पयोगसा[6], नो वीससा ॥

२६ से केणट्ठेण ? गोयमा ! जीवाण तिविहे पयोगे पण्णत्ते, त जहा—मणप्पयोगे, वइप्पयोगे, कायप्पयोगे। इच्चेएण तिविहेण पयोगेण जीवाण कम्मोवचए पयोगसा, नो वीससा।
एव सव्वेसि पचिदियाण तिविहे पयोगे भाणियव्वे।
पुढवीकाइयाण एगविहेण पयोगेण, एव जाव[7] वणस्सइकाइयाण।
विगलिदियाण दुविहे पयोगे पण्णत्ते, त जहा—वइपयोगे,[8] कायपयोगे य।

---

१. सं० पा०—[illegible] जाव सुहत्ताए।
२. [illegible] (ब, म, स)।
३. धा[illegible] (ख, क, ब, म)।
४. भ० [illegible]।
५ भते ! जीवस्स पुग्गलोवचए (व)।
६. पओगसा (स)।
७. भ० १।४३७।
८. वय° (क, ब, म, स)।

कम्मपगडी बंध विवेयण-पदं

३३ कति णं भंते ! कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—१. णाणावरणिज्जं २. दरिसणावरणिज्जं[1] •३. वेदणिज्जं ४. मोहणिज्जं ५. आउगं ६. नामं ७. गोयं° ८. अंतराइयं ॥

३४. नाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स केवतियं कालं बंधट्ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।
[2]•दरिसणावरणिज्जं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ° ।
वेदणिज्जं जहण्णेणं दो समया, उक्कोसेणं[3] •तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ° ।
मोहणिज्जं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ, सत्त य वाससहस्साणि अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।
आउगं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाणि पुव्वकोडितिभागमब्भहियाणि, कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।
नाम-गोयाणं जहण्णेणं अट्ठ मुहुत्ता, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, दोण्णि य वाससहस्साणि अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।
अंतराइयं[4] •जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ° ॥

३५ नाणावरणिज्जं[5] णं भंते ! कम्मं किं इत्थी बंधइ ? पुरिसो बंधइ ? नपुंसओ बंधइ ? नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुंसओ बंधइ ?
गोयमा ! इत्थी वि बंधइ, पुरिसो वि बंधइ, नपुंसओ वि बंधइ । नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुंसओ सिय बंधइ सिय नो बंधइ ।
एवं आउगवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ ॥

३६ आउगं णं भंते ! कम्मं किं इत्थी बंधइ ? पुरिसो बंधइ ? नपुंसओ बंधइ ? 'नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुंसओ बंधइ ?'[6]

---

१. दसणा° (ब); स० पा०—दरिसणावरणिज्जं जाव [illegible] ।
२. स० पा०—एवं दरिसणावरणिज्जं पि ।
३. स० पा०—जहा नाणावरणिज्जं ।
४. स० पा०—जहा नाणावरणिज्जं ।
५. नाणावरणिज्जे (अ, स) ।
६. पुच्छा (अ, क, ता, ब, म, स) ।

४२. नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म कि पज्जत्तए वधइ ? अपज्जत्तए वधइ ? नोपज्जत्तए नोअपज्जत्तए वधइ ?

गोयमा ! पज्जत्तए भयणाए, अपज्जत्तए वधइ। नोपज्जत्तए नोअपज्जत्तए न वधइ।

एव आउगवज्जाओ सत्त वि। आउग हेट्ठिल्ला दो भयणाए, उवरिल्ले न वधइ॥

४३. नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म कि भासए वधइ ? अभासए वधइ ?

गोयमा ! दो वि भयणाए।

एव वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि। वेदणिज्ज भासए वधइ, अभासए भयणाए॥

४४ नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म कि परित्ते वधइ ? अपरित्ते वधइ ? नोपरित्ते नोअपरित्ते वधइ ? गोयमा ! परित्ते भयणाए, अपरित्ते वधइ। नोपरित्ते नोअपरित्ते न वधइ। एव आउगवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ। आउय[1] परित्ते वि, अपरित्ते वि भयणाए, नोपरित्ते नोअपरित्ते न वधइ॥

४५. नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म किं आभिणिवोहियनाणी वधइ ? सुयनाणी वधइ ? ओहिनाणी वधइ ? मणपज्जवनाणी वधइ ? केवलनाणी वधइ ?

गोयमा ! हेट्ठिल्ला चत्तारि भयणाए। केवलनाणी न वंधइ।

एव वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि। वेदणिज्ज हेट्ठिल्ला चत्तारि वधति, केवलनाणी भयणाए॥

४६. नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म कि मइअण्णाणी वधइ ? सुयअण्णाणी वधइ ? विभगनाणी वधइ ?

गोयमा ! आउगवज्जाओ सत्तवि वधति, आउग भयणाए॥

४७. नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म कि मणजोगी वधइ ? वइजोगी[2] वधइ ? कायजोगी वधइ ? अजोगी वधइ ?

गोयमा ! हेट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए, अजोगी न वधइ।

एव वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि। वेदणिज्जं हेट्ठिल्ला वधति, अजोगी न वधइ॥

४८. नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म कि सागारोवउत्ते[3] वधइ ? अणागारोवउत्ते वधइ ?

गोयमा ! अट्ठसु वि भयणाए॥

४९. नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म कि आहारए वधइ ? अणाहारए वधइ ?

गोयमा ! दो वि भयणाए।

एव वेदणिज्जआउगवज्जाण छण्हं। वेदणिज्जं आहारए वधइ, अणाहारए भयणाए। आउए आहारए भयणाए, अणाहारए न वधइ॥

---

१. [illegible] (अ, ब, म)।

२. [illegible] (ब, म)।

३ सागारोवयुत्ते (अ, स)।

५८. नेरइया ण भंते ! कालादेसेण किं सपदेसा ? अपदेसा ?
गोयमा ! १. सव्वे वि ताव होज्जा सपदेसा २ अहवा सपदेसा य अपदेसे य ३. अहवा सपदेसा य अपदेसा य ॥

५९ एव जाव[1] थणियकुमारा ॥

६० पुढविकाइया ण भते ! कि सपदेसा ? अपदेसा ?
गोयमा ! सपदेसा वि, अपदेसा वि ॥

६१ एव जाव[2] वणप्फइकाइया[3] ॥

६२. सेसा जहा[4] नेरइया तहा जाव[5] सिद्धा ॥

६३ आहारगाण जीवेगिदियवज्जो तियभगो। अणाहारगाण जीवेगिंदियवज्जा[6] छब्भगा एव भाणियव्वा—१ सपदेसा वा २. अपदेसा वा ३. अहवा सपदेसे य अपदेसे य ४ अहवा सपदेसे य अपदेसा य ५ अहवा सपदेसा य अपदेसे य ६ अहवा सपदेसा य अपदेसा य। सिद्धेहि तियभगो।
भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया जहा[7] ओहिया। नोभवसिद्धिय-नोअभवसिद्धिय-जीव-सिद्धेहि तियभंगो।
सण्णीहिं जीवादिओ तियभगो। असण्णीहि एगिदियवज्जो तियभगो। नेरइयदेव-मणुएहिं छब्भगो। नोसण्णि-नोअसण्णि-जीव-मणुय-सिद्धेहि तियभगो।
सलेसा जहा ओहिया। कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा जहा आहारओ, नवर—जस्स अत्थि एयाओ। तेउलेस्साए जीवादिओ तियभगो, नवर—पुढविक्काइएसु, आउवणप्फतीसु छब्भगा। पम्हलेस्स-सुक्कलेस्साए जीवादिओ तियभगो। अलेसेहिं जीव-सिद्धेहि तियभगो। मणुएसु छब्भगा।
सम्मदिट्ठीहि जीवादिओ तियभगो। विगलिदिएसु छब्भगा। मिच्छदिट्ठीहि एगिदियवज्जो तियभगो। सम्मामिच्छदिट्ठीहि छब्भगा। सजएहि जीवादिओ तियभगो। असजएहिं[8] एगिदियवज्जो तियभगो। सजयासजएहि तियभगो जीवादिओ। नोसजय-नोअसजय-नोसजयासजय-जीव-सिद्धेहि तियभगो।
सकसाईहिं[9] जीवादिओ तियभगो। एगिदिएसु अभगक। कोहकसाईहि जीवेगिदियवज्जो तियभगो। देवेहि छब्भगा। माणकसाई-मायाकसाईहिं जीवेगि-

---

१ पू० प० २।
२. पू० प० २।
३. वणस्सइ० (क)।
४. भ० ६।५५, ५८।
५. पू० प० २।
६. [illegible] य इत्येवरूप एक एव भगकः, बहूना विग्रहगत्यापन्नाना सप्रदेशानामप्रदेशाना च लाभात् (वृ)।
७ भ० ६।५४, ५७।
८. असजएहि (क, म)।
९ सकसाईहि (ता)।

६५. सव्वजीवाण एव पुच्छा।
गोयमा! नेरइया अपच्चक्खाणी जाव[1] चउरिंदिया [सेसा दो पडिसेहेयव्वा[2]]। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया नो पच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी वि, पच्चक्खाणा-पच्चक्खाणी वि। मणूसा तिण्णि वि। सेसा जहा नेरइया॥

६६. जीवा णं भंते! किं पच्चक्खाणं जाणंति? अपच्चक्खाणं जाणंति? पच्च-क्खाणापच्चक्खाणं जाणंति?
गोयमा! जे पंचिंदिया ते तिण्णि वि जाणंति, अवसेसा 'पच्चक्खाणं न जाणंति'[3], अपच्चक्खाणं न जाणंति, पच्चक्खाणापच्चक्खाणं न जाणंति॥

६७. जीवा णं भंते! किं पच्चक्खाणं कुव्वंति? अपच्चक्खाणं कुव्वंति? पच्च-क्खाणापच्चक्खाणं कुव्वंति?
जहा ओहिओ तहा कुव्वणा॥

६८. जीवा णं भंते! किं पच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया? अपच्चक्खाणनिव्वत्तिया-उया? पच्चक्खाणापच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया?
गोयमा! जीवा य, वेमाणिया य पच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया, तिण्णि वि। अवसेसा अपच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया।

संगहणी-गाहा

१. पच्चक्खाण २ जाणइ, ३ कुव्वइ तिण्णेव ४ आउनिव्वत्ती।
सपएसुद्देसम्मि य, एमेए दंडगा चउरो॥१॥

६९. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति[4]॥

पंचमो उद्देसो

तमुक्काय-पदं

७०. किमियं भंते! तमुक्काए त्ति पवुच्चति? किं पुढवी[5] तमुक्काए त्ति पवुच्चति? आऊ[6] तमुक्काए त्ति पवुच्चति?
गोयमा! नो पुढवि तमुक्काए त्ति पवुच्चति, आऊ तमुक्काए त्ति पवुच्चति॥

---

१. [illegible]
२. [illegible]
३. [illegible] (ता, म)।
४. भ० १।५१।
५. पुढवि (अ, क, ता, स)।
६. आउ (अ, क, ब, म, स)।

एकाह वा, दुयाह वा, तियाह वा, उक्कोसेण छम्मासे वीईवएज्जा, अत्थेगतिय तमुक्काय वीईवएज्जा अत्थेगतिय तमुक्काय नो वीईवएज्जा। एमहालए ण गोयमा! तमुक्काए पण्णत्ते ॥

७६. अत्थि ण भते! तमुक्काए गेहा इ वा? गेहावणा इ वा?
णो तिणट्ठे समट्ठे ॥

७७. अत्थि ण भते! तमुक्काए गामा इ वा? जाव[1] सण्णिवेसा इ वा?
णो तिणट्ठे समट्ठे ॥

७८ अत्थि ण भते! तमुक्काए ओराला बलाहया ससेयति? सम्मुच्छति? वास वासति?
हता अत्थि ॥

७९. त भते! कि देवो पकरेति? असुरो पकरेति? नागो पकरेति?
गोयमा! देवो वि पकरेति, असुरो वि पकरेति, नागो[2] वि पकरेति ॥

८०. अत्थि ण भते! तमुक्काए बादरे थणियसद्दे? बादरे विज्जुयारे[3]?
हता अत्थि ॥

८१. त भते! कि देवो पकरेति? असुरो पकरेति? नागो पकरेति?
तिण्णि वि पकरेति ॥

८२. अत्थि ण भते! तमुक्काए बादरे पुढविकाए? बादरे अगणिकाए?
णो तिणट्ठे समट्ठे, नण्णत्थ विग्गहगतिसमावन्नएण ॥

८३ अत्थि ण भते! तमुक्काए चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-ताराख्वा?
णो तिणट्ठे समट्ठे, पलियस्सओ पुण अत्थि ॥

८४. अत्थि ण भते! तमुक्काए चदाभा ति वा? सूराभा ति वा?
णो तिणट्ठे समट्ठे, 'कादूसणिया पुण'[4] सा ॥

८५ तमुक्काए ण भते! केरिसए वण्णएण पण्णत्ते?
गोयमा! काले कालोभासे गभीरे[5] लोमहरिसजणणे भीमे उत्तासणए परमकिण्हे वण्णेण पण्णत्ते। देवे वि ण अत्थेगतिए जे ण तप्पढमयाए पासित्ता ण खुभाएज्जा[6], अहेण अभिसमागच्छेज्जा तओ पच्छा[7] सीह-सीह तुरिय-तुरिय खिप्पामेव वीतीवएज्जा ॥

८६. तमुक्कायस्स ण भते? कति नामधेज्जा पण्णत्ता?

---

१ भ० ३।८६।
२ नागो (ता, म)।
३ विज्जुयारा (अ), विज्जुए (क, ता, ब, म)।
४ कादूसणिया पुण (ता)।
५ गभीर (अ, क, ता, ब, स, वृ)।
६ खोभाएज्ज (क, ता, म); खभाएज्जा (स)।
७ एतत् पद वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम्।

लोगंतियदेव-पदं

१०६ एएसि णं अट्ठण्हं कण्हराईणं अट्ठसु ओवासंतरेसु अट्ठ लोगंतिगविमाणा पण्णत्ता, तं जहा—१ अच्ची २. अच्चिमाली ३. वइरोयणे ४ पभंकरे[1] ५. चंदाभे ६ सूराभे ७ सुक्काभे[2] ८ सुपइट्ठाभे, 'मज्झे रिट्ठाभे'[3] ॥

कृष्णराजी : स्थापना
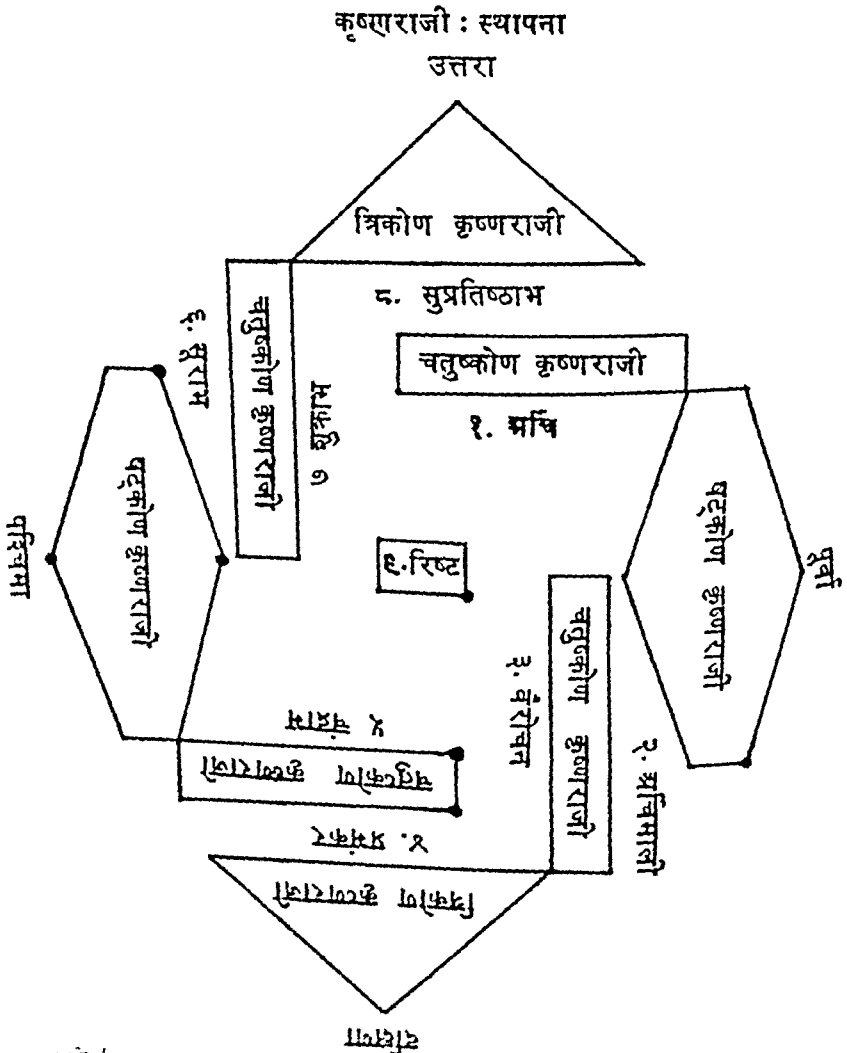
१. पभंकरे (ता)।
२. [illegible] (ता)।
३. इह [illegible] अष्टासु [illegible] तिषु विमानेषु वाच्येषु यत् कृष्णराजीनां मध्यमभागवर्ति रिष्टं विमानं नवमं उक्तं तद्विमानप्रस्तावाद् अवसेयम् (वृ)।

एएणं मुहुत्तपमाणेण तीसमुहुत्ता अहोरत्तो, पण्णरस अहोरत्ता पक्खो, दो पक्खा मासो, दो मासा उडू[1], तिण्णि उडू अयणे, दो[2] अयणा संवच्छरे, 'पंच सवच्छराइ'[3] जुगे, वीस जुगाइ वाससय, दस वाससयाइ वाससहस्स, सय वाससहस्साण वाससयसहस्स, चउरासीइ वाससयसहस्साणि से एगे पुव्वगे, चउरासीइ पुव्वगा सयसहस्साइ से एगे पुव्वे, एवं तुडियगे, तुडिए, अडडगे, अडडे, अववगे, अववे[4],हूहूयगे[5], हूहूए, उप्पलगे, उप्पले, पउमगे, पउमे, नलिणगे, नलिणे, अत्थनिउरगे, अत्थनिउरे[6],अउयगे, अउए[7], 'नउयगे, नउए, पउयगे, पउए[8] चूलियगे, चूलिया, सीसपहेलियगे, सीसपहेलिया । एताव ताव गणिए, एताव ताव गणियस्स विसए, तेण पर ओवमिए[9] ।।

ओवमिय-काल-पदं

१३३ से किं त ओवमिए ?
ओवमिए दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पलिओवमे य, सागरोवमे य ।।

१३४ 'से किं त पलिओवमे ? से किं त सागरोवमे ?'[10]

गाहा—

सत्थेण सुतिक्खेण वि, छेत्तु भेत्तु व[11] ज किर न सक्का ।
त परमाणु सिद्धा, वदंति आदि पमाणाण ।।१।।

अणताण परमाणुपोग्गलाण समुदय-समिति-समागमेण सा एगा उस्सण्हसण्हिया इ वा, सण्हसण्हिया इ वा, उड्ढरेणू[12] इ वा, तसरेणू इ वा, रहरेणू इ वा, वालग्गे[13] इ वा, लिक्खा इ वा, जूया इ वा, जवमज्झे इ वा, अगुले इ वा । अट्ठ उस्सण्हसण्हियाओ सा एगा सण्हसण्हिया, अट्ठ सण्हसण्हियाओ सा एगा उड्ढरेणू, अट्ठ उड्ढरेणूओ सा एगा तसरेणू, अट्ठ तसरेणूओ सा एगा रहरेणू, अट्ठ रहरेणूओ से एगे देवकुरु-उत्तरकुरुगाण मणुस्साण वालग्गे, 'एवं हरिवास-रम्मग-हेमवय-एरन्नवयाण, पुव्वविदेहाण मणुस्साण अट्ठ वालग्गा सा एगा

१ उदू (ता, व) ।
२ य (ता, व) ।
३ पंचसंवच्छरिए (अ, क, ता, ब, म, स) ।
४ [illegible] (ब म) ।
५ [illegible] (अ, क, म) ।
६ [illegible] (क, ता, व) ।
७ [illegible] (क, म), नउए (क); नज्जुए (व) ।
८ [illegible] (अ, ता, म), पज्जुए य० (क), पज्जुए य नज्जुए य (व) ।
९ उवमिए (अ, क, व, म, स) । तुलना—अ० सू० ४१७ ।
१० से किं त पलिओवमे सागरोवमे २ (अ, स), से किं त पलितोवमे २ (क, ता) ।
११ च (अ, क, व, म, स, वृ) ।
१२ उद्ध० (अ, क, ता, ब, म) ।
१३ वालग्गा (स) ।

एएण सागरोवमपमाणेण चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम-सुसमा १ तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमा २. दो[1] सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम-दूसमा[2] ३. एगा सागरोवमकोडाकोडी बायालीसाए वाससहस्सेहिं ऊणिया कालो दूसम-सुसमा ४. एक्कवीस वाससहस्साइं कालो दूसमा ५ एक्कवीस वाससहस्साइं कालो दूसम-दूसमा ६ ।

पुणरवि उस्सप्पिणीए एक्कवीस वाससहस्साइं कालो दूसम-दूसमा १. एक्कवीस वाससहस्साइं कालो दूसमा[3] २. •एगा सागरोवमकोडाकोडी बायालीसाए वाससहस्सेहिं ऊणिया कालो दूसम-सुसमा ३ दो सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम-दूसमा ४. तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमा° ५. चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम-सुसमा ६ ।

दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी, दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो उस्सप्पिणी, वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी उस्सप्पिणी य ॥

सुसम-सुसमाए भरहवास-पदं

१३५. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे इमीसे ओसप्पिणीए सुसम-सुसमाए समाए उत्तिमट्ठपत्ताए[4], भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभाव-पडोयारे[5] होत्था ?
गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था, से जहानामए—आलिंगपुक्खरे ति वा, एवं उत्तरकुरुवत्तव्वया नेयव्वा जाव[6] तत्थ णं बहवे भारया मणुस्सा मणुस्सीओ य आसयंति सयंति चिट्ठंति निसीयंति तुयट्टंति हसंति रमंति ललंति । तीसे णं समाए भारहे वासे तत्थ-तत्थ देसे-देसे तहिं-तहिं बहवे उद्दाला कोद्दाला जाव[7] कुस-विकुस-विसुद्धरुक्खमूला जाव[8] छव्विहा मणुस्सा अणुसज्जित्था, तं जहा—पम्हगंधा, मियगंधा, अममा, तेतली[9], सहा, सणिचारी ॥

१३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[10] ॥

---

१. दुन्नि (क) ।
२. दुसमा (ता, म) ।
३. सं० पा०—दूसमा जाव चत्तारि ।
४. उत्तमट्ठ० (म) ।
५. °पडोयारे (ता, व, म) ।
६. जी० ३; जं० २ ।
७. जी० ३, जं० २ ।
८. जी० ३; जं० २ ।
९. तेयतली (व) ।
१०. भ० १।५१ ।

१४५. अत्थि णं भंते ! सोहम्मीसाणाणं कप्पाणं अहे गेहा इ वा ? गेहावणा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१४६. अत्थि णं भंते ! ओराला बलाहया[1] ?
हंता अत्थि ।
देवो पकरेति, असुरो वि पकरेति, नो नाओ ।
एवं थणियसद्दे वि ।।

१४७. अत्थि णं भंते ! बादरे पुढवीकाए ? बादरे अगणिकाए ?
णो इणट्ठे समट्ठे, नन्नत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं ।।

१४८. अत्थि णं भंते ! चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारारूवा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१४९. अत्थि णं भंते ! गामा इ वा ? जाव[2] सण्णिवेसा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१५०. अत्थि णं भंते ! चंदाभा ति वा ? सूराभा ति वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।
एवं सणंकुमार-माहिंदेसु, नवरं—देवो एगो पकरेति । एवं बंभलोए वि । एवं बंभलोगस्स[3] उवरिं सव्वेहिं देवो पकरेति । पुच्छियव्वो य बादरे आउकाए, बादरे अगणिकाए, बादरे वणस्सइकाए । अण्णं तं चेव ।

संगहणी-गाहा

तमुकाए कप्पपणए, अगणी पुढवी य अगणि-पुढवीसु ।
आऊ तेऊ वणस्सई, कप्पुवरिमकण्हराईसु ।।१।।

आउयबंध-पदं

१५१. कतिविहे णं भंते ! आउयबंधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते, तं जहा—जातिनामनिहत्ताउए, गतिनामनिहत्ताउए, ठितिनामनिहत्ताउए, ओगाहणानामनिहत्ताउए, पएसनामनिहत्ताउए, अणुभागनामनिहत्ताउए । दंडओ जाव[4] वेमाणियाणं ।।

१५२. जीवा णं भंते ! किं जातिनामनिहत्ता ? गतिनामनिहत्ता[5] ? •ठितिनामनिहत्ता ? ओगाहणानामनिहत्ता ? पएसनामनिहत्ता ?० अणुभागनामनिहत्ता ?
गोयमा ! जातिनामनिहत्ता वि जाव अणुभागनामनिहत्ता वि । दंडओ जाव[6] वेमाणियाणं ।।

---

१. [illegible]

२. [illegible]

३. [illegible]

४. पू० प० २ ।

५. स० पा०—गतिनामनिहत्ता जाव अणुभाग० ।

६. पू० प० २ ।

महिड्ढीयदेव-विकुव्वणा-पद

१६३. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव[1] महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता[2] पभू एगवण्णं एगरूवं विउव्वित्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१६४. देवे णं भंते ! बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगवण्णं एगरूवं विउव्वित्तए ?
हंता पभू ॥

१६५. से णं भंते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ? अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ?
गोयमा ! नो इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति, तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति, नो अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति।
एवं एएणं गमेणं जाव[3] १. एगवण्णं एगरूवं २. एगवण्णं अणेगरूवं ३. अणेगवण्णं एगरूवं ४. अणेगवण्णं अणेगरूवं—चउभंगो ॥

१६६. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव[4] महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू कालगं[5] पोग्गलं नीलगपोग्गलत्ताए[6] परिणामेत्तए ? नीलगं पोग्गलं वा कालगपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे। परियाइत्ता पभू ॥

१६७. से णं भंते ! किं इहगए पोग्गले[7] °परियाइत्ता परिणामेति ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ? अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ?
गोयमा ! नो इहगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति, तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति, नो अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति।
एवं एएणं गमेणं जाव[8] १. एगवण्णं एगरूवं २. एगवण्णं अणेगरूवं ३. अणेगवण्णं एगरूवं ४. अणेगवण्णं अणेगरूवं—चउभंगो° ।
एवं कालगपोग्गलं लोहियपोग्गलत्ताए। एवं कालएणं जाव सुक्किलं। एवं नीलएणं जाव सुक्किलं। एवं 'लोहिएणं जाव सुक्किलं'[9]। एवं हालिद्दएणं जाव सुक्किलं। एवं[10] एयाए परिवाडीए गंध-रस-फासा[11]।

---

1. भ० ३।४।
2. अपरियादित्ता (अ, ता, ब, म)।
3. भ० ६।१६३, १६४।
4. भ० ३।४।
5. कालगं (क)।
6. लोहियपोग्गल० (अ, स, ता)।
7. सं० पा०—[illegible] परिणामेति त्ति [illegible]।
8. भ० ६।१६३, १६४।
9. लोहियपोग्गलं जाव सुक्किलत्ताए (अ, स); लोहियपोग्गलं जाव सुक्किलं (म)।
10. तं एवं (अ, क, ता, ब, म)।
11. कक्खडफासपोग्गलं मउय-फासपोग्गलत्ताए, एवं दो दो गरुयलहुय-सीयउसिण-णिद्धलुक्ख-वण्णाई सव्वत्थ परिणामेइ। आलावगा दो दो पोग्गले अपरियाइत्ता, परियाइत्ता (अ,ब,म,स)।

दसमो उद्देसो

सुह-दुह-उवदंसण-पदं

१७१. अण्णउत्थिया ण भंते ! एवमाइक्खति जाव[1] परूवेति जावतिया रायगिहे नयरे जीवा, एवइयाण जीवाण नो चक्किया केइ सुह वा दुह वा जाव कोलट्ठिगमायमवि, निप्फावमायमवि, कलमायमवि, मासमायमवि, मुग्गमायमवि, जूयामायमवि[2], लिक्खामायमवि अभिनिवट्टेत्ता[3] उवदसेत्तए ॥

१७२ से कहमेय भंते ! एव ?
गोयमा ! ज ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति जाव[4] मिच्छ ते एवमाहसु, अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव[5] परूवेमि सव्वलोए वि य ण सव्वजीवाण नो चक्किया केइ सुह वा[6] •दुह वा जाव कोलट्ठिगमायमवि, निप्फावमायमवि, कलमायमवि, मासमायमवि, मुग्गमायमवि, जूयामायमवि, लिक्खामायमवि अभिनिवट्टेत्ता° उवदसेत्तए ॥

१७३ से केणट्ठेण ? गोयमा ! अयण्ण जबुद्दीवे दीवे जाव[7] विसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते । देवे ण महिड्ढीए जाव[8] महाणुभागे एग मह सविलेवण गधसमुग्गग गहाय त अवद्दालेति, अवद्दालेत्ता जाव इणामेव कट्टु केवलकप्प जबुद्दीव दीव तिहि[9] अच्छरानिवाएहि तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ता ण हव्वमागच्छेज्जा । से नूण गोयमा ! से केवलकप्पे जबुद्दीवे दीवे तेहि घाणपोग्गलेहि फुडे ?
हता फुडे ।
चक्किया ण गोयमा ! केइ[10] तेसि घाणपोग्गलाण कोलट्ठिमायमवि[11], •निप्फावमायमवि, कलमायमवि, मासमायमवि, मुग्गमायमवि, जूयामायमवि, लिक्खामायमवि अभिनिवट्टेत्ता° उवदसेत्तए ?
नो तिणट्ठे समट्ठे । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नो चक्किया केइ सुहं वा जाव उवदसेत्तए ।

जीव-चेयणा-पदं

१७४. जीवे ण भंते ! जीवे ? जीवे जीवे ?
गोयमा ! जीवे ताव नियमा जीवे, जीवे वि नियमा जीवे ॥

---

१. भ० १।४२० ।
२. जूया० (क, म), जूय० (ता) ।
३. ० त्तेत्ता (ता) ।
४. भ० १।४२१ ।
५. भ० १।४२१ ।
६. स० पा०—सुह वा जाव उवदंसेत्तए ।
७. भ० ६।७५ ।
८. भ० ३।४ ।
९. तिहि (अ, स) ।
१०. केयति (स) ।
११. स० पा०—कोलट्ठिमायमवि जाव उवदंसेत्तए

नेरइयादीणं आहार-पदं

१८६. नेरइया णं भंते ! जे पोग्गले अत्तमायाए आहारेति तं किं आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेति ? अणंतरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेति ? परंपरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ?

गोयमा ! आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेति, नो अणंतरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेति, नो परंपरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेति ।

जहा नेरइया तहा जाव[1] वेमाणियाणं दंडओ ॥

केवलिस्सनाण-पदं

१८७. केवली णं भंते ! आयाणेहिं जाणइ-पासइ ?

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१८८. से केणट्ठेणं ?

गोयमा ! केवली णं पुरत्थिमे णं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ जाव[2] निव्वुडे दंसणे केवलिस्स । से तेणट्ठेणं ।

संगहणी-गाहा

जीवाण य सुहं दुक्खं, जीवे जीवति तहेव भविया य ।
एगंतदुक्ख वेयण-अत्तमायाय केवली ॥१॥

१८९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

---

१. पू० प० २ ।
२. भ० ५।६३ ।
३. भ० १।५१ ।

हंता भवइ।

एव खलु गोयमा ! निस्सगयाए, निरंगणयाए, गतिपरिणामेणं अकम्मस्स गती पण्णायति ॥

१३ कहण्ण भते ! वधणछेदणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति[1] ?

गोयमा ! से जहानामए कलसिबलिया इ वा, मुग्गसिवलिया इ वा, मासिसिवलिया इ वा, सिवलिसिवलिया[2] इ वा, एरडमिजिया इ वा उण्हे दिन्ना[3] सुक्का समाणी फुडित्ता ण एगतमत गच्छइ। एवं खलु गोयमा ! वधणछेदणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति ॥

१४. कहण्ण भते ! निरिधणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति ?

गोयमा से जहानामए धूमस्स इधणविप्पमुक्कस्स उड्ढ वीससाए निव्वाघाएण गती पवत्तति। एव खलु गोयमा ! निरिधणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति ॥

१५. कहण्ण भते ! पुव्वप्पओगेण अकम्मस्स गती पण्णायति ?

गोयमा ! से जहानामए कडस्स कोदडविप्पमुक्कस्स लक्खाभिमुही निव्वाघाएण गती पवत्तइ। एव खलु गोयमा ! पुव्वप्पओगेण अकम्मस्स गती पण्णायति। एव खलु गोयमा ! निस्सगयाए[4], निरगणयाए[5], •गतिपरिणामेण, वंधणछेदणयाए, निरिधणयाए॰, पुव्वप्पओगेण अकम्मस्स गती पण्णायति ॥

दुक्खिस्स दुक्खफासादि-पदं

१६ दुक्खी भते ! दुक्खेण फुडे ? अदुक्खी दुक्खेण फुडे ?

गोयमा ! दुक्खी दुक्खेण फुडे, नो अदुक्खी दुक्खेण फुडे ॥

१७ दुक्खी भते ! नेरइए दुक्खेण फुडे ? अदुक्खी नेरइए दुक्खेण फुडे ?

गोयमा ! दुक्खी नेरइए दुक्खेण फुडे, नो अदुक्खी नेरइए दुक्खेण फुडे ॥

१८. एव दडओ जाव[6] वेमाणियाण ॥

१९. एव पच दडगा नेयव्वा—१. दुक्खी दुक्खेण फुडे २. दुक्खी दुक्ख परियायइ ३ दुक्खी दुक्ख उदीरेइ ४ दुक्खी दुक्ख वेदेति ५. दुक्खी दुक्ख निज्जरेति ॥

इरियावहिय-संपराइय-किरिया-पदं

२० अणगारस्स ण भते ! अणाउत्त गच्छमाणस्स वा, चिट्ठमाणस्स[7] वा, निसीयमाणस्स वा, तुयट्टमाणस्स वा, अणाउत्त वत्थं पडिग्गह कवल पायपुछण गेण्ह-

१ [illegible] (अ, क, ता, ब, म, स)।

२ [illegible] (ता)।

३. [illegible] (ता)।

४. [illegible] (अ, क, ब, म, स)।

५ स० पा०—निरगणयाए जाव पुव्व०।

६. पू० प० २।

७. सर्वेष्वपि पदेषु 'अणाउत्त' इति पद गम्यम्।

साइम॰पडिग्गाहेत्ता अमुच्छिए[1] •अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने आहारमा॰-हारेइ, एस ण गोयमा ! वीतिगाले पाण-भोयणे ।

जे ण निग्गथे वा[2] •निग्गथी वा फासु-एसणिज्ज असण पाण खाइम साइम॰ पडिग्गाहेत्ता णो महयाअप्पत्तिय[3] •कोहकिलाम करेमाणे आहारमा॰हारेइ, एस ण गोयमा ! वीयधूमे पाण-भोयणे ।

जे णं निग्गथे वा[4] •निग्गथी वा फासु-एसणिज्ज असण-पाण-खाइम-साइम॰ पडिग्गाहेत्ता जहा लद्ध तहा आहारमाहारेइ, एस ण गोयमा ! संजोयणादोस-विप्पमुक्के पाण-भोयणे ।

एस ण गोयमा ! वीतिगालस्स, वीयधूमस्स, सजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाण-भोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते ॥

२४. अह भते ! खेत्तातिक्कतस्स, कालातिक्कतस्स, मग्गातिक्कंतस्स, पमाणातिक्कंतस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

गोयमा ! जे ण निग्गथे वा निग्गथी वा फासु-एसणिज्ज असण-पाण-खाइम-साइम अणुग्गए सूरिए पडिग्गाहेत्ता उग्गए सूरिए आहारमाहारेइ, एस ण गोयमा ! खेत्तातिक्कते[5] पाण-भोयणे ।

जे ण निग्गथे वा[6] •निग्गथी वा फासु-एसणिज्ज असणं-पाण-खाइम॰-साइम पढमाए पोरिसीए पडिग्गाहेत्ता पच्छिम पोरिसि उवाइणावेत्ता[7] आहारमाहारेइ एस ण गोयमा ! कालातिक्कते पाण-भोयणे ।

जे ण निग्गथे वा[8] •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्ज असण-पाण-खाइम॰-साइम पडिग्गाहेत्ता पर अद्धजोयणमेराए वीइक्कमावेत्ता[9] आहारमाहारेइ, एस ण गोयमा ! मग्गातिक्कते पाण-भोयणे ।

जे ण निग्गथे[10] वा निग्गथी वा फासु-एसणिज्ज[11] •असण-पाण-खाइम॰साइमं पडिग्गाहेत्ता पर बत्तीसाए कुक्कुडिअडगपमाणमेत्ताण कवलाण आहारमाहारेइ, एस ण गोयमा ! पमाणातिक्कते पाण-भोयणे ।

अट्ठ कुक्कुडिअडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अप्पाहारे[12], दुवालस कुक्कुडिअडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अवड्ढोमोयरिए[13], सोलस

---

१. स० पा०—अमुच्छिए जाव आहारेइ ।
२. स० पा०—निग्गथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता ।
३. स० पा०—महया-अप्पत्तिय जाव आहारेइ ।
४. स० पा०—निग्गथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता ।
५. क्षेत्र—सूर्यसम्बन्धितापक्षेत्र दिनमित्यर्थः । तद- [illegible] (वृ) ।
६. स० पा०—निग्गथे वा जाव साइम ।
७. उवायणा॰ (अ, म) ।
८. स० पा०—निग्गथे वा जाव साइम ।
९. वीइक्कमावइत्ता (स) ।
१०. निग्गथो (क, ता, स) ।
११. स० पा०—एसणिज्जं जाव साइम ।
१२. साधुर्भवतीति गम्यम् ।
१३. अवड्ढोमोयरिया (अ, ता) ।

२८. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सव्वपाणेहि जाव[1] सव्वसत्तेहि[2] •पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सिय सुपच्चक्खाय भवति° ? सिय दुपच्चक्खाय भवति ?
गोयमा ! जस्स ण सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि पच्चक्खायमिति वदमाणस्स णो एव अभिसमन्नागय भवति—इमे जीवा, इमे अजीवा, इमे तसा, इमे थावरा, तस्स ण सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि पच्चक्खायमिति वदमाणस्स नो सुपच्चक्खाय भवति, दुपच्चक्खाय भवति ।
एव खलु से दुपच्चक्खाई सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि पच्चक्खायमिति वदमाणे नो सच्च भास भासइ, मोस भास भासइ । एव खलु से मुसावाई सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि तिविहं तिविहेणं असंजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, सकिरिए, असवुडे, एगतदडे, एगंतबाले यावि भवति ।
जस्स ण सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि पच्चक्खायमिति वदमाणस्स एव अभिसमन्नागय भवति—इमे जीवा, इमे अजीवा, इमे तसा, इमे थावरा, तस्स ण सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच्चक्खाय भवति, नो दुपच्चक्खाय भवति ।
एव खलु से सुपच्चक्खाई सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि पच्चक्खायमिति वदमाणे सच्च भास भासइ, नो मोस भास भासइ । एव खलु से सच्चवादी सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि तिविह तिविहेण सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, अकिरिए, सवुडे, एगतपडिए यावि भवति । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ[3]—•सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सिय सुपच्चक्खायं भवति°, सिय दुपच्चक्खाय भवति ॥

पच्चक्खाण-पदं

२९. कतिविहे णं भते ! पच्चक्खाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, त जहा—मूलगुणपच्चक्खाणे य, उत्तरगुणपच्चक्खाणे य ॥

३०. मूलगुणपच्चक्खाणे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—सव्वमूलगुणपच्चक्खाणे य, देसमूलगुणपच्चक्खाणे य ॥

३१. सव्वमूलगुणपच्चक्खाणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं[4],

---

१. भ० ७।२३ ।
२. स० पा०—सव्वसत्तेहि जाव सिय ।
३. स० पा०—वुच्चइ जाव सिय ।
४. स० पा०—वेरमण जाव सव्वाओ ।

३८. एवं जाव[1] चउरिंदिया ॥

३९. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य जहा जीवा, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ॥

४०. एएसि णं भंते ! जीवाणं मूलगुणपच्चक्खाणीणं, उत्तरगुणपच्चक्खाणीणं, अपच्चक्खाणीण य कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणंतगुणा ॥

४१. एएसि णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वत्थोवा[3] पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा ॥

४२. एएसि णं भंते ! मणुस्साणं मूलगुणपच्चक्खाणीणं पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी संखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा ॥

४३. जीवा णं भंते ! किं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी ? देसमूलगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ?
गोयमा ! जीवा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी वि, देसमूलगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि ॥

४४. नेरइयाणं पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया नो सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, नो देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी ॥

४५. एवं जाव[4] चउरिंदिया ॥

४६. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ।
गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया नो सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुणपच्चक्खाणी[5], अपच्चक्खाणी वि ॥

४७. [6]•मणुस्साणं भंते ! किं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी ? देसमूलगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ?
गोयमा ! मणुस्सा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी वि, देसमूलगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि° ॥

---

१. पू० प० २।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
३. [illegible] (अ)।
४. पू० प० २।
५. ° पच्चक्खाणी वि (क, ता, म, स)।
६. सं० पा०—मणुस्सा जहा जीवा।

गोयमा ! जीवा पच्चक्खाणी वि,[1] •अपच्चक्खाणी वि, पच्चक्खाणा-पच्चक्खाणी वि ॥

५६. एव मणुस्साण वि[2] । पचिदियतिरिक्खजोणिया आदिल्लविरहिया । सेसा सव्वे अपच्चक्खाणी जाव[3] वेमाणिया ॥

५७. एएसि ण भंते ! जीवाण पच्चक्खाणीण[4] •अपच्चक्खाणीण पच्चक्खाणा-पच्चक्खाणीण य कयरे कयरेहितो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा° ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी असखेज्ज-गुणा, अपच्चक्खाणी अणतगुणा ।
पचिदियतिरिक्खजोणिया सव्वत्थोवा पच्चक्खाणापच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा । मणुस्सा सव्वत्थोवा पच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी सखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा[5] ॥

सासय-असासय-पद

५८. जीवा णं भते ! कि सासया ? असासया ?
गोयमा ! जीवा सिय सासया, सिय असासया ॥

५९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जीवा सिय सासया ? सिय असासया ?
गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासया, भावट्ठयाए असासया । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ[6]—•जीवा सिय सासया°, सिय असासया ॥

६०. नेरइया ण भते ! कि सासया ? असासया ?
एव जहा जीवा तहा नेरइया वि । एव जाव[7] वेमाणिया सिय सासया, सिय असासया ॥

६१. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[8] ॥

---

१. म० पा०—तिन्नि वि ।
२. वि तिन्नि वि (अ, स) ।
३. पू० प० २ ।
४. म० पा०—पच्चक्खाणीण जाव विसेसाहिया
५. तुलना—भ० ६।६४ ।
६. म० पा०—वुच्चइ जाव सिय ।
७. पू० प० २ ।
८. भ० १।५१ ।

८६ से केणट्ठेणं जाव नो तं वेदिस्सति ?
गोयमा ! कम्म वेदिस्सति, नोकम्मं निज्जरिस्सति । से तेणट्ठेणं जाव नो तं निज्जरिस्सति ॥

८७. एवं नेरइया वि जाव वेमाणिया ॥

८८. से नूण भते ! जे वेदणासमए से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए से वेदणासमए ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

८९ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जे वेदणासमए न से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए न से वेदणासमए ?
गोयमा ! ज समय वेदेति नो त समय निज्जरेति, जं समयं निज्जरेति नो त समय वेदेति—अण्णम्मि समए वेदेति, अण्णम्मि समए निज्जरेति । अण्णे से वेदणासमए, अण्णे से निज्जरासमए । से तेणट्ठेणं जाव न से वेदणासमए, न से निज्जरासमए ॥

९० नेरइया ण भते ! जे वेदणासमए से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए से वेदणासमए ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

९१ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइया ण जे वेदणासमए न से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए न से वेदणासमए ?
गोयमा ! नेरइया ण ज समय वेदेति नो त समय निज्जरेति, ज समय निज्जरेति नो त समय वेदेति—अण्णम्मि समए वेदेति, अण्णम्मि समए निज्जरेति । अण्णे से वेदणासमए, अण्णे से निज्जरासमए । से तेणट्ठेण जाव न से वेदणासमए ॥

९२ एव जाव वेमाणियाण ॥

सासय-असासय-पदं

९३. नेरइया ण भते ! कि सासया ? असासया ?
गोयमा ! सिय सासया, सिय असासया ॥

९४ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइया सिय सासया ? सिय असासया ?
गोयमा ! अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए सासया, वोच्छित्तिनयट्ठयाए असासया । से तेणट्ठेण जाव सिय सासया, सिय असासया ॥

९५. एव जाव वेमाणिया जाव सिय असासया ॥

९६ सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति[1] ॥

---

१. भ० १।५१।

छट्ठो उद्देसो

आउयपकरण-वेयणा-पदं

१०१. रायगिहे जाव[1] एव वयासी—जीवे ण भते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए[2], से ण भते ! किं इहगए नेरइयाउय पकरेइ ? उववज्जमाणे नेरइयाउय पकरेइ ? उववन्ने नेरइयाउय पकरेइ ?

गोयमा ! इहगए नेरइयाउय पकरेइ, नो उववज्जमाणे नेरइयाउय पकरेइ, नो उववन्ने नेरइयाउय पकरेइ । एव असुरकुमारेसु वि, एव जाव[3] वेमाणिएसु ॥

१०२ जीवे ण भते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भते ! कि इहगए नेरइयाउय पडिसवेदेइ ? उववज्जमाणे नेरइयाउय पडिसवेदेइ ? उववन्ने नेरइयाउय पडिसवेदेइ ?

गोयमा ! नो इहगए नेरइयाउय पडिसवेदेइ, उववज्जमाणे नेरइयाउय पडिसवेदेइ, उववन्ने वि नेरइयाउय पडिसवेदेइ । एव जाव वेमाणिएसु ॥

१०३ जीवे ण भते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भते ! किं इहगए महावेदणे ? उववज्जमाणे महावेदणे ? उववन्ने महावेदणे ?

गोयमा ! इहगए सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, उववज्जमाणे सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, अहे ण उववन्ने भवइ तओ पच्छा एगतदुक्ख वेदण वेदेति, आहच्च साय ॥

१०४ जीवे ण भते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, पुच्छा ।

गोयमा ! इहगए सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, उववज्जमाणे सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, अहे ण उववन्ने भवइ तओ पच्छा एगतसात वेदण वेदेति, आहच्च असाय[4] । एव जाव[5] थणियकुमारेसु ॥

१०५ जीवे ण भते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, पुच्छा ।

गोयमा ! इहगए सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, एव उववज्जमाणे वि, अहे ण उववन्ने भवइ तओ पच्छा वेमायाए वेदण वेदेति । एव जाव[6] मणुस्सेसु । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिएसु जहा असुरकुमारेसु ॥

१०६ जीवा ण भते ! कि आभोगनिव्वत्तियाउया ? अणाभोगनिव्वत्तियाउया ?

गोयमा ! नो आभोगनिव्वत्तियाउया, अणाभोगनिव्वत्तियाउया । एवं नेरइया वि, एव जाव[7] वेमाणिया ॥

---

१. भ० १।४-१० ।
२. उववज्जित्ति (ब) ।
३. पू० प० २ ।
४. असाय (क ब) ।
५. पू० प० २ ।
६. पू० प० २ ।
७. पू० प० २ ।

पिट्टणयाए, परपरियावणयाए, वहूण पाणाण[1] •भूयाण जीवाणं° सत्ताण दुक्ख-णयाए, सोयणयाए[2], •जूरणयाए, तिप्पणयाए, पिट्टणयाए°, परियावणयाए—एव खलु गोयमा ! जीवाण असातावेयणिज्जा कम्मा कज्जति । एवं नेरइयाण वि, एव जाव वेमाणियाण ।।

दुस्समदुस्समा-पदं

११७ जवुद्दीवे ण भते ! दीवे[3] इमीसे ओसप्पिणीए दुस्सम-दुस्समाए समाए उत्तम-कट्ठपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ?

गोयमा ! कालो भविस्सइ हाहाभूए, भभभूए[4] कोलाहलभूए[5] । समाणुभावेण[6] य ण खर-फरुस-धूलिमइला दुव्विसहा वाउला भयकरा वाया सवट्टगा य वाहिति । इह अभिक्ख धूमाहिति य दिसा समता रउस्सला[7] रेणुकलुस-तमपडल-निरालोगा । समयलुक्खयाए य ण अहिय चदा सीय मोच्छति[8] । अहिय[9] सूरिया तवइस्सति । अदुत्तर च ण अभिक्खण वहवे अरसमेहा विरसमेहा खारमेहा खत्तमेहा[10] अग्गिमेहा विज्जुमेहा विसमेहा असणिमेहा—अपिवणिज्जोदगा,[11] वाहिरोगवेदणोदीरणा-परिणामसलिला, अमणुण्णपाणियगा चडानिलपहय-तिक्खधारा-निवायपउर वास वासिहिति, जेण भारहे वासे गामागर-नगर-खेड-कव्वड-मडव-दोणमुह-पट्टणासमगयं[12] जणवय, चउप्पयगवेलए, खहयरे य पक्खि-सघे, गामारण्ण-पयारनिरए तसे य पाणे, वहुप्पगारे रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लय-वल्लि-तण-पव्वग-हरितोसहि-पवालकुरमादीए य तण-वणस्सइकाइए विद्धसेहिति, पव्वय-गिरि-डोगरुत्थल[13]-भट्ठिमादीए वेयड्ढगिरिवज्जे विरावेहिति, सलिलबिल-गड्ड-दुग्गविसमनिण्णुन्नयाइ च गगा-सिधुवज्जाइ समीकरेहिति ।।

११८ तीसे ण भते ! समाए भरहस्स वासस्स भूमीए केरिसए आगारभाव-पडोयारे भविस्सति ?

गोयमा ! भूमी भविस्सति इगालब्भूया मुम्मुरब्भूया छारियभूया तत्तकवेल्लय-ब्भूया[14] तत्तसमजोतिभूया[15] धूलिवहुला रेणुवहुला पकवहुला पणगवहुला चलणि-

---

१. स० पा०—पाणाण जाव सत्ताण ।
२. स० पा०—सोयणयाए जाव परियावणयाए ।
३. दीवे भारहे वासे (अ, क, व, म, स) ।
४. भंभाभूए (अ, क, म), भंभेभूए (व) ।
५. कोलाहलग° (क, व, म) ।
६. [illegible] (म, [illegible]) ।
७. रओसला (क, ता, व, म); रओसल्ला (म) ।
८. मोच्छंति (अ, क, ता, व, म, स) ।
९. अहित (क, व, म) ।
१०. सट्टमेहा (म), खत्तमेहा (वृपा) ।
११. अजवणिज्जोदगा (अ, व, स, वृपा), अपि-वणिज्जोदया (क, म), अवणिज्जोदगा (ता)
१२. °समा° (व, स) ।
१३. डोगरथल (अ, क, ता, वृपा) ।
१४. कवल्लय° (क), कवल्लग° (ता) ।
१५. प्रस्तुतागमस्य ३।४८ सूत्रे तथा स्थानागस्य

निस्साए वात्तवरिं[1] निग्रोदा[2] बीय बीयमेत्ता[3] बिलवासिणो भविस्सति ॥

१२० ते ण भते ! मणुया क आहार आहारेहिंति ?
गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण गगा-सिधूओ महानदीओ रहपहवित्थराओ अक्खसोयप्पमाणमेत्त जल वोज्झिहिति, से वि य ण जले बहुमच्छकच्छभाइण्णे, णो चेव ण आउबहुले भविस्सति। तए ण ते मणुया सूरुग्गमणमुहुत्तसि य सूरत्थमणमुहुत्तसि य बिलेहितो निद्धाहिंति, निद्धाइत्ता मच्छ-कच्छभे थलाइ गाहेहिति, गाहेत्ता सीतातवतत्तएहि मच्छ-कच्छएहिं एक्कवीस वाससहस्साइ वित्ति कप्पेमाणा विहरिस्सति ॥

१२१ ते ण भते ! मणुया निस्सीला निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा, उस्सण्ण[4] मसाहारा मच्छाहारा खोद्दाहारा कुणिमाहारा कालमासे काल किच्चा कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिंति ?
गोयमा ! उस्सण्णं नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिंति ॥

१२२ ते ण भते ! सीहा, वग्घा, वगा, दीविया, अच्छा, तरच्छा, परस्सरा निस्सीला तहेव जाव[5] कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! उस्सण्ण नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिति ॥

१२३. ते ण भते ! ढका, कका, विलका[6], मद्दुगा, सिही निस्सीला तहेव जाव[7] कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! उस्सण्ण नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिति ॥

१२४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[8] ॥

सत्तमो उद्देसो

संवुडस्स किरिया-पदं

१२५ सवुडस्स ण भते ! अणगारस्स आउत्त गच्छमाणस्स[9], •आउत्त चिट्ठमाणस्स, आउत्त निसीयमाणस्स°, आउत्त तुयट्टमाणस्स, आउत्त वत्थ पडिग्गह कबल

---

१. बाहुत्तरि (ता, ब)।
२. णिगोदा (ता)।
३. बीयमेत्ता (अ, क, ब, म, स)।
४. उस्सण्ण (अ, स)।
५. [illegible]।
६. पिलका (म)।
७. भ० ७।१२१।
८. भ० १।५१।
९. स० पा०—गच्छमाणस्स जाव आउत्त।

१३५. जीवाण भते ! भोगा ? अजीवाणं भोगा ?
गोयमा ! जीवाण भोगा, नो अजीवाण भोगा ॥

१३६ कतिविहा ण भते ! भोगा पण्णता ?
गोयमा ! तिविहा भोगा पण्णत्ता, त जहा—गधा, रसा, फासा ॥

१३७ कतिविहा ण भते ! काम-भोगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा काम-भोगा पण्णता, त जहा—सद्दा, रूवा, गधा, रसा, फासा ॥

१३८. जीवा ण भते ! कि कामी ? भोगी ?
गोयमा ! जीवा कामी वि, भोगी वि ॥

१३९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जीवा कामी वि ? भोगी वि ?
गोयमा ! सोइदिय-चक्खिदियाइ पडुच्च कामी, घाणिदिय-जिब्भिदिय-फासिदियाइ पडुच्च भोगी। से तेणट्ठेण गोयमा[1] ! •एव वुच्चइ-जीवा कामी वि°, भोगी वि ॥

१४०. नेरइया ण भते ! कि कामी ? भोगी ?
एवं चेव जाव[2] थणियकुमारा ॥

१४१. पुढविकाइयाण—पुच्छा।
गोयमा ! पुढविकाइया नो कामी, भोगी ॥

१४२. से केणट्ठेण जाव भोगी ?
गोयमा ! फासिदिय पडुच्च। से तेणट्ठेण जाव भोगी। एव जाव वणस्सइकाइया। बेइदिया एव चेव, नवर—जिब्भिदियफासिदियाइ पडुच्च। तेइदिया वि एव चेव, नवर—घाणिदिय-जिब्भिदिय-फासिदियाइ पडुच्च ॥

१४३. चउरिदियाण—पुच्छा।
गोयमा ! चउरिदिया कामी वि, भोगी वि ॥

१४४. से केणट्ठेण जाव भोगी वि ?
गोयमा ! चक्खिदिय पडुच्च कामी, घाणिदिय-जिब्भिदिय-फासिदियाइ पडुच्च भोगी। से तेणट्ठेण जाव भोगी वि। अवसेसा जहा जीवा जाव वेमाणिया ॥

१४५ एएसि ण भते ! जीवाणं 'कामभोगीण, नोकामीण, नोभोगीणं, भोगीण'[3] य कयरे कयरेहिंतो[4] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?

---

१. स० पा०—गोयमा जाव भोगी।
२. ४ (?), ५५ जाव (?, ?, ?, स); पू० ५० २।
३. कामीण भोगीण नोकामीण नोभोगीन य (क, ता)।
४. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

१४९. केवली णं भंते ! मणूसे जे भविए तेणेव भवग्गहणेणं[1] •सिज्झित्तए जाव[2] अंतं करेत्तए, से नूणं भंते ! से खीणभोगी नो पभू उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएणं, पुरिसक्कार-परक्कमेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? से नूणं भंते ! एयमट्ठं एवं वयह ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । पभू णं से उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अण्णयराइं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे°, महापज्जवसाणे भवति ।।

अकामनिकरण-वेदणा-पदं

१५०. जे इमे भंते ! असण्णिणो पाणा, तं जहा—पुढविकाइया जाव[3] वणस्सइकाइया, छट्ठा य एगतिया तसा—एए णं अंधा, मूढा, तमपविट्ठा, तमपडल-मोहजाल-पडिच्छन्ना अकामनिकरणं वेदणं वेदेंतीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! जे इमे असण्णिणो पाणा जाव वेदणं वेदेंतीति वत्तव्वं सिया ।
१५१. अत्थि णं भंते ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदेति ?
हंता ! अत्थि ।।
१५२. कहण्णं भंते ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदेति ?
गोयमा ! जे णं नो पभू विणा पदीवेणं अंधकारंसि रूवाइं पासित्तए, जे णं नो पभू पुरओ रूवाइं अणिज्झाइत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू मग्गओ रूवाइं अणवयक्खित्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू पासओ रूवाइं अणवलोएत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू उड्ढं रूवाइं अणालोएत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू अहे रूवाइं अणालोएत्ता णं पासित्तए, एस णं गोयमा ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदेति ।।

पकामनिकरण-वेदणा-पदं

१५३. अत्थि णं भंते ! पभू वि पकामनिकरणं वेदणं वेदेति ?
हंता अत्थि ।।
१५४. कहण्णं भंते ! पभू वि पकामनिकरणं वेदणं वेदेति ?
गोयमा ! जे णं नो पभू समुद्दस्स पारं गमित्तए, जे णं नो पभू समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं पासित्तए, जे णं नो पभू देवलोगं गमित्तए, जे णं नो पभू देव-

---

१. सं० पा०—[illegible] चेव जहा परमाहोहिए जाव महा[illegible] ।
२. भ० १।६४ ।
३. भ० १।४३७ ।

हता गोयमा हत्थीओ कुथू अप्पकम्मतराए चेव कुथूओ वा हत्थी महाकम्मतराए चेव,
हत्थीओ कुथू अप्पकिरियतराए चेव कुथूओ वा हत्थी महाकिरियतराए चेव,
हत्थीओ कुथू अप्पासवतराए चेव कुथूओ वा हत्थी महासवतराए चेव,
एव आहार-नीहार-उस्सास-नीसास-इड्ढि-महज्जुइएहि हत्थीओ कुथू अप्पतराए चेव कुथूओ वा हत्थी महातराए चेव ॥

१५९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—हत्थिस्स य कुथुस्स य समे चेव जीवे ?
गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया—दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा निवाया निवायगभीरा। अह ण केइ पुरिसे जोइ व दीव व गहाय त कूडागारसाल अतो-अतो अणुपविसइ, तीसे कूडागारसालाए सव्वतो समता घण-निचिय-निरतर-निच्छिड्डाइ दुवार-वयणाइ पिहेति, तीसे कूडागारसालाए वहुमज्झदेसभाए त पईव पलीवेज्जा।
तए ण से पईवे त कूडागारसाल अतो-अतो ओभासइ उज्जोवेइ तवति पभासेइ, नो चेव ण वाहि।
अह ण से पुरिसे त पईव इड्डुरएण पिहेज्जा, तए ण से पईवे त इड्डुरय अतो अतो ओभासेइ उज्जोवेइ तवति पभासेइ, नो चेव ण इड्डुरगस्स वाहि, नो चेव ण कूडागारसाल, नो चेव ण कूडागारसालाए वाहि।
एव—गोकिलिजेण पच्छियापिडएण गडमाणियाए आढएण अद्धाढएण पत्थएण अद्धपत्थएण कुलवेण अद्धकुलवेण चाउब्भाइयाए अट्ठभाइयाए सोलसियाए वत्तीसियाए चउसट्ठियाए।
अह ण पुरिसे त पईव दीवचपएण पिहेज्जा। तए ण से पदीवे दीवचपगस्स अतो-अतो ओभासति उज्जोवेइ तवति पभासेइ, नो चेव ण दीवचपगस्स वाहि, नो चेव ण चउसट्ठियाए वाहि, नो चेव ण कूडागारसाल, नो चेव ण कूडागारसालाए वाहि।
एवामेव गोयमा ! जीवे वि ज जारिसय पुव्वकम्मनिवद्ध वोदि निव्वत्तेइ त असखेज्जेहि जीवपदेसेहि सचित्तीकरेइ—खुड्डिय वा महालिय वा।° से तेणट्ठेण गोयमा[1] ! °एव वुच्चइ—हत्थिस्स य कुथुस्स य° समे चेव जीवे[2] ॥

सुह-दुक्ख-पदं

१६०. नेरइयाण भते ! पावे कम्मे जे य कडे, जे य कज्जइ, जे य कज्जिस्सइ सव्वे से दुक्खे, जे निज्जिण्णे से सुहे ?

---

१. म० पा० —गोयमा जाव मते।

२. एतच्च सर्वमपि वाचनान्तरे साक्षाल्लिखितमेव दृश्यते (वृ)।

•दामेण छत्तेण° धरिज्जमाणेण, अणेगगणनायग[1]-•दंडनायग-राईसर-तलवर-माडंविय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह°-दूय-संधिपालसद्धिं[2] संपरिवुडे मज्जणघराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ[3], दुरुहित्ता हय-गय-रह[4]-•पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं° संपरिवुडे, महयाभडचडगरविंदपरिक्खित्ते[5] जेणेव रहमुसले संगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहमुसलं संगामं ओयाए ॥

१९७. तए णं से वरुणे नागनत्तुए रहमुसलं संगामं ओयाए समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ—कप्पति मे रहमुसलं संगामं संगामेमाणस्स जे पुव्विं पहणइ से पडिहणित्तए[6], अवसेसे नो कप्पतीति, अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ अभिगेण्हेत्ता रहमुसलं संगामं संगामेति ॥

१९८. तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स रहमुसलं संगामं संगामेमाणस्स एगे पुरिसे सरिसए 'सरित्तए सरिव्वए'[7] सरिसभंडमत्तोवगरणे रहेणं पडिरहं हव्वमागए ॥

१९९. तए णं से पुरिसे वरुणं नागनत्तुयं एवं वदासी—पहण भो वरुणा ! नागनत्तुया ! पहण भो वरुणा ! नागनत्तुया !

२००. तए णं से वरुणे नागनत्तुए तं पुरिसं एवं वदासी—नो खलु मे कप्पइ देवाणुप्पिया ! पुव्विं अहयस्स पहणित्तए, तुमं चेव णं पुव्विं पहणाहि ॥

२०१. तए णं से पुरिसे वरुणेणं नागनत्तुएणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते[8] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे धणुं परामुसइ, परामुसित्ता उसुं परामुसइ, परामुसित्ता ठाणं ठाति, ठिच्चा आययकण्णाययं उसुं करेइ, करेत्ता वरुणं नागनत्तुयं गाढप्पहारीकरेइ ॥

२०२. तए णं से वरुणे नागनत्तुए तेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे आसुरुत्ते[9] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे धणुं परामुसइ, परामुसित्ता उसुं परामुसइ, परामुसित्ता आययकण्णाययं उसुं करेइ, करेत्ता तं पुरिसं एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवेइ ॥

२०३. तए णं से वरुणे नागनत्तुए तेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रहं परावत्तेइ, परावत्तेत्ता रहमुसलाओ संगामाओ पडिनिक्खमति,

१. स० पा०—अणेगगणनायग जाव दूय ।
२. संधिपाल० (अ, क, ब, म); संधिवालग० (ता) ।
३. दुरूहइ (क), दुरूहि (ता, ब) ।
४. स० पा०—रह जाव सपरिवुडे ।
५. °गर जाव परिक्खित्ते (अ, क, ता, ब, म, स)
६. पडिपह० (ता) ।
७. सरित्तए सरिसव्वए (क) ।
८. स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि° ।
९. स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि० ।

•सपलियकनिसण्णे करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए° अजलि कट्टु एवं वयासी—जाइ ण भते ! मम पियवालवयसस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स सीलाइ वयाइ गुणाइ वेरमणाइ पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं, ताइ ण 'मम पि'[1] भवतु त्ति कट्टु सण्णाहपट्ट मुयइ[2], मुइत्ता सल्लुद्धरण करेइ, करेत्ता आणुपुव्वीए कालगए ॥

२०५ तए ण त वरुण नागनत्तुय कालगय जाणित्ता अहासन्निहिएहि वाणमतरेहि देवेहि दिव्वे सुरभिगधोदगवासे वुट्ठे, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए[3], दिव्वे य गीय-गधव्वनिनादे कए या वि होत्था ॥

२०६ तए ण तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स त दिव्व देविड्ढि दिव्व देवज्जुति दिव्व देवाणुभाग सुणित्ता य पासित्ता य वहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[4] परूवेइ—एव खलु देवाणुप्पिया ! वहवे मणुस्सा[5] •अण्णयरेसु उच्चावएसु सगामेसु अभिमुहा चेव पहया समाणा कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए° उववत्तारो भवति ॥

२०७. वरुणे ण भते ! नागनत्तुए कालमासे काल किच्चा कहि गए ? कहि उववन्ने ? गोयमा ! सोहम्मे कप्पे, अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववन्ने । तत्थ णं अत्थेगतियाण देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता । तत्थ ण वरुणस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥

२०८. से ण भते ! वरुणे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण, भवक्खएण, ठिइक्खएण[6] •अणतर चय चइत्ता कहि गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति वुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाण° अत करेहिति ॥

२०९. वरुणस्स ण भते ! नागनत्तुयस्स पियवालवयसए कालमासे कालं किच्चा कहि गए ? कहि उववन्ने ?
गोयमा ! सुकुले पच्चायाते ॥

२१०. से ण भते ! तओहितो अणतर उव्वट्टित्ता कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[7] अंत काहिति ॥

२११. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[8] ॥

---

१. मम वि (व) ।
२. ओमुयति (अ, क, ता, व) ।
३. निवातिते (अ, क, ता) ।
४. भ० २।९४ ।
५. स० पा०—मणुस्सा जाव उववत्तारो ।
६. स० पा०—ठिइक्खएण जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अत ।
७. भ० ७।२०८ ।
८. भ० १।५१ ।

२१५ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवश्रो महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इदभूई नामं अणगारे 'गोयमे गोत्तेण'[1] जाव[2] भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत भत्त-पाण पडिग्गाहित्ता रायगिहाओ[3] •नगराओ पडिनिक्खमइ, अतुरियमचवलमसभत[4] जुगतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ° रिय सोहेमाणे-सोहेमाणे तेसि अण्णउत्थियाण अदूरसामतेणं वीईवयति[5] ॥

२१६. तए ण ते अण्णउत्थिया भगव गोयम अदूरसामतेण वीईवयमाण पासति, पासित्ता अण्णमण्ण सद्दावेति, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! अम्ह इमा कहा अविप्पकडा', अय च ण गोयमे अम्ह अदूरसामतेण वीईवयइ, त सेय खलु देवाणुप्पिया! अम्ह गोयम एयमट्ठ पुच्छित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अतिए एयमट्ठ पडिसुणति, पडिसुणित्ता जेणेव भगव गोयमे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता भगव गोयम एव वयासी—एव खलु गोयमा! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे नायपुत्ते पच अत्थिकाए पण्णवेति, त जहा—धमत्थिकाय जाव पोग्गलत्थिकाय[6]। त चेव जाव[7] रूविकाय अजीवकाय पण्णवेति। से कहमेय गोयमा! एव?

कालोदाइस्स समाहाणपुव्वं पव्वज्जा-पद

२१७ तए ण से भगव गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—नो खलु वय देवाणुप्पिया! अत्थिभाव नत्थि त्ति वदामो, नत्थिभाव अत्थि त्ति वदामो। अम्हे ण देवाणुप्पिया! सव्व अत्थिभाव अत्थि त्ति वदामो, सव्व नत्थिभाव नत्थि त्ति वदामो। त चेयसा[8] खलु तुब्भे देवाणुप्पिया! एयमट्ठ सयमेव पच्चुवेक्खह त्ति कट्टु ते अण्णउत्थिए एव वदासी[9], वदित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव[10] भत्त-पाण पडिदसेति, पडिदसेत्ता समण भगवं महावीर वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता नच्चासण्णे जाव[11] पज्जुवासति॥

२१८. तेणं कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे महाकहापडिवण्णे या वि होत्था। कालोदाई य तं देस हव्वमागए। कालोदाईति! समणे भगव महावीरे कालोदाइ

---

१. गोयमगोत्ते ण (अ, ता)।
२. एवं जहा बितियसते णियठुद्देसए जाव (अ, क, ता, ब, म, स), भ० २।१०६-१०९।
३ भ० पा०—रायगिहाओ जाव अतुरियमचवलमसंभंत जाव रियं।
४. भ० २।११० सूत्रे '०मसंभंते' इति पाठः स्वीकृतोस्ति।
५. वीतिव्वयति (अ, क, ब, म, वृपा)।
६. आगासत्थिकाय (अ, क, व, म, स)।
७. भ० ७।२१३।
८. वेदसा (अ, ता, म, वृपा)।
९. वदति (ता, ब, म)।
१०. एवं जहा नियठुद्देसए जाव (अ, क, ता, ब, म, स), भ० २।११०।
११ भ० ३।१३।

कालोदाइस्स कम्मादिविसए पसिण-पद

२२२. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे, गुणसिलए चेइए। तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ जाव[1] समोसढे, परिसा जाव[2] पडिगया॥

२२३. तए णं से कालोदाई अणगारे अण्णया कयाइ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—अत्थि णं भंते! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति?
हंता अत्थि॥

२२४. कहण्णं भंते! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति?
कालोदाई! से जहानामए केइ पुरिसे मणुण्णं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाकुलं विससमिस्सं भोयणं भुंजेज्जा, तस्स णं भोयणस्स आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे-परिणममाणे दुरूवत्ताए, दुवण्णत्ताए, दुगंधत्ताए जाव[3] दुक्खत्ताए—नो सुहत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति। एवामेव कालोदाई! जीवाणं पाणाइवाए जाव[4] मिच्छादंसणसल्ले, तस्स[5] णं आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा 'विपरिणममाणे-विपरिणममाणे'[6] दुरूवत्ताए दुवण्णत्ताए दुगंधत्ताए जाव दुक्खत्ताए—नो सुहत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति। एवं खलु कालोदाई! जीवाणं पावा कम्मा 'पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति'[7]।

२२५. अत्थि णं भंते! जीवाणं कल्लाणा कम्मा कल्लाणफलविवागसंजुत्ता कज्जंति?
हंता अत्थि॥

२२६. कहण्णं भंते! जीवाणं कल्लाणा कम्मा[8] °कल्लाणफलविवागसंजुत्ता° कज्जंति?
कालोदाई! से जहानामए केइ पुरिसे मणुण्णं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाकुलं ओसहमिस्सं भोयणं भुंजेज्जा, तस्स णं भोयणस्स आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे-परिणममाणे सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए जाव[9] सुहत्ताए—नो दुक्खत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति। एवामेव कालोदाई! जीवाणं पाणाइवायवेरमणे जाव[10] परिग्गहवेरमणे कोहविवेगे जाव[11] मिच्छादंसणसल्लविवेगे, तस्स

---

१. भ० १।७।
२. भ० १।८।
३. जहा महस्सवस्स जाव (अ, क, ता, ब, म, स), भ० ६।२७।
४. भ० १।३८४।
५. तस्य आपातभद्रकाः (वृ)।
६. परिणममाणे-परिणममाणे (अ, क, ता, म)।
७. फलविवाग जाव कज्जति (अ), फल जाव कज्जति (क, ता)।
८. सं० पा०—कम्मा जाव कज्जति।
९. भ० ६।२२।
१० भ० १।३८५।
११ ठा० १।११५-१२५।

किरियतराए चेव, महासवतराए चेव, महावेयणतराए चेव। तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ, से णं पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव, अप्पकिरियतराए चेव, अप्पासवतराए चेव°, अप्पवेयणतराए चेव ॥

२२९. अत्थि णं भंते ! अच्चित्ता वि पोग्गला ओभासंति ? उज्जोवेंति ? तवेंति ? पभासेंति ?
हंता अत्थि ॥

२३०. कयरे णं भंते ! ते अच्चित्ता वि पोग्गला ओभासंति[1] ? °उज्जोवेंति ? तवेंति ? ° पभासेंति ?
कालोदाई ! कुद्धस्स[2] अणगारस्स तेय-लेस्सा निसट्ठा समाणी दूरं गता दूरं निपतति, देसं गता देसं निपतति, जहिं-जहिं च णं सा निपतति तहिं-तहिं च णं ते अचित्ता वि पोग्गला ओभासंति[3], °उज्जोवेंति, तवेंति°, पभासेंति। एतेणं कालोदाई ! ते अचित्ता वि पोग्गला ओभासंति[4], °उज्जोवेंति, तवेंति°, पभासेंति ॥

२३१. तए णं से कालोदाई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम[5]-°दसम-दुवालसेहिं, मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं° अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२३२. [6]°तए णं से कालोदाई ! अणगारे जाव[7] चरमेहिं उस्सास-नीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

२३३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[8] ॥

---

१. म० पा०—ओभासंति जाव पभासेंति ।
२. निसृष्टा निर्गता शरीरात् क्रुद्धेन (वृ) ।
३. म० पा०—ओभासंति जाव पभासेंति ।
४. म० पा०—ओभासंति जाव पभासेंति ।
५. म० पा०—छट्ठट्ठम जाव अप्पाणं ।
६. स० पा०—जहा पढमसए कालासवेसियपुत्ते जाव सव्वदुक्ख° ।
७. भ० १।४३३ ।
८. भ० १।५१ ।

परिणया य, अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइय[1]•एगिंदियपयोग॰परिणया य। बादरपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया एव चेव, एव जाव वणस्सइकाइया। एक्केका दुविहा सुहुमा य, बादरा य, पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य भाणियव्वा॥

१९. बेइंदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगबेइंदियपयोगपरिणया य, अपज्जत्तग जाव परिणया य। एव तेइंदिया वि, एव चउरिंदिया वि॥

२०. रयणप्पभपुढविनेरइयपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगरयणप्पभ जाव परिणया य, अपज्जत्तग जाव परिणया य। एव जाव अहेसत्तमा॥

२१. समुच्छिमजलचरतिरिक्ख—पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तग अपज्जत्तग। एव गब्भवक्कंतिया वि। समुच्छिमचउप्पयथलचरा एव चेव। एव गब्भवक्कंतिया वि। एवं जाव समुच्छिमखहयरगब्भवक्कतिया य। एक्केक्के पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य भाणियव्वा॥

२२ संमुच्छिममणुस्सपंचिंदिय—पुच्छा।
गोयमा! एगविहा पण्णत्ता—अपज्जत्तगा चेव॥

२३ गब्भवक्कतियमणुस्सपंचिंदिय पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगगब्भवक्कतिया वि, अपज्जत्तगगब्भवक्कतिया वि॥

२४ असुरकुमारभवणवासिदेवाण पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगअसुरकुमार, अपज्जत्तगअसुरकुमार। एव जाव[2] थणियकुमारा पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य॥

२५ एव एतेण अभिलावेण दुयएण भेदेण पिसाया जाव[3] गधव्वा। चदा जाव[4] ताराविमाणा। सोहम्मकप्पोवगा जाव[5] च्चुतो। हेट्ठिमहेट्ठिम-गेवेज्जकप्पातीत जाव[6] उवरिमउवरिमगेवेज्ज। विजयअणुत्तरोववाइय जाव[7] अपराजिय।

२६ सव्वट्ठसिद्धकप्पातीत—पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय, अपज्जत्तासव्वट्ठ जाव परिणया वि॥

---

१. म० वा०—॰सुहुमपुढविकाइय जाव परिणया।
२. पू० प० २।
३. ठा० ८।११६।
४. ठा० २।५२।
५. अ० सू० २८७।
६. ठा० ९।३८।
७. भ० ६।१२१।

३३. जे अपज्जत्ताबेइंदियपयोगपरिणया ते जिब्भिंदिय-फासिंदियपयोगपरिणया, जे पज्जत्ताबेइंदिय एवं चेव। एवं जाव चउरिंदिया, नवरं—एक्केक्कं इंदियं वड्ढेयव्वं ॥

३४. जे[1] अपज्जत्तरयणप्पभपुढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया ते सोइंदिय-चक्खिंदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियपयोगपरिणया। एवं पज्जत्तगा वि। एवं सव्वे भाणियव्वा तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवा जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[2] •कप्पातीतगवेमाणियदेवपंचिंदियपयोग॰परिणया ते सोइंदिय-चक्खिंदिय[3]•घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियपयोग॰परिणया ॥

(५) सरीरं इंदियं च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३५ जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियओरालिय-तेया-कम्मासरीरप्पयोगपरिणया ते फासिंदियपयोगपरिणया। जे पज्जत्तासुहुम॰एवं चेव। बादरअपज्जत्ता एवं चेव। एवं पज्जत्तगा वि।

एवं एतेणं अभिलावेणं जस्स जति इंदियाणि सरीराणि य तस्स ताणि भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[4]•कप्पातीतगवेमाणिय॰देवपंचिंदियवेउव्विय-तेया-कम्मासरीरप्पयोगपरिणया ते सोइंदिय-चक्खिंदिय जाव फासिंदियप्पयोगपरिणया ॥

(६) वण्णादिं पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३६ जे अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयएगिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, नील-लोहिय[5]-हालिद्द-सुक्किलवण्णपरिणया वि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणया वि, दुब्भिगंधपरिणया वि, रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अंबिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि, फासओ कक्खडफासपरिणया वि[6], •मउयफासपरिणया वि, गरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीतफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि॰, लुक्खफासपरिणया वि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणया वि, वट्ट-तंस-चउरंस-आयत-संठाणपरिणया वि।

जे पज्जत्तासुहुमपुढवि॰ एवं चेव। एवं जहाणुपुव्वीए नेयव्वं जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि ॥

---

१. जाव (क, ता, ब)।
२. सं॰ पा॰—[illegible]वाइय जाव परिणया।
३. सं॰ पा॰—[illegible]दिय जाव परिणया।
४. अपज्जत्ता॰ (अ, क, ब, स); सं॰ पा॰—॰वाइय जाव देव॰।
५. लोहिग (ता, ब, म)।
६. सं॰ पा॰—वि जाव लुक्ख॰।

दडगा भाणियव्वा, तहेव सव्व निरवसेस, नवरं—अभिलावो 'मीसापरिणया' भाणियव्व, सेसं त चेव जाव[1] जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव आयतसठाणपरिणया वि ॥

वीससापरिणति-पदं

४२ वीससापरिणया ण भते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, त जहा—वण्णपरिणया, गधपरिणया, रसपरिणया, फासपरिणया, सठाणपरिणया ।
जे वण्णपरिणया ते पचविहा पण्णत्ता, त जहा—कालवण्णपरिणया जाव[2] सुक्किलवण्णपरिणया ।
जे गधपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सुब्भिगधपरिणया[3], दुब्भिगधपरिणया[4] ।
जे रसपरिणया ते पचविहा पण्णत्ता, त जहा—तित्तरसपरिणया जाव[5] महुररसपरिणया ।
जे फासपरिणया ते अट्ठविहा पण्णत्ता, तं जहा—कक्खडफासपरिणया जाव[6] लुक्खफासपरिणया ।
जे सठाणपरिणया ते पंचविहा पण्णत्ता, त जहा—परिमडलसठाणपरिणया जाव[7] आयतसठाणपरिणया ।
जे वण्णओ कालवण्णपरिणया ते गधओ सुब्भिगधपरिणया वि, दुब्भिगधपरिणया वि ।
एव जहा पण्णवणाए तहेव निरवसेस जाव[8] जे सठाणओ आयतसठाणपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव लुक्खफासपरिणया वि ॥

एगं दव्वं पडुच्च पोग्गलपरिणति-पदं

४३. एगे भते ! दव्वे कि पयोगपरिणए ? मीसापरिणए ? वीससापरिणए ?
गोयमा ! पयोगपरिणए वा, मीसापरिणए वा, वीससापरिणए वा ॥

पयोगपरिणति-पद

४४. जइ पयोगपरिणए कि मणपयोगपरिणए[9] ? वइपयोगपरिणए[10] ? कायपयोगपरिणए[11] ?

---

१. भ० ८।३-३९ ।
२. भ० ८।३६ ।
३. सुगन्धपरिणया वि(अ, स), सुब्भि०(ता, ब) ।
४. दुगन्धपरिणया वि(अ, स), दुब्भि०(ता, ब) ।
५. भ० ८।३६ ।
६. भ० ८।३६ ।
७. भ० ८।३६ ।
८. प० १ ।
९. मणप्प० (ता, म) ।
१०. वयप० (क), वयप्प० (ब, म) ।
११. कायप्प० (अ, क, ता, ब, म, स) ।

गोयमा ! एगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए वा जाव[1] पंचिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए वा ॥

५१. जइ एगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए किं पुढविक्काइयएगिंदिय[2]•ओरालियसरीरकायपयोग•परिणए ? जाव वणस्सइकाइयएगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए ?
गोयमा ! पुढविक्काइयएगिंदिय[3]•ओरालियसरीरकायपयोग•परिणए वा जाव वणस्सइकाइयएगिंदिय[4]•ओरालियसरीरकायपयोग•परिणए वा ॥

५२ जइ पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए[5] किं सुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए ? बादरपुढविक्काइय जाव परिणए ?
गोयमा ! सुहुमपुढविकाइयएगिंदिय जाव परिणए वा, बादरपुढविक्काइय जाव परिणए वा ॥

५३ जइ सुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए किं पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए ? अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए ?
गोयमा ! पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए वा, अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए वा । एव बादरा वि । एव जाव वणस्सइकाइयाण चउक्कओ भेदो । बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाण दुयओ भेदो—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य ॥

५४ जइ पंचिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए किं तिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए ? मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए ?
गोयमा ! तिरिक्खजोणिय जाव परिणए वा, मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए वा ॥

५५ जइ तिरिक्खजोणिय जाव परिणए किं जलचरतिरिक्खजोणिय जाव परिणए ? थलचर-खहचर जाव परिणए ?
एव चउक्कओ भेदो जाव खहचराण ॥

५६ जइ मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए किं समुच्छिममणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए ? गब्भवक्कंतियमणुस्स जाव परिणए ?
गोयमा ! दोसु वि ॥

५७ जइ गब्भवक्कंतियमणुस्स जाव परिणए किं पज्जत्तागब्भवक्कंतिय जाव परिणए ? अपज्जत्तागब्भवक्कंतिय जाव परिणए ?

---

१ चउरिंदिय जाव परिणए वा (अ, क, ब, म, स), चउरिंदिय जाव (ता) ।
२. स० पा०—०एगिंदिय जाव परिणए ।
३. स० पा०—०एगिंदिय जाव परिणए ।
४. स० पा०—०एगिंदिय जाव परिणए ।
५ ०सरीर जाव परिणए (अ, क, ता, ब, म, स) ।

६३. जइ आहारगमीसासरीरकायपयोगपरिणए किं मणुस्साहारगमीसासरीरकायपयोगपरिणए ?

एव जहा आहारग तहेव मीसग पि निरवसेस भाणियव्व ॥

६४. जइ कम्मासरीरकायपयोगपरिणए किं एगिदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए ? जाव पचिदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए ?

गोयमा ! एगिदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए, एव जहा ओगाहणसठाणे कम्मगस्स भेदो तहेव इह वि जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[1] °कप्पातीतगवेमाणिय° देवपचिदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए वा, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणए वा ॥

मीसपरिणति-पद

६५. जइ मीसापरिणए कि मणमीसापरिणए ? वइमीसापरिणए[2] ? कायमीसापरिणए ?

गोयमा ! मणमीसापरिणए वा, वइमीसापरिणए वा, कायमीसापरिणए वा ॥

६६. जइ मणमीसापरिणए कि सच्चमणमीसापरिणए ? मोसमणमीसापरिणए ? जहा पयोगपरिणए तहा मीसापरिणए वि भाणियव्व निरवसेस जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवपचिदियकम्मासरीरगमीसापरिणए वा, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव कम्मासरीरमीसापरिणए वा ॥

वीससापरिणति-पद

६७. जइ वीससापरिणए किं वण्णपरिणए ? गधपरिणए ? रसपरिणए ? फासपरिणए ? सठाणपरिणए ?

गोयमा ! वण्णपरिणए वा, गधपरिणए वा रसपरिणए वा, फासपरिणए वा, सठाणपरिणए वा ॥

६८. जइ वण्णपरिणए किं कालवण्णपरिणए जाव[3] सुक्किलवण्णपरिणए ?

गोयमा ! कालवण्णपरिणए वा जाव सुक्किलवण्णपरिणए वा ॥

६९ जइ गधपरिणए किं सुब्भिगधपरिणए ? दुब्भिगधपरिणए ?

गोयमा ! सुब्भिगधपरिणए वा, दुब्भिगधपरिणए वा ॥

७० जइ रसपरिणए किं तित्तरसपरिणए ? पुच्छा ।

गोयमा ! तित्तरसपरिणए वा जाव महुररसपरिणए वा ॥

७१. जइ फासपरिणए किं कक्खडफासपरिणए जाव लुक्खफासपरिणए ?

गोयमा ! कक्खडफासपरिणए जाव लुक्खफासपरिणए ॥

---

१. स० पा०—°वाइय जाव देव° ।

२. वइ° (अ, स); वति° (ब) ।

३. नील जाव (अ, क, ता, ब, म, स) ।

७८. जइ वीससापरिणया कि वण्णपरिणया ? गंधपरिणया ?
एव वीससापरिणया वि जाव अहवेगे चउरससठाणपरिणए, एगे आयतसठाण-परिणए ॥

तिण्णि दव्वाइं पडुच्च पोग्गलपरिणति-पद

७९. तिण्णि भते ! दव्वा कि पयोगपरिणया ? मीसापरिणया ? वीससापरिणया ?
गोयमा ! १ पयोगपरिणया वा २. मीसापरिणया वा ३. वीससापरिणया वा ४ अहवेगे पयोगपरिणए, दो मीसापरिणया ५. अहवेगे पयोगपरिणए, दो वीससापरिणया ६ अहवा दो पयोगपरिणया, एगे मीसापरिणए[1] ७. अहवा दो पयोगपरिणया, एगे वीससापरिणए ८ अहवेगे मीसापरिणए, दो वीससापरि-णया ९ अहवा दो मीसापरिणया, एगे वीससापरिणए १० अहवेगे पयोगपरि-णए, एगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए ॥

८०. जइ पयोगपरिणया कि मणपयोगपरिणया ? वइपयोगपरिणया ? कायपयोग-परिणया ?
गोयमा ! मणपयोगपरिणया वा, एव एक्कासयोगो[2], दुयासयोगो[3], तियासयोगो[4] य भाणियव्वो ॥

८१. जइ मणपयोगपरिणया कि सच्चमणपयोगपरिणया ? असच्चमणपयोगपरिणया? सच्चमोसमणपयोगपरिणया ? असच्चमोसमणपयोगपरिणया ?
गोयमा ! सच्चमणपयोगपरिणया वा जाव असच्चामोसमणपयोगपरिणया वा, अहवेगे सच्चमणपयोगपरिणए, दो मोसमणपयोगपरिणया। एव दुयासंयोगो, तियासयोगो भाणियव्वो एत्थ वि तहेव जाव अहवेगे तंससंठाणपरिणए, एगे चउरससंठाणपरिणए, एगे आयतसंठाणपरिणए ॥

चत्तारि दव्वाइ पडुच्च पोग्गलपरिणति-पदं

८२. चत्तारि भते ! दव्वा कि पयोगपरिणया ? मीसापरिणया ? वीससापरिणया ?
गोयमा ! १. पयोगपरिणया वा २ मीसापरिणया वा ३. वीससापरिणया वा ४. अहवेगे पयोगपरिणए, तिण्णि[5] मीसापरिणया ५ अहवेगे पयोगपरिणए, तिण्णि वीससापरिणया ६ अहवा दो पयोगपरिणया, दो मीसापरिणया ७. अहवा दो पयोगपरिणया, दो वीससापरिणया ८ अहवा तिण्णि पयोगपरिणया, एगे मीसापरिणए ९ अहवा तिण्णि पयोगपरिणया, एगे वीससापरिणए १०. अहवेगे मीसापरिणए, तिण्णि वीससापरिणया ११ अहवा दो मीसापरिणया, दो

---

१. मीसगा° (ग)।
२. एक्क° (ब)।
३. दुय° (ब)।
४. तिय° (ब)।
५. तिण्णिओ (ता)।

गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—विच्छुयजातिआसीविसे, मडुक्कजाति-आसीविसे, उरगजातिआसीविसे, मणुस्सजातिआसीविसे[1] ॥

८८. विच्छुयजातिआसीविसस्स ण भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पभू ण विच्छुयजातिआसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्त वोदि विसेण विसपरिगय[2] विसट्टमाण पकरेत्तए । विसए से विसट्ठयाए, नो चेव ण सपत्तीए करेसु[3] वा, करेति वा, करिस्सति वा ॥

८९. मडुक्कजातिआसीविसस्स [4]•ण भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?॰
गोयमा ! पभू ण मडुक्कजातिआसीविसे भरहप्पमाणमेत्त वोदि विसेणं विसपरिगयं [5]•विसट्टमाण पकरेत्तए । विसए से विसट्ठयाए, नो चेव ण सपत्तीए करेसु वा, करेति वा॰, करिस्सति वा ॥

९० [6]•उरगजातिआसीविसस्स ण भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पभू ण उरगजातिआसीविसे जवुद्दीवप्पमाणमेत्त वोदि विसेणं विसपरिगय विसट्टमाण पकरेत्तए । विसए से विसट्ठयाए, नो चेव ण संपत्तीए करेसु वा, करेति वा॰, करिस्सति वा ॥

९१. मणुस्सजातिआसीविसस्स [7]•ण भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पभू णं मणुस्सजातिआसीविसे समयखेत्तप्पमाणमेत्त वोदि विसेण विसपरिगय विसट्टमाण पकरेत्तए । विसए से विसट्ठयाए, नो चेव णं सपत्तीए करेसु वा, करेति वा,॰ करिस्सति वा ॥

९२ जइ कम्मआसीविसे किं नेरइयकम्मआसीविसे ? तिरिक्खजोणियकम्मआसीविसे ? मणुस्सकम्मआसीविसे ? देवकम्मआसीविसे ?
गोयमा ! नो नेरइयकम्मासीविसे, तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे वि, मणुस्सकम्मासीविसे वि, देवकम्मासीविसे वि ॥

९३ जइ तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे किं एगिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ?
गोयमा ! नो एगिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे जाव नो चउरिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे, पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ।
जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे किं समुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजो-

---

1. मणुय० (ता) ।
2. विसपरिणय (ठा० ४।५१४) ।
3. इह चैकवचनप्रक्रमेऽपि बहुवचननिर्देशो वृश्चिकादीनामनेकत्वज्ञापनार्थम् (वृ) ।
4. स० पा० पुच्छा ।
5. स० पा०—सेस त चेव जाव करिस्सति ।
6. स० पा०—एव उरगजातिआसीविसस्स वि, नवर—जबुद्दीवप्पमाणमेत्त वोदि विसेण विसपरिगय, सेस त चेव जाव करिस्सति ।
7. स० पा०—वि एव चेव, नवर—समयखेत्तप्पमाणमेत्त वोदि विसेण विसपरिगय, सेस त चेव जाव करिस्सति ।

गोयमा ! सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे वि जाव सहस्सारकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे वि, नो आणयकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे जाव नो अच्चुयकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ।

जइ सोहम्मकप्पोवा[1] •वेमाणियदेव॰कम्मासीविसे किं पज्जत्तासोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ? अपज्जत्तासोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ?

गोयमा ! नो पज्जत्तासोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे, अपज्जत्तासोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे, एव जाव नो पज्जत्तासहस्सारकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे, अपज्जत्तासहस्सारकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ।।

छउमत्थ-केवलि-पद

९६ दस ठाणाइ छउमत्थे सव्वभावेण न जाणइ न पासइ, त जहा—१ धम्मत्थिकायं २. अधम्मत्थिकायं ३. आगासत्थिकाय ४. जीवं असरीरपडिवद्ध ५. परमाणुपोग्गल ६. सद्दं ७ गध ८. वात ९. अय जिणे भविस्सइ वा न वा भविस्सइ १० अय सव्वदुक्खाण अत करेस्सइ वा न वा करेस्सइ ।

एयाणि चेव उप्पण्णनाणदसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेण जाणइ-पासइ, त जहा—धम्मत्थिकाय[2], •अधम्मत्थिकाय, आगासत्थिकायं, जीव असरीरपडिवद्ध, परमाणुपोग्गल, सद्द, गध, वात, अय जिणे भविस्सइ वा न वा भविस्सइ, अय सव्वदुक्खाण अत॰ करेस्सइ वा न वा करेस्सइ ।।

नाण-पद

९७. कतिविहे ण भते ! नाणे पण्णत्ते ?

गोयमा ! पचविहे नाणे पण्णत्ते, त जहा—आभिणिवोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे, मणपज्जवनाणे, केवलनाणे ।।

९८. से किं तं आभिणिवोहियनाणे ?

आभिणिवोहियनाणे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—ओग्गहो, ईहा, अवाओ, धारणा । एव जहा 'रायप्पसेणइज्जे' नाणाण भेदो तहेव इह भाणियव्वो जाव[3] सेत्त केवलनाणे[4] ।।

---

१. स० पा०—सोहम्मकप्पोवा जाव कम्मासीविसे ।

२ स० पा०—धम्मत्थिकाय जाव करेस्सइ ।

३. राय० सू० ७४१-७४५ ।

४. एतत् वाचनान्तरे श्रुतज्ञानाधिकारे यथा नन्द्यामङ्गप्ररूपणेत्यभिधाय 'जाव भवियअभविया तत्तो सिद्धा असिद्धा य' इत्युक्त तस्यायमर्थ.—श्रुतज्ञानसूत्रावसाने किल नन्द्या श्रुतविषय दर्शयतेदमभिहितम्—'इच्चेयमि दुवालसगे गणिपिडए अणता भावा अणता

य। जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, अहवा अभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, मणपज्जवनाणी। जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मणपज्जवनाणी। जे एगनाणी ते नियमा केवलनाणी।

जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, अत्थेगतिया तिअण्णाणी। जे दुअण्णाणी ते मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य। जे तिअण्णाणी ते मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी, विभगनाणी॥

१०५ नेरइया ण भते! कि नाणी? अण्णाणी?

गोयमा! नाणी वि, अण्णाणी वि।

जे नाणी ते नियमा तिण्णाणी, त तहा—आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी। जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, अत्थेगतिया तिअण्णाणी। एव तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए॥

१०६. असुरकुमारा ण भते! कि नाणी? अण्णाणी?

जहेव नेरइया तहेव, तिण्णि नाणाणि नियमा, तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए। एव जाव[1] थणियकुमारा॥

१०७ पुढविक्काइया ण भते! कि नाणी? अण्णाणी?

गोयमा! नो नाणी, अण्णाणी। जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी-मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य। एव जाव वणस्सइकाइया॥

१०८ बेइदियाण पुच्छा।

गोयमा! नाणी वि अण्णाणी वि।

जे नाणी ते नियमा दुण्णाणी, त जहा—आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी य। जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी, त जहा—मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य। एव तेइदिय-चउरिदिया वि॥

१०९ पचिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा।

गोयमा! नाणी वि, अण्णाणी वि।

जे नाणी ते अत्थेगतिया दुण्णाणी, अत्थेगतिया तिण्णाणी।

जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, अत्थेगतिया तिअण्णाणी। एव तिण्णि नाणाणि, तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए। मणुस्सा जहा जीवा, तहेव पच नाणाणि, तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए। वाणमतरा जहा नेरइया। जोइसिय-वेमाणियाण तिण्णि नाणाणि, तिण्णि अण्णाणाणि नियमा॥

११०. सिद्धाण भते! पुच्छा।

गोयमा! नाणी, नो अण्णाणी, नियमा एगनाणी—केवलनाणी॥

१ पू० प० २।

१२१. बादरा ण भंते ! जीवा किं नाणी ?
जहा सकाइया ॥

१२२ नोसुहुमा-नोबादरा ण भते ! जीवा किं नाणी ?
जहा सिद्धा ॥

पज्जत्तापज्जत्त पडुच्च—

१२३ पज्जत्ता णं भते ! जीवा कि नाणी ?
जहा सकाइया ॥

१२४ पज्जत्ता ण भते ! नेरइया कि नाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा नियमा। जहा नेरइया एव थणियकुमारा। पुढविकाइया जहा एगिदिया। एव जाव चउरिदिया ॥

१२५ पज्जत्ता ण भते ! पचिदियतिरिक्खजोणिया किं नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—भयणाए। मणुस्सा जहा सकाइया। वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ॥

१२६. अपज्जत्ता ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—भयणाए।

१२७. अपज्जत्ता ण भते ! नेरइया किं नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा नियमा, तिण्णि अण्णाणा भयणाए। एव जाव थणियकुमारा। पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया जहा एगिदिया ॥

१२८ बेइदियाण पुच्छा।
दो नाणा, दो अण्णाणा—नियमा। एव जाव पचिदियतिरिक्खजोणियाण ॥

१२९ अपज्जत्तगा ण भते ! मणुस्सा कि नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणाइ भयणाए, दो अण्णाणाइ नियमा। वाणमतरा जहा नेरइया। अपज्जत्तगाण जोइसिय-वेमाणियाण तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—नियमा ॥

१३०. नोपज्जत्तगा-नोअपज्जत्तगा ण भते ! जीवा कि नाणी ?
जहा सिद्धा ॥

भवत्थं पडुच्च—

१३१ निरयभवत्था ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
जहा निरयगतिया ॥

१३२. तिरियभवत्था ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—भयणाए ॥

१३३ मणुस्सभवत्था ?
जहा सकाइया ॥

१४४. चरित्ताचरित्तलद्धी ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एगागारा पण्णत्ता । एव जाव उवभोगलद्धी एगागारा पण्णत्ता ॥

१४५ वीरियलद्धी ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, त जहा—वालवीरियलद्धी, पडियवीरियलद्धी, वालपडियवीरियलद्धी ॥

१४६. इदियलद्धी ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, त जहा—सोइदियलद्धी जाव[1] फासिदियलद्धी ॥

नाणलद्धि पडुच्च-नाणि-अण्णाणित्त-पद

१४७ नाणलद्धिया ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । अत्थेगतिया दुण्णाणी, एव पच नाणाइ भयणाए ॥

१४८ तस्स अलद्धीया ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी । अत्थेगतिया दुअण्णाणी, तिण्णि अण्णाणा भयणाए ॥

१४९. आभिणिवोहियनाणलद्धिया ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । अत्थेगतिया दुण्णाणी, चत्तारि नाणाइ भयणाए ॥

१५० तस्स अलद्धिया ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । जे नाणी ते नियमा एगनाणी—केवलनाणी जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, तिण्णि अण्णाणाइ भयणाए । एव सुयनाणलद्धिया वि । तस्स अलद्धिया वि जहा आभिणिवोहियनाणस्स अलद्धीया[2] ॥

१५१. ओहिनाणलद्धियाण पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । अत्थेगतिया तिण्णाणी, अत्थेगतिया चउनाणी । जे तिण्णाणी ते आभिणिवोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी । जे चउनाणी ते आभिणिवोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मणपज्जवनाणी ॥

१५२ तस्स अलद्धियाण पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । एव ओहिनाणवज्जाइ चत्तारि नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए ॥

१५३ मणपज्जवनाणलद्धियाण पुच्छा ।

---

१ भ० ८।७७ ।

२. लद्धीया (अ, ब, म, स), अर्थसमीक्षया एतदशुद्ध प्रतिभाति ।

तस्स अलद्धीयाण मणपज्जवनाणवज्जाइ चत्तारि नाणाइ, तिण्णि य अण्णाणाइ-भयणाए ।

१६२. सामाइयचरित्तलद्धिया ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी—केवलवज्जाइ चत्तारि नाणाइ भयणाए । तस्स अलद्धियाण पच नाणाइ, तिण्णि य अण्णाणाइ—भयणाए । एव जहा सामाइयचरित्तलद्धिया अलद्धीया य भणिया, एव जाव अहक्खायचरित्तलद्धीया अलद्धीया य भाणियव्वा, नवर—अहक्खायचरित्तलद्धीयाण[1] पच नाणाइ भयणाए ॥

चरित्ताचरित्त पडुच्च—

१६३. चरित्ताचरित्तलद्धिया ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । अत्थेगतिया दुण्णाणी, अत्थेगतिया तिण्णाणी । जे दुण्णाणी ते आभिणिवोहियनाणी य सुयनाणी य । जे तिण्णाणी ते आभिणिवोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी ॥

दाणाइ पडुच्च—

१६४ तस्स अलद्धियाण पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए ।
दाणलद्धियाण पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए ॥

१६५ तस्स अलद्धीयाण पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । नियमा एगनाणी—केवलनाणी । एव जाव वीरियस्स 'लद्धीया अलद्धीया'[2] य भाणियव्वा ।

बालाइवीरिय पडुच्च—

बालवीरियलद्धियाण तिण्णि नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए । तस्स अलद्धियाण पच नाणाइ भयणाए ।
पडियवीरियलद्धियाण पच नाणाइ भयणाए । तस्स अलद्धीयाण मणपज्जवनाणवज्जाइ नाणाइ, अण्णाणाणि य भयणाए ।
बालपडियवीरियलद्धियाण तिण्णि नाणाइ भयणाए । तस्स अलद्धीयाण पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ— भयणाए ॥

इदिय पडुच्च—

१६६. इदियलद्धिया ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! चत्तारि नाणाइ, तिण्णि य अण्णाणाइं – भयणाए ॥

१६७. तस्स अलद्धियाण पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । नियमा एगनाणी—केवलनाणी ॥

---

१. °लद्धीण (अ, क, ता, ब, म, स) ।   २ लद्धी अलद्धी (अ, क, ता, ब, म, स) ।

लेस्सं पडुच्च—

१७७. सलेस्सा ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
जहा सकाइया ॥

१७८. कण्हलेस्सा ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
जहा[1] सइदिया । एव जाव पम्हलेस्सा, सुक्कलेस्सा जहा सलेस्सा । अलेस्सा जहा सिद्धा ॥

कसाय पडुच्च—

१७९ सकसाई ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
जहा सइदिया । एव जाव लोभकसाई ॥

१८०. अकसाई ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
पच नाणाइ भयणाए ॥

वेद पडुच्च—

१८१. सवेदगा ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
जहा सइदिया । एव इत्थिवेदगा वि, एव पुरिसवेदगा वि, एव नपुसग वेदगा वि । अवेदगा जहा अकसाई ॥

आहारग पडुच्च—

१८२. आहारगा ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
जहा सकसाई, नवर—केवलनाण पि ॥

१८३ अणाहारगा ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
मणपज्जवनाणवज्जाइ नाणाइ, अण्णाणाइ तिण्णि—भयणाए ॥

नाणाणं विसय-पदं

१८४. आभिणिबोहियनाणस्स ण भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।
दव्वओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वदव्वाइ जाणइ-पासइ ।
खेत्तओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्व खेत्त जाणइ-पासइ ।
[2]कालओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्व काल जाणइ-पासइ ।
भावओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्वे भावे जाणइ-पासइ[3] ॥

---

१. भ० ८।११५ ।
२. म० पा०—एव कालओ वि, एव भावओ वि ।
३. नन्दीसूत्रे अस्मिन् विषये विसवादोस्ति—दव्वओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्वदव्वाइ जाणइ, न पासइ । खेत्तओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्व खेत्त जाणइ, न पासइ ।

छप्पण्णए अतरदीवगेसु सण्णीण पंचिदियाणं पज्जत्तयाणं मणोगए भावे जाणइ-पासइ ।

त चेव विउलमई अड्ढाइज्जेहिमगुलेहि अब्भहियतर विउलतर विसुद्धतर वितिमिरतर खेत्त जाणइ-पासइ ।

कालओ ण उज्जुमई जहण्णेण पलिओवमस्स, असखिज्जयभागं, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असखिज्जयभाग अतीयमणागय वा काल जाणइ-पासइ ।

त चेव विउलमई अब्भहियतराग विउलतराग विसुद्धतरागं वितिमिरतराग जाणइ पासइ ।

भावओ ण उज्जुमई अणते भावे जाणइ-पासइ, सव्वभावाण अणतभागं जाणइ-पासइ ।

त चेव विउलमई अब्भहियतराग विउलतराग विसुद्धतराग वितिमिरतराग जाणइ-पासइ° ।।

१८८. केवलनाणस्स ण भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?

गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा— दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।

दव्वओ ण केवलनाणी सव्वदव्वाइ जाणइ-पासइ ।

[१]•खेत्तओ ण केवलनाणी सव्व खेत्त जाणइ-पासइ ।

कालओ ण केवलनाणी सव्व काल जाणइ-पासइ ।

भावओ ण केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ-पासइ° ।।

१८९. मइअण्णाणस्स ण भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?

गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।

दव्वओ णं मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगयाइ दव्वाइं जाणइ-पासइ[२] ।

•खेत्तओ ण मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगय खेत्त जाणइ-पासइ ।

कालओ ण मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगय काल जाणइ-पासइ ।°

भावओ ण मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगए भावे जाणइ-पासइ ।।

१९०. सुयअण्णाणस्स ण भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?

गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।

दव्वओ ण सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगयाइ दव्वाइ आघवेइ, पण्णवेइ, परूवेइ[३]।

---

१. स० पा०—एव जाव भावओ ।

२. स० पा०—पासइ जाव भावओ ।

३. वाचनान्तरे पुनरिदमधिकमवलोक्यते 'दंसेति निदंसेति उवदंसेति' (वृ) ।

गोयमा ! अण्णाणी, मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी य तिविहे पण्णत्ते, त जहा—१ अणादीए वा अपज्जवसिए २ अणादीए वा सपज्जवसिए ३ सादीए वा सपज्जवसिए। तत्थ ण जे से सादीए सपज्जवसिए से जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण अणत काल—अणता ओसप्पिणी उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अवड्ढ पोग्गलपरियट्ट देसूण ॥

१९९ विभगनाणी ण भते ! पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइ ॥

नाणीण अतर-पद

२०० आभिणिबोहियनाणिस्स ण भते ! अतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण अणत काल जाव[1] अवड्ढ पोग्गल-परियट्ट देसूण ॥

२०१ सुयनाणि-ओहिनाणि-मणपज्जवनाणीण एव चेव ॥

२०२ केवलनाणिस्स पुच्छा।
गोयमा ! नत्थि अतर ॥

२०३ मइअण्णाणिस्स सुयअण्णाणिस्स य पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ साइरेगाइ ॥

२०४ विभगनाणिस्स पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वणस्सइकालो ॥

नाणीण अप्पाबहुयत्त-पद

२०५ एतेसि ण भते ! जीवाण आभिणिबोहियनाणीण, सुयनाणीण, ओहिनाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणीण य कयरे कयरेहितो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवनाणी, ओहिनाणी असखेज्जगुणा, आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी दो वि तुल्ला विसेसाहिया, केवलनाणी अणत-गुणा ॥

२०६. एतेसि ण भते ! जीवाण मइअण्णाणीण, सुयअण्णाणीण, विभगनाणीण य कयरे कयरेहितो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा विभगनाणी, मइअण्णाणी सुयअण्णाणी दो वि तुल्ला अणतगुणा ॥

---

१. भ० ८।१९८।

२३६ समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव थूलए पाणाइवाए अपच्चक्खाए[1] भवइ, से णं भंते ! पच्छा पच्चाइक्खमाणे किं करेइ ?
गोयमा ! तीयं पडिक्कमति, पडुप्पन्नं संवरेति, अणागयं पच्चक्खाति ।।

२३७ तीयं पडिक्कममाणे किं १. तिविहं तिविहेणं पडिक्कमति ? २. तिविहं दुविहेणं पडिक्कमति ? ३ तिविहं एगविहेणं पडिक्कमति ? ४ दुविहं तिविहेणं पडिक्कमति ? ५. दुविहं दुविहेणं पडिक्कमति ? ६ दुविहं एगविहेणं पडिक्कमति ? ७ एगविहं तिविहेणं पडिक्कमति ? ८. एगविहं दुविहेणं पडिक्कमति ? ९. एगविहं एगविहेणं पडिक्कमति ?
गोयमा ! तिविहं वा[2] तिविहेणं पडिक्कमति, तिविहं वा दुविहेणं पडिक्कमति, एवं[3] चेव जाव एगविहं वा एगविहेणं पडिक्कमति ।
१ तिविहं तिविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ।
२ तिविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा ३ अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा ४ अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा ।
५ तिविहं एगविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा ६ अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा ७ अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ कायसा ।
८ दुविहं तिविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ मणसा वयसा कायसा ९ अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा १० अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ।
११ दुविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, मणसा वयसा १२ अहवा न करेइ, न कारवेइ मणसा कायसा १३ अहवा न करेइ, न कारवेइ वयसा कायसा १४ अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा १५. अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा १६ अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा १७ अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा १८ अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा १९. अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा ।
२०. दुविहं एक्कविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ मणसा २१ अहवा न करेइ, न कारवेइ वयसा २२. अहवा न करेइ, न कारवेइ कायसा २३ अहवा

१. वाचनान्तरे तु 'अपच्चक्खाए' इत्यस्य स्थाने 'पच्चक्खाए' त्ति 'पच्चाइक्खमाणे' इत्यस्य च स्थाने 'पच्चक्खावेमाणे' त्ति दृश्यते (वृ) ।
२. × (स) ।
३. तं (ज, क, ता, स) ।

२४१. आजीवियसमयस्स णं अयमट्ठे—अक्खीणपडिभोइणो सव्वे सत्ता; से हंता, छेत्ता, भेत्ता, लुंपित्ता, विलुंपित्ता, उद्दवइत्ता आहारमाहारेंति ॥

२४२. तत्थ खलु इमे दुवालस आजीवियोवासगा भवंति, तं जहा—१ ताले २ तालपलंबे ३ उव्विहे ४. संविहे ५ अववहे ६ उदए[1] ७ नामुदए ८ णम्मुदए[2] ९ अणुवालए १० संखवालए ११. अयंपुले १२. कायरए[3]—इच्चेते दुवालस आजीविओवासगा अरहंतदेवतागा[4], अम्मापिउसुस्सूसगा, पंचफलपडिक्कंता, [तं जहा—उंबरेहिं, वडेहिं, बोरेहिं, सतरेहिं, पिलक्खूहिं][5] पलंडुल्हसुणकंदमूलविवज्जगा[6], अणिल्लछिएहिं[7] अणक्कभिन्नेहिं गोणेहिं तसपाणविवज्जिएहिं छेत्तेहिं[8] वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति। एए वि ताव एवं इच्छंति किमंग ! पुण जे इमे समणोवासगा भवंति, जेसिं नो कप्पंति इमाइं पन्नरस कम्मादाणाइं सयं करेत्तए वा, कारवेत्तए वा, करेंतं वा अन्नं समणुजाणेत्तए, तं जहा—इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दंतवाणिज्जे, लक्खवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे, जंतपीलणकम्मे, निल्लंछणकम्मे[9], दवग्गिदावणया, सर-दह-तलागपरिसोसणया[10], असतीपोसणया। इच्चेते समणोवासगा सुक्का, सुक्काभिजातीया भवित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ॥

२४३ कतिविहा णं भंते ! देवलोगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा देवलोगा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरा जोइसिया, वेमाणिया ॥

२४४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[11] ॥

---

१. उवए (ज)।
२. णमुदए (स)।
३. कातरिए (ता, ब, म)।
४. °देवतागा (वृ०)।
५. असौ कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांश: प्रतीयते।
६. पलण्डुल्हसुण° (ब)।
७ अणे° (क, ता, स)।
८ बित्तेहिं (अ), छत्तेहिं (क, म); चित्तेहिं (स)
९. निलंछण° (अ); णेल्लंछण° (ता)।
१०. तलाय° (ब, स)।
११. भ° १।५१।

उवनिमंतेज्जा, नवरं—एगं आउसो ! अप्पणा भुंजाहि, नव थेराण दलयाहि। सेस तं चेव जाव परिट्ठावेयव्वा सिया ।।

२५०. निग्गथं च णं गाहावइ[1]•कुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठं° केइ दोहिं पडिग्गहेहिं उवनिमंतेज्जा—एगं आउसो ! अप्पणा पडिभुंजाहि, एगं थेराणं दलयाहि। से य तं पडिग्गाहेज्जा, •[2]थेरा य से अणुगवेसियव्वा सिया। जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तत्थेव अणुप्पदायव्वे सिया, नो चेव णं अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तं नो अप्पणा परिभुंजेज्जा, नो अण्णेसिं दावए, एगते अणावाए अचित्ते वहुफासुए थंडिल्ले पडिलेहेत्ता पम्मज्जित्ता° परिट्ठावेयव्वे सिया। एवं जाव दसहिं पडिग्गहेहिं।
एवं जहा पडिग्गहवत्तव्वया भणिया, एवं गोच्छग-रयहरण-चोलपट्टग-कंवल-लट्ठि-संथारगवत्तव्वया य भाणियव्वा जाव दसहिं संथारएहिं उवनिमंतेज्जा जाव परिट्ठावेयव्वा सिया ।।

आलोयणाभिमुहस्स आराहय-पदं

२५१. निग्गंथेण य गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविट्ठेण अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्स णं एवं भवति—इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स आलोएमि, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, विउट्टामि[3], विसोहेमि, अकरणयाए अब्भुट्ठेमि, अहारियं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जामि, तओ पच्छा थेराणं अंतियं[4] आलोएस्सामि जाव तवोकम्मं पडिवज्जिस्सामि।
१. से य संपट्ठिए असंपत्ते, थेरा य पुव्वामेव[5] अमुहा सिया। से णं भंते ! किं आराहए ? विराहए ?
गोयमा ! आराहए, नो विराहए।
२. से य संपट्ठिए असंपत्ते, अप्पणा य पुव्वामेव अमुहे सिया। से णं भंते ! किं आराहए ? विराहए ?
गोयमा ! आराहए, नो विराहए।
३. से य संपट्ठिए असंपत्ते, थेरा य कालं करेज्जा। से णं भंते ! किं आराहए ? विराहए ?
गोयमा ! आराहए, नो विराहए।

---

१. स० पा०—गाहावइ जाव केइ।
२. स० पा०—तहेव जाव तं नो अप्पणा परिभुंजेज्जा, नो अण्णेसिं दावए, सेसं तं चेव जाव परिट्ठवेयव्वे।
३. विउट्टेमि (ता)।
४. अंतिए (अ)।
५. × (अ, ता, व, म)।

२५५ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—आराहए ? नो विराहए ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं उण्णालोमं वा, गयलोमं वा, सणलोमं वा, कप्पासलोमं वा, तणसूयं वा दुहा वा तिहा वा सखेज्जहा वा छिंदित्ता अगणिकायंसि पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! छिज्जमाणे छिण्णे, पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, 'दज्झमाणे दड्ढे'[1] त्ति वत्तव्वं सिया ?
हंता भगवं ! छिज्जमाणे छिण्णे[2], •पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, दज्झमाणे° दड्ढे त्ति वत्तव्वं सिया ।
से जहा वा केइ पुरिसे वत्थं अहतं वा, धोतं वा, तंतुग्गयं वा मंजिट्ठ[3]-दोणीए पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते, पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, रज्जमाणे रत्ते त्ति वत्तव्वं सिया ?
हंता भगवं ! उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते[4], •पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, रज्जमाणे° रत्ते त्ति वत्तव्वं सिया । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—आराहए, नो विराहए ॥

जोति-जलण-पदं

२५६ पदीवस्स णं भंते ! झियायमाणस्स किं पदीवे झियाइ ? लट्ठी झियाइ ? वत्ती झियाइ ? तेल्ले झियाइ ? दीवचंपए झियाइ ? जोती झियाइ ?
गोयमा ! नो पदीवे झियाइ[5], •नो लट्ठी झियाइ, नो वत्ती झियाइ, नो तेल्ले झियाइ°, नो दीवचंपए झियाइ, जोती झियाइ ॥

२५७. अगारस्स[6] णं भंते ! झियायमाणस्स किं अगारे झियाइ ? कुड्डा झियाइ ? कडणा झियाइ ? धारणा झियाइ ? बलहरणे झियाइ ? वंसा झियाइ ? मल्ला झियाइ ? वागा झियाइ ? छित्तरा झियाइ ? छाणे झियाइ ? जोती झियाइ ?
गोयमा ! नो अगारे झियाइ, नो कुड्डा झियाइ जाव नो छाणे झियाइ, जोती झियाइ ॥

किरिया-पदं

२५८. जीवे णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए, सिय अकिरिए ॥

---

१. उज्झमाणे उज्झे (ता, ब) ।
२. सं० पा०—छिण्णे जाव दड्ढे ।
३. मंजिट्ठा (अ, म) ।
४. सं० पा०—उक्खित्ते जाव रत्ते ।
५. सं० पा०—झियाइ जाव नो ।
६. आगारे (अ, म, स) ।

सत्तमो उद्देसो

अण्णउत्थियसंवाद-पदं

अदत्त पडुच्च –

२७१. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नयरे—वण्णओ[1], गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव[2] पुढविसिलावट्टओ। तस्स ण गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामते वहवे अण्णउत्थिया परिवसति। तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे आदिगरे जाव[3] समोसढे जाव[4] परिसा पडिगया ॥

२७२ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स वहवे अतेवासी थेरा भगवतो जातिसपन्ना कुलसपन्ना •[5]वलसपन्ना विणयसपन्ना नाणसपन्ना दसण-सपन्ना चरित्तसपन्ना लज्जासपन्ना लाघवसपन्ना ओयसी तेयसी वच्चसी जससी जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जियनिद्दा जिइदिया जिय-परीसहा° जीवियास-मरणभयविप्पमुक्का समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूर-सामंते उड्ढजाणू अहोसिरा झाणकोट्ठोवगया सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरंति[6] ॥

२७३. तए ण ते अण्णउत्थिया जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ते थेरे भगवते एव वयासी—तुब्भे ण अज्जो तिविह तिविहेण अस्सजय-'विरय-पडिहय'[7]-'•[8]पच्चक्खायपावकम्मा, सकिरिया, असवुडा, अगतदडा° एगतवाला या वि भवह ॥

२७४. तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—केण कारणेण अज्जो! अम्हे तिविह तिविहेण अस्सजय-विरय[9]-•पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा, सकिरिया, असंवुडा, एगतदडा°, एगतवाला या वि भवामो ?

२७५. तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—तुब्भे[10] ण अज्जो! अदिन्न गेण्हह, अदिन्न भुजह, अदिन्न सातिज्जह। तए ण ते तुब्भे अदिन्न गेण्हमाणा, अदिन्न भुजमाणा, अदिन्न सातिज्जमाणा तिविह तिविहेण अस्सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगतवाला या वि भवह ॥

---

१. ओ० सू० १।
२. ओ० सू० २-१३।
३. भ० १।७।
४. भ० १।८।
५. स० पा०—जहा बितियसए जाव जीवियास।
६. जाव विहरति (अ, क, ता, म, स)।
७. अविरय-अपडिहय (अ, क, ब, म, स)।
८. स० पा०—जहा सत्तमसए बितिए उद्देसए जाव एगतवाला।
९. स० पा०—विरय जाव एगतवाला।
१०. तुम्हे (ब)।

पंडिया या वि भवामो। तुब्भे ण अज्जो! अप्पणा चेव तिविह तिविहेण अस्सजय-विरयपडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतवाला या वि भवह॥

२८१ तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एवं वयासी—केण कारणेण अज्जो! अम्हे तिविह तिविहेण अस्सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगतवाला या वि भवामो ?

२८२ तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—तुब्भे ण अज्जो! अदिन्न गेण्हह, अदिन्न भुजह, अदिन्न सातिज्जह, तए ण तुब्भे अदिन्न गेण्हमाणा जाव एगतवाला या वि भवह॥

२८३ तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—केण कारणेण अज्जो! अम्हे अदिन्न गेण्हामो जाव एगतवाला या वि भवामो ?

२८४. तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—तुब्भण्ण अज्जो! दिज्जमाणे अदिन्ने •[1]पडिग्गाहेज्जमाणे अपडिग्गाहिए, निस्सिरिज्जमाणे अणिसिट्ठे। तुब्भण्ण अज्जो! दिज्जमाण पडिग्गहग असपत्त एत्थ ण अतरा केइ अवहरेज्जा°, गाहावइस्स ण त, नो खलु तं तुब्भ। तए ण तुब्भे अदिन्न गेण्हह जाव[2] एगतवाला या वि भवह॥

हिंसं पडुच्च—

२८५ तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—तुब्भे णं अज्जो! तिविहं तिविहेण अस्सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगतवाला या वि भवह॥

२८६ तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—केण कारणेण अज्जो! अम्हे तिविह तिविहेणं जाव एगंतवाला यावि भवामो ?

२८७ तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—तुब्भे ण अज्जो! रीय रीयमाणा पुढवि पेच्चेह अभिहणह वत्तेह लेसेह सघाएह सघट्टेह परितावेह किलामेह उद्दवेह, तए ण तुब्भे पुढवि पेच्चेमाणा अभिहणमाणा[3] •वत्तेमाणा लेसेमाणा संघाएमाणा सघट्टेमाणा परितावेमाणा किलामेमाणा° उद्दवेमाणा तिविह तिविहेण अस्सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगतवाला या वि भवह॥

२८८. तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—नो खलु अज्जो! अम्हे रीय रीयमाणा पुढवि पेच्चामो अभिहणामो जाव उद्दवेमो। अम्हे ण अज्जो!

---

१. स० पा०—त चेव जाव गाहावइस्स।
२. स चेव जाव (अ, क, ता, ब, म, स)।
३ सं० पा०—अभिहणमाणा जाव उद्दवेमाणा।

३०४. तं भते ! किं इत्थी वंधइ ? पुरिसो वंधइ ? नपुसगो वधइ ? इत्थीओ ? वधति ? पुरिसा वधति ? नपुसगा वधति ? नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुसगो वधइ ?

गोयमा ! नो इत्थी वधइ, नो पुरिसो वधइ[1] •नो नपुसगो वधइ, नो इत्थीओ वधति, नो पुरिसा वधति, नो नपुसगा वधति, नोइत्थी नोपुरिसो° नोनपुसगो वधइ—पुव्वपडिवन्नए पडुच्च अवगयवेदा वधंति, पडिवज्जमाणए पडुच्च अवगयवेदो वा वधइ अवगयवेदा वा वधति ॥

३०५ जइ भते ! अवगयवेदो वा वधइ, अवगयवेदा वा वंधति त भते ! किं १ इत्थीपच्छाकडो वधइ ? २ पुरिसपच्छाकडो वधइ ? ३. नपुसगपच्छाकडो वधइ ? ४ इत्थीपच्छाकडा वधति ? ५. पुरिसपच्छाकडा वधति ? ६ नपुसगपच्छाकडा वधति ? उदाहु इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य वधइ ४ ? उदाहु इत्थीपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य । वधइ ४ ? उदाहु पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य वंधइ ४ ? उदाहु इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य वधइ ८ एव एते छव्वीस भगा जाव उदाहु इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुसगपच्छाकडा य वधति ?

गोयमा ! १ इत्थीपच्छाकडो वि वंधइ २ पुरिसपच्छाकडो वि वंधइ ३ नपुसगपच्छाकडो वि वधइ ४ इत्थीपच्छाकडा वि वंधति ५ पुरिसपच्छाकडा वि वधति ६ नपुसगपच्छाकडा वि वधंति ७ अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य वधइ, एव एए चेव छव्वीस भगा भाणियव्वा जाव[2] २६ अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुसगपच्छाकडा य वधति ॥

३०६ त भते ! किं १ वधी वधइ वधिस्सइ ? २ वधी वंधइ न वधिस्सइ ? ३ वधी न वधइ वधिस्सइ ? ४ वधी न वधइ न वधिस्सइ ? ५. न वधी वधइ वधिस्सइ ? ६ न वधी वधइ न वधिस्सइ ? ७ न वधी न वधइ वधिस्सइ ? ८. न वधी न वधइ न वधिस्सइ ?

गोयमा ! भवागरिस पडुच्च अत्थेगतिए वधी वधइ वधिस्सइ, अत्थेगतिए वधी वधइ न वधिस्सइ, एव त चेव सव्व जाव अत्थेगतिए न वधी न वधइ न वधिस्सइ ।

---

१. म० पा०—वधइ जाव नोनपुसगा ।

२ ८. अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडा य वधंति । ९ अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडो य वधइ १० अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य वधंति । ११ अहवा इत्थीपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य वधइ १२ अहवा इत्थीपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडा य वधति १३. अहवा इत्थीपच्छाकडा य नपुसगपच्छाकडो य वधइ १४. अहवा इत्थीपच्छाकडा य नपुसगपच्छाकडा य वधति

३२६. एक्कविहबंधगस्स णं भंते ! वीयरागछउमत्थस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एवं चेव—जहेव छव्विहबंधगस्स ॥

३२७. एगविहबंधगस्स णं भंते ! सजोगिभवत्थकेवलिस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एक्कारस परीसहा पण्णत्ता । नव पुण वेदेइ । सेसं जहा छव्विहबंधगस्स ॥

३२८. अबंधगस्स णं भंते ! अयोगिभवत्थकेवलिस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एक्कारस परीसहा पण्णत्ता । नव पुण वेदेइ—जं समयं सीयपरीसहं वेदेइ नो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ, जं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ, जं समयं चरियापरीसहं वेदेइ नो तं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ, जं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ नो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ ॥

सूरिय-पदं

३२९. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ? मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति ? अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ?
हंता गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य[1] •मूले य दीसंति, मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति°, अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ॥

३३०. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि, मज्झंतियमुहुत्तंसि य, अत्थमणमुहुत्तंसि य सव्वत्थ समा उच्चत्तेणं ?
हंता गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमण[2]•मुहुत्तंसि, मज्झंतियमुहुत्तंसि य, अत्थमणमुहुत्तंसि य सव्वत्थ समा° उच्चत्तेणं ॥

३३१. जइ णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि, मज्झंतियमुहुत्तंसि य, अत्थमणमुहुत्तंसि[3] •य सव्वत्थ समा° उच्चत्तेणं, से केणं खाइ अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि[4] दूरे य मूले य दीसंति ? जाव अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ?
गोयमा ! लेसापडिघाएणं उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति, लेसाभितावेणं मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति, लेसापडिघाएणं अत्थमणमुहुत्तंसि

---

१. म० पा०—न चेव जाव अत्थमण° ।
२. म० पा०—उग्गमण जाव उच्चत्तेण ।
३. म० पा०—अत्थमणमुहुत्तंसि जाव उच्चत्तेण । 'अ, ता, ब, म, स' संकेतितादर्शेषु 'अत्थमणमुहुत्तंसि मूले जाव उच्चत्तेण' इति पाठोऽस्ति । अत्र 'मूले' इति पदं नावश्यकं प्रतिभाति ।
४. °मुहुत्तंसि य (अ, क, ता, ब, म, स)।

जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं जाव[1]—

३४१. इदट्ठाणे णं भंते ! केवतियं कालं विरहिए उववाएणं ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ॥

३४२. बहिया णं भंते ! माणुसुत्तरपव्वयस्स जे चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-तारारूवा ते णं भंते ! देवा किं उड्ढोववन्नगा ?
जहा जीवाभिगमे जाव[2]—

३४३. इदट्ठाणे णं भंते ! केवतियं कालं उववाएणं विरहिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ॥

३४४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

नवमो उद्देसो

बंध-पदं

३४५. कतिविहे णं भंते ! बंधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—पयोगबंधे य, वीससाबंधे य ॥

वीससाबंध-पदं

३४६. वीससाबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सादीयवीससाबंधे य, अणादीयवीससाबंधे य ॥

३४७. अणादियवीससाबंधे[4] णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—धम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे, अधम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे, आगासत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे ॥

३४८. धम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे णं भंते ! किं देसबंधे ? सव्वबंधे ?
गोयमा ! देसबंधे, नो सव्वबंधे । एवं अधम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे वि, एवं आगासत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे वि ॥

---

१. जी० ३ ।
२. जी० ३ ।
३. भ० १।५१ ।
४. अणातीत° (ता) ।

चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—आलावणवधे, अल्लियावणवधे, सरीरवधे, सरीरप्पयोगवधे ॥

आलावणं पडुच्च—

३५५. से किं त आलावणवधे ?
आलावणवधे—जण्ण तणभाराण वा, कट्ठभाराण वा, पत्तभाराण वा, पलालभाराण वा[1], वेत्तलता-वाग-वरत्त-रज्जु-वल्लि-कुस-दब्भमादीएहिं आलावणवधे समुप्पज्जइ, जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण सखेज्जं काल । सेत्त आलावणवधे ॥

अल्लियावणं पडुच्च—

३५६ से किं त अल्लियावणवधे ?
अल्लियावणवधे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—लेसणावधे, उच्चयवधे, समुच्चयवधे, साहणणावधे[2] ॥

३५७. से किं त लेसणावधे ?
लेसणावधे—जण्ण कुड्डाण, कोट्टिमाण[3], खभाण, पासायाण, कट्ठाणं, चम्माण, घडाण, पडाण, कडाण छुहा-चिक्खल्ल-सिलेस-लक्ख-महुसित्थमाईएहिं लेसणएहिं वधे समुप्पज्जइ, जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण सखेज्ज काल । सेत्त लेसणावधे ॥

३५८. से किं त उच्चयवधे ? उच्चयवधे—जण्ण तणरासीण वा, कट्ठरासीण वा, पत्तरासीण वा, तुसरासीण वा, भुसरासीण वा गोमयरासीण वा, अवगररासीण वा, उच्चत्तेण वधे समुप्पज्जइ, जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण सखेज्ज कालं । सेत्त उच्चयवधे ॥

३५९. से किं त समुच्चयवधे ?
समुच्चयवधे—जण्ण अगड-तडाग-नदी-दह-वावी-पुक्खरिणी-दीहियाण गुजालियाण, सराण, सरपतियाण, सरसरपतियाण, विलपतियाण देवकुल-सभ-प्पव-थूभ-खाइयाण, फरिहाण[4], पागारट्टालग-चरिय-दार-गोपुर-तोरणाण, पासाय-घर-सरण-लेण-आवणाण, सिघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह[5]-महापहपहमादीणं, छुहा-चिक्खल्ल-सिला[6]-समुच्चएण वधे समुप्पजइ, जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेणं सखेज्ज काल । सेत्त समुच्चयवधे ॥

---

१ वा वेत्तभाराण वा (अ, स) ।
२. साहणावधे (ता); साहणाण ० (म, स) ।
३ कुट्टिमाण (क) ।
४ परिहाण (क, व, म) ।
५. चउमुह (क, ता) ।
६. सिलेस (अ, स); सेला (ता) ।

सरीरप्पयोगं पडुच्च—

३६६. से किं त सरीरप्पयोगवधे ?
सरीरप्पयोगवधे पचविहे पण्णत्ते, त जहा—ओरालियसरीरप्पयोगवधे, वेउव्वियसरीरप्पयोगवधे, आहारगसरीरप्पयोगवधे, तेयासरीरप्पयोगवधे, कम्मासरीरप्पयोगवधे ॥

ओरालियसरीरप्पयोगं पडुच्च—

३६७. ओरालियसरीरप्पयोगवधे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—एगिदियओरालियसरीरप्पयोगवधे, वेइदियओरालियसरीरप्पयोगवधे जाव पचिंदियओरालियसरीरप्पयोगवधे ॥

३६८. एगिदियओरालियसरीरप्पयोगवधे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—पुढविक्काइयएगिदियओरालियसरीरप्पयोगवधे, एव एएण अभिलावेण भेदो जहा ओगाहणसठाणे ओरालियसरीरस्स तहा भाणियव्वो जाव[1] पज्जत्तागब्भवक्कतियमणुस्सपचिंदियओरालियसरीरप्पयोगवंधे य, अप्पज्जत्तागब्भवक्कतियमणुस्स[2]•पचिंदियओरालियसरीरप्पयोग°-वधे य ॥

३६९ ओरालियसरीरप्पयोगवधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए पमादपच्चया कम्म च जोग च भव च आउयं च पडुच्च ओरालियसरीरप्पयोगनामकम्मस्स उदएणं ओरालियसरीरप्पयोगवधे ॥

३७०. एगिदियओरालियसरीरप्पयोगवधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?
एवं चेव । पुढविक्काइयएगिदियओरालियसरीरप्पयोगवंधे एवं चेव, एव जाव वणस्सइकाइया । एव वेइदिया, एवं तेइदिया, एव चउरिदिया ॥

३७१ तिरिक्खजोणियपचिंदियओरालियसरीरप्पयोगवधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ? एव चेव ॥

३७२. मणुस्स पचिंदियओरालियसरीरप्पयोगववे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए पमादपच्चया[3] •कम्म च जोग च भव च° आउय च पडुच्च मणुस्सपचिंदियओरालियसरीरप्पयोगनामकम्मस्स उदएण मणुस्सपचिंदियओरालियसरीरप्पयोगवंधे ॥

३७३. ओरालियसरीरप्पयोगववे ण भते ! कि देसवधे ? सव्ववधे ?

---

१. प० २१ ।
२ स० पा०—°मणुस्स जाव वधे ।
३ स० पा०—पमादपच्चया जाव आउय ।

हिया कायव्वा। वाउक्काइयाण सव्वबधंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं ति-समयूण, उक्कोसेण तिण्णि वाससहस्साइ समयाहियाइ। देसबधंतरं जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण अतोमुहुत्तं ॥

३८२. पंचिदियतिरिक्खजोणियओरालियपुच्छा।
सव्वबधतर जहण्णेण खुड्डाग भवग्गहण तिसमयूणं, उक्कोसेण पुव्वकोडी सम-याहिया। देसबधतर जहा एगिदियाण तहा पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं, एव मणुस्साण वि निरवसेस भाणियव्वं जाव उक्कोसेण अतोमुहुत्त ॥

३८३ जीवस्स ण भते! एगिदियत्ते, नोएगिदियत्ते, पुणरवि एगिदियत्ते एगिंदिय-ओरालियसरीरप्पयोगबधतर कालओ केवच्चिर होइ?
गोयमा! सव्वबधतर जहण्णेण दो खुड्डाइ भवग्गहणाइ तिसमयूणाइ, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइ सखेज्जवासमब्भहियाइ। देसबधतरं जहण्णेण खुड्डाग भवग्गहण समयाहिय, उक्कोसेण दो सागरोवमसहस्साइ सखेज्जवास-मब्भहियाइ ॥

३८४. जीवस्स ण भते! पुढविक्काइयत्ते, नोपुढविक्काइयत्ते, पुणरवि पुढविक्काइयत्ते पुढविक्काइयएगिदियओरालियसरीरप्पयोगबधतर कालओ केवच्चिर होइ?
गोयमा! सव्वबधतर जहण्णेण दो खुड्डाइ भवग्गहणाइ तिसमयूणाइ[1], उक्को-सेण अणत कालं—अणताओ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणता लोगा—असखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, ते ण पोग्गलपरियट्टा आवलियाए असखेज्जइभागो। देसबधतर जहण्णेण खुड्डाग भवग्गहण समयाहिय, उक्कोसेण अणतं काल जाव आवलियाए असंखेज्जइभागो। जहा पुढविक्काइयाण एवं वणस्सइकाइयवज्जाण जाव मणुस्साण। वणस्सइकाइयाण[2] दोण्णि खुड्डाइ एव चेव, उक्कोसेण असखेज्ज काल—असखेज्जाओ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ असखेज्जा लोगा, एव देसबधतर पि उक्कोसेण पुढविकालो ॥

३८५. एएसि णं भते! जीवाण ओरालियसरीरस्स देसबधगाणं, सव्वबधगाण, अबध-गाण य कयरे कयरेहिंतो[3] °अप्पा वा? बहुया वा? तुल्ला वा°? विसेसाहिया वा?
गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा ओरालियसरीरस्स सव्वबंधगा, अबधगा विसेसा-हिया, देसबधगा असखेज्जगुणा ॥

---

१. एव चेव (अ, क, ता, ब, म), तिसमयूणाइं एवं चेव (स); अत्र द्वयोर्मिश्रणं जातम्। 'एवं चेव' ति कस्मात् 'तिसमयूणाइं' ति दृश्यम्।
२. तक्कालो वण० (ता)।
३. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

३९२ वेउव्वियसरीरप्पयोगबधे णं भते ! कि देसबधे ? सव्वबधे ?
गोयमा ! देसबधे वि, सव्वबधे वि ।
वाउक्काइयएगिदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबधे वि एव चेव । रयणप्पभापुढवि-नेरइया एव चेव । एव जाव अणुत्तरोववाइया ॥

३९३ वेउव्वियसरीरप्पयोगबधे ण भते । कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! सव्वबधे जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण दो समया । देसबधे जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ समयूणाइ ॥

३९४ वाउक्काइयएगिदियवेउव्वियपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबधे एक्कं समय, देसबधे जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेण अतोमुहुत्त ॥

३९५ रयणप्पभापुढविनेरइयपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबधे एक्कं समय, देसबधे जहण्णेण दसवाससहस्साइ तिसमयूणाइ, उक्कोसेण सागरोवमं समयूण । एव जाव अहे सत्तमा, नवर—देसबधे जस्स जा जहण्णिया ठिती सा तिसमयूणा कायव्वा जाव उक्कोसिया सा समयूणा । पचिदियतिरिक्खजोणियाण मणुस्साण य जहा वाउक्काइयाण, असुरकुमार-नागकुमार जाव अणुत्तरोववाइयाण जहा नेरइयाण, नवर—जस्स जा ठिती सा भाणियव्वा जाव अणुत्तरोववाइयाण सव्वबधे एक्क समय, देसबधे जहण्णेणं एक्कतीस सागरोवमाइ तिसमयूणाइ[1], उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ समयूणाइ ॥

३९६. वेउव्वियसरीरप्पयोगबधतर ण भते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! सव्वबधतर जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण अणत काल—अणताओ[2] •ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणता लोगा—असखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, ते ण पोग्गलपरियट्टा° आवलियाए असखेज्जइभागो । एव देसबंधतर पि ॥

३९७ वाउक्काइयवेउव्वियसरीरपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबधतर जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभाग । एव देसबधतर पि ॥

३९८. तिरिक्खजोणियपचिदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबधतर—पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबधतर जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडीपुहत्त । एव देसबधतर पि । एव मणूसस्स वि[3] ॥

---

१. तिसमऊणाइ (र, ता, ब) ।
२. सं० पा०—अणताओ जाव आवलियाए ।
३. मणुयस्स (क, म); मणुस्सा (ता, ब) ।

आहारगसरीरप्पयोगं पडुच्च –

४०५. आहारगसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते ॥

४०६ जइ एगागारे पण्णत्ते किं मणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे ? अमणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे ?
गोयमा ! मणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे, नो अमणुस्साहारगसरीप्पयोगबंधे। एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे जाव[1] इड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमागब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे, नो अणिड्ढिपत्तपमत्त[2]•संजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमागब्भवक्कंतियमणुस्सा°हारगसरीरप्पयोगबंधे ॥

४०७ आहारगसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए[3] •पमादपच्चया कम्मं च जोगं च भवं च आउयं च° लद्धिं वा पडुच्च[4] आहारगसरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं आहारगसरीरप्पयोगबंधे ॥

४०८. आहारगसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे ? सव्वबंधे ?
गोयमा ! देसबंधे वि, सव्वबंधे वि ॥

४०९. आहारगसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

४१० आहारगसरीरप्पयोगबंधंतरं[5] णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा—अवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं। एवं देसबंधंतरं पि ॥

४११ एएसि णं भंते ! जीवाणं आहारगसरीरस्स देसबंधगाणं, सव्वबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो[6] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सव्वबंधगा, देसबंधगा संखेज्जगुणा, अबंधगा अणंतगुणा ॥

---

१. प० २१ ।
२ सं० पा०—°पमत्त जाव आहारग° ।
३ सं० पा०—सद्दव्वयाए जाव लद्धिं ।
४. पडुच्चा (ता, ब) ।
५. °बंधतरे (अ, क, स) ।
६. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

४२० नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! नाणपडिणीययाए, नाणणिण्हवणयाए, नाणंतराएणं, नाणप्पदोसेणं, नाणच्चासातणयाए[1], नाणविसंवादणाजोगेणं नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोग-नामाए[2] कम्मस्स उदएणं नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे ॥

४२१ दरिसणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! दंसणपडिणीययाए, °[3]दंसणणिण्हवणयाए, दंसणंतराएणं, दंसणप्प-दोसेणं, दंसणच्चासातणयाए°, दंसणविसंवादणाजोगेणं दंसणावरणिज्जकम्मा-सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं[4] °दरिसणावरणिज्जकम्मासरीर°प्पयोग-बंधे ॥

४२२ सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! पाणाणुकंपयाए, भूयाणुकंपयाए, °[5]जीवाणुकंपयाए, सत्ताणुकंपयाए, बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपिट्टणयाए° अपरियावणयाए सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्प-योगनामाए कम्मस्स उदएणं सायावेयणिज्जकम्मा[6]°सरीरप्पयोग°बंधे ॥

४२३ असायावेयणिज्ज[7]°कम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं° ? गोयमा ! परदुक्खणयाए, परसोयणयाए, °[8]परजूरणयाए, परतिप्पणयाए, परपिट्टणयाए, परपरियावणयाए, बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खण-याए सोयणयाए जूरणयाए तिप्पणयाए पिट्टणयाए° परियावणयाए असाया-वेयणिज्जकम्मा[9]°सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं असायावेयणिज्जकम्मा-सरीर°प्पयोगबंधे ॥

४२४ मोहणिज्जकम्मासरीर[10]°प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं° ? गोयमा ! तिव्वकोहयाए, तिव्वमाणयाए, तिव्वमाययाए तिव्वलोभयाए, तिव्वदंसणमोहणिज्जयाए, तिव्वचरित्तमोहणिज्जयाए मोहणिज्जकम्मासरीर[11]-°प्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं मोहणिज्जकम्मासरीर°प्पयोगबंधे ॥

णाजोगेण[1] असुभनामकम्मा[2]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं असुभनाम-कम्मासरीर°प्पयोगबंधे ॥

४३१. उच्चागोयकम्मासरीर[3]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?°
गोयमा ! जातिअमदेणं, कुलअमदेणं, बलअमदेणं, रूवअमदेणं, तवअमदेणं, 'सुयअमदेणं, लाभअमदेणं',[4] इस्सरियअमदेणं[5] उच्चागोयकम्मा[6]•सरीरप्पयोग-नामाए कम्मस्स उदएणं उच्चागोयकम्मासरीर°प्पयोगबंधे ॥

४३२ नीयागोयकम्मासरीर[7]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?°
गोयमा ! जातिमदेणं, कुलमदेणं, बलमदेणं[8], •रूवमदेणं, तवमदेणं, सुयमदेणं, लाभमदेणं°, इस्सरियमदेणं[9] नीयागोयकम्मा[10]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं नीयागोयकम्मासरीर°प्पयोगबंधे ॥

४३३ अंतराइयकम्मासरीर[11]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?°
गोयमा ! दाणंतराएणं, लाभंतराएणं, भोगंतराएणं, उवभोगंतराएणं, वीरियं-तराएणं, अंतराइयकम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं अंतराइयकम्मा-सरीरप्पयोगबंधे ॥

पयोगबंधस्स देसबंध-सव्वबंध-पदं

४३४. नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे ? सव्वबंधे ?
गोयमा ! देसबंधे, नो सव्वबंधे । एवं जाव अंतराइयं ॥

४३५. नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए[12]•वा अपज्जवसिए, अणादीए वा सपज्जवसिए° । एवं जाव अंतराइयस्स ॥

४३६. नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधंतरं णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! अणादीयस्स[13]•अपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं, अणादीयस्स सपज्ज-वसियस्स नत्थि अंतरं° । एवं जाव अंतराइयस्स ॥

४३७. एएसि णं भंते ! जीवाणं नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स देसबंधगाणं, अबंधगाणं

---

१ वायजणुज्जुययाए भावजणुज्जुयाए (ता) ।
२. स० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।
३. स० पा०—पुच्छा ।
४. लाभअमदेणं, सुयअमदेणं (अ) ।
५. इस्सरिय° (म) ।
६. स० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।
७. स० पा०—पुच्छा ।
८. स० पा०—बलमदेणं जाव इस्सरिय° ।
९. तिस्सरिय° (म) ।
१० स० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।
११. स० पा०—पुच्छा ।
१२. स० पा०—एवं जहा तेयगस्स संचिट्ठणा तहेव ।
१३. स० पा०—एवं जहा तेयगसरीरस्स अंतरं तहेव ।

गोयमा ! नो बंधए, अबंधए। एव जहेव सव्वबंधेणं भणियं तहेव देसबंधेण वि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स ॥

४४३. जस्स णं भंते ! आहारगसरीरस्स सव्वबंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स कि बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए। एव वेउव्वियस्स वि। तेया-कम्माण जहेव ओरालिएण समं भणियं तहेव भाणियव्वं[1] ॥

४४४. जस्स णं भंते ! आहारगसरीरस्स देसबंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए। एवं जहा आहारगस्स सव्वबंधेण भणियं तहा देसबंधेण वि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स ॥

४४५. जस्स णं भंते ! तेयासरीरस्स देसबंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! बंधए वा, अबंधए वा।
जइ बंधए कि देसबंधए ? सव्वबंधए ?
गोयमा ! देसबंधए वा, सव्वबंधए वा ?
वेउव्वियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
एवं चेव। एवं आहारगस्स[2] वि।
कम्मगसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! बंधए, नो अबंधए।
जइ बंधए कि देसबंधए ? सव्वबंधए ?
गोयमा ! देसबंधए, नो सव्वबंधए ॥

४४६. जस्स णं भंते ! कम्मासरीरस्स देसबंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए। जहा तेयगस्स वत्तव्वया भणिया तहा कम्मगस्स वि भाणियव्वा जाव—
तेयासरीरस्स[3] •किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! बंधए, नो अबंधए।
जइ बंधए कि देसबंधए ? सव्वबंधए ?
गोयमा !• देसबंधए, नो सव्वबंधए ॥

४४७. एएसि णं भंते ! जीवाणं[4] ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेयाकम्मासरीरगाणं

---

१. भ० ८।४३९।
२. आहारगसरीरस्स (ज, म)।
३. सं० पा०—तेयासरीरस्स जाव देसबंधए।
४. सव्वजीवाणं (ज, स)।

तत्थ ण जे से दोच्चे पुरिसजाए से णं पुरिसे असीलवं सुयवं—अणुवरए, विण्णायधम्मे। एस ण गोयमा! मए पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते।
तत्थ ण जे से तच्चे पुरिसजाए से ण पुरिसे सीलवं सुयवं—उवरए, विण्णायधम्मे। एस ण गोयमा! मए पुरिसे सव्वाराहए पण्णत्ते।
तत्थ ण जे से चउत्थे पुरिसजाए से ण पुरिसे असीलवं असुयवं—अणुवरए, अविण्णायधम्मे। एस ण गोयमा! मए पुरिसे सव्वविराहए पण्णत्ते।

आराहणा-पद

४५१. कतिविहा णं भते! आराहणा पण्णत्ता?
गोयमा! तिविहा आराहणा पण्णत्ता, तं जहा—नाणाराहणा, दंसणाराहणा, चरित्ताराहणा॥

४५२. नाणाराहणा ण भते! कतिविहा पण्णत्ता?
गोयमा! तिविहा पण्णत्ता, त जहा—उक्कोसिया, मज्झिमा, जहण्णा॥

४५३. दसणाराहणा ण भते! कतिविहा पण्णत्ता?
[1]°गोयमा! तिविहा पण्णत्ता, त जहा—उक्कोसिया, मज्झिमा, जहण्णा॥

४५४ चरित्ताराहणा ण भते! कतिविहा पण्णत्ता!
गोयमा! तिविहा पण्णत्ता, त जहा—उक्कोसिया, मज्झिमा, जहण्णा॥°

४५५. जस्स ण भते! उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया दसणाराहणा? जस्स उक्कोसिया दसणाराहणा तस्स उक्कोसिया नाणाराहणा?
गोयमा! 'जस्स उक्कोसिया'[2] नाणाराहणा तस्स दसणाराहणा उक्कोसा वा अजहण्णुक्कोसा वा। जस्स पुण उक्कोसिया दसणाराहणा तस्स नाणाराहणा उक्कोसा वा, जहण्णा वा, अजहण्णमणुक्कोसा वा॥

४५६. जस्स ण भते! उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा? जस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स उक्कोसिया नाणाराहणा?
[3]°गोयमा! जस्स उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स चरित्ताराहणा उक्कोसा वा अजहण्णुक्कोसा वा। जस्स पुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स नाणाराहणा उक्कोसा वा, जहण्णा वा, अजहण्णमणुक्कोसा वा° ॥

४५७. जस्स ण भते! उक्कोसिया दसणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा? जस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा?

---

१. स० पा०—एव चेव तिविहा वि, एव चरित्ताराहणा वि।
२. जस्सुक्कोसिया (अ, ता, ब)।
३. स० पा०—जहा उक्कोसिया नाणाराहणा य दसणाराहणा य भणिया तहा उक्कोसिया नाणाराहणा य चरित्ताराहणा य भाणियव्वा।

४६४. जहण्णियण्णं भंते ! नाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, सत्तट्ठ भवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ ॥

४६५. [1]°जहण्णियण्णं भंते ! दंसणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, सत्तट्ठ भवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ ॥

४६६. जहण्णियण्णं भंते ! चरित्ताराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, सत्तट्ठ भवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ° ॥

पोग्गलपरिणाम-पदं

४६७. कतिविहे णं भंते ! पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा—वण्णपरिणामे, गंधपरिणामे, रसपरिणामे, फासपरिणामे, संठाणपरिणामे ॥

४६८. वण्णपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—कालवण्णपरिणामे जाव[2] सुक्किलवण्णपरिणामे। एवं एएणं अभिलावेणं गंधपरिणामे दुविहे, रसपरिणामे पंचविहे, फासपरिणामे अट्ठविहे ॥

४६९. संठाणपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—परिमंडलसंठाणपरिणामे जाव[3] आयतसंठाणपरिणामे ॥

पोग्गलपएसस्स दव्वादीहिं भंग-पदं

४७०. एगे[4] भंते ! पोग्गलत्थिकायपदेसे किं १. दव्वं ? २. दव्वदेसे ? ३. दव्वाइं ? ४. दव्वदेसा ? ५. उदाहु दव्वं च दव्वदेसे य ? ६. उदाहु दव्वं च दव्वदेसा य ? ७. उदाहु दव्वाइं च दव्वदेसे य ? ८. उदाहु दव्वाइं च दव्वदेसा य ?

---

१. म० पा०—एवं दंसणाराहणं पि, एवं चरित्ताराहणं पि।
२. भ० ८।३६।
३. भ० ८।३६।
४. एगे णं (अ)।

४७९. नाणावरणिज्जस्स ण भते ! कम्मस्स केवतिया अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ।।

४८० नेरइयाण भते ! नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिया अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ।।

४८१. एव सव्वजीवाण जाव वेमाणियाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! अणता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता । एव जहा नाणावरणिज्जस्स अविभागपलिच्छेदा भणिया तहा अट्ठण्ह वि कम्मपगडीण भाणियव्वा जाव वेमाणियाण अतराइयस्स[1] ।।

४८२ एगमेगस्स ण भते ! जीवस्स एगमेगे जीवपदेसे नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिएहि अविभागपलिच्छेदेहि आवेढिय-परिवेढिए ?
गोयमा ! सिय आवेढिय-परिवेढिए, सिय नो आवेढिय-परिवेढिए । जइ आवेढिय-परिवेढिए नियमा अणतेहि ।।

४८३. एगमेगस्स ण भते ! नेरइयस्स एगमेगे जीवपदेसे नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिएहि[2] अविभागपलिच्छेदेहि आवेढिय-परिवेढिए ?
गोयमा ! नियम अणतेहि । जहा नेरइयस्स एव जाव वेमाणियस्स, नवर—मणूसस्स जहा जीवस्स ।।

कम्माणं परोप्परं नियमा-भयणा-पदं

४८४. एगमेगस्स ण भते । जीवस्स एगमेगे जीवपदेसे दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिएहि अविभागपलिच्छेदेहि आवेढिय-परिवेढिए ?
गोयमा ! नियम अणतेहि । जहा जीवस्स एव जाव वेमाणियस्स, नवर—मणूसस्स जहा जीवस्स । एव जहेव नाणावरणिज्जस्स तहेव दडगो भाणियव्वो जाव वेमाणियस्स । एव जाव अतराइयस्स भाणियव्व, नवर—वेयणिज्जस्स, आउयस्स, नामस्स, गोयस्स—एएसि चउण्ह वि कम्माण मणूसस्स जहा नेरइयस्स तहा भाणियव्व । सेस त चेव ।।

४८५. जस्स णं भते ! नाणावरणिज्ज तस्स दरिसणावरणिज्ज ? जस्स दसणावरणिज्ज तस्स नाणावरणिज्ज ?
गोयमा ! जस्स ण नाणावरणिज्ज तस्स दसणावरणिज्ज नियम अत्थि, जस्स ण दरिसणावरणिज्ज तस्स वि नाणावरणिज्ज नियम अत्थि ।।

४८६. जस्स णं भते ! नाणावरणिज्ज तस्स वेयणिज्ज ? जस्स वेयणिज्ज तस्स नाणावरणिज्ज ?

---

१. अन्तराइयस्स (अ, म); अतरादियस्स (ता) २. केवइएहिं (ता) ।

४९४ जस्स ण भंते ! आउय तस्स नामं ? [1]•जस्स नामं तस्स आउयं ?०
गोयमा ! दो वि परोप्पर नियम । एव गोत्तेण वि सम भाणियव्वं ॥

४९५ जस्स ण भंते ! आउय तस्स अतराइय ? [2]•जस्स अंतराइय तस्स आउय ?०
गोयमा ! जस्स आउय तस्स अतराइय सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अतराइय तस्स आउय नियम अत्थि ॥

४९६. जस्स ण भते ! नाम तस्स गोय [3]•जस्स गोय तस्स नामं ?०
गोयमा ! दो वि एए परोप्पर नियमा अत्थि ॥

४९७. जस्स ण भते ! नाम तस्स अतराइय ? [4]•जस्स अतराइय तस्स नाम ?०
गोयमा जस्स नाम तस्स अतराइय सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अतराइय तस्स नाम नियमं अत्थि ॥

४९८. जस्स ण भते ! गोय तस्स अंतराइय ? [5]•जस्स अतराइय तस्स गोयं ?०
गोयमा ! जस्स गोय तस्स अतराइय सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अतराइय तस्स गोयं नियम अत्थि ॥

पोग्गलि-पोग्गल-पदं

४९९ जीवे ण भते ! कि पोग्गली ? पोग्गले ?
गोयमा ! जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि ॥

५००. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि ?
गोयमा ! से जहानामए छत्तेण छत्ती, दडेण दडी, घडेण घडी, पडेण पडी, करेण करी, एवामेव गोयमा ! जीवे वि सोइदिय-चक्खिदिय-घाणिदिय-जिब्भिदिय-फासिंदियाइं पडुच्च पोग्गली, जीव पडुच्च पोग्गले । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि ॥

५०१. नेरइए णं भंते ! कि पोग्गली ! पोग्गले ?
एवं चेव । एव जाव वेमाणिए, नवर—जस्स जइ इदियाइ तस्स तइ भाणियव्वाइ ॥

५०२. सिद्धे णं भते ! किं पोग्गली ? पोग्गले ?
गोयमा ! नो पोग्गली, पोग्गले ॥

---

१. सं० पा०—पुच्छा ।
२. सं० पा०—पुच्छा ।
३. सं० पा०—पुच्छा ।
४. सं० पा०—पुच्छा ।
५. सं० पा०—पुच्छा ।

नवमं सतं

पढमो उद्देसो

१ जंबुद्दीवे २. जोइस, ३०. अंतरदीवा ३१. असोच्च ३२. गंगेय।
३३. कुंडग्गामे ३४. पुरिसे, णवमम्मि सतम्मि चोत्तीसा ॥१॥

जंबुद्दीव-पदं

१. तेणं कालेणं तेण समएण मिहिला नाम नगरी होत्था—वण्णओ[1]। माणिभद्दे[2] चेतिए—वण्णओ[3]। सामी समोसढे, परिसा निग्गता जाव[4] भगवं गोयमे पज्जुवासमाणे एवं वदासी—कहि ण भंते! जबुद्दीवे दीवे! किसठिए ण भते! जबुद्दीवे दीवे ?
'एव जबुद्दीवपण्णत्ती भाणियव्वा जाव[5] एवामेव सपुव्वावरेण जबुद्दीवे दीवे चोद्दस सलिला-सयसहस्सा छप्पन्नं च सहस्सा भवतीति मक्खाया'[6] ॥

२. सेव भते! सेवं भते! त्ति[7] ॥

---

१. ओ० सू० १।
२ माणभद्दे (ता, म)।
३. ओ० सू०—२-१३।
४ भ० १।८-१०।
५. ज० १-६।
६ आचनान्तरे पुनरिद दृश्यते—जहा जंबुद्दीव-पण्णत्तीए तहा नेयव्व जोइसविहूण जाव—
खडा जोयण वासा,
पव्वय कूडाण तित्थ सेढीओ।
विजय द्दह सलिलाओ,
य पिंडए होति सगहणी॥ (वृ)।
७. भ० १।५१।

३-३० उद्देसा

अंतरदीव-पदं

७ रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं एगूरुयमणुस्साणं[2] एगूरुयदीवे नाम दीवे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं 'चुल्लहिमवंतस्स वास-हरपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्दं उत्तरपुरत्थिमे णं तिण्णि जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं दाहिणिल्लाणं एगूरुयमणुस्साणं एगूरुयदीवे नाम दीवे पण्णत्ते—तिण्णि जोयणसयाइं आयाम-विक्खंभेणं, नव एगूणवन्ने जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं। से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते। दोण्ह वि पमाणं वण्णओ य। एवं एएणं कमेणं'[3] 'एवं जहा जीवाभिगमे जाव[4] सुद्धदंतदीवे जाव देवलोगपरिग्गहा णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो !'[5]
एवं अट्ठावीसंपि अंतरदीवा सएणं-सएणं आयाम-विक्खंभेणं भाणियव्वा, नवरं—दीवे-दीवे उद्देसओ, एवं सव्वे वि अट्ठावीसं उद्देसगा ॥

८ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ॥

एगतीसइमो उद्देसो

असोच्चा उवलद्धि-पदं

९. रायगिहे जाव[7] एवं वयासी—असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा, केवलिसावगस्स वा, केवलिसावियाए वा, केवलिउवासगस्स वा, केवलिउवासियाए वा, तप्प-क्खियस्स वा, तप्पक्खियसावगस्स वा, तप्पक्खियसावियाए वा, तप्पक्खियउवा-सगस्स वा, तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज[8] सवणयाए ?

---

१. भ० १।४-१०।
२. एगरूय° (अ), एगुरुय° (ब, म); एगोरुय° (स)।
३. × (क, ता)।
४. जी० ३।
५. वाचनान्तरे त्विदं दृश्यते एवं जहा जीवाभिगमे उत्तरकुरुवत्तव्वयाए नेयव्वो नाणत्तं अट्ठधणुसया उस्सेहो चउसट्ठिपिट्ठकरंडया अणुसज्जणा नत्थि (वृ)।
६. भ० १।५१।
७ भ० १।४-१०।
८. लभेज्जा (अ, ब, म)।

केवल मुंडे भवित्ता[1] °अगाराओ अणगारियं° नो पव्वएज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय नो पव्वएज्जा ॥

१५. असोच्चा ण भते! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल वंभचेर-वास आवसेज्जा[2]?
गोयमा! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवल वभचेरवास आवसेज्जा, अत्थेगतिए केवल वभचेरवास नो आवसेज्जा ॥

१६ से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल वभचेरवास नो आवसेज्जा?
गोयमा! जस्स ण चरित्तावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल वभचेरवास आवसेज्जा, जस्स णं चरित्तावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल वभचेरवास नो आवसेज्जा। से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल वभचेरवास नो आवसेज्जा ॥

१७. असोच्चा ण भते! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेण सजमेण सजमेज्जा?
गोयमा! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलेण सजमेण सजमेज्जा, अत्थेगतिए केवलेण सजमेण नो सजमेज्जा ॥

१८ से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवलेण सजमेण नो सजमेज्जा?
गोयमा! जस्स ण जयणावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेण सजमेण सजमेज्जा, जस्स ण जयणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव[3] तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं संजमेण नो सजमेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवलेण सजमेण नो सजमेज्जा ॥

१९ असोच्चा णं भते! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेण सवरेण संवरेज्जा?
गोयमा! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलेणं सवरेण[4] सवरेज्जा, अत्थेगतिए केवलेण सवरेण नो सवरेज्जा ॥

---

१. स० पा०—भवित्ता जाव नो।
२. आवसेज्जा (ता, ब)।
३. जाव अत्थेगतिए (अ, क, ता, ब, म, स)।
४. जाव (अ, क, ता, ब, म, स)।

गोयमा ! जस्स णं सुयनाणावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल सुयनाण उप्पाडेज्जा, जस्स णं सुयनाणावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल सुयनाण नो उप्पाडेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल सुयनाण नो उप्पाडेज्जा ॥

२५. असोच्चा ण भते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासिए वा केवल ओहिनाण उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवल ओहिनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवल ओहिनाण नो उप्पाडेज्जा ॥

२६ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल ओहिनाण नो उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! जस्स ण ओहिनाणावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल ओहिनाण उप्पाडेज्जा, जस्स ण ओहिनाणावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल ओहिनाण नो उप्पाडेज्जा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल ओहिनाण नो उप्पाडेज्जा ॥

२७. असोच्चा ण भते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं मणपज्जवनाण उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवल मणपज्जवनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवल मणपज्जवनाण नो उप्पाडेज्जा ॥

२८. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल मणपज्जवनाण नो उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! जस्स ण मणपज्जवनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल मणपज्जवनाण उप्पाडेज्जा, जस्स ण मणपज्जवनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल मणपज्जवनाणं नो उप्पाडेज्जा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल मणपज्जवनाण नो उप्पाडेज्जा° ॥

२९. असोच्चा णं भते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलनाण उप्पाडेज्जा ?

डेज्जा ८ [1]•अत्थेगतिए केवल सुयनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलं सुयनाण नो उप्पाडेज्जा ९. अत्थेगतिए केवल ओहिनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवल ओहिनाण नो उप्पाडेज्जा १०. अत्थेगतिए केवलं मणपज्जवनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवल मणपज्जवनाणं नो उप्पाडेज्जा° ११. अत्थेगतिए केवलनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाण नो उप्पाडेज्जा ॥

३२. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण त चेव जाव अत्थेगतिए केवलनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा ?

गोयमा ! १ जस्स ण नाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ २. जस्स ण दरिसणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ ३ जस्स ण धम्मतराइयाण कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ ४ [2]•जस्स ण चरित्तावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ ५. जस्स ण जयणावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ ६ जस्स ण अज्झवसाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ ७. जस्स ण आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ ८. जस्स णं सुयनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ ९. जस्स ण ओहिनाणावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ १० जस्स ण° मणपज्जवनाणावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ ११ जस्स ण केवलनाणावरणिज्जाण कम्माण खए नो कडे भवइ, से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म नो लभेज्ज सवणयाए, केवल बोहिं नो बुज्झेज्जा जाव केवलनाण नो उप्पाडेज्जा।

जस्स ण नाणावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमे कडे भवइ, जस्स ण दरिसणावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमे कडे भवइ, जस्स ण धम्मतराइयाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ, एव जाव जस्स ण केवलनाणावरणिज्जाण कम्माण खए कडे भवइ, से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्मं लभेज्ज सवणयाए, केवल बोहिं बुज्झेज्जा जाव केवलनाण उप्पाडेज्जा ॥

३३ तस्स णं[3] छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेण उड्ढं बाहाओ 'पगिज्झिय-पगिज्झिय'[4] सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए, पगइउव-

---

१. सं० पा०—एवं जाव मणपज्जवनाण।

२. सं० पा०—एवं चरित्तावरणिज्जाण जयणावरणिज्जाणं अज्झवसाणावरणिज्जाण आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाणं जाव मणपज्जव° ।

३. ण भते (अ, क, ता, ब, स)।

४. पगज्झिय २ (म)।

३९. से णं भंते ! कयरम्मि संठाणे होज्जा ?
गोयमा ! छण्हं संठाणाणं अण्णयरे संठाणे होज्जा ॥

४०. से णं भंते ! कयरम्मि उच्चत्ते होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरयणीए, उक्कोसेणं पंचधणुसतिए होज्जा ॥

४१. से णं भंते ! कयरम्मि आउए होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगट्ठवासाउए, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउए होज्जा ॥

४२. से णं भंते ! किं सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा ।
जइ सवेदए होज्जा किं इत्थिवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? पुरिस-नपुंसगवेदए होज्जा ? 'नपुंसगवेदए होज्जा ?'[1]
गोयमा ! नो इत्थिवेदए होज्जा, पुरिसवेदए होज्जा, 'नो नपुंसगवेदए होज्जा'[2], पुरिस-नपुंसगवेदए वा होज्जा ॥

४३. से णं भंते ! किं सकसाई[3] होज्जा ? अकसाई होज्जा ?
गोयमा ! सकसाई होज्जा, नो अकसाई होज्जा ।
जइ सकसाई होज्जा से णं भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
गोयमा ! चउसु— संजलणकोह-माण-माया लोभेसु होज्जा ॥

४४. तस्स णं भंते ! केवइया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता ॥

४५. ते णं भंते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! पसत्था, नो अप्पसत्था ॥

४६. से णं भंते ! तेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं वड्ढमाणेहिं अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं तिरिक्खजोणियभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं मणुस्सभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं देवभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ । जाओ वि य से इमाओ नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवगतिनामाओ चत्तारि उत्तरपगडीओ, तासिं च णं ओवग्गहिए[4] अणंताणुबंधी कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता अपच्चक्खाणकसाए कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पच्चक्खाणावरणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता संजलणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पंचविहं नाणावरणिज्जं, नवविहं दरिसणावरणिज्जं, पंचविहं अंतराइयं, ताल-

---

१. × (क, ब, म) ।
२. × (क, ब, म) ।
३. सकसादी (अ, ता) ।
४. उवग्गहिए (क, म, स) ।

३९. से णं भंते ! कयरम्मि संठाणे होज्जा ?
गोयमा ! छण्हं सठाणाणं अण्णयरे सठाणे होज्जा ॥

४०. से ण भते ! कयरम्मि उच्चत्ते होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरयणीए, उक्कोसेणं पचधणुसतिए होज्जा ॥

४१. से णं भते ! कयरम्मि आउए होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगट्ठवासाउए, उक्कोसेण पुव्वकोडिआउए होज्जा ॥

४२. से ण भंते ! कि सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा ।
जइ सवेदए होज्जा कि इत्थिवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? पुरिस-नपुसगवेदए होज्जा ? 'नपुसगवेदए होज्जा ?'[१]
गोयमा ! नो इत्थिवेदए होज्जा, पुरिसवेदए होज्जा, 'नो नपुसगवेदए होज्जा'[२], पुरिस-नपुसगवेदए वा होज्जा ॥

४३. से णं भंते ! कि सकसाई[३] होज्जा ? अकसाई होज्जा ?
गोयमा ! सकसाई होज्जा, नो अकसाई होज्जा ।
जइ सकसाई होज्जा से ण भते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
गोयमा ! चउसु—सजलणकोह-माण-माया लोभेसु होज्जा ॥

४४. तस्स ण भते ! केवइया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता ॥

४५. ते ण भते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! पसत्था, नो अप्पसत्था ॥

४६. से णं भते ! तेहि पसत्थेहि अज्झवसाणेहि वड्ढमाणेहि अणंतेहि नेरइयभवग्गहणेहितो अप्पाण विसंजोएइ, अणतेहि तिरिक्खजोणियभवग्गहणेहितो अप्पाण विसंजोएइ, अणतेहि मणुस्सभवग्गहणेहितो अप्पाण विसंजोएइ, अणतेहि देवभवग्गहणेहितो अप्पाण विसजोएइ । जाओ वि य से इमाओ नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवगतिनामाओ चत्तारि उत्तरपगडीओ, तासि च ण ओवग्गहिए[४] अणताणुबधी कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता अपच्चक्खाणकसाए कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पच्चक्खाणावरणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता सजलणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पचविह नाणावरणिज्ज, नवविहं दरिसणावरणिज्ज, पचविह अतराइयं, ताल-

---

१. × (क, ब, म) ।
२. × (क, ब, म) ।
३. सकसादी (अ, ता) ।
४. उवग्गहिए (क, म, स) ।

३९. से णं भंते ! कयरम्मि संठाणे होज्जा ?
गोयमा ! छण्हं संठाणाणं अण्णयरे संठाणे होज्जा ॥

४०. से णं भंते ! कयरम्मि उच्चत्ते होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरयणीए, उक्कोसेणं पंचधणुसतिए होज्जा ॥

४१. से णं भंते ! कयरम्मि आउए होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगट्ठवासाउए, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउए होज्जा ॥

४२. से णं भंते ! किं सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा ।
जइ सवेदए होज्जा किं इत्थिवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? पुरिस-नपुंसगवेदए होज्जा ? 'नपुंसगवेदए होज्जा ?'[1]
गोयमा ! नो इत्थिवेदए होज्जा, पुरिसवेदए होज्जा, 'नो नपुंसगवेदए होज्जा'[2], पुरिस-नपुंसगवेदए वा होज्जा ॥

४३. से णं भंते ! किं सकसाई[3] होज्जा ? अकसाई होज्जा ?
गोयमा ! सकसाई होज्जा, नो अकसाई होज्जा ।
जइ सकसाई होज्जा से णं भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
गोयमा ! चउसु– संजलणकोह-माण-माया लोभेसु होज्जा ॥

४४. तस्स णं भंते ! केवइया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता ॥

४५. ते णं भंते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! पसत्था, नो अप्पसत्था ॥

४६. से णं भंते ! तेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं वड्ढमाणेहिं अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं तिरिक्खजोणियभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं मणुस्सभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं देवभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ । जाओ वि य से इमाओ नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवगतिनामाओ चत्तारि उत्तरपगडीओ, तासिं च णं ओवग्गहिए[4] अणंताणुबंधी कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता अपच्चक्खाणकसाए कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पच्चक्खाणावरणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता संजलणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पंचविहं नाणावरणिज्जं, नवविहं दरिसणावरणिज्जं, पंचविहं अंतराइयं, ताल-

---

१. [illegible] (क, ख, म) ।
२. [illegible] (क, ख, म) ।
३. सकसादी (अ, ता) ।
४. उवग्गहिए (क, म, स) ।

मत्थाकड[1] च ण मोहणिज्ज कट्टु कम्मरयविकिरणकर अपुव्वकरण अणुपविट्ठस्स[2] अणते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदसणे समुपज्जति ।।

४७ से ण भते ! केवलिपण्णत्त धम्म आघवेज्ज वा ? पण्णवेज्ज वा ? परूवेज्ज वा ?
नो तिणट्ठे समट्ठे, नण्णत्थ[3] एगनाएण वा, एगवागरणेण वा ।।

४८. से ण भते ! पव्वावेज्ज वा ? मुडावेज्ज वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, उवदेस पुण करेज्जा ।।

४६ से ण भते ! सिज्झति जाव[4] सव्वदुक्खाण अत करेति ?
हता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

५०. से ण भते ! कि उड्ढ होज्जा ? अहे होज्जा ? तिरिय होज्जा ?
गोयमा ! उड्ढ वा होज्जा, अहे वा होज्जा, तिरिय वा होज्जा । उड्ढ होमाणे[5] सद्दावइ-वियडावइ-गधावइ-मालवतपरियाएसु वट्टवेयड्ढपव्वएसु होज्जा, साहरण पडुच्च सोमणसवणे वा पडगवणे वा होज्जा । अहे होमाणे गड्डाए वा दरीए वा होज्जा, साहरण पडुच्च पायाले वा भवणे वा होज्जा । तिरिय होमाणे पण्णरससु कम्मभूमीसु होज्जा, साहरण पडुच्च 'अड्ढाइज्जदीव-समुद्द'[6]-तदेक्कदेसभाए होज्जा ।।

५१ ते ण भते ! एगसमए ण केवतिया होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण दस । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म नो लभेज्ज सवणयाए जाव अत्थेगतिए केवलनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाण नो उप्पाडेज्जा ।।

---

१. °मत्थ° (अ, क), मत्था—अत्र एकपदे सन्धिर्जात । वृत्तौ अस्य व्याख्या एवमस्ति —मस्तक—मस्तकशुची कृत्त—छिन्न यस्यासौ मस्तककृत्त , तालश्चासौ मस्तककृत्तश्च तालमस्तककृत्त , छान्दसत्वाच्चैव निर्देश , तालमस्तककृत्त इव यत्तत्तालमस्तककृत्तम् (वृ) ।
२ पविट्ठस्स (अ, क, ता, म) ।
३ अण्णत्थ (ता) ।
४ भ० १।४४ ।
५ होज्जमाणे (व, स) ।
६. अड्ढाइज्जे दीवसमुद्दे (अ, स) ।

सोच्चा उवलद्धि-पदं

५२. सोच्चा ण भते ! केवलिस्स वा,[1] •केवलिसावगस्स वा, केवलिसावियाए वा, केवलिउवासगस्स वा, केवलिउवासियाए वा, तप्पक्खियस्स वा, तप्पक्खियसावगस्सवा, तप्पक्खियसावियाए वा, तप्पक्खियउवासगस्स वा, तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए ?
गोयमा ! सोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा ग्रत्थेगतिए केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए, ग्रत्थेगतिए केवलिपण्णत्त धम्म नो लभेज्ज सवणयाए ॥

५३ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सोच्चा ण जाव नो लभेज्ज सवणयाए ?
गोयमा ! जस्स ण नाणावरणिज्जाण कम्माण खग्रोवसमे कडे भवइ से ण सोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए, जस्स ण नाणावरणिज्जाण कम्माण खग्रोवसमे नो कडे भवइ से ण सोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सोच्चा ण जाव नो लभेज्ज सवणयाए° ॥

५४ एव 'जा चेव'[2] ग्रसोच्चाए वत्तव्वया 'सा चेव'[3] सोच्चाए वि भाणियव्वा, नवर —ग्रभिलावो सोच्चे त्ति, सेस त चेव निरवसेस जाव जस्स ण मणपज्जवनाणावरणिज्जाण कम्माण खग्रोवसमे कडे भवइ, जस्स ण केवलनाणावरणिज्जाण कम्माण खए कडे भवइ से ण सोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए, केवल वोहि वुज्झेज्जा जाव[4] केवलनाण उप्पाडेज्जा ॥

५५ तस्स ण ग्रट्ठमअट्ठमेण ग्रणिक्खित्तेण तवोकम्मेण ग्रप्पाण भावेमाणस्स पगइभद्दयाए, [5]•पगइउवसतयाए, पगइपयणुकोह-माण-माया-लोभयाए, मिउमद्दवसपन्नयाए, ग्रल्लीणयाए, विणीययाए, ग्रण्णया कयावि सुभेण ग्रज्झवसाणेण, सुभेण परिणामेण, लेस्साहि विसुज्झमाणीहि-विसुज्झमाणीहि तयावरणिज्जाण कम्माण खग्रोवसमेण ईहापोहमग्गण°गवेसण करेमाणस्स ग्रोहिनाणे समुप्पज्जइ। से ण तेण ग्रोहिनाणेण समुप्पन्नेण जहण्णेण ग्रगुलस्स ग्रसखेज्जतिभाग, उक्कोसेण ग्रसखेज्जाइ ग्रलोए लोयप्पमाणमेत्ताइ खडाइ जाणइ-पासइ ॥

५६. से ण भते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
गोयमा ! छसु लेस्सासु होज्जा, त जहा—कण्हलेस्साए जाव[1] सुक्कलेस्साए ॥

५७. से ण भते ! कतिसु नाणेसु होज्जा ?
गोयमा ! तिसु वा, चउसु वा होज्जा। तिसु होमाणे[2] आभिणिवोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा, चउसु होमाणे आभिणिवोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाण-मणपज्जवनाणेसु होज्जा ॥

५८ से ण भते ! कि सजोगी होज्जा ? अजोगी होज्जा ?
[3]°गोयमा ! सजोगी होज्जा, नो अजोगी होज्जा।
जइ सजोगी होज्जा, किं मणजोगी होज्जा ? वइजोगी होज्जा ? कायजोगी होज्जा ?
गोयमा ! मणजोगी वा होज्जा, वइजोगी वा होज्जा, कायजोगी वा होज्जा ॥

५६ से ण भते ! कि सागारोवउत्ते होज्जा ? अणागारोवउत्ते होज्जा ?
गोयमा ! सागारोवउत्ते वा होज्जा, अणागारोवउत्ते वा होज्जा ॥

६०. से ण भते ! कयरम्मि सघयणे होज्जा ?
गोयमा ! वइरोसभनारायसघयणे होज्जा ॥

६१. से ण भते ! कयरम्मि सठाणे होज्जा ?
गोयमा ! छण्ह सठाणाण अण्णयरे सठाणे होज्जा ॥

६२. से ण भते ! कयरम्मि उच्चत्ते होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण सत्तरयणीए, उक्कोसेण पचधणुसतिए होज्जा ॥

६३. से ण भते ! कयरम्मि आउए होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण सातिरेगट्ठवासाउए, उक्कोसेण पुव्वकोडिआउए होज्जा° ॥

६४ से ण भते ! कि सवेदए [4]°होज्जा ? अवेदए होज्जा ?°
गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा।
जइ अवेदए होज्जा कि उवसतवेदए होज्जा ? खीणवेदए होज्जा ?
गोयमा ! नो उवसतवेदए होज्जा, खीणवेदए होज्जा।
जइ सवेदए होज्जा कि इत्थीवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? 'पुरिस-नपुसगवेदए'[5] होज्जा ?
गोयमा ! इत्थीवेदए वा होज्जा, पुरिसवेदए वा होज्जा, पुरिस-नपसगवेदए वा होज्जा ॥

---

१. भ० १।१०२।
२. होज्जमाणे (अ, क,)।
३ स० पा०—एव जोगो, उवओगो, सघयण, सठाण, उच्चत्त, आउय च—एयाणि सव्वाणि जहा असोच्चाए तहेव भाणियव्वाणि।
४ स० पा०—पुच्छा।
५ नपुसगवेदए (अ, म)।

६५. से ण भते ! कि सकसाई होज्जा ? अकसाई होज्जा ?
गोयमा ! सकसाई वा होज्जा, अकसाई वा होज्जा ।
जइ अकसाई होज्जा कि उवसतकसाई होज्जा ? खीणकसाई होज्जा ?
गोयमा ! नो उवसतकसाई होज्जा, खीणकसाई होज्जा ।
जइ सकसाई होज्जा से ण भते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
गोयमा ! चउसु वा तिसु वा दोसु वा एक्कम्मि वा होज्जा । चउसु होमाणे चउसु—सजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु—सजलण-माण-माया-लोभेसु होज्जा, दोसु होमाणे दोसु—सजलणमाया-लोभेसु होज्जा, एगम्मि होमाणे एगम्मि—सजलणलोभे होज्जा ॥

६६ तस्स ण भते ! केवतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा [1]अज्झवसाणा पण्णत्ता ॥

६७ ते ण भते ! कि पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! पसत्था, नो अप्पसत्था ॥

६८ से ण भते ! तेहि पसत्थेहि अज्झवसाणेहि वड्ढमाणेहि अणतेहि नेरइय-भवग्गहणेहितो अप्पाण विसजोएइ, अणतेहि तिरिक्खजोणियभवग्गहणेहितो अप्पाण विसजोएइ, अणतेहि मणुस्सभवग्गहणेहितो अप्पाण विसजोएइ, अणतेहि देवभवग्गहणेहितो अप्पाण विसजोएइ । जाओ वि य से इमाओ नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवगतिनामाओ चत्तारि उत्तरपगडीओ, तासि च ण ओवग्गहिए अणताणुबधी कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता अपच्चक्खाणकसाए कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पच्चक्खाणावरणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता सजलणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पचविह नाणावरणिज्ज, नवविह दरिसणावरणिज्ज, पचविह अतराइय तालमत्थाकड च ण मोहणिज्ज कट्टु कम्मरयविकिरणकर अपुव्वकरण अणुपविट्ठस्स अणते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाण-दसणे समुप्पज्जइ ॥

६९. से ण भते ! केवलिपण्णत्त धम्म आघवेज्ज वा ? पण्णवेज्ज वा ? परूवेज्ज वा ?
हता आघवेज्ज वा, पण्णवेज्ज वा, परूवेज्ज वा ॥

७० से ण भते ! पव्वावेज्ज वा ? मुडावेज्ज वा ?
हता पव्वावेज्ज वा, मुडावेज्ज वा[2] ॥

---

1. [illegible]

2. [illegible] पव्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा हंता पव्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा (क, ता, ब) ।

७१ से णं भते ! सिज्झति वुज्झति जाव[1] सव्वदुक्खाण अंतं करेइ ?
हता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ॥
७२ तस्स ण भते ! सिस्सा वि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?
हता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ॥
७३ तस्स ण भते ! पसिस्सा वि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?
'हता सिज्झति'[2] जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ॥
७४. से ण भते ! कि उड्ढ होज्जा ? जहेव असोच्चाए जाव[3] अड्ढाइज्जदीवसमुद्द-तदेक्कदेसभाए होज्जा ॥
७५ ते ण भते ! एगसमए ण केवतिया होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण अट्ठसय। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सोच्चा ण केवलिस्स वा जाव[4] तप्पक्खियउवासियाए[5] वा अत्थेगतिए केवलनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाण नो उप्पाडेज्जा ॥
७६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[6] ॥

वत्तीसइमो उद्देसो

पासावच्चिज्जगंगेय-पसिण-पदं

७७ तेण कालेण तेण समएण वाणियग्गामे नाम नयरे होत्था—वण्णओ[7]। दूतिपलासए चेइए[8]। सामी समोसढे। परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया ॥
७८ तेण कालेण तेण समएण पासावच्चिज्जे गगेए नाम अणगारे जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते ठिच्चा समण भगव महावीर एव वदासी——

---

१. भ० ९।४४।
२. एव चेव (अ, क, ता, व, म, स)।
३. भ० ९।५०।
४. भ० ९।५१।
५ केवलिउवासियाए (अ, क, ता, स)।
६ भ० १।५१।
७ ओ० सू० १।
८. चेइए वण्णओ (ता)।

संतर-निरंतर-उववज्जणादि-पदं

७९ संतर[1] भते ! नेरइया उववज्जति ? निरतर नेरइया उववज्जति ?
गगेया ! सतर पि नेरइया उववज्जति, निरतर पि नेरइया उववज्जति ॥

८० सतर भते ! असुरकुमारा उववज्जति ? निरतर असुरकुमारा उववज्जति ?
गगेया ! सतर पि असुरकुमारा उववज्जति, निरतर पि असुरकुमारा उववज्जति । एव जाव थणियकुमारा ॥

८१. सतर भते ! पुढविक्काइया उववज्जति ? निरतर पुढविक्काइया उववज्जति ?
गगेया ! नो सतर पुढविक्काइया उववज्जति, निरतर पुढविक्काइया उववज्जति । एव जाव वणस्सइकाइया । वेइदिया जाव वेमाणिया एते जहा नेरइया ॥

८२ सतर भते ! नेरइया उव्वट्टति ? निरतरं नेरइया उव्वट्टति ?
गगेया ! सतर पि नेरइया उव्वट्टति, निरतर पि नेरइया उव्वट्टति । एव जाव थणियकुमारा ॥

८३ सतर भंते ! पुढविक्काइया उव्वट्टति ?—पुच्छा ।
गगेया ! नो सतर पुढविक्काइया उव्वट्टति, निरतर पुढविक्काइया उव्वट्टति । एव जाव वणस्सइकाइया—नो सतर, निरतर उव्वट्टति ॥

८४ सतर भते ! वेइदिया उव्वट्टति ? निरतरं वेइदिया उव्वट्टति ?
गगेया ! सतर पि वेइदिया उव्वट्टति, निरतर पि वेइदिया उव्वट्टति । एव जाव वाणमतरा ॥

८५ सतर भते ! जोइसिया चयति ?—पुच्छा ।
गगेया ! सतर पि जोइसिया चयति, निरतर पि जोइसिया चयति । एव वेमाणिया वि ॥

पवेसण-पदं

८६ कतिविहे णं भंते ! पवेसणए पण्णत्ते ?
गगेया ! चउव्विहे पवेसणए पण्णत्ते, त जहा—नेरइयपवेसणए, तिरिक्खजोणियपवेसणए, मणुस्सपवेसणए, देवपवेसणए ॥

८७ नेरइयपवेसणए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गगेया ! सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणए[2] जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणए ॥

[illegible]

८८ एगे भंते ! नेरइए नेरइयपवेसणएणं पविसमाणे किं रयणप्पभाए होज्जा, सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।।

८९ दो भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।
अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव एगे रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । एवं एक्केका पुढवी छड्डेयव्वा जाव अहवा एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[1] ।।

९०. तिण्णि भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।
अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, एवं जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया, तहा सव्वपुढवीणं भाणियव्वं जाव अहवा दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2] ।।
अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए

---

१ द्विसंयोगजा भङ्गा २१ ।

२ द्विसंयोगजा भङ्गा ४२ ।

संतर-निरंतर-उववज्जणादि-पदं

७९. सतर[1] भते ! नेरइया उववज्जति ? निरतर नेरइया उववज्जति ?
गगेया ! सतर पि नेरइया उववज्जति, निरतर पि नेरइया उववज्जति ।।

८०. सतर भते ! असुरकुमारा उववज्जति ? निरतर असुरकुमारा उववज्जति ?
गगेया ! सतर पि असुरकुमारा उववज्जति, निरतरं पि असुरकुमारा उववज्जति । एव जाव थणियकुमारा ।।

८१. सतर भते ! पुढविक्काइया उववज्जति ? निरतर पुढविक्काइया उववज्जंति ?
गगेया ! नो सतरं पुढविक्काइया उववज्जति, निरतर पुढविक्काइया उववज्जति । एव जाव वणस्सइकाइया । वेइदिया जाव वेमाणिया एते जहा नेरइया ।।

८२. सतर भते ! नेरइया उव्वट्टति ? निरतर नेरइया उव्वट्टति ?
गगेया ! सतर पि नेरइया उव्वट्टति, निरतर पि नेरइया उव्वट्टति । एव जाव थणियकुमारा ।।

८३. सतर भते ! पुढविक्काइया उव्वट्टति ?—पुच्छा ।
गगेया ! नो सतर पुढविक्काइया उव्वट्टति, निरतर पुढविक्काइया उव्वट्टति । एवं जाव वणस्सइकाइया—नो संतरं, निरतर उव्वट्टति ।।

८४. सतर भते ! वेइदिया उव्वट्टति ? निरतरं वेइदिया उव्वट्टति ?
गगेया ! सतर पि वेइदिया उव्वट्टति, निरतर पि वेइदिया उव्वट्टंति । एव जाव वाणमतरा ।।

८५. सतर भते ! जोइसिया चयति ?—पुच्छा ।
गगेया ! सतर पि जोइसिया चयति, निरतर पि जोइसिया चयति । एवं वेमाणिया वि ।।

पवेसण-पद

८६. कतिविहे ण भते ! पवेसणए पण्णत्ते ?
गगेया ! चउव्विहे पवेसणए पण्णत्ते, त जहा—नेरइयपवेसणए, तिरिक्खजोणियपवेसणए, मणुस्सपवेसणए, देवपवेसणए ।।

८७. नेरइयपवेसणए ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गगेया ! सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणए[2] जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणए ।।

१. [illegible]

२. [illegible] (ता, म) ।

८८ एगे भंते ! नेरइए नेरइयपवेसणएण पविसमाणे कि रयणप्पभाए होज्जा, सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ॥

८९ दो भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।
अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव एगे रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । एवं एक्केका पुढवी छड्डेयव्वा जाव अहवा एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[1] ॥

९०. तिण्णि भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।
अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, एवं जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया, तहा सव्वपुढवीणं भाणियव्वं जाव अहवा दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2] ॥
अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए

---

१ द्विसयोगजा भङ्गाः २१ ।
२ द्विसयोगजा भङ्गा ४२ ।

होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा' ॥

९१. चत्तारि भंते! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा?—पुच्छा।

गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जहेव रयणप्पभाए उवरिमाहिं समं चारियं तहा सक्करप्पभाए वि उवरिमाहिं समं चारियव्वं, एवं एक्केक्काए समं चारियव्वं जाव अहवा तिण्णि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा'।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव एगे र-

णप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो पकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा । एव एएणं गमएण जहा तिण्ह तियासजोगो[1] तहा भाणियव्वो जाव अहवा दो धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2] ।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, 'अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा'[3], अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए

---

१. तिय° (अ, म, स) ।

२ त्रिसयोगजा भङ्गा १०५ ।

३ एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।

अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए जाव एगे पकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा' ।।

६३. छब्भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा ।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए पंच सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए पंच वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए पंच अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा तिण्णि रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए । एवं एएणं कमेणं जहा पंचण्हं दुयासंजोगो तहा छण्ह वि भाणियव्वो, नवरं—एक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो जाव अहवा पंच तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा' ।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा । एवं एएणं कमेणं जहा पंचण्हं तियासंजोगो भणिओ तहा छण्ह वि भाणियव्वो,

नवर—एक्को अहिओ उच्चारेयव्वो, सेस त चेव[1]। चउक्कसंजोगो वि तहेव[2], पचगसजोगो वि तहेव, नवर—एक्को अव्भहिओ सचारेयव्वो जाव पच्छिमो भगो, अहवा दो वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[3]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे पकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए 'एगे सक्करप्पभाए'[4] एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[5]॥

९४ सत्त भते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा।

गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए छ सक्करप्पभाए होज्जा। एव एएण कमेण जहा छण्ह दुयासजोगो तहा सत्तण्ह वि भाणियव्व, नवर—एगो अव्भहिओ सचारिज्जइ, सेस त चेव[6]। तियासजोगो[7], चउक्कसजोगो[8], पचसजोगो[9], छक्कसजोगो[10] य छण्ह जहा तहा सत्तण्ह वि भाणियव्व, नवर—एक्केक्को अव्भहिओ[11] सचारेयव्वो जाव छक्कगसजोगो अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[12]। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा॥

९५ अट्ठ भते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा।

गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए सत्त सक्करप्पभाए होज्जा। एव दुयासजोगो[13] जाव

---

१. त्रिसयोगजा भङ्गा ३५०।
२ चतु सयोगजा भङ्गा ३५०।
३ पञ्चसयोगजा भङ्गा १०५।
४. जाव (अ, क, ता, व, म, स)।
५ पट्सयोगजा भङ्गा. ७।
६ द्विसयोगजा भङ्गा १२६।
७ त्रिसयोगजा भङ्गा ५२५।
८. चतु सयोगजा भङ्गा ७००।
९ पचा° (क), पञ्चसयोगजा भङ्गा ३१५।
१० छक्का° (क, व)।
११ अहिओ (अ), अहितो (क); अधितो (ता)।
१२ पट्सयोगजा भङ्गा ४२।
१३ द्विसयोगजा भङ्गा १४७, त्रिसयोगजा भङ्गा ७३५, चतु सयोगजा भङ्गा १२२५, पञ्चसयोगजा भङ्गा ७३५।

छक्कसजोगो य जहा सत्तण्हं भणिओ तहा अट्ठण्ह वि भाणियव्वो, नवर—एक्केक्को अब्भहिओ सचारेयव्वो, सेस तं चेव जाव छक्कगसजोगस्स अहवा तिण्णि सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा'।

अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे तमाए दो अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। एव सचारेयव्व जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा'॥

९६. नव भते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा।

गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए अट्ठ सक्करप्पभाए होज्जा। एव दुयासजोगो' जाव सत्तगसजोगो' य जहा अट्ठण्ह भणिय तहा नवण्ह पि भाणियव्व, नवर—एक्केक्को अब्भहिओ सचारेयव्वो, सेस त चेव पच्छिमो आलावगो—अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा'॥

९७ दस भते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा।

गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए नव सक्करप्पभाए होज्जा। एव दुयासजोगो' जाव सत्तसजोगो य जहा नवण्ह, नवर—एक्केक्को अब्भहिओ सचारेयव्वो, सेसं त चेव पच्छिमो' आलावगो—अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा'॥

९८. सखेज्जा भते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा।

गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे

रयणप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभा
सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा अ
होज्जा। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज
एएण कमेण एक्केक्को सचारेयव्वो जाव अहवा दस रयणप्पभा
सक्करप्पभाए होज्जा। एव जाव अहवा दस रयणप्पभाए सखेज्जा अ
होज्जा। अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए हो
अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अ
सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एव जहा रयणप्पभा
पुढवीहि सम चारिया एव सक्करप्पभा वि उवरिमपुढवीहि सम
एव एक्केक्का पुढवी उवरिमपुढवीहि सम चारेयव्वा जाव अहवा
तमाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए
अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा पकप्पभाए हो
अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए
अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए
जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए
अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए
एव एएण कमेण एक्केक्को सचारेयव्वो सक्करप्पभाए जाव अहवा
प्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव
रयणप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।
रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा
दो रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा
तिण्णि रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए स
एव एएण कमेण एक्केक्को रयणप्पभाए सचा
रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा
अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्प
होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुय
होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे व लुप
होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो वालुयप्पभा
एव एएण कमेण तियासजोगो, चउक्कसजोगो
दसण्ह तहेव भाणियव्वो। पच्छिमो आलावगो स
रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए जाव सखे

९९ असखेज्जा भते! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण
होज्जा?—पुच्छा।

गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।
अहवा एगे रयणप्पभाए असखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एव दुयासजोगो जाव सत्तगसजोगो' य जहा सखेज्जाण भणिओ तहा असखेज्जाण वि भाणियव्वो, नवर—असखेज्जओ अब्भहिओ भाणियव्वो, सेस त चेव जाव सत्तगसजोगस्स पच्छिमो आलावगो अहवा असखेज्जा रयणप्पभाए असखेज्जा सक्करप्पभाए जाव असखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा ।

१००. उक्कोसेण भते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा ।
गगेया ! सव्वे वि ताव रयणप्पभाए होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा, एव जाव अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए पकप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए पकप्पभाए धूमाए होज्जा, एव रयणप्पभ अमुयतेसु जहा तिण्ह तियासजोगो भणिओ तहा भाणियव्व जाव अहवा रयणप्पभाए तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा । अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पकप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पकप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा एव रयणप्पभ अमुयतेसु जहा चउण्ह चउक्कगसजोगो भणितो तहा भाणियव्व जाव अहवा रयणप्पभाए धूमप्पभाए तमाए अहेसत्तमाए य होज्जा । अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पकप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव पकप्पभाए तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव पकप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए तमाए य होज्जा, एव रयणप्पभ अमुयतेसु जहा पचण्ह पचगसजोगो तहा भाणियव्व जाव अहवा रयणप्पभाए पकप्पभाए जाव अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए जाव धूमप्पभाए तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव धूमप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए जाव पकप्पभाए तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए तमाए अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पकप्पभाए जाव

अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए जाव अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य जाव अहेसत्तमाए य होज्जा ॥

१०१. एयस्स ण भते ! रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणगस्स सक्करप्पभापुढविनेरइयपवेसणगस्स जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणगस्स कयरे कयरेहितो[1] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गगेया ! सव्वत्थोवे अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणए, तमापुढविनेरइयपवेसणए असखेज्जगुणे, एव पडिलोमग[2] जाव रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणए असखेज्जगुणे ॥

१०२ तिरिक्खजोणियपवेसणए ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गगेया ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—एगिदियतिरिक्खजोणियपवेसणए जाव पचिदियतिरिक्खजोणियपवेसणए ॥

१०३. एगे भते ! तिरिक्खजोणिए तिरिक्खजोणियपवेसणएण पविसमाणे कि एगिदिएसु होज्जा जाव पचिदिएसु होज्जा ?
गगेया ! एगिदिएसु वा होज्जा जाव पचिदिएसु वा होज्जा ॥

१०४. दो भते ! तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियपवेसणएण—पुच्छा ।
गगेया ! एगिदिएसु वा होज्जा जाव पचिदिएसु वा होज्जा । अहवा एगे एगिदिएसु होज्जा एगे वेइदिएसु होज्जा, एव जहा नेरइयपवेसणए तहा तिरिक्खजोणियपवेसणए वि भाणियव्वे जाव असखेज्जा ॥

१०५ उक्कोसा भते ! तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियपवेसणएण—पुच्छा ।
गगेया ! सव्वे वि ताव एगिदिएसु होज्जा, अहवा एगिदिएसु वा[3] वेइदिएसु वा होज्जा । एव जहा नेरइया चारिया तहा तिरिक्खजोणिया वि चारेयव्वा । एगिदिया अमुयतेसु दुयासजोगो, तियासजोगो, चउक्कसजोगो[4], पचसजोगो[5] उवजुजिऊण[6] भाणियव्वो जाव अहवा एगिदिएसु वा, वेइदिएसु वा जाव पचिदिएसु वा होज्जा ॥

१०६ एयस्स ण भते ! एगिदियतिरिक्खजोणियपवेसणगस्स जाव पचिदियतिरिक्खजोणियपवेसणगस्स य कयरे कयरेहितो[7] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गगेया ! सव्वथोवे पचिदियतिरिक्खजोणियपवेसणए, चउरिदियतिरिक्ख-

---

१ स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।
२. उप्पडि° (क, ता, ब) ।
३. य, (अ, ता), या (क) ।
४ चउक्का° (अ, क, व) ।
५ पचा° (क, व) ।
६. उववज्जिऊण (अ), उवउज्जित्तण (क), उवउज्जिऊण (ता, स) ।
७. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

जोणियपवेसणए विसेसाहिए, तेइंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए, बेइंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए, एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए ॥

१०७. मणुस्सपवेसणए ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गगेया ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—समुच्छिममणुस्सपवेसणए, गब्भवक्कतियमणुस्सपवेसणए य ॥

१०८. एगे भते ! मणुस्से मणुस्सपवेसणएण पविसमाणे कि समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा? गब्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा ?
गगेया ! समुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कतियमणुस्सेसु वा होज्जा ॥

१०९. दो भते ! मणुस्सा—पुच्छा ।
गगेया ! समुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कतियमणुस्सेसु वा होज्जा । अहवा एगे समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा एगे गब्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा, एव एएण कमेण जहा नेरइयपवेसणए तहा मणुस्सपवेसणए वि भाणियव्वे जाव दस ॥

११० सखेज्जा भते ! मणुस्सा—पुच्छा ।
गगेया ! समुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कतियमणुस्सेसु वा होज्जा । अहवा एगे समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा सखेज्जा गब्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा, अहवा दो संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा सखेज्जा गब्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा, एव एक्केक्क उस्सारितेसु जाव अहवा सखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा सखेज्जा गब्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा ॥

१११. असखेज्जा भते ! मणुस्सा—पुच्छा ।
गगेया ! सव्वे वि ताव समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा । अहवा असखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु एगे गब्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा, अहवा असंखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु दो गब्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा, एव जाव असखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा सखेज्जा गब्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा ॥

११२. उक्कोसा भते ! मणुस्सा—पुच्छा ।
गगेया ! सव्वे वि ताव समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा । अहवा संमुच्छिममणुस्सेसु य गब्भवक्कतियमणुस्सेसु य होज्जा ॥

११३. एयस्स ण भते ! समुच्छिममणुस्सपवेसणगस्स गब्भवक्कतियमणुस्सपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?० विसेसाहिया वा ?

गंगेया ! सव्वत्थोवे गब्भवक्कतियमणुस्सपवेसणए समुच्छिममणुस्सपवेसणए असखेज्जगुणे ॥

११४ देवपवेसणए ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गगेया ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—भवणवासिदेवपवेसणए जाव वेमाणिय-देवपवेसणए ॥

११५ एगे भते ! देवे देवपवेसणएण पविसमाणे कि भवणवासीसु होज्जा ? वाणमतर जोइसिय-वेमाणिएसु होज्जा ?
गगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा, वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिएसु वा होज्जा ॥

११६ दो भते ! देवा देवपवेसणएण—पुच्छा ।
गगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा, वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिएसु वा होज्जा । अहवा एगे भवणवासीसु एगे वाणमतरेसु होज्जा, एव जहा तिरिक्खजोणिय-पवेसणए तहा देवपवेसणए वि भाणियव्वे जाव असखेज्ज त्ति ॥

११७ उक्कोसा भते ! —पुच्छा ।
गगेया ! सव्वे वि ताव जोइसिएसु होज्जा, अहवा जोइसिय-भवणवासीसु य होज्जा, अहवा जोइसिय-वाणमतरेसु य होज्जा, अहवा जोइसिय-वेमाणिएसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वाणमतरेसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु ए वेमाणिएसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य वाणमतरेसु य वेमाणिएसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वाणमतरेसु य वेमाणिएसु य होज्जा ॥

११८ एयस्स ण भते ! भवणवासिदेवपवेसणगस्स, वाणमतरदेवपवेसणगस्स, जोइसियदेवपवेसणगस्स, वेमाणियदेवपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गगेया ! सव्वत्थोवे वेमाणियदेवपवेसणए, भवणवासिदेवपवेसणए असखेज्ज-गुणे, वाणमतरदेवपवेसणए असखेज्जगुणे, जोइसियदेवपवेसणए सखेज्जगुणे ॥

११९ एयस्स ण भते ! नेरइयपवेसणगस्स तिरिक्खजोणियपवेसणगस्स मणुस्सपवेसण-गस्स देवपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गगेया ! सव्वत्थोवे मणुस्सपवेसणए, नेरइयपवेसणए असखेज्जगुणे, देवपवेसणए असखेज्जगुणे, तिरिक्खजोणियपवेसणए असखेज्जगुणे ॥

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया । २ स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

संतर-निरतर-उववज्जणादि-पद

१२० सतर[1] भते ! नेरइया उववज्जति निरतर नेरइया उववज्जति सतर असुरकुमारा उववज्जति निरतर असुरकुमारा उववज्जति जाव सतर वेमाणिया उववज्जति निरतर वेमाणिया उववज्जति ?

सतर नेरइया उव्वट्टति निरतर नेरइया उव्वट्टति जाव सतर वाणमतरा उव्वट्टति निरतर वाणमतरा उव्वट्टति ? सतर जोइसिया चयति निरतर जोइसिया चयति सतर वेमाणिया चयति निरतर वेमाणिया चयति ?

गगेया ! सतर पि नेरइया उववज्जति निरतर पि नेरइया उववज्जति जाव सतर पि थणियकुमारा उववज्जति निरतर पि थणियकुमारा उववज्जति, नो सतर पुढविक्काइया उववज्जति निरतर पुढविक्काइया उववज्जति, एव जाव वणस्सइकाइया । सेसा जहा नेरइया जाव सतर पि वेमाणिया उववज्जति निरतर पि वेमाणिया उववज्जति ।

सतर पि नेरइया उव्वट्टति निरतर पि नेरइया उव्वट्टति, एव जाव थणियकुमारा । नो सतर पुढविक्काइया उव्वट्टति निरतर पुढविक्काइया उव्वट्टति, एव जाव वणस्सइकाइया । सेसा जहा नेरइया, नवर—जोइसिय-वेमाणिया चयति अभिलावो जाव सतर पि वेमाणिया चयति निरतर पि वेमाणिया चयति ॥

सतो असतो उववज्जणादि-पद[2]

१२१ सतो[3] भते ! नेरइया उववज्जति, असतो[3] नेरइया उववज्जति, सतो असुर-कुमारा उववज्जति जाव सतो वेमाणिया उववज्जति, असतो वेमाणिया उववज्जति ? सतो नेरइया उव्वट्टति, असतो नेरइया उव्वट्टति, सतो असुर-कुमारा उव्वट्टति जाव सतो वेमाणिया चयति, असतो वेमाणिया चयति ?

---

१ सान्तर (क, ता, ब, म) ।

२ अस्मिन् आलापके द्वयोर्वाचनयोर्मिश्रणं दृश्यते । प्रथमा वाचना किञ्चित् [illegible], द्वितीया च किञ्चिद् [illegible] । एतत् मिश्रणं वृत्ति-[illegible] [illegible] सम्भाव्यते, [illegible] अस्मिन् विषये किञ्चिद् [illegible] । [illegible] । अस्माभि-[illegible], द्वितीया [illegible], यथा—

[illegible] नेरइया उववज्जति ? असतो नेरइया उववज्जति ? गगेया ! सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जति । एव जाव वेमाणिया ।

'सतो भते ! नेरइया उव्वट्टति ? असतो नेरइया उव्वट्टति ? गगेया ! सतो नेरइया उव्वट्टति, नो असतो नेरइया उव्वट्टति । एव जाव वेमाणिया, नवर—जोइसिय-वेमाणिएसु चयति भाणियव्व ।'

३. असतो (ता) ।

गंगेया ! सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जति, सतो असुरकुमारा उववज्जति, नो असतो असुरकुमारा उववज्जति जाव सतो वेमाणिया उववज्जति, नो असतो वेमाणिया उववज्जति, सतो नेरइया उव्वट्टति, नो असतो नेरइया उव्वट्टति जाव सतो वेमाणिया चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ॥

१२२ से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जति जाव सतो वेमाणिया चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ?

से नूण भे[1] गगेया ! पासेण अरहया पुरिसादाणीएण सासए लोए बुइए अणादीए अणवदग्गे [2]परित्ते परिवुडे हेट्ठा विच्छिण्णे, मज्झे सखित्ते, उप्पि विसाले; अहे पलियकसठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए, उप्पि उद्धमुइंगाकार-सठिए। तसि च ण सासयसि लोगसि अणादियसि अणवदग्गसि परित्तसि परिवुडसि हेट्ठा विच्छिण्णसि, मज्झे सखित्तसि, उप्पि विसालसि, अहे पलियकसठियसि, मज्झे वरवइरविग्गहियसि, उप्पि उद्धमुइगाकारसठियसि अणता जीवघणा उप्पज्जित्ता-उप्पज्जित्ता निलीयति, परित्ता जीवघणा उप्पज्जित्ता-उप्पज्जित्ता निलीयति ।

से भूए उप्पण्णे विगए परिणए, अजीवेहिं लोक्कइ पलोक्कइ°, जे लोक्कइ से लोए । से तेणट्ठेण गगेया ! एव वुच्चइ—जाव सतो वेमाणिया चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ॥

सतो परतो वा जाणणा-पदं

१२३. सय[3] भते ! एतेव[4] जाणह, उदाहु असय, असोच्चा सोच्चा—सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेर... वेमाणिया, चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ?

गगेया ! सय एतेव जाणामि, नो असय, असोच्चा एते... सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्... चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ॥

१२४ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—[5]°सय एतेवं जाणा... एतेव जाणामि, नो सोच्चा—सतो नेरइया उववज्... उववज्जति जाव सतो वेमाणिया चयति °, नो असतो...

---

१. ते (अ) ।
२. स० पा०—जहा पचमसए जाव जे ।
३ सत (क, ता) ।
४ एव (ज, ...
५ स० पा०...

गगेया ! केवली ण पुरत्थिमे ण मिय पि जाणइ, अमिय पि जाणइ। दाहिणे ण, [1]•पच्चत्थिमे ण, उत्तरे ण, उड्ढ, अहे मिय पि जाणइ, अमिय पि जाणइ।
सव्व जाणइ केवली, सव्व पासइ केवली।
सव्वओ जाणइ केवली, सव्वओ पासइ केवली।
सव्वकाल जाणइ केवली, सव्वकाल पासइ केवली।
सव्वभावे जाणइ केवली, सव्वभावे पासइ केवली।
अणते नाणे केवलिस्स, अणते दसणे केवलिस्स।
निव्वुडे नाणे केवलिस्स, निव्वुडे दसणे केवलिस्स°। से तेणट्ठेण गगेया ! एव वुच्चइ—सयं एतेव जाणामि, नो असय असोच्चा एतेव जाणामि, नो सोच्चा—त चेव जाव नो असतो वेमाणिया चयति ॥

सयं असय उववज्जणा-पदं

१२५ सय भते ! नेरइया नेरइएसु उववज्जति ? असय नेरइया नेरइएसु उववज्जति ?
गगेया ! सय नेरइया नेरइएसु उववज्जति, नो असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जति ॥

१२६. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ[2]—•सय नेरइया नेरइएसु उववज्जति, नो असय नेरइया नेरइएसु° उववज्जति ?
गगेया ! कम्मोदएण, कम्मगुरुयत्ताए, कम्मभारियत्ताए, कम्मगुरुसभारियत्ताए; असुभाण कम्माण उदएणं, असुभाण कम्माण विवागेण, असुभाण कम्माण फलविवागेण सय नेरइया नेरइएसु उववज्जति, नो असय नेरइया नेरइएसु उववज्जति। से तेणट्ठेण गगेया[3] ! •एव वुच्चइ—सय नेरइया नेरइएसु उववज्जति, नो असय नेरइया नेरइएसु° उववज्जति ॥

१२७. सय भते ! असुरकुमारा—पुच्छा।
गगेया ! सय असुरकुमारा[4] •असुरकुमारेसु° उववज्जति, नो असय असुरकुमारा[5] •असुरकुमारेसु° उववज्जति ॥

१२८ से केणट्ठेण त चेव जाव उववज्जति ?
गगेया ! कम्मोदएण[6], कम्मविगतीए[7], कम्मविसोहीए, कम्मविसुद्धीए, सुभाण कम्माण उदएण, सुभाण कम्माण विवागेण सुभाण कम्माण फलविवागेण सय

---

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. म० पा०—असुरकुमारा जाव उववज्जति।
5. म० पा०—असुरकुमारा जाव उववज्जति।
6. कम्मोदएण कम्मोवसमेण (क, ख, [illegible])।
7. कम्मविगताए (ता)।

असुरकुमारा असुरकुमारत्ताए उववज्जति, नो असय असुरकुमारा[1] °असरकुमार-त्ताए° उववज्जति । से तेणट्ठेण जाव उववज्जति । एव जाव थणियकुमारा ।।

१२९ सय भते ! पुढविक्काइया—पुच्छा ।
गगेया ! सय पुढविक्काइया[2] °पुढविक्काइएसु° उववज्जति नो असय पुढविक्काइया[3] °पुढविक्काइएसु° उववज्जति ।।

१३० से केणट्ठेण जाव उववज्जति ?
गगेया ! कम्मोदएण, कम्मगुरुयत्ताए, कम्मभारियत्ताए, कम्मगुरुसभारियत्ताए, सुभासुभाण कम्माण उदएण, सुभासुभाण कम्माण विवागेण, सुभासुभाण कम्माण फलविवागेण सय पुढविक्काइया[4] °पुढविक्काइएसु° उववज्जति, नो असय पुढविक्काइया[5] °पुढविक्काइएसु° उववज्जति । से तेणट्ठेण जाव उववज्जति ।।

१३१ एव जाव मणुस्सा ।।

१३२. वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा । से तेणट्ठेण गगेया ! एव वुच्चइ—सय वेमाणिया[6] °वेमाणिएसु° उववज्जति, नो असय[7] °वेमाणिया वेमाणिएसु° उववज्जति ।।

गंगेयस्स संबोधि-पद

१३३ तप्पभिति च ण से गगेये अणगारे समण भगव महावीर पच्चभिजाणइ सव्वण्णु सव्वदरिसि । तए ण से गगेये अणगारे समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भ अतिय चाउज्जामाओ धम्माओ पचमहव्वइय [8]°सपडिक्कमण धम्म उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए ।
अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध ।।

१३४ तए ण से गगेये अणगारे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता चाउज्जामाओ धम्माओ पचमहव्वइय सपडिक्कमण धम्म उवसपज्जित्ता ण विहरति ।।

१३५ तए ण से गगेये अणगारे वहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता

---

१. स० पा०—असुरकुमारा जाव उववज्जति ।
२ स० पा०—पुढविक्काइया जाव उववज्जति ।
३ स० पा०—पुढविक्काइया जाव उववज्जति ।
४ स० पा०—पुढविक्काइया जाव उववज्जति ।
५. स० पा०—पुढविक्काइया जाव उववज्जति ।
६. स० पा०—वेमाणिया जाव उववज्जति ।
७ स० पा०—असय जाव उववज्जति ।
८ स० पा०—एव जहा कालासवेसियपुत्तो तहेव भाणियव्व जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ।

जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणय अदंतवणय अच्छत्तय अणोवाहणय भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोओ बंभचेरवासो परघरप्पवेसो लद्धावलद्धी उच्चावया गामकंटगा बावीसं परिसहोवसग्गा अहियासिज्जंति, तमट्ठं आराहेइ, आराहेत्ता चरमेहिं उस्सास-नीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ।।

१३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[१] ।।

तेत्तीसइमो उद्देसो

उसभदत्त-देवाणंदा-पदं

१३७ तेणं कालेणं तेणं समएणं माहणकुंडग्गामे नयरे होत्था—वण्णओ[२] । बहुसालए चेइए—वण्णओ[३] । तत्थ णं माहणकुंडग्गामे नयरे उसभदत्ते नामं माहणे परिवसइ—अड्ढे दित्ते वित्ते जाव[४] बहुजणस्स अपरिभूए रिव्वेद[५]-जजुव्वेद[६]-सामवेद-अथव्वणवेद-[७]°इतिहासपंचमाणं निघंटुछट्ठाणं—चउण्हं वेदाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं सारए धारए पारए सडंगवी सट्ठितंतविसारए, संखाणे सिक्खाकप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोतिसामयणे°, अण्णेसु य बहूसु बंभण्णएसु नयेसु सुपरिनिट्ठिए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे[८] उवलद्धपुण्णपावे जाव[९] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तस्स णं उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदा नामं माहणी होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव[१०] पियदंसणा सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ।।

१३९. तए णं से उसभदत्ते माहणे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ[1]•तुट्ठचित्तमाणदिए णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण॰हियए जेणेव देवाणदा माहणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता देवाणद माहणि एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए ! समणे भगव महावीरे आदिगरे जाव[2] सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएण चक्केणं जाव[3] सुहसुहेण विहरमाणे बहुसालए चेइए अहापडिरूव[4] •ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे॰ विहरइ।
त महप्फलं खलु देवाणुप्पिए ! तहारूवाण अरहताण भगवताण नामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-नमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स[5] धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? त गच्छामो ण देवाणुप्पिए ! समण भगव महावीर वदामो नमसामो[6] •सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मगलं देवयं चेइयं॰ पज्जुवासमो। एय णे इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए[7] आणुगामियत्ताए भविस्सइ॥

१४०. तए ण सा देवाणदा माहणी उसभदत्तेणं माहणेण एवं वुत्ता समाणी हट्ठ[8]•तुट्ठचित्तमाणदिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण॰ हियया करयल[9] •परिग्गहियं दसनह सिरसावत्तं मत्थए अजलि॰ कट्टु उसभदत्तस्स माहणस्स एयमट्ठ विणएणं पडिसुणेइ॥

१४१ तए ण से उसभदत्ते माहणे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइय-समखुरवालिहाण-समलिहियसिगेहि[10], जंबूणयामयकलावजुत्त-पतिविसिट्ठेहि[11], रययामयघटा-सुत्तरज्जुय-पवरकचणनत्थपग्गहोग्गहियएहि, नीलुप्पलकयामेलएहि, पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिरयण-घटियाजालपरिगय, सुजायजुग-जोत्तरज्जुयजुग-पसत्थसुविरचियनिमिय, पवरलक्खणोववेय-धम्मिय जाणप्पवर जुत्तामेव उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एतमाणत्तिय पच्चप्पिणह॥

१४२ तए ण ते कोडुवियपुरिसा उसभदत्तेण माहणेण एव वुत्ता समाणा हट्ठ[12]•तुट्ठचित्तमाणदिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण॰हियया

---

१ स॰ पा॰—हट्ठ जाव हियए।
२ भ॰ १।७।
३ ओ॰ सू॰ १६।
४ स॰ पा॰—अहापडिरूव जाव विहरइ।
५ आयरियस्स (अ, स)।
६ स॰ पा॰—नमसामो जाव पज्जुवासामो।
७. × (क, ता, ब, म), निस्सेयसाए (भ॰ २।३०)।
८ स॰ पा॰—हट्ठ जाव हियया।
९ स॰ पा॰—करयल जाव कट्टु।
१० ॰ संगएहिं (ता, म)।
११ परिविसट्ठेहिं (अ, स), पविसिट्ठेहिं (क, ता)।
१२ स॰ पा॰—हट्ठ जाव हियया।

करयल[1]•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु ° एव सामी ! तहत्ताणाए विणएण वयण पडिसुणेति[2], पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त जाव धम्मिय जाणप्पवर जुत्तामेव उवट्ठवेत्ता[3] तमाणत्तिय पच्चप्पिणति ॥

१४३. तए ण से उसभदत्ते माहणे ण्हाए जाव[4] अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे साम्रो गिहाम्रो पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय जाणप्पवर दुरूढे[5] ॥

१४४. तए ण सा देवाणदा माहणी ण्हाया[6] जाव[7] अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा बहूहि खुज्जाहि, चिलातियाहि जाव[8] चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-थेरकचुइज्ज-महत्तरगवदपरिक्खित्ता अतेउराम्रो निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय[9] जाणप्पवर दुरूढा ॥

१४५ तए ण से उसभदत्ते माहणे देवाणदाए माहणीए सद्धि धम्मिय जाणप्पवर दुरूढे समाणे नियगपरियालसपरिवुडे माहणकुडग्गाम नगर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादीए[10] तित्थकरातिसए पासइ, पासित्ता धम्मिय जाणप्पवर ठवेइ, ठवेत्ता धम्मियाम्रो जाणप्पवराम्रो पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता समण भगव महावीर पचविहेण अभिगमेण अभिगच्छाति, [त जहा—१. सच्चित्ताण दव्वाण

---

१ म० पा०—करयल ।
२ जाव (अ, क, ता, ब, म, स) ।
३. उवट्ठवेत्ता जाव (अ, क, ता, ब, म, स) ।
४ भ० ३।३३ ।
५. दुरूढे (ता) ।
६ वाचनान्तरे देवानन्दावर्णक एव दृश्यते—[illegible] ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मगल-पायच्छित्ता, किं ते [किंते (व)]-[illegible]-उचिय-[illegible] [illegible] णाणामणिरयणविराइयगी, [illegible] सुकुमाल [illegible], [illegible] गरुधूवधूविया, सिरिसमाणवेसा (वृ) ।
७ भ० ३।३३ ।
८. वामणीहि वडभीहि बब्बरीहि बउसियाहि जोणियाहि पल्हवियाहि ईसिगिणियाहि चारु (वाम) णिणियाहि ल्हासियाहि लउसियाहि आरबीहि दमिलीहि सिंहलीहि पुलिंदीहि पक्कणीहि(पुक्कलीहि) बहलीहि मुरुंडीहि सबरीहि पारसीहि णाणादेस-विदेसपरिपिंडियाहि सदेसनेवत्थगहियवेसाहि इंगिय-चिंतिय-पत्थिय-वियाणियाहि कुसलाहि विणीयाहि (क, ता, ब, म), इद च सर्व वाचनान्तरे [illegible] (वृ) ।
९ जाव धम्मिय (अ, क, ता, ब, म, स) ।
१०. छत्तादीए (म) ।

विप्रोसरणयाए [1]•२. अचित्ताणं दव्वाण अविप्रोसरणयाए ३. एगसाडिएणं उत्तरासंगकरणेणं ४ चक्खुप्फासे अजलिप्पग्गहेण ५ मणसो एगत्तीकरणेण][2] जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता° तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ॥

१४६ तए ण सा देवाणदा माहणी धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता वहूहि खुज्जाहि जाव[3] चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-थेरकचुइज्ज-महत्तरगवदपरिक्खित्ता समण भगव महावीर पचविहेणं अभिगमेण अभिगच्छइ, [तं जहा—१. सचित्ताण दव्वाणं विप्रोसरणयाए २. अचित्ताणं दव्वाण अविमोयणयाए ३. विणयोणयाए गायलट्ठीए ४ चक्खुप्फासे अजलिपग्गहेणं ५. मणस्स एगत्तीभावकरणेणं][4] जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता उसभदत्त माहण पुरओ कट्टु ठिया चेव सपरिवारा सुस्सूसमाणी नमंसमाणी अभिमुहा विणएण पंजलिकडा[5] पज्जुवासइ ॥

१४७. तए णं सा देवाणदा माहणी आगयपण्हया पप्पुयलोयणा[6] सवरियवलयवाहा कंचुयपरिक्खित्तिया धाराहयकलवगं पिव समूसवियरोमकूवा समण भगवं महावीर अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ ॥

१४८ भतेति ! भगव गोयमे समणं भगव महावीरं वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—किं ण भते ! एसा देवाणदा माहणी आगयपण्हया [7]•पप्पुयलोयणा सवरियवलयवाहा कचुयपरिक्खित्तिया धाराहयकलवग पिव समूसविय° रोमकूवा देवाणुप्पिय अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ ?

गोयमादि[8] ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी—एव खलु गोयमा ! देवाणदा माहणी मम अम्मगा, अहण्ण देवाणदाए माहणीए अत्तए । 'तण्ण एसा'[9] देवाणदा माहणी तेण पुव्वपुत्तसिणेहरागेण आगयपण्हया[10] •पप्पुयलोयणा, संवरियवलयवाहा कचुयपरिक्खित्तिया धाराहयकलवग पिव° समूसवियरोमकूवा ममं अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ ॥

---

१. स० पा०—एव जहा वितियमए जाव तिविहाए ।
२. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्याश प्रतीयते ।
३. भ० ९।१४४ ।
४. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्याश प्रतीयते ।
५. पजलिउडा (अ) ।
६. पप्फुय° (अ, ता, म), पप्फुल्ल° (क) ।
७. स० पा०—त चेव जाव रोमकूवा ।
८. गोयमादी (क, ता, व, म) ।
९. तए ण सा (अ, म) ।
१०. स० पा०—आगयपण्हया जाव समूसविय° ।

१४९. तए णं समणे भगवं महावीरे उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदाए माहणीए तीसे य महतिमहालियाए इसिपरिसाए' •मुणिपरिसाए जइपरिसाए देवपरिसाए अणेगसयाए अणेगसयवदाए अणेगसयवदपरियालाए ओहबले अइबले महब्बले अपरिमियबल-वीरिय-तेय-माहप्प-कंति-जुत्ते सारय-नवत्थणिय-महुरगभीर-कोचणिग्घोस-दुदुभिस्सरे उरे वित्थडाए कंठे वट्टियाए सिरे समाइण्णाए अगर-लाए अमम्मणाए सुव्वत्तक्खर-सण्णिवाइयाए पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए जोयणणीहारिणा सरेणं अद्धमागहाए भासाए भासइ—धम्म परि-कहेइ° जाव' परिसा पडिगया ।।

१५० तए ण से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय' धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगवं महावीर तिक्खुतो'• आयाहिण पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता° नमसित्ता एव वदासी—एवमेय भते ! तहमेय भते ! "•अवितहमेय भते ! असदिद्धमेय भते ! इच्छियमेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते ! ° —से जहेय तुब्भे वदह त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिम दिसिभाग अवक्कमति, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेइ, करेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ', •करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता° नमसित्ता एव वयासी—आलित्ते ण भत्ते ! लोए, पलित्ते ण भंते ! लोए, आलित्त-पलित्ते ण भते ! लोए जराए मरणेण य ।

'•से जहानामए केइ गाहावई अगारसि झियायमाणसि जे से तत्थ भडे भवइ अप्पभारे मोल्लगरुए, त गहाय आयाए एगतमत अवक्कमइ । एस मे नित्थारिए समाणे पच्छा पुरा य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ।

एवामेव देवाणुप्पिया ! मज्झ वि आया एगे भडे इट्ठे कते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेस्सासिए सम्मए बहुमए अणुमए भडकरडगसमाणे, मा ण सीय, मा ण उण्ह, मा ण खुहा, मा ण पिवासा, मा ण चोरा, मा ण वाला, मा ण दसा, मा ण मसगा, मा ण वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सन्निवाइय विविहा रोगायका परीस-होवसग्गा फुसतु त्ति कट्टु एस मे नित्थारिए समाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नीसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ।

त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! सयमेव पव्वाविय, सयमेव मुडाविय, सयमेव सेहाविय, सयमेव सिक्खाविय, सयमेव आयारगोयर विणय-वेणइय-चरण-करण जायामायावत्तिय धम्ममाइक्खिय ।।

१५१ तए ण समणे भगव महावीरे उसभदत्त माहण सयमेव पव्वावेइ,सय मेव मुडावेइ, सयमेव सेहावेइ, सयमेव सिक्खावेइ, सयमेव आयार-गोयर विणय-वेणइय चरण-करण जायामायावत्तिय धम्ममाइक्खइ—एव देवाणुप्पिया गतव्व, एव चिट्ठियव्व, एव निसीइयव्व, एव तुयट्टियव्व, एव भुजियव्व, एव भासियव्व एव उट्ठाय-उट्ठाय पाणेहि भूएहि जीवेहि सत्तेहि सजमेणं सजमियव्व अस्सि च ण अट्ठे णो किंचि वि पमाइयव्व ।

तए ण से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स इम एयारूव धम्मिय उवएस सम्म सपडिवज्जइ °जाव[1] सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता[2] वहूहि चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम[3]-•दुवालसेहि, मासद्धमासखमणेहि° विचित्तेहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे वहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसेत्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरति नग्गभावे जाव[4] तमट्ठ आराहेइ, आराहेत्ता[5] •चरमेहि उस्सास-नीसासेहि सिद्धे वुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ।।

१५२ तए ण सा देवाणदा माहणी समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण[6] •करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता° नमसित्ता एव वयासी—एवमेय भते ! तहमेय भते ! एव जहा उसभदत्तो तहेव जाव धम्ममाइक्खिय ।।

१५३. तए ण समणे भगव महावीरे देवाणद माहणि सयमेव पव्वावेइ, पव्वावेत्ता सयमेव अज्जचदणाए अज्जाए[7] सीसिणित्ताए दलयइ ।।

१५४ तए ण सा अज्जचदणा अज्जा देवाणद माहणि सयमेव[8] मुडावेति, सयमेव सेहावेति । एव जहेव उसभदत्तो तहेव अज्जचदणाए अज्जाए इम एयारूव धम्मियं उवदेस सम्म सपडिवज्जइ, तमाणाए तह गच्छइ जाव[9] सजमेण संजमति ।।

१५५ तए ण सा देवाणदा अज्जा अज्जचदणाए अज्जाए अतिय सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, [10]•अहिज्जित्ता वहूहि चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवाल-

---

१. भ० २।५३-५७ ।
२. जाव (अ, क, ता, व, स) ।
३. सं० पा०—दसम जाव विचित्तेहि ।
४. भ० १।४३३ ।
५. सं० पा०—पयाहिण जाव नमसित्ता ।
६. सं० पा०—पयाहिण जाव नमसित्ता ।
७. × (व, म) ।
८ सयमेव पव्वावेति सयमेव (क, ब, म) ।
९ भ० २।५४ ।

सेहि, मासद्धमासखमणेहि विचित्तेहि तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणी बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता चरमेहिं उस्सास-नीसासेहिं सिद्धा बुद्धा मुक्का परिनिव्वुडा° सव्वदुक्खप्पहीणा ॥

जमालि-पदं

१५६. तस्स णं माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स पच्चत्थिमे णं एत्थ णं खत्तियकुंडग्गामे नामं नयरे होत्था—वण्णओ[1]। तत्थ णं खत्तियकुंडग्गामे नयरे जमाली नामं खत्तियकुमारे परिवसइ—अड्ढे दित्ते जाव[2] बहुजणस्स अपरिभूते, उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसतिबद्धेहिं णाडएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं[3] उवनच्चिज्जमाणे-उवनच्चिज्जमाणे, उवगिज्जमाणे-उवगिज्जमाणे, उवलालिज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे, पाउस-वासारत्त-सरद-हेमंत-वसंत-गिम्ह-पज्जंते छप्पि उऊ[4] जहाविभवेणं माणेमाणे, कालं गालेमाणे, इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ॥

१५७. तए णं खत्तियकुण्डग्गामे नयरे सिंघाडग-तिक-चउक्क-चच्चर[5]-•चउम्मुह-महापह-पहेसु महया जणसद्दे इ वा जणवूहे इ वा जणबोले इ वा जणकलकले इ वा जणुम्मी इ वा जणुक्कलिया इ वा जणसण्णिवाए इ वा बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ°, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ, एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव[6] सव्वण्णू सव्वदरिसी माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स बहिया बहुसालए चेइए अहापडिरूवं[7] •ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ।

तं महप्फलं खलु देवाणुप्पिया! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए जहा ओववाइए जाव[8] एगाभिमुहे खत्तियकुण्डग्गामं नयरं मज्झं-मज्झेणं निग्गच्छंति[9], निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए, तेणेव उवागच्छंति एवं जहा ओववाइए जाव[10] तिविहाए पज्जुवासणयाए पज्जुवासंति ॥

---

१. ओ० सू० १।
२. भ० [illegible]।
३. [illegible] (क, ख, म)।
४. [illegible] (क), [illegible] (ख, व, म)।
५. [illegible] इ वा [illegible]।
६. ओ० सू० १६।
७. भ० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरइ।
८. ओ० सू० ५२, वाचनान्तर पृ० [illegible]।
९. निग्गच्छइ (क, ता)।
१०. ओ० सू० ५२, ६६।

१५८. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स त महयाजणसद्द वा जाव जणसन्निवाय वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्झत्थिए[1] °चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे ° समुप्पज्जित्था—किण्ण अज्ज खत्तियकुडग्गामे नयरे इदमहे इ वा, खदमहे इ वा, मुगुदमहे इ वा, नागमहे इ वा, जक्खमहे इ वा, भूयमहे इ वा, कूवमहे इ वा, तडागमहे इ वा, नईमहे इ वा, दहमहे इ वा, पव्वयमहे इ वा, रूक्खमहे इ वा, चेइयमहे इ वा, थूभमहे इ वा, जण्ण एते वहवे उग्गा, भोगा, राइण्णा, इक्खागा, णाया[2], कोरव्वा, खत्तिया, खत्तियपुत्ता, भडा, भडपुत्ता,[3] °जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई लेच्छईपुत्ता अण्णे य वहवे राईसर–तलवर--माडविय–कोडुविय–इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ °-सत्थवाहप्पभितयो ण्हाया कयवलिकम्मा जहा ओववाइए जाव[4] खत्तियकुडग्गामे नयरे मज्झंमज्झेण निग्गच्छति ?—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कचुइ[5]-पुरिस सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वदासी—किण्ण देवाणुप्पिया ! अज्ज खत्तियकुडग्गामे नयरे इदमहे इ वा जाव निग्गच्छति ?

१५९. तए ण से कचुइ-पुरिसे जमालिणा खत्तियकुमारेण एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणस्स भगवओ महावीरस्स आगमणगहियविणिच्छए करयल[6]°परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° जमालि खत्तियकुमार जएण विजएण वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज खत्तियकुडग्गामे नयरे इदमहे इ वा जाव[7] निग्गच्छति । एव खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज समणे भगव महावीरे आदिगरे जाव[8] सव्वण्णू सव्वदरिसी माहणकुडग्गामस्स नयरस्स वहिया वहुसालए चेइए अहापडिरूव ओग्गह[9] °ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ, तए ण एते वहवे उग्गा, भोगा जाव[10] निग्गच्छति ॥

१६०. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे कचुइ[11]-पुरिसस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घट आसरह जुत्तामेव उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

---

१. स०पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
२ नाता (क, व, म)।
३ स०पा०—जहा ओववाइए जाव सत्थवाह° ।
४. ओ० सू० ५२।
५ कचुइज्ज (ज, क, ता, व)।
६ स० पा०—करयल।
७ भ० ९।१५८।
८ ओ० सू० १६।
९ स० पा०—ओग्गह जाव विहरइ।
१० ओसू सू० ५२, जाव अप्पेगइया वदणवत्तिय जाव (अ, क, ता, व, म)।
११ कचुति (अ, क, व, स)।

१६१. तए ण ते कोडुवियपुरिसा जमालिणा खत्तियकुमारेण एव वुत्ता समाणा[1] •चाउग्घट आसरह जुत्तामेव उवट्ठवेति, उवट्ठवेत्ता तमाणत्तिय° पच्चप्पिणति ।

१६२. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे जाव[2] चदणुक्खित्तगायसरीरे[3] सव्वालकारविभूसिए मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घट आसरह दुरुहइ[4], दुरुहित्ता सकोरेटमल्लदामेण[5] छत्तेण धरिज्जमाणेण, महयाभडचडकरपहकरवदपरिक्खित्ते खत्तियकुडग्गाम नगर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुडग्गामे नयरे, जेणेव वहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हेइ, निगिण्हेत्ता रह ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता पुप्फतवोलाउहमादिय पाहणाओ[6] य विसज्जेति, विसज्जेत्ता एगसाडिय उत्तरासग करेइ, करेत्ता आयते चोक्खे परमसुइब्भूए अजलिमउलियहत्थे[7] जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पायाहिण करेइ, करेत्ता[8] •वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता° तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ।।

१६३. तए ण समणे भगव महावीरे जमालिस्स खत्तियकुमारस्स, तीसे य महतिमहालियाए इसि[9] •परिसाए मुणिपरिसाए जइपरिसाए देवपरिसाए अणेगसयाए अणेगसयवदाए अणेगसयवदपरियालाए ओहवले अइवले महव्वले अपरिमियवल-वीरिय-तेय-माहप्प-कति-जुत्ते सारय-नवत्थणिय-महुरगभीर-कोचणिग्घोस-दुदुभिस्सरे उरे वित्थडाए कठे वट्टियाए सिरे समाइण्णाए अगरलाए अमम्मणाए सुव्वत्तक्खर-सण्णिवाइयाए पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए जोयणणीहारिणा सरेण अद्धमागहाए भासाए भासइ—धम्म परिकहेइ° जाव[10] परिसा पडिगया ।।

---

१ स० पा०—समाणा जाव पच्चप्पिणति ।

२ जाव ओसधाए परिमासणाओ तहा भाणि-यव्व जाव (अ, क, ता, व, म, स), मज्जन-गृहवर्णने परिवारवर्णनस्य सूचना स्वाभा-विकी नास्ति, [illegible] औपपातिके अत्र पाठभेदो-[illegible] विशेषो जात । न च पाद-[illegible] पाठ [illegible] लभ्यते, [illegible] । द्रष्टव्यम्—[illegible] ।

३ चदणोकिण्ण° (ता, म), चदणोत्तिण्ण° (स)

४. दूरुहइ (अ, ता, व), दुरुहति (क) ।

५ सकोरट° (म, स) ।

६. वाहणाओ (अ, म), पाणहाओ (क), पाणु-हाओ (स) ।

७. अजलितमउ० (ता) ।

८. स० पा०—करेत्ता जाव तिविहाए ।

९. स० पा०—इसि जाव धम्मकहा ।

१०. ओ० सू० ७१-७६ ।

१६४. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठ'•तुट्ठचित्तमाणदिए णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण°हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो² •आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता° नमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भते ! निग्गथ पावयण, पत्तियामि ण भते ! निग्गथ पावयण, रोएमि ण भते ! निग्गथ पावयण, अब्भुट्ठेमि ण भते ! निग्गथ पावयण, एवमेय भते ! तहमेय भते ! अवितहमेय भते ! असदिद्धमेय भते³ ! •इच्छियमेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते ! °—से जहेय तुब्भे वदह, ज नवर—देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तए ण अह देवाणुप्पियाण अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वयामि । अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध ॥

१६५. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समण भगव महावीर तिक्खुत्तो⁴ •आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता° नमसित्ता तमेव चाउग्घट आसरह दुरुहइ, दुरुहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सकोरेट'⁵•मल्लदामेण छत्तेण° धरिज्जमाणेण महयाभडचड-गर'⁶•पहकरवद°परिक्खित्ते, जेणेव खत्तियकुडग्गामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खत्तियकुडग्गाम नयर मज्झमज्झेण जेणेव सए गेहे जेणेव बाहि-रिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हइ, निगि-ण्हित्ता रह ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अब्भितरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापियरो जएण विजएण वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एव वयासी—एव खलु अम्मताओ⁷ ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मे निसते, से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए अभिरुइए ॥

१६६. तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो एव वयासी—धन्ने सि ण तुम जाया ! कयत्थे सि ण तुम जाया ! कयपुण्णे सि ण तुम जाया ! कयलक्खणे सि ण तुम जाया ! जण्ण तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मे निसते, से वि य ते धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए ॥

---

१ स० पा०—हट्ठ जाव हियए ।
२ स० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमसित्ता ।
३ स० पा०—भते जाव से ।
४. स० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमसित्ता ।
५. स० पा०—सकोरेंट जाव धरिज्जमाणेण ।
६ स० पा०—चडगर जाव परिक्खित्ते ।
७. अम्मयाओ (अ, स), अम्मातांओ (ब) ।

१६७ तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो दोच्च पि एवं वयासी—एवं खलु मए अम्मताओ ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मे निसते, •से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए°, अभिरुइए । तए णं अहं अम्मताओ ! ससारभउव्विग्गे, भीते जम्मण[1]-मरणेण, तं इच्छामि ण अम्मताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए ॥

१६८ तए ण सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माता त अणिट्ठ अकत अप्पिय अमणुण्ण अमणाम अस्सुयपुव्व गिर सोच्चा निसम्म सेयागयरोमकूवपगलतचिलिणगत्ता[2], सोगभरपवेवियगमगी नित्तेया दीणविमणवयणा, करयलमलिय व्व कमलमाला[3], तक्खणओलुग्गदुब्बलसरीरलायण्णसुन्ननिच्छाया[4], गयसिरीया पसिढिलभूसण[5]-पडतखुण्णियसचुण्णियधवलवलय[6]-पब्भट्ठउत्तरिज्जा, मुच्छावसणट्ठचेतगरुई[7], सुकुमालविकिण्णकेसहत्था, परसुणियत्त[8] व्व चपगलया, निव्वत्तमहे व्व इदलट्ठी, विमुक्कसधिबधणा कोट्टिमतलसि[9] धसत्ति सव्वगेहिं[10] सनिवडिया ॥

१६९. तए ण सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया ससभमोवत्तियाए[11] तुरिय कचण-भिगारमुहविणिग्गय - सीयलजलविमलधारपरिसिच्चमाणनिव्वावियगायलट्ठी[12], उक्खेवय-तालियट-वीयणगजणियवाएण, सफुसिएण अतेउरपरिजणेण आसासिया समाणी रोयमाणी कदमाणी सोयमाणी विलवमाणी जमालि खत्तियकुमार एव वयासी—तुम सि ण जाया ! अम्ह एगे पुत्ते इट्ठे कते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए समए बहुमए अणुमए भडकरडगसमाणे रयणे रयणब्भूए जीविऊसविए[13] हिययनदिजणणे उबरपुप्फ पिव[14] दुल्लभे सवणयाए[15], किमग ! पुणपासणयाए ? त नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुब्भ खणमवि विप्पयोग, त अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अम्हे जीवामो तओ पच्छा अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणयवए वड्ढियकुलवसततुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स

---

१. म० पा० - निमने नाग अभिरुइए ।
२. जम्मजरा (वृ०) ।
३. °चिलीणगत्ता (अ, ब, म) ।
४. °[illegible] (ना० ३।१।१०५) ।
५. [illegible] (अ, क, ता, म) ।
६. °[illegible] (ना० ३।१।१०५) ।
७. [illegible] (अ, ता, ब, म) ।
८. [illegible] (ता); °[illegible] (ब) ।
९. [illegible] (ना० ३।१।१०५) ।
१०. [illegible] (अ ता म) ।
११ ° यत्तियाए (क, ता); चेट्या इति गम्यम् (वृ) ।
१२. सीयलविमलजल° (अ), [illegible] (क); °सीयलविमलधारपरिसिच्चमाणनिव्व° (ता), °निव्ववित° (ब); सीयल-विमलजलधारपरिसिच्चमाणनिव्वावित° (म) ।
१३. जीवियउस्सासिए (वृपा, ना० ३।१।१०५) ।
१४. विव (क) ।
१५. समणयाए (अ) ।

भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि ॥

१७०. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि णं तं अम्मताओ ! जण्णं तुब्भे ममं एवं वदह—तुमं सि णं जाया ! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते तं चेव जाव[1] पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ ! माणुस्सए भवे अणेगजाइ-जरा-मरण-रोग-सारीरमाणसपकामदुक्खवेयण-वसणसतोवद्दवाभिभूए अधुवे अणितिए असासए सझब्भरागसरिसे जलबुब्बुदसमाणे कुसग्गजलबिंदु-सन्निभे सुविणदसणोवमे[2] विज्जुलयाचंचले अणिच्चे सडण-पडण-विद्धंसणधम्मे, पुव्विं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस[3] णं जाणइ अम्मताओ ! के पुव्विं गमणयाए, के पच्छा गमणयाए ? तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स[4] •भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ॥

१७१. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—इमं च ते जाया ! सरीरगं पविसिट्ठरूवं[5] लक्खण-वंजण-गुणोववेयं उत्तमबल-वीरियसत्त-जुत्तं विण्णाणवियक्खणं ससोहग्गगुणसमूसियं[6] अभिजायमहक्खमं विविहवाहि-रोगरहियं, निरुवहय-उदत्त[7]-लट्ठपंचिंदियपडुं[8] पढमजोव्वणत्थं अणेगउत्तमगुणेहिं संजुत्तं, तं अणुहोहि ताव जाया ! नियगसरीररूव-सोहग्ग-जोव्वणगुणे, तओ पच्छा अणुभूय नियगसरीररूव-सोहग्ग-जोव्वणगुणे अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणयवए वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीर-स्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि ॥

१७२. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि णं तं अम्मताओ ! जण्णं तुब्भे ममं एवं वदह—इमं च णं ते जाया ! सरीरगं तं चेव जाव[9] पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ ! माणुस्सगं सरीरं दुक्खाययणं, विविहवाहिसयसंनिकेतं, अट्ठियकट्ठुट्ठियं, छिराण्हारुजाल-ओणद्धसंपिणद्धं, मट्टियभंडं व दुब्बलं, असुइसंकिलिट्ठं, अणिट्ठविय-सव्वकालसंठप्पयं, जराकुणिम-जज्जरघरं व सडण-पडण-विद्धंसणधम्मं, पुव्विं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहि-यव्वं भविस्सइ। से केस णं जाणइ अम्मताओ ! के पुव्विं[10] •गमणयाए, के पच्छा गमणयाए ? तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे

---

१ भ० ९।१६६।
२ सुविणगसद° (क, म), सुविणगदं° (स)।
३ के (ता, ना० १।१।१०७)।
४ सं० पा०—समणस्स जाव पव्वइत्तए।
५. पइवि° (ता, व)।
६. °समूविय (ता)।
७. उयग्ग (ता)।
८ लट्ठ° (स)।
९ भ० ९।१६६।
१०. सं० पा०—तं चेव जाव पव्वइत्तए।

समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ॥

१७३. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—इमाओ य ते जाया ! विपुलकुलबालियाओ[1] कलाकुसल-सव्वकाललालिय-सुहोचियाओ[2], मद्दवगुणजुत्त-निउणविणओवयारपंडिय-वियक्खणाओ, मंजुलमियमहुरभणिय-विहसिय-विप्पेक्खिय-गति-विलास-चिट्ठियविसारदाओ, अविकलकुल-सीलसालिणीओ[3], विसुद्धकुलवंससंताणतंतुवद्धण-प्पगब्भुब्भवपभाविणीओ[4], मणाणुकूल-हियइच्छियाओ, अट्ठ तुज्झ गुणवल्लहाओ उत्तमाओ, निच्चं भावाणुरत्तसव्वंग-सुंदरीओ[5]। तं भुंजाहि ताव जाया ! एताहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोगे, तओ पच्छा भुत्तभोगी विसय-विगयवोच्छिण्ण-कोउहल्ले अम्हेहिं कालगएहिं[6] •समाणेहिं परिणयवए वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं ° पव्वइहिसि ॥

१७४. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि णं तं अम्मताओ ! जण्णं तुब्भे ममं एयं वदह—इमाओ ते जाया ! विपुलकुल-बालियाओ जाव[7] पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ ! माणुस्सगा कामभोगा[8] उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-वंत-पित्त-पूय-सुक्क-सोणिय-समुब्भवा, अमणुण्णदुरुय[9]-मुत्त-पूइय-पुरीसपुण्णा, मयगंधुस्सास[10]-असुभनिस्सासउव्वेयणगा, बीभच्छा[11], अप्पकालिया, लहुसगा[12], 'कलमलाहिवासदुक्खा बहुजणसाहारणा[13]', परिकिलेसकिच्छदुक्खसज्झा, अबुहजणणिसेविया, 'सदा साहुगरहणिज्जा[14]',

---

१. °बालियाओ (स), सरिसियाओ, सरित्तयाओ, सरिव्वयाओ, सरिसलावण्णरूव—जोव्वण-गुणोववेयाओ, सरिसएहिंतो कुलेहिंतो आणि-[illegible]याओ (अ, क, ब, म, स), असौ पाठ: 'ता' संकेतिते आदर्शे नास्ति तथा वृत्तावपि [illegible]। नायाधम्मकहाओ (१।१। १-८) [illegible]। [illegible] वाचनान्तरे [illegible] पाठो नास्ति। वाचनान्तरगतश्च पाठ: [illegible]।

२. [illegible] (ब)।

३. [illegible] (ब)।

४. [illegible] (ब), [illegible] (क, [illegible]), [illegible]

५. °सुंदरीओ भारियाओ (ब, म, स)।

६. सं० पा०—कालगएहिं जाव पव्वइहिसि।

७. भ० ९।१७३।

८. कामभोगा असुई, असासया, वंतासवा, पित्तासवा, खेलासवा, सुक्कासवा, सोणियासवा (अ, ब, म, स)।

९. °दुरुय (अ, क, ब, स)।

१०. मद° (ता); मत° (ब)।

११. बीभत्था (ब)।

१२. लहुसगा (अ, क, ब, म)।

१३. °दुक्खबहुजण° (क, ता, ब, म)।

१४. साधुगरहणिज्जा (ता)।

अणंतससारवद्धणा, कडुगफलविवागा चुडल्लिव अमुच्चमाण[1], दुक्खाणुबंधिणो, सिद्धिगमणविग्घा। से केस ण जाणइ अम्मताओ! के पुव्वि गमणयाए? के पच्छा गमणयाए? त इच्छामि ण अम्मताओ[2]! °तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइत्तए॥

१७५ तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो एव वयासी—इमे य ते जाया! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुबहू हिरण्णे य[3], सुवण्णे य, कसे य, दूसे य, विउलधण-कणग[4]-°रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवालरत्तरयण°-सतसार-सावएज्जे, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवसाओ पकाम दाउ, पकाम भोत्तु, परिभाएउ, त अणुहोहि ताव जाया! विउले माणुस्सए इड्ढि-सक्कारसमुदए, तओ पच्छा अणुहूयकल्लाणे, वड्ढियकुलवस°ततुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइहिसि॥

१७६ तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एव वयासी—तहा वि ण त अम्मताओ! जण्ण तुब्भे मम एव वदह—इम च ते जाया! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए जाव[6] पव्वइहिसि, एव खलु अम्मताओ! हिरण्णे य, सुवण्णे य जाव सावएज्जे अग्गिसाहिए, चोरसाहिए, रायसाहिए, मच्चुसाहिए, दाइय-साहिए, अग्गिसामण्णे[7], °चोरसामण्णे, रायसामण्णे, मच्चुसामण्णे°, दाइय-सामण्णे, अधुवे, अणितिए, असासए, पुव्वि वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस ण जाणइ [8]°अम्मताओ! के पुव्वि गमणयाए, के पच्छा गमणयाए? त इच्छामि ण अम्मताओ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइत्तए॥

१७७ तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मताओ जाहे नो सचाएति विसयाणुलोमाहि बहूहि आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य, आघवेत्तए वा पण्णवेत्तए वा सण्णवेत्तए वा विण्णवेत्तए वा, ताहे विसयपडि-कूलाहि सजमभयुव्वेयणकरीहि[9] पण्णवणाहि पण्णवेमाणा एव वयासी—एव

१ इह प्रथमाबहुवचनलोपो दृश्य (वृ)।
२. स० पा०—अम्मताओ जाव पव्वइत्तए।
३. या (क, ता, ब, म) सर्वत्र।
४ स० पा०—कणग जाव सतसार°।
५ स० पा०—वड्ढियकुलवस जाव पव्वइहिसि।
६ भ० ९।१७५।
७. स० पा०-अग्गिसामण्णे जाव दाइयसामण्णे।
८ स० पा०—त चेव जाव पव्वइत्तए।
९ °भयुव्वेयक° (ता), भयुव्वेवणक° (व)।

खलु जाया ! निग्गथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवले[1] •पडिपुण्णे नेयाउए ससुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे अवितहे अविसंधि सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, एत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिनिवायति° सव्वदुक्खाण अत करेति ।

अहीव एगतदिट्ठीए, खुरो इव एगतधाराए, लोहमया जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निस्साए, गगा वा महानदी पडिसोयगमणयाए, महासमुद्दो वा भुयाहि दुत्तरो, तिक्ख कमियव्व, गरुय[2] लंबेयव्व, असिधारग वय चरियव्व ।

नो[3] खलु कप्पइ जाया ! समणाण निग्गंथाण अहाकम्मिए इ वा, उद्देसिए इ वा, मिस्सजाए[4] इ वा, अज्झोयरए[5] इ वा, पूइए इ वा, कीते इ वा, पामिच्चे इ वा, अच्छेज्जे इ वा, अणिसट्ठे इ वा, अभिहडे इ वा, कंतारभत्ते इ वा, दुब्भिक्खभत्ते इ वा, गिलाणभत्ते इ वा, वद्दलियाभत्ते इ वा, पाहुणगभत्ते इ वा, सेज्जायरपिंडे इ वा, रायपिंडे इ वा, मूलभोयणे इ वा, कदभोयणे इ वा, फलभोयणे इ वा, वीयभोयणे इ वा, हरियभोयणे इ वा, भोत्तए वा पायए वा ।

तुम सि च ण जाया ! सुहसमुचिए नो चेव ण दुहसमुचिए, नाल सीय, नाल उण्ह, नाल खुहा, नाल पिवासा, नालं चोरा, नाल वाला, नाल दसा, नाल मसगा, नाल वाइय-पित्तिय-सेभिय-सन्निवाइए विविहे रोगायके, परिस्सहोवसग्गे उदिण्णे अहियासित्तए । त नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुब्भं खणमवि विप्पयोग, त अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अम्हे जीवामो तओ पच्छा अम्हेहिं[6] •कालगएहि समाणेहि परिणयवए, वड्ढियकुलवसततुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइहिसि ॥

१३८. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एव वयासी—तहा वि ण त अम्मताओ[7] ! जण्ण तुब्भे मम एव वदह— एव खलु जाया ! निग्गथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवले त चेव जाव[8] पव्वइहिसि, एव खलु अम्मताओ ! निग्गंथे पावयणे कीवाण कायराण कापुरिसाण इहलोगपडिबद्धाण परलोगपरम्मुहाण विसयतिसियाण दुरणुचरे पागयजणस्स, धीरस्स निच्छियस्स ववसियस्स नो खलु एत्थ किंचि वि दुक्कर करणयाए, तं इच्छामि ण अम्मताओ ! तुब्भेहिं

---

१. [illegible]
२. [illegible]
३. [illegible]
४. [illegible]
५. उज्झो° (अ, म)।
६. म० पा०—अम्हेहिं जाव पव्वइहिसि ।
७. अम्मयाओ (अ, म) ।
८. [illegible]

अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स[1] •अंतिय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ॥

१७९ तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो जाहे नो सचाएंति विसयाणुलोमाहि य, विसयपडिकूलाहि य बहूहि आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवेत्तए वा[2] •पण्णवेत्तए वा सण्णवेत्तए वा° विण्णवेत्तए वा, ताहे अकामाइ चेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स निक्खमण अणुमण्णित्था ॥

१८०. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! खत्तियकुडग्गाम नयर सब्भितरबाहिरिय आसिय-सम्मज्जिओवलित्त जहा ओववाइए जाव[3] सुगधवरगधगधिय गधवट्टिभूय करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणति ॥

१८१ तए ण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया दोच्च पि कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स महत्थ महग्घ महरिह विपुल निक्खमणाभिसेय उवट्ठवेह । तए ण ते कोडुवियपुरिसा तहेव जाव उवट्ठवेंति[4] ॥

१८२ तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुह निसीयावेंति, निसीयावेत्ता अट्ठसएणं सोवण्णियाण कलसाण, •[5]अट्ठसएण रुप्पमयाण कलसाणं, अट्ठसएण मणिमयाणं कलसाण, अट्ठसएण सुवण्णरुप्पामयाण कलसाण, अट्ठसएण सुवण्णमणिमयाण कलसाण, अट्ठसएण रुप्पमणिमयाण कलसाण, अट्ठसएण सुवण्णरुप्पमणिमयाण कलसाण°, अट्ठसएण भोमेज्जाण कलसाण सव्विड्ढीए[6] •सव्वजुतीए सव्ववलेण सव्वसमुदएण सव्वादरेण सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसभमेण सव्वपुप्फगधमल्लालकारेण सव्वतुडियसद्द-सण्णिणाएण महया इड्ढीए महया जुईए महया वलेण महया समुदएण महया वरतुडिय-जमगसमग-प्पवाइएण संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुइग-दुदुहि-णिग्घोसणाइय° रवेण महया-महया निक्खमणाभिसेगेण अभिसिंचति, अभिसिचित्ता करयल[7] •परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त

---

१. स० पा०—महावीरस्स जाव पव्वइत्तए ।
२. स० पा०—वा जाव विण्णवेत्तए ।
३. ओ० सू० ५५ ।
४. पच्चप्पिणति (ज, क, ता, व, म, स), नायाधम्मकहाओ (१।१।११६, ११७) सूत्रानुसारेण एतत्पद स्वीकृतम् । 'पच्चप्पिणति' इति पद अत्र नावश्यक प्रतिभाति ।
५ सं० पा०—एव जहा रायप्पसेणइज्जे जाव अट्ठसएण ।
६ स० पा०—सविड्ढीए जाव रवेण ।
७ स० पा०—करयल जाव जएणं ।

१९१. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं, लील-ट्ठियसालभंजियागं जहा रायप्पसेणइज्जे विमाणवण्णओ जाव[1] मणिरयणघंटिया-जालपरिक्खित्तं[2] पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाण-त्तियं पच्चप्पिणह । तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति ॥

१९२. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे केसालंकारेणं, वत्थालंकारेणं, मल्लालंकारेणं, आभरणालंकारेणं—चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकारिए समाणे पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणे सीयं दुरुहइ[3], दुरुहित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥

१९३. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माता ण्हाया कयबलिकम्मा जाव[4] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा हंसलक्खणं पडसाडगं गहाय सीयं अणुप्पदा-हिणीकरेमाणी सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणे पासे भद्दासणवरंसि सण्णिसण्णा ॥

१९४ तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मधाती ण्हाया कयबलिकम्मा जाव[5] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा रयहरणं पडिग्गहं च गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स वामे पासे भद्दासणवरंसि सण्णिसण्णा ॥

१९५. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरुणी सिंगारागार-चारुवेसा संगय-गय[6]-●हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउण-जुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण●-रूव-जोव्वण-विलासकलिया[7] सरदब्भ[8]-हिम-रयय-कुमुद-कुंदेंदुप्पगासं सकोरेंटमल्ल-दामं धवलं आयवत्तं गहाय सलील 'ओधरेमाणी-ओधरेमाणी'[9] चिट्ठति ॥

---

१. राय० सू० १३ ।

२. [illegible] पुनरुक्त वर्णक [illegible] एव (वृ) ।

३. दुरूहइ (क, ता, ब) ।

४. भ० ९।१३३ ।

५. भ० ९।१३३ ।

६. [illegible]

७. [illegible] (अ, क, ता, ब); [illegible] 'विलासकलिया' इति पदस्याग्रे [illegible] विद्यते, किन्तु [illegible] इति पदस्यासौ विद्यमानोस्ति, तेन नात्र युज्यते । वृत्तिकृतापि [illegible]पदानन्तरमसौ पाठः स्वीकृत, किन्तु एतस्मिन् स्वीकारे पाठस्य पुनरुक्तिर्जायते, यथा—'रूवजोव्वणविलासकलिया' सुन्दरथण-जघणवयणकरचरणणयणलावण्णरूवजोव्वणगुणोववेय' त्ति सूचितम् (वृ), अस्माभिः पाठानुसन्धानप्रयुक्ते प्रतिद्वये एष पाठ नास्ति । एषा वाचना सम्यक् प्रतीयते ।

८. ४ (अ, ब, क, म) ।

९. [illegible] (अ), [illegible]धरेमाणीओ २ (म) ।

१९६ तए ण तस्स जमालिस्स (खत्तियकुमारस्स ?) उभओ पासिं दुवे वरतरुणीओ सिंगारागार[1]•चारुवेसाओ सगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-सलाव-निउणजुत्तोवयारकुसलाओ सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास°कलियाओ नाणामणि-कणग-रयण-विमलमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदडाओ, चिल्लियाओ, सखक-कुद-दगरय-अमय-महिय-फेणपुजसण्णिकासाओ धवलाओ चामराओ[2] गहाय सलील वीयमाणीओ-वीयमाणीओ चिट्ठति ॥

१९७. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स उत्तरपुरत्थिमे ण एगा वरतरुणी सिंगारागार[3]•चारुवेसा सगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-सलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला सुदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास°कलिया सेत रययामय विमलसलिलपुण्ण मत्तगयमहामुहाकितिसमाण भिंगार गहाय चिट्ठइ ॥

१९८ तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणपुरत्थिमे ण एगा वरतरुणी सिंगारागार[4]•चारुवेसा सगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-सलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला सुदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास°कलिया चित्तकणगदड तालवेंट गहाय चिट्ठइ ॥

१९९. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सरिसय सरित्तय सरिव्वय सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेय, एगाभरणवसण[5]-गहियनिज्जोय कोडुबियवरतरुणसहस्स सद्दावेह ॥

२०० तए ण ते कोडुबियपुरिसा जाव[6] पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सरिसय सरित्तय[7] •सरिव्वय सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेय एगाभरणवसण-गहियनिज्जोय कोडुबियवरतरुणसहस्स° सद्दावेति ॥

२०१ तए ण ते कोडुबियवरतरुणपुरिसा[8] जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मगल-पायच्छित्ता एगाभरणवसण-गहियनिज्जोया जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल[9]•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त

---

१. स० पा०—सिंगारागार जाव कलिया ।
२. सेयवरचामराओ (क) ।
३. स० पा०—सिंगारागार जाव कलिया ।
४. स० पा०—सिंगारागार जाव कलिया ।
५ एगारसभरण° (अ) ।
६ भ० ९।१८५ ।
७ स० पा०—सरित्तय जाव सद्दावेंति ।
८ अस्मिन् पदे 'वरतरुण' इति पाठ नायाधम्मकहाओ (१।१।१८०) सूत्रानुसारेण स्वीकृत ।
९. स० पा०—करयल जाव वद्धावेत्ता ।

मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, ° वद्धावेत्ता एवं वयासी—संदि-
सतु णं देवाणुप्पिया ! जं अम्हेहिं करणिज्जं ।।

२०२ तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं[1] एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ण्हाया कय[2]°बलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता एगाभरणवसण°-गहियनिज्जोया जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीयं परिवहेह ।।

२०३ तए णं ते कोडुंबियवरतरुणपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ता समाणा जाव[3] पडिसुणेत्ता ण्हाया जाव[4] एगाभरणवसण-गहियनिज्जोगा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीयं परिवहंति ।।

२०४. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, तं जहा—सोत्थिय-सिरिवच्छ[5]-°णंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ°-दप्पणा।
तदाणंतरं च णं पुण्णकलसभिंगारं[6],°दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दंसण-रइय-आलोय-दरिसणिज्जा, वाउद्धय-विजयवेजयंती य ऊसिया°गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।
°तदाणंतरं च णं वेरुलिय-भिसंत-विमलदंडं पलंबकोरंटमल्लदामोवसोभियं चंदमंडलणिभं समूसियं विमलं आयवत्तं, पवरं सीहासणं वरमणिरयणपाद-पीढं सपाउयाजोयसमाउत्तं बहुकिंकर-कम्मकर-पुरिस-पायत्त-परिक्खित्तं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं ।
तदाणंतरं च णं बहवे लट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा चामरग्गाहा पासग्गाहा चावग्गाहा पोत्थयग्गाहा फलगग्गाहा पीढग्गाहा वीणग्गाहा कूवग्गाहा हडप्पग्गाहा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।
तदाणंतरं च णं बहवे दंडिणो मुंडिणो सिहंडिणो जडिणो पिंछिणो हासकरा डमरकरा दवकरा चाडुकरा कंदप्पिया कोक्कुइया किड्डकरा य वायंता य गायंता य णच्चंता य हसंता य भासंता य सावेंता य रक्खंता य° आलोयं च करेमाणा जय-जय सद्दं पउंजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।

१ °सहस्सं त्ति (अ, क, ख, म, स) ।
२ सं० पा०—[illegible] ।
३ [illegible] ।
४ [illegible] ।
५ [illegible] ।
६ [illegible], अनेन च यदुक्तं तद्वाचनान्तरे साक्षादेवा-स्ति (वृ) ।
७ सं० पा०—एवं जहा ओववाइए तहेव भाणि-यव्वं जाव आलोयं, एतच्च वाचनान्तरे साक्षादुक्तमस्ति (वृ), वृत्तिकृता [illegible] नान्तरे अधिकपाठस्यापि सूचना कृतास्ति ।

तदाणतर च ण वहवे उग्गा भोगा खत्तिया इक्खागा नाया कोरव्वा जहा ओव-वाइए जाव[1] महापुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ य मग्गतो य पासओ य अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया ॥

२०५. तए ण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया ण्हाए कयवलिकम्मे[2] •कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सव्वालकार॰ विभूसिए हत्थिक्खधवरगए सकोरेंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवरचामराहि उद्धुव्वमाणीहिं-उद्धुव्वमाणीहि हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडे महयाभडचडगर-विदपरिक्खित्ते[3] 'जमालि खत्तियकुमार'[4] पिट्ठओ अणुगच्छइ ॥

२०६ तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ मह आसा आसवरा[5], उभओ पासि नागा नागवरा, पिट्ठओ रहा, रहसगेल्ली ॥

२०७ तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अब्भुग्गतभिगारे, परिग्गहियतालियटे[6], ऊस-वियसेतछत्ते, पवीइयसेतचामरवालवीयणीए, सव्विड्ढीए जाव[7] दुदहि-णिग्घोस-णादितरवेण[8] खत्तियकुडग्गाम नयर मज्झमज्झेण जेणेव माहणकुडग्गामे नयरे, जेणेव वहुसालए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव पाहारेत्थ गमणाए ॥

२०८. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स खत्तियकुडग्गाम नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छमाणस्स सिघाडग-तिय-चउक्क[9]-•चच्चर-चउम्मुह-महापह॰ पहेसु वहवे अत्थत्थिया[10]•कामत्थिया भोगत्थिया लाभत्थिया किव्विसिया कारोडिया कारवाहिया सखिया चक्किया नगलिया मुहमगलिया वद्धमाणा पूसमाणया खडियगणा ताहि इट्ठाहि कताहि पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि मणाभिरामाहि हिययगमणिज्जाहि वग्गूहि जयविजयमगलसएहि अणवरय॰ अभिनदता य अभि-त्थुणता य एव वयासी—जय-जय नदा! धम्मेण, जय-जय नदा! तवेण, जय-

---

१. ओ० सू० ५२ ।

२ स० पा०—कयवलिकम्मे जाव विभूसिए ।

३ ॰गर जाव परिक्खित्ते (अ, क, ता, व, म, स) ।

४. जमालिस्स खत्तियकुमारस्स (अ, स) ।

५ आसवारा (वृपा) ।

६. ॰तालयटे (क, ता) ।

७. भ० ९।१८२ ।

८. अतोग्रे 'अ, व, म, स' इति सकेतितेषु आदर्शेषु एतावान् अधिक पाठो लभ्यते— 'तदाणतर च ण वहवे लट्ठिग्गाहा कुतग्गाहा जाव पुत्थयग्गाहा जाव वीणग्गाहा, तदाण-तर च ण अट्ठसय गयाण, अट्ठसय तुरयाण, अट्ठसय रहाण, तदाणतर च ण लउड-असि-कोतहत्थाण वहूण पायत्ताणीण पुरओ सप-ट्ठिय, तदाणतर च ण वहवे राईसर-तलवर जाव सत्थवाहप्पभियओ पुरओ सपट्ठिया ।' असौ पाठ अत्र पूर्ववर्ती विद्यते । लिपिदोषेण प्रमादेन वा अत्र प्रवेश. प्राप्त: । प० वेचर-दाससम्पादितभगवत्यामपि इत्थमेव अस्ति ।

९. स० पा०—चउक्क जाव पहेसु ।

१० स० पा०—जहा ओववाइए जाव अभिनदता

जय नंदा! भद्दं ते[1] अभग्गेहिं[2] नाण-दंसण-चरित्तेहिमुत्तमेहिं[3], अजियाइं जिणाहि इंदियाइं, जियं पालेहि समणधम्मं, जियविग्घो वि य वसाहि तं देव! सिद्धिमज्झे, निहणाहि य रागदोसमल्ले तवेण धितिधणियबद्धकच्छे, मद्दाहि य अट्ठ कम्मसत्तू झाणेणं उत्तमेणं सुक्केणं, अप्पमत्तो हराहि आराहणपडागं च धीर! तेलोक्करंगमज्झे, पावय वितिमिरमणुत्तरं केवलं च नाणं, गच्छ य मोक्खं परं पदं जिणवरोवदिट्ठेण सिद्धिमग्गेण अकुडिलेण हंता परीसहचमूं अभिभविय[4] गामकंटकोवसग्गा णं, धम्मे ते अविग्घमत्थु त्ति कट्टु अभिनंदंति य अभिथुणंति य॥

२०९. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे नयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे-पेच्छिज्जमाणे [5]•हिययमालासहस्सेहिं अभिणंदिज्जमाणे-अभिणंदिज्जमाणे मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे-विच्छिप्पमाणे वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे-अभिथुव्वमाणे कंतिसोहग्गगुणेहिं पत्थिज्जमाणे-पत्थिज्जमाणे बहूणं नरनारिसहस्साणं दाहिणहत्थेणं अंजलिमालासहस्साइं पडिच्छमाणे-पडिच्छमाणे मंजुमंजुणा घोसेणं आपडिपुच्छमाणे-आपडिपुच्छमाणे भवणपतिसहस्साइं समइच्छमाणे-समइच्छमाणे खत्तियकुंडग्गामे नयरे मज्झंमज्झेणं° निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादीए तित्थगरातिसए पासइ, पासित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं ठवेइ, पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहइ॥

२१०. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो[6] •आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते! जमाली खत्तियकुमारे अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते[7] •पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणब्भूए जीविऊसविए हिययनंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए°, किमंग! पुण पासणयाए? से जहानामए उप्पले इ वा, पउमे इ वा जाव[8] सहस्सपत्ते इ वा पंके जाए जले संवुड्ढे नोवलिप्पति पंकरएणं, नोवलिप्पति जलरएणं, एवामेव जमाली वि खत्तियकुमारे कामेहिं जाए, भोगेहिं संवुड्ढे

---

1. [illegible] (व)।
2. [illegible] (ब)।
3. [illegible] (अ, क, ख, म), चरित्तमु[illegible]।
4. [illegible] (अ, क, ख), [illegible] (ग), [illegible] (ब)।
5. स० पा०—एवं जहा ओववाइए कूणिओ जाव निग्गच्छइ।
6. स० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता।
7. स० पा०—कंते जाव किमंग।
8. ओ० सू० १५०।

नोवलिप्पति कामरएणं, नोवलिप्पति भोगर
णियग-सयण-सबधि-परिजणेण । एस ण देवाण
जम्मण-मरणेण, इच्छइ[1] देवाणुप्पियाण अतिए
रिय पव्वइत्तए[2] । त एय ण देवाणुप्पियाण अम
च्छतु ण देवाणुप्पिया ! सीसभिक्ख ॥

२११ 'तए ण समणे भगव महावीरे जमालि खत्तियकु
देवाणुप्पिया ! मा पडिबध ॥

२१२ तए ण से जमाली खत्तियकुमारे समणेण भगवय
हट्ठतुट्ठे समण भगव महावीर तिक्खुत्तो' •आ
वदइ नमसइ, वदित्ता° नमसित्ता उत्तरपुर
अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्लालंकार ओमु

२१३ तए ण सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हस
मल्लालकार पडिच्छइ, पडिच्छित्ता हार-वारि
प्पगासाइ असूणि° विणिम्मुयमाणी-विणिम्मु
एव वयासी—'जइयव्व जाया ! घडियव्व' जा
अस्सि च ण अट्ठे णो पमाएतव्व त्ति कट्टु जमा
पियरो समण भगव महावीर वदति नमसति,
पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ॥

२१४. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे सयमेव पचमुट्ठि
समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, '•उवाग
तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता व
एव वयासी—आलित्ते ण भते ! लोए, पलित्ते
पलित्ते ण भते ! लोए जराए मरणेण य ।

---

१. × (अ, क, ता, ब, म, स) ।

२. पव्वतेति (अ), पव्वयति (क); पव्वइतइ (ता), पव्वतिति (ब); पव्वतित (म), पव्वतिते (स) अत्र 'इच्छइ, पव्वइत्तए' एते द्वे अपि पदे नायाधम्मकहाओ (१।१।१४५) सूत्रस्याधारेण स्वीकृते स्त. । सर्वेषु अपि आदर्शेषु लिपिदोषेण पाठपरिवर्तन जातम् । तन्मध्यवर्तिपाठाना नहि कश्चिदर्थोऽवगम्यते ।

३ × (अ,

४ स० पा०—

५ स० पा०—

६ घडियव्व
म, स) ।

७ स० पा०—
दर्जा नवर
जाव ।

से जहानामए केइ गाहावई अगारसि भियायमाणसि जे से तत्थ भडे भवइ अप्पभारे मोल्लगरुए, त गहाय आयाए एगतमत अवक्कमइ। एस मे नित्थारिए समाणे पच्छा पुरा य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ।

एवामेव देवाणुप्पिया! मज्झ वि आया एगे भडे इट्ठे कते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेस्सासिए सम्मए वहुमए अणुमए भडकरडगसमाणे, मा ण सीय, मा ण उण्ह, मा ण खुहा, मा ण पिवासा, मा ण चोरा, मा ण वाला, मा ण दसा, मा ण मसया, मा ण वाइय-पित्तिय-सेभिय-सन्निवाइय विविहा रोगायका परीसहोवसग्गा फुसतु त्ति कट्टु एस मे नित्थारिए समाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नीसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ।

त इच्छामि ण देवाणुप्पिया! सयमेव पव्वाविय, सयमेव मुडाविय, सयमेव सेहाविय, सयमेव सिक्खाविय, सयमेव आयार-गोयर विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तिय धम्ममाइक्खिय॥

२१५. तए ण समणे भगव महावीरे जमालि खत्तियकुमार पचहि पुरिससएहि सद्धि सयमेव पव्वावेइ° जाव[1] सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता वहूहि चउत्थ-छट्ठट्ठम[2]-•दसम-दुवालसेहि° मासद्ध-मासखमणेहि विचित्तेहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे विहरइ॥

२१६. तए ण से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे पचहि अणगार-सएहि सद्धि वहिया जणवयविहार विहरित्तए॥

२१७. तए ण समणे भगव महावीरे जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठ नो आढाइ, नो परिजाणइ, तुसिणीए सचिट्ठइ॥

२१८. तए ण से जमाली अणगारे समण भगव महावीर दोच्च पि तच्च पि एव वयासी—इच्छामि ण भते! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे पचहि अणगारसएहि सद्धि[1] •वहिया जणवयविहार° विहरित्तए॥

२१९. तए ण समणे भगव महावीरे जमालिस्स अणगारस्स दोच्च पि, तच्च पि एयमट्ठ नो आढाइ[2], •नो परिजाणइ°, तुसिणीए सचिट्ठइ।

२२०. तए ण से जमाली अणगारे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता समणस्स [illegible]

पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पर्चाहि अणगारसएहि सद्धि वहिया जणवय-विहार विहरइ ॥

२२१ तेण कालेण तेण समएण सावत्थी नाम नयरी होत्था—वण्णओ[1], कोट्ठए चेइए—वण्णओ जाव[2] वणसडस्स । तेण कालेण तेण समएण चंपा नाम नयरी होत्था—वण्णओ[3] । पुण्णभद्दे चेइए—वण्णओ जाव[4] पुढविसिलापट्टओ ॥

२२२ तए ण से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ पर्चाहि अणगारसएहि सद्धि सपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुग्गाम दुइज्जमाणे जेणेव सावत्थी नयरी जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

२२३. तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे[5] •गामाणुग्गाम दूइज्जमाणे° सुहसुहेण विहरमाणे जेणेव चपा नयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गह ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

२२४ तए ण तस्स जमालिस्स अणगारस्स तेहि 'अरसेहि य'[6], विरसेहि य अतेहि य, पतेहि य, लूहेहि य, तुच्छेहि य, कालाइक्कतेहि य, पमाणाइक्कतेहि य[7] पाण-भोयणेहि अण्णया कयाइ सरीरगसि विउले रोगातके पाउब्भूए—उज्जले विउले[8] पगाढे कक्कसे कडुए चडे दुक्खे दुग्गे तिव्वे दुरहियासे । पित्तज्जरपरि-गतसरीरे, दाहवक्कतिए[9] या वि विहरइ ॥

२२५ तए ण से जमाली अणगारे वेयणाए अभिभूए समाणे समणे निग्गथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! मम सेज्जा-सथारग सथरह ॥

२२६ तए ण ते समणा निग्गथा जमालिस्स अणगारस्स एतमट्ठ विणएणं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जमालिस्स अणगारस्स सेज्जा-सथारग सथरति ॥

२२७ तए ण से जमाली अणगारे वलियतर वेदणाए अभिभूए समाणे दोच्च पि समणे निग्गथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—मम[10] ण देवाणुप्पिया ! सेज्जा-सथारए कि कडे ? कज्जइ ?

तते ण ते समणा निग्गथा जमालि अणगार एव वयासी—नो खलु देवाणुप्पियाण सेज्जा-सथारए कडे, कज्जइ ॥

---

१ ओ० सू० १ ।
२. ओ० सू० २-१३ ।
३ ओ० सू० १ ।
४ ओ० सू० २-१३ ।
५ स० पा०—चरमाणे जाव सुहसुहेण ।
६ अरसेहि या (क, ता, व) सर्वत्र ।
७ य सीओएहि य (अ), य सीएहि (व); य सीतेहि य (स) ।
८. वितुले (व, म); तिउले (स, वृ); विउले (वृपा) ।
९. दाहवुक्कतिए (व) ।
१०. मम (ज, स) ।

२२८. तए ण तस्स जमालिस्स अणगारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए' •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—जण्ण समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ जाव' एव परूवेइ—एव खलु चलमाणे चलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए', •वेदिज्जमाणे वेदिए, पहिज्जमाणे पहीणे, छिज्जमाणे छिण्णे, भिज्जमाणे भिण्णे, दज्झमाणे दड्ढे, मिज्जमाणे मए°, निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे, तण्ण मिच्छा। इम च ण पच्चक्खमेव दीसइ सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असथरिए। जम्हा ण सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असथरिए। तम्हा चलमाणे वि अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे वि अनिज्जिण्णे—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता समणे निग्गथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—जण्ण देवाणुप्पिया! समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ – एव खलु चलमाणे चलिए '•जाव निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे, तण्ण मिच्छा। इम च ण पच्चक्खमेव दीसइ सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असथरिए। जम्हा ण सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असथरिए। तम्हा चलमाणे वि अचलिए° जाव निज्जरिज्जमाणे वि अनिज्जिण्णे॥

२२९. तए ण तस्स जमालिस्स अणगारस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स अत्थेगतिया समणा निग्गथा एयमट्ठ सद्दहति पत्तियति रोयति, अत्थेगतिया समणा निग्गथा एयमट्ठ नो सद्दहति नो पत्तियति नो रोयति। तत्थ ण जे ते समणा निग्गथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठ सद्दहति पत्तियति रोयति, ते ण जमालि चेव अणगार उवसपज्जित्ता णं विहरति। तत्थ ण जे ते समणा निग्गथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठ नो सद्दहति नो पत्तियति नो रोयति, ते ण जमालिस्स अणगारस्स अतियाओ कोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्वि चरमाणा गामाणुगाम दूइज्जमाणा जेणेव चपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेंति, करेत्ता वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता समण भगव महावीर उवसपज्जित्ता ण विहरति॥

२३०. तए णं से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ' ताओ रोगायकाओ विप्पमुक्के हट्ठे जाए, अरोए बलियसरीरे सावत्थीओ नयरीओ कोट्ठयाओ चेइयाओ

पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे, माणे जेणेव चपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव स तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ म ठिच्चा समण भगव महावीर एव वयासी—जहा ण देवाणु वासी समणा निग्गथा छउमत्थावक्कमणेण[1] अवक्कता, छउमत्थावक्कमणेण[2] अवक्कते, अह ण उप्पन्ननाण-दस केवली भवित्ता केवलिअवक्कमणेण अवक्कते ॥

२३१. *तए ण भगव गोयमे* जमालि *अणगार* एव *वयासी—नो ख* लिस्स नाणे वा दसणे वा सेलसि वा 'थभसि वा'[3] थूभसि निवारिज्जइ वा, जदि ण तुम जमाली ! उप्पन्ननाण-द केवलि भवित्ता केवलिअवक्कमणेण अवक्कते, तो ण वागरेहि—सासए लोए जमाली ! असासए लोए जम *जमाली ! असासए जीवे जमाली ?*

२३२ तए ण से जमाली अणगारे भगवया गोयमेण एव वुत्ते स •वितिगिच्छिए भेदसमावण्णे° कलुससमावण्णे जाए सचाएति भगवओ गोयमस्स किचि वि पमोक्खमाइक्खित्तए,

२३३ जमालीति ! समणे भगव महावीरे जमालि अणगार एव जमाली ! मम बहवे अतेवासी समणा निग्गथा छउम वागरण वागरित्तए, जहा ण अह, नो चेव[5] ण एतप्पगार ण तुम।

सासए लोए जमाली[6] ! ज न कयाइ नासि, न कयाइ न भविस्सइ—भुवि च, भवइ य, भविस्सइ य—धुवे, निति अव्वए, अवट्ठिए निच्चे ।

असासए लोए जमाली ! ज ओसप्पिणी भवित्ता उस्सप्पिण भवित्ता ओसप्पिणी भवइ ।

सासए जीवे जमाली ! ज न कयाइ नासि[7], •न कयाइ न भविस्सइ—भुवि च, भवइ य, भविस्सइ य—धुवे, निति अव्वए, अवट्ठिए° निच्चे ।

---

१ छउमत्था भवेत्ता छउमत्था° (अ, क, म, स)   ५ च्चेव (ता) ।
२. छउमत्था भवेत्ता छउमत्था° (अ, क, म, स)   ६ × (क, ता
३ × (अ, व, म) ।   ७ स० पा०—
४. स० पा०—कखिए जाव कलुस° ।

असासए जीवे जमाली ! जण्ण नेरइए भवित्ता तिरिक्खजोणिए भवइ, तिरिक्खजोणिए भवित्ता मणुस्से भवइ, मणुस्से भवित्ता देवे भवइ ॥

२३४. तए ण से जमाली अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव[1] एव परूवेमाणस्स एतमट्ठ नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एतमट्ठ असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे दोच्च पि समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ आयाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता बहूहि असब्भावुब्भावणाहि मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाण च पर च तदुभय च वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे बहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसेत्ता तीस भत्ताइ अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता तस्स ठाणस्स[2] अणालोइयपडिक्कते कालमासे काल किच्चा लतए कप्पे तेरससागरोवमठितीएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने ॥

२३५. तए ण भगव गोयमे जमालि अणगार कालगय जाणित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी कुसिस्से जमाली नाम अणगारे से ण भते ! जमाली अणगारे कालमासे काल किच्चा कहि गए ? कहि उववन्ने ?

गोयमादी ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी—एवं खलु गोयमा ! मम अतेवासी कुसिस्से जमाली नाम अणगारे, से ण तदा मम एवमाइक्खमाणस्स एव भासमाणस्स एव पण्णवेमाणस्स एव परूवेमाणस्स एतमट्ठ नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एतमट्ठ असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे, दोच्च पि मम अतियाओ आयाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता बहूहि असब्भावुब्भावणाहि [3]°मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाण च पर च तदुभय च वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे बहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता, अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेत्ता, तीस भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालमासे काल किच्चा लतए कप्पे तेरससागरोवमठितीएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु° देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने ॥

२३६. कतिविहा ण भते ! देवकिब्बिसिया पण्णत्ता ?

गोयमा ! तिविहा देवकिब्बिसिया पण्णत्ता, त जहा—तिपलिओवमट्ठिइया, तिसागरोवमट्ठिइया, तेरससागरोवमट्ठिइया ॥

२३७. कहि ण भते ! तिपलिओवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसति ?

---

१. [illegible]।

२. [illegible] (ता स, म)।

३. म० पा०—त चेव जाव दे०।

गोयमा ! उप्पिं जोइसियाण, हिट्ठिं[1] सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु, एत्थ ण तिपलिओवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसति ॥

२३८ कहिं ण भते ! तिसागरोवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसति ?
गोयमा ! उप्पि सोहम्मीसाणाण कप्पाण, हिट्ठि सणकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु, एत्थ ण तिसागरोवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसति ॥

२३९. कहिं ण भते ! तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसति ?
गोयमा ! उप्पि बभलोगस्स कप्पस्स, हिट्ठि लतए कप्पे, एत्थ ण तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिव्विसिया देवा परिवसति ॥

२४० देवकिव्विसिया ण भते ! केसु कम्मादाणेसु देवकिव्विसियत्ताए उववत्तारो भवति ?
गोयमा ! जे इमे जीवा आयरियपडिणीया, उवज्झायपडिणीया, कुलपडिणीया, गणपडिणीया, सघपडिणीया, आयरिय-उवज्झायाण अयसकारा[2] अवण्णकारा अकित्तिकारा वहूहि असब्भावुब्भावणाहि, मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाण पर च तदुभय च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा वहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कता कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु देवकिव्विसिएसु देवकिव्विसियत्ताए उववत्तारो भवति, त जहा—तिपलिओवमट्ठितिएसु वा, तिसागरोवमट्ठितिएसु वा, तेरससागरोवमट्ठितिएसु वा ॥

२४१. देवकिव्विसिया ण भते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएण, 'भवक्खएण, ठितिक्खएण'[3] अणतर चय चइत्ता कहिं गच्छति ? कहिं उववज्जति ?
गोयमा ! जाव चत्तारि पच नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइ ससार अणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झति वुज्झति[4] •मुच्चति परिणिव्वायति सव्वदुक्खाण° अत करेति, अत्थेगतिया अणादीय अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत ससारकतार अणुपरियट्टति ॥

२४२ जमाली ण भते ! अणगारे अरसाहारे विरसाहारे अताहारे पताहारे लूहाहारे तुच्छाहारे अरसजीवी विरसजीवी[5] •अतजीवी पतजीवी लूहजीवी° तुच्छजीवी उवसतजीवी पसतजीवी विवित्तजीवी ?
हता गोयमा ! जमाली ण अणगारे अरसाहारे विरसाहारे जाव विवित्तजीवी ॥

२४३ जति ण भते ! जमाली अणगारे अरसाहारे विरसाहारे जाव विवित्तजीवी

---

१ [हिट्ठि] (ता) सर्वत्र, हिट्ठि (म) ।
२. °करा (अ, स), सर्वत्र, अयसकारगा (वृ) ।
३ ठितिक्खएण भवक्खएण (ता) ।
४. स० पा०—वुज्झति जाव अत ।
५ स० पा०—विरसजीवी जाव तुच्छजीवी ।

कम्हा णं भंते ! जमाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरस-सागरोवमट्ठितिएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने ?
गोयमा ! जमाली णं अणगारे आयरियपडिणीए, उवज्झायपडिणीए, आयरिय-उवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए[1] •अकित्तिकारए बहूहिं असब्भावुब्भा-वणाहिं, मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणे° वुप्पाएमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, अद्धमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे[2] •तेरससागरोवमट्ठितिएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए° उववन्ने ॥

२४४. जमाली णं भंते ! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं[3] •भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? °कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! चत्तारि पंच तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइं संसारं अणु-परियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झिहिति[4] •बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं° अंतं काहिति ॥

२४५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[5] ॥

चोत्तीसइमो उद्देसो

एगस्स वधे अणेगवध-पदं

२४६. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव[6] एवं वयासी—पुरिसे णं भंते ! पुरिसं हणमाणे किं पुरिसं हणइ[7] ? नोपुरिसे हणइ ?
गोयमा ! पुरिसं पि हणइ, नोपुरिसे वि हणइ ॥

२४७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—पुरिसं पि हणइ, नोपुरिसे वि हणइ ?

---

१. सं० पा०—अकित्तिकारए जाव वुप्पाएमाणे ।
२. सं० पा०—कप्पे जाव उववन्ने ।
३. सं० पा०—[illegible] जाव कहिं ।
४. सं० पा०—सिज्झिहिति जाव अंतं ।
५. भ० १।५१ ।
६. भ० १।४-१० ।
७. हणइ (ता) ।

गोयमा ! तस्स ण एव भवइ—एव खलु अह एग पुरिस हणामि, से ण एग पुरिस हणमाणे 'अणेगे जीवे'[1] हणइ। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—पुरिस पि हणइ, नोपुरिसे वि हणइ ॥

२४८ पुरिसे ण भते ! आस हणमाणे कि आस हणइ ? नोआसे[2] हणइ ?
गोयमा ! आस पि हणइ, नोआसे वि हणइ ॥
से केणट्ठेण ?
अट्ठो तहेव। एव हत्थि, सीह, वग्घ जाव[3] चिल्ललग[4] ॥

इसिस्स वधे अणंतवध-पद

२४९ पुरिसे ण भते ? इसि हणमाणे कि इसि हणइ ? नोइसि हणइ ?
गोयमा ! इसिं पि हणइ, नोइसिं पि हणइ ॥

२५० से केणट्ठेण भते ? एव वुच्चइ[5]—°इसिं पि हणइ,° नोइसिं पि हणइ ?
गोयमा ! तस्स ण एव भवइ—एव खलु अह एग इसिं हणामि, से णं एग इसिं हणमाणे 'अणते जीवे'[6] हणइ। से तेणट्ठेण '°गोयमा ! एव वुच्चइ—इसिं पि हणइ, नोइसिं पि हणइ° ॥

वेर-बंध-पदं

२५१. पुरिसे ण भते ! पुरिस हणमाणे कि पुरिसवेरेण पुट्ठे ? 'नोपुरिसवेरेण पुट्ठे ?'[8]
गोयमा ! नियम–ताव पुरिसवेरेण पुट्ठे, अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिसवेरेण य

---

१ अणेगा जीवा (अ, क, ता, म, स)।
२ नोआस (व), नोआसे वि (म)।
३. प० १।
४ चित्तलग (व), अतोग्रे 'क, ता, व' एषु—'एते सव्वे इक्कगमा' इति पाठोस्ति, 'अ, व, म, स'—एतेषु आदर्शेषु 'चिल्ललग इति पाठानन्तर एष पाठोस्ति—'पुरिसे ण भते ! अण्णयर तस पाण हणमाणे कि अण्णयर तस पाण हणइ, नोअण्णतरे तसे पाणे हणइ ? गोयमा ! अण्णयर पि तस पाण हणइ, नोअण्णतरे वि तसे पाणे हणइ। से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अण्णयरं पि तस पाण, हणइ नोअण्णयरे वि तसे पाणे हणइ ? गोयमा ! तस्स ण एव भवइ—एव खलु अह एग अण्णयर तस पाण हणामि, से ण एग अण्णयर तस पाण हणमाणे अणेगे जीवे हणइ। से तेणट्ठेण गोयमा ! त चेव। एए सव्वे वि एक्कगमा'। वृत्तावपि नास्तीद व्याख्यात, अतोस्माभिरसौ पाठान्तरत्वेन स्वीकृत।
५ स० पा०—वुच्चइ जाव नोइसिं।
६. अणता जीवा (अ, क, ता, व, म)।
७. स० पा०—निक्खेवो।
८. × (ता)।

पुट्ठे, अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिसवेरेहि य पुट्ठे । एवं आसं जाव चिल्ललग जाव अहवा चिल्ललगवेरेण[1] य नोचिल्ललगवेरेहि य पुट्ठे ॥

२५२. पुरिसे ण भते ! इसि हणमाणे किं इसिवेरेण पुट्ठे ? नोइसिवेरेणं पुट्ठे ?
गोयमा ! नियमं[2] इसिवेरेण य[3] नोइसिवेरेहि य पुट्ठे ॥

पुढविक्काइयादीणं आण-पाण-पदं

२५३ पुढविक्काइए ण भते ! पुढविक्काय चेव आणमइ वा ? पाणमइ वा ? ऊससइ वा ? नीससइ वा ?
हता गोयमा ! पुढविक्काइए पुढविक्काइय चेव आणमइ वा जाव नीससइ वा ॥

२५४. पुढविक्काइए ण भते ! आउक्काइय आणमइ वा जाव नीससइ वा ?
हता गोयमा ! पुढविक्काइए ण आउक्काइय आणमइ वा जाव नीससइ वा । एव तेउक्काइय, वाउक्काइय, एव वणस्सइकाइय ॥

२५५ आउक्काइए ण भते ! पुढविक्काइय आणमइ वा [4]•जाव नीससइ वा ?
हता गोयमा ! आउक्काइए ण पुढविक्काइय आणमइ वा जाव नीससइ वा° ॥

२५६ आउक्काइए णं भते ! आउक्काइय चेव आणमइ वा ?
एव चेव । एव तेउ-वाउ-वणस्सइकाइय ॥

२५७ तेउक्काइए ण भते ! पुढविक्काइयं आणमइ वा ? एव जाव वणस्सइकाइए ण भते ! वणस्सइकाइय चेव आणमइ वा ? तहेव ॥

किरिया-पदं

२५८. पुढविक्काइए ण भते ! पुढविक्काइय चेव आणममाणे वा, पाणममाणे वा ऊससमाणे वा, नीससमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ॥

२५९ पुढविक्काइए ण भते ! आउक्काइय आणममाणे वा ?
एव चेव । एव जाव वणस्सइकाइय । एव आउक्काइएण वि सव्वे[5] भाणियव्वा । एव तेउक्काइएण वि, एव वाउक्काइएण वि जाव—

---

१. °ल्लग° (ब), चिल्लगा° (म)। [illegible]
२. [illegible] (ब)।
३. [illegible] गत (वृ)।
४. म० पा०—एवं चेव।
५. सव्वे वि (ता, म)।

२६०. वणस्सइकाइए णं भते ! वणस्सइकाइय चेव आणममाणे वा—पुच्छा ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ॥

२६१. वाउक्काइए ण भते ! रुक्खस्स मूल 'पचालेमाणे वा'[1] पवाडेमाणे वा कति-किरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए। एव कद, एव जाव[2]—

२६२ वीय पचालेमाणे वा—पुच्छा ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ॥

२६३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[3] ॥

---

१. × (क)।
२. भ० ८।२१६।
३. भ० १।५१।

दसमं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१. दिस २ सवुडअणगारे[1], ३ आइड्ढी[2] ४. सामहत्थि ५. देवि ६. सभा।
७-३४ उत्तरअतरदीवा, दसमम्मि सयम्मि चउत्तीसा ॥१॥

दिसा-पदं

१. रायगिहे[3] जाव[4] एव वयासी—किमिय भते ! 'पाईणा ति'[5] पवुच्चइ ?
गोयमा ! जीवा चेव, अजीवा चेव ॥

२. किमिय भते ! पडीणा ति पवुच्चइ ?
गोयमा ! एव चेव । एव दाहिणा, एव उदीणा, एव उड्ढा, एवं अहो[6] वि ॥

३. कति ण भते ! दिसाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! दस दिसाओ पण्णत्ताओ, त जहा—१. पुरत्थिमा २. पुरत्थिमदाहिणा ३. दाहिणा ४ दाहिणपच्चत्थिमा ५ पच्चत्थिमा ६. पच्चत्थिमुत्तरा ७. उत्तरा ८. उत्तरपुरत्थिमा ९. उड्ढा १०. अहो[7] ॥

४ एयासि ण भते ! दसण्ह दिसाण कति नामधेज्जा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दस नामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा—

---

१. संवुडमणगारे (अ, क, ब, म)।
२. आयड्ढी (अ, म)।
३. रायगिहे (ता)।
४. भ० १।४-१०।
५. पाईणत्ति (क, स), पाईणा ति (ता)।
६. अहा (अ, क, ब, म); अधो (ता)।
७. अहा (अ, क, ब, म); अधा (ता)।

इंदा अग्गेयी जम्मा[1], य नेरई वारुणी य वायव्वा ।
सोमा ईसाणी या, विमला य तमा य बोद्धव्वा ॥१॥

५. इंदा ण भंते ! दिसा किं १ जीवा २. जीवदेसा ३ जीवपदेसा ४ अजीवा ५ अजीवदेसा ६ अजीवपदेसा ?
गोयमा ! जीवा वि, [2]•जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि°, अजीवपदेसा वि ।
जे जीवा ते नियमा एगिंदिया बेइंदिया[3] •तेइंदिया चउरिंदिया° पंचिंदिया, अणिंदिया ।
जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा ।
जे जीवपदेसा ते नियमा[4] एगिंदियपदेसा बेइंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा ।
जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूविअजीवा य, अरूविअजीवा य ।
जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—खंधा, खंधदेसा, खंधपदेसा, परमाणुपोग्गला ।
जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा—१ नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे २. धम्मत्थिकायस्स पदेसा ३ नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे ४ अधम्मत्थिकायस्स पदेसा ५ नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे ६ आगासत्थिकायस्स पदेसा ७. अद्धासमए ॥

६. अग्गेयी ण भंते ! दिसा किं जीवा, जीवदेसा, जीवपदेसा—पुच्छा ।
गोयमा ! नोजीवा, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि ।
जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स य देसे, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स य देसा, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा । अहवा एगिंदियदेसा य तेइंदियस्स य देसे । एवं चेव तियभंगो भाणियव्वो । एवं जाव अणिंदियाणं तियभंगो । जे जीवपदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा । अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियस्स पदेसा, अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियाण य पदेसा । एवं आइल्लविरहिओ जाव अणिंदियाणं ।
जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूविअजीवा[5] य, अरूविअजीवा य ।
जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—खंधा जाव परमाणुपोग्गला ।

---

१ जमा (ग) ।
२. सं० पा०—त चेव जाव अजीवपदेसा ।
३ सं० पा०—बेइंदिया जाव पंचिंदिया ।
४. नियम (ता), × (व) ।
५. रूवि अजीवा (ता, ब) ।

जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, त जहा—नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, एव अधम्मत्थिकायस्स वि जाव आगासत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए[1] ॥

७. जम्मा ण भते ! दिसा कि जीवा ?
जहा इदा 'तहेव निरवसेस'[2] । नेरती[3] य जहा अग्गेयी । वारुणी जहा इदा । वायव्वा जहा अग्गेयी । सोमा जहा इदा । ईसाणी जहा अग्गेयी । विमलाए जीवा जहा अग्गेयीए, अजीवा जहा इदाए । एवं तमाए वि, नवर—अरूवी छव्विहा, अद्धासमयो न भण्णति ॥

सरीर-पद

८ कति ण भते ! सरीरा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पच सरीरा पण्णत्ता, त जहा—ओरालिए[4] •वेउव्विए आहारए तेयए° कम्मए ॥

९ ओरालियसरीरे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
एव ओगाहणासठाण निरवसेस भाणियव्व जाव[5] अप्पाबहुग ति ॥

१० सेव भते ! सेव भते ! त्ति[6] ॥

बीओ उद्देसो

सवुडस्स किरिया-पदं

११. रायगिहे जाव[7] एव वयासी—सवुडस्स ण भते ! अणगारस्स वीयीपथे ठिच्चा पुरओ रूवाइ निज्झायमाणस्स, मग्गओ रूवाइ अवयक्खमाणस्स, पासओ रूवाइ अवलोएमाणस्स, उड्ढ रूवाइ ओलोएमाणस्स, अहे रूवाइ आलोएमाणस्स तस्स ण भते ! कि इरियावहिया किरिया कज्जइ ? सपराइया किरिया कज्जइ ?

---

१. [illegible] (अ, क, ख, म) ।
२. [illegible]
३. [illegible]
४. स० पा०—ओरालिए जाव कम्मए ।
५. प० २१ ।
६. भ० १।५१ ।
७. भ० १।६-१० ।

गोयमा ! सवुडस्स णं अणगारस्स वीयीपथे ठिच्चा[1] •पुरओ रूवाइ निज्झायमाणस्स, मग्गओ रूवाइ अवयक्खमाणस्स, पासओ रूवाइ अवलोएमाणस्स, उड्ढ रूवाइ ओलोएमाणस्स, अहे रूवाइ आलोएमाणस्स° तस्स ण नो इरियावहिया किरिया कज्जइ, सपराइया किरिया कज्जइ ॥

१२ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सवुडस्स ण जाव सपराइया किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! जस्स ण कोह-माण-माया-लोभा [2]•वोच्छिण्णा भवति तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, जस्स ण कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवति तस्स ण सपराइया किरिया कज्जइ। अहासुत्त रीयमाणस्स इरियावहिया किरिया कज्जइ, उस्सुत्त रीयमाणस्स सपराइया किरिया कज्जइ°। से ण उस्सुत्तमेव रीयति। से तेणट्ठेण जाव सपराइया किरिया कज्जइ ॥

१३. सवुडस्स ण भते ! अणगारस्स अवीयीपथे ठिच्चा पुरओ रूवाइ निज्झायमाणस्स जाव[3] तस्स ण भते ! कि इरियावहिया किरिया कज्जइ ?—पुच्छा।
गोयमा ! सवुडस्स ण अणगारस्स अवीयीपथे ठिच्चा जाव तस्स ण इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो सपराइया किरिया कज्जइ ॥

१४ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सवुडस्स ण जाव इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो सपराइया किरिया कज्जइ ?
[4]•गोयमा ! जस्स ण कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिण्णा भवति तस्स ण इरियावहिया किरिया कज्जइ, जस्स ण कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवति तस्स ण सपराइया किरिया कज्जइ। अहासुत्त रीयमाणस्स इरियावहिया किरिया कज्जइ, उस्सुत्त रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ।° से ण अहासुत्तमेव रीयति। से तेणट्ठेणं जाव नो सपराइया किरिया कज्जइ ॥

जोणी-पदं

१५. कतिविहा णं भते ! जोणी पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता, त जहा—सीया, उसिणा, सीतोसिणा। एव जोणीपदं निरवसेस भाणियव्व[5] ॥

वेदणा-पदं

१६. कतिविहा ण भते ! वेयणा पण्णत्ता ?

---

१. स० पा०—ठिच्चा जाव तस्स।
२. स० पा०—एव जहा सत्तमसए पढमउद्देसए जाव से।
३. भ० १०।११।
४ स० पा०—जहा सत्तमसए सत्तमुद्देसए जाव से।
५ प० ९।

गोयमा ! तिविहा वेयणा पण्णत्ता, त जहा—सीया, उसिणा, सीओसिणा। एव वेयणापद भाणियव्व जाव[1]—

१७ नेरइया ण भते ! कि दुक्ख वेयण वेदेति ? सुह वेयण वेदेति ? अदुक्खमसुह वेयण वेदेति ?

गोयमा ! दुक्ख पि वेयण वेदेति, सुह पि वेयण वेदेति, अदुक्खमसुहं पि वेयण वेदेंति ॥

भिक्खुपडिमा-पद

१८ मासियण्ण[2] भिक्खुपडिम पडिवन्नस्स अणगारस्स[3], निच्च 'वोसट्ठकाए, चियत्त-देहे'[4] जे केइ परीसहोवसग्गा उप्पज्जति, त जहा—दिव्वा वा माणुसा वा तिरि-क्खजोणिया वा ते उप्पन्ने सम्म सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ। एव मासिया भिक्खुपडिमा निरवसेसा भाणियव्वा, जहा दसाहि जाव[5] आराहिया भवइ ॥

अकिच्चट्ठाणपडिसेवण-पदं

१९. भिक्खू य अण्णयर अकिच्चट्ठाण पडिसेवित्ता[6] से ण तस्स ठाणस्स अणालोइय-पडिक्कते काल करेइ नत्थि तस्स आराहणा, से ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते काल करेइ अत्थि तस्स आराहणा ॥

२०. भिक्खू य अण्णयर अकिच्चट्ठाण पडिसेवित्ता तस्स णं एवं भवइ—पच्छा वि ण अह चरिमकालसमयसि एयस्स ठाणस्स आलोएस्सामि[7], •पडिक्कमिस्सामि, निदिस्सामि, गरिहिस्सामि, विउट्टिस्सामि, विसोहिस्सामि, अकरणयाए अब्भु-ट्ठिस्सामि, अहारिय पायच्छित्त तवोकम्म° पडिवज्जिस्सामि', से ण तस्स ठाणस्स अणालोइय[8]•पडिक्कते काल करेइ° नत्थि तस्स आराहणा, से ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते काल करेइ अत्थि तस्स आराहणा ॥

२१. भिक्खू य अण्णयर अकिच्चट्ठाण पडिसेवित्ता तस्स ण एव भवइ—जइ ताव समणोवासगा वि कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उव-वत्तारो भवति, किमग ! पुण अह अणपन्नियदेवत्तण पि नो लभिस्सामि ति

कट्टु से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा, से ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते काल करेइ अत्थि तस्स आराहणा ।

२२ सेवं भते ! सेव भते ! त्ति[1] ।।

— —

तइओ उद्देसो

आइड्ढीए परिड्ढीए वीइवयण-पदं

२३. रायगिहे जाव[1] एव वयासी—आइड्ढीए[2] ण भते ! देवे जाव चत्तारि, पच देवावासंतराइ वीतिक्कते[3], तेण पर परिड्ढीए ?

हता गोयमा ! आइड्ढीए ण °देवे जाव चत्तारि, पच देवावासतराइ वीतिक्कते, तेण पर परिड्ढीए ।° एवं असुरकुमारे वि, नवर—असुरकुमारावासतराइ, सेस त चेव । एव एएण कमेण जाव थणियकुमारे, एव वाणमतरे, जोइसिए वेमाणिए जाव तेण पर परिड्ढीए ।।

देवाणं विणयविहि-पदं

२४ अप्पिड्ढीए ण भते ! देवे महिड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

२५ समिड्ढीए ण भते ! देवे समिड्ढीयस्स देवस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे, पमत्तं पुण वीइवएज्जा ।।

२६ [5]से भते ! कि विमोहित्ता पभू ? अविमोहित्ता पभू ?
गोयमा ! विमोहित्ता पभू, नो अविमोहित्ता पभू ।।

२७. से भते ! कि पुव्वि विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा ? पुव्वि वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ?
गोयमा ! पुव्वि विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा, नो पुव्वि वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ।।

---

१. भ० १।५१ ।
२. भ० १।८-१० ।
३ आनड्ढिए (अ, स); आनिड्ढीए (क, व, म), आयड्ढीए (ता)
४ वीईवयइ (वृपा) ।
५. म० पा०—नं चेव ।
६. से ण (व, म, स) ।

२८. महिड्ढीए ण भते ! देवे अप्पिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
हता वीइवएज्जा ॥

२९ से भते ! किं विमोहित्ता पभू ? अविमोहित्ता पभू ?
गोयमा ! विमोहित्ता वि पभू, अविमोहित्ता वि पभू ॥

३०. से भते ! कि पुव्वि विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा ? पुव्वि वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ?
गोयमा ! पुव्वि वा विमोहेत्ता पच्छा वीइवएज्जा, पुव्वि वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ॥

३१. अप्पिड्ढिए[1] ण भते ! असुरकुमारे महिड्ढियस्स असुरकुमारस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एव असुरकुमारेण वि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जहा ओहिएण देवेण भणिया । एव जाव थणियकुमारेण । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिएण एव चेव ॥

३२. अप्पिड्ढिए ण भते ! देवे महिड्ढियाए देवीए मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

३३. समिड्ढिए[2] ण भते ! देवे समिड्ढियाए देवीए मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ?
एवं तहेव देवेण य देवीए य दडओ भाणियव्वो जाव वेमाणियाए ॥

३४. अप्पिड्ढिया ण भते ! देवी महिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ?
एव एसो वि ततिओ[3] दडओ भाणियव्वो जाव—

३५. महिड्ढिया वेमाणिणी अप्पिड्ढियस्स वेमाणियस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
हता वीइवएज्जा ॥

३६. अप्पिड्ढिया ण भते ! देवी महिड्ढियाए देवीए मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एव समिड्ढिया देवी समिड्ढियाए देवीए तहेव । महिड्ढिया वि देवी अप्पिड्ढियाए देवीए तहेव । एव एक्केक्के तिण्णि-तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जाव—

३७. महिड्ढिया[1] णं भते ! वेमाणिणी अप्पिड्ढियाए वेमाणिणीए मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
हंता वीइवएज्जा ॥

३८ से भंते ! किं विमोहित्ता पभू ? अविमोहित्ता पभू ?

गोयमा ! विमोहित्ता वि पभू, अविमोहित्ता वि पभू। तहेव जाव पुव्विं वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा। एए चत्तारि दंडगा॥

आसस्स 'खु-खु' करण-पदं

३९ आसस्स णं भंते ! धावमाणस्स किं 'खु-खु' त्ति करेति ?
गोयमा ! आसस्स णं धावमाणस्स हिययस्स य जगयस्स[1] य अंतरा एत्थ णं 'कब्बडए नाम'[2] वाए समुच्छइ[3], जेणं आसस्स धावमाणस्स 'खु-खु' त्ति करेति॥

पण्णवणी-भासा-पदं

४०. अह भंते ! आसइस्सामो, सइस्सामो, चिट्ठिस्सामो, निसिइस्सामो, तुयट्टिस्सामो[4]—पण्णवणी णं एस भासा ? न एसा भासा मोसा ?
हंता गोयमा ! आसइस्सामो, [5]°सइस्सामो, चिट्ठिस्सामो, निसिइस्सामो, तुयट्टिस्सामो—पण्णवणी णं एसा भासा°, न एसा भासा मोसा॥

४१ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6]॥

---

१. जगयस्स (अ, क, म,); जातन्स (ता)।
२. कक्कडनाम (ता), कव्वडए नाम (स)।
३. समुत्थइ (अ, ता, व, म, स)।
४. अतोग्रे गाथाद्वय लभ्यते—
आमंतणी आणवणी,
जायणी तह पुच्छणी य पण्णवणी।
पच्चक्खाणी भासा, भासा इच्छाणुलोमा य॥
अणभिग्गहिया भासा,
भासा य अभिग्गहम्मि बोद्धव्वा।
संसयकरणी भासा, वोयडमव्वोयडा चेव॥
(अ, क, ता, व, म,
गाथाद्वये 'असच्चामो
प्रकारा निरूपिता
भाषापदे एवमेवास्ति
प्रकरणे प्रासङ्गिकं
निश्चितं आम्नाय। :
मूले प्रक्षिप्ते। उत्त
वृत्तिकृतापि नयैव व्या
५. सं० पा०—स चेव ?
६. भ० १।५१।

चउत्थो उद्देसो

तावत्तीसगदेव-पदं

४२. तेण कालेण तेण समएण वाणियग्गामे नयरे होत्था—वण्णओ[1]। दूतिपलासए चेइए। सामी समोसढे जाव[2] परिसा पडिगया ॥

४३. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नाम अणगारे जाव[3] उड्ढजाणू[4] •अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ ॥

४४. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी सामहत्थी नाम अणगारे पगइभद्दए[5] •पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउ-मद्दवसपन्ने अल्लीणे विणीए समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढ-जाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ ॥

४५. तए ण से सामहत्थी अणगारे जायसड्ढे जाव[6] उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव भगव गोयमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भगव गोयम तिक्खुत्तो जाव[7] पज्जुवासमाणे एव वयासी—

४६. अत्थि ण भंते! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा[8] देवा-ताव-त्तीसगा देवा?

हंता अत्थि ॥

४७. से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ—चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो ताव-त्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा?

एव खलु सामहत्थी! तेण कालेण तेण समएण इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे कायंदी नाम नयरी होत्था—वण्णओ[9]। तत्थ ण कायंदीए नयरीए तायत्तीसं[10] सहाया[11] गाहावई समणोवासया परिवसंति—अड्ढा जाव[12] बहुजणस्स अपरि-भूता अभिगयजीवाजीवा, उवलद्धपुण्णपावा[13] जाव[14] अहापरिग्गहिएहिं तवो-कम्मेहिं अप्पाण भावेमाणा विहरंति ॥

---

१. ओ० सू० १।
२. भ० १।७,८।
३. भ० १।६।
४. भ० पा० —उड्ढजाणू जाव विहरइ।
५. भ० पा०—जहा गोयमे जाव उड्ढजाणू जाव विहरइ।
६. भ० १।१०।
७. भ० १।१०।
८. तायत्तीसगा (स्व०)।
९. ओ० सू० १।
१०. तावत्तीस (क, ता, ब, म)।
११. साहाया (अ)।
१२. भ० २।९४।
१३. उवलद्धपुण्णपावाजा (अ, क, ता, ब, म, स)।
१४. भ० २।९४।

४८ तए ण ते तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासया पुव्वि उग्गा उग्गविहारी, सविग्गा सविग्गविहारी भवित्ता तम्रो पच्छा पासत्था पासत्थविहारी, ओसन्ना ओसन्नविहारी, कुसीला कुसीलविहारी, अहाच्छदा अहाच्छदविहारी बहूइ वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणित्ता, अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेत्ता, तीस भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कता कालमासे काल किच्चा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसग-देवत्ताए उववण्णा ॥

४९ जप्पभिइ च ण भते ! ते कायदगा तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना, तप्पभिइ च ण भते ! एव वुच्चइ—चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

तए ण भगव गोयमे सामहत्थिणा अणगारेण एव वुत्ते समाणे सकिए कखिए वितिगिच्छिए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता सामहत्थिणा अणगारेण सद्धि जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—

५० अत्थि ण भते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

हता अत्थि ॥

५१ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—एव त चेव सव्व भाणियव्व जाव जप्पभिइ च ण भते ! ते कायदगा तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना, तप्पभिइ च ण भते ! एव वुच्चइ—चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

नो इणट्ठे समट्ठे । गोयमा ! चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्ती-सगाण देवाण सासए नामधेज्जे पण्णत्ते—ज न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ[1], °भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए° निच्चे, अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए अण्णे चयति, अण्णे उववज्जति ॥

५२. अत्थि ण भते ! बलिस्स वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

हता अत्थि ॥

---

१. न० पा०—भविस्सइ जाव निच्चे ।

५३. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—वलिस्स वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो[1] तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेभेले नाम सण्णिवेसे होत्था—वण्णग्रो[2]। तत्थ ण वेभेले सण्णिवेसे तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासया परिवसति – जहा चमरस्स जाव[3] तावत्तीसग-देवत्ताए उववण्णा ॥

५४ जप्पभिइ च ण भते ! ते वेभेलगा तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा वलिस्स वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना, सेस त चेव जाव[4] निच्चे, अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए अण्णे चयति, अण्णे उववज्जति ॥

५५. अत्थि ण भते ! धरणस्स नागकुमारिदस्स नागकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

हता अत्थि ॥

५६ से केणट्ठेण जाव तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

गोयमा ! धरणस्स नागकुमारिदस्स नागकुमाररण्णो तावत्तीसगाण देवाण सासए नामधेज्जे पण्णत्ते—ज न कयाइ नासी जाव अण्णे चयति, अण्णे उववज्जति । एव भूयाणदस्स वि, एव जाव[5] महाघोसस्स ॥

५७ अत्थि ण भते ! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो [6]•तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?०

हता अत्थि ॥

५८. से केणट्ठेण जाव तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे पालए[7] नाम सण्णिवेसे होत्था—वण्णग्रो । तत्थ ण पालए सण्णिवेसे तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासया जहा चमरस्स जाव[8] विहरति ॥

५९ तए ण ते तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासया पुव्वि पि पच्छा वि उग्गा उग्गविहारी, सविग्गा सविग्गविहारी वहूइ वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कता समाहिपत्ता कालमासे काल किच्चा[9] •सक्कस्स देविदस्स

---

१. आइ (अ, क, ता, ब, म, स) ।
२. ओ० सू० १, एतस्मात् 'भवणवण-सन्निभ-[illegible]' [illegible] ।
३. [illegible]
४. [illegible]
५. भ० ३।२७४।
६. स० पा०—पुच्छा ।
७. पालाए (अ); पालाए (ब); [illegible] (स)।
८. भ० ३।४३।
९. स० पा०—किच्चा जाव उववन्ना ।

देवरण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए॰ उववन्ना। जप्पभिइं च ण भते! ते पालगा[1] तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा, सेस जहा चमरस्स जाव अण्णे उववज्जति ॥

६०. अत्थि ण भते! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा?
एव जहा सक्कस्स, नवर—चपाए नयरीए जाव[2] उववण्णा जप्पभिइ च ण भते! ते चपिज्जा तायत्तीस सहाया, सेस त चेव जाव अण्णे उववज्जति ॥

६१. अत्थि णं भते! सणकुमारस्स देविंदस्स [3]॰देवरण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा?॰
हता अत्थि ॥

६२. से केणट्ठेण?
जहा धरणस्स तहेव, एव जाव पाणयस्स, एव अच्चुयस्स जाव अण्णे उववज्जति ॥

६३. सेव भते! सेव भते! त्ति[4] ॥

पंचमो उद्देसो

देवाणं तुडिएण सद्धि दिव्वभोग-पदं

६४. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नयरे। गुणसिलए चेइए जाव[5] परिसा पडिगया। तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अतेवासी थेरा भगवतो जाइसपन्ना जहा अट्ठमे सए सत्तमुद्देसए जाव[6] सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति। तए ण ते थेरा भगवतो जायसड्ढा जायससया जहा गोयमसामी जाव[7] पज्जुवासमाणा एव वयासी—

६५. चमरस्स णं भते असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ?

---

१. वालगा (अ, स), पालागा (क, व); पालालगा (ब)।
२. भ० १०।५७-५६।
३. स० पा०—पुच्छा।
४. भ० १।५१।
५. भ० १।४-८।
६. भ० ८।२७२।
७. भ० १।१०।

अज्जो ! पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—काली, रायी, रयणी, विज्जू, मेहा। तत्थ ण एगमेगाए देवीए अट्ठट्ठ देवीसहस्स[1] परिवारो पण्णत्तो ॥

६६. पभू ण भते ! ताओ एगमेगा देवी अण्णाइ अट्ठट्ठ देवीसहस्साइ परियार विउव्वित्तए ?
एवामेव सपुव्वावरेणं चत्तालीस देवीसहस्सा। सेत्त तुडिए ॥

६७. पभू ण भते ! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरसि सीहासणसि तुडिएण सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६८ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नो पभू चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचचाए रायहाणीए जाव[2] विहरित्तए ?
अज्जो ! चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, माणवए चेइयखभे वइरामएसु गोल-वट्ट-समुग्गएसु बहूओ जिणसकहाओ सन्निक्खित्ताओ चिट्ठति, जाओ ण चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो अण्णेसिं च बहूण असुरकुमाराण देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ वदणिज्जाओ नमसणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासणिज्जाओ भवति[3]। से तेणट्ठेण अज्जो ! एव वुच्चइ—नो पभू चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया[4] •चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरसि सिहासणसि तुडिएण सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे° विहरित्तए ॥

६९. पभू ण अज्जो ! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरसि सीहासणसि चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं, तायत्तीसाए[5] •तावत्तीसगेहिं, चउहिं लोगपालेहिं, पचहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं चउसट्ठीए आयरक्खदेवसाहस्सीहिं°, अण्णेहिं[6] य बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहि य, देवीहि य सद्धि सपरिवुडे महयाहय[7]•नट्ट-गीय-वाइय-तती-तल-ताल-तुडिय-घणमुइगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ भोगभोगाइ° भुजमाणे विहरित्तए ?
केवल परियारिड्ढीए, नो चेव ण मेहुणवत्तिय ॥

---

१. °सहस्सा (ता, म)।
२. भ० [illegible]।
३. [illegible] (त, म)।
४. सं० पा०—[illegible] जाव विहरित्तए।
५. सं० पा०—तावत्तीसाए जाव अण्णेहिं।
६. अण्णेहि (अ, स)।
७. सं० पा०—महयाहय जाव भुजमाणे।

७०. चमरस्स ण भते ! असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—कणगा, कणगलता, चित्तगुत्ता, वसुधरा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग[1] देवीसहस्स परिवारे[2] पण्णत्ते ॥

७१. पभू ण ताओ 'एगमेगा देवी'[3] अण्ण एगमेग देवीसहस्स परियार विउव्वित्तए ?
एवामेव सपुव्वावरेणं चत्तारि देवीसहस्सा । सेत्त तुडिए ॥

७२. पभू ण भते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमे महाराया सोमाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, सोमसि सीहासणसि तुडिएण सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ? अवसेस जहा चमरस्स, नवर—परियारो जहा[4] सूरियाभस्स । सेस त चेव जाव[5] नो चेव ण मेहुणवत्तिय ॥

७३. चमरस्स ण भते[6] ! •असुरिंदस्स असुरकुमार॰रण्णो जमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ ?
एव चेव[7], नवर—जमाए रायहाणीए, सेस जहा सोमस्स । एव वरुणस्स वि, नवर—वरुणाए रायहाणीए । एव वेसमणस्स वि, नवर—वेसमणाए रायहाणीए । सेस त चेव जाव नो चेव ण मेहुणवत्तिय[8] ॥

७४ वलिस्स ण भते ! वइरोयणिदस्स—पुच्छा ।
अज्जो ! पच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—सुभा[9], निसुभा, रभा, निरभा, मदणा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए अट्ठट्ठ देवीसहस्स परिवारो, सेस जहा चमरस्स, नवर—वलिचचाए रायहाणीए, परियारो जहा[10] मोउद्देसए । सेस त चेव जाव नो चेव ण मेहुणवत्तिय ॥

७५ वलिस्स ण भते ! वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—मीणगा, सुभद्दा, विज्जुया[11], असणी । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारो, सेस जहा चमरसोमस्स एव जाव वरुणस्स[12] ॥

---

१. एगमेगसि (स) ।
२. परियारो (ता) ।
३ एगमेगाओ देवीओ (ज) एगमेगाए देवीए (स) ।
४. राय० सू० ७।
५. भ० १०।६७-६९।
६. स० पा०—भते जाव रण्णो ।
७ भ० १०।७०-७२ ।
८ ०वत्तिय (व) ।
९. सुभा (अ, व, स) ।
१०. भ० ३।१२।
११. विजया (स) ।
१२. वेसमणस्स (अ, स) ।

७६. धरणस्स ण भते ! नागकुमारिदस्स नागकुमाररण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—अला[1], सक्का[2], सतेरा[3], सोदामिणी, इदा, घणविज्जुया । तत्थ ण एगमेगाए देवीए छ-छ देवीसहस्स[4] परिवारो पण्णत्तो ।।

७७. पभू ण ताओ एगमेगा देवी अण्णाइ छ-छ देविसहस्साइ परियार विउव्वित्तए ? एवामेव सपुव्वावरेण छत्तीसाइ देविसहस्साइं । सेत्त तुडिए ।।

७८ पभू ण भते ! धरणे ? सेस त चेव[5], नवरं—धरणाए रायहाणीए, धरणंसि सीहासणसि, सओ परियारो[6] । सेस तं चेव ।।

७९. धरणस्स ण भते ! नागकुमारिदस्स नागकुमाररण्णो कालवालस्स[7] महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त जहा—असोगा, विमला, सुप्पभा, सुदसणा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्सं परिवारो, अवसेस जहा[8] चमरलोगपालाण । एव सेसाणं तिण्ह वि ।।

८०. भूयाणदस्स भते !—पुच्छा ।
अज्जो ! छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रूया रूयसा, सुरूया, रूयगावती, रूयकता, रूयप्पभा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, अवसेसं जहा धरणस्स ।।

८१. भूयाणदस्स ण भते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो नागचित्तस्स—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—सुणंदा, सुभद्दा, सुजाया, सुमणा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्सं परिवारे, अवसेस जहा चमरलोगपालाण । एव सेसाण तिण्ह वि लोगपालाण ।
जे दाहिणिल्ला इंदा तेसिं जहा धरणिदस्स, लोगपालाण वि तेसिं जहा धरणस्स लोगपालाण । उत्तरिल्लाण इदाण[9] जहा भूयाणदस्स, लोगपालाण वि तेसिं जहा भूयाणदस्स लोगपालाण, नवर—इदाणं सव्वेसिं रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि, परियारो जहा[10] मोउद्देसए । लोगपालाण सव्वेसिं रायहा-

---

1. [illegible] (व), दला (स०) ।
2. स[illegible]का (ता, ब, म); सुक्का (म), कमा (ठाण ४।३।६) ।
3. [illegible] (अ, म) ।
4. [illegible] (अ, ता, ब, म, म) ।
5. भ० [illegible] ।
6. भ० ३।१४।
7. काललोगपालस्स (अ); लोगपालस्स कालतोगपालस्स (म) ।
8. भ० १०।७७-८२।
9. × (ता, ब) ।
10. भ० ३।१४, १५ ।

णीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि, परियारो जहा[1] चमरस्स लोग-पालाणं ॥

८२ कालस्स ण भते ! पिसायिदस्स पिसायरण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—कमला, कमलप्पभा, उप्पला, सुदसणा। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारो, सेसं जहा[2] चमरलोगपालाणं। परिवारो तहेव, नवर—कालाए रायहाणीए, कालसि सीहासणसि, सेस त चेव। एव महाकालस्स वि ॥

८३ सुरुवस्स ण भते ! भूतिदस्स भूतरण्णो—पुच्छा। अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रुववई, बहुरुवा, सुरुवा, सुभगा। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस जहा कालस्स। एव पडिरुवस्स वि ॥

८४. पुण्णभद्दस्स ण भते ! जक्खिदस्स—पुच्छा। अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पुण्णा, बहुपुत्तिया, उत्तमा, तारया। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस जहा कालस्स। एव माणिभद्दस्स वि ॥

८५ भीमस्स णं भते ! रक्खसिदस्स—पुच्छा। अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पउमा, वसुमती[3], कणगा, रयणप्पभा। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस जहा कालस्स। एव महाभीमस्स वि ॥

८६ किन्नरस्स ण—पुच्छा। अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—वडेंसा, केतुमती, रतिसेणा, रइप्पिया। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस त चेव। एव किपुरिसस्स वि ॥

८७ सप्पुरिसस्स ण—पुच्छा। अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रोहिणी, नवमिया, हिरी, पुप्फवती। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस त चेव। एव महापुरिसस्स वि ॥

८८ अतिकायस्स ण—पुच्छा। अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—भुयगा[4], भुयगवती,

---

१. भ० १०।३०-३३।
२. भ० १०।३१, ३२।
३. पउमवती (अ, स), पउमावती (ब, म)।
४. भुवगा (स)।

महाकच्छा, फुडा। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस त चेव। एव महाकायस्स वि॥

८९ गीयरइस्स ण—पुच्छा।
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—सुघोसा, विमला, सुस्सरा, सरस्सई। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस त चेव। एव गीयजसस्स वि। सव्वेसि एएसि जहा कालस्स, नवर—सरिसनामियाओ रायहाणीओ सीहासणाणि य, सेस त चेव॥

९० चदस्स ण भते! जोइसिदस्स जोइसरण्णो - पुच्छा।
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—चदप्पभा, दोसिणाभा[1], अच्चिमाली, पभकरा। एव जहा[2] जीवाभिगमे जोइसियउद्देसए तहेव सूरस्स वि सूरप्पभा, आयवा[3], अच्चिमाली, पभकरा। सेस त चेव जाव[4] नो चेव ण मेहुणवत्तिय॥

९१ इंगालस्स ण भते! महग्गहस्स कति अग्गमहिसीओ—पुच्छा।
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—विजया, वेजयती, जयती, अपराजिया। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस[5] जहा चदस्स, नवर—इगालवडेसए विमाणे, इगालगसि सीहासणसि, सेस त चेव। एव वियालगस्स वि। एव अट्ठासीतिए वि महग्गहाण[6] भाणियव्व जाव[7] भावकेउस्स, नवर—वडेसगा सीहासणाणि य सरिसनामगाणि, सेस तं चेव॥

९२. सक्कस्स ण भते! देविंदस्स देवरण्णो—पुच्छा।
अज्जो! अट्ठ अग्गमहिसिओ पण्णत्ताओ, त जहा—पउमा, सिवा, सची[8], अंजू, अमला, अच्छरा, नवमिया, रोहिणी। तत्थ ण एगमेगाए देवीए सोलस-सोलस देवीसहस्सा परिवारो पण्णत्तो॥

९३ पभू ण ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं सोलस-सोलस देवीसहस्साइ परिवार विउव्वित्तए?
एवामेव सपुव्वावरेण अट्ठावीसुत्तर देवीसयसहस्स। सेत्त तुडिए॥

९४. पभू ण भंते! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे, सोहम्मवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए, सक्कंसि सीहासणंसि तुडिएण सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं

---

१ [illegible]सिणाभा (ग, म)।
२ जी० ३।
३ [illegible] (? म)।
४ भ० [illegible]।
५ सेस त चेव (अ, स)।
६. महागहाण (अ, क, ब, म)।
७. ठा० २।३२५।
८ सेया (अ, म), सुयी (क, ता, ब)।

भुजमाणे विहरित्तए। सेन जहा चमरस्स, नवरं—प

९५. सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो पुच्छा।
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं चित्ता, सोमा। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेगं जहा' चमरलोगपालाण, नवर—सयपभे विमाणे, सोहाणसि, सेसं त चेव। एव जाव वेसमणस्स, ततियसए॥

९६ ईसाणस्स ण भते!—पुच्छा।
अज्जो! अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा-रामरक्खिया, वसू, वसुगुत्ता, वसुमित्ता, वसुधरा। एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस जहा' सक्कस्स॥

९७ ईसाणस्स ण भते! देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महा —पुच्छा।
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जह विज्जू। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसह सक्कस्स लोगपालाण, एव जाव वरुणस्स, नवर—वि सेस त चेव जाव' नो चेव ण मेहुणवत्तिय॥

९८. सेव भते! सेव भते! त्ति'॥

छट्ठो उद्देसो

सुहम्मा सभा-पदं

९९. कहि णं भते! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो सभा सुह गोयमा! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण

---

१. भ० ३।२६।
२ भ० १०।७०-७२।
३ भ० ३।२५०, २५१, २५३, २६१, २६६।
४. भ० १०।९२-९४।
५ भ० ४।२-४।
६ भ० १०।९७-९९
७ भ० १।५१।

वीए वहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो उड्ढं एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव[1] पच वडेसगा पण्णत्ता, त जहा—असोगवडेसए[2], •सत्तवण्णवडेसए, चपगवडेसए, चूयवडेसए° मज्झे, सोहम्मवडेसए। से णं सोहम्मवडेसए महाविमाणे अद्धतेरस-जोयणसयसहस्साइ आयामविक्खभेण,

> एव जह सूरियाभे, तहेव माण[3] तहेव उववाओ।
> सक्कस्स य अभिसेओ, तहेव जह सूरियाभस्स।
> अलंकारअच्चणिया, तहेव जाव[4] आयरक्ख त्ति ॥१॥

दो सागरोवमाइ ठिती ॥

सक्क-पदं

१००. सक्के ण भते ! देविदे देवराया केमहिड्ढिए जाव[5] केमहासोक्खे[6]।
गोयमा ! महिड्ढिए जाव महासोक्खे। से ण तत्थ वत्तीसाए विमाणावाससय-सहस्साण जाव[7] दिव्वाइ भोगभोगाइं भुजमाणे विहरइ। एमहिड्ढिए जाव एमहासोक्खे सक्के देविदे देवराया ॥

१०१. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[8] ॥

७-३४ उद्देसा

अंतरदीव-पद

१०२ कहि ण भंते ! उत्तरिल्लाण एगूरुयमणुस्साण[9] एगूरुयदीवे नामं दीवे पण्णत्ते ? एव जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेस जाव[10] सुद्धदंतदीवो त्ति। एए अट्ठावीस उद्देसगा भाणियव्वा ॥

१०३ सेव भते ! सेवं भते ! त्ति जाव[11] अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

---

1. राय० सू० १२४, १२५।
2. सं० पा०—असोगवडेंसए जाव मज्झे।
3. [illegible] (अ, क, ता, ब, स)।
4. राय० सू० १२६-१६६।
5. भ० ३।४।
6. [illegible] (ब, स)।
7. भ० ३।१६।
8. भ० १।५१।
9. एगुरुय० (अ, ब, स)।
10. जी० ३।
11. भ० १।५१।

एक्कारसं सतं

पढमो उद्देसो

१. उप्पल २. सालु ३. पलासे ४ कुंभी ५ नाली य ६. पउम ७. कण्णी य[1] ।
८ नलिण ९ सिव १०. लोग ११,१२ कालालभिय दस दो य एक्कारे[2] ॥१॥

उप्पलजीवाण उववायादि-पदं

१ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव[3] पज्जुवासमाणे एवं वयासी—उप्पले णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
गोयमा ! एगजीवे, नो अणेगजीवे । तेण परं जे अण्णे जीवा उववज्जंति ते णं नो एगजीवा अणेगजीवा ॥

२ ते णं भंते ! जीवा कतोहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? 'तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? मणुस्सेहिंतो उववज्जंति'[4] ? देवेहिंतो उववज्जंति ?

---

१ वा (व) ।

२. अतोग्रे प्रथमोद्देशकद्वारसंग्रहगाथा लभ्यन्ते, ताश्च इमा—

उववाओ परिमाणं,
अवहारुच्चत्त बंध वेदे य ।
उदए उदीरणाए,
लेसा दिट्ठी य नाणे य ॥
जोगुवओगे वण्ण,
रसमाई ऊसासगे य आहारे ।
विरई किरिया बंधे,
सन्न कसायित्थि बंधे य ॥
सन्निंदिय अणुबंधे,
संवेहाहार ठिइ समुग्घाए ।
चयणं मूलादीसु य,
उववाओ सव्वजीवाणं ॥ (वृत्ति) ॥

३ भ० १।४-१० ।

४ तिरि मणु (अ, क, ता, ब, म, स) ।

गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जति देवेहिंतो वि उववज्जति । एव उववाओ भाणियव्वो जहा वक्कतीए वणस्सइकाइयाण जाव[1] ईसाणेति ॥

३. ते ण भते ! जीवा एगसमए ण केवइया उववज्जति ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा[1] असंखेज्जा वा उववज्जति ॥

४. ते णं भंते ! जीवा समए-समए अवहीरमाणा-अवहीरमाणा केवतिकालेण अवहीरति ?
गोयमा ! ते ण असखेज्जा समए-समए 'अवहीरमाणा-अवहीरमाणा'[1] असखेज्जाहि ओसप्पिणि'-उस्सप्पिणीहि अवहीरति, नो चेव णं अवहिया सिया ॥

५. तेसि ण भते ! जीवाण केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्कोसेण सातिरेग जोयणसहस्स ॥

६. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कि बंधगा ? अबंधगा ?
गोयमा ! नो अबधगा, बधए वा, बधगा वा ॥

७. एव जाव अतराइयस्स, नवर—आउयस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! १ बधए वा २ अबधए वा ३. बधगा वा ४. अबंधगा वा ५. अहवा बधए य अबधए य ६ अहवा बधए य अबधगा य ७. अहवा बधगा य अबधए य ८. अहवा बधगा य अबधगा य—एते अट्ठ भंगा ॥

८. ते ण भते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं वेदगा ? अवेदगा ?
गोयमा ! नो अवेदगा, वेदए वा, वेदगा वा । एव जाव अंतराइयस्स ॥

९. ते ण भते ! जीवा कि सायावेदगा ? असायावेदगा ?
गोयमा ! सायावेदए वा, असायावेदए वा—अट्ठ भगा ॥

१०. ते ण भते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कि उदई ? अणुदई ?
गोयमा ! नो अणुदई, उदई वा, उदइणो वा । एव जाव अतराइयस्स ॥

११. ते ण भते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कि उदीरगा ? अणुदीरगा ?
गोयमा ! नो अणुदीरगा, उदीरए वा, उदीरगा वा । एव जाव अतराइयस्स, नवर—वेदणिज्जाउएसु अट्ठ भंगा ॥

१२ ते ण भते ! जीवा कि कण्हलेसा ? नीललेसा ? काउलेसा ? तेउलेसा ?

गोयमा ! कण्हलेसे वा[1] •नीललेसे वा काउलेसे वा° तेउलेसे वा, कण्हलेस्सा वा नीललेस्सा वा काउलेस्सा वा तेउलेस्सा वा, अहवा कण्हलेसे य नीललेसे य । एव एए दुयासजोग-तियासजोग-चउक्कसजोगेण[2] असीती भगा[3] भवति ॥

१३. ते ण भते ! जीवा कि सम्मद्दिट्ठी ? मिच्छादिट्ठी ? सम्मामिच्छादिट्ठी ?
गोयमा ! नो सम्मद्दिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी वा मिच्छा-दिट्ठिणो वा ॥

१४. ते ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी वा, अण्णाणिणो वा ॥

१५. ते ण भते ! जीवा कि मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ?
गोयमा ! नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी वा, कायजोगिणो वा ॥

१६. ते ण भते ! जीवा कि सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता ?
गोयमा ! सागारोवउत्ते वा, अणागारोवउत्ते वा—अट्ठ भगा ॥

१७. तेसि ण भते ! जीवाण सरीरगा कतिवण्णा, कतिगधा, कतिरसा, कतिफासा, पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचवण्णा, पचरसा, दुगधा, अट्ठफासा पण्णत्ता । ते पुण अप्पणा अवण्णा, अगंधा, अरसा, अफासा पण्णत्ता ॥

१८. ते ण भते ! जीवा कि 'उस्सासगा ? निस्सासगा ? नोउस्सासनिस्सासगा ?'[4]
गोयमा ! १ उस्सासए वा २ निस्सासए वा ३ नोउस्सासनिस्सासए वा ४. उस्सासगा वा ५ निस्सासगा वा ६ नोउस्सासनिस्सासगा वा १-४ अहवा उस्सासए य निस्सासए य १-४ अहवा उस्सासए य नो उस्सासनिस्सासए य १-४ अहवा निस्सासए य नोउस्सासनिस्सासए य १-८ अहवा उस्सासए य निस्सासए य नोउस्सासनिस्सासए य—अट्ठ भगा । एते[5] छव्वीस भगा भवति ॥

१९. ते ण भते ! जीवा कि आहारगा ? अणाहारगा ?
गोयमा ! आहारए वा, अणाहारए वा—अट्ठ भंगा ॥

२०. ते ण भते ! जीवा कि विरया ? अविरया ? विरयाविरया ?
गोयमा ! नो विरया, नो विरयाविरया, अविरए वा अविरया वा ॥

२१. ते णं भते ! जीवा कि सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! नो अकिरिया, सकिरिए वा, सकिरिया वा ॥

---

१. सं० पा०—वा जाव तेउलेसे ।
२. चउक्कसजोगेण य (क, ख, ता, ब, स); चउ-क्कगसजोगेण य (व) ।
३. द्रष्टव्यम्—भ० १।२१८ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
४. उस्सासा निस्सासा नोउस्सासनिस्सासा (ख, ता, ब) ।
५. एत्थ (ता) ।

२२. ते ण भते ! जीवा कि सत्तविहवंधगा ? अट्ठविहवधगा ?
गोयमा ! सत्तविहवधए वा, अट्ठविहवधए वा—अट्ठ भगा ॥

२३. ते ण भते ! जीवा कि आहारसण्णोवउत्ता ? भयसण्णोवउत्ता ? मेहुणसण्णोवउत्ता ? परिग्गहसण्णोवउत्ता ?
गोयमा ! आहारसण्णोवउत्ता—असीती भगा[1] ॥

२४. ते ण भते ! जीवा कि कोहकसाई ? माणकसाई ? मायाकसाई ? लोभकसाई ? असीती भगा[2] ॥

२५. ते ण भते ! जीवा कि इत्थिवेदगा ? पुरिसवेदगा ? नपुसगवेदगा ?
गोयमा ! नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुसगवेदए वा, नपुसगवेदगा वा ॥

२६. ते ण भते ! जीवा कि इत्थिवेदवधगा ? पुरिसवेदवधगा ? नपुसगवेदवधगा ?
गोयमा ! इत्थिवेदवधए वा, पुरिसवेदवंधए वा, नपुसगवेदवधए वा—छव्वीस भगा[1] ॥

२७ ते ण भते ! जीवा कि सण्णी ? असण्णी ?
गोयमा! नो सण्णी, असण्णी वा असण्णिणो वा ।

२८. ते ण भते ! जीवा कि सइदिया ? अणिदिया ?
गोयमा ! नो अणिदिया, सइदिए वा, सइदिया वा ॥

२९. से ण भते ! उप्पलजीवेत्ति[4] कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण असखेज्ज काल ॥

३०. से ण भते ! उप्पलजीवे पुढविजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतिय काल सेवेज्जा ? केवतिय काल गतिरागति करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेणं असखेज्जाइ भवग्गहणाइ । कालादेसेण जहण्णेण दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेण असखेज्ज काल, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ॥

३१. से ण भते ! उप्पलजीवे, आउजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतिय काल सेवेज्जा ? केवतिय काल गतिरागति करेज्जा !
एव चेव । एवं जहा पुढविजीवे भणिए तहा जाव वाउजीवे भाणियव्वे ॥

३२. से ण भते ! उप्पलजीवे सेसवणस्सइजीवे, से पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतिय काल सेवेज्जा ? केवतियं काल गतिरागति करेज्जा ?

गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेण दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेण अणताइं भवग्गहणाइं, कालादेसेण जहण्णेण दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेण अणंत कालं तरुकालं[1], एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा[2] ॥

३३. से णं भंते ! उप्पलजीवे बेइंदियजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेण संखेज्जाइं भवग्गहणाइं, कालादेसेण जहण्णेण दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेण संखेज्जं कालं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं तेइंदियजीवे, एवं चउरिंदियजीवे वि ॥

३४. से णं भंते ! उप्पलजीवे पंचिंदियतिरिक्खजोणियजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति —पुच्छा।
गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेण दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइं, कालादेसेण जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेण पुव्वकोडिपुहत्तं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं मणुस्सेण वि समं जाव एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ॥

३५. ते णं भंते ! जीवा किमाहारमाहारेंति ?
गोयमा ! दव्वओ अणंतपदेसियाइं दव्वाइं, खेत्तओ असंखेज्जपदेसोगाढाइं, कालओ अण्णयरकालट्ठिइयाइं, भावओ वण्णमंताइं गंधमंताइं रसमंताइं फासमंताइं एवं जहा आहारुद्देसए वणस्सइकाइयाणं आहारो तहेव जाव[3] सव्वप्पणयाए आहारमाहारेंति, नवरं—नियमा छद्दिसिं, सेसं तं चेव ॥

३६. तेसि णं भंते ! जीवाणं केवतियं कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण दस वाससहस्साइं ॥

३७. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए ॥

३८. ते णं भंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहता मरंति ? असमोहता मरंति ?
गोयमा ! समोहता वि मरंति, असमोहता वि मरंति ॥

३९. ते णं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति—किं

---

१. × (क, ता, ब)। सि (ब)।
२. एवं [illegible] जाव कालादेसेण ३. प० २८।१।

नेरइएसु उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति ? एवं जहा वक्कंतीए उव्वट्टणाए वणस्सइकाइयाणं तहा भाणियव्वं[1] ॥

४०. अह भंते ! सव्वपाणा, सव्वभूता, सव्वजीवा, सव्वसत्ता उप्पलमूलत्ताए, उप्पलकंदत्ताए, उप्पलनालत्ताए, उप्पलपत्तत्ताए, उप्पलकेसरत्ताए, उप्पलकण्णियत्ताए, उप्पलथिभगत्ताए[2] उववन्नपुव्वा ?
हंता गोयमा ! असतिं अदुवा अणंतखुत्तो ॥

४१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

बीओ उद्देसो

सालुयादिजीवाणं उववायादि पदं

४२. सालुए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
गोयमा ! एगजीवे । एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा जाव[1] अणंतखुत्तो, नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुपुहत्तं, सेसं तं चेव ॥

४३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

तइओ उद्देसो

४४ पलासे ण भते ? एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एव उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा, नवर—सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण गाउयपुहत्ता[1]। देवेहितो[2] न उववज्जति ॥

४५. लेसासु—ते ण भते ! जीवा कि कण्हलेस्सा ? नीललेस्सा ? काउलेस्सा ?
गोयमा ! कण्हलेस्से वा नीललेस्से वा काउलेस्से वा—छव्वीस भगा[3], सेस त चेव ॥

४६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ॥

चउत्थो उद्देसो

४७ कुभिए ण भते ! एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एव जहा पलासुद्देसए तहा भाणियव्वे, नवर—ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वासपुहत्त, सेस त चेव ॥

४८ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[5] ॥

---

१ ०पुहुत्त (अ, स)।
२ देवा एएसु (अ, ब); देवेसु (ता, म); देवा एएसु चेव (स), वृत्तिकृताऽपि ११.२ सूत्रस्य सन्दर्भे एव व्याख्या कृतास्ति । अस्माभिरपि तस्य सन्दर्भे एव पाठः स्वीकृतः ।
३. भ० ११।२८।
४. भ० १।५१।
५ भ० १।५१।

नेरइएसु उववज्जति ? तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति ? एव जहा वक्कतीए उव्वट्टणाए वणस्सइकाइयाण तहा भाणियव्व' ॥

४० अह भते ! सव्वपाणा, सव्वभूता, सव्वजीवा, सव्वसत्ता उप्पलमूलत्ताए, उप्पलकदत्ताए, उप्पलनालत्ताए, उप्पलपत्तत्ताए, उप्पलकेसरत्ताए, उप्पलकण्णियत्ताए, उप्पलथिभगत्ताए' उववन्नपुव्वा ?
हता गोयमा ! असति अदुवा अणतखुत्तो ॥

४१ सेव भते ! सेव भते ! त्ति' ॥

बीओ उद्देसो

सालुयादिजीवाण उववायादि पद

४२. सालुए ण भते ! एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ? गोयमा ! एगजीवे । एव उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा जाव' अणतखुत्तो, नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण धणुपुहत्त, सेस त चेव ॥

४३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति' ॥

तइओ उद्देसो

४४. पलासे ण भंते ? एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एव उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा, नवर—सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण गाउयपुहत्ता[1]। देवेहितो[2] न उववज्जति ॥

४५. लेसासु—ते ण भते ! जीवा किं कण्हलेस्सा ? नीललेस्सा ? काउलेस्सा ?
गोयमा ! कण्हलेस्से वा नीललेस्से वा काउलेस्से वा—छव्वीस भगा[3], सेस त चेव ॥

४६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ॥

चउत्थो उद्देसो

४७ कुभिए ण भते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एव जहा पलासुद्देसए तहा भाणियव्वे, नवर—ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेणं वासपुहत्त, सेसं त चेव ॥

४८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[5] ॥

---

१ °पुहुत्त (अ, ब)।
२. देवा एएसु (अ, ब), देवेसु (ता, म); देवा एएसु चेव (स); वृत्तिकृतापि ११।२ सूत्रस्य सन्दर्भे एव व्याख्या कृतास्ति। अस्माभिरपि तस्य सन्दर्भे एव पाठः स्वीकृतः।
३. भ० ११।२८।
४ भ० १।५१।
५ भ० १।५१।

पंचमो उद्देसो

४९. नालिए ण भते ! एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एव कुभिउद्देसगवत्तव्वया निरवसेसं भाणियव्वा ॥

५०. सेव भते ! सेव भंते ! त्ति[1] ॥

छट्ठो उद्देसो

५१. पउमे ण भते ! एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एव उप्पलुद्देसगवत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा ॥

५२ सेव भंते ! सेव भते ! त्ति[2] ॥

सत्तमो उद्देसो

५३. कण्णिए णं भते ! एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एव चेव निरवसेस भाणियव्व ॥

५४. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति[3] ॥

अट्ठमो उद्देसो

५५. नलिणे ण भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं चेव निरवसेसं जाव¹ अणंतखुत्तो ॥

५६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति² ॥

नवमो उद्देसो

सिवरायरिसि-पद

५७. तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणापुरे³ नामं नगरे होत्था—वण्णओ⁴। तस्स णं हत्थिणापुरस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे, एत्थ णं सहसंबवणे नामं उज्जाणे होत्था—सव्वोउय⁵-पुप्फ-फलसमिद्धे रम्मे णंदणवणसन्निभप्पगासे⁶ सुहसीतलच्छाए मणोरमे सादुप्फले अकंटए, पासादीए⁷ °दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे ॥

५८. तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे सिवे नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे—वण्णओ⁸। तस्स णं सिवस्स रण्णो धारिणी नामं देवी होत्था—सुकुमालपाणिपाया—वण्णओ⁹। तस्स णं सिवस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए अत्तए सिवभद्दे नामं कुमारे होत्था—सुकुमालपाणिपाए, जहा सूरियकंते जाव¹⁰ रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठारं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव पच्चुवेक्खमाणे-पच्चुवेक्खमाणे विहरइ ॥

---

१. भ० ११।१-४०।
२. भ० १।५१।
३. हत्थिणागपुरे (अ, स); हत्थिणपुरे (क), हत्थिणाउरे (ता)।
४. ओ० सू० १।
५. सव्वोउय (क, म)।
६. °सन्निगासे (अ, क, ब, म)।
७. सं० पा०—पासादीए जाव पडिरूवे।
८. ओ० सू० १४।
९. ओ० सू० १५।
१०. राय० सू० ६७३,६७४।

५६ तए णं तस्स सिवस्स रण्णो अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि रज्जधुरं चिंतेमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[1] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—अत्थि ता मे पुरा पोराणाणं[2] •सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणफलवित्तिविसेसे, जेणाहं हिरण्णेणं वड्ढामि सुवण्णेणं वड्ढामि, धणेणं वड्ढामि, धण्णेणं वड्ढामि°, पुत्तेहिं वड्ढामि, पसूहिं वड्ढामि, रज्जेणं वड्ढामि, एवं रट्ठेणं बलेणं वाहणेणं कोसेणं कोट्ठागारेणं पुरेणं अंतेउरेणं वड्ढामि, विपुलधण-कणग-रयण[3]-•मणि-मोत्तिय-संखसिलप्पवाल-रत्तरयण°-संतसारसावएज्जेणं[4] अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, तं किं णं अहं पुरा पोराणाणं[5] •सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं° 'एगंतसो खयं'[6] उवेहमाणे[7] विहरामि ? तं जावताव अहं हिरण्णेणं वड्ढामि जाव[8] अतीव-अतीव अभिवड्ढामि जाव मे सामंतरायाणो वि वसे वट्टंति, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[9] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं[10] तंबियं तावसभंडगं घडावेत्ता सिवभद्दं कुमारं रज्जे ठावेत्ता तं सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं तंबियं तावसभंडगं गहाय जे इमे गंगाकूले वाणपत्था तावसा भवंति, [तं जहा—होत्तिया पोत्तिया[11] कोत्तिया जहा ओववाइए जाव[12] आयावणाहिं पंचग्गि-

---

1. म० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था
2. म० पा०—जहा तामलिस्स जाव पुत्तेहिं।
3. स० पा०—रयण जाव संत०।
4. °सावदेज्जेणं (क, व, म, स)।
5. स० पा—पोराणाणं जाव एगंतसोक्खयं।
6. एगंतसोक्खयं (अ)।
7. उव्वेह० (स)।
8. न चेव जाव (अ, क, व, म स)।
9. भ० २।६६।
10. कडच्छुयं (क, ता, ब, म)।
11. पोत्तिया (क, ब, वृपा)।
12. क्वचिदादर्शेषु भिन्नः पाठोस्ति। तदनन्तर 'जहा ओववाइए' इति संक्षिप्तपाठस्य [illegible]। [illegible] इत्थमस्ति [illegible]। [illegible] 'अ' संकेतितादर्शे [illegible]। [illegible] मस्ति—होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जण्णई सड्ढई थालई हुंबउट्ठा [हुंचउट्ठा (अ) हुंपउट्ठा (क, ब), उट्टिया (ता)] दंतुक्खलिया उम्मज्जगा सम्मज्जगा निमज्जगा संपक्खाला 'उद्धकंडुयगा अहोकंडुयगा' ['×' (क, ब, म)] दाहिणकूलगा उत्तरकूलगा संखधमगा कूलधमगा मियलुद्धगा हत्थितावसा जलाभिसेयकढिणगत्ता अंबुवासिणो वाउवासिणो सेवालवासिणो [वेल्लवासिणो (म)] अंबुभक्खिणो वाउभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कंदाहारा पत्ताहारा तयाहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडिय-कंद-मूल-[illegible]-फलाहारा उद्दंडा रुक्खमूलिया मंडलवासिणो [illegible] [illegible] (क), [illegible]वासिणो (ब), वणवासिणो (म)], दिसापोक्खिणो, आयावणाहिं पंचग्गि[illegible]

तावेहिं इंगालसोल्लियं कंदुसोल्लियं कट्ठसोल्लियं पिव अप्पाणं करेमाणा विहरंति]' तत्थ णं जे ते दिसापोक्खी तावसा तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइत्तए, पव्वइते वि य णं समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय •सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स° विहरित्तए, त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सुबहुं लोहीलोह'•कडाह-कडच्छुयं तंबियं तावसभंडगं° घडावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! हत्थिणापुरं नगरं सब्भितरबाहिरियं आसिय-सम्मज्जिओवलित्तं जाव' सुगंधवरगंधगंधियं गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। ते वि तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति॥

६०. तए णं से सिवे राया दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! सिवभद्दस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह। तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव उवट्ठवंति॥

६१ तए णं से सिवे राया अणेगगणनायग-दंडनायग'-•राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-° संधिपाल-सद्धिं संपरिवुडे सिवभद्दं कुमारं सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहं निसियावेइ निसियावेत्ता अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव' अट्ठसएणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्विड्ढीए जाव' दुंदुहि-णिग्घोसणाइयरवेणं महया-महया रायाभिसेगेणं अभिसिंचइ, अभिसि-

---

इंगालसोल्लियं कंदु(डु)सोल्लियं कट्ठसोल्लियं पिव अप्पाणं करेमाणा विहरंति।

'ओववाइय' सूत्रस्य (९४) पूर्णपाठ एवमस्ति—'होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जण्णई सड्ढई थालई हुंबउट्ठा दंतुक्खलिया उम्मज्जगा सम्मज्जगा निमज्जगा संपक्खाला दक्खिणकूलगा उत्तरकूलगा संखधमगा कूलधमगा मियलुद्धगा हत्थितावसा उद्दंडगा दिसापोक्खिणो वाकवासिणो चेलवासिणो जलवासिणो रुक्खमूलिया अंबुभक्खिणो वाउभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कंदाहारा तयाहारा पत्ताहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडिय-कंद-मूल-तय-पत्त-पुप्फ-फलाहारा जलाभिसेय-कढिण-गाया आयावणाहिं पंचग्गितावेहिं इंगालसोल्लियं कंदुसोल्लियं कट्ठसोल्लियं पिव अप्पाणं करेमाणा।'

१ अतो कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते।

२ सं० पा०—पगिज्झिय जाव विहरित्तए।

३ भ० २।६९।

४ सं० पा०—लोह जाव घडावेत्ता।

५ ओ० सू० ५५।

६ सं० पा०—दंडनायग जाव संधिपाल।

७ भ० ९।१८२।

८. भ० ९।१८३।

चित्ता पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेंति, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपंति एवं जहेव जमालिस्स अलंकारो तहेव जाव[1] कप्परुक्खगं पिव अलंकिय-विभूसियं करेंइ, करेत्ता करयल[2]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं॰ कट्टु सिवभद्दं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेंइ, वद्धावेत्ता ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं [3]•मणुण्णाहिं मणामाहिं मणाभिरामाहिं हिययगमणिज्जाहिं वग्गूहिं जयविजयमंगलसएहिं अणवरयं अभिणंदंतो य अभित्थुणंतो य एवं वयासी—जय-जय नंदा! जय-जय भद्दा! भद्दं ते, अजियं जिणाहि जियं पालयाहि, जियमज्झे वसाहि। इंदो इव देवाणं, चमरो इव असुराणं, धरणो इव नागाणं, चंदो इव ताराणं, भरहो इव मणुयाणं बहूइं वासाइं बहूइं वाससयाइं बहूइं वाससहस्साइं बहूइं वाससयसहस्साइं अणहसमग्गो हट्ठतुट्ठो॰ परमाउं पालयाहि, इट्ठजणसंपरिवुडे हत्थिणापुरस्स नगरस्स, अण्णेसिं च बहूणं गामागर-नगर-[4]•खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संवाह-सण्णिवेसाणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे॰ विहराहि त्ति कट्टु जयजयसद्दं पउंजंति॥

६२. तए णं से सिवभद्दे कुमारे राया जाते—महया हिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे, वण्णओ जाव[5] रज्जं पसासेमाणे विहरइ॥

६३. तए णं से सिवे राया अण्णया कयाइ सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-मुहुत्त-नक्खत्तंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-[6]•सयण-संबंधि॰-परिजणं 'रायाणो य खत्तिए य'[7] आमंतेति, आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए [8]•कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकिय॰ सरीरे भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए तेणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि[9]-परिजणेणं राएहि य खत्तिएहि य सद्धिं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं [10][11]•आसादेमाणे वीसादेमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ।

---

१. भ० ९।१६० ।
२. सं० पा०—करयल जाव कट्टु ।
३. सं० पा०—जहा ओववाइए कूणियस्स जाव [illegible] ।
४. सं० पा०—नगर जाव विहराहि ।
५. ओ० सू० [illegible] ।
६. सं० पा०—नियग जाव परिजण ।
७. रायाणो य खत्तिया (अ, क, म, स), रायखत्तिए य (ता, ब) ।
८. सं० पा०—ण्हाए जाव सरीरे ।
९. × (ता, ब) ।
१०. जाव (अ, क, ता, ब, म, स) ।
११. सं० पा०—एवं जहा तामली जाव [illegible]

जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं समाणे आयंते चोक्खे परमसुइब्भूए तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य° सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तं मित्त-नाइ-[1] •नियग-सयण-संबंधि-° परिजणं रायाणो य खत्तिए य सिवभद्दं च रायाणं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं[2] •तंबियं तावसं° भंडगं गहाय जे इमे गंगाकूलगा वाणपत्था तावसा भवंति, तं चेव जाव[3] तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए, पव्वइए वि य णं समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हति—'कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठं [4] •छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय विहरित्तए'— अयमेयारूवं° अभिग्गहं[5] अभिगिण्हित्ता पढमं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥

६४. तए णं से सिवे रायरिसी पढमछट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण[6]-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता पुरत्थिमं दिसं पोक्खेइ, पुरत्थिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं[7] रायरिसिं-अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, जाणि य तत्थ कंदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाणउ त्ति कट्टु पुरत्थिमं दिसं पसरइ[8], पसरित्ता जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव हरियाणि य ताइं गेण्हइ, गेण्हित्ता किढिण-संकाइयगं भरेइ, भरेत्ता दब्भे य कुसे य समिहाओ य पत्तामोडं च गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं ठवेइ, ठवेत्ता वेदिं वड्ढेइ, वड्ढेत्ता उवलेवण-संमज्जणं करेइ, करेत्ता दब्भ-कलसाहत्थगए[9] जेणेव गंगा महानदी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता 'गंगं महानदिं'[10] ओगाहेइ, ओगाहेत्ता जलमज्जणं करेइ, करेत्ता जलकीडं करेइ, करेत्ता जलाभिसेयं करेइ, करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूए देवय-पिति-कयकज्जे दब्भकलसाहत्थगए[11] गंगाओ महा-

---

1. सं० पा०—नाइ जाव परियण ।
2. सं० पा०—कडच्छुयं जाव भंडगं ।
3. भ० ११।५६ ।
4. सं० पा०—छट्ठेणं जाव अभिग्गहं ।
5. अभिग्गहं अभिगिण्हइ (क, ख, ता, ब, म, स), द्रष्टव्यम्—भ० ३।३३ सूत्रस्य पाद-टिप्पणम् ।
6. कढिण (अ) ।
7. सिवे (अ, स) ।
8. गण्हइ (ता, म) ।
9. दब्भसगब्भ° (अ), दब्भ[illegible] हत्थगए (ता, वृ) ।
10. गंगामहाणदी (क, ख, [illegible]
11. दब्भसगब्भकलसा (अ, ख [illegible]

नदीओ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाएहि य वेदिं[1] रएति[2], रएत्ता सरएण अरणिं महेइ, महेत्ता अग्गिं पाडेइ, पाडेत्ता अग्गिं संधुक्केइ, संधुक्केत्ता समिहाकट्ठाइं पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अग्गिं उज्जालेइ, उज्जालेत्ता "अग्गिस्स दाहिणे पासे, सत्तगाइं समादहे," [तं जहा—

सकहं वक्कलं ठाणं, सिज्जाभंडं कमंडलुं ।
दंडदारुं तहप्पाणं, अहे ताइं समादहे ॥१॥][3]

महुणा य घएण य तंदुलेहि य अग्गिं हुणइ, हुणित्ता चरुं साहेइ, साहेत्ता बलिं वइस्सदेवं[4] करेइ, करेत्ता अतिहिपूयं करेइ, करेत्ता तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेति ॥

६५. तए णं से सिवे रायरिसी दोच्चं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥

६६. तए णं से सिवे रायरिसी दोच्चे छट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता [5]•वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता° दाहिणगं दिसं पोक्खेइ, दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, सेसं तं चेव जाव[6] तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ॥

६७. तए णं से सिवे रायरिसी तच्चं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥

६८. तए णं से सिवे रायरिसि [7]•तच्चे छट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता पच्चत्थिमं दिसं पोक्खेइ°, पच्चत्थिमाए दिसाए वरुणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, सेसं तं चेव जाव[8] तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ॥

६९. तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥

७०. तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थे छट्ठक्खमण[9]•पारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता° उत्तरदिसं पोक्खेइ,

---

१. वेति (अ, क, ब, म)।
२. रएइ (ता)।
३. असौ कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यात प्रतीयते।
४. अग्निविस्सदेवं (अ, क, ता), बलि विस्सदेवं (ब), बलिविस्सदेवं (म), बलिविस्सदेवं (स)।
५. सं० पा०—एवं जहा पढमपारणगं नवरं।
६. भ० ११।६४।
७. सं० पा०—सेसं तं चेव नवरं।
८. भ० ११।६४।
९. सं० पा०—एवं तं चेव नवरं।

उत्तराए दिसाए वेसमणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, सेसं तं चेव जाव[1] तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ॥

७१ तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं[2] •तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए• आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए[3] •पगइउवसंतयाए पगइपयणुकोहमाण-मायालोभयाए मिउमद्दवसंपन्नयाए अल्लीणयाए• विणीययाए अण्णया कयाइ तयावरणिज्जाणं कम्माणं[4] खओवसमेणं ईहापूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स विब्भंगे नामं नाणे समुप्पन्ने। से णं तेणं विब्भंगनाणेणं समुप्पन्नेणं पासति अस्सिं लोए सत्त दीवे सत्त समुद्दे, तेण परं न जाणइ, न पासइ ॥

७२ तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[5] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे• समुप्पज्जित्था—अत्थि णं ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडुच्छुयं[6] •तंबियं तावसं•भंडगं किढिण-संकाइयगं च गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग[7]-•चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह•-पहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव[8] एवं परूवेइ- अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए[9] •सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना• दीवा य समुद्दा य ॥

७३. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग[10]-•चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह•-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[11] परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे

---

१. भ० ११।६४।
२. सं० पा०—दिसाचक्कवालेणं जाव आया-वेमाणस्स।
३. सं० पा०—पगइभद्दयाए जाव विणीययाए।
४. कम्माणे (अ, क, ता, ब, म)।
५. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
६. छड्डुयं (अ, स); छेच्छुयं (क, ब), सं० पा०—कडुच्छुयं जाव भंडगं।
७. सं० पा०—तिग जाव पहेसु।
८. भ० ११।७०।
९. सं० पा०—लोए जाव दीवा।
१०. सं० पा०—तिग जाव पहेसु।
११. भ० ११।७०।

नाणदसणे[1] •समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा°, तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। से कहमेय मन्ने एव ?

७४ तेण कालेण तेण समएण सामी समोसढे, परिसा[2] •निग्गया। धम्मो कहिओ परिसा° पडिगया॥

७५. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इंदभूई नाम अणगारे जहा वितियसए नियठुद्देसए जाव[3] घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वहुजणसद्द निसामेइ, वहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ—एव खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसि एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया! [4]•मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, एव खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण पर° वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। से कहमेय मन्ने एव ?

७६. तए ण भगव गोयमे वहुजणस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म जायसड्ढे [5]•जाव[6] समण भगव महावीर वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वदासी—एव खलु भंते! अह तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे हत्थिणापुरे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वहुजणसद्द निसामेमि—एवं खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया! मम अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एव खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा°, तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य॥

७७. से कहमेय भते! एव ?

गोयमादि! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी—जण्ण गोयमा! 'एव खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठछट्ठेण अणिक्खितेण दिसाचक्कवालेण तवोकम्मेण उड्ढ वाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए पगइउवसतयाए पगइपयणुकोहमाणमायालोभयाए मिउमद्दवसपन्नयाए अल्लीणयाए विणीययाए अण्णया कयाइ तयावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेण ईहापूहमग्गणगवेसण करेमाणस्स विब्भगे नाम नाणे

---

१. म० पा०—नाणदसणे जाव तेण।
२. म० पा०—परिसा जाव पडिगया।
३. भ० २।१०६-१०८।
४. म० पा०—त चेव जाव वोच्छिन्ना।
५. म० पा०—जहा नियठुद्देसए जाव तेण।
६. भ० २।११०।

समुप्पन्ने ।' 'त चेव सव्व भाणियव्व जाव' भडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता हत्थिणा-पुरे नगरे सिंघाडग-•'तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ— अत्थि ण देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे नाणद-सणे समुप्पन्ने, एव खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण पर° वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य ।

तए ण तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म '•हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णम-ण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एव खलु देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, एव खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा°, तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य, तण्ण मिच्छा । अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—एव खलु जबुद्दीवादीया दीवा, लवणादीया समुद्दा सठाणओ एगविहिविहाणा, वित्थारओ अणेगविहिविहाणा एव जहा जीवाभिगमे जाव' सयभूरमणपज्जवसाणा अस्सि तिरियलोए असखेज्जा दीवसमुद्दा पण्णत्ता समणाउसो !

७८ 'अत्थि ण भते ! जबुद्दीवे दीवे दव्वाइ—सवण्णाइ पि, अवण्णाइ पि सगधाइ पि अगधाइ पि, सरसाइ पि अरसाइ पि, सफासाइ पि अफासाइ पि, अण्णमण्ण-बद्धाइ अण्णमण्णपुट्ठाइ' •अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइ अण्णमण्ण° घडत्ताए चिट्ठति ? हता अत्थि'' ॥

७९ 'अत्थि ण भते ! लवणसमुद्दे दव्वाइ—सवण्णाइ पि अवण्णाइ पि, सगधाइ पि अगधाइ पि, सरसाइ पि अरसाइ पि, सफासाइ पि अफासाइ पि अण्णमण्ण-बद्धाइ अण्णमण्णपुट्ठाइ' •अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइ अण्णमण्ण° घडत्ताए चिट्ठति ? हता अत्थि'' ॥

---

१ अस्य पाठस्य स्थाने सर्वेषु आदर्शेषु निम्न-निर्दिष्ट पाठोऽस्ति—'से बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ', किन्तु पौर्वापर्यसमालोचनया नायं समुचितोऽस्ति । 'से बहुजणो' इत्यादिपाठ 'भडनिक्खेव करेइ' (७२) अत उत्तरवर्ती (७३) सूत्रे । अस्य [illegible] सूत्रेण सम्बन्धोऽस्ति ।

२. भ० ११।६३-७२ ।

३ स० पा०—त चेव जाव वोच्छिन्ना ।

४. स० पा०—त चेव जाव तेण ।

५ भ० ६।१४६।

६ स० पा०—अण्णमण्णपुट्ठाइ जाव घडत्ताए ।

७ [illegible] (ब. क. ठ. म) ।

८०. अत्थि ण भते ! धायइसडे दीवे दव्वाइं सवण्णाइं पि [1]•अवण्णाइं पि, सगंधाइं पि अगंधाइ पि, सरसाइ पि अरसाइ पि, सफासाइ पि अफासाइ पि अण्णमण्णवद्धाइ अण्णमण्णपुट्ठाइं अण्णमण्णवद्धपुट्ठाइं अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति ? हता अत्थि° । एव जाव—

८१ [2]•अत्थि ण भते ! सयभूरमणसमुद्दे दव्वाइं—सवण्णाइ पि अवण्णाइ पि, सगधाइ पि, अगधाइ पि, सरसाइ पि अरसाइ पि, सफासाइ पि अफासाइ पि अण्णमण्णवद्धाइ अण्णमण्णपुट्ठाइ अण्णमण्णवद्धपुट्ठाइ अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति? हता अत्थि° ॥

८२ तए ण सा महतिमहालिया महच्चपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए[3] एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ॥

८३ तए ण हत्थिणापुरे नगरे सिघाडग[4]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु वहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[5] परूवेइ जण्ण देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे नाण[6]•दसणे समुप्पन्ने, एव खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य° समुद्दा य। त नो इणट्ठे समट्ठे, समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एव खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठछट्ठेण त चेव जाव[7] भडनिक्खेव करेइ, करेत्ता हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग[8]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु वहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एव खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य° समुद्दा य। तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म जाव[9] तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य तण्णं मिच्छा, समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ—एव खलु जवुद्दीवादीया दीवा लवणादीया समुद्दा त चेव जाव[10] असंखेज्जा दीवसमुद्दा पण्णत्ता समणाउसो !

८४. तए ण से सिवे रायरिसी वहुजणस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था । तए ण

---

१. सं० पा०—जाव चेव ।
२. सं० पा०—सयंभूरमणसमुद्दे जाव हंता ।
३. अंतियं (क, ख, म) ।
४. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।
५. [illegible]
६. सं० पा०—नाण जाव समुद्दा ।
७. भ० ११।७३।
८. सं० पा०—सिंघाडग जाव समुद्दा ।
९. भ० ११।७३।
१०. भ० ११।७३।

तस्स सिवस्स रायरिसिस्स सकियस्स कखियस्स[1] •वितिगिच्छियस्स भेदसमावन्नस्स° कलुससमावन्नस्स से विभगे नाणे[2] खिप्पामेव परिवडिए ॥

८५. तए ण तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[3] •चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—एव खलु समणे भगव महावीरे तित्थगरे आदिगरे जाव[4] सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएण चक्केण जाव[5] सहसबवणे उज्जाणे अहापडिरूव[6] •ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ, त महप्फल खलु तहारूवाण अरहताण भगवताण नामगोयस्स[7] •वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-नमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स° गहणयाए ? त गच्छामि ण समण भगव महावीर वदामि जाव[8] पज्जुवासामि, एय णे इहभवे य परभवे य[9] •हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए° भविस्सइ त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तावसावसह अणुप्पविसइ अणुप्पविसित्ता सुबहु लोही-लोहकडाह[10]-•कडच्छुय तबिय तावसभडग° किढिण-सकाइयग च गेण्हइ गेण्हित्ता तावसावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता परिवडियविब्भगे हत्थिणापुर नगर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता जेणेव सहसबवणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो[11] वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता नच्चासन्ने नातिदूरे[12] •सुस्सूसमाणे नमसमाणे अभिमुहे विणएण °पजलिकडे[13] पज्जुवासइ ॥

८६ तए ण समणे भगव महावीरे सिवस्स रायरिसिस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए[14] धम्म परिकहेइ जाव[15] आणाए आराहए भवइ ॥

८७ तए ण से सिवे रायरिसी समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा निसम्म जहा खदओ जाव[16] उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सुबहु लोही-लोहकडाह[17]-•कडच्छुय तबिय तावसभडग° किढिण-सकाइयग च

१ स० पा०—कखियस्स जाव कलुस° ।
२. अण्णाणे (क, ब) ।
३. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
४. भ० १।७।
५ ओ० सू० १६।
६. स० पा०—अहापडिरूव जाव विहरइ ।
७. स० पा०—वदण नमसणयाए जाव गहणयाए।
८. भ० २।२०।
९. स० पा०—य जाव भविस्सइ ।
१०. स० पा०—लोहकडाह जाव किढिण ।
११. तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण (म) ।
१२. स० पा०—नातिदूरे जाव पजलिकडे ।
१३. पजलियडे (ता) ।
१४. पू०—ओ० सू० ७१।
१५ ओ० सू० ७१-७७।
१६. भ० २।५२।
१७. स० पा०—लोहकडाह जाव किढिण ।

एगते एडेइ, एडेत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोय करेइ, करेत्ता समणं भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एव जहेव उसभदत्तो तहेव पव्वइओ, तहेव एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, तहेव सव्व जाव[1] सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

८८. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—जीवा ण भते ! सिज्झमाणा कयरम्मि सघयणे सिज्झति ?
गोयमा ! वइरोसभणारायसघयणे सिज्झति, एव जहेव ओववाइए तहेव।
'सघयण सठाण, उच्चत आउय च परिवसणा।'[2]
एव सिद्धिगडिया निरवसेसा भाणियव्वा जाव[3]—
अव्वावाह सोक्ख, अणुहोति सासय सिद्धा ॥

८९. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ॥

दसमो उद्देसो

खेत्तलोय-पदं

९०. रायगिहे जाव[5] एव वयासी—कतिविहे ण भते ! लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे लोए पण्णत्ते, त जहा—दव्वलोए, खेत्तलोए, काललोए, भावलोए ॥

९१ खेत्तलोए ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, त जहा—अहेलोयखेत्तलोए[6], तिरियलोयखेत्तलोए, उड्ढलोयखेत्तलोए ॥

९२. अहेलोयखेत्तलोए ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—रयणप्पभापुढविअहेलोयखेत्तलोए[7] जाव[8] अहेसत्तमापुढविअहेलोयखेत्तलोए ॥

---

१. भ० ३।१२०,१५१।
२. [illegible] औपपातिके नोपलभ्यते। [illegible] उद्धृतमस्ति।
३. ओव० सू० १९४।
४. भ० १।५१।
५. भ० १।८-१०।
६. अहो० (अ, क, म, स), अधे० (ता)।
७. रयणप्पभ० (ता)।
८. भ० २।७५।

९३. तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! असंखेज्जविहे पण्णत्ते, तं जहा—जंबुद्दीवे दीवे तिरियलोयखेत्तलोए जाव सयंभूरमणसमुद्दे तिरियलोयखेत्तलोए ॥

९४. उड्ढलोयखेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पन्नरसविहे पण्णत्ते, तं जहा—सोहम्मकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए[1] •ईसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभलोय-लंतय - महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण°-अच्चुयकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए, गेवेज्जविमाणउड्ढलोयखेत्तलोए, अणुत्तरविमाणउड्ढलोयखेत्तलोए, ईसिपब्भारपुढविउड्ढलोयखेत्तलोए ॥

९५. अहेलोयखेत्तलोए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! तप्पागारसंठिए पण्णत्ते ॥

९६. तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! झल्लरिसंठिए पण्णत्ते ॥

९७. उड्ढलोयखेत्तलोए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! उड्ढमुइंगाकारसंठिए पण्णत्ते ॥

लोयसंठाण-पद

९८. लोए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! सुपइट्ठगसंठिए पण्णत्ते[2], तं जहा—हेट्ठा विच्छिण्णे, मज्झे संखित्ते, •उप्पिं विसाले, अहे पलियंकसंठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए, उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठिए ।
तंसि च णं सासयंसि लोगंसि हेट्ठा विच्छिण्णंसि जाव उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठियंसि उप्पण्णनाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणइ-पासइ, अजीवे वि जाणइ-पासइ, तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणं° अंतं करेइ ॥

अलोयसंठाण-पद

९९. अलोए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! झुसिरगोलसंठिए[4] पण्णत्ते ॥

---

१. सं॰ पा॰—सोहम्मकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए जाव अच्चुय॰ [illegible] ।
२. सं॰ पा॰—जहा सत्तमसए पढमुद्देसए जाव [illegible] ।
३. [illegible] (अ, क, ख, म, स) ।
४. झुसिर[illegible] (ब) ।

लोयालोए जीवाजीव-मग्गणा-पदं

१०० अहेलोयखेत्तलोए णं भंते ! किं १. जीवा २. जीवदेसा ३. जीवपदेसा ४ अजीवा ५. अजीवदेसा ६. अजीवपदेसा ?

[1]•गोयमा ! जीवा वि, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि ।

जे जीवा ते नियमा एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया, अणिंदिया ।

जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा ।

जे जीवपदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा बेइंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा ।

जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूविअजीवा य, अरूविअजीवा य ।

जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—खंधा, खंधदेसा, खंधपदेसा, परमाणुपोग्गला ।

जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा—१. नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे २ धम्मत्थिकायस्स पदेसा ३. नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे ४. अधम्मत्थिकायस्स पदेसा ५. नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे ६. आगासत्थिकायस्स पदेसा° ७ अद्धासमए ॥

१०१. तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! किं जीवा ? जीवदेसा ? जीवपदेसा ?

एवं चेव । एवं उड्ढलोयखेत्तलोए वि, नवरं—अरूवी छव्विहा, अद्धासमयो नत्थि ॥

१०२ लोए णं भंते ! किं जीवा ? जीवदेसा ? जीवपदेसा ?

जहा बितियसए अत्थिउद्देसए लोयागासे[2], नवरं—अरूवि अजीवा सत्तविहा[3] •पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए नोधम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, अधम्मत्थिकाए नोअधम्मत्थिकायस्स देसे°, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए, सेसं तं चेव ॥

१०३ अलोए णं भंते ! किं जीवा ? जीवदेसा ? जीवपदेसा ?

एवं जहा अत्थिकायउद्देसए अलोयागासे, तहेव निरवसेसं जाव[4] सव्वागासे अणंतभागूणे ॥

---

१. सं० पा०—एवं जहा इंदा दिसा तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव अद्धासमए ।
२. भ० २।१३६ १३८ ।
३. सं० पा०—सत्तविहा जाव अद्धासमए ।
४. भ० २।१४० ।

१०४. अहेलोगखेत्तलोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे किं १ जीवा २ जीवदेसा ३. जीवपदेसा ४. अजीवा ५. अजीवदेसा ६. अजीवपदेसा ?
गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि।
जे जीवदेसा ते नियमं १ एगिंदियदेसा २ अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स देसे ३. अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा। एवं मज्झिल्लविरहिओ[1] जाव अहवा एगिंदियदेसा य अणिंदियाण य देसा। जे जीवपदेसा ते नियमं १. एगिंदियपदेसा २ अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियस्स पदेसा ३ अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियाण य पदेसा, एवं आइल्लविरहिओ[2] जाव पंचिंदिएसु, अणिंदिएसु तियभंगो।
जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूवी अजीवा य, अरूवी अजीवा य। रूवी तहेव। जे अरूवी अजीवा ते पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसे, '•नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसे॰, अद्धासमए॥

१०५ तिरियलोगखेत्तलोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे किं जीवा ?
एवं जहा अहेलोगखेत्तलोगस्स तहेव, एवं उड्ढलोगखेत्तलोगस्स वि, नवरं—अद्धासमयो नत्थि। अरूवी चउव्विहा॥

१०६ '•लोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे किं जीवा॰ ?
जहा अहेलोगखेत्तलोगस्स एगम्मि आगासपदेसे॥

१०७ अलोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे—पुच्छा।
गोयमा ! नो जीवा, नो जीवदेसा, '•नो जीवपदेसा, नो अजीवा नो अजीवदेसा, नो अजीवपदेसा॰, एगे अजीवदव्वदेसे अगरुयलहुए अणंतेहिं अगरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासस्स अणंतभागूणे॥

१०८ दव्वओ णं अहेलोगखेत्तलोए 'अणंता जीवदव्वा, अणंता अजीवदव्वा', अ[illegible]

---

१. 'अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स य देसा' [illegible] मज्झिल्लविरहिओ [illegible] [illegible] एगिंदियस्स [illegible] अहवा देसा न संति, इत्यादि [illegible] (ब)।
२. [illegible] अणिंदिएसु [illegible] (अ, क, ख, ब, म)।
३. 'अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स य देसा' [illegible]
[illegible]
४ सं॰ पा॰—एवं [illegible]
५ भ॰ ११।१०४।
६. सं॰ पा॰—लोगस्स।
७ सं॰ पा॰—[illegible]
८ [illegible] (ख, ब, म)।

जीवाजीवदव्वा। एवं तिरियलोयखेत्तलोए वि, 'एव उड्ढलोयखेत्तलोए वि (एव लोए वि ?)'[1]। दव्वओ ण अलोए नेवत्थि जीवदव्वा, नेवत्थि अजीवदव्वा, नेवत्थि जीवाजीवदव्वा, एगे अजीवदव्वदेसे[2] •अगरुयलहुए अणतेहिं अगरुयलहुयगुणेहिं सजुत्ते° सव्वागासस्स अणतभागूणे।

कालओ ण अहेलोयखेत्तलोए न कयाइ नासि[3], •न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भविसु य, भवइ य, भविस्सइ य—धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए° निच्चे, एव[4] •तिरियलोयखेत्तलोए, एव उड्ढलोयखेत्तलोए, एव लोए एव° अलोए।

भावओ ण अहेलोयखेत्तलोए अणता वण्णपज्जवा, [5]•अणता गंधपज्जवा, अणता रसपज्जवा, अणता फासपज्जवा, अणंता संठाणपज्जवा, अणंता गरुयलहुयपज्जवा,° अणता अगरुयलहुयपज्जवा, एव[6] •तिरियलोयखेत्तलोए, एव उड्ढलोयखेत्तलोए, एव° लोए। भावओ ण अलोए नेवत्थि वण्णपज्जवा,[7] •नेवत्थि गधपज्जवा, नेवत्थि रसपज्जवा, नेवत्थि फासपज्जवा, नेवत्थि सठाणपज्जवा°, नेवत्थि गरुयलहुयपज्जवा[8], एगे अजीवदव्वदेसे[9] •अगरुयलहुए अणतेहिं अगरुयलहुयगुणेहिं सजुत्ते सव्वागासस्स° अणतभागूणे॥

लोयस्स परिमाण-पद

१०९. लोए णं भते ! केमहालए पण्णत्ते ?

गोयमा ! अयण्ण जबुद्दीवे दीवे सव्वदीव[10]-•समुद्दाण सव्वब्भतराए जाव[11] एग जोयणसयसहस्स आयाम-विक्खभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ सोलससहस्साइ

---

१. पूर्वक्रमानुसारेणात्र लोकसूत्रमपेक्षितमस्ति, किन्तु कस्मिन्नपि आदर्शे नैव लभ्यते। कारणमत्र न ज्ञायते। अपेक्षितसूत्रस्य पाठस्य क्रम एव स्यात्—'एव उड्ढलोयखेत्तलोए वि, एव लोए वि'।

२. स० पा०—अजीवदव्वदेसे जाव सव्वागासस्स

३. स० पा०—नासि जाव निच्चे।

४. स० पा०—एव जाव अलोए।

५. स० पा०—अणता गधपज्जवा जाव अणता।

६. स० पा०—एव जाव लोए।

७. स० पा०—वण्णपज्जवा जाव नेवत्थि।

८. आदर्शेषु (अ, क, ब, म, स, वृ), [illegible] पाठो दृश्यते [illegible]। अत्र 'नेवत्थि गरुयलहुयपज्जवा' एतत्पर्यन्त एव पाठो युज्यते 'ता' प्रतौ एवमेवास्ति। वृत्तिकृता 'जाव नेवत्थि अगरुयलहुयपज्जवा' इति पाठो लब्धस्तेन अर्थसङ्गतिकरणाय एव व्याख्या कृता—अगुरुलघुपर्यवोपेतद्रव्याणां पुद्गलानां तत्राभावात् (वृ)। यदि वृत्तिकृता शुद्धः पाठो लब्धोभविष्यत् तदा अस्या व्याख्याया नावश्यकताभविष्यत्।

९. स० पा०—अजीवदव्वदेसे जाव अणत-भागूणे।

१०. स० पा०—सव्वदीव जाव परिक्खेवेण।

११. ठा० १।२४८।

दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस अंगुलाइं अद्धंगुलगं च किंचिविसेसाहिए॰ परिक्खेवेणं।
तेणं कालेणं तेणं समएणं छ देवा महिड्ढीया जाव' महासोक्खा' जंबुद्दीवे दीवे मंदरे पव्वए मंदरचूलियं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठेज्जा। अहे णं चत्तारि दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ चत्तारि बलिपिंडे गहाय जंबुद्दीवस्स दीवस्स चउसु वि दिसासु बहियाभिमुहीओ ठिच्चा ते चत्तारि बलिपिंडे जमगसमगं बहियाभिमुहे' पक्खिवेज्जा। पभू णं गोयमा! तओ एगमेगे देवे ते चत्तारि बलिपिंडे धरणितलमसंपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए। ते णं गोयमा! देवा ताए उक्किट्ठाए' •तुरियाए चवलाए चंडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए॰ देवगईए एगे देवे पुरत्थाभिमुहे पयाते 'एगे देवे दाहिणाभिमुहे पयाते, एगे देवे पच्चत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे उत्तराभिमुहे पयाते, एगे देवे उड्ढाभिमुहे पयाते" एगे देवे अहोभिमुहे पयाते।
तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससहस्साउए दारए पयाते। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति। तए णं तस्स दारगस्स आउए पहीणे भवति, नो चेव णं' •ते देवा लोगंतं॰ संपाउणंति। तए णं तस्स दारगस्स अट्ठिमिंजा पहीणा भवति, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति। तए णं तस्स दारगस्स आसत्तमे वि कुलवंसे पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति। तए णं तस्स दारगस्स नामगोए वि पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति।
तेसि णं भंते! देवाणं किं गए बहुए? अगए बहुए? गोयमा! गए बहुए, नो अगए बहुए, गयाओ से अगए असंखेज्जइभागे, अगयाओ से गए असंखेज्जगुणे। लोए णं गोयमा! एमहालए पण्णत्ते॥

अलोयस्स परिमाण-पदं

११० अलोए णं भंते! केमहालए पण्णत्ते?
गोयमा! अयण्णं समयखेत्ते पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, •एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य अउणापन्नजोयणसए किंचि विसेसाहिए॰ परिक्खेवेणं।

तेण कालेणं तेण समएण दस देवा महिड्ढिया •'जाव' महासोक्खा जबुद्दीवे दीवे मदरे पव्वए मदरचूलिय सव्वग्रो समंता° सपरिक्खित्ताणं सचिट्ठेज्जा, ग्रहे ण ग्रट्ठ दिसाकुमारीग्रो महत्तरियाग्रो ग्रट्ठ वलिपिडे गहाय माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स चउसु वि दिसासु चउसु वि विदिसासु वहियाभिमुहीग्रो ठिच्चा ते ग्रट्ठ वलिपिडे जमगसमग वहियाभिमुहे[3] पक्खिवेज्जा। पभू ण गोयमा! तग्रो एगमेगे देवे ते अट्ठ बलिपिडे धरणितलमसंपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए। ते ण गोयमा! देवा ताए उक्किट्ठाए[4] •तुरियाए चवलाए चंडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए° देवगईए लोगते ठिच्चा असब्भावपट्ठवणाए एगे देवे पुरत्थाभिमुहे पयाते, [5]•एगे देवे दाहिणाभिमुहे पयाते, एगे देवे दाहिणपुरत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे दाहिणपच्चत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे पच्चत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे पच्चत्थउत्तराभिमुहे पयाते, एगे देवे उत्तराभिमुहे पयाते एगे देवे° उत्तरपुरत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे उड्ढाभिमुहे पयाते, एगे देवे ग्रहोभिमुहे पयाते।

तेण कालेण तेण समएण वाससयसहस्साउए दारए पयाते। तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवति, नो चेव ण ते देवा ग्रलोयंत सपाउणति। [6]•तए ण तस्स दारगस्स ग्राउए पहीणे भवति, नो चेव ण ते देवा ग्रलोयत संपाउणति। तए ण तस्स दारगस्स ग्रट्ठिमिजा पहीणा भवति, नो चेव ण ते देवा ग्रलोयत सपाउणति। तए ण तस्स दारगस्स ग्रासत्तमे वि कुलवसे पहीणे भवति, नो चेव ण ते देवा ग्रलोयंत सपाउणति। तए ण तस्स दारगस्स नामगोए वि पहीणे भवति, नो चेव ण ते देवा ग्रलोयंत सपाउणति।°

तेसि णं भते! देवाण कि गए वहुए? ग्रगए वहुए? गोयमा! नो गए वहुए, ग्रगए वहुए, गयाग्रो से ग्रगए अणंतगुणे, ग्रगयाग्रो से गए ग्रणतभागे। ग्रलोए णं गोयमा! एमहालए पण्णत्ते॥

लोगागासे जीवपदेस-पदं

१११. लोगस्स ण भते! एगम्मि ग्रागासपदेसे जे एगिंदियपदेसा जाव पंचिदियपदेसा ग्रणिदियपदेसा ग्रणमण्णवद्धा ग्रण्णमण्णपुट्ठा[7] •ग्रण्णमण्णवद्धपुट्ठा° ग्रण्णमण्ण-

---

१. सं० पा०—महिड्ढिया जाव सपरिक्खित्ताणं।
२. भ० ३।४।
३. बाहियाभिमुहीओ (ता, क, ख, ब, म, स); [illegible] 'बहियाभिमुहे' इति [illegible]। [illegible] प्रकरणे केनचिद् [illegible] परिवर्तनं दृश्यते। अस्माभिः पूर्वसूत्रानुसारी पाठः स्वीकृतः।
४. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव देवगईए।
५. सं० पा०—एवं जाव उत्तर°।
६. सं० पा०—न चेव जाव तेसि।
७. सं० पा०—अण्णमण्णपुट्ठा जाव अण्णमण्ण°

घडत्ताए चिट्ठंति ? अत्थि णं भंते ! अण्णमण्णस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पायंति ? छविच्छेदं वा करेंति ?

नो इणट्ठे समट्ठे ॥

११२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—लोगस्स णं एगम्मि आगासपदेसे जे एगिंदियपदेसा जाव अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति, नत्थि णं भंते ! अण्णमण्णस्स किंचि आबाहं वा[1] °वाबाहं वा उप्पायंति ? छविच्छेदं वा° करेंति ?

गोयमा ! से जहानामए नट्टिया सिया—सिंगारागारचारुवेसा[2] °संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास° कलिया रंगट्ठाणंसि जणसयाउलंसि (जणसहस्साउलंसि ?) जणसयसहस्साउलंसि बत्तीसइविहस्स नट्टस्स अण्णयरं नट्टविहिं उवदंसेज्जा, से नूणं गोयमा ! ते पेच्छगा तं नट्टियं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोएंति ?

हंता समभिलोएंति ।

ताओ णं गोयमा ! दिट्ठीओ तंसि नट्टियंसि सव्वओ समंता सन्निपडियाओ ?

हंता सन्निपडियाओ[3] । अत्थि णं गोयमा ! ताओ दिट्ठीओ तीसे नट्टियाए किंचि वि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पायंति ? छविच्छेदं वा करेंति ?

नो इणट्ठे समट्ठे ।

'सा वा'[4] नट्टिया तासिं दिट्ठीणं किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएति ? छविच्छेदं वा करेइ ?

नो इणट्ठे समट्ठे ।

ताओ वा दिट्ठीओ अण्णमण्णाए दिट्ठीए किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएंति ? छविच्छेदं वा करेंति ?

नो इणट्ठे समट्ठे । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—[5] °लोगस्स णं एगम्मि आगासपदेसे जे एगिंदियपदेसा जाव अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति, नत्थि णं अण्णमण्णस्स आबाहं वा वाबाहं वा उप्पायंति°, छविच्छेदं वा करेंति ॥

११३. लोगस्स णं भंते एगम्मि आगासपदेसे जहण्णपए जीवपदेसाणं, उक्कोसपए जीवपदेसाणं सव्वजीवाण य कयरे कयरेहिंतो[6] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

---

१. सं० पा०—आबाहं वा जाव करेंति ।
२. सं० पा०—सिंगारागारचारुवेसा जाव कलिया ।
३. सन्निपडियाओ (अ) ।
४. अहवा सा (अ, स) ।
५. सं० पा०—एवं चेव जाव छविच्छेदं ।
६. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा लोगस्स एगम्मि आगासपदेसे जहण्णपए जीवपदेसा, सव्वजीवा असखेज्जगुणा, उक्कोसपए जीवपदेसा विसेसाहिया ॥

११४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[1] ॥

एक्कारसमो उद्देसो

सुदंसणसेट्ठि-पदं

११५. तेण कालेण तेण समएण वाणियग्गामे नाम नगरे होत्था—वण्णओ[1]। दूतिपलासे चेइए—वण्णओ जाव[2] पुढविसिलापट्टओ । तत्थ ण वाणियग्गामे नगरे सुदसणे नाम सेट्ठी परिवसइ—अड्ढे जाव[4] बहुजणस्स अपरिभूए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव[5] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणे विहरइ । सामी समोसढे जाव[6] परिसा पज्जुवासइ ॥

११६ तए ण से सुदसणे सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे ण्हाए कय[7]°बलिकम्मे कयकोउय-मगल°-पायच्छित्ते सव्वालकारविभूसिए साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण पायविहारचारेण महयापुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते वाणियग्गाम नगर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव दूतिपलासे[8] चेइए जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर पचविहेण अभिगमेण अभिगच्छइ, [त जहा—सच्चित्ताण दव्वाण विओसरणयाए][9] जहा उसभदत्तो जाव[10] तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ॥

११७. तए ण समणे भगव महावीरे सुदसणस्स सेट्ठिस्स तीसे य महतिमहालियाए[11] परिसाए[12] धम्म परिकहेइ जाव[13] आणाए आराहए भवइ ॥

---

१. भ० १।५१।
२ ओ० सू० १।
३ ओ० सू० २-१३।
४ भ० २।९४।
५. भ० २।९४।
६. ओ० सू० १६-५२।
७ भ० पा०—इय जाव पायच्छित्ते ।
८. दूतिपलासए (अ) ।
९. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांश प्रतीयते ।
१०. भ० ९।१४५।
११. °महालयाए (न) ।
१२. पू०—ओ० सू० ७१।
१३. ओ० सू० ७१-७७।

११८. तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो[1] •आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता॰ नमंसित्ता एवं वयासी—

११९. कतिविहे णं भंते! काले पण्णत्ते?
सुदंसणा! चउव्विहे काले पण्णत्ते, तं जहा—पमाणकाले, अहाउनिव्वत्तिकाले, मरणकाले, अद्धाकाले॥

१२०. से किं तं पमाणकाले?
पमाणकाले दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दिवसप्पमाणकाले, राइप्पमाणकाले य। चउपोरिसिए दिवसे, चउपोरिसिया राई भवइ। उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ॥

१२१. जदा णं भंते! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा णं कतिभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी-परिहायमाणी जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ? जदा णं जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा णं कतिभागमुहुत्तभागेणं परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ?
सुदंसणा! जदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राई[illegible] भवइ, तदा णं बावीससयभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी-परि[illegible] [illegible]ण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ। जदा [illegible] तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा णं बावीस[illegible] भागेणं परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपंचमम[illegible] वा राईए वा पोरिसी भवइ॥

१२२. कदा णं भंते! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राई[illegible] भवइ? कदा वा जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पो[illegible]
सुदंसणा! जदा णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जह[illegible] मुहुत्ता राई भवइ, तदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दि[illegible] भवइ, जहण्णिया तिमुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ। जदा णं [illegible] रसमुहुत्तिया राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ [illegible] सिया अद्धपंचममुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ, जहण्णिया [illegible] पोरिसी भवइ॥

---

१. अ० भ०—तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता।

१२३ कदा णं भंते ! उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवई ? कदा वा उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ?

सुदसणा ! आसाढपुण्णिमाए उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ। पोसपुण्णिमाए[1] णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।।

१२४ अत्थि ण भंते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवति ?

हंता अत्थि ।।

१२५ कदा ण भंते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवति ?

सुदसणा ! चेत्तासोयपुण्णिमासु[2], एत्थ[3] ण दिवसा य राईओ य समा चेव भवति— पण्णरसमुहुत्ते दिवसे पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ। चउभागमुहुत्तभागूणा चउमुहुत्ता[4] दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ। सेत्त पमाणकाले ।।

१२६. से किं त अहाउनिव्वत्तिकाले ?

अहाउनिव्वत्तिकाले—जण्ण जेण नेरइएण वा तिरिक्खजोणिएण वा मणुस्सेण वा देवेण वा अहाउय निव्वत्तिय। 'सेत्त अहाउनिव्वत्तिकाले'[5] ।।

१२७. से किं त मरणकाले ?

मरणकाले—जीवो वा सरीराओ सरीर वा जीवाओ[6]। सेत्तं मरणकाले ।।

१२८ से किं त अद्धाकाले ?

'अद्धाकाले – से ण'[7] समयट्ठयाए[8] आवलियट्ठयाए जाव[9] उस्सप्पिणीट्ठयाए। एस ण सुदसणा ! अद्धा दोहारच्छेदेण[10] छिज्जमाणी जाहे विभाग नो हव्वमागच्छइ, सेत्त समए समयट्ठयाए। असखेज्जाण समयाण समुदयसमिइसमागमेण सा एगा आवलियत्ति पवुच्चइ। सखेज्जाओ आवलियाओ उस्सासो जहा सालिउद्देसए जाव[11]—

एएसि ण पल्लाण, कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिया।
त सागरोवमस्स उ, एगस्स भवे परिमाण ।।१।।

---

१. पोसस्स पुण्णिमाए (म)।
२. °मासु ग (क, ता, ब)।
३. [illegible] (त, म)।
४. [illegible]मुहुत्ता (त)।
५. [illegible] (त, म, [illegible]), [illegible] अहाउनिव्वत्तिकाले। [illegible] (ता)।
६ विगुच्यते इति शेषः (वृ)।
७ अद्धाकाले अणेगविहे पण्णत्ते (अ, स)।
८. समयद्धयाए (अ) सर्वत्र।
९. म० सू० ४१५।
१०. दोहारच्छेदेण (क, ब); दोहागकालेन [illegible]
११ भ० ६।१३२-१३४।

मयसि[1] सुत्तजागरा ओहीरमाणी-ओहीरमाणी अयमेयारूवं ओरालं कल्लाणं सिवं धण्णं मंगल्लं सस्सिरीयं महासुविणं[2] पासित्ता णं पडिबुद्धा।
हार-रयय-खीरसागर-ससंककिरण-दगरय-रययमहासेल-पंडरतरोरुरमणिज्ज[3]-पेच्छणिज्जं थिर-लट्ठ-पउट्ठ-वट्ट-पीवर-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-तिक्खदाढाविडंबिय-मुहं परिकम्मियजच्चकमलकोमल-माइयसोभंतलट्ठओट्ठं[4] 'रत्तुप्पलपत्तमउय-सुकुमालतालुजीहं'[5] मूसागयपवरकणगतावियआवत्तायंत-वट्ट-तडिविमलसरिसनयणं विसालपीवरोरुं पडिपुण्णविपुलखंधं मिउविसयसुहुमलक्खण-पसत्थ-विच्छिन्न[6]-केसरसडोवसोभियं ऊसिय[7]-सुनिम्मिय-सुजाय-अप्फोडियलंगूलं[8] सोमं सोमाकारं लीलायंतं जंभायंतं[9], नहयलाओ ओवयमाणं, निययवयणमतिवयंतं[10] सीहं सुविणे पासित्ता णं 'पडिबुद्धा समाणी'[11] हट्ठतुट्ठ[12]-चित्तमाणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण॰हियया धाराहयकलंबग पिव समूससियरोमकूवा[13] तं सुविणं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवलमसंभंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए गईए जेणेव बलस्स रण्णो सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बलं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं ओरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं मिय-महुर-मंजुलाहिं गिराहिं संलवमाणी-संलवमाणी पडिबोहेइ, पडिबोहेत्ता बलेणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयणभत्तिचित्तंसि[14] भद्दासणंसि निसीयति, निसीयित्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया बलं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव मिय-महुर-मंजुलाहिं गिराहिं संलवमाणी-संलवमाणी एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टिए तं चेव जाव नियगवयणमइवयंतं सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, तण्णं देवाणुप्पिया! एयस्स ओरालस्स जाव महासुविणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ?

---

१. अट्ट॰ (ता, म)।
२. महासुविणं सुमिणे (क, ता, ब, म, स, वृ)।
३. पंडुर॰ (अ, ब, स,)।
४. ॰उट्ठं (अ, क, ब, म)।
५. वाचनान्तरे—रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालतालु-निल्लालियग्गजीहं महुगुलियाभिसंतपिंगलच्छं (वृ)।
६. विच्छिन्न (ता, वृपा)।
७. उसिय (ता)।
८. अप्फोडियलंगोलं (ता)।
९. × (अ, स, ता, म)।
१०. निययवयणकमलसरमइवयंतं (ता, म)।
११. पडिबुद्धा तए णं सा पभावती देवी अयमेयारूवं ओरालं जाव सस्सिरीयं महासुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा समाणी (क, ता, ब, स)।
१२. सं॰ पा॰—हट्ठतुट्ठ जाव हियया।
१३. समूससित॰ (ब)।
१४. रयणभत्तिचित्तंसि (ता)।

१३४ तए णं से बले राया पभावईए देवीए अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ°चित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण°हियए धाराहयनीवसुरभिकुसुम-चंचुमालइयतणुए ऊसवियरोमकूवे तं सुविणं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता ईहं पविसइ, पविसित्ता अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविण्णाणेणं तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेइ, करेत्ता पभावइं देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव मंगल्लाहिं मिय-महुर-सस्सिरीयाहिं वग्गूहिं संलवमाणे-संलवमाणे एवं वयासी—ओराले णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे, कल्लाणे णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे जाव सस्सिरीए णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे, 'आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मंगल्लकारए णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे', अत्थलाभो देवाणुप्पिए! भोगलाभो देवाणुप्पिए! पुत्तलाभो देवाणुप्पिए! 'रज्जलाभो देवाणुप्पिए!' एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए! नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं कुलदीवं कुलपव्वयं कुलवडेंसयं कुलतिलगं कुलकित्तिकरं कुलनंदिकरं कुलजसकरं कुलाधारं कुलपायवं कुलविवद्धणकरं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरं °लक्खण-वंजण-गुणोववेयं माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगं° ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं सुरूवं देवकुमारसमप्पभं दारगं पयाहिसि।

से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते वित्थिण्ण-विउलबल-वाहणे रज्जवई राया भविस्सइ। तं ओराले णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे जाव आरोग्ग-तुट्ठि-°दीहाउ-कल्लाण°-मंगल्लकारए णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे त्ति कट्टु पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं दोच्चं पि तच्चं पि अणुबूहति॥

१३५ तए णं सा पभावती देवी बलस्स रण्णो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा करयल°परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एवमेयं देवाणुप्पिया! तहमेयं देवाणुप्पिया! अवितहमेयं देवाणुप्पिया! असंदिद्धमेयं देवाणुप्पिया! इच्छियमेयं देवाणुप्पिया! पडिच्छियमेयं देवाणु-

---

१. म० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए।
२. [illegible] (?, ?)।
३. [illegible] (?, ?, ?, ?, ?, ?)।
४. भ० ११।१३३।
५. [illegible] (ओ० ११।१०)।
६. भ० ११।१३३।
७. [illegible] (?)।
८. [illegible] (?)।
९. म० पा० [illegible] जाव [illegible]।
१०. [illegible] (?, ?)।
११. म० पा०—हट्ठ [illegible]।
१२. [illegible] (?, ?)।
१३. म० पा०—[illegible]।

प्पिया ! इच्छिय-पडिच्छियमेय देवाणुप्पिया ! से जहेय तुब्भे वदह त्ति कट्टु त सुविण सम्म पडिच्छइ[1], पडिच्छित्ता बलेण रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयणभत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवल[2]•मसभताए अविलबियाए रायहससरिसीए• गईए जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणिज्जसि निसीयति, निसीयित्ता एव वयासी—मा मे से उत्तमे पहाणे मगल्ले सुविणे अण्णेहि पावसुमिणेहि पडिहम्मिस्सइ त्ति कट्टु देवगुरुजणसबद्धाहि[3] पसत्थाहि मगल्लाहि धम्मियाहि[4] कहाहि सुविणजागरिय पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

१३६ तए ण से बले राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अज्ज सविसेस बाहिरिय उवट्ठाणसाल गधोदयसित्त[5]-सुइय-समज्जिओवलित्त सुगधवरपचवण्णपुप्फोवयारकलिय कालागरु-पवरकुदुरुक्क[6]•-तुरुक्क-धूव-मघमघेत-गधुद्धयाभिराम सुगधवरगधिय• गधवट्टिभूय करेह य कारवेह[7] य, करेत्ता य कारवेत्ता य सीहासण रएह, रएत्ता ममेतमाणत्तिय[8] पच्चप्पिणह ॥

१३७. तए ण ते कोडुबियपुरिसा जाव[9] पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सविसेस बाहिरिय उवट्ठाणसाल[10] •गधोदयसित्त-सुइय-समज्जिओवलित्त सुगधवरपचवण्णपुप्फोवयारकलिय कालागरु-पवरकुदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेत-गधुद्धयाभिराम सुगधवरगधिय गधवट्टिभूय करेत्ता य कारवेत्ता य सीहासण रएत्ता तमाणत्तिय• पच्चप्पिणति ॥

१३८. तए ण से बले राया पच्चूसकालसमयसि सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ[11] पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, अट्टणसाल अणुपविसइ, जहा ओववाइए तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणघरे जाव[12] ससिव्व पियदसणे नरवई[13] जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवाग-

१. सपडिच्छइ (ग, स) ।
२. स० पा०—अतुरियमचवल जाव गईए ।
३. देवगुरु° (ता) ।
४. [illegible] (ता) ।
५. गधोदए (व) ।
६. स० पा०—पवरकुदुरुक्क जाव गध° ।
७. करावेह (ग, म) ।
८. [illegible] (अ, क, ग, ता, ब, म, स) ।
९. भ० [illegible] ।
१०. स० पा०—उवट्ठाणसाल जाव पच्चप्पिणति ।
११. पायपीढाओ (ग, व, म) ।
१२. ओ० सू० ६३ ।
१३. नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ २ (अ, क, ग, ता, ब, म, स), ओवाइयानुसारेण स्वीकृतपाठ एव समीचीन । आदर्शेषु परिवर्तन [illegible] [illegible] । पाठसक्षेपे प्राय एव भवत्येव ।

च्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, निसीयित्ता अप्पणो उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अट्ठ भद्दासणाइं सेयवत्थपच्चत्थुयाइं सिद्धत्थगकयमंगलोवयाराइं रयावेइ, रयावेत्ता अप्पणो अदूरसामंते नाणामणि-रयणमंडियं अहियपेच्छणिज्जं महग्घ-वरपट्टणुग्गयं सण्हपट्टभत्तिसयचित्तताणं ईहामिय-उसभ-॰तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्तिचित्तं अब्भिंतरियं जवणियं अंछावेइ, अंछावेत्ता नाणामणिरयणभत्तिचित्तं अत्थरय-मउयमसूरगोत्थयं सेयवत्थपच्चत्थुयं अंगसुहफासयं सुमउयं पभावतीए देवीए भद्दासणं रयावेइ, रयावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासि—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अट्ठंगमहानिमित्तसुत्तत्थधारए विविह-सत्थकुसले सुविणलक्खणपाढए सद्दावेह॥

१३९. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता बलस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता सिग्घं तुरियं चवलं चंडं वेइयं हत्थिणपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव तेसिं सुविणलक्खणपाढगाणं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ते सुविणलक्खणपाढए सद्दावेंति॥

१४०. तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रण्णो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठा ण्हाया कय॰बलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सिद्धत्थग-हरियालियाकयमंगलमुद्धाणा सएहिं-सएहिं गेहेहिंतो निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता हत्थिणपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव बलस्स रण्णो भवणवरवडेंसए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भवणवरवडेंसगपडिदुवारंसि एगओ मिलंति, मिलित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल॰परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु॰ बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति। तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलेणं रण्णा वंदिय-पूइय-सक्कारिय-सम्माणिया समाणा पत्तेयं पत्तेयं पुव्वन्नत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति॥

१४१. तए णं से बले राया पभावतिं देविं जवणियंतरियं ठावेइ, ठवेत्ता पुप्फफल-पडिपुण्णहत्थे परेणं विणएणं ते सुविणलक्खणपाढए एवं वयासी—एवं खलु

सेस त चेव जाव—अणुबंधो त्ति। भवादेसेण दो भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ ३ ॥

२६७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ जहण्णेण अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा। लद्धी से जहा[1] एयस्स चेव सण्णिपंचिंदियस्स पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स मज्झिल्लएसु तिसु गमएसु सच्चेव इह वि मज्झिमेसु तिसु गमएसु कायव्वा। संवेहो जहेव[2] एत्थ चेव असण्णिस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु ४-६ ॥

२६८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ जहा पढमगमओ, नवर—ठिती अणुबंधो जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। कालादेसेण जहण्णेण पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडीपुहत्तमब्भहियाइ ७ ॥

२६९. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर कालादेसेण—जहण्णेण पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाओ ८ ॥

२७०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओमट्ठितीएसु। अवसेस त चेव, नवर—परिमाण ओगाहणा य जहा एयस्सेव तइयगमए। भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ९ ॥

२७१. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जति—कि सण्णिमणुस्सेहिंतो० ? असण्णिमणुस्सेहिंतो० ?
गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहिंतो वि, असण्णिमणुस्सेहिंतो वि उववज्जति ॥

२७२ असण्णिमणुस्से ण भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से ण भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा। लद्धी से तिसु वि गमएसु जहेव[3] पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स। संवेहो जहा एत्थ चेव असण्णिपंचिंदियस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु तहेव निरवसेसो भाणियव्वो १-३ ॥

---

१. भ० २४।१९७।
२. भ० २४।२५५-२५७।
३. भ० २४।१९९।

जाव भवादेसो त्ति कालादेसेण जहण्णेण पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियाइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ७ ॥

२८१. सो चेव जहण्णकालट्ठितिएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—कालादेसेण जहण्णेण पुव्वकोडी अतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाओ ८॥

२८२. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइ, एस चेव लद्धी जहेव सत्तमगमे। भवादेसेण दो भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा ९॥

२८३ जइ देवेहितो उववज्जति - कि भवणवासिदेवेहितो उववज्जति ? वाणमतर-जोइसिय-वेमाणियदेवेहितो० ?

गोयमा ! भवणवासिदेवेहितो जाव वेमाणियदेवेहितो वि ॥

२८४ जइ भवणवासिदेवेहितो—कि असुरकुमारभवणवासिदेवेहितो जाव थणिय-कुमारभवणवासिदेवेहिंतो० ?

गोयमा ! असुरकुमार जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहितो ॥

२८५ असुरकुमारे ण भते ! जे भविए पचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा। असुरकुमाराणं लद्धी नवसु वि गमएसु जहा[1] पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स। एव जाव ईसाणदेवस्स तहेव लद्धी। भवादेसेण सव्वत्थ अट्ठ भवग्गहणाइ, उक्कोसेण जहण्णेण दोण्णि भवग्गहणाइ। ठिति सवेह च सव्वत्थ जाणेज्जा १-९॥

२८६. नागकुमारे ण भते ! जे भविए ०? एस चेव वत्तव्वया, नवर—ठिति सवेह च जाणेज्जा १-९। एव जाव थणियकुमारे ॥

२८७ जइ वाणमतरेहितो० कि पिसाय ०? तहेव जाव—

२८८ वाणमतरे ण भते ! जे भविए पचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए ०? एव चेव, नवर—ठिति सवेह च जाणेज्जा १-९॥

२८९ जइ जोतिसिय ०? उववाओ तहेव जाव—

२९०. जोतिसिए णं भते ! जे भविए पचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए ०? एस चेव वत्तव्वया जहा पुढविक्काइयउद्देसए। भवग्गहणाइ नवसु वि गमएसु

---

१. भ० २४।२०७-२१०।

२९६ रयणप्पभपुढविनेरइए णं भंते ! से भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं मासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु । अवसेसा वत्तव्वया जहा[1] पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंतस्स तहेव, नवरं—परिमाणे जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति । जहा तहिं अंतोमुहुत्तेहिं तहा इहं मासपुहत्तेहिं संवेहं करेज्जा । सेसं तं चेव १-९।
जहा रयणप्पभाए 'तहा सक्करप्पभाए वि वत्तव्वया'[2], नवरं—जहण्णेणं वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडी आउएसु । ओगाहणा-लेस्सा-नाण-ट्ठिती-अणुबंध-संवेह-नाणत्तं च जाणेज्जा जहेव[3] तिरिक्खजोणियउद्देसए । एवं जाव तमापुढविनेरइए ॥
२९७. जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो भेदो जहा पंचिंदियतिरिक्खजोणियउद्देसए, नवरं—तेउ-वाऊ पडिसेहेयव्वा । सेसं तं चेव । जाव[4]—
२९८ पुढविक्काइए णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा ॥
२९९. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं जहेव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणस्स पुढविक्काइयस्स वत्तव्वया सा चेव इह वि उववज्जमाणस्स भाणियव्वा[5] नवसु वि गमएसु, नवरं—ततिय-छट्ठ-नवमेसु गमएसु परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति । जाहे अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ भवति ताहे पढमगमए अज्झवसाणा पसत्था वि अप्पसत्था वि बितियगमए अप्पसत्था, ततियगमए पसत्था भवंति । सेसं तं चेव निरवसेसं १-९॥
३००. जइ आउक्काइए० ? एवं आउक्काइयाण वि । एवं वणस्सइकाइयाण वि । एवं जाव चउरिंदियाण वि । असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिय-सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिय-असण्णिमणुस्स-सण्णिमणुस्सा य एते सव्वे वि जहा पंचिंदियतिरिक्ख-

---

१. भ० २४।२४०-२४२ ।
२. वि वत्तव्वया तहा सक्करप्पभाए वि (अ, क, व), वि वत्तव्वया तहा सक्करप्पभाए वि वत्तव्वया (स) ।
३. भ० २४।२४३ ।
४. भ० २४।२४५ ।
५. भ० २४।२४७ ।

जहण्णेण अट्ठारस सागरोवमाइ वासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण सत्तावन्नं सागरोवमाइ तिहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा । एव नव वि गमा, नवरं—ठिति अणुबंध संवेह च जाणेज्जा १-९। एव जाव अच्चुयदेवो, नवर—ठिति अणुबंध संवेह च जाणेज्जा। पाणयदेवस्स ठिती तिगुणिया सट्ठि सागरोवमाइ, आरणगस्स तेवट्ठि सागरोवमाइ, अच्चुयदेवस्स छावट्ठि सागरोवमाइ ॥

३०६. जइ कप्पातीतावेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति—कि गेवेज्जाकप्पातीता० ? अणुत्तरोववातियकप्पातीता० ?
गोयमा ! गेवेज्जाकप्पातीता, अणुत्तरोववातियकप्पातीता ॥

३०७ जइ गेवेज्जा०—कि हेट्ठिम-हेट्ठिम गेवेज्जगकप्पातीता जाव उवरिम-उवरिम गेवेज्जा० ?
गोयमा ! हेट्ठिम-हेट्ठिम गेवेज्जा जाव उवरिम-उवरिम गेवेज्जा ॥

३०८ गेवेज्जगदेवे ण भते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीट्ठितीएसु । अवसेस जहा आणयदेवस्स वत्तव्वया, नवर—ओगाहणा[1]—एगे भवधारणिज्जे सरीरए। से जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण दो रयणीओ। सठाण[2]—एगे भवधारणिज्जे सरीरे। से समचउरससठिए पण्णत्ते। पच समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा - वेदणासमुग्घाए जाव तेयगसमुग्घाए, नो चेव ण वेउव्वियतेयगसमुग्घाएहि समोहणिसु वा, समोहणति वा, समोहणिस्सति वा। ठिती अणुबंधो जहण्णेण बावीस सागरोवमाइ, उक्कोसेण एक्कतीस सागरोवमाइ। सेस त चेव। कालादेसेणं जहण्णेण बावीस सागरोवमाइ वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण तेणउति सागरोवमाइ तिहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा। एव सेसेसु वि अट्ठगमएसु, नवर—ठिति सवेह च जाणेज्जा १-९॥

३०९ जइ अणुत्तरोववाइयकप्पातीतावेमाणियदेवेहितो उववज्जति—कि विजयअणुत्तरोववाइय० ? वेजयतअणुत्तरोववाइय जाव सव्वट्ठसिद्ध० ?
गोयमा ! विजयअणुत्तरोववाइय जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय ॥

३१०. विजय-वेजयत-जयत-अपराजियदेवे ण भते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? एव जहेव गेवेज्जगदेवाण, नवर—ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्कोसेण एगा रयणी।

---

१. ओगाहणा गो (अ, क, ख, ता, ब, म, स)। २ सठाण गो (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

गोयमा ! संखेज्जवासाउय, असंखेज्जवासाउए जाव उववज्जंति० ॥
३१७. सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए वाणमंतरेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमट्ठितीएसु । सेसं तं चेव जहा नागकुमारउद्देसए जाव[1] कालादेसेणं जहण्णेणं सातिरेगा पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १ ॥
३१८. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, जहेव[2] नागकुमाराणं बितियगमे वत्तव्वया २ ॥
३१९. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं पलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं वि पलिओवमट्ठितीएसु । एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ठिती से जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं । संवेहो जहण्णेणं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । मज्झिमगमगा तिण्णि वि जहेव[3] नागकुमारेसु पच्छिमेसु तिसु गमएसु तं चेव जहा[4] नागकुमारुद्देसए, नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा । संखेज्जवासाउय तहेव,[5] नवरं—ठिती अणुबंधो संवेहं च उभओ ठितीए जाणेज्जा ३-९ ॥
३२०. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति० ? असंखेज्जवासाउयाणं जहेव[6] नागकुमाराणं उद्देसे तहेव वत्तव्वया, नवरं—तइयगमए ठिती जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं । ओगाहणा जहण्णेणं गाउयं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं । सेसं तहेव । संवेहो से जहा एत्थ चेव उद्देसए असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियाणं । संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से जहेव[7] नागकुमारुद्देसए, नवरं—वाणमंतरे ठितिं संवेहं च जाणेज्जा १-९ ॥
३२१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१ भ० २४।१४७ ।
२ भ० २४।१४८ ।
३. भ० २४।१५० ।
४. भ० २४।१५१ ।
५. भ० २४।१५२,१५३ ।
६. भ० २४।१५४-१५७ ।
७. भ० २४।१५८,१५९ ।

३२९ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, एस चेव ओहिया वत्तव्वया, नवरं—ठिती जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइ। एव अणुबंधो वि। सेस त चेव। एव पच्छिमा तिण्णि गमगा नेयव्वा[1], नवर—ठिति सवेह च जाणेज्जा ७-९। एते सत्त गमगा॥

३३० जइ सखेज्जवासाउयसण्णिपचिदिय०? सखेज्जवासाउयाण जहेव[2] असुरकुमारेसु उववज्जमाणाण तहेव नव वि गमा भाणियव्वा, नवर—जोतिसियठिति सवेह च जाणेज्जा। सेस तहेव निरवसेस[3] १-९॥

३३१ जइ मणुस्सेहितो उववज्जति०? भेदो तहेव जाव[4]—

३३२ असखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से ण भते! जे भविए जोइसिएसु उववज्जित्तए, से ण भते! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा? एव जहा असखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियस्स जोइसिएसु चेव उववज्जमाणस्स सत्त गमगा तहेव मणुस्साण वि, नवर—ओगाहणाविसेसो पढमेसु तिसु गमएसु ओगाहणा जहण्णेण सातिरेगाइ नव धणुसयाइ, उक्कोसेण तिण्णि गाउयाइ। मज्झिमगमए जहण्णेण सातिरेगाइ नव धणुसयाइ, उक्कोसेण वि सातिरेगाइ नव धणुसयाइं। पच्छिमेसु तिसु गमएसु जहण्णेण तिण्णि गाउयाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइ। सेस तहेव निरवसेस जाव[5] सवेहो त्ति॥

३३३. जइ सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो०? सखेज्जवासाउयाण जहेव[6] असुरकुमारेसु उववज्जमाणाण तहेव नव गमगा भाणियव्वा, नवर—जोतिसियठिति सवेह च जाणेज्जा। सेस त चेव निरवसेस १-९॥

३३४ सेव भते! सेव भते! त्ति॥

चउवीसइमो उद्देसो

३३५. सोहम्मदेवा ण भते! कओहितो उववज्जति—कि नेरइएहितो उववज्जति? भेदो जहा[7] जोइसियउद्देसए॥

३३६. असखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए ण भते! जे भविए सोहम्मगदेवेसु उववज्जित्तए, से ण भते! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेजा?

---

१ भाणियव्वा (अ, क)।
२. भ० २४।१३१-१३३।
३. निरवसेस भाणियव्व (स)।
४ भ० २४।१३४,१३५।
५. भ० २४।३२४-३२९।
६. भ० २४।१३६-१४२।
७. भ० २४।३२२,३२३।

३४४. असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं जहेव असंखेज्जवासाउयस्स सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स सोहम्मे कप्पे उववज्जमाणस्स तहेव सत्त गमगा, नवरं—आदिल्लएसु दोसु गमएसु ओगाहणा जहण्णेण गाउयं, उक्कोसेण तिण्णि गाउयाइं। ततियगमे जहण्णेण तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं। चउत्थगमए जहण्णेण गाउयं, उक्कोसेण वि गाउयं। पच्छिमएसु तिसु गमएसु जहण्णेण तिण्णि गाउयाइं उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं, सेसं तहेव निरवसेसं ॥

३४५. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो० ? एवं संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्साणं जहेव[1] असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव नव गमगा भाणियव्वा, नवरं सोहम्मदेवट्ठिति संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तं चेव १-९ ॥

३४६. ईसाणदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? ईसाणदेवाणं एस चेव सोहम्मगदेवसरिसा वत्तव्वया, नवरं—असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स जेसु ठाणेसु सोहम्मे उववज्जमाणस्स पलिओवमठिती तेसु ठाणेसु इहं सातिरेगं पलिओवमं कायव्वं। चउत्थगमे ओगाहणा जहण्णेणं धणुपुहत्तं, उक्कोसेण सातिरेगाइं दो गाउयाइं। सेसं तहेव ॥

३४७. असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सस्स वि तहेव ठिती जहा[2] पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स असंखेज्जवासाउयस्स। ओगाहणा वि जेसु ठाणेसु गाउयं तेसु ठाणेसु इहं सातिरेगं गाउयं। सेसं तहेव ॥

३४८. संखेज्जवासाउयाणं तिरिक्खजोणियाणं मणुस्साण य जहेव सोहम्मेसु उववज्जमाणाणं तहेव निरवसेसं नव वि गमगा, नवरं—ईसाणठिति संवेहं च जाणेज्जा ॥

३४९. सणंकुमारदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? उववाओ जहा[3] सक्करप्पभापुढविनेरइयाणं, जाव—

३५०. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए सणंकुमारदेवेसु उववज्जित्तए० ? अवसेसा परिमाणादीया भवादेसपज्जवसाणा सच्चेव वत्तव्वया भाणियव्वा जहा[4] सोहम्मे उववज्जमाणस्स, नवरं— सणंकुमारट्ठिति संवेहं च जाणेज्जा। जाहे य अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ भवति ताहे तिसु वि गमएसु पंच लेस्साओ आदिल्लाओ कायव्वाओ। सेसं तं चेव ॥

३५१. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति० ? मणुस्साणं जहेव सक्करप्पभाए उववज्जमाणाणं तहेव नव वि गमा भाणियव्वा[5], नवरं—सणंकुमारट्ठिति संवेहं च जाणेज्जा ॥

---

१. भ० २४।१३९-१४१।
२. भ० २४।३३६-३४१।
३. भ० २४।७८,१०५।
४. भ० २४।३४२।
५. भ० २४।१०५-१०८।

३५८. से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तेत्तीससागरोवम
ट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। अवसेसा जहा विजयाइसु उववज्जंताणं, नवरं-
भवादेसेण तिण्णि भवग्गहणाइं, कालादेसेण जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमा
दोहि वासपुहत्तेहि अब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइं दो
पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति
करेज्जा १॥

३५९ सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, एस चेव वत्तव्वया, नवरं-
ओगाहणा-ठितीओ रयणिपुहत्त-वासपुहत्ताणि। सेसं तहेव। संवेह
जाणेज्जा २॥

३६०. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, एस चेव वत्तव्वया, नवरं-
ओगाहणा जहण्णेण पंच धणुसयाइ, उक्कोसेण वि पंच धणुसयाइं। ठि
जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेस तहेव जाव भवादेसो त्ति
कालादेसेण जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइं दोहि पुव्वकोडीहि अब्भहिया
उक्कोसेण वि तेत्तीस सागरोवमाइ दोहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवति
काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा ३। एते तिण्णि गम
सव्वट्ठसिद्धगदेवाण ॥

३६१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे जाव[1] विहरइ ॥

गोयमा ! १. सव्वत्थोवे सुहुमस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए २. बादरस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ३. बेंदियस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ४ एव तेइदियस्स ५ एव चउरिदियस्स ६. असण्णिपचिदियस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ७ सण्णिस्स पचिदियस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ८ सुहुमस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ९ बादरस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे १० सुहुमस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे ११ बादरस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे १२ सुहुमस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे १३ बादरस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे १४ बेदियस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे १५. एव तेदियस्स, एव जाव १८. सण्णिपचिदियस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे १९ बेदियस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे २० एव तेदियस्स वि, एव जाव २३ सण्णिपचिदियस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे २४ बेदियस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे २५ एव तेइदियस्स वि, एव जाव २८ सण्णिपचिदियस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे ॥

समजोगि-विसमजोगि-पदं

४ दो भते ! नेरइया पढमसमयोववन्नगा कि समजोगी ? विसमजोगी[1] ?
गोयमा ! सिय समजोगी, सिय विसमजोगी ॥

५. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सिय समजोगी, सिय विसमजोगी ?
गोयमा ! आहारयाओ[2] वा से अणाहारए, अणाहारयाओ वा से आहारए सिय हीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए। जइ हीणे असखेज्जइभागहीणे वा, सखेज्जइभागहीणे वा, सखेज्जगुणहीणे वा, असखेज्जगुणहीणे वा। अह अब्भहिए असखेज्जइभागमब्भहिए वा, सखेज्जइभागमब्भहिए वा, सखेज्जगुणमब्भहिए वा, असखेज्जगुणमब्भहिए वा। से तेणट्ठेण[3] °गोयमा ! एव वुच्चइ—सिय समजोगी°, सिय विसमजोगी। एव जाव वेमाणियाण ॥

जोग-पदं

६ कतिविहे ण भते ! जोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पण्णरसविहे जोए पण्णत्ते, त जहा—१ सच्चमणजोए २ मोसमण-

---

१. कि विसमजोगी (अ,म); असमजोगी (ता)।
२. आहारओ (अ,स), आहाराओ (क,व,म)।
३. स० पा०—तेणट्ठेण जाव सिय।

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूविअजीवदव्वा य, अरूविअजीवदव्वा य ॥

११ '•अरूविअजीवदव्वा ण भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, त जहा—धम्मत्थिकाए, धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, अधम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए ॥

१२ रूविजीवदव्वा ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउविहा पण्णत्ता, त जहा—खधा, खधदेसा, खंधपदेसा, परमाणु-पोग्गले ॥

१३ ते ण भते ! कि सखेज्जा ? असखेज्जा ? अणंता ?
गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ॥

१४. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ?
गोयमा ! अणता परमाणुपोग्गला, अणता दुपदेसिया खंधा जाव अणता दसपदेसिया खधा, अणता सखेज्जपदेसिया खधा, अणता असखेज्जपदेसिया खधा, अणता अणंतपदेसिया खधा।° से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—ते ण नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ॥

१५ जीवदव्वा ण भते ! कि सखेज्जा ? असखेज्जा ? अणता ?
गोयमा ? नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ॥

१६ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जीवदव्वा ण नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ?
गोयमा ! असखेज्जा नेरइया जाव असखेज्जा वाउक्काइया, अणंता वणस्सइ-काइया, असखेज्जा बेंदिया, एव जाव वेमाणिया, अणता सिद्धा। से तेणट्ठेणं जाव अणता ॥

जीवाणं अजीवपरिभोग-पदं

१७. जीवदव्वाण भते ! अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ? अजीवदव्वाण जीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ?
गोयमा ! जीवदव्वाण अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति, नो अजीव-दव्वाणं जीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ॥

१८. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ[2]—•जीवदव्वाण अजीवदव्वा परिभोगत्ताए

---

१. स० पा०—एव एएण अभिलावेण जहा अजीवपज्जवा जाव से। २. स० पा०—वुच्चइ जाव हव्वमागच्छति।

पोग्गलगहण-पदं

२४. जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं ओरालियसरीरत्ताए गेण्हइ ताइं किं ठियाइं गेण्हइ ? अट्ठियाइं गेण्हइ ?
गोयमा ! ठियाइं पि गेण्हइ, अट्ठियाइं पि गेण्हइ ॥

२५. ताइं भंते ! किं दव्वओ गेण्हइ ? खेत्तओ गेण्हइ ? कालओ गेण्हइ ? भावओ गेण्हइ ?
गोयमा ! दव्वओ वि गेण्हइ, खेत्तओ वि गेण्हइ, कालओ वि गेण्हइ, भावओ वि गेण्हइ । ताइं दव्वओ अणंतपदेसियाइं दव्वाइं, खेत्तओ असंखेज्जपदेसोगाढाइं—एवं जहा पण्णवणाए पढमे आहारुद्देसए जाव[1] निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउदिसिं, सिय पंचदिसिं ॥

२६. जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं वेउव्वियसरीरत्ताए गेण्हइ ताइं किं ठियाइं गेण्हइ ? अट्ठियाइं गेण्हइ ? एवं चेव, नवरं—नियमं छद्दिसिं । एवं आहारगसरीरत्ताए वि ॥

२७. जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं तेयगसरीरत्ताए गेण्हइ—पुच्छा ।
गोयमा ! ठियाइं गेण्हइ, नो अट्ठियाइं गेण्हइ । सेसं जहा ओरालियसरीरस्स । कम्मगसरीरे एवं चेव । एवं जाव भावओ वि गेण्हइ ॥

२८. जाइं दव्वाइं दव्वओ गेण्हइ ताइं किं एगपदेसियाइं गेण्हइ ? दुपदेसियाइं गेण्हइ ? एवं जहा भासापदे जाव[2] आणुपुव्विं गेण्हइ, नो अणाणुपुव्विं गेण्हइ ॥

२९. ताइं भंते ! कतिदिसिं गेण्हइ ?
गोयमा ! निव्वाघाएणं जहा ओरालियस्स ॥

३०. जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं सोइंदियत्ताए गेण्हइ० ? जहा वेउव्वियसरीरं । एवं जाव जिब्भिंदियत्ताए । फासिंदियत्ताए जहा ओरालियसरीरं । मणजोगत्ताए जहा कम्मगसरीरं, नवरं—नियमं छद्दिसिं । एवं वइजोगत्ताए वि । कायजोगत्ताए[3] जहा ओरालियसरीरस्स ॥

३१. जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं आणापाणुत्ताए गेण्हइ० ? जहेव ओरालियसरीरत्ताए जाव सिय पंचदिसिं ॥

३२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥[4]

---

१. प० २८।१ ।
२. प० ११ ।
३. कायजोगत्ताए वि (क, स) ।
४. त्ति केइ चउवीसदंडएण एताणि पदाणि भण्णंति जस्स जं अत्थि (अ, क, ख, ता, ब, म, स), असौ पाठः वाचनान्तराभिप्रायकोस्ति । उद्देशकपूर्तौ लिखितस्यास्य मूले प्रवेशो जात इति सम्भाव्यते ।

गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ॥

४१. वट्टा ण भते ! सठाणा कि सखेज्जा०? एव चेव। एव जाव आयता ॥

४२ सक्करप्पभाए ण भते ! पुढवीए परिमडला सठाणा०? एव चेव। एव जाव आयता। एव जाव अहेसत्तमाए ॥

४३. सोहम्मे ण भते ! कप्पे परिमडला सठाणा०? एव जाव अच्चुए ॥

४४. गेवेज्जविमाणे ण भते ! परिमडला सठाणा०? एव चेव। एव अणुत्तरविमाणेसु वि। एव ईसिपब्भाराए वि ॥

४५. जत्थ ण भते ! एगे परिमडले सठाणे जवमज्झे तत्थ परिमडला सठाणा कि सखेज्जा ? असखेज्जा ? अणता ?
गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ॥

४६. वट्टा ण भते ! सठाणा कि सखेज्जा०? एव चेव। एव जाव आयता ॥

४७. जत्थ ण भते ! एगे वट्टे सठाणे जवमज्झे तत्थ परिमडला सठाणा०? एव चेव। वट्टा सठाणा एव चेव। एव जाव आयता। एवं एक्केक्केण सठाणेण पच वि चारेयव्वा 'जाव आयतेण'[1] ॥

४८. जत्थ ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए एगे परिमडले सठाणे जवमज्झे तत्थ ण परिमडला सठाणा कि सखेज्जा—पुच्छा।
गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता।

४९ वट्टा ण भते ! सठाणा कि सखेज्जा०? एवं चेव। एवं जाव आयता ॥

५० जत्थ ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए एगे वट्टे संठाणे जवमज्झे तत्थ ण परिमडला सठाणा कि सखेज्जा—पुच्छा।
गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता। वट्टा संठाणा एव चेव। एव जाव आयता। एव पुणरवि एक्केक्केण सठाणेण पच वि चारेयव्वा जहेव हेट्ठिल्ला जाव आयतेण। एव जाव अहेसत्तमाए। एव कप्पेसु वि जाव ईसीपब्भाराए पुढवीए ॥

पएसावगाहतो सठाणनिरूवण-पदं

५१. वट्टे ण भते ! सठाणे कतिपदेसिए कतिपदेसोगाढे पण्णत्ते ?
गोयमा ! वट्टे सठाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—घणवट्टे य, पतरवट्टे य।
तत्थ ण जे से पतरवट्टे से दुविहे पण्णत्ते, त जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य। तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं पचपदेसिए पचपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे। तत्थ ण जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेण बारसपदेसिए बारसपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे।

---

1. × (अ, क, व, म, स)।

जुम्मपदेसिए से जहण्णेण अट्ठपदेसिए अट्ठपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेण अणत-पदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे'[1] ॥

५४. आयते ण भते ! सठाणे कतिपदेसिए कतिपदेसोगाढे पण्णत्ते ?
गोयमा ! आयते ण सठाणे तिविहे पण्णत्ते, त जहा—सेढिआयते, पयरायते, घणायते ।
तत्थ ण जे से सेढिआयते से दुविहे पण्णत्ते, त जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य । तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण तिपदेसिए तिपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे[2] । तत्थ ण जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेण दुपदेसिए दुपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे'[3] ।
तत्थ ण जे से पतरायते से दुविहे पण्णत्ते, त जहा—ओयपदेसिए य जुम्मपदेसिए य । तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण पण्णरसपदेसिए पण्णरसपदेसोगाढे, उक्कोसेण 'अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे''[4] । तत्थ ण जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेण छप्पदेसिए छप्पदेसोगाढे, उक्कोसेण 'अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे''[5] ।
तत्थ ण जे से घणायते से दुविहे पण्णत्ते, त जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य । तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण पणयालीसपदेसिए पणयालीसपदेसोगाढे, उक्कोसेण 'अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे''[6] । तत्थ ण जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेण बारसपदेसिए बारसपदेसोगाढे, उक्कोसेण 'अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे''[7] ॥

५५. परिमडले ण भते ! सठाणे कतिपदेसिए—पुच्छा ।
गोयमा ! परिमडले ण सठाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—घणपरिमडले य, पतरपरिमडले य ।
तत्थ ण जे से पतरपरिमडले से जहण्णेण वीसइपदेसिए वीसइपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे'[8] ।
तत्थ ण जे से घणपरिमडले से जहण्णेण चत्तालीसइपदेसिए चत्तालीसइपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेण अणतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते ॥

संठाणाणं कडजुम्मादि-पदं

५६ परिमडले ण भते ! संठाणे दव्वट्ठयाए कि कडजुम्मे ? तेओए ? दावरजुम्मे[9] ? कलिओए ?

---

१. तहेव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
२ त चेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
३. तहेव (अ, क, ख, ता व, म, स) ।
४,५. अणत तहेव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
६,७. अणत तहेव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
८ तहेव (अ, क, ख, ता, म, स) ।
९. बादरजुम्मे (अ, क, ख, ता म) सर्वत्र ।

गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोए, नो दावरजुम्मे, कलियोए' ॥

५७ वट्टे ण भते ! सठाणे दव्वट्ठयाए० ? एव चेव । एव जाव आयते ॥

५८ परिमडला ण भते ! सठाणा दव्वट्ठयाए कि कडजुम्मा, तेयोया—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा, सिय तेओगा, सिय दावरजुम्मा, सिय कलियोगा, विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, नो तेओगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा । एव जाव आयता ॥

५९. परिमडले ण भते ! सठाणे पएसट्ठयाए कि कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे, सिय तेयोगे, सिय दावरजुम्मे, सिय कलियोगे । एव जाव आयते ॥

६०. परिमडला ण भते ! सठाणा पदेसट्ठयाए कि कडजुम्मा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेण कडजुम्मा वि, तेओगा वि, दावरजुम्मा वि, कलियोगा वि । एव जाव आयता ॥

६१. परिमडले ण भते ! सठाणे कि कडजुम्मपदेसोगाढे जाव कलियोगपदेसोगाढे ?
गोयमा ! कडजुम्मपदेसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे, नो कलियोगपदेसोगाढे ॥

६२ वट्टे ण भते ! सठाणे कि कडजुम्मपदेसोगाढे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे, सिय तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे, सिय कलियोगपदेसोगाढे ॥

६३ तसे ण भते ! सठाणे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे, सिय तेयोगपदेसोगाढे, सिय दावरजुम्मपदेसोगाढे, नो कलियोगपदेसोगाढे ॥

६४ चउरसे ण भते ! सठाणे० ? जहा वट्टे तहा चउरसे वि ॥

६५. आयते ण भते ! पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे जाव सिय कलियोगपदेसोगाढे ॥

६६. परिमडला ण भते ! सठाणा कि कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा ॥

६७ वट्टा ण भते ! संठाणा कि कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा वि, तेयोगपदेसोगाढा वि, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, कलियोगपदेसोगाढा वि ॥

---

१. कलिओदे (ता) ।

सपज्जवसियाओ, सिय सादीयाओ सपज्जवसियाओ । [illegible] ताओ जहा ओहियाओ [illegible] ॥

८६. सेढीओ णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्माओ, [illegible] पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्माओ, नो तेयोगाओ, नो दावरजुम्माओ, नो कलियोगाओ । एवं जाव उड्ढमहायताओ । लोगागाससेढीओ [illegible] सेढीओ वि ॥

८७ सेढीओ णं भंते ! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्माओ [illegible] । एवं जाव उड्ढमहायताओ ॥

८८. लोगागाससेढीओ णं भंते ! पदेसट्ठयाए—पुच्छा ॥
गोयमा ! सिय कडजुम्माओ, नो तेयोगाओ, सिय दावरजुम्माओ, नो कलियोगाओ । एवं पाईणपडीणायताओ वि, दाहिणुत्तरायताओ वि ॥

८९. उड्ढमहायताओ णं भंते ! पदेसट्ठयाए—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्माओ, नो तेयोगाओ, नो दावरजुम्माओ, नो कलियोगाओ ॥

९०. अलोगागाससेढीओ णं भंते ! पदेसट्ठयाए—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्माओ जाव सिय कलियोगाओ । एवं पाईणपडीणायताओ वि । एवं दाहिणुत्तरायताओ वि । उड्ढमहायताओ वि एवं चेव, नवरं—नो कलियोगाओ । सेसं तं चेव ॥

९१. कति णं भंते ! सेढीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुआयता, एगओवंका, दुहओवंका, एगओखहा, दुहओखहा, चक्कवाला, अद्धचक्कवाला ॥

अणुसेढि-विसेढि-गति-पद

९२. परमाणुपोग्गलाणं[1] भंते ! किं अणुसेढिं गती पवत्तति ? विसेढिं गती पवत्तति ?
गोयमा ! अणुसेढिं गती पवत्तति, नो विसेढिं गती पवत्तति ॥

९३ दुपएसियाणं भंते ! खंधाणं अणुसेढिं गती पवत्तति ? विसेढिं गती पवत्तति ?
एवं चेव । एवं जाव अणंतपदेसियाणं खंधाणं ॥

९४. नेरइयाणं भंते ! किं अणुसेढिं गती पवत्तति ? विसेढिं गती पवत्तति ? एवं चेव । एवं जाव वेमाणियाणं ॥

निरयावास-पद

९५. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवतिया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?

---

१. °पुग्गलाणं (अ) ।

गोयमा ! तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, एवं जहा पढमसते पंचमुद्देसए जाव[1] अणुत्तरविमाण[2] त्ति ॥

गणिपिडय-पदं

९६. कतिविहे णं भंते ! गणिपिडए पण्णत्ते ?

गोयमा ! दुवालसंगे गणिपिडए पण्णत्ते, तं जहा—आयारो जाव[3] दिट्ठिवाओ ॥

९७. से किं तं आयारो ? आयारे णं समणाणं निग्गंथाणं आयार-गोयर-विणय-वेणइय-सिक्खा-भासा-अभासा-चरण-करण-जाया-माया-वित्तीओ आघविज्जति, एवं अंगपरूवणा भाणियव्वा जहा नंदीए जाव[4]—

> सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निज्जुत्तिमीसओ भणिओ ।
> तइओ य निरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥१॥

अप्पाबहुय-पदं

९८. एएसि णं भंते ! नेरइयाणं जाव देवाणं सिद्धाण य पंचगतिसमासेणं कयरे कयरेहिंतो [5]°अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?°

गोयमा ! अप्पाबहुयं जहा[6] बहुवत्तव्वयाए, अट्ठगतिसमासप्पाबहुगं[7] च ॥

९९. एएसि णं भंते ! सइंदियाणं, एगिंदियाणं जाव अणिंदियाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? एयं पि जहा बहुवत्तव्वयाए तहेव ओहियं पयं भाणियव्वं, सकाइयअप्पाबहुगं[8] तहेव ओहियं भाणियव्वं[9] ॥

१००. एएसि णं भंते ! जीवाणं पोग्गलाणं[10] °अद्धासमयाणं सव्वदव्वाणं सव्वपदेसाणं° सव्वपज्जवाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? जहा बहुवत्तव्वयाए ॥

१०१. एएसि णं भंते ! जीवाणं, आउयस्स कम्मस्स बंधगाणं अबंधगाण ? जहा बहुवत्तव्वयाए जाव[11] आउयस्स कम्मस्स अबंधगा विसेसाहिया ॥

१०२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. भ० १।२१२-२१५ ।
२. एगा अणु° (अ) ।
३. भ० २०।७५ ।
४. नंदी सू० ८१-१२७ ।
५. सं० पा०—पुच्छा ।
६. प० ३ ।
७. °समासप्पा° (ता, ब, म) ।
८. सकायअप्पा° (ब) ।
९. प० ३ ।
१०. सं० पा०—पोग्गलाण जाव सव्वपज्जवाण । अस्य पूर्ति प्रज्ञापनाया तृतीयपदात् कृता, वृत्तौ किञ्चिद्भेदो लभ्यते—इह यावत्करणादिदं दृश्य—'समयाणं दव्वाणं पएसाणं' ति ।
११. प० ३ ।

सपज्जवसियाओ, सिय साईयाओ अपज्जवसियाओ। सेसं तं चेव। पाईणपडीणाय-
ताओ जहा ओहियाओ तहेव भाणियव्वाओ ॥

८६. सेढीओ णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्माओ, तेयोगाओ—पुच्छा।
गोयमा ! कडजुम्माओ, नो तेयोगाओ, नो दावरजुम्माओ, नो कलियोगाओ।
एवं जाव उड्ढमहायताओ। लोगागाससेढीओ एवं चेव। एवं अलोगागास-
सेढीओ वि ॥

८७. सेढीओ णं भंते ! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्माओ—? एवं चेव। एवं जाव
उड्ढमहायताओ ॥

८८. लोगागाससेढीओ णं भंते ! पदेसट्ठयाए—पुच्छा ॥
गोयमा ! सिय कडजुम्माओ, नो तेयोगाओ, सिय दावरजुम्माओ, नो कलियो-
गाओ। एवं पाईणपडीणायताओ वि, दाहिणुत्तरायताओ वि ॥

८९ उड्ढमहायताओ ण भंते ! पदेसट्ठयाए—पुच्छा।
गोयमा ! कडजुम्माओ, नो तेयोगाओ, नो दावरजुम्माओ, नो कलियोगाओ ॥

९०. अलोगागाससेढीओ णं भते ! पदेसट्ठयाए—पुच्छा।
गोयमा ! सिय कडजुम्माओ जाव सिय कलियोगाओ। एवं पाईणपडीणाय-
ताओ वि। एवं दाहिणुत्तरायताओ वि। उड्ढमहायताओ वि एवं चेव, नवरं
—नो कलियोगाओ। सेसं तं चेव ॥

९१. कति णं भते ! सेढीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुआयता, एगओवंका,
दुहओवका, एगओखहा, दुहओखहा, चक्कवाला, अद्धचक्कवाला ॥

अणुसेढि-विसेढि-गति-पद

९२. परमाणुपोग्गलाण[1] भते ! कि अणुसेढि गती पवत्तति ? विसेढि गती पवत्तति ?
गोयमा ! अणुसेढि गती पवत्तति, नो विसेढि गती पवत्तति ॥

९३ दुपएसियाण भते ! खधाण अणुसेढि गती पवत्तति ? विसेढि गती पवत्तति ?
एव चेव। एव जाव अणंतपदेसियाण खधाणं ॥

९४. नेरइयाण भते ! किं अणुसेढि गती पवत्तति ? विसेढि गती पवत्तति ? एव
चेव। एव जाव वेमाणियाण ॥

निरयावास-पद

९५. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवतिया निरयावाससयसहस्सा
पण्णत्ता ?

---

१. °पुग्गलाणं (अ)।

गोयमा ! तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, एवं जहा पढमसते पंचमुद्देसए जाव[1] अणुत्तरविमाण[2] त्ति ॥

गणिपिडय-पदं

९६. कतिविहे णं भंते ! गणिपिडए पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुवालसंगे गणिपिडए पण्णत्ते, तं जहा—आयारो जाव[3] दिट्ठिवाओ ॥

९७. से किं तं आयारो ? आयारे णं समणाणं निग्गंथाणं आयार-गोयर-विणय-वेणइय-सिक्खा-भासा-अभासा-चरण-करण-जाया-माया-वित्तीओ आघविज्जंति, एवं अंगपरूवणा भाणियव्वा जहा नंदीए जाव[4]—

सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निज्जुत्तिमीसओ भणिओ ।
तइओ य निरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥१॥

अप्पाबहुय-पदं

९८. एएसि णं भंते ! नेरइयाणं जाव देवाणं सिद्धाण य पंचगतिसमासेणं कयरे कयरेहिंतो [5]•अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?•
गोयमा ! अप्पाबहुयं जहा[6] बहुवत्तव्वयाए, अट्ठगतिसमासप्पाबहुगं[7] च ॥

९९. एएसि णं भंते ! सइंदियाणं, एगिंदियाणं जाव अणिंदियाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? एयं पि जहा बहुवत्तव्वयाए तहेव ओहियं पयं भाणियव्वं, सकाइयअप्पाबहुगं[8] तहेव ओहियं भाणियव्वं[9] ॥

१००. एएसि णं भंते ! जीवाणं पोग्गलाणं[10] •अद्धासमयाणं सव्वदव्वाणं सव्वपदेसाणं• सव्वपज्जवाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? जहा बहुवत्तव्वयाए ॥

१०१. एएसि णं भंते ! जीवाणं, आउयस्स कम्मस्स बंधगाणं अबंधगाण ? जहा बहुवत्तव्वयाए जाव[11] आउयस्स कम्मस्स अबंधगा विसेसाहिया ॥

१०२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

———

१. भ० १।२१२-२१५ ।
२. एगा अणु° (अ) ।
३. भ० २०।७५ ।
४. नंदी सू० ८१-१२७ ।
५. सं० पा०—पुच्छा ।
६. प० ३ ।
७. °समासप्पा° (ता, ब, म) ।
८. सकाइयअप्पा° (ब) ।
९. प० ३ ।
१०. सं० पा०—पोग्गलाणं जाव सव्वपज्जवाणं । अस्य पूर्ति प्रज्ञापनाया तृतीयपदात् कृता, वृत्तौ किञ्चिद्भेदो लभ्यते—इह यावत्करणादिदं दृश्य—'समयाणं दव्वाण पएसाण' त्ति ।
११. प० ३ ।

चउत्थो उद्देसो

जुम्म-पदं

१०३ कति ण भते ! जुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, त जहा—कडजुम्मे जाव कलियोगे ॥

१०४. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता—कडजुम्मे जाव कलियोगे ? एव जहा अट्ठारसमसते[1] चउत्थे उद्देसए जाव से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ ॥

१०५. नेरइयाण भते ! कति जुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, त जहा—कडजुम्मे जाव कलियोगे ॥

१०६ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइयाण चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, त जहा—कडजुम्मे ? अट्ठो तहेव । एव जाव वाउकाइयाण ॥

१०७ वणस्सइकाइयाण भते ! पुच्छा ।
गोयमा ! वणस्सइकाइया सिय कडजुम्मा, सिय तेयोगा, सिय दावरजुम्मा, सिय कलियोगा ॥

१०८ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—वणस्सइकाइया जाव कलियोगा ?
गोयमा ! उववाय पडुच्च । से तेणट्ठेण त चेव । बेदियाण जहा नेरइयाण । एव जाव वेमाणियाण । सिद्धाण जहा वणस्सइकाइयाण ॥

१०९ कतिविहा ण भते ! सव्वदव्वा पण्णत्ता ?
गोयमा ! छव्विहा सव्वदव्वा पण्णत्ता, त जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए जाव अद्धासमए ॥

११० धम्मत्थिकाए ण भते ! दव्वट्ठयाए कि कडजुम्मे जाव कलियोगे ?
गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, कलियोगे । एव अधम्मत्थि-काए वि । एव आगासत्थिकाए वि ॥

१११. जीवत्थिकाए ण भते !—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे ॥

११२ पोग्गलत्थिकाए ण भते !—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे । अद्धासमए जहा जीवत्थिकाए ॥

११३. धम्मत्थिकाए ण भते ! पदेसट्ठयाए कि कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे । एव जाव अद्धासमए ॥

---

१. भ० २५।५४ ।

२. भ० १८।९० ।

११४. एएसि ण भते ! धम्मत्थिकाय-अधम्मत्थिकाय जाव अद्धासमयाण दव्वट्ठ-याए ०? एएसि ण अप्पाबहुग जहा[1] बहुवत्तव्वयाए तहेव निरवसेस ॥

११५ धम्मत्थिकाए ण भते ! कि ओगाढे ? अणोगाढे ?
गोयमा ! ओगाढे, नो अणोगाढे ॥

११६ जइ ओगाढे कि सखेज्जपदेसोगाढे ? असखेज्जपदेसोगाढे ? अणतपदेसोगाढे ?
गोयमा ! नो सखेज्जपदेसोगाढे, असखेज्जपदेसोगाढे, नो अणतपदेसोगाढे ॥

११७ जइ असखेज्जपदेसोगाढे कि कडजुम्मपदेसोगाढे—पुच्छा।
गोयमा ! कडजुम्मपदेसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे, नो कलियोगपदेसोगाढे। एव अधम्मत्थिकाए वि। एव आगासत्थिकाए वि। जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए, अद्धासमए एव चेव ॥

११८ इमा ण भते ! रयणप्पभा पुढवी कि ओगाढा ? अणोगाढा ? जहेव धम्म-त्थिकाए। एव जाव अहेसत्तमा। सोहम्मे एव चेव। एव जाव ईसिपब्भारा पुढवी ॥

११९ जीवे ण भते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मे—पुच्छा।
गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, कलियोगे। एव नेरइए वि। एव जाव सिद्धे ॥

१२० जीवा ण भते ! दव्वट्ठयाए कि कडजुम्मा—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा, विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा ॥

१२१. नेरइया ण भते ! दव्वट्ठयाए—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेणं नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा। एव जाव सिद्धा ॥

१२२ जीवे ण भते ! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्मे—पुच्छा।
गोयमा ! जीवपदेसे पडुच्च कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलि-योगे। सरीरपदेसे पडुच्च सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे। एव जाव वेमाणिए ॥

१२३. सिद्धे ण भते ! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्मे—पुच्छा।
गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे ॥

१२४ जीवा ण भते ! पदेसट्ठयाए कि कडजुम्मा—पुच्छा।
गोयमा ! जीवपदेसे पडुच्च ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा। सरीरपदेसे पडुच्च ओघादेसेणं सिय

---

१. प० ३।

[illegible]
[illegible] ॥

१२५. सिद्धा णं भंते !—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा ॥

१२६. जीवे णं भंते ! किं कडजुम्मपदेसोगाढे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे जाव सिय कलियोगपदेसोगाढे । एवं जाव सिद्धे ॥

१२७. जीवा णं भंते ! किं कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि ॥

१२८. नेरइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मपदेसोगाढा जाव सिय कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि । एवं 'एगिंदिय-सिद्धवज्जा सव्वे वि'[1] । सिद्धा एगिंदिया य जहा जीवा ॥

१२९. जीवे णं भंते ! किं कडजुम्मसमयट्ठितीए—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मसमयट्ठितीए, नो तेयोगसमयट्ठितीए, नो दावरजुम्मसमयट्ठितीए, नो कलियोगसमयट्ठितीए ॥

१३०. नेरइए णं भंते !—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मसमयट्ठितीए जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीए । एवं जाव वेमाणिए । सिद्धे जहा जीवे ॥

१३१. जीवा णं भंते !—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मसमयट्ठितीया, नो तेयोगसमयट्ठितीया, नो दावरजम्मसमयट्ठितीया, नो कलियोगसमयट्ठितीया ॥

१३२. नेरइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मसमयट्ठितीया जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीया वि, विहाणादेसेण कडजुम्मसमयट्ठितीया वि जाव कलियोगसमयट्ठितीया वि । एवं जाव वेमाणिया । सिद्धा जहा जीवा ॥

१३३. जीवे णं भंते ! कालावण्णपज्जवेहिं किं कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! जीवपदेसे पडुच्च नो कडजुम्मे जाव नो कलियोगे । सरीरपदेसे

---

१. एगिंदियवज्जा जाव (क, ता, व) ।

सेय-निरेय-पदं

१४१. जीवा ण भंते ! कि सेया ? निरेया ?
गोयमा ! जीवा सेया वि, निरेया वि ॥

१४२. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—जीवा सेया वि, निरेया वि ?
गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—संसारसमावण्णगा य, असंसार-समावण्णगा[1] य । तत्थ ण जे ते असंसारसमावण्णगा ते ण सिद्धा । सिद्धा ण दुविहा पण्णत्ता, त जहा—अणतरसिद्धा य, परपरसिद्धा य । तत्थ ण जे ते परपरसिद्धा ते ण निरेया । तत्थ ण जे ते अणतरसिद्धा ते ण सेया ॥

१४३. ते ण भते ! कि देसेया ? सव्वेया ?
गोयमा ! नो देसेया, सव्वेया । तत्थ ण जे ते ससारसमावण्णगा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सेलेसिपडिवण्णगा य, असेलेसिपडिवण्णगा य । तत्थ ण जे ते सेलेसिपडिवण्णगा ते ण निरेया, तत्थ ण जे ते असेलेसिपडिवण्णगा ते ण सेया ॥

१४४. ते ण भते ! कि देसेया ? सव्वेया ?
गोयमा ! देसेया वि, सव्वेया वि । से तेणट्ठेण[2] °गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवा सेया वि,° निरेया वि ॥

१४५. नेरइया ण भते ! कि देसेया ? सव्वेया ?
गोयमा ! देसेया वि, सव्वेया वि ॥

१४६. से केणट्ठेणं जाव सव्वेया वि ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—विग्गहगतिसमावण्णगा य, अविग्गहगतिसमावण्णगा य । तत्थ ण जे ते विग्गहगतिसमावण्णगा ते ण सव्वेया, तत्थ ण जे ते अविग्गहगतिसमावण्णगा ते णं देसेया । से तेणट्ठेण जाव सव्वेया वि । एव जाव वेमाणिया ॥

पोग्गल-पदं

१४७ परमाणुपोग्गला ण भते ! कि संखेज्जा ? असखेज्जा ? अणंता ?
गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणंता । एव जाव अणतपदेसिया खधा ॥

१४८. एगपदेसोगाढा ण भते ! पोग्गला कि संखेज्जा ? असखेज्जा ? अणता ? एव चेव । एव जाव असखेज्जपदेसोगाढा ॥

---

१. असंसारसमावण्णगा य संसार° (ता) । २. स० पा०—तेणट्ठेण जाव निरेया ।

१४६ एगसमयट्ठितीया, ण भते ! पोग्गला कि सखेज्जा० ? एव चेव। एव जाव असखेज्जसमयट्ठितीया ।।

१५० एगगुणकालगा ण भते ! पोग्गला कि सखेज्जा० ? एव चेव। एव जाव अणतगुणकालगा। एव अवसेसा वि वण्णगधरसफासा नेयव्वा जाव अणतगुणलुक्ख त्ति ।।

१५१ एएसि ण भते ! परमाणुपोग्गलाण दुपदेसियाण य खधाण दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहितो वहुया[1] ?
गोयमा ! दुपदेसिएहितो खधेहितो परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए वहुया ।।

१५२ एएसि ण भते ! दुपदेसियाण तिपदेसियाण य खधाण दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहितो वहुया ?
गोयमा ! तिपदेसिएहितो खधेहितो दुपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए वहुया। एव एएण गमएण जाव दसपदेसिएहितो खधेहितो नवपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए वहुया ।।

१५३ एएसि ण भते ! दसपदेसियाण—पुच्छा।
गोयमा ! दसपदेसिएहितो खधेहितो सखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए वहुया ।।

१५४ एएसि ण भते ! सखेज्जपदेसियाण— पुच्छा।
गोयमा ! सखेज्जपदेसिएहितो खधेहितो असखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए वहुया ।।

१५५ एएसि ण भते ! असखेज्जपदेसियाण—पुच्छा।
गोयमा ! अणतपदेसिएहितो खधेहितो असखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए वहुया ।।

१५६ एएसि ण भते ! परमाणुपोग्गलाण दुपदेसियाण य खधाण पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहितो वहुया ?
गोयमा ! परमाणुपोग्गलेहितो दुपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए वहुया। एवं एएण गमएण जाव नवपदेसिएहितो खधेहितो दसपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए वहुया। एव सव्वत्थ[2] पुच्छियव्व। दसपदेसिएहितो खधेहितो सखेज्जपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए वहुया। सखेज्जपदेसिएहितो खधेहितो असखेज्जपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए वहुया ।।

१५७. एएसि ण भते ! असंखेज्जपदेसियाणं—पुच्छा।
गोयमा ! अणतपदेसिएहितो खधेहितो असखेज्जपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए वहुया ।।

---

१ अप्पा वा वहुया वा (न)। २. सव्वत्थ वि (म)।

१५८. एएसि णं भंते ! एगपदेसोगाढाणं दुपदेसोगाढाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो[1] विसेसाहिया ?
गोयमा ! दुपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया । एवं एएणं गमएणं तिपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो दुपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया जाव दसपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो नवपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया । दसपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो संखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया । संखेज्जपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो असंखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया । पुच्छा सव्वत्थ भाणियव्वा ॥

१५९ एएसि णं भंते ! एगपदेसोगाढाणं दुपदेसोगाढाण य पोग्गलाणं पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो विसेसाहिया[2] ?
गोयमा ! एगपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो दुपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए विसेसाहिया । एवं जाव नवपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो दसपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए विसेसाहिया । दसपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो संखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए बहुया । संखेज्जपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो असंखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए बहुया ॥

१६०. एएसि णं भंते ! एगसमयट्ठितीयाणं दुसमयट्ठितीयाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए० ?
जहा ओगाहणाए वत्तव्वया एवं ठितीए वि ॥

१६१ एएसि णं भंते ! एगगुणकालगाणं दुगुणकालगाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए० ?
एएसि णं जहा परमाणुपोग्गलादीणं तहेव वत्तव्वया निरवसेसा[4] । एवं सव्वेसिं वण्ण-गंध-रसाणं ॥

१६२ एएसि णं भंते ! एगगुणकक्खडाणं दुगुणकक्खडाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो विसेसाहिया[5] ?
गोयमा ! एगगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो दुगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया । एवं जाव नवगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो दसगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया । दसगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो संखेज्ज-गुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया । संखेज्जगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो असंखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया । असंखेज्जगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो अणंतगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया । एवं पदेसट्ठयाए वि[6] । सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा । जहा कक्खडा एवं मउय-गरुय-लहुया वि । सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खा जहा वण्णा ।

---

१. कयरेहिंतो जाव (ता, स) ।
२. विसेसाहिया वा (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
३. जाव विसेसाहिया वा (अ, ता, स) ।
४. निरवसेस (अ, ता) ।
५. जाव विसेसाहिया (ता) ।
६ × (अ) ।

१६३ एएसि ण भते ! परमाणुपोग्गलाण, सखेज्जपदेसियाण, असखेज्जपदेसियाणं, अणतपदेसियाण य खधाण दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए, परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए अणतगुणा, सखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, असखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा । पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए, परमाणुपोग्गला अपदेसट्ठयाए अणतगुणा, सखेज्जपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए सखेज्जगुणा, असखेज्जपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा । दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए, 'ते चेव'[2] पदेसट्ठयाए अणतगुणा, परमाणुपोग्गला दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए अणतगुणा, सखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा ॥

१६४ एएसि ण भते ! एगपदेसोगाढाण, सखेज्जपदेसोगाढाण, असखेज्जपदेसोगाढाण य पोग्गलाण दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो[3] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए, सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, असखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा । पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला अपदेसट्ठयाए, सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए सखेज्जगुणा, असखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा । दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए— सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए, सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए सखेज्जगुणा । असखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा ॥

१६५ एएसि ण भते ! एगसमयट्ठितीयाण, सखेज्जसमयट्ठितीयाण, असखेज्जसमयट्ठितीयाण य पोग्गलाण० ? जहा ओगाहणाए तहा ठितीए वि भाणियव्व अप्पावहुग ॥

१६६ एएसि ण भते ! एगगुणकालगाण, सखेज्जगुणकालगाण, असखेज्जगुणकालगाणं, अणतगुणकालगाण य पोग्गलाण दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
एएसि जहा परमाणुपोग्गलाण अप्पावहुग तहा एएसि पि अप्पावहुगं । एव सेसाण वि वण्ण-गध-रसाण ॥

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२. तेच्चेव (ता) ।
३. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे जाव सिय कलियोगपदेसोगाढे । एवं जाव अणंतपदेसिए ॥

१८४ परमाणुपोग्गला ण भंते ! किं कडजुम्मपदेसोगाढा — पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेण नो कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, कलियोगपदेसोगाढा ॥

१८५. दुपदेसिया ण —पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा नो कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेण नो कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, दावरजुम्मपदेसोगाढा वि, कलियोगपदेसोगाढा वि ॥

१८६ तिप्पदेसिया ण—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेण नो कडजुम्मपदेसोगाढा, तेयोगपदेसोगाढा वि, दावरजुम्मपदेसोगाढा वि, कलियोगपदेसोगाढा वि ॥

१८७ चउप्पदेसिया ण —पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि । एव जाव अणतपदेसिया ॥

१८८. परमाणुपोग्गले ण भते ! कि कडजुम्मसमयट्ठितीए— पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मसमयट्ठितीए जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीए । एवं जाव अणतपदेसिए ॥

१८९. परमाणुपोग्गला ण भते ! किं कडजुम्म —पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मसमयट्ठितीया जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीया, विहाणादेसेण कडजुम्मसमयट्ठितीया वि जाव कलियोगसमयट्ठितीया वि । एवं जाव अणतपदेसिया ॥

१९० परमाणुपोग्गले ण भते ! कालावण्णपज्जवेहि कि कडजुम्मे ? तेयोगे ? जहा ठितीए वत्तव्वया एव वण्णेसु वि सव्वेसु । गधेसु वि एव चेव । रसेसु वि जाव महुरो रसो त्ति ॥

१९१ अणतपदेसिए णं भंते ! खधे कक्खडफासपज्जवेहि कि कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे ॥

१९२ अणतपदेसिया ण भते ! खधा कक्खडफासपज्जवेहि कि कडजुम्मा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेण कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि । एव मउय-गरुय-लहुया वि भाणियव्वा । सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खा जहा वण्णा ॥

५९० से कि त अप्पसत्थमणविणए ? अप्पसत्थमणविणए[1] सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—पावए, सावज्जे, सकिरिए, सउवक्केसे[2], अण्हयकरे, छविकरे, भूयाभिसकणे। सेत्त अप्पसत्थमणविणए। सेत्त मणविणए॥

५९१ से कि त वइविणए ? वइविणए दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पसत्थवइविणए य, अप्पसत्थवइविणए य॥

५९२ से कि त पसत्थवइविणए ? पसत्थवइविणए[3] सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—अपावए, असावज्जे जाव अभूयाभिसकणे। सेत्त पसत्थवइविणए॥

५९३ से कि तं अप्पसत्थवइविणए ? अप्पसत्थवइविणए सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—पावए, सावज्जे जाव भूयाभिसकणे। सेत्त अप्पसत्थवइविणए। सेत्तं वइविणए॥

५९४ से कि त कायविणए ? कायविणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पसत्थकायविणए य, अप्पसत्थकायविणए य॥

५९५ से कि त पसत्थकायविणए ? पसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—आउत्त गमण, आउत्त ठाण, आउत्त निसीयण, आउत्त तुयट्टण, आउत्त उल्लघण, आउत्त पल्लघण, आउत्त सव्विदियजोगजुजणया। सेत्त पसत्थकायविणए॥

५९६ से कि त अप्पसत्थकायविणए ? अप्पसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—अणाउत्त गमण जाव अणाउत्तं सव्विदियजोगजुजणया। सेत्त अप्पसत्थकायविणए। सेत्त कायविणए॥

५९७ से कि त लोगोवयारविणए ? लोगोवयारविणए सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—अब्भासवत्तिय[4], परच्छदाणुवत्तिय, कज्जहेउ[5], कयपडिकइया[6], अत्तगवेसणया, देसकालण्णया[7], सव्वत्थेसु अप्पडिलोमया। सेत्त लोगोवयारविणए। सेत्त विणए॥

५९८. से कि त वेयावच्चे ? वेयावच्चे दसविहे पण्णत्ते, त जहा—आयरियवेयावच्चे, उवज्झायवेयावच्चे, थेरवेयावच्चे, तवस्सिवेयावच्चे, गिलाणवेयावच्चे, सेहवेयावच्चे, कुलवेयावच्चे, गणवेयावच्चे, सघवेयावच्चे, साहम्मियवेयावच्चे। सेत्त वेयावच्चे॥

---

१. अप्पसत्थमणविणए—जे य मणे सावज्जे सकिरिए सकक्कसे कडुए णिट्ठुरे फरुसे अण्हयकरे छेयकरे भेयकरे परितावणकरे उद्दवणकरे भूओवघाइए तहप्पगार मणो णो पहारेज्जा (ओ० सू० ४०)।

२. सउवक्केसे (क, ख)।

३ पूर्ववत् अत्रापि औपपातिकस्य पाठभेदो दृश्य।

४ ०वत्तिय (ता)।

५. ज्ञानादिनिमित्त भक्तादिदानमिति गम्यम् (वृ)।

६ कयपडिकइयाए (ता)।

७. देसकालण्णुया (ओ० सू० ४०)।

६१२ सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—'अणंतवत्तियाणुप्पेहा, विप्परिणामाणुप्पेहा, असुभाणुप्पेहा, अवायाणुप्पेहा'[1]। सेत्तं झाणे ॥

६१३ से किं त विउसग्गे ? विउसग्गे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वविउसग्गे य, भावविउसग्गे य ॥

६१४ से कि त दव्वविउसग्गे ? दव्वविउसग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—गणविउसग्गे, सरीरविउसग्गे, उवहिविउसग्गे, भत्तपाणविउसग्गे। सेत्त दव्वविउसग्गे ॥

६१५. से किं तं भावविउसग्गे ? भावविउसग्गे तिविहे पण्णत्ते' त जहा—कसायविउसग्गे, ससारविउसग्गे, कम्मविउसग्गे ॥

६१६ से किं त कसायविउसग्गे ? कसायविउसग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—कोहविउसग्गे, माणविउसग्गे, मायाविउसग्गे, लोभविउसग्गे । सेत्त कसायविउसग्गे ॥

६१७ से किं त ससारविउसग्गे ? संसारविउसग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयससारविउसग्गे जाव देवससारविउसग्गे । सेत्त ससारविउसग्गे ॥

६१८ से किं त कम्मविउसग्गे ? कम्मविउसग्गे अट्ठविहे पण्णत्ते, त जहा—नाणावरणिज्जकम्मविउसग्गे जाव अतराइयकम्मविउसग्गे। सेत्त कम्मविउसग्गे । सेत्त भावविउसग्गे । सेत्त अब्भितरए तवे ॥

६१९ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

अट्ठमो उद्देसो

नेरइयादीण-पुणब्भव-पदं

६२० रायगिहे जाव एव वयासी—नेरइया ण भते ! कहं उववज्जति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे अज्झवसाणनिव्वत्तिएणं करणोवाएणं सेयकाले त ठाण विप्पजहित्ता पुरिम ठाणं उवसंपज्जित्ताण विहरइ, एवामेव एए वि जीवा पवओ विव पवमाणा अज्झवसाणनिव्वत्तिएण करणोवाएण सेयकाले त भव विप्पजहित्ता पुरिम भव उवसपज्जित्ताणं विहरति ॥

---

१. अवायाणुप्पेहा, असुभाणुप्पेहा, अणतवत्तियाणुप्पेहा, विपरिणामाणुप्पेहा (ओ० सू० ४३)

५९९. से किं तं सज्झाए? सज्झाए पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—वायणा, पडिपुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा, धम्मकहा। से तं सज्झाए॥

६०० से किं तं झाणे? झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अट्टे झाणे, रोद्दे झाणे, धम्मे झाणे, सुक्के झाणे॥

६०१. अट्टे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अमणुण्णसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओग-सतिसमन्नागए यावि भवइ, मणुण्णसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसतिसम-न्नागए यावि भवइ, आयंकसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगसतिसमन्नागए यावि भवइ, परिज्झुसियकामभोगसंपओगसंपउत्ते[1] तस्स अविप्पओगसतिसमन्नागए यावि भवइ॥

६०२. अट्टस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—कंदणया, सोयणया, तिप्पणया, परिदेवणया॥

६०३ रोद्दे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—हिंसाणुबंधी, मोसाणुबंधी, तेयाणुबंधी, सारक्खणाणुबंधी॥

६०४. रोद्दस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—ओसन्नदोसे, बहुलदोसे, अण्णाणदोसे, आमरणंतदोसे॥

६०५ धम्मे झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते, तं जहा—आणाविजए, अवाय-विजए, विवागविजए, संठाणविजए॥

६०६. धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—आणारुयी, निसग्ग-रुयी, सुत्तरुयी, ओगाढरुयी॥

६०७ धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता, तं जहा—वायणा, पडिपुच्छणा, परियट्टणा, धम्मकहा॥

६०८. धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—एगत्ताणुप्पेहा, अणिच्चाणुप्पेहा, असरणाणुप्पेहा, संसाराणुप्पेहा॥

६०९. सुक्के झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते, तं जहा—पुहत्तवितक्के[2] सवियारी, एगत्तवितक्के अवियारी, सुहुमकिरिए अणियट्टी, समोछिण्णकिरिए[3] अप्पडिवायी॥

६१० सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे॥

६११ सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता, तं जहा—अव्वहे, असमोहे, विवेगे, विउसग्गे॥

---

१. परिज्जुसिय० (ख); परिज्झुसिय० (ता)।
२. ०वियक्के (ख)।
३. समोच्छिण्ण० (ख, ता, म); समुच्छिण्ण० (वृ०)।

६ सुक्कपक्खिए णं भते ! जीवे—पुच्छा ।
गोयमा ! चउभगो भाणियव्वो ॥

७. सम्मद्दिट्ठीण चत्तारि भगा, मिच्छादिट्ठीण पढम-बितिया, सम्मामिच्छादिट्ठीणं एव चेव ॥

८ नाणीण चत्तारि भगा, आभिणिबोहियनाणीण जाव मणपज्जवनाणीण चत्तारि भगा, केवलनाणीण चरिमो भगो जहा अलेस्साण ॥

९ अण्णाणीण पढम-बितिया, एव मइअण्णाणीण, सुयअण्णाणीण, विभगनाणीण वि ॥

१० आहारसण्णोवउत्ताण जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताण पढम-बितिया, नोसण्णोव-उत्ताण चत्तारि ॥

११ सवेदगाण पढम-बितिया । एव इत्थिवेदगा, पुरिसवेदगा, नपुमगवेदगा वि । अवेदगाण चत्तारि ॥

१२ सकसाईण चत्तारि, कोहकसाईण पढम-बितिया भगा, एव माणकसायिस्स वि, मायाकसायिस्स वि । लोभकसायिस्स चत्तारि भगा ॥

१३. अकसायी ण भते ! जीवे पाव कम्म कि बधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बधी न बधइ बधिस्सइ, अत्थेगतिए बधी न बधइ न बधिस्सइ ॥

१४ सजोगिस्स चउभगो, एवं मणजोगिस्स वि, वइजोगिस्स वि, कायजोगिस्स वि । अजोगिस्स चरिमो ॥

१५ सागारोवउत्ते चत्तारि, अणागारोवउत्ते वि चत्तारि भंगा ॥

नेरइयादीणं लेस्सादिविसेसितनेरइयादीणं च बंधाबंध-पदं

१६ नेरइए ण भते ! पाव कम्म कि बधी बधइ बधिस्सइ ?
गोयमा ! अत्थेगतिए बधी, पढम-बितिया ॥

१७ सलेस्से ण भते ! नेरइए पाव कम्म० ? एव चेव । एव कण्हलेस्से वि, नील-लेस्से वि, काउलेस्से वि । एव कण्हपक्खिए सुक्कपक्खिए, सम्मदिट्ठी मिच्छा-दिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी, नाणी आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी, अण्णाणी मइअण्णाणी सुयअण्णाणी विभगनाणी, आहारसण्णोवउत्ते जाव परिग्गहसण्णोवउत्ते, सवेदए नपुसकवेदए, सकसायी जाव लोभकसायी, सजोगी मणजोगी वइजोगी कायजोगी, सागारोवउत्ते अणागारोवउत्ते —एएसु सव्वेसु पदेसु पढम-बितिया भगा भाणियव्वा । एव असुरकुमारस्स वि वत्तव्वया भाणियव्वा, नवर—तेउलेसा, इत्थिवेदग-पुरिसवेदगा य अब्भहिया, नपुसगवेदगा न भण्णति, सेस त चेव, सव्वत्थ पढम-बितिया भगा । एवं जाव थणियकुमारस्स ।

छव्वीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

नमो सुयदेवयाए भगवईए

१. जीवा य २. लेस्स ३. पक्खिय, ४. दिट्ठी ५ अन्नाण ६ नाण ७ सण्णाओ।
८. वेय ९. कसाए १० उवओग ११ जोग एक्कारस वि ठाणा ॥१॥

जीवाणं लेस्सादिविसेसितजीवाणं च बंधाबंध-पदं

१. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे जाव[1] एव वयासी—जीवे ण भते ! पाव कम्म कि बधी बधइ बधिस्सइ ? बधी बधइ न बधिस्सइ ? बधी न बधइ बंधिस्सइ ? बधी न बंधइ न बधिस्सइ ?
गोयमा ! अत्थेगतिए बधी बधइ बधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी बंधइ न बधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बधिस्सइ, अत्थेगतिए बधी न बधइ न बधिस्सइ ॥

२. सलेस्से णं भते ! जीवे पाव कम्मं कि बधी बंधइ बधिस्सइ ? बंधी बधइ न बधिस्सइ—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बधी बधइ बधिस्सइ, अत्थेगतिए एव चउभंगो ॥

३ कण्हलेस्से ण भते ! जीवे पाव कम्मं कि बधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बधी बधइ बधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी बंधइ न बधिस्सइ । एव जाव पम्हलेस्से । सव्वत्थ पढम-बितियभगा । सुक्कलेस्से जहा सलेस्से तहेव चउभगो ॥

४ अलेस्से ण भते ! जीवे पाव कम्म कि बधी—पुच्छा ।
गोयमा ! बधी न बधइ न बधिस्सइ ॥

५ कण्हपक्खिए ण भते ! जीवे पाव कम्मं—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बधी, पढम-बितिया[2] भगा ॥

---

१. भ० १।४-१० ।

२. बीया (ता) ।

[illegible] ... [illegible]

[illegible] ... [illegible]

[illegible] ... [illegible]

[illegible] ... [illegible]

[illegible] ... [illegible]

[illegible] ॥

जीवादीण नाणावरणादिकम्मं पडुच्च [illegible]-पदं

१८. जीवे णं भंते ! नाणावरणिज्जं कम्मं किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ० ? एवं जहेव पावकम्मस्स वत्तव्वया तहेव नाणावरणिज्जस्स वि भाणियव्वा, नवरं जीवपदे मणुस्सपदे य सकसाइम्मि जाव लोभकसाइम्मि य पढम-बितिया भंगा अवसेसं तं चेव जाव वेमाणिया। एवं दरिसणावरणिज्जेण वि दंडगो भाणियव्वो निरवसेसो ॥

१९ जीवे णं भंते ! वेयणिज्जं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ अत्थेगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ। सलेस्से वि एवं चेव ततियविहूणा भंगा। कण्हलेस्से जाव पम्हलेस्से पढम-बितिया भंगा। सुक्कलेस्से ततियविहूणा भंगा। अलेस्से चरिमो भंगो। कण्हपक्खिए पढम-बितिया। सुक्कपक्खिया ततिय-विहूणा। एवं सम्मदिट्ठिस्स वि, मिच्छादिट्ठिस्स सम्मामिच्छादिट्ठिस्स य पढम-बितिया। नाणिस्स ततियविहूणा। आभिणिबोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी पढम-बितिया। केवलनाणी ततियविहूणा। एवं नोसण्णोवउत्ते, अवेदए, अकसायी। सागारोवउत्ते अणागारोवउत्ते—एएसु ततियविहूणा। अजोगिम्मि य चरिमो। सेसेसु पढम-बितिया ॥

२०. नेरइए णं भंते ! वेयणिज्जं कम्मं किं बंधी बंधइ० ? एवं नेरइया जाव वेमाणिय त्ति। जस्स जं अत्थि सव्वत्थ वि पढम-बितिया, नवरं—मणुस्से जहा जीवे ॥

२१. जीवे णं भंते ! मोहणिज्जं कम्मं किं बंधी बंधइ० ? जहेव पावं कम्मं तहेव मोहणिज्जं पि निरवसेसं जाव वेमाणिए ॥

२२ जीवे णं भंते ! आउयं कम्मं किं बंधी बंधइ—पुच्छा।
गोयमा अत्थेगतिए बंधी चउभंगो। सलेस्से जाव सुक्कलेस्से चत्तारि भंगा। अलेस्से चरिमो भंगो ॥

२३ कण्हपक्खिए णं—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ। सुक्कपक्खिए सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी चत्तारि भंगा ॥

२४. सम्मामिच्छादिट्ठी—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिए वधी न वधइ वधिस्सइ, अत्थेगतिए वधी न वधइ न वधिस्सइ। नाणी जाव ओहिनाणी चत्तारि भगा॥

२५. मणपज्जवनाणी—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिए वधी वधइ वधिस्सइ, अत्थेगतिए वंधी न वधइ वधिस्सइ, अत्थेगतिए वधी न वधइ न वधिस्सइ। केवलनाणे चरिमो भगो। एव एएण कमेण नोसण्णोवउत्ते वितियविहूणा जहेव मणपज्जवनाणे। अवेदए अकसाई य ततिय-चउत्था जहेव सम्मामिच्छत्ते। अजोगिम्मि चरिमो, सेसेसु पदेसु चत्तारि भगा जाव अणागारोवउत्ते॥

२६ नेरइए ण भते ! आउय कम्म किं वधी – पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिए चत्तारि भगा, एव सव्वत्थ वि नेरइयाण चत्तारि भगा, नवर—कण्हलेस्से कण्हपक्खिए य पढम-ततिया भगा, सम्मामिच्छत्ते ततिय-चउत्था। असुरकुमारे एव चेव, नवर—कण्हलेस्से वि चत्तारि भगा भाणियव्वा, सेस जहा नेरइयाण। एव जाव थणियकुमाराण। पुढविक्काइयाण सव्वत्थ वि चत्तारि भगा, नवर—कण्हपक्खिए पढम-ततिया भगा॥

२७. तेउलेस्से—पुच्छा।
गोयमा ! वधी न वधइ वधिस्सइ, सेसेसु सव्वत्थ चत्तारि भगा। एव आउ-क्काइय-वणस्सइकाइयाण वि निरवसेस। तेउकाइय-वाउक्काइयाण सव्वत्थ वि पढम-ततिया भगा। वेइदिय-तेइदिय-चउरिंदियाण पि सव्वत्थ वि पढम-ततिया भगा, नवर—सम्मत्ते, नाणे, आभिणिवोहियनाणे सुयनाणे ततिओ भगो। पंचिदियतिरिक्खजोणियाण कण्हपक्खिए पढम-ततिया भगा, सम्मामिच्छत्ते ततियचउत्थो भगो। सम्मत्ते, नाणे, आभिणिवोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे—एएसु पचसु वि पदेसु वितियविहूणा भगा, सेसेसु चत्तारि भगा। मणुस्साण जहा जीवाण, नवर—सम्मत्ते, ओहिए नाणे, आभिणिवोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे—एएसु वितियविहूणा भगा, सेस त चेव। वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा। नामं गोय अतरायं च एयाणि जहा नाणावरणिज्ज॥

२८ सेव भते ! सेव भंते ! त्ति जाव विहरइ॥

बीओ उद्देसो

विसेसितनेरइयादीण वधावंध-पदं

२९. अणतरोववन्नए ण भते ! नेरइए पाव कम्म किं वंधी—पुच्छा तहेव।
गोयमा ! अत्थेगतिए वधी, पढम-वितिया भगा॥

३०. [illegible]

३१. अणंतरोववन्नए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा ! बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ॥

३२. सलेस्से णं भंते ! अणंतरोववन्नए नेरइए पावं कम्मं किं बंधी ? एवं चेव तइओ भंगो। एवं जाव अणागारोवउत्ते। सम्मत्ते वि तइओ भंगो। एवं मणुस्सवज्जं जाव वेमाणियाणं। मणुस्साणं सव्वत्थ तइय-चउत्था भंगा, नवरं —कण्हपक्खिएसु तइओ भंगो। सव्वेसिं नाणत्ताइं ताइं चेव ॥

३३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२-१० उद्देसो

३४. परंपरोववन्नए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिए पढम-बितिया। एवं जहेव पढमो उद्देसओ तहेव परंपरोववन्नएहिं वि उद्देसओ भाणियव्वो नेरइयाईओ तहेव नवदंडगसंगहिओ। अट्ठण्ह वि कम्मप्पगडीणं जा जस्स कम्मस्स वत्तव्वया सा तस्स अहीणमतिरित्ता नेयव्वा जाव वेमाणिया अणागारोवउत्ता ॥

३५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३६. अणंतरोगाढए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिए एवं जहेव अणंतरोववन्नएहिं नवदंडगसंगहिओ[1] उद्देसो

---

१. °सहिओ (ता, व)।

भणिओ तहेव अणंतरोगाढएहिं वि अहीणमतिरित्तो भाणियव्वो नेरइयादीए जाव वेमाणिए ॥

३७ सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

३८ परंपरोगाढए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी ? जहेव परंपरोववन्नएहिं उद्देसो सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो ॥

३९ सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

४० अणंतराहारए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा । एवं जहेव अणंतरोववन्नएहिं उद्देसो तहेव निरवसेसं ॥

४१ सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

४२ परंपराहारए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! एवं जहेव परंपरोववन्नएहिं उद्देसो तहेव निरवसेसो भाणियव्वो ॥

४३ सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

४४ अणंतरपज्जत्तए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी - पुच्छा ।
गोयमा ! जहेव अणंतरोववन्नएहिं उद्देसो तहेव निरवसेसं ॥

४५ सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

४६ परंपरपज्जत्तए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! एवं जहेव परंपरोववन्नएहिं उद्देसो तहेव निरवसेसो भाणियव्वो ॥

४७ सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

४८. चरिमे णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! एवं जहेव परंपरोववन्नएहिं उद्देसो तहेव चरिमेहिं निरवसेसं ॥

४९. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति जाव[1] विहरइ ॥
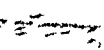
एक्कारसमो उद्देसो

५० अचरिमे णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगइए एवं जहेव पढमोद्देसए, पढम-बितिया भंगा भा[illegible] सव्वत्थ जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं ॥

५१. अचरिमे णं भंते ! मणुस्से पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी बंधइ [illegible] अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ॥

---

१. भ० १।५१ ।

५२. [illegible] णं भंते ! [illegible] पावं कम्मं किं बंधी [illegible]
भंगा [illegible] आभिणिबोहियनाणे [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

५३. अनन्तरोववन्नए णं भंते ! नेरइए नाणावरणिज्जं कम्मं किं बंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! एवं जहेव पावं, नवरं—मणुस्सेसु सकसाईसु लोभकसाईसु य पढम-बितिया भंगा, सेसा अट्ठारस चरमविहूणा, सेसं तहेव जाव वेमाणियाणं ।
दरिसणावरणिज्जं पि एवं चेव निरवसेसं । वेयणिज्जे सव्वत्थ वि पढम-बितिया भंगा जाव वेमाणियाणं, नवरं—मणुस्सेसु अलेस्से केवली अजोगी य नत्थि ॥

५४. अनन्तरोववन्नए णं भंते ! नेरइए मोहणिज्जं कम्मं किं बंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! जहेव पावं तहेव निरवसेसं जाव वेमाणिए ॥

५५. अनन्तरोववन्नए णं भंते ! नेरइए आउयं कम्मं किं बंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! पढम-बितिया भंगा । एवं सव्वपदेसु वि । नेरइयाणं पढम-ततिया भंगा, नवरं—सम्मामिच्छत्ते ततिओ भंगो । एवं जाव थणियकुमाराणं । पुढविक्काइय-आउक्काइय-वणस्सइकाइयाणं तेउलेस्साए ततिओ भंगो । सेसेसु पदेसु सव्वत्थ पढम-ततिया भंगा । तेउकाइय-वाउकाइयाणं सव्वत्थ पढम-ततिया भंगा । बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं एवं चेव, नवरं—सम्मत्ते ओहिनाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे—एएसु चउसु वि ठाणेसु ततिओ भंगो । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं सम्मामिच्छत्ते ततिओ भंगो । सेसपदेसु[3] सव्वत्थ पढम-ततिया भंगा । मणुस्साणं सम्मामिच्छत्ते अवेदए अकसाइम्मि य ततिओ भंगो, अलेस्स-केवलनाण-अजोगी य न पुच्छिज्जंति । सेसपदेसु सव्वत्थ पढम-ततिया भंगा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया । नामं गोयं अंतराइयं च जहेव नाणावरणिज्जं तहेव निरवसेसं ॥

५६ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

---

१ वीसेसु (अ) ।
२. कसायीसु (क, म, स) ।
३. सेसेसु पदेसु (स) ।

सत्तवीसइमं सतं

१-११ उद्देसा

जीवाण पावकम्म-करणाकरण-पद

१ जीवे ण भते ! पाव कम्म कि करिसु करेति करेस्सति ? करिसु करेति न-करेस्सति ? करिसु न करेति करेस्सति ? करिसु न करेति न करेस्सति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए करिसु न करेति करेस्सति, अत्थेगतिए करिसु करेति न करेस्सति, अत्थेगतिए करिसु न करेति करेस्सति, अत्थेगतिए करिसु न करेति न करेस्सति ।।

२. सलेस्से ण भते ! जीवे पाव कम्म ०? एव एएण अभिलावेण जच्चेव बधिसए वत्तव्वया सच्चेव निरवसेसा भाणियव्वा, तहेव नवदडगसगहिया एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा ।।

अट्ठावीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

जीवाणं पावकम्म-समज्जण-समायरण-पदं

१. जीवा ण भंते ! पाव कम्म कहिं समज्जिणिसु ? कहिं समायरिसु ?
गोयमा ! १ सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा २ अहवा तिरिक्ख-जोणिएसु य नेरइएसु य होज्जा ३ अहवा तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य होज्जा ४ अहवा तिरिक्खजोणिएसु य देवेसु य होज्जा ५ अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य मणुस्सेसु य होज्जा ६. अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य देवेसु य होज्जा ७ अहवा तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा ८ अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा ॥

२. सलेस्सा ण भंते ! जीवा पाव कम्म कहिं समज्जिणिसु ? कहिं समायरिसु ?
एव चेव । एव कण्हलेस्सा जाव अलेस्सा । कण्हपक्खिया, सुक्कपक्खिया । एव जाव अणागारोवउत्ता ॥

३. नेरइया ण भंते ! पाव कम्म कहिं समज्जिणिसु ? कहिं समायरिसु ?
गोयमा ! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा, एव चेव अट्ठ भगा भाणियव्वा । एवं सव्वत्थ अट्ठभगा जाव अणागारोवउत्तत्ति । एवं जाव वेमाणि-याण । एव नाणावरणिज्जेण वि दडओ । एव जाव अतराइएण । एवं एए जीवादीया वेमाणियपज्जवसाणा नव दडगा भवंति ॥

४ सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

बीओ उद्देसो

५ अणतरोववन्नगा ण भंते ! नेरइया पाव कम्मं कहिं समज्जिणिसु ? कहि समायरिसु ?

गोयमा ! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा, एवं एत्थ[1] वि अट्ठ भगा। एव अणतरोववन्नगाण नेरइयाईण जस्स ज अत्थि लेसादीय अणागारोवओग-पज्जवसाण त सव्व एयाए भयणाए भाणियव्व जाव वेमाणियाण, नवर— अणतरेसु जे परिहरियव्वा ते जहा बधिसए तहा इह पि। एव नाणावरणिज्जेण वि दंडओ। एव जाव अतराइएण निरवसेस। एसो वि नवदडगसगहिओ उद्देसओ भाणियव्वो ॥

६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

३-११ उद्देसा

७ एव एएण कमेण जहेव बधिसए उद्देसगाण परिवाडी तहेव इह पि अट्ठसु भगेसु नेयव्वा, नवरं—जाणियव्व ज जस्स अत्थि त तस्स भाणियव्व जाव अचरिमु-द्देसो। सव्वे वि एए एक्कारस उद्देसगा ॥

८ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

---

१. तत्थ (ता)।

एगूणतीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

जीवाणं पावकम्म-पट्ठवण-निट्ठवण-पदं

१. जीवा ण भते ! पाव कम्म कि समाय पट्ठविसु समाय निट्ठविसु ? समाय पट्ठविसु विसमाय निट्ठविसु ? विसमाय पट्ठविसु समाय निट्ठविसु ? विसमाय पट्ठविसु विसमाय निट्ठविसु ?
गोयमा ! अत्थेगतिया समाय पट्ठविसु समाय निट्ठविसु जाव अत्थेगतिया विसमाय पट्ठविसु विसमाय निट्ठविसु ॥

२ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगतिया समाय पट्ठविसु समाय निट्ठविसु, त चेव ?
गोयमा ! जीवा चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—अत्थेगतिया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगतिया समाउया विसमोववन्नगा, अत्थेगतिया विसमाउया समोववन्नगा, अत्थेगतिया विसमाउया विसमोववन्नगा। तत्थ ण जे ते समाउया समोववन्नगा ते ण पाव कम्म समाय पट्ठविसु समाय निट्ठविसु। तत्थ ण जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते ण पाव कम्म समाय पट्ठविसु विसमाय निट्ठविसु। तत्थ ण जे ते विसमाउया समोववन्नगा ते ण पाव कम्म विसमाय पट्ठविसु समाय निट्ठविसु। तत्थ ण जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा ते ण पाव कम्म विसमाय पट्ठविसु विसमाय निट्ठविसु। से तेणट्ठेण गोयमा ! त चेव ॥

३. सलेस्सा ण भते ! जीवा पाव कम्म० ? एव चेव, एव सव्वट्ठाणेसु वि जाव अणागारोवउत्ता। एए सव्वे वि पया एयाए वत्तव्वयाए भाणियव्वा ॥

४ नेरइया ण भते ! पाव कम्म कि समाय पट्ठविसु समाय निट्ठविसु—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिया समाय पट्ठविसु, एव जहेव जीवाण तहेव भाणियव्व जाव अणागारोवउत्ता। एव जाव वेमाणियाण जस्स ज अत्थि त एएण चेव

जहा सलेस्सा। नोसण्णोवउत्ता जहा अलेस्सा। सवेदगा जाव नपुसगवेदगा जहा सलेस्सा। अवेदगा जहा अलेस्सा। सकसायी जाव लोभकसायी जहा सलेस्सा। अकसायी जहा अलेस्सा। सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा। अजोगी जहा अलेस्सा। सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता जहा सलेस्सा ॥

७ नेरइया ण भते ! कि किरियावादी—पुच्छा।
गोयमा ! किरियावादी वि जाव वेणइयवादी वि ॥

८ सलेस्सा ण भते ! नेरइया कि किरियावादी ? एव चेव। एव जाव काउलेस्सा। कण्हपक्खिया किरियाविवज्जिया। एव एएण कमेण जच्चेव जीवाण वत्तव्वया सच्चेव नेरइयाण वि जाव अणागारोवउत्ता, नवर—ज अत्थि त भाणियव्व, सेस न भण्णति। जहा नेरइया एव जाव थणियकुमारा ॥

९ पुढविकाइया ण भते ! कि किरियावादी—पुच्छा।
गोयमा ! नो किरियावादी, अकिरियावादी वि, अण्णाणियवादी वि, नो वेणइयवादी। एव पुढविकाइयाण ज अत्थि तत्थ सव्वत्थ वि एयाइ दो मज्झिल्लाइ समोसरणाइ जाव अणागारोवउत्ता वि। एव जाव चउरिंदियाण। सव्वट्ठाणेसु एयाइं चेव मज्झिल्लगाइ दो समोसरणाइ। सम्मत्त-नाणेहि वि एयाणि चेव मज्झिल्लगाइ दो समोसरणाइ। पचिदियतिरिक्खजोणिया जहा जीवा, नवर—ज अत्थि त भाणियव्व। मणुस्सा जहा जीवा तहेव निरवसेस। वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥

१०. किरियावादी ण भते ! जीवा कि नेरइयाउय पकरेति ? तिरिक्खजोणियाउय पकरेति ? मणुस्साउय पकरेति ? देवाउय पकरेति ?
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउय पकरेति, मणुस्साउय पि पकरेति, देवाउय पि पकरेति ॥

११ जइ देवाउय पकरेति कि भवणवासिदेवाउय पकरेति जाव वेमाणिय देवाउय पकरेति ?
गोयमा ! नो भवणवासिदेवाउय पकरेति, नो वाणमंतरदेवाउय पकरेति, नो जोइसियदेवाउय पकरेति, वेमाणियदेवाउय पकरेति ॥

१२. अकिरियावादी ण भते ! जीवा कि नेरइयाउय पकरेति, तिरिक्खजोणियाउयं—पुच्छा।
गोयमा ! नेरइयाउय पि पकरेति जाव देवाउय पि पकरेति। एव अण्णाणियवादी वि वेणइयवादी वि ॥

१३. सलेस्सा णं भते ! जीवा किरियावादी कि नेरइयाउय पकरेति—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउय, एव जहेव जीवा तहेव सलेस्सा वि चउहि वि समोसरणेहि भाणियव्वा ॥

तीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

समोसरण-पदं

१ कइ ण भते ! समोसरणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि समोसरणा पण्णत्ता, त जहा किरियावादी, अकिरिया-वादी, अण्णाणियवादी, वेणइयवादी ॥

२. जीवा ण भंते ! कि किरियावादी ? अकिरियावादी ? अण्णाणियवादी ? वेणइयवादी ?
गोयमा ! जीवा किरियावादी वि, अकिरियावादी वि, अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि ॥

३. सलेस्सा ण भंते ! जीवा कि किरियावादी —पुच्छा ।
गोयमा ! किरियावादी वि, अकिरियावादी वि, अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि । एव जाव सुक्कलेस्सा ॥

४ अलेस्सा ण भते ! जीवा—पुच्छा ।
गोयमा ! किरियावादी, नो अकिरियावादी, नो अण्णाणियवादी, नो वेणइय-वादी ॥

५ कण्हपक्खिया ण भते ! जीवा कि किरियावादी—पुच्छा ।
गोयमा ! नो किरियावादी, अकिरियावादी, अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि । सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा । सम्मदिट्ठी जहा अलेस्सा । मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया ।

६ सम्मामिच्छादिट्ठी ण —पुच्छा ।
गोयमा ! नो किरियावादी, नो अकिरियावादी, अण्णाणियवादी वि, वेणइय-वादी वि । नाणी जाव केवलनाणी जहा अलेस्से । अण्णाणी जाव विभग-नाणी जहा कण्हपक्खिया । आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता

जहा सलेस्सा। नोसण्णोवउत्ता जहा अलेस्सा। सवेदगा जाव नपुसगवेदगा जहा सलेस्सा। अवेदगा जहा अलेस्सा। सकसायी जाव लोभकसायी जहा सलेस्सा। अकसायी जहा अलेस्सा। सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा। अजोगी जहा अलेस्सा। सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता जहा सलेस्सा ॥

७. नेरइया ण भते ! किं किरियावादी—पुच्छा।
गोयमा ! किरियावादी वि जाव वेणइयवादी वि ॥

८. सलेस्सा ण भते ! नेरइया किं किरियावादी ? एव चेव। एव जाव काउलेस्सा। कण्हपक्खिया किरियाविवज्जिया। एव एएण कमेण जच्चेव जोवाण वत्तव्वया सच्चेव नेरइयाण वि जाव अणागारोवउत्ता, नवर—ज अत्थि त भाणियव्व, सेस न भण्णति। जहा नेरइया एव जाव थणियकुमारा ॥

९. पुढविकाइया ण भते ! किं किरियावादी—पुच्छा।
गोयमा ! नो किरियावादी, अकिरियावादी वि, अण्णाणियवादी वि, नो वेणइयवादी। एव पुढविकाइयाण ज अत्थि तत्थ सव्वत्थ वि एयाइ दो मज्झिल्लाइ समोसरणाइ जाव अणागारोवउत्ता वि। एव जाव चउरिंदियाण। सव्वट्ठाणेसु एयाइं चेव मज्झिल्लगाइ दो समोसरणाइ। सम्मत्त-नाणेहि वि एयाणि चेव मज्झिल्लगाइ दो समोसरणाइ। पचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा जीवा, नवर—ज अत्थि त भाणियव्व। मणुस्सा जहा जीवा तहेव निरवसेस। वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥

१०. किरियावादी ण भते ! जीवा कि नेरइयाउय पकरेति ? तिरिक्खजोणियाउय पकरेति ? मणुस्साउयं पकरेति ? देवाउय पकरेति ?
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउय पकरेति, मणुस्साउय पि पकरेति, देवाउय पि पकरेति ॥

११ जइ देवाउय पकरेति किं भवणवासिदेवाउय पकरेति जाव वेमाणिय देवाउय पकरेति ?
गोयमा ! नो भवणवासिदेवाउय पकरेति, नो वाणमतरदेवाउय पकरेति, नो जोइसियदेवाउय पकरेति, वेमाणियदेवाउय पकरेति ॥

१२ अकिरियावादी ण भते ! जीवा कि नेरइयाउयं पकरेति, तिरिक्खजोणियाउयं—पुच्छा।
गोयमा ! नेरइयाउयं पि पकरेति जाव देवाउय पि पकरेति। एवं अण्णाणियवादी वि वेणइयवादी वि ॥

१३. सलेस्सा ण भते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं पकरेति—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं, एवं जहेव जीवा तहेव सलेस्सा वि चउहि वि समोसरणेहि भाणियव्वा ॥

१४ कण्हलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति। अकिरियावादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी य चउव्विहं पि आउयं पकरेंति। एवं नीललेस्सा वि, काउलेस्सा वि॥

१५. तेउलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, देवाउयं पि पकरेंति। जइ देवाउयं पकरेंति? तहेव॥

१६. तेउलेस्सा णं भंते ! जीवा अकिरियावादी किं नेरइयाउयं—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति, देवाउयं पि पकरेंति। एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि। जहा तेउलेस्सा एवं पम्हलेस्सा वि सुक्कलेस्सा वि नायव्वा॥

१७ अलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेति, नो मणुस्साउयं पकरेति, नो देवाउयं पकरेति॥

१८ कण्हपक्खिया णं भंते ! जीवा अकिरियावादी किं नेरइयाउयं—पुच्छा।
गोयमा ! नेरइयाउयं पि पकरेति, एवं चउव्विहं पि। एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि। सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा॥

१९. सम्मदिट्ठी णं भंते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं - पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेति, मणुस्साउयं पि पकरेति, देवाउयं पि पकरेति। मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया॥

२० सम्मामिच्छादिट्ठी णं भंते ! जीवा अण्णाणियवादी किं नेरइयाउयं० ? जहा अलेस्सा। एवं वेणइयवादी वि। नाणी आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य ओहिनाणी य जहा सम्मद्दिट्ठी॥

२१. मणपज्जवनाणी णं भंते !—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेति, नो मणुस्साउयं पकरेति, देवाउयं पकरेति॥

२२. जइ देवाउयं पकरेति किं भवणवासि—पुच्छा।
गोयमा ! नो भवणवासिदेवाउयं पकरेति, नो वाणमंतरदेवाउयं पकरेति, नो जोइसियदेवाउयं पकरेति, वेमाणियदेवाउयं पकरेति। केवलनाणी जहा अलेस्सा। अण्णाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया। सण्णासु चउसु वि

---

१. भ० ३०।११।

जहा सलेस्सा। नोसण्णोवउत्ता जहा मणपज्जवनाणी। सवेदगा जाव नपुंसग-वेदगा जहा सलेस्सा। अवेदगा जहा अलेस्सा। सकसायी जाव लोभकसायी जहा सलेस्सा। अकसायी जहा अलेस्सा। सजोगी[1] जाव कायजोगी जहा सलेस्सा। अजोगी जहा अलेस्सा। सागारोवउत्ता य अणागारोवउत्ता य जहा सलेस्सा॥

२३ किरियावादी ण भते! नेरइया किं नेरइयाउय—पुच्छा।
गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउय पकरेति, मणुस्साउय पकरेति, नो देवाउय पकरेति॥

२४ अकिरियावादी ण भते! नेरइया—पुच्छा।
गोयमा! नो नेरइयाउय, तिरिक्खजोणियाउय पि पकरेति, मणुस्साउय पि पकरेति, नो देवाउय पकरेति। एव अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि॥

२५ सलेस्सा ण भते! नेरइया किरियावादी कि नेरइयाउय० ? एव सव्वे वि नेरइया जे किरियावादी ते मणुस्साउय एग पकरेति, जे अकिरियावादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी ते सव्वट्ठाणेसु वि नो नेरइयाउय पकरेति, तिरिक्खजोणियाउय पि पकरेति, मणुस्साउय पि पकरेति, नो देवाउय पकरेति, नवर—सम्मामिच्छत्ते उवरिल्लेहि दोहि वि समोसरणेहि न किंचि वि पकरेति जहेव जीवपदे। एव जाव थणियकुमारा जहेव नेरइया॥

२६ अकिरियावादी ण भते! पुढविक्काइया—पुच्छा।
गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेति, तिरिक्खजोणियाउय पकरेति, मणुस्साउय पकरेति, नो देवाउय पकरेति। एव अण्णाणियवादी वि॥

२७ सलेस्सा ण भते! एव ज ज पद अत्थि पुढविकाइयाणं तहि तहि मज्झिमेसु दोसु समोसरणेसु एवं चेव दुविह आउय पकरेति, नवर—तेउलेस्साए न किं पि पकरेति। एव आउक्काइयाण वि, वणस्सइकाइयाण वि। तेउकाइआ वाउकाइआ सव्वट्ठाणेसु मज्झिमेसु दोसु समोसरणेसु नो नेरइयाउय पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउय पकरेति, नो मणुस्साउय पकरेंति, नो देवाउय पकरेति। बेइदिय-तेइदिय-चउरिदियाण जहा पुढविकाइयाण, नवर—सम्मत्त-नाणेसु न एक्क पि आउय पकरेति॥

२८ किरियावादी ण भते! पचिदियतिरिक्खजोणिया कि नेरइयाउय पकरेति—पुच्छा।
गोयमा! जहा मणपज्जवनाणी। अकिरियावादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी य चउव्विह पि पकरेति। जहा ओहिया[2] तहा सलेस्सा वि॥

---

१ सजोगी (ग)। २ ओहिता (ता)।

२९. कण्हलेस्सा णं भंते ! किरियावादी जीवा किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं, नो मणुस्साउयं नो देवाउयं पकरेंति । अकिरियावादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी य चउव्विहं पि पकरेंति । जहा कण्हलेस्सा एवं नीललेस्सा वि, काउलेस्सा वि । तेउलेस्सा जहा सलेस्सा, नवरं—अकिरियावादी, अण्णाणियवादी, वेणइयवादी य नो नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, देवाउयं पि पकरेंति । एवं पम्हलेस्सा वि । एवं सुक्कलेस्सा वि भाणियव्वा । कण्हपक्खिया तिहिं समोसरणेहिं चउव्विहं पि आउयं पकरेंति । सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा । सम्मदिट्ठी जहा मणपज्जवनाणी तहेव वेमाणियाउयं पकरेंति । मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया । सम्मामिच्छदिट्ठी ण य एक्कं पि पकरेंति जहेव नेरइया । नाणी जाव ओहिनाणी जहा सम्मदिट्ठी । अण्णाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया । सेसा जाव अणागारोवउत्ता सव्वे जहा सलेस्सा तहा चेव भाणियव्वा । जहा पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं वत्तव्वया भणिया एवं मणुस्साण वि भाणियव्वा, नवरं मणपज्जवनाणी नोसण्णोवउत्ता य जहा सम्मदिट्ठी तिरिक्खजोणिया तहेव भाणियव्वा । अलेस्सा केवलनाणी अवेदगा अकसायी अजोगी य एए न एगं पि आउयं पकरेंति । जहा ओहिया जीवा सेसं तहेव । वाणमंतर-जोइसिय वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥

३०. किरियावादी ण भंते ! जीवा कि भवसिद्धीया ? अभवसिद्धीया ?
गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया ॥

३१. अकिरियावादी ण भंते ! जीवा कि भवसिद्धीया—पुच्छा ।
गोयमा ! भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि । एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि ॥

३२. सलेस्सा ण भंते ! जीवा किरियावादी कि भवसिद्धीया—पुच्छा ।
गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया ॥

३३. सलेस्सा णं भंते ! जीवा अकिरियावादी कि भवसिद्धीया—पुच्छा ।
गोयमा ! भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि । एव अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि जहा सलेस्सा । एवं जाव सुक्कलेस्सा ॥

३४. अलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावादी किं भवसिद्धीया—पुच्छा ।
गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया । एव एएण अभिलावेण कण्हपक्खिया तिसु वि समोसरणेसु भयणाए । सुक्कपक्खिया चउसु वि समोसरणेसु भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया । सम्मदिट्ठी जहा अलेस्सा । मिच्छादिट्ठी जहा कण्ह-

पक्खिया। सम्मामिच्छादिट्ठी दोसु वि समोसरणेसु
केवलनाणी भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया। अ
कण्हपक्खिया। सण्णासु चउसु वि जहा सलेस्सा
दिट्ठी। सवेदगा जाव नपुंसगवेदगा जहा सलेस्सा
सकसायी जाव लोभकसायी जहा सलेस्सा। अ
जाव कायजोगी जहा सलेस्सा। अजोगी
अणागारोवउत्ता जहा सलेस्सा। एव नेरइया
ज अत्थि। एव असुरकुमारा वि जाव थणिय
णेसु वि मज्झिल्लेसु दोसु वि समोसरणेसु
एव जाव वणस्सइकाइया। बेइदिय-तेइंदिय
सम्मत्ते ओहिनाणे आभिणिवोहियनाणे सुय
समोसरणेसु भवसिद्धिया, नो अभवसिद्धिया,
जोणिया जहा नेरइया, नवर—नायव्व
जीवा। वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा अ

३५ सेव भते! सेव भते! त्ति॥

वीओ उद्देसो

३६ अणतरोववन्नगा णं भंते! नेरइया किं कि
गोयमा! किरियावादी वि जाव वेण

३७ सलेस्सा णं भते! अणतरोववन्नगा नेर
एवं जहेव पढमुद्देसे नेरइयाणं वत्तव्वया
ज ज[1] अत्थि अणतरोववन्नगाण नेरइया
जाव वेमाणियाणं, नवर—अणतरोव
भाणियव्व॥

३८ किरियावादी ण भंते! अणतरोववन्न
पुच्छा।
गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेन्ति

---

१. नेयव्व (अ, स)।
२. गम्म (अ, स)।

[illegible] ॥

३९. [illegible] पुच्छा ।

गोयमा ! [illegible] ॥

४०. किरियावादी णं भंते ! [illegible] भवसिद्धीया ? अभवसिद्धीया ?

गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया ॥

४१. अकिरियावादी णं—पुच्छा ।

गोयमा ! भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि । एवं अण्णाणियवादी वि वेणइयवादी वि ॥

४२. सलेस्सा णं भंते ! किरियावादी अणंतरोववन्नगा नेरइया किं भवसिद्धीया अभवसिद्धीया ?

गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया । एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिए उद्देसए नेरइयाणं वत्तव्वया भणिया तहेव इह वि भाणियव्वा जाव अणागार-वउत्तत्ति । एवं जाव वेमाणियाणं, नवरं—जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं इमं से लक्खणं—जे किरियावादी सुक्कपक्खिया सम्मामिच्छदिट्ठीया एए सव्वे भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया । सेसा सव्वे भवसिद्धीया वि अभवसिद्धीया वि ॥

४३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

तइओ उद्देसो

४४. परंपरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किरियावादी० ? एवं जहेव ओहिओ उद्देसओ तहेव परंपरोववन्नएसु वि नेरइयादीओ तहेव निरवसेसं भाणियव्वं, तहेव तियदंडगसंगहिओ ॥

४५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

४-११ उद्देसा

४६ एव एएण कमेण जच्चेव बंधिसए उद्देसगाण परिवाडी सच्चेव इह पि जाव अचरिमो उद्देसो, नवर—अणतरा चत्तारि वि एक्कगमगा, परंपरा चत्तारि वि एक्कगमएण। एव चरिमा वि, अचरिमा वि एव चेव, नवर—अलेस्सो केवली अजोगी न भण्णति, सेस तहेव ।।

४७ सेव भते ! सेव भते ! त्ति । एए एक्कारस वि उद्देसगा ।।

———

इक्कतीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

खुड्डजुम्म-नेरइयादीणं उववाय-पदं

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—कति णं भंते ! खुड्डा जुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि खुड्डा जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे, तेयोए, दावरजुम्मे[1], कलियोगे ॥

२. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—चत्तारि खुड्डा जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे जाव कलियोगे ?
गोयमा ! जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे चउपज्जवसिए सेत्त खुड्डागकडजुम्मे। जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे तिपज्जवसिए सेत्त खुड्डागतेयोगे। जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे दुपज्जवसिए सेत्त खुड्डागदावरजुम्मे। जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे एगपज्जवसिए सेत्त खुड्डागकलियोगे से तेणट्ठेण जाव कलियोगे ॥

३ खुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति—कि नेरइएहितो उववज्जति ? तिरिक्खजोणिएहितो—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइएहितो उववज्जति। एवं नेरइयाण उववाओ जहा[2] वक्कतीए तहा भाणियव्वो ॥

४. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवइया उववज्जंति ?
गोयमा ! चत्तारि वा अट्ठ वा बारस वा सोलस वा सखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जति ॥

५. ते णं भते ! जीवा कह उववज्जति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे अज्झवसाणनिव्वत्तिएणं करणोवाएणं,

---

१. वातर° (क); वादर° (ता); वायर° (म)।

२. प० ६।

एव जहा पचविसतिमे सए अट्ठमुद्देसए नेरडयाण वत्तव्वया तहेव इह वि भाणियव्वा जाव[1] आयप्पओगेण उववज्जति नो परप्पयोगेण उववज्जति ॥

६. रयणप्पभापुढविखुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति० ? एवं जहा ओहियनेरइयाण वत्तव्वया सच्चेव रयणप्पभाए वि भाणियव्वा जाव नो परप्पयोगेण उववज्जति । एव सक्करप्पभाए वि, एव जाव अहेसत्तमाए । एव उववाओ जहा[2] वक्कतीए ।

> अस्सण्णी खलु पढम, दोच्चं व सरीसवा तइय पक्खी ।
> [3]°सीहा जति चउत्थि, उरगा पुण पचमि पुढवि ॥१॥
> छट्ठि च इत्थियाओ, मच्छा मणुमा य सत्तमि पुढवि ।
> एसो परमुववाओ, बोधव्वो नरयपुढवीण ॥२॥°

सेस तहेव ॥

७ खुड्डागतेयोगनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति—कि नेरइएहितो ०? उववाओ जहा वक्कतीए ॥

८ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवइया उववज्जति ?
गोयमा ! तिण्णि वा सत्त वा एक्कारस वा पण्णरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति । सेस जहा कडजुम्मस्स । एव जाव अहेसत्तमाए ॥

९ खुड्डागदावरजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति ? एव जहेव खुड्डागकडजुम्मे, नवर—परिमाण दो वा छ वा दस वा चोद्दस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा, सेस त चेव जाव अहेसत्तमाए ॥

१० खुड्डागकलिओगनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति ? एवं जहेव खुड्डागकडजुम्मे, नवर—परिमाण एक्को वा पच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति, सेस त चेव । एव जाव अहेसत्तमाए ॥

११. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

बीओ उद्देसो

१२. कण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति०? एवं चेव जहा ओहियगमो जाव नो परप्पयोगेणं उववज्जति, नवर—उववाओ जहा वक्कंतीए धूमप्पभापुढविनेरइयाण, सेस त चेव ॥

---

१. भ० २५।६२०-६२६ ।
२. प० ६ ।
३. स० पा०—गाहाए उववाएयव्वा ।

१३. [illegible] एवं चेव निरवसेसं। एवं [illegible]
जहा धूमाए [illegible]॥

१४. कण्हलेस्सखुड्डागतेओगनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति०? एवं चेव, नवरं—
तिण्णि वा सत्त वा एक्कारस वा पन्नरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा, सेसं
तं चेव। एवं जाव अहेसत्तमाए वि॥

१५. कण्हलेस्सखुड्डागदावरजुम्मनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति०? एवं चेव,
नवरं—दो वा छ वा दस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा, सेसं तं चेव। एवं धूमप्पभाए वि जाव
अहेसत्तमाए॥

१६. कण्हलेस्सखुड्डागकलियोगनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति०? एवं चेव,
नवरं - एक्को वा पंच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा, सेसं
तं चेव। एवं धूमप्पभाए वि, तमाए वि, अहेसत्तमाए वि॥

१७ सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥

तइओ उद्देसो

१८. नीललेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति०? एवं जहेव
कण्हलेस्साखुड्डागकडजुम्मा, नवरं—उववाओ जो वालुयप्पभाए, सेसं तं चेव।
वालुयप्पभापुढविनीललेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया एवं चेव। एवं पंकप्पभाए
वि, एवं धूमप्पभाए वि। एवं चउसु वि जुम्मेसु, नवरं—परिमाणं
जाणियव्वं। परिमाणं जहा कण्हलेस्सउद्देसए। सेसं तहेव॥

१९. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥

चउत्थो उद्देसो

२० काउलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति०? एवं जहेव
कण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया, नवरं—उववाओ जो रयणप्पभाए, सेसं तं
चेव॥

२१. रयणप्पभापुढविकाउलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति०?

एव चेव। एवं सक्करप्पभाए वि, एव वालुयप्पभाए वि। एव चउसु वि जुम्मेसु, नवर—परिमाण जाणियव्व जहा कण्हलेस्सउद्देसए, सेस त चेव ॥

२२. सेव भते! सेव भते! त्ति ॥

पंचमो उद्देसो

२३. भवसिद्धीयखुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भते! कओ उववज्जति—किं नेरइएहिंतो ०? एव जहेव ओहिओ गमओ तहेव निरवसेस जाव नो परप्पयोगेण उववज्जति ॥

२४. रयणप्पभपुढविभवसिद्धीयखुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भते! ०? एव चेव निरवसेस। एव जाव अहेसत्तमाए। एव भवसिद्धीयखुड्डागतेयोगनेरइया वि। एव जाव कलियोगत्ति, नवर—परिमाण जाणियव्व, परिमाण पुव्वभणिय जहा पढमुद्देसए ॥

२५. सेव भते! सेव भते! त्ति ॥

छट्ठो उद्देसो

२६ कण्हलेस्सभवसिद्धीयखुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भते! कओ उववज्जति ०? एव जहेव ओहिओ कण्हलेस्सउद्देसओ तहेव निरवसेस चउसु वि जुम्मेसु भाणियव्वो जाव—

२७ अहेसत्तमपुढविकण्हलेस्सखुड्डागकलियोगनेरइया ण भते! कओ उववज्जति ०? तहेव ॥

२८. सेवं भते! सेव भते! त्ति ॥

७-२८ उद्देसा

२९ नीललेस्सभवसिद्धीया चउसु वि जुम्मेसु तहेव भाणियव्वा जहा ओहिए नीललेस्सउद्देसए ॥

३०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥
३१. काउलेस्सभवसिद्धीया [illegible] काउलेस्सउद्देसगा ॥
३२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥
३३. जहा भवसिद्धीएहिं चत्तारि उद्देसगा भणिया एवं अभवसिद्धीएहिं वि चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा जाव काउलेस्सउद्देसगो त्ति ॥
३४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
३५. एवं सम्मदिट्ठीहिं वि लेस्सासंजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, नवरं सम्मदिट्ठी पढमबितिएसु दोसु वि उद्देसएसु अहेसत्तमापुढवीए न उववाएयव्वो, सेसं तं चेव ॥
३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
३७. मिच्छादिट्ठीहि वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा जहा भवसिद्धीयाणं ॥
३८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
३९. एवं कण्हपक्खिएहिं वि लेस्सासंजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा जहेव भवसिद्धीएहिं ॥
४० सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
४१. सुक्कपक्खिएहिं एवं चेव चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा जाव वालुयप्पभपुढवि-काउलेस्ससुक्कपक्खियखुड्डागकलिओगनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जति ? तहेव जाव नो परप्पयोगेण उववज्जति ॥
४२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । सव्वे वि एए अट्ठावीसं उद्देसगा ॥

———

बत्तीसइमं सतं

१-२८ उद्देसा

खुड्डजुम्म-नेरइयादीणं उववट्टण-पदं

१ खुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति—किं नेरइएसु उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति ? उव्वट्टणा जहा[1] वक्कंतीए ॥

२ ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उव्वट्टंति ?
गोयमा ! चत्तारि वा अट्ठ वा बारस वा सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उव्वट्टंति ॥

३ ते णं भंते ! जीवा कहं उव्वट्टंति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए, एवं तहेव । एवं सो चेव गमओ जाव[2] आयप्पयोगेणं उव्वट्टंति, नो परप्पयोगेणं उव्वट्टंति ॥

४ रयणप्पभापुढविखुड्डागकडजुम्म० ? एवं रयणप्पभाए वि । एवं जाव अहेसत्तमाए । एवं खुड्डागतेयोग खुड्डागदावरजुम्म-खुड्डागकलियोगा, नवरं—परिमाणं जाणियव्वं, सेसं तं चेव ॥

५ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

६ कण्हलेस्सकडजुम्मनेरइया० ? एवं एएणं कमेणं जहेव उववायसए अट्ठावीसं उद्देसगा भणिया तहेव उव्वट्टणासए वि अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा, नवरं—उव्वट्टंति त्ति अभिलावो भाणियव्वो, सेसं तं चेव ॥

७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

---

१. प० ६ ।   २. भ० २५।६२०-६२६ ।

तेत्तीसइमं सतं

पढमं एगिंदियं सतं

पढमो उद्देसो

एगिंदियाण कम्मप्पगडि-पदं

१ कतिविहा ण भंते ! एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया ॥

२ पुढविक्काइया ण भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविक्काइया य, बादरपुढविक्काइया य ॥

३. सुहुमपुढविक्काइया ण भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया य, अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया य ॥

४. बादरपुढविक्काइया ण भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? एवं चेव । एवं आउक्काइया वि चउक्कएण भेदेण भाणियव्वा, एवं जाव वणस्सइकाइया ॥

५ अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्ज जाव अंतराइयं ॥

६ पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्ज जाव अंतराइयं ॥

७ अपज्जत्ताबादरपुढविक्काइयाण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
एवं चेव ॥

८. पज्जत्ताबादरपुढविक्काइयाण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं

चेव । एवं एएण कमेण जाव वादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण ति[1] ॥

९. अप्पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाण भते ! कति कम्मप्पगडीओ वधति ?
गोयमा ! सत्तविहवधगा वि, अट्ठविहवधगा वि । सत्त वधमाणा आउय-वज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वधति, अट्ठ वधमाणा पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ वधति ॥

१०. पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया ण भते ! कति कम्मप्पगडीओ वधति ? एव चेव, एव सव्वे जाव—

११ पज्जत्तावादरवणस्सइकाइया ण भते ! कति कम्मप्पगडीओ वधति ? एव चेव ॥

१२ अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया ण भते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेति ?
गोयमा ! चोद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेति, त जहा—नाणावरणिज्ज जाव अतराइय[2] सोइदियवज्झ, चक्खिदियवज्झ, घाणिदियवज्झ, जिब्भिदियवज्झ, इत्थिवेदवज्झ, पुरिसवेदवज्झ । एव चउक्कएण भेदेण जाव—

१३ पज्जत्तावादरवणस्सइकाइया ण भते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेति ?
गोयमा ! एव चेव चोद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेति ॥

१४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

१५ कतिविहा ण भते ! अणतरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा अणतरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता, त जहा—पुढविक्का-इया जाव वणस्सइकाइया ॥

१६ अणतरोववन्नगा ण भते ! पुढविक्काइया कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सुहुमपुढविक्काइया य, बादरपुढविक्का-इया य । एव दुपएण भेदेण जाव वणस्सइकाइया ॥

१७. अणतरोववन्नगसुहुमपुढविक्काइयाण भते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, त जहा—नाणावरणिज्ज जाव अंतराइय ॥

१८. अणतरोववन्नगबादरपुढविक्काइयाण भते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?

---

१. X (अ, क, ब, म) ।   २. [illegible] (अ, ब, ता, व, म) ।

गोयमा ! [illegible] ॥

१९. अणंतरोववन्नग[illegible] ?
गोयमा ! [illegible] ॥

२०. अणंतरोववन्नग[illegible] ?
गोयमा ! [illegible] ॥

२१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

तइओ उद्देसो

२२ कतिविहा णं भंते ! परंपरोववन्नगा [illegible] पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा परंपरोववन्नगा [illegible] पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया एवं चउक्कओ भेदो जहा ओहिउद्देसए ॥

२३. परंपरोववन्नगअपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कति कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहिउद्देसए तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव चोद्दस वेदेंति ॥

२४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४-११ उद्देसा

२५. अणंतरोगाढा जहा अणंतरोववन्नगा ॥
२६. परंपरोगाढा जहा परंपरोववन्नगा ॥
२७. अणंतराहारगा जहा अणंतरोववन्नगा ॥
२८. परंपराहारगा जहा परंपरोववन्नगा ॥
२९. अणंतरपज्जत्तगा जहा अणंतरोववन्नगा ॥
३०. परंपरपज्जत्तगा जहा परंपरोववन्नगा ॥
३१. चरिमा वि जहा परंपरोववन्नगा तहेव ॥
३२. एवं अचरिमा वि । एवं एए एक्कारस उद्देसगा ॥
३३ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

---

१. ०गाण (अ, ख, व, म, स) ।

वीअं सतं

पढमो उद्देसो

३४. कतिविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया ॥

३५. कण्हलेस्सा णं भंते ! पुढविक्काइया कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविक्काइया य, बादरपुढविक्काइया य ॥

३६. कण्हलेस्सा णं भंते ! सुहुमपुढविक्काइया कतिविहा पण्णत्ता ? एवं एएणं अभिलावेणं चउक्कओ भेदो जहेव ओहिउद्देसए[1] ॥

३७. कण्हलेस्सअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिउद्देसए तहेव पण्णत्ताओ, तहेव बंधंति, तहेव वेदेति ॥

३८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

वीओ उद्देसो

३९. कतिविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगकण्हलेस्सएगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया एवं एएणं अभिलावेणं तहेव दुयओ भेदो जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

---

१. °उद्देसए जाव वणस्सइकाइयत्ति (न) ।

मिल्ले चरिमंते पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! एगसमइएण वा सेसं तं चेव जाव से तेणट्ठेणं [2]गोयमा ! एवं वुच्चइ—एगसमइएणं वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा । एवं अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइओ पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहणावेत्ता पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते बादरपुढविकाइएसु अपज्जत्तएसु उववाएयव्वो, ताहे तेसु चेव पज्जत्तएसु । एवं आउकाइएसु चत्तारि आलावगा—सुहुमेहिं अपज्जत्तएहिं, ताहे पज्जत्तएहिं, बादरेहिं अपज्जत्तएहिं, ताहे पज्जत्तएहिं उववाएयव्वो । एवं चेव सुहुमतेउकाइएहिं वि अपज्जत्तएहिं ताहे पज्जत्तएहिं उववाएयव्वो ॥

५. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्ताबादरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? सेसं तं चेव । एवं पज्जत्ताबादरतेउक्काइयत्ताए उववाएयव्वो । वाउकाइएसु सुहुमबादरेसु जहा आउक्काइएसु उववाओ तहा उववाएयव्वो । एवं वणस्सइकाइएसु वि ॥

६. पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए० ? एवं पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइओ वि पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहणावेत्ता एएणं चेव कमेण एएसु चेव वीससु ठाणेसु उववाएयव्वो जाव बादरवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु वि । एवं अपज्जत्ताबादरपुढविकाइओ वि । एवं पज्जत्ताबादरपुढविकाइओ वि । एवं आउकाइओ वि चउसु वि गमएसु पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, एयाए चेव वत्तव्वयाए एएसु चेव वीसइठाणेसु उववाएयव्वो । सुहुमतेउकाइओ वि अपज्जत्तओ पज्जत्तओ य एएसु चेव वीसाए ठाणेसु उववाएयव्वो ।

७. अपज्जत्ताबादरतेउक्काइए णं भंते ! मणुस्सखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? सेसं तहेव जाव से तेणट्ठेणं । एवं पुढविक्काइएसु चउविहेसु वि उववाएयव्वो, एवं आउकाइएसु चउविहेसु वि, तेउकाइएसु सुहुमेसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य एवं चेव उववाएयव्वो ॥

८. अपज्जत्ताबादरतेउक्काइए णं भंते ! मणुस्सखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्ताबादरतेउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते !

---

१. भ० ३४।२,३ ।

२. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव विग्गहेणं ।

कतिसमइएण० ? सेस त चेव । एव पज्जत्ताबादरतेउक्काइयत्ताए वि उववाएयव्वो । वाउकाइयत्ताए य वणस्सइकाइयत्ताए य जहा पुढविकाइएसु तहेव चउक्कएण भेदेण उववाएयव्वो । एव पज्जत्ताबादरतेउकाइयो वि समयखेत्ते समोहणावेत्ता एएसु चेव वीसाए ठाणेसु उववाएयव्वो । जहेव अपज्जत्तओ उववाइओ, एव सव्वत्थ वि बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य समयखेत्ते उववाएयव्वा समोहणावेयव्वा वि । वाउक्काइया वणस्सइकाइया य जहा पुढविक्काइया तहेव चउक्कएण भेदेण उववाएयव्वा जाव—

९ पज्जत्ताबादरवणस्सइकाइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमते पज्जत्ताबादरवणस्सइकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कतिसमइएण० ? सेस तहेव जाव से तेणट्ठेण ॥

१०. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कइसमइएण० ? सेस तहेव निरवसेस । एव जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमते सव्वपदेसु वि समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमते समयखेत्ते य उववाइया, जे य समयखेत्ते समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाइया, एव एएण चेव कमेण पच्चत्थिमिल्ले चरिमते समयखेत्ते य समोहया पुरत्थिमिल्ले चरिमते समयखेत्ते य उववाएयव्वा तेणेव गमएण । एवं एएण गमएण दाहिणिल्ले चरिमते समोहयाण उत्तरिल्ले चरिमते समयखेत्ते य उववाओ । एव चेव उत्तरिल्ले चरिमते समयखेत्ते य समोहया दाहिणिल्ले चरिमते समयखेत्ते य उववाएयव्वा तेणेव गमएण ॥

११ अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण भते ! सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एव जहेव रयणप्पभाए जाव से तेणट्ठेण । एव एएणं कमेण जाव पज्जत्तएसु सुहुमतेउकाइएसु ॥

१२. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए ण भते ! सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्ताबादरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कतिसमइएण—पुच्छा ।

गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा ॥

१३. से केणट्ठेण ?

एव खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, त जहा—उज्जुआयता जाव अद्धचक्कवाला । एगओवकाए सेढीए उववज्जमाणे [illegible] उववज्जेज्जा । दुहओवकाए सेढीए उववज्जमाणे [illegible] उववज्जेज्जा ।

से तेणट्ठेण । एव पज्जत्तएसु वि बादरतेउकाइएसु । सेस जहा रयणप्पभाए । जे वि बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य समयखेत्ते समोहणित्ता दोच्चाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमते पुढविकाइएसु चउव्विहेसु, आउकाइएसु चउव्विहेसु, तेउकाइएसु दुविहेसु, वाउकाइएसु चउव्विहेसु, वणस्सइकाइएसु चउव्विहेसु उववज्जति, ते वि एव चेव दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेण उववाएयव्वा । बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य जाहे तेसु चेव उववज्जति ताहे जहेव रयणप्पभाए तहेव एगसमइय-दुसमइय-तिसमइयविग्गहा भाणियव्वा, सेस जहेव रयणप्पभाए तहेव निरवसेस । जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया एव जाव अहेसत्तमाए[1] भाणियव्वा ॥

१४. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण भते ! अहेलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कइसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा ॥

१५. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण अहेलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए एगपयरसि अणुसेढि[2] उववज्जित्तए, से ण तिसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा । जे भविए विसेढि[3] उववज्जित्तए, से णं चउसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा । से तेणट्ठेणं जाव उववज्जेज्जा । एव पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए वि, एव जाव पज्जत्तासुहुमतेउकाइयत्ताए ॥

१६ अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण भते ! अहेलोग[4]•खेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए,° समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्ताबादरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कइसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा ॥

१७. से केणट्ठेण ?

एव खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, त जहा—उज्जुयायता जाव अद्धचक्कवाला । एगओवकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा, दुहओवकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा ।

---

१. अहेसत्तमाए वि (स) ।

२. अणुसेढीए (अ, क, ख, व, म, स) ।

३. विसेढीए (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

४. स० पा—अहेलोग जाव समोहणित्ता ।

से तेणट्ठेण । एव पज्जत्तएसु वि बादरतेउकाइएसु वि उववाएयव्वो । वाउक्का-इय-वणस्सइकाइत्ताए चउक्कएणं भेदेण जहा आउक्काइयत्ताए तहेव उववाए-यव्वो । एवं जहा अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयस्स गमओ भणिओ एव पज्जत्ता-सुहुमपुढविकाइयस्स वि भाणियव्वो, तहेव वीसाए ठाणेसु उववाएव्वो ॥

१८ [अपज्जत्तावादरपुढविक्काइए ण भते ?] अहेलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए०? एव बादरपुढविकाइयस्स वि अपज्जत्तगस्स पज्जत्तगस्स य भाणियव्व । एव आउक्काइयस्स चउव्विहस्स वि भाणियव्व । सुहुमतेउक्काइयस्स दुविहस्स वि एव चेव ॥

१९ अपज्जत्तावादरतेउक्काइए ण भते ! समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कइसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेण उवव-ज्जेज्जा ॥

२० से केणट्ठेण ? अट्ठो जहेव रयणप्पभाए तहेव सत्त सेढीओ । एव जाव—

२१. अपज्जत्तावादरतेउकाइए ण भते ! समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते पज्जत्तासुहुमतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ०? सेस त चेव ॥

२२ अपज्जत्तावादरतेउक्काइए ण भते ! समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्तावादरतेउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कइसम-इएण विग्गहेण उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेजा ॥

२३ से केणट्ठेण ?

अट्ठो जहेव रयणप्पभाए तहेव सत्त सेढीओ । एव पज्जत्तावादरतेउकाइयत्ताए वि । वाउकाइएसु वणस्सइकाइएसु य जहा पुढविक्काइएसु उववाओ तहेव चउक्कएण भेदेण उववाएयव्वो । एव पज्जत्तावादरतेउकाइओ वि एएसु चेव ठाणेसु उववाएयव्वो । वाउक्काइय-वणस्सइकाइयाणं जहेव पुढविकाइयत्ते उववाओ तहेव भाणियव्वो ॥

२४. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भते ! उड्ढलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए अहेलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्ता-सुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कइसमइएण ०? एव उड्ढ-लोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहयाणं अहेलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते उववज्जताणं सो चेव गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव बादरवणस्स-इकाइओ पज्जत्तओ बादरवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु उववाइओ ॥

२५. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण भते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढवि-काइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! कइसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा ? गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा ॥

२६. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ एगसमइएण वा जाव चउसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा ?
एव खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, त जहा—उज्जुयायता जाव अद्धचक्कवाला । उज्जुयायताए सेढीए उववज्जमाणे एगसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा । एगओवकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएण विग्गहेण उवव-ज्जेज्जा । दुहओवकाए सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरसि अणुसेढि उववज्जित्तए, से ण तिसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा । जे भविए विसेढि उववज्जित्तए, से ण चउसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा । से तेणट्ठेण जाव उववज्जेज्जा । एव अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइओ लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमते अपज्जत्तएसु पज्ज-त्तएसु सुहुमपुढविकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमआउकाइएसु, अपज्ज-त्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमतेउकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमवाउकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु बादरवाउकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमवण-स्सइकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य बारससु वि ठाणेसु एएण चेव कमेण भाणियव्वो । सुहुमपुढविकाइओ पज्जत्तओ एव चेव निरवसेसो बारससु वि ठाणेसु उववाएयव्वो । एव एएण गमएणं जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव भाणियव्वो ॥

२७. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण भते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स दाहिणिल्ले चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढवि-काइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! कइसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उवव-ज्जेज्जा ॥

२८ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ ०?
एव खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, त जहा—उज्जुयायता जाव अद्धचक्कवाला । एगओवकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएण विग्गहेण उवव-ज्जेज्जा, दुहओवकाए सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरसि अणुसेढि उववज्जि त्तए, से ण तिसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा । जे भविए विसेढि उववज्जित्तए, से ण चउसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं एएण गमएण पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए दाहिणिल्ले चरिमते

उववाएयव्वो जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव। सव्वेसि दुसमइओ तिसमइयो चउसमइओ विग्गहो भाणियव्वो ॥

२९ अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा? गोयमा! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा ॥

३० से केणट्ठेणं?

एवं जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहया पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते उववाइया तहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते उववाएयव्वा सव्वे ॥

३१ अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स उत्तरिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते?० एवं जहा पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहयओ[1] दाहिणिल्ले चरिमंते उववाइओ तहा पुरत्थिमिल्ले समोहयओ उत्तरिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो ॥

३२ अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते! लोगस्स दाहिणिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स दाहिणिल्ले चेव चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए०? एवं जहा पुरत्थिमिल्ले समोहयओ पुरत्थिमिल्ले चेव उववाइओ तहेव दाहिणिल्ले समोहए दाहिणिल्ले चेव उववाएयव्वो, तहेव निरवसेसं जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु चेव पज्जत्तएसु दाहिणिल्ले चरिमंते उववाइओ, एवं दाहिणिल्ले समोहयओ पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो, नवरं—दुसमइय-तिसमइय-चउसमइयविग्गहो, सेसं तहेव। एवं दाहिणिल्ले समोहयओ उत्तरिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो जहेव सट्ठाणे तहेव। एगसमइय-दुसमइय-तिसमइय-चउसमइयविग्गहो। पुरत्थिमिल्ले जहा पच्चत्थिमिल्ले, तहेव दुसमइय-तिसमइय-चउसमइयविग्गहो। पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समोहयाणं पच्चत्थिमिल्ले चेव उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे। उत्तरिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि, सेसं तहेव। पुरत्थिमिल्ले जहा सट्ठाणे, दाहिणिल्ले एगसमइओ विग्गहो नत्थि, सेसं तं चेव। उत्तरिल्ले समोहयाणं उत्तरिल्ले चेव उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे। उत्तरिल्ले समोहयाणं पुरत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एवं चेव, नवरं—एगसमइओ विग्गहो नत्थि।

---

१ समोहताओ (अ, क, ब) समोहतो (स)।

[illegible] ॥

एगिंदियाणं ठाण-पदं

३३ [illegible]

गोयमा ! [illegible] !

एगिंदियाणं कम्म-पदं

३४ अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?

गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं । एवं चउक्कएणं भेदेणं जहेव एगिंदियसएसु जाव बायरवणस्सइ-काइयाणं पज्जत्तगाणं ॥

३५. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ बंधंति ?

गोयमा ! सत्तविहबंधगा वि, अट्ठविहबंधगा वि, जहा एगिंदियसएसु जाव पज्जत्ताबायरवणस्सइकाइया ॥

३६. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेंति ?

गोयमा ! चोद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेंति, तं जहा—नाणावरणिज्जं, जहा एगिं-दियसएसु जाव पुरिसवेदवज्झं । एवं जाव बायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्त-गाणं ॥

एगिंदियाणं उववत्ति-पद

३७ एगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति० ? जहा वक्कंतीए पुढविक्काइयाणं उववाओ ॥

एगिंदियाणं समुग्घाय-पद

३८. एगिंदियाणं भंते ! कइ समुग्घाया पण्णत्ता ?

गोयमा ! चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए जाव वेउव्विय-समुग्घाए ॥

---

१. प० २

२. भ० ३३।६-८ ।

३. भ० ३३।९-११ ।

४. भ० ३३।१२,१३ ।

५. प० ६ ।

एगिंदियाणं तुल्ल-विसेसाहिय-कम्मकरण-पदं

३९. एगिंदिया णं भंते ! किं तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ? तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ? वेमायट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ? वेमायट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ?
गोयमा ! अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगइया वेमायट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगइया वेमायट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ।।

४० से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ?
गोयमा ! एगिंदिया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा- अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा, अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा, अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा । तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति । तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति । तत्थ णं जे ते विसमाउया समोववन्नगा ते णं वेमायट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति । तत्थ णं जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा ते णं वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ।।

४१ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति ।।

बीओ उद्देसो

विसेसित-एगिंदियाणं ठाणादि-पदं

४२ कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढवि-काइया, दुयाभेदो जहा एगिंदियसएसु जाव बादरवणस्सइकाइया य ।।

४३ कहि णं भंते ! अणंतरोववन्नगाणं बादरपुढविकाइयाणं ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु, तं जहा—रयणप्पभाए जहा ठाणपदे जाव[1]

---

१. प० २ ।

दोसु समुद्देसु, [illegible]

४४ अणंतरोववन्नगाणं सुहुमपुढविकाइयाणं भंते! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ। एवं जहा एगिंदियसएसु अणंतरोववन्नगउद्देसए तहेव पण्णत्ताओ, तहेव बंधंति, तहेव वेदेंति जाव अणंतरोववन्नगा बादरवणस्सइकाइया ॥

४५. अणंतरोववन्नगएगिंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति० ? जहेव ओहिए उद्देसओ भणिओ तहेव ॥

४६. अणंतरोववन्नगएगिंदियाणं भंते ! कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! दोन्नि[2] समुग्घाया पण्णत्ता तं जहा—वेदणासमुग्घाए य कसायसमुग्घाए य ॥

४७ अणंतरोववन्नगएगिंदिया णं भंते ! किं तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति—पुच्छा तहेव ॥
गोयमा ! अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ।

४८ से केणट्ठेणं जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ?
गोयमा ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा । तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति । तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति । से तेणट्ठेणं जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ॥

४९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. भ० ३३।१७-२० ।

२. दो (ब, म) ।

तइयो उद्देसो

५०. कइविहा णं भते ! परपरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा परंपरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता, त जहा—पुढविक्काइया, भेदो चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

५१. परपरोववन्नगअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए[1] पच्चत्थिमिल्ले चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एव एएण अभिलावेण जहेव पढमो उद्देसओ जाव लोगचरिमतो त्ति ॥

५२. कहि ण भते ! परंपरोववन्नगबादरपुढविक्काइयाण[2] ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! सट्ठाणेण अट्ठसु पुढवीसु । एव एएण अभिलावेण जहा पढमे उद्देसए जाव तुल्लट्ठितीयत्ति ॥

५३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४-११ उद्देसा

५४. एव सेसा वि अट्ठ उद्देसगा जाव अचरिमो त्ति, नवर—अणतरा अणतरसरिसा, परपरा परपरसरिसा, चरिमा य अचरिमा य एव चेव । एव एते एक्कारस उद्देसगा ॥

---

१. ठाणा (अ, ता, ब); पुढवीए ठाणा (स) । २. °ठाण० [illegible]
३ भ० ३४।२-३८ ।

छट्ठं सतं

६१ कइविहा णं भंते कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता ? जहेव[1] ओहिउद्देसओ ॥

६२ कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्ना कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता ? जहेव अणंतरोववन्नाउद्देसओ ओहिओ तहेव ॥

६३ कइविहा णं भंते ! परंपरोववन्ना कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा परंपरोववन्ना कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता, भेदो चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

६४. परंपरोववन्नाकण्हलेस्सभवसिद्धियअपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए० ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव लोयचरिमंते त्ति । सव्वत्थ कण्हलेस्सेसु भवसिद्धिएसु उववाएयव्वो ॥

६५ कहि णं भंते ! परंपरोववन्नाकण्हलेस्सभवसिद्धियपज्जत्ताबादरपुढविकाइयाणं ठाणा पण्णत्ता ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव तुल्लट्ठिइयत्ति । एवं एएणं अभिलावेणं कण्हलेस्सभवसिद्धियएगिंदिएहि वि तहेव एक्कारसउद्देसगसंजुत्तं छट्ठं सतं ॥

७-१२ सताइं

६६ नीललेस्सभवसिद्धियएगिंदिएसु सतं । एवं काउलेस्सभवसिद्धियएगिंदिएहि वि सतं । जहा भवसिद्धिएहिं चत्तारि सयाणि एवं अभवसिद्धिएहिं वि चत्तारि सयाणि भाणियव्वाणि, नवरं—चरिमअचरिमवज्जा नव उद्देसगा भाणियव्वा, सेसं तं चेव । एवं एयाइं बारस एगिंदियसेढीसयाइं ॥

६७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

---

१. एवं जहेव (ता) ।

१३. कडजुम्मतेओयएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जं

१४. ते णं भंते ! जीवा एगसमए—पुच्छा।
गोयमा ! एकूणवीसा वा संखेज्जा वा असंखेज्जा
सेसं जहा कडजुम्मकडजुम्माणं जाव अणंतखुत्तो ॥

१५. कडजुम्मदावरजुम्मएगिंदिया णं भंते! कओहिंतो उव

१६. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं—पुच्छा।
गोयमा ! अट्ठारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा
तहेव जाव अणंतखुत्तो ॥

१७. कडजुम्मकलियोगएगिंदिया णं भंते ! कओहिंतो उव
परिमाणं सत्तरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा
अणंतखुत्तो ॥

१८. तेयोगकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओहिंतो उव
परिमाणं बारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अ
तहेव जाव अणंतखुत्तो ॥

१९. तेयोयतेयोयएगिंदिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्
परिमाणं पन्नरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अ
अणंतखुत्तो। एवं एएसु सोलससु महाजुम्मेसु एक्को
नाणत्तं—तेयोगदावरजुम्मेसु परिमाणं चोद्दस वा
अणंता वा उववज्जंति। तेयोगकलियोगेसु तेरस वा
अणंता वा उववज्जंति। दावरजुम्मकडजुम्मेसु अट्ठ
वा अणंता वा उववज्जंति। दावरजुम्मतेयोगेसु
असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति। दावरजुम्म
वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति।
संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति
वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उवव
वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उवव
वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उवव

२०. कलियोगकलियोगएगिंदिया णं भंते ! कओ
परिमाणं पंच वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा
जाव अणंतखुत्तो ॥

२१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. भ० ३५।३।

बीओ उद्देसो

२२. पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? गोयमा ! तहेव, एवं जहेव पढमो उद्देसओ तहेव सोलसखुत्तो बितिओ वि[1] भाणियव्वो, तहेव सव्वं, नवरं—इमाणि दस नाणत्ताणि—१. ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं । २. आउयकम्मस्स नो बंधगा, अबंधगा । ३. आउयस्स नो उदीरगा, अणुदीरगा । ४. नो उस्सासगा, नो निस्सासगा, नो उस्सासनिस्सासगा । ५. सत्तविहबंधगा, नो अट्ठविहबंधगा ॥

२३ ते णं भंते ! पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया कालओ केवच्चिरं होंति ? गोयमा ! ६. एक्कं समयं । ७. एवं ठिती वि । ८. समुग्घाया आदिल्ला दोन्नि । ९. समोहया न पुच्छिज्जंति । १०. उव्वट्टणा न पुच्छिज्जइ, सेसं तहेव सव्वं निरवसेसं सोलससु वि गमएसु जाव अणंतखुत्तो ॥

२४ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३-११ उद्देसा

२५. अपढमसमयकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एसो जहा पढमुद्देसो सोलसहि वि जुम्मेसु[2] तहेव नेयव्वो जाव कलियोगकलियोगत्ताए जाव अणंतखुत्तो ॥

२६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२७ चरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं जहेव पढमसमयउद्देसओ, नवरं—देवा न उववज्जंति, तेउलेस्सा न पुच्छिज्जंति, सेसं तहेव ॥

२८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२९ अचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा अपढमसमयउद्देसो[3] तहेव निरवसेसो भाणितव्वो ॥

३०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. वितिओ वि (अ, क, ख, व, म) ।
२. जुम्मेहिंसु (ता) ।
३, पढम० (अ, क, ख, ता, व) ।

३१. पढमपढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भंते ! कओ उववज्जति ? जहा पढमसमयउद्देसओ तहेव निरवसेस ॥

३२. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

३३ पढमअपढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भंते ! कओ उववज्जति० ? जहा पढमसमयउद्देसो तहेव भाणियव्वो ॥

३४. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

३५ पढमचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भंते ! कओ उववज्जति० ? जहा चरिमुद्देसओ तहेव निरवसेस ॥

३६ सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३७ पढमअचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भंते ! कओ उववज्जति० ? जहा 'बीओ उद्देसओ'[1] तहेव निरवसेस ॥

३८. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

३९ चरिमचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भंते ! कओ उववज्जति० ? जहा चउत्थो उद्देसओ[2] तहेव निरवसेस ॥

४० सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

४१ चरिमअचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भंते ! कओ उववज्जति० ? जहा पढमसमयउद्देसओ तहेव निरवसेस ॥

४२ सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति जाव विहरति ॥

४३ एव एए एक्कारस उद्देसगा । पढमो ततिओ पचमो[3] य सरिसगमा, सेसा अट्ठ सरिसगमा, नवर—चउत्थे[4] अट्ठमे दसमे य देवा न उववज्जति । तेउलेस्सा नत्थि ॥

बितियं एगिंदियमहाजुम्मसतं

४४. कण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ?
गोयमा ! उववाओ तहेव, एवं जहा ओहिउद्देसए, नवरं इमं नाणत्तं ॥

४५. ते णं भंते ! जीवा कण्हलेस्सा ?
हंता कण्हलेस्सा ॥

---

१. पढमउ° (अ, क, ता)।

२. चउत्थुद्देसओ (ता)।

३. पंचमओ (अ, क, ब, म); पंचमगो (स, ता)।

४. चउत्थे अट्ठ (क, ब)।

४६. ते णं भंते ! [illegible] ?
गोयमा ! [illegible] ॥

४७. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

४८. [illegible] ?
जहा पढमसमयउद्देसगो, नवर-

४९. ते ण भंते ! जीवा कण्हलेस्सा ?
हंता कण्हलेस्सा, सेसं तहेव[1] ॥

५० सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

५१ एव जहा ओहियसए एक्कारस उद्देसगा भणिया तहा कण्हलेस्ससए वि एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा । पढमो तइओ पंचमो य सरिसगमा, सेसा अट्ठ वि सरिसगमा, नवर चउत्थ-अट्ठम-दसमेसु उववाओ नत्थि देवस्स ॥

५२ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

३-१२ एगिंदियमहाजुम्मसताइं

५३. एव नीललेस्सेहि वि सत कण्हलेस्ससतसरिस, एक्कारस उद्देसगा तहेव ॥

५४. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

५५. एव काउलेस्सेहि वि सत कण्हलेस्ससतसरिस ॥

५६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

५७ भवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मएगिदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? जहा ओहियसत तहेव, नवर —एक्कारससु वि उद्देसएसु ॥

५८. अह भते ! सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता भवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मएगिदियत्ताए उववन्नपुव्वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, सेस तहेव ॥

५९. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

६०. कण्हलेस्सभवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मएगिदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? एव कण्हलेस्सभवसिद्धियएगिदिएहि वि सत वितियसतकण्हलेस्ससरिसं भाणियव्व ॥

६१. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥

---

१ त चेव (स) ।

६२. एव नीललेस्सभवसिद्धियएगिदियएहि वि सत ॥

६३ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

६४ एव काउलेस्सभवसिद्धियएगिदिएहि वि तहेव एक्कारसउद्देसगसजुत्त मत। एव एयाणि चत्तारि भवसिद्धिएसु सताणि। चउसु वि सएसु सव्वे पाणा जाव उववन्नपुव्वा ? नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६५ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

६६ जहा भवसिद्धिएहि चत्तारि सताइ भणियाइ एव अभवसिद्धिएहि वि चत्तारि सताणि लेस्सासजुत्ताणि भाणियव्वाणि। सव्वे पाणा तहेव नो इणट्ठे समट्ठे। एव एयाइ बारस एगिदियमहाजुम्मसताइ भवति ॥

६७ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

छत्तीसइमं सतं

पढमं बेंदियमहाजुम्मसतं

पढमो उद्देसो

महाजुम्म-बेंदियाण उववायादि-पदं

१ कडजुम्मकडजुम्मबेंदिया ण भंते ! कओ उववज्जंति० ? उववाओ जहा वक्कंतीए। परिमाण सोलस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जंति। अवहारो[1] जहा[2] उप्पलुद्देसए। ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण बारस जोयणाइ। एव जहा एगिंदियमहाजुम्माण पढमुद्देसए तहेव, नवर—तिण्णि लेस्साओ, देवा न उववज्जंति। सम्मदिट्ठी वा मिच्छदिट्ठी वा, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। नाणी वा अण्णाणी वा। नो मणजोगी, वइजोगी वा कायजोगी वा ॥

२ ते ण भते ! कडजुम्मकडजुम्मबेंदिया कालओ केवच्चिरं होंति ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण सखेज्ज काल। ठिती जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण बारस सवच्छराइ। आहारो नियम छद्दिसि। तिण्णि समुग्घाया, सेस तहेव जाव अणतखुत्तो। एव सोलससु वि जुम्मेसु ॥

३ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

२-११ उद्देसा

४ पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मबेंदिया ण भंते ! कओ उववज्जंति० ? एव जहा एगिंदियमहाजुम्माण पढमसमयउद्देसए। दस नाणत्ताइ ताइ चेव दस इह वि।

---

१. प० ६।
२. आहारो (अ, क, ता, व)।
३. भ० ११।४।

एक्कारसमं इमं नाणत्तं—नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी। सेसं जहा बेंदियाणं चेव पढमुद्देसए ॥

५ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

६ एवं एए वि जहा एगिंदियमहाजुम्मेसु एक्कारस उद्देसगा तहेव भाणियव्वा, नवरं—चउत्थ-अट्ठम-दसमेसु सम्मत्त-नाणाणि न भण्णंति। जहेव एगिंदिएसु पढमो तइओ पंचमो य एक्कगमा, सेसा अट्ठ एक्कगमा।

२-१२ बेंदियमहाजुम्मसताइं

७ कण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मबेंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेव। कण्हलेस्सेसु वि एक्कारसउद्देसगसंजुत्तं सतं, नवरं—लेस्सा, संचिट्ठणा' जहा एगिंदियकण्हलेस्साणं ॥

८ एवं नीललेस्सेहि वि सतं ॥

९. एवं काउलेस्सेहि वि ॥

१० भवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मबेंदिया णं भंते० ? एवं भवसिद्धियसता वि चत्तारि तेणेव पुव्वगमएणं नेयव्वा, नवरं—सव्वे पाणा० ? णो तिणट्ठे समट्ठे। सेसं तहेव ओहियसताणि चत्तारि ॥

११ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१२. जहा भवसिद्धियसताणि चत्तारि एवं अभवसिद्धियसताणि चत्तारि भाणियव्वाणि, नवरं—सम्मत्त-नाणाणि सव्वेहि नत्थि, सेसं तं चेव। एवं एयाणि बारस बेंदियमहाजुम्मसताणि भवंति ॥

१३ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

सत्ततीसइमं सतं

महाजुम्म-तेइंदियाणं उववायादि-पदं

१. कडजुम्मकडजुम्मतेइंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं तेइंदिएसु वि बारस सता कायव्वा बेइंदियसतसरिसा, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं । ठिती जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं एकूणवण्णं राइंदियाइं, सेसं तहेव ॥

२ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

अट्ठतीसइमं सतं

महाजुम्म-चउरिंदियाणं उववायादि-पदं

१ चउरिंदिएहि वि एवं चेव बारस सता कातव्वा, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं । ठिति जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा । सेसं जहा बेदियाणं ॥

२ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

एगूणयालीसइमं सतं

महाजुम्म-असण्णिपंचिंदियाणं उववायादि-पदं

१ कडजुम्मकडजुम्मअसण्णिपंचिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा बेदियाणं तहेव असण्णिसु वि बारस सता कातव्वा, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं । संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं पुव्वकोडीपुहत्तं । ठिती जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी, सेसं जहा बेदियाणं ॥

२ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

चत्तालीसतिमं सतं

पढमं सण्णिपंचिंदियमहाजुम्मसतं

महाजुम्म-सण्णिपंचिंदियाणं उववायादि-पदं

१ कडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति०? उववाओ चउसु वि गईसु। संखेज्जवासाउय-असंखेज्जवासाउय-पज्जत्ता-अपज्जत्तएसु य न कओ वि पडिसेहो जाव अणुत्तरविमाणत्ति। परिमाणं अवहारो ओगाहणा य जहा असण्णिपंचिंदियाणं। वेयणिज्जवज्जाणं सत्तण्ह पगडीणं बंधगा वा अबंधगा वा, वेयणिज्जस्स बंधगा, नो अबंधगा। मोहणिज्जस्स वेदगा वा अवेदगा वा, सेसाणं सत्तण्ह वि वेदगा, नो अवेदगा। सायावेदगा वा असायावेदगा वा। मोहणिज्जस्स उदई वा अणुदई वा, सेसाणं सत्तण्ह वि उदई, नो अणुदई। नामस्स गोयस्स य उदीरगा, नो अणुदीरगा, सेसाणं छण्ह वि उदीरगा वा अणुदीरगा वा। कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा। सम्मदिट्ठी वा मिच्छादिट्ठी वा सम्मामिच्छादिट्ठी वा। नाणी वा अण्णाणी वा। मणजोगी वइजोगी कायजोगी। उवओगो, वण्णमादी, उस्सासगा वा नीसासगा वा, आहारगा य जहा एगिंदियाणं। विरया य अविरया य विरयाविरया य। सकिरिया, नो अकिरिया॥

२ ते णं भंते! जीवा किं सत्तविहबंधगा? अट्ठविहबंधगा? छव्विहबंधगा? एगविहबंधगा वा?

गोयमा! सत्तविहबंधगा वा जाव एगविहबंधगा वा॥

३. ते णं भंते! जीवा किं आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता? नोसण्णोवउत्ता?

गोयमा! आहारसण्णोवउत्ता जाव नोसण्णोवउत्ता वा। सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा - कोहकसायी वा जाव लोभकसायी वा, अकसायी वा। इत्थिवेदगा वा पुरिसवेदगा वा नपुंसगवेदगा वा अवेदगा वा। इत्थिवेदबंधगा वा पुरिसवेद-बंधगा वा नपुंसगवेदबंधगा वा अबंधगा वा। सण्णी, नो असण्णी। सइंदिया,

नो अणिंदिया । [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ।

८ [illegible] भंते ! 'सव्वपाणा[1]' [illegible]
जाव अणंतखुत्तो, नवरं—[illegible] ।

५ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२-११ उद्देसा

६ पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? उववाओ, परिमाणं आहारो जहा एएसिं चेव पढमोद्देसए । ओगाहणा बंधो वेदो वेदणा उदयी उदीरगा य जहा बेंदियाणं पढमसमइयाणं, तहेव कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा । सेसं जहा बेंदियाणं पढमसमइयाणं जाव अणंतखुत्तो, नवरं—इत्थिवेदगा वा पुरिसवेदगा वा नपुंसगवेदगा वा, सण्णिणो नो असण्णिणो, सेसं तहेव । एवं सोलससु वि जुम्मेसु परिमाणं तहेव सव्वं ।

७ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

८. एवं एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा तहेव, पढमो तइओ पंचमो य सरिसगमा, सेसा अट्ठ वि सरिसगमा । चउत्थ-अट्ठम-दसमेसु नत्थि विसेसो कायव्वो ॥

९ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

बितियं सण्णिपंचिंदियमहाजुम्मसतं

१०. कण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? तहेव पढमुद्देसओ सण्णीणं, नवरं—बंध-वेद-उदइ-उदीरण-लेस्स-बंधग-सण्ण[2]-कसाय-वेदबंधगा य एयाणि जहा बेंदियाणं । कण्हलेस्साणं वेदो तिविहो, अवेदगा नत्थि । संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं । एवं ठिती वि, नवरं—ठितीए अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं न

---

१. सव्वपाणा (अ, क, ख, ता, ब, स) ।   २. सण्णि (ता); सण्णा (म, स) ।

भण्णंति। सेसं जहा एएसिं चेव पढमे उद्देसए जाव अणंतखुत्तो। एवं सोलससु वि जुम्मेसु ॥

११ सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

१२ पढमसमयकण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति०? जहा सण्णिपंचिंदियपढमसमयउद्देसए तहेव निरवसेसं, नवरं—

१३ ते णं भंते! जीवा कण्हलेस्सा?
हंता कण्हलेस्सा, सेसं तं चेव। एवं सोलससु वि जुम्मेसु ॥

१४ सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

१५. एवं एए वि एक्कारस उद्देसगा कण्हलेस्ससए। पढम-ततिय-पंचमा सरिसगमा, सेसा अट्ठ वि सरिसगमा ॥

१६ सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

३-१४ सण्णिमहाजुम्मसताइं

१७ एवं नीललेसेसु वि सतं, नवरं—संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं। एवं ठिती वि। एवं तिसु उद्देसएसु[1], सेसं तं चेव ॥

१८. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

१९. एवं काउलेस्ससतं पि, नवरं—संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं। एवं ठितीवि। एवं तिसु वि उद्देसएसु, सेसं तं चेव ॥

२० सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

२१ एवं तेउलेसेसु वि सतं, नवरं—संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं। एवं ठितीवि, नवरं—नोसण्णोवउत्ता वा। एवं तिसु वि उद्देसएसु[2], सेसं तं चेव ॥

२२ सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

२३ जहा तेउलेस्ससतं तहा पम्हलेस्ससतं पि, नवरं—संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं। एवं ठितीवि, नवरं—अंतोमुहुत्तं न भण्णति, सेसं तं चेव। एवं एएसु पंचसु सएसु जहा कण्हलेस्ससए गमओ तहा नेयव्वो जाव अणंतखुत्तो ॥

---

१ [illegible] (ता)।   २. सएसु (अ, क, ख, ता, ब, म)।

२४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
२५. [illegible]
२६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
२७. [illegible]
२८. सव्वे पाणा०?
नो तिणट्ठे समट्ठे, सेसं तं चेव ।
२९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
३०. कण्हलेस्सभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति०? एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहियकण्हलेस्ससयं ॥
३१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
३२. एवं नीललेस्सभवसिद्धीएहि वि सयं ॥
३३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
३४. एवं जहा ओहियाणि सण्णिपंचिंदियाणं सत्त सयाणि भणियाणि, एवं भवसिद्धीएहि वि सत्त सयाणि कायव्वाणि, नवरं—सत्तसु वि सएसु सव्वे पाणा जाव नो तिणट्ठे समट्ठे, सेसं तं चेव ॥
३५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१५-२१ सण्णिमहाजुम्मसताइं

३६. अभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति०? उववाओ तहेव अणुत्तरविमाणवज्जो । परिमाणं अवहारो उच्चत्तं बंधो वेदो वेदणं उदओ उदीरणा य जहा कण्हलेस्ससते । कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा । नो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी । नो नाणी, अण्णाणी, एवं जहा कण्हलेस्ससते, नवरं—नो विरया, अविरया, नो विरयाविरया । संचिट्ठणा ठिती य जहा ओहिउद्देसए । समुग्घाया आदिल्लगा पंच । उव्वट्टणा तहेव अणुत्तरविमाणवज्जं । सव्वे पाणा०? नो तिणट्ठे समट्ठे, सेसं जहा कण्हलेस्ससते जाव अणंतखुत्तो । एवं सोलससु वि जुम्मेसु ।
३७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. भ० ४०।४ ।

३८ पढमसमयग्रभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिदिया ण भंते ! कओ उववज्जति० ? जहा सण्णीण पढमसमयउद्देसए तहेव, नवर—सम्मत्त सम्मामिच्छत्त नाण च सव्वत्थ नत्थि, सेस तहेव ॥

३९ सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

४० एव एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा कायव्वा पढम-तइय-पचमा एक्कगमा, सेसा अट्ठ वि एक्कगमा ॥

४१. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४२ कण्हलेस्सग्रभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिदिया ण भंते ! कओ उववज्जति० ? जहा एएसि चेव ओहियसतं तहा कण्हलेस्ससय पि, नवरं—

४३ ते ण भंते ! जीवा कण्हलेस्सा ?

हंता कण्हलेस्सा । ठिती, सचिट्ठणा य जहा कण्हलेस्ससते, सेस त चेव ॥

४४. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४५ एव छहि वि लेस्साहि छ सता कायव्वा जहा कण्हलेस्ससत, नवर—सचिट्ठणा ठिती य जहेव ओहियसते तहेव भाणियव्वा, नवर—सुक्कलेस्साए उक्कोसेण इक्कतीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ । ठिती एव चेव, नवर—अतोमुहुत्त नत्थि जहण्णग तहेव सव्वत्थ सम्मत्त-नाणाणि नत्थि । विरई विरयाविरई अणुत्तरविमाणोववत्ति—एयाणि नत्थि । सव्वे पाणा० ? नो तिणट्ठे समट्ठे ॥

४६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४७ एवं एयाणि सत्त अभवसिद्धीयमहाजुम्मसताइ भवति ।

४८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४९ एव एयाणि एक्कवीस सण्णिमहाजुम्मसताणि । सव्वाणि वि एक्कासीतिमहाजुम्मसताइ ॥

---

२०. जइ सलेस्सा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! सकिरिया, नो अकिरिया ॥

२१. जइ सकिरिया [illegible] ?
गोयमा ! [illegible]
[illegible]
करेंति ॥

२२. जइ [illegible] किं सलेस्सा ? अलेस्सा ?
गोयमा ! सलेस्सा, नो अलेस्सा ॥

२३. जइ सलेस्सा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! सकिरिया, नो अकिरिया ॥

२४. जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेण सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाण अंत करेंति ?
नो इणट्ठे समट्ठे । [illegible] जहा नेरइया ॥

२५. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

२६. रासीजुम्मतेओयनेरइया ण भंते ! कओ उववज्जंति० ? एव चेव उद्देसओ[1] भाणियव्वो, नवर—परिमाण तिण्णि वा सत्त वा एक्कारस वा पन्नरस वा संखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति । संतर तहेव ॥

२७. ते ण भते ! जीवा ज समय तेयोगा त समय कडजुम्मा ? ज समय कडजुम्मा त समय तेयोगा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

२८. ज समय तेयोया त समय दावरजुम्मा ? ज समय दावरजुम्मा त समय तेयोया ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं कलियोगेण वि सम, सेस त चेव जाव वेमाणिया नवर—उववाओ सव्वेसिं जहा[1] वक्कतीए ॥

२९. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

---

१. प० ६ ।

तइओ उद्देसो

३०. रासीजुम्मदावरजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेव उद्देसओ, नवरं—परिमाणं दो वा छ वा दस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति, संवेहो ॥

३१. ते णं भंते ! जीवा जं समयं दावरजुम्मा तं समयं कडजुम्मा ? जं समयं कडजुम्मा तं समयं दावरजुम्मा ?
णो इणट्ठे समट्ठे । एवं तेयोएण वि समं, एवं कलियोगेण वि समं, सेसं जहा पढमुद्देसए जाव वेमाणिया ॥

३२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

चउत्थो उद्देसो

३३. रासीजुम्मकलिओगनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेव, नवरं—परिमाणं एक्को वा पंच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति, संवेहो ॥

३४. ते णं भंते ! जीवा जं समयं कलियोगा तं समयं कडजुम्मा ? जं समयं कडजुम्मा तं समयं कलियोगा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं तेयोएण वि समं, एवं दावरजुम्मेण वि समं, सेसं जहा पढमुद्देसए जाव वेमाणिया ॥

३५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५-२८ उद्देसा

३६. कण्हलेस्सरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? उववाओ जहा धूमप्पभाए, सेसं जहा पढमुद्देसए । असुरकुमाराणं तहेव, एवं जाव वाणमंतराणं । मणुस्साण वि जहेव नेरइयाणं आयअजसं उवजीवंति । अलेस्सा, अकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति एवं न भाणियव्वं, सेसं जहा पढमुद्देसए ॥

३७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३८. कण्हलेस्सतेयोगेहि वि एवं चेव उद्देसओ ॥

३९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४०. कण्हलेस्सदावरजुम्मेहिं एवं चेव उद्देसओ ॥

४१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४२. कण्हलेस्सकलिओगेहि वि एवं चेव उद्देसओ । परिमाणं संवेहो य जहा ओहिएसु उद्देसएसु ॥

४३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४४. जहा कण्हलेस्सेहिं एवं नीललेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा नवरं- नेरइयाणं उववाओ जहा वालुयप्पभाए, सेसं तं चेव ॥

४५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४६. काउलेस्सेहि वि एवं चेव चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, नवरं- नेरइयाणं उववाओ जहा रयणप्पभाए, सेसं तं चेव ॥

४७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४८. तेउलेस्सरासीजुम्मकडजुम्मअसुरकुमारा णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेव, नवरं—जेसु तेउलेस्सा अत्थि तेसु भाणियव्वा[1] । एवं एए वि कण्हलेस्सासरिसा चत्तारि उद्देसगा कायव्वा ॥

४९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५० एवं पम्हलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं वेमाणियाण य एएसि पम्हलेस्सा, सेसाणं नत्थि ॥

५१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५२. जहा पम्हलेस्साए एवं सुक्कलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, नवरं—मणुस्साणं गमओ जहा ओहिउद्देसएसु, सेसं तं चेव । एवं एए छसु लेस्सासु चउवीसं उद्देसगा, ओहिया चत्तारि, सव्वे ते अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति ॥

५३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२९–५६ उद्देसा

५४ भवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा ओहिया पढमगा चत्तारि उद्देसगा तहेव निरवसेसं, एए चत्तारि उद्देसगा ॥

५५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५६ कण्हलेस्सभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा कण्हलेस्साए चत्तारि उद्देसगा भवंति तहा इमे वि भवसिद्धियकण्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा ।

५७ एवं नीललेस्सभवसिद्धिएहि वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा ॥

---

१. भाणियव्व (ख, ता) ।

५८. एवं काउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥
५९. तेउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ओहियसरिसा ॥
६०. पम्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥
६१. सुक्कलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ओहियसरिसा। एवं एए वि भवसिद्धिएहि वि अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति ॥
६२ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५७-८४ उद्देसा

६३ अभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा पढमो उद्देसगो, नवरं—मणुस्सा नेरइया य सरिसा भाणियव्वा, सेसं तहेव ॥
६४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
६५. एवं चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा ॥
६६ कण्हलेस्सअभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेव चत्तारि उद्देसगा ॥
६७ एवं नीललेस्सअभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइयाणं चत्तारि उद्देसगा।
६८. काउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥
६९. तेउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥
७०. पम्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥
७१. सुक्कलेस्सअभवसिद्धिएहि वि चत्तारि उद्देसगा। एवं एएसु अट्ठावीसाए वि अभवसिद्धियउद्देसएसु मणुस्सा नेरइयगमेणं नेयव्वा ॥
७२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

८५-११२ उद्देसा

७३. सम्मदिट्ठीरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं जहा पढमो उद्देसगो। एवं चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा भवसिद्धियसरिसा कायव्वा ॥
७४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
७५. कण्हलेस्ससम्मदिट्ठीरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एए वि कण्हलेस्ससरिसा चत्तारि वि उद्देसगा कायव्वा। एवं सम्मदिट्ठीसु वि भवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा ॥
७६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

११३-१४० उद्देसा

७७. मिच्छादिट्ठीरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं एत्थ वि मिच्छादिट्ठिपक्खिगाभिलावेण अभवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा।
७८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१४१-१६८ उद्देसा

७९. कण्हपक्खियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं एत्थ वि अभवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा ॥
८०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१६९-१९६ उद्देसा

८१. सुक्कपक्खियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं एत्थ वि भवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति। एवं एए सव्वे वि छन्नउयं उद्देसगसयं भवति रासीजुम्मसयं जाव सुक्कलेस्ससुक्कपक्खियरासीजुम्मकलियोगवेमाणिया जाव—
८२. जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ? नो इणट्ठे समट्ठे ॥
८३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
८४. भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! सच्चे णं एसमट्ठे, जे णं तुब्भे वदह त्ति कट्टु अपुव्ववयणा[1] खलु अरहंता भगवंतो, समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

॥ इति भगवई समत्ता ॥

ग्रंथाग्र

कुलगाथा १९३१९ अक्षर १६

कुल अक्षर ६१८२२४

---

१. अपूतिवयणा (अ, क, ता, ब, म)।

परिसेसो

सव्वाए भगवईए अट्ठतीसं सतं सयाणं (१३८), उद्देसगाणं एगूणवीसतिसताणि पंचविंसइअहियाणि (१९२५)।

संगहणी-गाहा

> चुलसीइ सयसहस्सा, पदाण पवरवरनाणदंसीहिं।
> भावाभावमणंता, पण्णत्ता एत्थमंगम्मि ॥ १ ॥
> तवनियमविणयवेलो, जयति सदा नाणविमलविपुलजलो।
> हेतुसतविपुलवेगो, संघसमुद्दो गुणविसालो ॥ २ ॥

पोत्थयलेहगकया नमोक्कारा

णमो गोयमाईणं गणहराणं, णमो भगवईए विवाहपण्णत्तीए, णमो दुवालसंगस्स गणिपिडगस्स ॥

> कुम्मसुसंठियचलणा, अमलियकोरेंटबेंटसंकासा।
> सुयदेवया भगवई, मम मतितिमिरं पणासेउ ॥१॥

उद्देस-विधि

पण्णत्तीए आदिमाणं अट्ठण्हं सयाणं दो दो उद्देसगा उद्दिसिज्जंति, नवरं—चउत्थे सए पढमदिवसे अट्ठ, बितियदिवसे दो उद्देसगा उद्दिसिज्जंति। नवमाओ सताओ आरद्धं जावइयं-जावइयं ठवेंति तावतियं-तावतियं[1] उद्दिसिज्जंति, उक्कोसेणं सतं पि एगदिवसेणं, मज्झिमेणं दोहिं दिवसेहिं सतं, जहण्णेणं तिहिं दिवसेहिं सतं। एवं जाव वीसतिमं सतं, नवरं—गोसालो एगदिवसेणं उद्दिसिज्जति, जदि ठिओ एगेण चेव आयंबिलेणं अणुण्णव्वति[2]। अह ण्णं ठिओ आयंबिलेणं छट्ठेणं अणुण्णव्वति। एक्कवीस-बावीस-तेवीसतिमाइं सताइं एक्केक्कदिवसेणं उद्दिसिज्जंति। चउवीसतिमं सतं दोहिं दिवसेहिं छ-छ उद्देसगा। पंचवीसतिमं दोहिं दिवसेहिं छ-छ उद्देसगा। बंधिसयाइं अट्ठसयाइं एगेणं दिवसेणं, सेढिसयाइं बारस एगेणं, एगिंदियमहाजुम्मसयाइं बारस एगेणं, एवं बेइंदियाणं बारस, तेइंदियाणं बारस, चउरिंदियाणं बारस एगेणं, असण्णि-

---

१. सति एगदिवसेण (क, ता)।　　२. अणुण्णवंति (ता, व), अणुण्णवंति (क, ब)

उस्सवणयाए तिहिं, उस्सवणयाए वि तिसिरणयाए
वि नो दहणयाए चउहिं, जे भविए उस्सवणयाए

एवं जहा [illegible]		
आउए [illegible]	[illegible]	
एवं जहा समणस्स [illegible]		
जाव से	१०।१३६,१३७	
एवं जहा समणस्स [illegible]		
[illegible]गारिया०	[illegible]	[illegible]
एवं जहा समणस्स [illegible] जाव से	१०।१८	[illegible]
एवं जहा सद्दुद्देसए जाव निव्वुडे [illegible]	६।१२८	[illegible]
एवं जहा सुराए तहा दुक्खविवत्ता [illegible] भाणियव्वा, वनियम्म जहा जागरम्म तहा भाणियव्वं जाव सजोगसरो	१२।५२	१२।५६
एव जहा सूरियाभस्स अलकारो तहा जाव चित्त	६।१६०	राय०सू०२७५
एव जहा सूरियाभो	१५।८०-८३	राय०सू०६२-६५
एवं जहेव नेरइयाण नवर देवे	१४।१६,२०	१४।१७,१८
एव जहेव भासा	१३।१२६	१३।१२४
एव जहेव विजयगाहावई नवर सव्वकामगुणिएण भोयणेण पडिलाभेइ सेस त चेव जाव चउत्थ	१५।३६-४८	१५।२५-३०
एव जहेव विजयस्स नवर मम विउलाए सज्जगविहीए पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे सेस त चेव जाव तच्च	१५।३२-३७	१५।२५-३०
एव जहेव विज्जाचारस्स नवर तिसत्तगुत्तो	२०।८५	२०।८१
एव जहेव सक्कस्स जाव तए	१४।२५	१४।२२
एव जाव अलोए	११।१०८	११।१०८
एव जाव उत्तर०	११।११०	११।११०
एव जाव भावओ	८।१८८	८।१८८
एवं जाव भावओ	८।१६१	८।१६१
एव जाव मणपज्जवनाण	६।३१	६।३१
एवं जाव लोए	११।१०८	११।१०८
एव जाव से	१३।१५६	ओ०सू०१५०
एव जाव हुडे	१४।८१	ठा०६।३१
एव जोगो, उवओगो, संघयण, सठाण, उच्चत्त, आउय च एयाणि सव्वाणि जहा असोच्चाए तहेव भाणियव्वाणि	६।५८-६३	६।३६-४१

तेणट्ठेणं जाव गब्भ०	१८।१६६	[illegible]
तेणट्ठेणं जाव नर०	१२।१६५	[illegible]
तेणट्ठेणं जाव निरेया	२५।१४४	[illegible]
तेणट्ठेण जाव नो	१।३१	१।३४
तेणट्ठेणं जाव नो	१।३४८	१।३४८
तेणट्ठेण जाव नो	३।१६१	३।१६१
तेणट्ठेण जाव नो	५।७०	५।७०
तेणट्ठेण जाव नो	६।२६	६।२५
तेणट्ठेण जाव नो	१८।३१	१८।३१
तेणट्ठेण जाव नो	१८।१७६	१८।१७८
तेणट्ठेण जाव पच	१।३६५	१।३६५
तेणट्ठेण जाव पसारेत्तए	१६।११६	१६।११६
तेणट्ठेण जाव पासद	३।२२४,२३०	३।२२४
तेणट्ठेण जाव पासड	५।६७	५।६७
तेणट्ठेण जाव भाव०	१२।१६८	१२।१६८
तेणट्ठेण जाव भावतुल्लए	१४।८१	१४।८१
तेणट्ठेणं जाव भासति	१६।३६	१६।३६
तेणट्ठेण जाव रह०	७।१८८	७।१८८
तेणट्ठेण जाव लवसत्तमा	१४।८५	१४।५८
तेणट्ठेण जाव वागरेज्ज	१४।१४४	१४।१४४
तेणट्ठेण जाव विग्गहेण	३४।४	३४।२,३
तेणट्ठेण जाव विज्जाचारणे	२०।८०	२०।८०
तेणट्ठेण जाव वुच्चइ केवलीण अस्सि समयसि जाव चिट्ठित्तए	५।१११	५।१११
तेणट्ठेण जाव संठाणतुल्लए	१४।८१	१४।८१
तेणट्ठेण जाव ससी	१२।१२५	१२।१२५
तेणट्ठेणं जाव सिय	१४।५०	१४।५०
तेणट्ठेण जाव सिय	२५।५	२५।५
तेणट्ठेण जाव सोगे	१६।२६	१६।२६
तेणट्ठेण जाव हव्व०	२।८८	२।८८
तेणट्ठेण जाव हव्वमागच्छति	२५।१८	२५।१८
तेयासरीरस्स जाव देसवधए	८।४४६	८।४४५
दडनायग जाव सधिवाल	११।६१	७।१४६
दसणपि एमेव	१।४०	१।३९

३९. से णं भते ! कयरम्मि सठाणे होज्जा ?
गोयमा ! छण्हं सठाणाण अण्णयरे सठाणे होज्जा ॥

४०. से ण भते ! कयरम्मि उच्चत्ते होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण सत्तरयणीए, उक्कोसेणं पंचधणुसतिए होज्जा ॥

४१. से ण भते ! कयरम्मि आउए होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण सातिरेगट्ठवासाउए, उक्कोसेण पुव्वकोडिआउए होज्जा ॥

४२. से ण भते ! कि सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा ।
जइ सवेदए होज्जा कि इत्थिवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? पुरिस-नपुसगवेदए होज्जा ? 'नपुसगवेदए होज्जा ?'[1]
गोयमा ! नो इत्थिवेदए होज्जा, पुरिसवेदए होज्जा, 'नो नपुसगवेदए होज्जा'[2], पुरिस-नपुसगवेदए वा होज्जा ॥

४३. से ण भते ! कि सकसाई[3] होज्जा ? अकसाई होज्जा ?
गोयमा ! सकसाई होज्जा, नो अकसाई होज्जा ।
जइ सकसाई होज्जा से ण भते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
गोयमा ! चउसु— सजलणकोह-माण-माया लोभेसु होज्जा ॥

४४. तस्स ण भते ! केवइया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता ॥

४५. ते ण भते ! कि पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! पसत्था, नो अप्पसत्था ॥

४६. से ण भते ! तेहि पसत्थेहि अज्झवसाणेहि वड्ढमाणेहिं अणतेहिं नेरइयभवग्गहणेहितो अप्पाण विसजोएइ, अणतेहि तिरिक्खजोणियभवग्गहणेहितो अप्पाण विसजोएइ, अणतेहि मणुस्सभवग्गहणेहितो अप्पाण विसंजोएइ, अणतेहि देवभवग्गहणेहितो अप्पाण विसजोएइ । जाओ वि य से इमाओ नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवगतिनामाओ चत्तारि उत्तरपगडीओ, तासि च णं ओवग्गहिए[4] अणताणुबधी कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता अपच्चक्खाणकसाए कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पच्चक्खाणावरणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता संजलणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पचविह नाणावरणिज्ज, नवविह दरिसणावरणिज्ज, पचविह अंतराइय, तास-

1. × (क, ठ म) ।
2. × (क, ठ म) ।
3. सकमादी (अ, ता) ।
4. उवग्गहिए (क, म, स) ।

मत्थाकडं[1] च णं मोहणिज्जं कट्टु कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स[2] अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाण-दसणे समुप्पज्जति ॥

४७ से णं भंते ! केवलिपण्णत्तं धम्मं आघवेज्ज वा ? पण्णवेज्ज वा ? परूवेज्ज वा ?
नो तिणट्ठे समट्ठे, नण्णत्थ[3] एगनाएण वा, एगवागरणेण वा ॥

४८. से णं भंते ! पव्वावेज्ज वा ? मुंडावेज्ज वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, उवदेसं पुण करेज्जा ॥

४९. से णं भंते ! सिज्झति जाव[4] सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
हंता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

५०. से णं भंते ! किं उड्ढं होज्जा ? अहे होज्जा ? तिरियं होज्जा ?
गोयमा ! उड्ढं वा होज्जा, अहे वा होज्जा, तिरियं वा होज्जा। उड्ढं होमाणे[5] सद्दावइ-वियडावइ-गंधावइ-मालवंतपरियाएसु वट्टवेयड्ढपव्वएसु होज्जा, साहरणं पडुच्च सोमणसवणे वा पंडगवणे वा होज्जा। अहे होमाणे गड्डाए वा दरीए वा होज्जा, साहरणं पडुच्च पायाले वा भवणे वा होज्जा। तिरियं होमाणे पण्णरससु कम्मभूमीसु होज्जा, साहरणं पडुच्च 'अड्ढाइज्जदीव-समुद्द'[6]-तदेक्कदेसभाए होज्जा ॥

५१ ते णं भंते ! एगसमए णं केवतिया होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं दस। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए जाव अत्थेगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥

---

१. °मत्थ° (अ, क), मत्था—अत्र एकपदे सन्धिर्जात.। वृत्तौ अस्य व्याख्या एवमस्ति —मस्तकं—मस्तकशुची कृत्त—छिन्नं यस्यासौ मस्तककृत्त, तालश्चासौ मस्तककृत्तश्च तालमस्तककृत्त, छान्दसत्वाच्चैवं निर्देश, तालमस्तककृत्त इव यत्तत्तालमस्तककृत्तम् (वृ)।

२ पविट्ठस्स (अ, क, ता, म)।

३. अण्णत्थ (ता)।

४. भ० १।४४।

५ होज्जमाणे (व, स)।

६. अड्ढाइज्जे दीवसमुद्दे (अ, स)।

प्पिया ! इच्छिय-पडिच्छियमेय देवाणुप्पिया ! से जहेय तुब्भे वदह त्ति कट्टु त सुविण सम्म पडिच्छइ, पडिच्छित्ता बलेण रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयणभत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवल °मसभताए अविलबियाए रायहससरिसीए° गईए जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणिज्जसि निसीयति, निसीयित्ता एव वयासी—मा मे से उत्तमे पहाणे मगल्ले सुविणे अण्णेहि पावसुमिणेहि पडिहम्मिस्सइ त्ति कट्टु देवगुरुजणसबद्धाहि पसत्थाहि मगल्लाहि धम्मियाहि कहाहि सुविणजागरिय पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

१३६ तए ण से बले राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अज्ज सविसेस बाहिरिय उवट्ठाणसाल गधोदयसित्त-सुइय-सम्मज्जिओवलित्त सुगधवरपचवण्णपुप्फोवयारकलिय कालागरु-पवरकुदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेत-गधुद्धयाभिराम सुगधवरगधिय° गधवट्टिभूय करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य सीहासण रएह, रएत्ता ममेतमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

१३७. तए ण ते कोडुबियपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सविसेस बाहिरिय उवट्ठाणसाल °गधोदयसित्त-सुइय-सम्मज्जिओवलित्त सुगधवरपचवण्णपुप्फोवयारकलिय कालागरु-पवरकुदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेत-गधुद्धयाभिराम सुगधवरगधिय गधवट्टिभूय करेत्ता य कारवेत्ता य सीहासण रएत्ता तमाणत्तिय° पच्चप्पिणति ॥

१३८ तए ण से बले राया पच्चूसकालसमयसि सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, अट्टणसाल अणुपविसइ, जहा ओववाइए तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणघरे जाव ससिव्व पियदसणे नरवई जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवाग-

१. [illegible] (ग, स) ।
२. स० पा०—अतुरिय [illegible] जाव गईए ।
३. [illegible] (स) ।
४. [illegible] (स) ।
५. [illegible] ।
६. स० पा०—[illegible] ।
७. [illegible] ।
८. [illegible] ।
९. [illegible]
१०. स० पा०—उवट्ठाणसाल जाव पच्चप्पिणति ।
११. पायपीढाओ (ग, ब, म) ।
१२. ओ० सू० ६३ ।
१३. नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ [illegible] (अ, क, ख, ता, ब, म, स), ओवाइयानुसारेण [illegible] एव समीचीन । [illegible] परिवर्तित [illegible] जातम् । [illegible] एव [illegible] ।

च्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, निसीयित्ता अप्पणो उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अट्ठ भद्दासणाइं सेयवत्थपच्चत्थुयाइं[1] सिद्धत्थगकयमंगलोवयाराइं रयावेइ, रयावेत्ता अप्पणो अदूरसामंते नाणामणि-रयणमंडियं अहियपेच्छणिज्जं महग्घ-वरपट्टणुग्गयं सण्हपट्टभत्तिसयचित्तताणं[2] ईहामिय-उसभ[3]-°तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय°-भत्तिचित्तं अब्भिंतरियं जवणियं अंछावेइ, अंछावेत्ता नाणामणिरयणभत्तिचित्तं अत्थरय-मउयमसूरगोत्थयं सेयवत्थपच्चत्थुयं[4] अंगसुहफासयं[5] सुमउयं पभावतीए देवीए भद्दासणं रयावेइ, रयावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासि—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अट्ठंगमहानिमित्तसुत्तत्थधारए विविह-सत्थकुसले सुविणलक्खणपाढए सद्दावेह॥

१३९ तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव[6] पडिसुणेत्ता बलस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता सिग्घं तुरियं चवलं चंडं वेइयं हत्थिणपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव तेसिं सुविणलक्खणपाढगाणं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ते सुविणलक्खणपाढए सद्दावेंति॥

१४० तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रण्णो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठा ण्हाया कय[7]°बलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकिय°सरीरा सिद्धत्थग-हरियालियाकयमंगलमुद्धाणा सएहिं-सएहिं गेहेहिंतो निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता हत्थिणपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव बलस्स रण्णो भवणवरवडेंसए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भवणवरवडेंसगपडिदुवारंसि एगओ मिलंति, मिलित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[8]°परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति। तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलेणं रण्णा वंदिय-पूइय-सक्कारिय-सम्माणिया समाणा पत्तेयं-पत्तेयं पुव्वण्णत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति॥

१४१ तए णं से बले राया पभावतिं देविं जवणियंतरियं ठावेइ, ठावेत्ता पुप्फ-फल-पडिपुण्णहत्थे परेणं विणएणं ते सुविणलक्खणपाढए एवं वयासी—एवं खलु

---

१. °पच्चुत्थुयाइं (स)।
२. °सण्हपट्टभत्ति° (ब, स)।
३. सं० पा०—उसभ जाव भत्तिचित्त।
४. °पच्चुत्थुय (ब, म, स)।
५. °फासुय (ग, व)।
६. भ० ९।१४२।
७. सं० पा०—कय जाव सरीरा।
८. सं० पा०—करयल जाव कट्टु।

देवाणुप्पिया ! पभावती देवी अज्ज तसि तारिसगसि वासघरसि जाव[1] सीह सुविणं पासित्ता ण पडिवुद्धा, तण्ण देवाणुप्पिया ! एयस्स ओरालस्स जाव[2] महासुविणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?

१४२ तए ण ते सुविणलक्खणपाढगा वलस्स रण्णो अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा त सुविण ओगिण्हति, ओगिण्हित्ता ईह अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहण करेति, करेत्ता अण्णमण्णेणं सद्धि सचालेति[3], सचालेत्ता तस्स सुविणस्स लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा वलस्स रण्णो पुरओ सुविणसत्थाइ उच्चारेमाणा-उच्चारेमाणा एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह सुविणसत्थसि बायालीस सुविणा, तीस महासुविणा—बावत्तरि सव्वसुविणा दिट्ठा। तत्थ णं देवाणुप्पिया ! तित्थगरमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा तित्थगरसि वा चक्कवट्टिसि वा गब्भ वक्कममाणसि एएसि तीसाए महासुविणाण इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता ण पडिवुज्झति, त जहा—

गय उसह[4] सीह अभिसेय दाम ससि दिणयर झय कुभ ।
पउमसर[5] सागर विमाणभवण[6] रयणुच्चय सिहि च[7] ॥१॥

वासुदेवमायरो वासुदेवसि गब्भ वक्कममाणसि एएसि चोद्दसण्ह महासुविणाण अण्णयरे सत्त महासुविणे पासित्ता ण पडिवुज्झति । वलदेवमायरो वलदेवसि गब्भ वक्कममाणसि एएसि चोद्दसण्ह महासुविणाण अण्णयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ता ण पडिवुज्झति । मडलियमायरो मडलियसि गब्भ वक्कममाणसि एएसि ण चोद्दसण्ह महासुविणाण अण्णयर एग महासुविणं पासित्ता णं पडिवुज्झति । इमे य ण देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए एगे महासुविणे दिट्ठे, त ओराले ण देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव[8] आरोग्ग-तुट्ठि[9]-•दीहाउ कल्लाण•-मगल्लकारए ण देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे, अत्थलाभो देवाणुप्पिया ! भोगलाभो देवाणुप्पिया ! पुत्तलाभो देवाणुप्पिया ! रज्जलाभो देवाणुप्पिया ! एव खलु देवाणुप्पिया ! पभावती देवी नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण[10] •अद्धट्ठमाण य राइदियाण• वीइक्कताण तुम्ह कुलकेउ जाव[11] देवकुमारसमप्पभ दारग पयाहिति ।

---

१. भ० ११।१३३।
२. भ० ११।१३३।
३. [illegible]
४. [illegible]
५. [illegible]
६. [illegible] तस्मात् तन्माता भवनमिति (वृ) ।
७. इह च गाथायां केषुचित्पदेष्वनुस्वारस्याश्रवण गाथानुलोम्याद् दृश्यम् (वृ) ।
८. भ० ११।१३४।
९. म० पा०—तुट्ठि जाव मगल्लकारए ।
१०. म० पा०—बहूणं पुण्णाण जाव वीइक्कताण ।
११. भ० ११।१३४।

से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे[1] •विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते वित्थिण्ण-विउलबल-वाहणे° रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा। तं ओराले णं देवाणुप्पिया! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-[2]•मंगल्लकारए पभावतीए देवीए सुविणे° दिट्ठे ॥

१४३. तए णं से बले राया सुविणलक्खणपाढगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे करयल[3]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं° कट्टु ते सुविणलक्खणपाढगे एवं वयासी—एवमेयं देवाणुप्पिया[4]! •तहमेयं देवाणुप्पिया! अवितहमेयं देवाणुप्पिया! असंदिद्धमेयं देवाणुप्पिया! इच्छियमेयं देवाणुप्पिया! पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया! इच्छिय-पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया!° से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता सुविणलक्खणपाढए विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइम-पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ, दलयित्ता पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जेत्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव पभावती देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव[6] मिय-महुर-सस्सिरीयाहिं वग्गूहिं संलवमाणे-संलवमाणे एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए! सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा, तीसं महासुविणा—बावत्तरिं सव्वसुविणा दिट्ठा। तत्थ णं देवाणुप्पिए! तित्थगरमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा तित्थगरंसि वा चक्कवट्टिंसि वा गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति तं चेव जाव[7] मंडलियमायरो मंडलियंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं णं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरं एगं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुज्झंति। इमे य णं तुमे देवाणुप्पिए! एगे महासुविणे दिट्ठे, तं ओराले णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे जाव[8] रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा, तं ओराले णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे जाव[9] आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मंगल्लकारए णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे त्ति कट्टु पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव मिय-महुर-सस्सिरीयाहिं वग्गूहिं दोच्चं पि तच्चं पि अणुबूहइ ॥

---

१. सं० पा०—उम्मुक्कबालभावे जाव रज्जवई।
२. सं० पा०—कल्लाण जाव दिट्ठे।
३. सं० पा०—करयल जाव कट्टु।
४. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव से।
५. करेइत्ता (क, ता, ब, स)।
६. भ० ११।१३४।
७. भ० ११।१४०।
८. भ० ११।१४२।
९. भ० ११।१३४।

१४४ तए ण सा पभावती देवी बलस्स रण्णो अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा करयल[1]•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° एव वयासी—एयमेय देवाणुप्पिया ! जाव[2] त सुविण सम्म पडिच्छइ, पडिच्छित्ता बलेण रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयणभत्ति[3]•चित्ताओ भद्दासणाओ° अब्भुट्ठेइ, अतुरियमचवल[4]•मसभताए अविलबियाए रायहससरिसीए° गईए जेणेव सए भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सय भवणमणुपविट्ठा ॥

१४५ तए ण सा पभावती देवी ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सव्वालकारविभूसिया त गब्भ नातिसीतेहि नातिउण्हेहि नातितित्तेहि नातिकडुएहि नातिकसाएहि नातिअबिलेहि नातिमहुरेहि उउभयमाणसुहेहि[6] भोयण-च्छायण-गध-मल्लेहि ज तस्स गब्भस्स हिय मित पत्थ गब्भपोसण त देसे य काले य आहारमाहारेमाणी विवित्त-मउएहि[7] सयणासणेहि पइरिक्कसुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए पसत्थदोहला सपुण्णदोहला[8] सम्माणियदोहला अविमाणियदोहला वोच्छिण्णदोहला विणीय-दोहला ववगयरोग-सोग-मोह-भय-परित्तासा त गब्भ 'सुहसुहेण परिवहति'[9] ॥

१४६ तए ण सा पभावती देवी नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण अद्धट्ठमाण य राइदियाण वीइक्कताण सुकुमालपाणिपाय अहीणपडिपुण्णपचिदियसरीर लक्खण-वजण-गुणोववेय[10] •माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वगसुदरग° ससिसोमाकार कत पियदसण सुरूव दारय पयाया ॥

१४७ तए ण तीसे पभावतीए देवीए अगपडियारियाओ पभावति देवि पसूय जाणेत्ता जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल[11]•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° बल राय जएण विजएण वद्धावेति, वद्धावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! पभावती देवी नवण्ह मासाण बहुपडि-पुण्णाण जाव[12] सुरूव दारग पयाया । त एयण्ण[13] देवाणुप्पियाण पियट्ठयाए पिय निवेदेमो । पिय भे भवतु ॥

१४८ तए ण से बले राया अगपडियारियाण अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[14]-•चित्तमाणदिए णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए

1. स० पा०—[illegible] जाव [illegible] ।
2. भ० ११।१३५ ।
3. स० पा०—°भत्ति जाव अब्भुट्ठेइ ।
4. स० पा०—अतुरियमचवल जाव गईए ।
5. भ० [illegible] ।
6. [illegible] (क), [illegible] (ख, म), [illegible] (व) ।
7. [illegible] ।
8. सपन्न° (अ); °दोहला (ता) ।
9. वाचनान्तरे—सुहसुहेण आसयइ सुयइ चिट्ठइ निसीयइ तुयट्टइ त्ति दृश्यते (वृ) ।
10. स० पा०—गुणोववेय जाव ससि° ।
11. स० पा०—करयल ।
12. भ० ११।१३६ ।
13. एयण्ण (अ, स), एन (ता) ।
14. स०पा०—हट्ठतुट्ठ जाव धाराहयनीय जाव धूवे ।

धाराहयनीवसुरभिकुसुम-चचुमालइयतणुए ऊसवियरोम॰कूवे तासि अगपडिया-रियाण मउडवज्ज जहामालियं[1] ओमोय दलयइ[2], दलयित्ता सेत रययामय विमलसलिलपुण्ण भिगार पगिण्हइ, पगिण्हित्ता मत्थए धोवइ, धोवित्ता विउल जीवियारिह पीइदाण दलयइ, दलयित्ता सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्मा-णेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

१४९. तए ण से बले राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! हत्थिणापुरे नयरे चारगसोहण करेह, करेत्ता माणुम्माण-वड्ढण[3] करेह, करेत्ता हत्थिणापुर नगर सब्भितरबाहिरिय आसिय-सम्मज्जिओ-वलित्त जाव[4] गधवट्टिभूय करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य जूवसहस्स वा चक्कसहस्स वा पूयामहामहिमसजुत्त[5] उस्सवेह, उस्सवेत्ता ममेतमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

१५०. तए ण ते कोडुबियपुरिसा बलेण रण्णा एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव[6] तमाणत्तिय पच्चप्पिणति ॥

१५१. तए ण से बले राया जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त चेव जाव[7] मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता उस्सुक्क उक्कर उक्किट्ठ अदेज्ज अमेज्ज अभडप्पवेस[8] अदडकोदडिम अधरिम गणियावरनाडइज्जकलिय अणेगतालाचराणुचरिय अणुद्धयमुइग अमिलायमल्लदाम[9] पमुइयपक्कीलिय सपुरजणजाणवय दसदिवसे ठिइवडिय करेति ॥

१५२. तए ण से बले राया दसाहियाए ठिइवडियाए वट्टमाणीए सइए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य जाए य दाए य भाए य दलमाणे य दवावेमाणे य, सइए य सयसाहस्सिए य लभे[10] पडिच्छेमाणे य पडिच्छावेमाणे य एव यावि विहरइ ॥

१५३. तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठिइवडिय करेइ, तइए दिवसे चदसूरदसावणिय[11] करेइ, छट्ठे दिवसे जागरिय करेइ, एक्कारसमे दिवसे वीइ-

---

१. जहामालित (ता)।
२. दलति (ता)।
३. ॰वड्ढ (ता)।
४. ओ० सू० ५५।
५. ॰महिमसक्कार वा (अ, क, म): आयाम-सुमहिमसक्कार वा (ख); ॰सहस्स वा [illegible] (स); पूया॰ (ता), पूया-महिमसक्कार वा (ब)।
६. भ० ११।१४८।
७. ओ० सू० ६३।
८. ॰पवेस (म), अह॰ (ता)।
९. अणुद्धय॰ (क), अणुद्धु॰ (ब)।
१०. अमिलाण॰ (ता)।
११. लाभे (क, ब) लभो (ता)।
१२. ॰दसणिय (ब), [illegible]

वकते निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे सपत्ते 'बारसमे दिवसे'[1] विउल असण पाण खाइम साइम उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता •[2]मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परिजण रायाणो य° खत्तिए य आमतेति, आमतेत्ता तओ पच्छा ण्हाया त चेव जाव[3] सक्कारेति सम्माणेति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ[4]-•नियग-सयण-सबधि-परिजणस्स° राईण य खत्तियाण य पुरओ अज्जय-पज्जय पिउपज्जयागय बहुपुरिसपरपरप्परूढ कुलाणुरूव कुलसरिस कुलसताणततुवद्धणकर अयमेयारूव गोण्ण गुणनिप्फन्न नामधेज्ज करेति—जम्हा ण अम्ह इमे दारए बलस्स रण्णो पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए, त होउ ण अम्ह इमस्स दारगस्स नामधेज्ज 'महब्बले-महब्बले'[5]। तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्ज करेति महब्बले त्ति ॥

१५४ तए ण से महब्बले दारए पचधाईपरिग्गहिए, [त जहा—खीरधाईए],[6] एव जहा दढपइण्णस्स जाव[7] निव्वाय[8]-निव्वाघायसि सुहसुहेण परिवड्ढति ॥

१५५ तए ण तस्स महब्बलस्स दारगस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेण ठिइवडिय वा चद-सूरदसावणिय वा जागरिय वा नामकरण वा परगामण वा पचकामण[9] वा पजेमामण[10] वा पिडवद्धण वा पजपावण[11] वा कण्णवेहण वा सवच्छरपडिलेहण[12] वा चोलोयणग[13] वा उवणयण वा, अण्णाणि य बहूणि गब्भाधाण[14]-जम्मणमादियाइ कोउयाइ करेति ॥

१५६ तए ण त महब्बल कुमार अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासग जाणित्ता सोभणसि

---

१. बारसाहदिवसे (अ, क, ग, म, स), बारसा-दिवस (ता), बारहदिवसे (ब), 'रायपसेणइय' सूत्रस्य ८०२ सूत्रानुसारेणात्रो पाठ स्वीकृत । विशेषावबोधाय द्रष्टव्य 'ओववाइय' सूत्रस्य १४८ सूत्रस्य प्रथम पादटिप्पणम् ।
२. स० पा०—[illegible] जाव खत्तिए ।
३. भ० ११।६४ ।
४. स० पा०—णाइ जाव राईण ।
५. [illegible]
६. [illegible]
७. [illegible] पृष्ठ १२१, १२२, [illegible]
८. निवाल (अ, ता, ब, म); नियात (स) ।
९. पयचकमाण (अ), पचकम्मावण (ग, ब); पचनकामनण (ता), पयिचकामण (म) । पयचकमण (स) ।
१०. जेमावण (क, ब, म, स) ।
११. पजपमाण (क, ग); पजपामण (ब) ।
१२. °पलेहण (ग), °वलेहणग (ता) ।
१३. चोलायणग (अ), चोलोयणग (क, ग,), चोलगामि (ता); चोलोयण (ब) ।
१४. गब्भदाण (अ, ग), गब्भायाण (ता), गब्भाहाण (ब, वृ), 'गब्भाहाण' पदस्य [illegible] 'गब्भाहाण' [illegible] समाप्यते ।

तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेंति, एवं जहा दढप्पइण्णे जाव[1] अलंभोगसमत्थे जाए यावि होत्था ॥

१५७. तए णं तं महब्बलं कुमारं उम्मुक्कबालभावं जाव[2] अलंभोगसमत्थं विजाणित्ता अम्मापियरो अट्ठ पासायवडेंसए कारेंति[3]—अब्भुग्गय-मूसिय-पहसिए इव वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे जाव[4] पडिरूवे। तेसिं णं पासायवडेंसगाणं बहुमज्झदेसभागे, एत्थ णं महेगं भवणं कारेंति—अणेगखंभसयसंनिविट्ठं वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे पेच्छाघरमंडवंसि जाव[5] पडिरूवे ॥

१५८. तए णं तं महब्बलं कुमारं अम्मापियरो अण्णया कयाइ सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-मुहुत्तंसि ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउय-मंगल-पायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं पमक्खणग-ण्हाण-गीय-वाइय-पसाहण-अट्ठंगतिलग-कंकण-अविहववहुउवणीयं[6] मंगलसुजंपिएहि य वरकोउयमंगलोवयार-कयसंतिकम्मं सरिसियाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वणगुणोववेयाणं 'विणीयाणं कयकोउय-मंगलपायच्छित्ताणं'[7] सरिसएहिं रायकुलेहिंतो आणिल्लियाणं[8] अट्ठण्हं रायवरकन्नाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हाविंसु ॥

१५९. तए णं तस्स महाबलस्स कुमारस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं पीइदाणं दलयंति, तं जहा—अट्ठ हिरण्णकोडीओ, अट्ठ सुवण्णकोडीओ, अट्ठ मउडे मउडप्पवरे, अट्ठ 'कुंडलजोए कुंडलजोयप्पवरे'[9] अट्ठ हारे हारप्पवरे, अट्ठ अद्धहारे अद्धहारप्पवरे, अट्ठ एगावलीओ एगावलिप्पवराओ, एवं मुत्तावलीओ, एवं कणगावलीओ, एवं रयणावलीओ, अट्ठ कडगजोए कडगजोयप्पवरे, एवं तुडियजोए, अट्ठ खोमजुयलाइं खोमजुयलप्पवराइं, एवं वडगजुयलाइं,[10] एवं पट्टजुयलाइं, एवं दुगुल्लजुयलाइं, अट्ठ सिरीओ, अट्ठ हिरीओ, एवं धिईओ, कित्तीओ, बुद्धीओ, लच्छीओ, अट्ठ नंदाइं, अट्ठ भद्दाइं, अट्ठ तले तलप्पवरे सव्वरयणामए, नियगवरभवणकेऊ, अट्ठ झए झयप्पवरे, अट्ठ वए वयप्पवरे दसगोसाहस्सिएणं वएणं, अट्ठ नाडगाइं नाडगप्पवराइं बत्तीसइबद्धेणं नाडएणं, अट्ठ आसे आसप्पवरे सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए, अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए, अट्ठ जाणाइं जाणप्पवराइं, अट्ठ जुगाइं जुगप्पवराइं, एवं सिबियाओ[11], एवं संद-

---

१. ओ० सू० १४६-१४८, राय० सू० ८०५-८०६।
२. राय० सू० ८१०।
३. करेंति (अ, ग, म)।
४. राय० सू० १३७।
५. राय० सू० ३२।
६. °अविहववहुओवणीय (ता)।
७. × (व)।
८. आणिल्लि (ता) णियाणं (क, ख, ता, ब, म)।
९. कुंडलजुए कुंडलजुयप्पवरे (ब, म)।
१०. पट्टजुयलाइं (ब)।
११. सिबियाओ (ब), सिवाओ (ता)।

माणीओ[1], एव गिल्लीओ, थिल्लीओ, अट्ठ वियडजाणाइ वियडजाणप्पवराइ, अट्ठ रहे पारिजाणिए, अट्ठ रहे सगामिए, अट्ठ आसे आसप्पवरे, अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे, अट्ठ गामे गामप्पवरे दसकुलसाहस्सिएण गामेण, अट्ठ दासे दासप्पवरे, एव दासीओ, एव किकरे, एव कचुइज्जे, एव वरिसधरे, एव महत्तरए, अट्ठ सोवण्णिए ओलवणदीवे, अट्ठ रुप्पामए ओलवणदीवे, अट्ठ सुवण्णरुप्पामए ओलवणदीवे, अट्ठ सोवण्णिए उक्कवणदीवे[2], एव चेव तिण्णि वि, अट्ठ सोवण्णिए पजरदीवे, एव चेव तिण्णि वि, अट्ठ सोवण्णिए थाले, अट्ठ रुप्पामए थाले, अट्ठ सुवण्णरुप्पामए थाले, अट्ठ सोवण्णियाओ पत्तीओ[3] ३, अट्ठ सोवण्णियाइ थासगाइ३, अट्ठ सोवण्णियाइ मल्लगाइ३, अट्ठ सोवण्णियाओ तलियाओ[4]३, अट्ठ सोवण्णियाओ कविचियाओ[5]३, अट्ठ सोवण्णिए अवएडए[6]३, अट्ठ सोवण्णियाओ अवयक्काओ[7]३, अट्ठ सोवण्णिए पायपीढए३, अट्ठ सोवण्णियाओ भिसियाओ३, अट्ठ सोवण्णियाओ करोडियाओ३, अट्ठ सोवण्णिए पल्लके३, अट्ठ सोवण्णियाओ पडिसेज्जाओ३, अट्ठ हसासणाइ, अट्ठ कोचासणाइ, एव गरुलासणाइ, उन्नयासणाइ, पणयासणाइ, दीहासणाइ, भद्दासणाइ, पक्खासणाइ, मगरासणाइ, अट्ठ पउमासणाइ, अट्ठ दिसासोवत्थियासणाइ, अट्ठ तेल्ल-समुग्गे, '[8]°अट्ठ कोट्ठ-समुग्गे, एव पत्त-चोयग-तगर-एल-हरियाल-हिगुलय-मणोसिल-अजण-समुग्गे°, अट्ठ सरिसव-समुग्गे, अट्ठ खुज्जाओ जहा ओववाइए जाव[9] अट्ठ पारिसीओ, अट्ठ छत्ते, अट्ठ छत्तधारीओ चेडीओ, अट्ठ चामराओ, अट्ठ चामरधारीओ चेडीओ अट्ठ तालियटे, अट्ठ तालियटधारीओ चेडीओ, 'अट्ठ करोडियाओ',[10] अट्ठ करोडियाधारीओ चेडीओ, अट्ठ खीरधाईओ[11], °अट्ठ मज्जणधाईओ, अट्ठ मडणधाईओ अट्ठ कीलावणधाईओ°, अट्ठ अकधाईओ, अट्ठ अगमद्दियाओ, अट्ठ उम्मद्दियाओ अट्ठ ण्हावियाओ, अट्ठ पसाहियाओ, अट्ठ वण्णगपेसीओ, अट्ठ चुण्णगपेसीओ[12], अट्ठ कीडागारीओ[13], अट्ठ दवकारीओ[14], अट्ठ उवत्थाणियाओ, अट्ठ नाडइज्जाओ,

---

१. [illegible] (म), [illegible] (क, ता, ब, म)।
२. [illegible] (क, म, ता, ब, म)।
३. [illegible]
४. [illegible]), [illegible] (म)।
५. [illegible] (अ, [illegible], ब, म), [illegible]
६. अवएडए (अ, म), अवगडए (ता)।
७. अवाताओ (अ, क, म, ता, म)।
८. म० पा०—जहा [illegible] जाव अट्ठ।
९. ओ० सू० ७०, भ० ६।१४४।
१०. × (अ, क, म, ता, ब, म)।
११. म० पा०—[illegible]धाईओ जाव अट्ठ।
१२. × (म)।
१३. कीडाकारीओ (ता)।
१४. [illegible] (क, म)।

अट्ठ कोट्टुकिणीओ, अट्ठ महाणसिणीओ[1], अट्ठ भंडागारिणीओ, अट्ठ अब्भाधारिणीओ, अट्ठ पुप्फधरणीओ, अट्ठ पाणिधरणीओ, अट्ठ बलिकारीओ, अट्ठ सेज्जाकारीओ, अट्ठ अब्भिंतरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ बाहिरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ मालाकारीओ, अट्ठ पेसणकारीओ, अण्णं वा सुबहुं हिरण्णं वा सुवण्णं वा कंसं वा दूसं वा विउलधण-कणग[2]-•रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-°संतसारसावएज्जं, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं, पकामं भोत्तुं[3], पकामं परिभाएउं[4] ॥

१६०. तए णं से महब्बले कुमारे एगमेगाए भज्जाए एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयइ, एगमेगं सुवण्णकोडिं दलयइ, एगमेगं मउडं मउडप्पवरं दलयइ, एवं तं चेव सव्वं जाव एगमेगं पेसणकारिं दलयइ, अण्णं वा सुबहुं हिरण्णं वा[5] •सुवण्णं वा कंसं वा दूसं वा विउलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसारसावएज्जं, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं, पकामं भोत्तुं, पकामं° परिभाएउं ॥

१६१. तए णं से महब्बले कुमारे उप्पिं पासायवरगए जहा जमाली जाव[6] पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ॥

१६२. तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पओप्पए[7] धम्मघोसे नामं अणगारे जाइसंपन्ने वण्णओ जहा केसिसामिस्स जाव[8] पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिणापुरे नगरे, जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

१६३. तए णं हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु महया जणसद्दे इ वा जाव[9] परिसा पज्जुवासइ ॥

१६४. तए णं तस्स महब्बलस्स कुमारस्स तं महयाजणसद्दं वा जणवूहं वा जाव जणसन्निवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा एवं जहा[10] जमाली तहेव चिंता,

---

१. महाणसीओ (क, ता, ब)।
२. सं० पा०—कणग जाव संतसार।
३. परिभोत्तुं (क, ख, ता, ब)।
४. परिभाएउं (क); परिभाभाएउं (ता)।
५. सं० पा०—हिरण्णं वा जाव परिभाएउं।
६. भ० ९।१५९।
७. पओप्पए (क), पओप्पए (ख, ब)।
८. राय० सू० ६८६।
९. राय० सू० ६८७, ओ० सू० ५२, भ० ९।१५३।
१०. भ० ९।१५८।

जाव[1] सव्वदुक्खप्पहीणे, नवर—चोद्दस पुव्वाइ अहिज्जइ, बहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ, सेस त चेव ॥

१७३. सेव भंते ! सेव भते ! त्ति[2] ॥

बारसमो उद्देसो

इसिभद्दपुत्त-पदं

१७४ तेण कालेण तेण समएण आलभिया नाम नगरी होत्था—वण्णओ[3] । संखवणे चेइए—वण्णओ[4] । तत्थ ण आलभियाए नगरीए बहवे इसिभद्दपुत्तपामोक्खा समणोवासया परिवसति—अड्ढा जाव[5] बहुजणस्स अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा जाव[6] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणा विहरति ॥

१७५ तए ण तेसि समणोवासयाण अण्णया कयाइ एगयओ समुवागयाण सहियाण समुविट्ठाण[7] सण्णिसण्णाण अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे[8] समुप्पज्जित्था—देवलोगेसु ण अज्जो ! देवाण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ?

१७६. तए ण से इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवट्ठिती-गहियट्ठे ते समणोवासए एवं वयासी—देवलोएसु ण अज्जो ! देवाण जहण्णेण दसवाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया, तिसमयाहिया जाव दससमयाहिया, संखेज्जसमयाहिया, असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता । तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ॥

१७७ तए ण ते समणोवासया इसिभद्दपुत्तस्स समणोवासगस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एव परूवेमाणस्स एयमट्ठ नो सद्दहति नो पत्तियति नो रोयति, एयमट्ठ असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोयमाणा जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ॥

---

१ [illegible]

२ [illegible]

३ [illegible]

४ [illegible]

५ [illegible]

६ [illegible]

७ समुवविट्ठाण (ब), समुविट्ठाण (ग, व, म, स) समुवेट्ठाण (ता), द्रष्टव्यम्—भ० ७।२१२ ।

८ मिहोकहासमुल्लावे अज्झत्थिए (अ, ग, म), अज्झत्थिए (ब) ।

१७८ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव[1] समोसढे जाव[2] परिसा पज्जुवासइ। तए णं ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा, हट्ठतुट्ठा [3]अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे जाव[1] आलभियाए नगरीए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तं महप्फलं खलु भो देवाणुप्पिया! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए? तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो।

एयं णे पेच्चभवे इहभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव सयाइं-सयाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सएहिं-सएहिं गिहेहिंतो पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता एगयओ मेलायंति, मेलायित्ता पायविहारचारेणं आलभियाए नगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव संखवणे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं जाव[4] तिविहाए पज्जुवासणाए[5] पज्जुवासंति। तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य महतिमहालियाए परिसाए 'धम्मं परिकहेइ'[6] जाव[7] आणाए आराहए भवइ॥

१७९ तए णं ते समणोवासया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेंति, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए अम्हं एवमाइक्खइ जाव[8] परूवेइ—देवलोएसु णं अज्जो! देवाणं जहण्णेणं दस

---

1. भ० १।७।
2. ओ० सू० २२-५२।
3. सं० पा०—एवं जहा तुंगिउद्देसए जाव पज्जुवासंति।
4. ओ० सू० ५२।
5. भ० २।६७।
6. पज्जुवासइ (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
7. ओ० सू० ७१-७९।
8. भ० १।४२०।

वाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया जाव[1] तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य।

१८० मे कहमेय भते ! एव ?
अज्जोति ! समणे भगव महावीरे ते समणोवासए एव वयासी—जण्ण अज्जो ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तुब्भ एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—देवलोएसु ण देवाणं जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया जाव तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य—सच्चे ण एसमट्ठे, अह 'पि ण'[2] अज्जो ! एवमाइक्खामि जाव[3] परूवेमि—देवलोएसु ण अज्जो ! देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइ [4]•ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया, तिसमयाहिया जाव दससमियाहिया, सखेज्जसमयाहिया, असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता° । तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य—'सच्चे ण एसमट्ठे'[5] ॥

१८१. तए ण ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता[6] जेणेव इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता इसिभद्दपुत्त समणोवासग वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ सम्म विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेति। तए ण ते समणोवासया पसिणाइ पुच्छति, पुच्छित्ता अट्ठाइ परियादियति, परियादियित्ता समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ॥

१८२ भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—पभू ण भते ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवाणुप्पियाण अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे गोयमा ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए बहूहि सीलव्वय-गुण[7]-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अहापरिग्गहिएहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे बहूइ वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणिहिति, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेहिति, झूसेत्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेहिति, छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणाभे

---

१ [illegible]
२ [illegible]
३ [illegible]
४ [illegible]
५ सच्चमेसे अट्ठे (क, ख, ता, ब, म)।
६ नमसित्ता उट्ठाए उट्ठेति २ (ता)।
७ गुणव्वय (ख, ब, म)।

विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता । तत्थ णं इसिभद्दपुत्तस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती भविस्सति ॥

१८३ से णं भंते ! इसिभद्दपुत्ते देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं[1] °अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ?° कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति[2] °बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं° अंतं काहिति ॥

१८४ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे जाव[3] अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

१८५ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ आलभियाओ नगरीओ संखवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

पोग्गल-परिव्वायग-पदं

१८६ तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया नामं नगरी होत्था—वण्णओ[4] । तत्थ णं संखवणे नामं चेइए होत्था—वण्णओ[5] । तस्स णं संखवणस्स चेइयस्स अदूरसामंते पोग्गले नामं परिव्वायए[6]—रिउव्वेद-जजुव्वेद जाव[7] बंभण्णएसु परिव्वायएसु य नएसु सुपरिनिट्ठिए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ[8] °पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए° आयावेमाणे विहरइ ॥

१८७ तए णं तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स छट्ठंछट्ठेणं[9] °अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए° आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए[10] °पगइउवसंतयाए पगइपयणुकोहमाणमायालोभयाए मिउमद्दवसंपन्नयाए अल्लीणयाए विणीययाए अण्णया कयाइ तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स° विब्भंगे नामं नाणे[11] समुप्पन्ने । से णं तेणं विब्भंगेणं नाणेणं समुप्पन्नेणं बंभलोए कप्पे देवाणं ठितिं जाणइ-पासइ ॥

१८८ तए णं तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[12] °चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—अत्थि णं ममं अतिसेसे नाणदंसणे

---

१. सं० पा०—ठिइक्खएणं जाव कहिं ।
२. सं० पा०—सिज्झिहिति जाव अंतं ।
३. भ० १।५१ ।
४. ओव० सू० १ ।
५. ओव० सू० २-१३ ।
६. परिव्वायए परिवसति (ब, म) ।
७. भ० २।२४ ।
८. सं० पा०—बाहाओ जाव आयावेमाणे ।
९. सं० पा०—छट्ठंछट्ठेणं जाव आयावेमाणस्स ।
१०. सं० पा०—पगइभद्दयाए जाव विब्भंगे ।
११. [illegible] (ब) ।
१२. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

समुप्पन्ने, देवलोएसु णं देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण दससागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता। तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य--एव सपेहेइ, सपेहेत्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता 'तिदड च कुडिय च' जाव[1] धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव आलभिया नगरी, जेणेव परिव्वायगावसहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भडनिक्खेव करेइ, करेत्ता आलभियाए नगरीए सिघाडग[2]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया! मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दसवाससहस्साइ [3]•ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया, जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण दससागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता। तेण पर° वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य॥

१८९. तए ण [4]•पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आलभियाए नगरीए सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसुबहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एव खलु देवाणुप्पिया! पोग्गले परिव्वायए एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया! मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, एव खलु देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दसवाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण दससागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता। तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य।° से कहमेय मन्ने एव?

१९०. सामी समोसढे[6], •परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ, °परिसा पडिगया। भगव गोयमे तहेव भिक्खायरियाए तहेव बहुजणसद्द निसामेइ, निसामेत्ता तहेव सव्व भाणियव्व जाव[7] अह पुण गोयमा! एवमाइक्खामि, एव भासामि जाव परूवेमि—देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता। तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य॥

१९१. अत्थि ण भते! सोहम्मे कप्पे दव्वाइ—सवण्णाइ पि अवण्णाइ पि, •[8]सगधाइ पि अगधाइ पि, सरसाइ पि अरसाइ पि, सफासाइ पि अफासाइ

---

१. [illegible] (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
२. [illegible]।
३. [illegible]।
४. [illegible]।
५. [illegible] अभिलावेण जहा सिवस्स न चेव जाव से।
६. स० पा०—समोसढे जाव पडिगया।
७. भ० ११।७१-७७।
८. स० पा०—तहेव जाव दुगा।

वि अण्णमण्णबद्धाइं अण्णमण्णपुट्ठाइं अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइं अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति ?°
हंता अत्थि।
एवं ईसाणे वि, एवं जाव[1] अच्चुए, एवं गेवेज्जविमाणेसु, अणुत्तरविमाणेसु वि, ईसिपब्भाराए वि जाव ?
हंता अत्थि॥

१९२. तए णं सा महतिमहालिया परिसा जाव[2] जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया॥

१९३ तए णं आलभियाए नगरीए सिंघाडग-तिग-°चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—जण्णं देवाणुप्पिया ! पोग्गले परिव्वायए एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु देवलोगेसु णं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं दससागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य। तं नो इणट्ठे समट्ठे। समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ जाव[3] देवलोगेसु णं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य॥

१९४ तए णं से पोग्गले परिव्वायए बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था। तए णं तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स संकियस्स कंखियस्स वितिगिच्छियस्स भेदसमावन्नस्स कलुससमावन्नस्स से विभंगे नाणे खिप्पामेव परिवडिए॥

१९५ तए णं तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए [illegible] मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे भगवं महावीरे [illegible] तित्थगरे जाव[4] सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं जाव[5] [illegible]

---

१. भ० ११।९४।
२. भ० ११।८२।
३. स० पा०—[illegible]
४. भ० ११।८३, १६०
५. भ० १।३।
६. ओ० सू० १६।

अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ, त महप्फल खलु तहारूवाण अरहताण भगवताण नामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-नमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? त गच्छामि ण समण भगव महावीर वदामि जाव[1] पज्जुवासामि, एय णे इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता परिव्वायगावसह अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता तिदड च कुडिय च जाव[2] धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वायगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पडिवडियविब्भगे आलभिय नगरि मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सखवणे चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता नच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे नमसमाणे अभिमुहे विणएण पजलिकडे पज्जुवासइ ॥

१९६ तए ण समणे भगव महावीरे पोग्गलस्स परिव्वायगस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ जाव[3] आणाए आराहए भवइ ॥

१९७ तए ण से पोग्गले परिव्वायए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा निसम्म जहा खदओ जाव[4] उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता तिदड च कुडिय च जाव[5] धाउरत्ताओ य एगते एडेइ, एडेत्ता सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेइ, करेत्ता समण भगव महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एव जहेव उसभदत्तो तहेव[6] पव्वइओ, तहेव[7] एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, तहेव सव्व जाव[8] सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

१९८ भतेति ! भगव गोयमे समण भगवं महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—जीवा ण भते ! सिज्झमाणस्स कयरम्मि सघयणे सिज्झति ?
गोयमा ! वइरोसभणारायसघयणे सिज्झति, एवं जहेव ओववाइए तहेव ।

---

१. भ० २।३० [illegible]
२. भ० २।३१ [illegible]
३. [illegible]
४. [illegible]
५. भ० २।३१।
६. भ० ९।१५०,१५१।
७. भ० ९।१५१।
८. भ० ९।१५१।

णाइं पुच्छंति, पुच्छित्ता अट्ठाइं परियादियंति', परियादियित्ता उट्ठाए उट्ठेंति, उट्ठेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सावत्थी नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

४ तए णं से संखे समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! विपुलं 'असण पाण खाइम साइमं' उवक्खडावेह । तए णं अम्हे तं विपुलं असण पाण खाइम साइमं अस्साएमाणा' वीसाएमाणा 'परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा'' पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा विहरिस्सामो ॥

५. तए णं ते समणोवासगा संखस्स समणोवासगस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ॥

६. तए णं तस्स संखस्स समणोवासगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए' •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—नो खलु मे सेयं तं विपुलं असण पाण खाइम' साइमं अस्साएमाणस्स वीसाएमाणस्स परिभाएमाणस्स परिभुंजेमाणस्स पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, सेयं खलु मे पोसहसालाए पोसहियस्स बंभचारिस्स ओमुक्कमणि'-सुवण्णस्स ववगयमाला'-वण्णग-विलेवणस्स निक्खित्तसत्थ-मुसलस्स एगस्स अबिइयस्स दब्भसंथारोवगयस्स पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव सावत्थी नगरी, जेणेव सए गिहे, जेणेव उप्पला समणोवासिया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उप्पलं समणोवासियं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभचारी'' •ओमुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमाला-वण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थ-मुसले एगे अबिइए दब्भसंथारोवगए° पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ ॥

७. तए णं ते समणोवासगा जेणेव सावत्थी नगरी जेणेव साइं-साइं गिहाइं, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता विपुलं असण पाण खाइम साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणु-

---

१. पडियाइयंति (ता) ।
२. असणपाणखाइमसाइम (क, ख, ता, ब, म) ।
३. आसाएमाणा (ता) ।
४. परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा (अ, क, ख, स), परिभुंजमाणा परिभाएमाणा (ता) ।
५. पोसहिए (?) (अ, ता, ब) ।
६. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
७. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
८. पोसहिए (क, ता, ब) ।
९. उम्मुक्क° (क, म) ।
१०. °मुसले (ता) ।
११. सं० पा०—बंभचारी जाव पडिजागर [illegible] ।

बारसमं सतं

पढमो उद्देसो

१ संखे २ जयंति ३ पुढवि ४ पोग्गल ५ अइवाय ६ राहु ७. लोगे य ।
८ नागे य ९ देव १० आया, बारसमसए दसुद्देसा ।।१।।

संख-पोक्खली-पदं

१ तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नगरी होत्था—वण्णओ[1]। कोट्ठए चेइए—वण्णओ[2]। तत्थ णं सावत्थीए नगरीए बहवे संखप्पामोक्खा समणोवासया परिवसंति—अड्ढा जाव[3] बहुजणस्स अपरिभूया, अभिगयजीवाजीवा जाव[4] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति। तस्स णं संखस्स समणोवासगस्स उप्पला नामं भारिया होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव[5] सुरूवा, समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ। तत्थ णं सावत्थीए नगरीए पोक्खली नामं समणोवासए परिवसइ—अड्ढे, अभिगयजीवाजीवे जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

२ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे। परिसा जाव[6] पज्जुवासइ। तए णं ते समणोवासगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जहा आलभियाए जाव[7] पज्जुवासंति। तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य महति-महालियाए परिसाए 'धम्मं परिकहेइ'[8] जाव[9] परिसा पडिगया ।।

३ तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता परि-

---

१. ओ० सू० १।
२. ओ० सू० २-१३।
३. भ० [illegible]।
४. भ० [illegible]।
५. [illegible]
६. ओ० सू० ५२।
७. भ० ११।१७८।
८. धम्मकहा (अ, क, ग, ता, ब, म, स)।
९. ओ० सू० ७१-७९।

•एवं खलु देवाणुप्पिए ! समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव[1] सव्वण्णू सव्व-दरिसी आगासगएणं चक्केणं जाव[2] सुहंसुहेणं विहरमाणे चंदोतरणे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तं महप्फलं खलु देवाणुप्पिए ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए जाव[3] एयं णं इहभवे य, परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्से-साए आणुगामियत्ताए° भविस्सइ ।।

३४. तए णं सा मिगावती देवी जयंतीए समणोवासियाए [4]•एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्प-माणहियया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जयंतीए समणोवासियाए एयमट्ठं विणएणं° पडिसुणेइ ।।

३५. तए णं सा मिगावती देवी कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइय जाव[5] धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह[6] •उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

३६ तए णं ते कोडुंबियपुरिसा मिगावतीए देवीए एवं वुत्ता समाणा धम्मियं जाण-प्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेंति, उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति ।।

३७ तए णं सा मिगावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं ण्हाया कयबलिकम्मा जाव[7] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा बहूहिं खुज्जाहिं जाव[8] चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-थेरकंचुइज्ज-महत्तरगवंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ निग्गच्छइ, निग्ग-च्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[9] •धम्मिए जाणप्पवरं° दुरूढा[10] ।।

३८. तए णं सा मिगावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा[11] समाणी नियगपरियालसंपरिवुडा जहा उसभदत्तो जाव[12] धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ ।।

३९ तए णं सा मिगावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं बहूहिं जहा देवाणंदा

---

१. भ० १।७।
२. ओ० सू० १६।
३. भ० ६।१३६।
४. सं० पा०—जहा देवाणंदा जाव पडिसुणेइ।
५. भ० ६।१४१।
६. सं० पा०—उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति जाव पच्चप्पिणंति।
७. भ० २।६७।
८. भ० ६।१४४।
९. सं० पा०—उवागच्छित्ता जाव दुरूढा।
१० दूढा (अ, क, स, ता, ब, म)।
११ दूढा (अ, क, स, ता, ब, म)।
१२. भ० ६।१४५।

जाव[1] वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उदयणं रायं पुरओ कट्टु ठिया[2] चेव[3] °सपरिवारा सुस्सूसमाणी नमंसमाणी अभिमुहा विणएणं पंजलिकडा° पज्जुवासइ ॥

४०. तए णं समणे भगवं महावीरे उदयणस्स रण्णो मियावतीए देवीए जयंतीए समणोवासियाए तीसे य महतिमहालियाए परिसाए जाव[4] धम्मं परिकहेइ जाव[5] परिसा पडिगया, उदयणे पडिगए, मियावती वि पडिगया ॥

जयंती-पसिण-पदं

४१. तए णं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कहण्णं[6] भंते ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति ?
जयंती ! पाणाइवाएणं[7] °मुसावाएणं अदिण्णादाणेणं मेहुणेणं परिग्गहेणं कोह-माण-माया-लोभ-पेज्ज-दोस-कलह-अब्भक्खाण-पेसुन्न-परपरिवाय-अरतिरति-मायामोस-मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु जयंती ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति ॥

४२. कहण्णं भंते ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ?
जयंती ! पाणाइवायवेरमणेणं मुसावायवेरमणेणं अदिण्णादाणवेरमणेणं मेहुणवेरमणेणं परिग्गहवेरमणेणं कोह-माण-माया-लोभ-पेज्ज-दोस-कलह-अब्भक्खाण-पेसुन्न-परपरिवाय-अरतिरति-मायामोस-मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं—एवं खलु जयंती ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ॥

४३. कहण्णं भंते ! जीवा संसारं आउलीकरेंति ?
जयंती ! पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु जयंती ! जीवा संसारं आउलीकरेंति ॥

४४. कहण्णं भंते ! जीवा संसारं परित्तीकरेंति ?
जयंती ! पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं—एवं खलु जयंती ! जीवा संसारं परित्तीकरेंति ॥

४५. कहण्णं भंते ! जीवा संसारं दीहीकरेंति ?

---

१. भ० ९।१४९ ।
२. ठिच्चा (क, ग, ता, ब) ।
३. सं० पा०—चेव जाव पज्जुवासइ ।
४. भ० [illegible] ।
५. ओ० सू० ७१-७९ ।
६. कहन्नं (क, ता, ब); कहं णं (म, स), अहिन्नं (म) ।
७. सं० पा०—पाणाइवाएणं [illegible] ।

जयती ! पाणाइवाएण जाव मिच्छादंसणसल्लेण—एव खलु जयंती ! जीवा संसार दीहीकरेति ॥

४६ कहण्ण भते ! जीवा ससार ह्रस्सीकरेति ?
जयती पाणाइवायवेरमणेण जाव मिच्छादसणसल्लवेरमणेण—एव खलु जयती ! जीवा ससार ह्रस्सीकरेति ॥

४७ कहण्ण भते ! जीवा ससार अणुपरियट्टति ?
जयती ! पाणाइवाएण जाव मिच्छादसणसल्लेण—एव खलु जयती ! जीवा ससार अणुपरियट्टति ॥

४८. कहण्ण भते ! जीवा ससार वीतिवयति ?
जयती ! पाणाइवायवेरमणेण जाव मिच्छादसणसल्लवेरमणेण—एव खलु जयती ! जीवा ससार° वीतिवयति ॥

४९. भवसिद्धियत्तण भते ! जीवाण कि सभावओ ? परिणामओ ?
जयती ! सभावओ, नो परिणामओ ॥

५०. सव्वेवि ण भते ! भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्सति ?
हता जयती ! सव्वेवि ण भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति ॥

५१. जइ ण भते ! सव्वे भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्सति, तम्हा ण भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

५२. से केण खाइण[1] अट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सव्वेवि ण भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्सति, नो चेव ण भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ?
जयति ! से जहानामए सव्वागाससेढी सिया—अणादीया अणवदग्गा परित्ता परिवुडा, सा ण परमाणुपोग्गलमेत्तेहि खडेहि समए-समए अवहीरमाणी-अवहीरमाणी अणताहि ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीहि अवहीरति, नो चेव ण अवहिया सिया । से तेणट्ठेण जयती ! एव वुच्चइ—सव्वेवि ण भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्सति, नो चेव ण भवसिद्धिअविरहिए लोए भविस्सइ ॥

५३. सुत्तत्त भते ! साहू ? जागरियत्त साहू ?
जयती ! अत्थेगतियाण जीवाण सुत्तत्त साहू, अत्थेगतियाण जीवाण जागरियत्त साहू ॥

५४ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगतियाण[2] °जीवाण सुत्तत्त साहू, अत्थेगतियाण जीवाण जागरियत्त° साहू ?
जयती ! जे इमे जीवा अहम्मिया अहम्माणुया अहम्मिट्ठा अहम्मक्खाई अहम्मपलोई अहम्मपलज्जणा अहम्मसमुदाचारा अहम्मेणं चेव वित्ति कप्पेमाणा विह-

---

१. [illegible] (अ); [illegible] (स) ।
२. स० पा०—अत्थेगतियाण जाव साहू ।

रंति, एएसि णं जीवाणं सुत्तत्तं साहू। एए णं जीवा सुत्ता समाणा नो बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए[1] •जूरणयाए तिप्पणयाए पिट्टणयाए° परियावणयाए वट्टंति। एए णं जीवा सुत्ता समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा नो बहूहिं अहम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति एएसिं णं जीवाणं सुत्तत्तं साहू।

जयंती! जे इमे जीवा धम्मिया धम्माणुया •धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मपलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा° धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाणं जागरियत्तं साहू। एए णं जीवा 'जागरा समाणा'[3] बहूणं पाणाणं[4] •भूयाणं जीवाणं° सत्ताणं अदुक्खणयाए[5] •असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपिट्टणयाए° अपरियावणयाए वट्टंति। एए[6] णं जीवा जागरा समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा बहूहिं धम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति। एए णं जीवा जागरा समाणा धम्मजागरियाए अप्पाणं जागरइत्तारो भवंति। एएसि णं जीवाणं जागरियत्तं साहू। से तेणट्ठेणं जयंती! एवं वुच्चइ—अत्थेगतियाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू॥

५५. बलियत्तं भंते! साहू? दुब्बलियत्तं साहू?
जयंती! अत्थेगतियाणं जीवाणं बलियत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू॥

५६. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ[7]—•अत्थेगतियाणं जीवाणं बलियत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं दुब्बलियत्तं° साहू?
जयंती! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव[8] अहम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू। एए णं जीवा [9]•दुब्बलिया समाणा नो बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खणयाए जाव परियावणयाए वट्टंति। एए णं जीवा दुब्बलिया समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा नो बहूहिं अहम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति। एएसि णं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू।

---

१. स० पा०—सोयणयाए जाव परियावणयाए।
२. स० पा०—धम्माणुया जाव धम्मेण।
३. जागरमाणा (अ, क, ब)।
४. स० पा०—भूयाणं जाव सत्ताणं।
५. स० पा०—अदुक्खणयाए जाव अपरियावण-याए।
६. ते (?)।
७. स० पा०—वुच्चइ जाव साहू।
८. भ० १२।५४।
९. स० पा०—[illegible]

जयती ! जे इमे जीवा धम्मिया जाव धम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणा विहरति, एएसि ण जीवाण बलियत्त साहू । एए ण जीवा बलिया समाणा बहूण पाणाण भूयाण जीवाण सत्ताण अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए वट्टति । एए ण जीवा बलिया समाणा अप्पाण वा पर वा तदुभय वा बहूहि धम्मियाहि सजोयणाहि° सजोएत्तारो भवति । एएसि ण जीवाण बलियत्त साहू । से तेणट्ठेण जयती ! एव वुच्चइ—•'अत्थेगतियाण जीवाणं बलियत्त साहू, अत्थेगतियाण जीवाण दुब्बलियत्त° साहू ।।

५७. दक्खत्त भते ! साहू ? आलसियत्त साहू ?

जयती ! अत्थेगतियाण जीवाण दक्खत्त साहू, अत्थेगतियाण जीवाण आलसियत्त साहू ।।

५८ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—•'अत्थेगतियाण जीवाण दक्खत्त साहू, अत्थेगतियाण जीवाण आलसियत्त° साहू ?

जयती ! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव अहम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणा विहरति, एएसि ण जीवाण आलसियत्तं साहू । एए ण जीवा आलसा' समाणा नो बहूण '•पाणाण भूयाण जीवाणं सत्ताण दुक्खणयाए जाव परियावणयाए वट्टति । एए ण जीवा आलसा समाणा अप्पाण वा पर वा तदुभय वा नो बहूहिं अहम्मियाहिं सजोयणाहिं सजोएत्तारो भवति । एएसि ण जीवाण आलसियत्त साहू ।

जयति ! जे इमे जीवा धम्मिया जाव धम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणा विहरति, एएसि ण जीवाण दक्खत्त साहू । एए ण जीवा दक्खा समाणा बहूण पाणाण भूयाण जीवाण सत्ताण अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए वट्टति । एए ण जीवा दक्खा समाणा अप्पाण वा पर वा तदुभय वा बहूहि धम्मियाहि सजोयणाहि° सजोएत्तारो भवति । एए ण जीवा दक्खा समाणा बहूहि आयरियवेयावच्चेहिं' उवज्झायवेयावच्चेहिं थेरवेयावच्चेहि तवस्सिवेयावच्चेहि गिलाणवेयावच्चेहिं सेहवेयावच्चेहिं कुलवेयावच्चेहि गणवेयावच्चेहिं सघवेयावच्चेहि साहम्मियवेयावच्चेहिं अत्ताण सजोएत्तारो भवति, एएसि ण जीवाण दक्खत्त साहू । से तेणट्ठेण '•जयती ! एव वुच्चइ—अत्थेगतियाण जीवाण दक्खत्त साहू, अत्थेगतियाण जीवाणं आलसियत्तं° साहू ।।

---

१. स० पा०—त चेव जाव साहू ।

२. स० पा०—त चेव जाव साहू ।

३. [illegible] (अ, ब) ।

४. सं० पा०—जहा सुत्ता तहा आलसा भाणियव्वा, जहा जागरा तहा दक्खा भाणियव्वा जाव सजोएत्तारो ।

५. °वेयावच्चेहि (अ, ब) ।

६. स० पा०—त चेव जाव साहू ।

सिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। पंचहा कज्जमाणे पंच परमाणुपोग्गला भवंति॥

७३ छब्भंते! परमाणुपोग्गला [१]एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ? गोयमा! छप्पएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि जाव छव्विहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा दो तिपएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा तिण्णि दुपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। छहा कज्जमाणे छ परमाणुपोग्गला भवंति॥

७४ सत्त भंते! परमाणुपोग्गला [२]एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ? गोयमा! सत्तपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव सत्तहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुप-

१. सं० पा०—साहण्ण [illegible]। २. सं० पा०—[illegible]।

६७ पढमा ण भंते ! पुटवी किंगोत्ता पण्णत्ता ?
गोयमा ! घम्मा नामेण, रयणप्पभा गोत्तेणं, एव जहा जीवाभिगमे पढमो नेरइयउद्देसओ सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो जाव[1] अप्पाबहुग ति ॥

६८ सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति[2] ॥

चउत्थो उद्देसो

परमाणुपोग्गलाणं संघात-भेद-पदं

६९ रायगिहे जाव[3] एव वयासी—दो भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, साहण्णित्ता किं भवइ ?
गोयमा ! दुप्पएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा कज्जइ—एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ परमाणुपोग्गले भवइ ॥

७० तिण्णि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ ?
गोयमा ! तिपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। तिहा कज्जमाणे तिण्णि परमाणुपोग्गला भवंति ॥

७१ चत्तारि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति,[4] •साहणित्ता किं भवइ ?°
गोयमा ! चउपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि चउहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा दो दुपएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। चउहा कज्जमाणे चत्तारि परमाणुपोग्गला भवंति ॥

७२ पंच भंते ! परमाणुपोग्गला [5]•एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ ?°
गोयमा ! पंचपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि चउहा वि पंचहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउपए-

---

१. [illegible]
२. [illegible]
३. [illegible]
४. स० पा०—साहण्णंति जाव पुच्छा।
५. स० पा०—पुच्छा।

सिया खधा भवति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। सत्तहा कज्जमाणे सत्त परमाणुपोग्गला भवति।।

७५. अट्ठ भंते ! परमाणुपोग्गला [1]•एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ ?° गोयमा ! अट्ठपएसिए खंधे भवइ[2]। •से भिज्जमाणे दुहा वि जाव अट्ठहा वि कज्जइ°—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा दो चउप्पए-सिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला भवंति, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणु-पोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दोण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खंधा भवंति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणु-पोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। अट्ठहा कज्जमाणे अट्ठ परमाणुपोग्गला भवंति।।

७६. नव भंते ! परमाणुपोग्गला [3]•एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ ?° गोयमा[4] ! •नवपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव नवहा[5] वि कज्जइ°—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे

---

१. [illegible]

२. [illegible]

३. [illegible]

४. सं० पा०—गोयमा जाव नवहा।

५. नवविहा (ता, म)।

गोयमा ! दसपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि कज्जइ° —दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ नवपएसिए खंधे भवइ ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ , [1]°अहवा एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ , अहवा एगयओ चउप्पएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ° ; अहवा दो पंचपएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ , अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दो तिपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ तिण्णि दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा पंच दुपएसिया खंधा भवंति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंच

---

१. स० पा०—एवं एक्केक्कं संचारेयव्वं जाव अहवा।

परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ चत्तारि दुपएसिया खंधा भवति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खंधा भवंति। अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। नवहा कज्जमाणे एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। दसहा कज्जमाणे दस परमाणुपोग्गला भवंति॥

७८. संखेज्जा णं भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, साहण्णित्ता किं भवइ? गोयमा! संखेज्जपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि संखेज्जहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, एवं जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति, एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति, अहवा तिण्णि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, एवं जाव अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, [illegible]

खधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खधा भवंति जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दसपएसिए खधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि संखेज्जपएसिया खधा भवंति, अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ तिण्णि संखेज्जपएसिया खधा भवंति जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खधे, एगयओ तिण्णि संखेज्ज-पएसिया खधा भवंति, अहवा चत्तारि संखेज्जपएसिया खधा भवंति, एवं एएणं कमेणं पंचगसंजोगो वि भाणियव्वो जाव नवगसंजोगो। दसहा कज्जमाणे एगयओ नव परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए, एगयओ संखेज्जपएसिए खधे भवइ। एएणं कमेणं एक्केक्को पूरेयव्वो जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खधे, एगयओ नव संखेज्जपएसिया खधा भवंति, अहवा दस संखेज्जपएसिया खधा भवंति। संखेज्जहा कज्जमाणे संखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति॥

७६ असंखेज्जा भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ? गोयमा! असंखेज्जपएसिए खधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि, संखेज्जहा वि, असंखेज्जहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु-पोग्गले, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खधे भवइ, एगयओ असंखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ संखेज्ज-पएसिए खधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खधे भवइ; अहवा दो असंखेज्ज-पएसिया खधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपए-सिए खधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खधे भवइ जाव अहवा एगयओ परमाणु-पोग्गले, एगयओ दसपएसिए खधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खधा भवंति, अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खधा भवंति, एवं जाव अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खधे, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खधा भवंति, अहवा तिण्णि असंखेज्जपएसिया खधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्ज-पएसिए खधे भवइ, एवं चउक्कगसंजोगो जाव दसगसंजोगो। एए जहेव संखेज्जपएसियस्स, नवरं—असंखेज्जगं एगं अहिगं भाणियव्वं जाव अहवा दस

१ [illegible]

९२. एगमेगस्स ण भंते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवतिया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
अणंता ।
केवतिया पुरेक्खडा ?
एकुत्तरिया[1] जाव अणंता वा । एवं जाव थणियकुमारत्ते ॥

९३. पुढविकाइयत्ते—पुच्छा ।
नत्थि एक्कोवि ।
केवतिया पुरेक्खडा ?
नत्थि एक्कोवि[2] । एवं जत्थ वेउव्वियसरीरं[3] तत्थ एकुत्तरिओ, जत्थ नत्थि तत्थ जहा पुढविकाइयत्ते तहा भाणियव्व जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते ।
तेयापोग्गलपरियट्टा, कम्मापोग्गलपरियट्टा य सव्वत्थ एकुत्तरिया भाणियव्वा, मणपोग्गलपरियट्टा सव्वेसु पंचिदिएसु एगुत्तरिया, विगलिंदिएसु नत्थि । वइ-पोग्गलपरियट्टा एव चेव, नवरं—एगिदिएसु नत्थि भाणियव्वा । आणापाणु-पोग्गलपरियट्टा सव्वत्थ एकुत्तरिया जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते ॥

९४. नेरइयाणं भते ! नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
'नत्थि एक्कोवि'[4] ।
केवतिया पुरेक्खडा ?
नत्थि एक्कोवि । एव जाव थणियकुमारत्त ॥

९५. पुढविकाइयत्ते—पुच्छा ।
अणता ।
केवतिया पुरेक्खडा ?
अणता । एवं जाव मणुस्सत्ते । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणियत्ते जहा नेरइयत्ते । एव जाव वेमाणियाण[5] वेमाणियत्ते । एवं सत्त वि पोग्गलपरियट्टा भाणियव्वा —जत्थ[6] अत्थि तत्थ[7] अतीता वि पुरेक्खडा वि अणंता भाणियव्वा, जत्थ[8] नत्थि तत्थ दोवि नत्थि भाणियव्वा जाव—

९६ वेमाणियाण वेमाणियत्ते केवतिया आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
दणता ।
केवतिया पुरेक्खडा ?

---

1. एगुत्तरिया (अ), एक्कुत्तरिया (क, ता) ।
2. [illegible] (ब, म) ।
3. [illegible] (अ, म) ।
4. [illegible] (क, ता, म) ।
5. वेमाणियस्स (क, ता, ब) ।
6. जस्स (क, ता, ब, म) ।
7. तस्स (क, ता, ब, म) ।
8. जस्स (क, ग, ता, ब, म) ।

अणंता ॥

९७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—ओरालियपोग्गलपरियट्टे-ओरालियपोग्गलपरियट्टे ?
गोयमा ! जण्णं जीवेणं ओरालियसरीरे वट्टमाणेणं ओरालियसरीरपायोग्गाइं दव्वाइं ओरालियसरीरत्ताए गहियाइं बद्धाइं पुट्ठाइं कडाइं पट्ठवियाइं निविट्ठाइं अभिनिविट्ठाइं अभिसमण्णागयाइं परियादियाइं परिणामियाइं निज्जिण्णाइं निसिरियाइं निसिट्ठाइं भवंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—ओरालियपोग्गलपरियट्टे-ओरालियपोग्गलपरियट्टे।
एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टेवि, नवरं—वेउव्वियसरीरे वट्टमाणेणं वेउव्वियसरीरप्पायोग्गाइं दव्वाइं वेउव्वियसरीरत्ताए गहियाइं, सेसं तं चेव सव्वं, एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे, नवरं—आणापाणुपायोग्गाइं सव्वदव्वाइं आणापाणुत्ताए गहियाइं, सेसं तं चेव ॥

९८. ओरालियपोग्गलपरियट्टे णं भंते ! केवइकालस्स निव्वत्तिज्जइ ?
गोयमा ! अणंताहिं 'ओसप्पिणीहिं उस्सप्पिणीहिं'[1] एवतिकालस्स निव्वत्तिज्जइ। एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे वि। एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टेवि ॥

९९. एयस्स णं भंते ! ओरालियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स य कयरे कयरेहिंतो' °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे कम्मगपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले, तेयापोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, ओरालियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, आणापाणुपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, मणपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, वइपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे ॥

१००. एएसि णं भंते ! ओरालियपोग्गलपरियट्टाणं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टाण य कयरे कयरेहिंतो' °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा, वइपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, मणपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, ओरालिय-

१. ओसप्पिणि-उस्स० (क, ख, ता, ब); [illegible]
[illegible] (ब); [illegible]
[illegible] (ता)।

पोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, तेयापोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, कम्मगपोग्गल-परियट्टा अणतगुणा ॥

१०१. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति भगव जाव[1] विहरइ ॥

पंचमो उद्देसो

वण्णादि अवण्णादि च पडुच्च दव्ववीमंसा-पदं

१०२. रायगिहे जाव[2] एव वयासी—अह भते ! पाणाइवाए, मुसावाए, अदिण्णादाणे, मेहुणे, परिग्गहे—एस ण कतिवण्णे, कतिगधे, कतिरसे, कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचवण्णे, दुगधे, पचरसे, चउफासे पण्णत्ते ॥

१०३. अह भते ! कोहे, कोवे, रोसे, दोसे, अखमा, सजलणे, कलहे, चडिक्के, भंडणे, विवादे—एस ण कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचवण्णे, 'दुगधे, पचरसे'[3], चउफासे पण्णत्ते ॥

१०४. अह भते ! माणे, मदे, दप्पे, थंभे, गव्वे, अत्तुक्कोसे[4], परपरिवाए, उक्कोसे[5], अवक्कोसे[6], उण्णते, उण्णामे, दुण्णामे—एस ण कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचवण्णे, [7]॰दुगधे, पंचरसे, चउफासे, पण्णत्ते॰ ॥

१०५. अह भते ! माया, उवही, नियडी, वलए[8], गहणे, णूमे, कक्के, कुरुए[9], जिम्हे[10], किब्बिसे, आयरणया, गूहणया, वचणया, पलिउंचणया, सातिजोगे—एस ण कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचवण्णे [11]॰दुगधे पचरसे चउफासे पण्णत्ते॰ ॥

१०६ अह भते ! लोभे, इच्छा, मुच्छा, कंखा, गेही, तण्हा, भिज्झा, अभिज्झा, आसासणया, पत्थणया, लालप्पणया, कामासा, भोगासा, जीवियासा, मर-

---

१. भ० १।५१।
२. भ० १।८-१०।
३. एकम्मि दुग्गंधे [illegible] (अ, क, ख, ग, ब, म, स)।
४. [illegible] (क, ख); अत्तुक्कोसे (ता)।
५. [illegible] (ख, ता)।
६. [illegible] (म, [illegible])।
७. म० पा०—जहा कोहे तहेव।
८. वलये (अ, क, ख, ब, म, स)।
९. कुरुए (म)।
१० जिमे (अ, ब, म); जिम्मे (क); जिम्मे (ग); जिम्हे (ता)।
११. म० पा०—जहेव कोहे।

माणा', नंदिरागे' – एस णं कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
'●गोयमा ! पंचवण्णे दुगंधे पंचरसे चउफासे पण्णत्ते° ॥

१०७ अह भंते ! पेज्जे, दोसे, कलहे', °अब्भक्खाणे, पेसुन्ने, परपरिवाए, अरतिरती, मायामोसे,° मिच्छादंसणसल्ले—एस णं कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
'●गोयमा ! पंचवण्णे दुगंधे पंचरसे चउफासे पण्णत्ते° ॥

१०८. अह भंते ! पाणाइवायवेरमणे, जाव' परिग्गहवेरमणे कोहविवेगे जाव' मिच्छादंसणसल्लविवेगे—एस णं कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे पण्णत्ते ॥

१०९. अह भंते ! उप्पत्तिया, वेणइया, कम्मया, पारिणामिया—एस णं कतिवण्णा जाव कतिफासा पण्णत्ता ?
'●गोयमा ! अवण्णा, अगंधा, अरसा, अफासा पण्णत्ता° ॥

११० अह भंते ! ओग्गहे, ईहा, अवाए', धारणा—एस णं कतिवण्णा जाव कतिफासा पण्णत्ता ?
''●गोयमा ! अवण्णा, अगंधा, अरसा°, अफासा पण्णत्ता ॥

१११. अह भंते ! उट्ठाणे, कम्मे, बले, वीरिए, पुरिसक्कार-परक्कमे—एस णं कति-वण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
'●गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे°, अफासे पण्णत्ते ॥

११२ सत्तमे णं भंते ! ओवासंतरे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
''●गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे°, अफासे पण्णत्ते ॥

११३ सत्तमे णं भंते ! तणुवाए कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
''●गोयमा ! पंचवण्णे, दुगंधे, पंचरसे° अट्ठफासे पण्णत्ते ।
एवं जहा सत्तमे तणुवाए तहा सत्तमे घणवाए, घणोदही, पुढवी । छट्ठे ओवासंतरे अवण्णे । तणुवाए जाव छट्ठी पुढवी—एयाइं अट्ठफासाइं । एवं जहा सत्तमाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया तहा जाव पढमाए पुढवीए भाणियव्वं । जंबुद्दीवे दीवे जाव सयंभूरमणे समुद्दे, सोहम्मे कप्पे जाव ईसिपब्भारा पुढवी,

१. [illegible] (?) ।
२. [illegible] ।
३. [illegible] ।
४. [illegible] ।
५. [illegible] ।
६. [illegible] ।
७. [illegible] ।
८. [illegible] ।
९. [illegible] ।
१०. [illegible] ।
११. [illegible] ।
१२. [illegible] ।
१३. [illegible] ।
१४. [illegible] ।

नेरइयावासा जाव वेमाणियावासा—-एयाणि सव्वाणि अट्ठफासाणि ॥

११४ नेरइयाण भते ! कतिवण्णा जाव कतिफासा पण्णत्ता ?
गोयमा ! वेउव्विय-तेयाइ पडुच्च[1] पचवण्णा, 'दुगधा, पचरसा'[2], अट्ठफासा पण्णत्ता। कम्मग पडुच्च पचवण्णा, दुगधा, पचरसा, चउफासा पण्णत्ता। जीव पडुच्च अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता। एव जाव थणियकुमारा ॥

११५ पुढविक्काइयाण—पुच्छा।
गोयमा ! ओरालिय-तेयगाइ पडुच्च पचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता। कम्मग पडुच्च जहा नेरइयाण। जीव पडुच्च तहेव। एव जाव चउरिंदिया, नवर—वाउक्काइया ओरालिय-वेउव्विय-तेयगाइ पडुच्च पचवण्णा जाव अट्ठ-फासा पण्णत्ता, सेस जहा नेरइयाण। पचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा वाउ-क्काइया ॥

११६ मणुस्साणं—पुच्छा।
ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेयगाइ पडुच्च पचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता। कम्मग जीव च पडुच्च जहा नेरइयाण वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया।
धम्मत्थिकाए जाव[3] पोग्गलत्थिकाए—एए सव्वे अवण्णा, नवर—पोग्गलत्थि-काए पचवण्णे, दुगधे, पचरसे, अट्ठफासे पण्णत्ते।
नाणावरणिज्जे जाव[4] अतराइए—एयाणि चउफासाणि ॥

११७ कण्हलेसा ण भते ! कतिवण्णा [5]•जाव कतिफासा पण्णत्ता ?०
दव्वलेस पडुच्च पचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता। भावलेसं पडुच्च अवण्णा, अगधा, अरसा, अफासा पण्णत्ता। एव जाव[6] सुक्कलेस्सा।
सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी, चक्खुदसणे, अचक्खुदसणे, ओहि-दसणे, केवलदसणे, आभिणिबोहियनाणे जाव[7] विभगनाणे, आहारसण्णा जाव परिग्गहसण्णा—एयाणि अवण्णाणि, अगधाणि, अरसाणि, अफासाणि।
ओरालियसरीरे जाव तेयगसरीरे—एयाणि अट्ठफासाणि। कम्मगसरीरे[8] चउ-फासे। मणजोगे, वइजोगे य चउफासे, कायजोगे अट्ठफासे।
सागारोवओगे अणागारोवओगे य अवण्णे ॥

११८ सव्वदव्वा ण भते ! कतिवण्णा [9]•जाव कतिफासा पण्णत्ता ?०

---

१. पडुच्चा (ता, ब, म)।
२. पचरसा दुगधा (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३. भ० [illegible]।
४. भ० [illegible]।
५. स० पा०—पुच्छा।
६. भ० १।१०२।
७. भ० २।१३७।
८. कम्मगसरीरे (ब, म)।
९. स० पा०—पुच्छा।

राहुस्स ण देवस्स नव नामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा—सिघाडए[1] जडिलए खतए[2] खरए दद्दुरे मगरे मच्छे कच्छभे[3] कण्हसप्पे ।

राहुस्स ण देवस्स विमाणा पचवण्णा, पण्णत्ता, त जहा—किण्हा, नीला, लोहिया, हालिद्दा, सुक्किला । अत्थि कालए राहुविमाणे खजणवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि लोहिए राहुविमाणे मजिट्ठवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि पीतए राहुविमाणे हालिद्दवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि सुक्किलए राहुविमाणे भासरासिवण्णाभे पण्णत्ते ।

जदा ण राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चदलेस्स पुरत्थिमेण आवरेत्ता ण पच्चत्थिमेण वीतीवयइ तदा ण पुरत्थिमेण चदे उवदंसेति, पच्चत्थिमेण राहू । जदा ण राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चदलेस्स पच्चत्थिमेण आवरेत्ता ण पुरत्थिमेण वीतीवयइ तदा ण पच्चत्थिमेण चदे उवदसेति, पुरत्थिमेण राहू । एव जहा पुरत्थिमेण पच्चत्थिमेण य दो आलावगा भणिया एव दाहिणेण उत्तरेण य दो आलावगा भाणियव्वा । एव उत्तरपुरत्थिमेण दाहिणपच्चत्थिमेण य दो आलावगा भाणियव्वा । एव दाहिणपुरत्थिमेणं उत्तरपच्चत्थिमेण य दो आलावगा भाणियव्वा । एव चेव जाव तदा ण उत्तरपच्चत्थिमेण चदे उवदसेति, दाहिणपुरत्थिमेण राहू । जदा ण राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चदलेस्स आवरेमाणे-आवरेमाणे चिट्ठइ तदा ण मणुस्सलोए मणुस्सा वदति—एवं खलु राहू चद गेण्हति, एव खलु राहू चद गेण्हति । जदा ण राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चदलेस्स[4] आवरेत्ता ण पासेण वीतीवयइ तदा ण मणुस्सलोए मणुस्सा वदति—एव खलु चदेण राहुस्स कुच्छी भिन्ना, एव खलु चदेण राहुस्स कुच्छी भिन्ना । जदा ण राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चदलेस्सं आवरेत्ता ण पच्चोसक्कइ तदा ण मणुस्सलोए मणुस्सा वदति—एव खलु राहुणा चदे वते, एव खलु राहुणा चदे वते । जदा ण राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चदलेस्स अहे सपक्खि सपडिदिसि आवरेत्ता ण चिट्ठइ तदा ण मणुस्सलोए मणुस्सा वदति—एव खलु राहुणा चदे घत्थे, एव खलु राहुणा चदे घत्थे ॥

१२४ कतिविहे ण भते ! राहू पण्णत्ते ?

गोयमा ! दुविहे राहू पण्णत्ते, त जहा—धुवराहू य, पव्वराहू य । तत्थ ण जे से धुवराहू से ण बहुलपक्खस्स पाडिवए पन्नरसतिभागेण पन्नरसतिभाग

---

१ [illegible] (ब) ।

२ [illegible] ([illegible]), [illegible] ([illegible]), [illegible] (म) ।

३ कच्छभे (ब) ।

४. चदस्स लेस (क, ब, म) ।

विप्पवासिए, से ण तओ लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे पुणरवि नियग गिहं हव्वमागए, ण्हाए कयवलिकम्मे कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सव्वालकार-विभूसिए मणुण्णं थालिपागसुद्ध' अट्ठारसवजणाकुल भोयण भुत्ते समाणे तसि तारिसगसि वासघरसि '•अब्भितरओ सचित्तकम्मे बाहिरओ दूमिय-घट्ठ-मट्ठे विचित्तउल्लोग-चिल्लियतले मणिरयणपणासियधयारे, बहुसम-सुविभत्तदेसभाए पचवण्ण-सरससुरभि-मुक्कपुप्फपुजोवयारकलिए कालागुरु-पवरकुदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेत-गधुद्धुयाभिरामे सुगधवरगधिए गधवट्टिभूए।

तसि तारिसगसि सयणिज्जसि—सालिगणवट्टिए उभओ विब्बोयणे दुहओ उण्णए मज्झे णय-गभीरे गगापुलिणवालुय-उद्दालसालिसए ओयविय-खोमिय-दुगुल्लपट्ट-पडिच्छयणे सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुए सुरम्मे आइणग-रूय-बूर-नवणीय-तूलफासे सुगधवरकुसुम-चुण्ण°-सयणोवयारकलिए ताए तारिसियाए भारियाए सिगारागारचारुवेसाए' •सगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-सलाव-निउणजुत्तोवयारकुसलाए सुदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास°कलियाए अणुरत्ताए अविरत्ताए मणाणुकूलाए सद्धि इट्ठे सद्दे फरिसे' •रसे रूवे गधे° पचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरेज्जा, से ण गोयमा! पुरिसे विउसमणकालसमयसि केरिसय सायासोक्ख पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ?

ओराल समणाउसो!

तस्स ण गोयमा! पुरिसस्स कामभोगेहितो वाणमतराण देवाण एत्तो अणत-गुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। वाणमतराण देवाण कामभोगेहितो असुरिदव-ज्जियाण भवणवासीण देवाण एत्तो अणतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। असुरिं-दवज्जियाणं भवणवासियाण देवाणं कामभोगेहितो असुरकुमाराण देवाण एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। असुरकुमाराण देवाण कामभोगेहितो गहगण-नक्खत्त-तारारूवाण जोतिसियाण देवाण एत्तो अणतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। गहगण-नक्खत्त'-•तारारूवाण जोतिसियाण° कामभोगेहितो चदिम-सूरियाण जोतिसियाण जोतिसराईणं एत्तो अणतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। चदिम सूरिया ण गोयमा! जोतिसिंदा जोतिसरायाणो एरिसे कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरति॥

---

१. थालिपागसिद्ध (ब)।

२. स॰ पा॰—[illegible] सहल्लरे कुमारे जाव [illegible]°।

३. स॰ पा॰—सिंगारागारचारुवेसाए जाव कलियाए।

४. स॰ पा॰—फरिसे जाव पंचविहे।

५. पा॰ स॰—नक्खत्त जाव काम°।

जे णं तांसि अयाणं उच्चारेण वा जाव नहेहि वा अणोक्कतपुव्वे, नो चेव णं एयंसि एमहालगंसि लोगंसि लोगस्स य सासयं भावं, संसारस्स य अणादिभावं, जीवस्स य णिच्चभावं, कम्मबहुत्तं, जम्मण-मरणबाहुल्लं च पडुच्च अत्थि[1] केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि। से तेणट्ठेणं [2]॰गोयमा! एवं वुच्चइ—एयंसि णं एमहालगंसि लोगंसि नत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा॰, न मए वा वि॥

असइं अदुवा अणंतखुत्तो उववज्जण-पदं

१३३. कति णं भंते! पुढवीओ पण्णत्ताओ?
गोयमा! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, जहा पढमसए पंचमउद्देसए तहेव आवासा ठावेयव्वा जाव[3] अणुत्तरविमाणेत्ति जाव[4] अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे॥

१३४. अयण्णं[5] भंते! जीवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, नरगत्ताए, नेरइयत्ताए उववन्नपुव्वे?
हंता गोयमा! असइं, अदुवा अणंतखुत्तो॥

१३५. सव्वजीवा वि णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससय-सहस्सेसु[6]॰एगमेगंसि निरयावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, नरगत्ताए, नेरइयत्ताए उववन्नपुव्वे?
हंता गोयमा! असइं, अदुवा॰ अणंतखुत्तो॥

१३६. अयण्णं भंते! जीवे सक्करप्पभाए पुढवीए पणुवीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि॰? एवं जहा रयणप्पभाए तहेव दो आलावगा भाणियव्वा। एवं जाव धूमप्पभाए॥

१३७. अयण्णं भंते! जीवे तमाए पुढवीए पंचूणे निरयावाससयसहस्से एगमेगंसि निरयावासंसि॰? सेसं तं चेव[7]॥

१३८. अयण्णं भंते! जीवे अहेसत्तमाए पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु महानिरएसु एगमेगंसि निरयावासंसि॰? सेसं जहा रयणप्पभाए॥

---

१. [illegible]
२. [illegible]
३. भ० १।२११-२५५।
४. भ० ५।२२२।
५. अयं णं (अ, स, ता, म), अयं ण (ग, व)।
६. सं० पा०—तं चेव जाव अणंतखुत्तो।
७. भ० १२।१३४।

१४५. अयण्ण भते ! जीवे सव्वजीवाणं माइत्ताए, पितित्ताए[1], भाइत्ताए, भगिणित्ताए भज्जत्ताए, पुत्तत्ताए, धूयत्ताए, सुण्हत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइ, अदुवा अणतखुत्तो ॥

१४६. सव्वजीवा वि ण भते ! इमस्स जीवस्स माइत्ताए,[2] •पितित्ताए, भाइत्ताए, भगिणित्ताए, भज्जत्ताए, पुत्तत्ताए, धूयत्ताए, सुण्हत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हता गोयमा ! असइ, अदुवा° अणतखुत्तो ॥

१४७ अयण्ण भते ! जीवे सव्वजीवाण अरित्ताए, वेरियत्ताए, घातगत्ताए, वहगत्ताए, पडिणीयत्ताए, पच्चामित्तत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हता गोयमा[3] ! •असइ, अदुवा° अणतखुत्तो ॥

१४८. सव्वजीवा वि ण भते ! [4]•इमस्स जीवस्स अरित्ताए, वेरियत्ताए, घातगत्ताए, वहगत्ताए, पडिणीयत्ताए, पच्चामित्तत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हता गोयमा ! असइं, अदुवा° अणतखुत्तो ॥

१४९. अयण्ण भते ! जीवे सव्वजीवाण रायत्ताए, जुवरायत्ताए,[5] •तलवरत्ताए, माडवियत्ताए, कोडुबियत्ताए, इब्भत्ताए, सेट्ठित्ताए, सेणावइत्ताए,° सत्थवाहत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हता गोयमा[6] ! •असइं, अदुवा° अणतखुत्तो ॥

१५०. [7]•सव्वजीवा वि णं भते ! इमस्स जीवस्स रायत्ताए, जुवरायत्ताए, तलवरत्ताए माडबियत्ताए, कोडुंबियत्ताए, इब्भत्ताए, सेट्ठित्ताए, सेणावइत्ताए, सत्थवाहत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हता गोयमा ! असइ, अदुवा अणतखुत्तो° ॥

१५१ अयण्ण भते ! जीवे सव्वजीवाण दासत्ताए, पेसत्ताए, भयगत्ताए[8], भाइल्लत्ताए[9] भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए, वेसत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हता गोयमा[10] ! •असइ, अदुवा° अणतखुत्तो ॥

१५२ [11]•सव्वजीवा वि ण भते ! इमस्स जीवस्स दासत्ताए, पेसत्ताए, भयगत्ताए,

---

१. × (क, स), पत्तिताए (ब, स) ।
२. सं० पा०—माइत्ताए जाव उववन्नपुव्वा हंता गोयमा जाव अणंतखुत्तो ।
३. सं० पा०—गोयमा जाव अणंतखुत्तो ।
४. सं० पा०—एवं चेव ।
५. सं० पा०—जुवरायत्ताए जाव सत्थवाह-त्ताए ।
६. सं० पा०—गोयमा जाव अणंतखुत्तो ।
७. सं० पा०—सव्वजीवाण एवं चेव ।
८. भियगत्ताए (स) ।
९. भाइल्लत्ताए (ता); भाइल्लगत्ताए (वृ०) ।
१०. सं० पा०—गोयमा जाव अणंतखुत्तो ।
११. सं० पा०—एवं सव्वजीवा वि अणंतखुत्तो ।

माइल्लत्ताए, भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए, वेसत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ॥

१५३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[1] विहरइ ॥

अट्ठमो उद्देसो

देवाणं बिसरीरेसु उववाय-पदं

१५४. तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव[2] एवं वयासी—देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव[3] महेसक्खे अणंतरं चयं चइत्ता बिसरीरेसु नागेसु उववज्जेज्जा ?
हंता उववज्जेज्जा ॥

१५५. से णं तत्थ अच्चिय-वंदिय-पूइय-सक्कारिय-सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरे यावि भवेज्जा ?
हंता भवेज्जा ॥

१५६. से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता सिज्झेज्जा जाव[4] सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ?
हंता सिज्झेज्जा जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ॥

१५७. देवे णं भंते ! महिड्ढीए[5] •जाव महेसक्खे अणंतरं चयं चइत्ता° बिसरीरेसु मणीसु उववज्जेज्जा ?
हंता उववज्जेज्जा । एवं चेव जहा नागाणं ॥

१५८. देवे णं भंते ! महिड्ढीए[6] •जाव महेसक्खे अणंतरं चयं चइत्ता° बिसरीरेसु रुक्खेसु उववज्जेज्जा ?
हंता उववज्जेज्जा । एवं चेव, नवरं—इमं नाणत्तं जाव सन्निहियपाडिहेरे लाउल्लोइयमहिए यावि भवेज्जा ?
हंता भवेज्जा । सेसं तं चेव जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ॥

पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं उववाय-पदं

१५९. अह भंते ! गोलंगूलवसभे[7], कुक्कुडवसभे, मंडुक्कवसभे—एए णं निस्सीला

---

१. भ० १।५१ ।
२. भ० १।४-१० ।
३. भ० १।३३८ ।
४. भ० १।४४ ।
५. सं० पा०—[illegible] ।
६. सं० पा०—महिड्ढीए जाव बिसरीरेसु ।
७. [illegible] (क, ख), [illegible] (ता, व) ।

१७०. नरदेवा णं भते ! कग्रोहिंतो उववज्जंति—कि नेरइएहितो—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइएहितो उववज्जति, नो तिरिक्खजोणिएहितो, नो मणुस्सेहितो, देवेहितो वि उववज्जति ॥

१७१. जइ नेरइएहितो उववज्जति—किं रयणप्पभापुढविनेरइएहितो उववज्जति जाव ग्रहेसत्तमापुढविनेरइएहितो उववज्जति ?
गोयमा ! रयणप्पभापुढविनेरइएहितो उववज्जति, नो सक्करप्पभापुढविनेरइएहितो जाव नो ग्रहेसत्तमापुढविनेरइएहितो उववज्जति ॥

१७२ जइ देवेहितो उववज्जति कि भवणवासिदेवेहितो उववज्जंति ? वाणमतर-जोइसिय-वेमाणियदेवेहितो उववज्जति ?
गोयमा ! भवणवासिदेवेहितो वि उववज्जति, वाणमतरदेवेहितो, एव सव्वदेवेसु उववाएयव्वा, वक्कतीए भेदेण जाव[1] सव्वट्ठसिद्धत्ति ॥

१७३. धम्मदेवा ण भते ! कग्रोहितो उववज्जति—कि नेरइएहितो उववज्जति—पुच्छा ।
एव वक्कतीभेदेण सव्वेसु उववाएयव्वा जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति, नवर—तम-ग्रहेसत्तम-तेउ-वाउ-ग्रसखेज्जवासाउयग्रकम्मभूमग-ग्रतरदीवगवज्जेसु ॥

१७४. देवातिदेवा णं भते ! कग्रोहितो उववज्जति - कि नेरइएहितो उववज्जंति—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइएहितो उववज्जति, नो तिरिक्खजोणिएहितो, नो मणुस्सेहितो, देवेहितो वि उववज्जति ॥

१७५. जइ नेरइएहितो ? एव तिसु पुढवीसु उववज्जति, सेसाग्रो खोडेयव्वाग्रो ॥

१७६. जइ देवेहितो ? वेमाणिएसु सव्वेसु उववज्जति जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति, सेसा खोडेयव्वा ॥

१७७ भावदेवा ण भते ! कग्रोहिंतो उववज्जति ? एव जहा वक्कतीए भवणवासीणं उववाग्रो तहा भाणियव्वो ॥

पंचविह-देवाण ठिइ-पद

१७८ भवियदव्वदेवाण भते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण ग्रतोमुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णि पलिग्रोवमाइ ॥

१७९. नरदेवाण पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण सत्त वाससयाइ, उक्कोसेण चउरासीइ पुव्वसयसहस्साइ ॥

१८० धम्मदेवाण पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण ग्रतोमुहुत्त, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥

---

१. प० ६ ।

१८८. जइ देवेसु उववज्जंति किं भवणवासि—पुच्छा ।
गोयमा ! नो भवणवासिदेवेसु उववज्जति, नो वाणमंतरदेवेसु उववज्जंति, नो जोइसियदेवेसु उववज्जति, वेमाणियदेवेसु उववज्जति । सव्वेसु वेमाणिएसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[1]°वेमाणियदेवेसु° उववज्जति, अत्थेगतिया सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

१८९ देवातिदेवा अणतर उव्वट्टित्ता कहि गच्छति ? कहि उववज्जंति ?
गोयमा ! सिज्झति जाव[2] सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

१९० भावदेवा ण भते ! अणतरं उव्वट्टित्ता – पुच्छा ।
जहा[3] वक्कंतीए असुरकुमाराण उव्वट्टणा तहा भाणियव्वा ।।

पंचविह-देवाणं संचिट्ठणा-पद

१९१. भवियदव्वदेवे णं भते ! भवियदव्वदेवे त्ति कालओ केवच्चिर[4] होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ । एव जच्चेव[5] ठिई सच्चेव सचिट्ठणा वि जाव भावदेवस्स, नवर—धम्मदेवस्स जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ।।

पंचविह-देवाणं अंतर-पद

१९२. भवियदव्वदेवस्स ण भते ! केवतिय काल अतर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण अणत काल—वणस्सइकालो ।।

१९३ नरदेवाण—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण सातिरेग सागरोवम, उक्कोसेण अणत काल—अवड्ढ पोग्गलपरियट्ट देसूण ।।

१९४ धम्मदेवस्स ण—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण पलिओवमपुहत्त, उक्कोसेण अणत काल जाव अवड्ढं पोग्गलपरियट्ट देसूणं ।।

१९५. देवातिदेवाण—पुच्छा ।
गोयमा ! नत्थि अतरं ।।

१९६ भावदेवस्स ण—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणत काल—वणस्सइकालो ।।

---

१. स० [illegible] —°अणुत्तरोववाइय जाव उव०
२. भ० १।४४ ।
३. प० ६ ।
४. केवचिरं (ख, क, ग, म) ।
५. जच्चेव (ब, म) ।

पञ्चविह-देवाणं अप्पाबहुयत्त-पदं

१६७ एएसि णं भंते! भवियदव्वदेवाणं, नरदेवाणं[1], °धम्मदेवाणं, देवाहिदेवाणं°, भावदेवाण य कयरे कयरेहिंतो[2] °अप्पा वा? बहुया वा? तुल्ला वा?° विसेसाहिया वा?
गोयमा! सव्वत्थोवा नरदेवा, देवाहिदेवा संखेज्जगुणा, धम्मदेवा संखेज्जगुणा, भवियदव्वदेवा असंखेज्जगुणा, भावदेवा असंखेज्जगुणा॥

१६८ एएसि णं भंते! भावदेवाणं भवणवासीणं, वाणमंतराणं, जोइसियाणं, वेमाणियाणं[3]—सोहम्मगाणं जाव अच्चुयगाणं, गेवेज्जगाणं, अणुत्तरोववाइयाण य कयरे कयरेहिंतो[4] °अप्पा वा? बहुया वा? तुल्ला वा?° विसेसाहिया वा?
गोयमा! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववाइया भावदेवा, उवरिमगेवेज्जा भावदेवा संखेज्जगुणा, मज्झिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा, हेट्ठिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा, अच्चुए कप्पे देवा संखेज्जगुणा जाव आणयकप्पे देवा संखेज्जगुणा, °सहस्सारे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, महासुक्के कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, लंतए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, बंभलोए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, माहिंदे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, सणंकुमारे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, ईसाणे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, सोहम्मे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, भवणवासिदेवा असंखेज्जगुणा, वाणमंतरा देवा असंखेज्जगुणा°, जोइसिया भावदेवा असंखेज्जगुणा॥

१६९ सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति[5]॥

दसमो उद्देसो

अट्ठविह-आय-पदं

२०० कतिविहा णं भंते! आया पण्णत्ता?
गोयमा! अट्ठविहा आया पण्णत्ता, तं जहा—दवियाया, कसायाया, जोगाया, उवओगाया, णाणाया, दंसणाया, चरित्ताया, वीरियाया॥

२०१. जस्स णं भंते! दवियाया तस्स कसायाया? जस्स कसायाया तस्स दवियाया?

१. सं० पा०—[illegible]
२. सं० पा०—[illegible]
३. [illegible]
४. सं० पा०—[illegible]
५. [illegible]
६. [illegible]
७. [illegible]

गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण कसायाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि ॥

२०२. जस्स णं भंते ! दवियाया तस्स जोगाया ? [1]॰जस्स जोगाया तस्स दवियाया ? गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स जोगाया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण जोगाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि॰ ॥

२०३. जस्स णं भंते ! दवियाया तस्स उवओगाया ? जस्स उवओगाया तस्स दवियाया ?—एवं सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा ।
गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स उवओगाया नियमं अत्थि । जस्स वि उवओगाया तस्स वि दवियाया नियमं अत्थि । जस्स दवियाया तस्स नाणाया भयणाए । जस्स पुण नाणाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि । जस्स दवियाया तस्स दंसणाया नियमं अत्थि । जस्स वि दंसणाया तस्स वि दवियाया नियमं अत्थि । जस्स दवियाया तस्स चरित्ताया भयणाए, जस्स पुण चरित्ताया तस्स दवियाया नियमं अत्थि । [2]॰जस्स दवियाया तस्स वीरियाया भयणाए, जस्स पुण वीरियाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि॰ ॥

२०४. जस्स णं भंते ! कसायाया तस्स जोगाया—पुच्छा ।
गोयमा ! जस्स कसायाया तस्स जोगाया नियमं अत्थि, जस्स पुण जोगाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि । एवं उवओगायाए वि समं कसायाया नेयव्वा । कसायाया य नाणाया य परोप्परं दो वि भइयव्वाओ । जहा कसायाया य उवओगाया य तहा कसायाया य दंसणाया य, कसायाया य चरित्ताया य दो वि परोप्परं भइयव्वाओ । जहा कसायाया य जोगाया य तहा कसायाया य वीरियाया य भाणियव्वाओ[3] । एवं जहा कसायायाए वत्तव्वया भणिया तहा जोगायाए वि उवरिमाहिं समं भाणियव्वाओ । जहा दवियायाए वत्तव्वया भणिया तहा उवओगायाए वि उवरिल्लाहिं समं भाणियव्वा[4] । जस्स नाणाया तस्स दंसणाया नियमं अत्थि, जस्स पुण दंसणाया तस्स नाणाया भयणाए । जस्स नाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण चरित्ताया तस्स नाणाया नियमं अत्थि । नाणाया वीरियाया दो वि परोप्परं भयणाए । जस्स दंसणाया तस्स उवरिमाओ दो वि भयणाए, जस्स पुण ताओ तस्स दंसणाया नियमं अत्थि । जस्स पुण चरित्ताया तस्स वीरियाया नियमं अत्थि, जस्स पुण वीरियाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि ॥

---

१. सं० पा०—एवं जहा दवियाया कसायाया भणिया तहा दवियाया जोगाया भाणियव्वा ।
२. भणितव्वाओ (ख, ता) ।
३. सं० पा०—एवं वीरियाए वि समं ।
४. नेयव्वा (व) ।

एव वुच्चइ—रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय नोआया, सिय अवत्तव्वं—आयाति य° नोआयाति य ॥

२१३ आया भते ! सक्करप्पभा पुढवी ?
जहा रयणप्पभा पुढवी तहा सक्करप्पभावि । एव जाव अहेसत्तमा ॥

२१४. आया भते । सोहम्मे कप्पे—पुच्छा ।
गोयमा ! सोहम्मे कप्पे सिय आया सिय नोआया[1], °सिय अवत्तव्व—आयाति य° नोआयाति य ॥

२१५. से केणट्ठेण भते ! जाव आयाति य नोआयाति य ?
गोयमा ! अप्पणो आइट्ठे आया, परस्स आइट्ठे नोआया, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य । से तेणट्ठेण त चेव जाव आयाति य नोआयाति य । एव जाव अच्चुए कप्पे ॥

२१६. आया भते ! गेवेज्जविमाणे ? अण्णे गेवेज्जविमाणे ?
एव जहा रयणप्पभा तहेव । एव अणुत्तरविमाणा वि । एव ईसिपब्भारा वि ॥

२१७ आया भते ! परमाणुपोग्गले ? अण्णे परमाणुपोग्गले ?
एव जहा सोहम्मे तहा परमाणुपोग्गले वि भाणियव्वे ॥

२१८. आया भते ! दुपएसिए खधे ? अण्णे दुपएसिए खधे ?
गोयमा ! दुपएसिए खधे १. सिय आया २ सिय नोआया ३ सिय अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ४. सिय आया य नोआया य ५. सिय आया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ६. सिय नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ॥

२१९ से केणट्ठेण भते ! एव त चेव जाव नोआया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ?
गोयमा ! १. अप्पणो आदिट्ठे आया २. परस्स आदिट्ठे नोआया ३. तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्व दुपएसिए खधे—आयाति य नोआयाति य ४. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे दुप्पएसिए खधे आया य नोआया य ५ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खधे आया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ६ देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खधे नोआया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य । से तेणट्ठेण त चेव जाव नोआया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ॥

२२० आया भते ! तिपएसिए खधे ? अण्णे तिपएसिए खधे ?

---

१ [illegible]

२२२. आया भंते ! चउप्पएसिए खंधे ? अण्णे [1]°चउप्पएसिए खंधे ?°

गोयमा ! चउप्पएसिए खंधे १ सिय आया २. सिय नोआया ३. सिय अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ४-७ सिय आया य नोआया य ८-११ सिय आया य अवत्तव्वं १२-१५ सिय नोआया य अवत्तव्वं[2] १६ सिय आया य नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य १७ सिय आया य नोआया य अवत्तव्वाइं—आयाओ य नोआयाओ य १८. सिय आया य नोआयाओ य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य १९ सिय आयाओ य नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ॥

२२३. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—चउप्पएसिए खंधे सिय आया य नोआया य अवत्तव्वं—तं चेव अट्ठे पडिउच्चारेयव्वं ?

गोयमा ! १ अप्पणो आदिट्ठे आया २ परस्स आदिट्ठे नोआया ३ तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ४-७. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे चउभंगो ८-११. सब्भावेण तदुभयेण य चउभंगो १२-१५ असब्भावेण तदुभयेण य चउभंगो १६ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आया य नोआया य अवत्तव्वं - आयाति य नोआयाति य १७. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा चउप्पएसिए खंधे आया य नोआया य अवत्तव्वाइं—आयाओ य नोआयाओ य १८. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आया य नोआयाओ य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य १९ देसा आदिट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आयाओ य नोआया य अवत्तव्वं - आयाति य नोआयाति य। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—चउप्पएसिए खंधे सिय आया सिय नोआया सिय अवत्तव्वं - निक्खेवे ते चेव भंगा उच्चारेयव्वा जाव आयाति य नोआयाति य ॥

२२४. आया भंते ! पंचपएसिए खंधे ? अण्णे पंचपएसिए खंधे ?

गोयमा ! पंचपएसिए खंधे १ सिय आया २. सिय नोआया ३. सिय अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ४-७ सिय आया य नोआया य ८-११. सिय आया य अवत्तव्वं १२-१५ नोआया य अवत्तव्वेण य[3] १६. [4]°सिय आया य नोआया

---

१. [illegible]

२. [illegible]

३. एगवयण-बहुवयणभेदात् चत्वारश्चत्वारो भङ्गा ।

४. स० पा०—नियगगमेणं एक्को न पढइ

य अवत्तव्वं १७ सिय आया य नोआया य अवत्तव्वाइं १८ सिय आया य नोआयाओ य अवत्तव्वं १९. सिय आया य नोआयाओ य अवत्तव्वाइं २० सिय आयाओ य नोआया य अवत्तव्वं २१. सिय आयाओ य नोआया य अवत्तव्वाइं २२ सिय आयाओ य नोआयाओ य अवत्तव्वं °॥

२२५. से केणट्ठेणं भंते ! '•एवं वुच्चइ—पंचपएसिए खंधे सिय आया जाव सिय आयाओ य नोआयाओ य अवत्तव्वं ? °

गोयमा ! १ अप्पणो आदिट्ठे आया २ परस्स आदिट्ठे नोआया ३ तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं ४ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे— एवं दुयगसंजोगे सव्वे पडंति, तियगसंजोगे' एक्को न पडइ।

छप्पएसियस्स सव्वे पडंति। जहा छप्पएसिए एवं जाव अणंतपएसिए॥

२२६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव' विहरइ॥

— • —

गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, त जहा—असुरकुमारा—एव भेओ[1] जहा वितियसए देवुद्देसए जाव[2] अपराजिया, सव्वट्ठसिद्धगा ।।

२६. केवतिया ण भते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चोयट्ठि[3] असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।
ते ण भते ! कि सखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! सखेज्जवित्थडा वि, असखेज्जवित्थडा वि ।।

२७. चोयट्ठीए[4] ण भते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु एगसमएण केवतिया असुरकुमारा उववज्जति जाव केवतिया तेउलेस्सा उववज्जति ? केवतिया कण्हपक्खिया उववज्जति ? एव जहा रयणप्पभाए तहेव पुच्छा, तहेव[5] वागरण, नवर—दोहि वेदेहि उववज्जति, नपुसगवेयगा न उववज्जति, सेस त चेव । उव्वट्टतगा वि तहेव, नवर—असण्णी उव्वट्टति । ओहिनाणी ओहिदसणी य ण उव्वट्टति, सेस त चेव । पण्णत्तएसु[6] तहेव, नवर—सखेज्जगा इत्थिवेदगा पण्णत्ता, एव पुरिसवेदगा वि, नपुसगवेदगा नत्थि । कोहकसाई सिय अत्थि सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा पण्णत्ता । एव माणकसाई मायकसाई । सखेज्जा लोभकसाई पण्णत्ता, सेस त चेव । तिसु वि गमएसु[7] चत्तारि लेस्साओ भाणियव्वाओ । एव असखेज्जवित्थडेसु वि, नवर—तिसु वि गमएसु असखेज्जा भाणियव्वा जाव[8] असखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता ।।

२८ केवतिया ण भते ! नागकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? एव जाव थणियकुमारा, नवर—जत्थ जत्तिया भवणा[9] ।।

२९ केवतिया ण भते ! वाणमतरावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा वाणमतरावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।
ते ण भते ! कि सखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! सखेज्जवित्थडा, नो असखेज्जवित्थडा ।।

३०. सखेज्जेसु ण भते ! वाणमतरावाससयसहस्सेसु एगसमएण केवतिया वाणमतरा उववज्जति ?
एव जहा असुरकुमाराण सखेज्जवित्थडेसु तिण्णि गमगा[10] तहेव भाणियव्वा वाणमतराण वि तिण्णि गमगा ।।

---

१ [illegible] (ता, ब) ।
२ [illegible] ।
३ [illegible] ।
४ [illegible] ।
५ [illegible] ।
६. पण्णत्तएसु (अ, क, ब, म, स) ।
७ गमएसु सखेज्जेसु (अ, स) ।
८ भ० १३।५ ।
९ भ० १।२१३ ।
१० गमा (क, ग, ता, ब, म) ।

३५ कति ण भते ! अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ।
'ते ण भते ! किं सखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?
गोयमा'[1] ! सखेज्जवित्थडे य असखेज्जवित्थडा य ।।

३६. पंचसु ण भते ! अणुत्तरविमाणेसु सखेज्जवित्थडे विमाणे एगसमएण केवतिया अणुत्तरोववाइया उववज्जति ? केवतिया सुक्कलेस्सा उववज्जति—पुच्छा तहेव ।
गोयमा ! पचसु ण अणुत्तरविमाणेसु सखेज्जवित्थडे अणुत्तरविमाणे एगसमएण जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा अणुत्तरोववाइया उववज्जति, एव जहा गेवेज्जविमाणेसु सखेज्जवित्थडेसु, नवर—किण्हपक्खिया, अभवसिद्धिया, तिसु अण्णाणेसु एए न उववज्जति, न चयति, न वि पण्णत्तएसु भाणियव्वा, अचरिमा वि खोडिज्जति जाव सखेज्जा चरिमा पण्णत्ता, सेस त चेव । असखेज्जवित्थडेसु वि एए न भण्णति, नवर—अचरिमा अत्थि, सेस जहा गेवेज्जएसु असखेज्जवित्थडेसु जाव असखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता ।।

३७. चोयट्ठीए ण भते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु किं सम्मद्दिट्ठी असुरकुमारा उववज्जति ? मिच्छदिट्ठी असुरकुमारा उववज्जति ?
एव जहा रयणप्पभाए तिण्णि आलावगा भणिया[2] तहा भाणियव्वा । एव असखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा, एव जाव गेवेज्जविमाणे, अणुत्तरविमाणेसु एव चेव, नवर—तिसु वि आलावएसु मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी य न भण्णति, सेस त चेव ।।

३८ से नूणं भते ! कण्हलेस्से नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु देवेसु उववज्जति ?
हता गोयमा ! एव जहेव नेरइएसु पढमे उद्देसए[3] तहेव भाणियव्व । नीललेस्साए वि जहेव नेरइयाण, जहा नीललेस्साए एव जाव पम्हलेस्सेसु, सुक्कलेस्सेसु एव चेव, नवर—लेस्सट्ठाणेसु विसुज्झमाणेसु-विसुज्झमाणेसु सुक्कलेस्स परिणमति, परिणमित्ता सुक्कलेस्सेसु देवेसु उववज्जति । से तेणट्ठेण जाव उववज्जति ।।

३९. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ।।

---

१ [illegible] (अ, [illegible], म, ब, स) ।
२ [illegible] ।
३. भ० १३।१८-२२ ।
४. भ० १।५१ ।

महासवतरा[1] चेव, महावेदणतरा चेव, नो तहा अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पासवतरा चेव, अप्पवेदणतरा चेव, अप्पिड्ढियतरा[2] चेव, अप्पजुतियतरा[3] चेव, नो तहा महिड्ढियतरा चेव, महज्जुतियतरा चेव ।

छट्ठीए णं तमाए पुढवीए एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पण्णत्ते । ते णं नरगा अहेसत्तमाए पुढवीए नरएहिंतो नो तहा महत्तरा चेव, महाविच्छिण्णतरा चेव, महोगासतरा चेव, महापइरिक्कतरा चेव, महप्पवेसणतरा चेव, आइण्णतरा चेव, आउलतरा चेव, अणोमाणतरा चेव । तेसु णं नरएसु नेरइया अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएहिंतो अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पासवतरा चेव, अप्पवेदणतरा चेव, नो तहा महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव, महासवतरा चेव, महावेदणतरा चेव, महिड्ढियतरा चेव, महज्जुइयतरा चेव, नो 'तहा अप्पिड्ढियतरा'[4] चेव, अप्पजुइयतरा चेव ।

छट्ठीए णं तमाए पुढवीए नरगा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नरएहिंतो महत्तरा चेव, महाविच्छिण्णतरा चेव, महोगासतरा चेव, महापइरिक्कतरा चेव; नो तहा महप्पवेसणतरा चेव, आइण्णतरा चेव, आउलतरा चेव, अणोमाणतरा चेव । तेसु णं नरएसु नेरइया पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नेरइएहिंतो महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव, महासवतरा चेव, महावेदणतरा चेव, नो तहा अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पासवतरा चेव, अप्पवेदणतरा चेव, अप्पिड्ढियतरा चेव, अप्पजुतियतरा चेव, नो तहा महड्ढियतरा चेव, महज्जुतियतरा चेव ।

पंचमाए णं धूमप्पभाए पुढवीए तिण्णि निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता । एवं जहा छट्ठीए भणिया एवं सत्त वि पुढवीओ परोप्परं भण्णंति जाव रयणप्पभंति जाव नो तहा महड्ढियतरा चेव, अप्पजुतियतरा चेव ॥

नेरइयाणं फासाणुभव-पदं

४८. रयणप्पभापुढविनेरइया णं भंते ! केरिसयं पुढविफासं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ?

गोयमा ! अणिट्ठं जाव[5] अमणामं । एवं जाव अहेसत्तमपुढविनेरइया । एवं आउफासं, एवं जाव वणस्सइफासं ॥

---

१ [illegible]

२ [illegible]

३ [illegible]

४ नहप्पिड्ढियतरा (अ, क, स, म); तहिप्पि-ड्ढियतरा (ता) ।

५ भ० १।३५७ ।

गोयमा! पोग्गलत्थिकाएण जीवाण ओरालिय-वेउव्विय-'आहारा-तेया कम्मा'[1]-सोइंदिय-चक्खिदिय-घाणिंदिय - जिब्भिदिय - फासिंदिय-मणजोग-वइजोग-काय-जोग-आणापाणूण च गहण पवत्तति। गहणलक्खणे ण पोग्गलत्थिकाए ॥

धम्मत्थिकायादीणं परोप्परं फास-पदं

६१. एगे भंते! धम्मत्थिकायपदेसे केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे?
गोयमा! जहण्णपदे तिहि, उक्कोसपदे छहि। केवतिएहि अधम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे? जहण्णपदे[2] चउहि, उक्कोसपदे सत्तहि। केवतिएहि आगासत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे? सत्तहि। केवतिएहि जीवत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे? अणतेहि। केवतिएहि पोग्गलत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे? अणतेहि। केवतिएहि अद्धासमएहि पुट्ठे? सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियम अणतेहि ॥

६२. एगे भंते! अधम्मत्थिकायपदेसे केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे?
गोयमा! जहण्णपदे चउहि, उक्कोसपदे सत्तहि। केवतिएहि अधम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे? जहण्णपदे तिहि, उक्कोसपदे छहि। सेस जहा धम्मत्थिकायस्स ॥

६३. एगे भंते! आगासत्थिकायपदेसे केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे?
गोयमा! सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे जहण्णपदे एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसपदे सत्तहि। एव अधम्मत्थिकायपदेसेहि वि। केवतिएहि आगासत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे? छहि। केवतिएहि जीवत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे? सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियम अणतेहि। एव पोग्गलत्थिकायपदेसेहि वि, अद्धासमएहि वि ॥

६४. एगे भंते! जीवत्थिकायपदेसे केवतिएहि धम्मत्थिकाय[3]•पदेसेहि पुट्ठे?° जहण्णपदे चउहि, उक्कोसपदे सत्तहि। एव अधम्मत्थिकायपदेसेहि वि। केवतिएहि आगासत्थिकाय[4]•पदेसेहि पुट्ठे?° सत्तहि। केवतिएहि जीवत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे? अणतेहि। सेस जहा[5] धम्मत्थिकायस्स ॥

६५. एगे भंते! पोग्गलत्थिकायपदेसे केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे? एव जहेव[6] जीवत्थिकायस्स ॥

६६. दो भंते! पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा?
गोयमा! जहण्णपदे छहि, उक्कोसपदे बारसहि। एव अधम्मत्थिकायपदेसेहि वि। केवतिएहि आगासत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा? बारसहि। सेस जहा[7] धम्मत्थिकायस्स ॥

---

१. [illegible] (ग)।
२. [illegible] (ग) सर्वत्र।
३. [illegible]।
४. [illegible]।
५. भ० १३।६१।
६. भ० १३।६४।
७. भ० १३।६१।

पुढविक्काइयाण वत्तव्वया तहेव सव्वेसि निरवसेस भाणियव्व जाव वणस्सइकाइयाण जाव केवतिया वणस्सइकाइया ओगाढा ? अणता ॥

८६. एयसि ण भते ! धम्मत्थिकाय-अधम्मत्थिकाय--आगासत्थिकायसि चक्किया केई आसइत्तए वा सइत्तए वा चिट्ठित्तए वा निसीयत्तए वा तुयट्टित्तए वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे, अणता पुणत्थ[2] जीवा ओगाढा ॥

८७ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—एयसि ण धम्मत्थि[3]•काय-अधम्मत्थिकाय°-आगासत्थिकायसि नो चक्किया केई आसइत्तए वा[4] •सइत्तए वा चिट्ठित्तए वा निसीयत्तए वा तुयट्टित्तए वा अणता पुणत्थ जीवा° ओगाढा ?
गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया—दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा [5]•णिवाया णिवायगभीरा । अह ण केई पुरिसे पदीवसहस्स गहाय कूडागारसालाए अतो-अतो अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता तीसे कूडागारसालाए सव्वतो समता घण-निचिय-निरतर-णिच्छिड्डाइ° दुवारवयणाइ पिहेइ, पिहेत्ता तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण पदीवसहस्स[6] पलीवेज्जा । से नूण गोयमा ! ताओ पदीवलेस्साओ अण्णमण्णसबद्धाओ अण्णमण्णपुट्ठाओ अण्णमण्णसबद्धपुट्ठाओ[7] अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति ?
'हता चिट्ठति'[8] ।
चक्किया ण गोयमा ! केई तासु पदीवलेस्सासु आसइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए वा ?
भगव ! नो इणट्ठे समट्ठे । अणता पुणत्थ[9] जीवा ओगाढा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जाव अणता पुणत्थ जीवा ओगाढा ॥

लोय-पद

८८ कहि ण भते ! लोए बहुसमे, कहि ण भते ! लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु[10], एत्थ ण लोए बहुसमे, एत्थ ण लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते ॥

१. [illegible] (अ, क, ता, ब, म, स) ।
२. [illegible] (अ, क, म, स), पुणेत्थ (ता) ।
३. [illegible]
४. [illegible]
५. [illegible] दुवारवयणाइ ।
६. दीव० (अ) ।
७. जाव (अ, क, ता, ब, म, स) ।
८. × (ब, म) ।
९. पुण तत्थ (अ, क, ब, म, स) ।
१०. खुड्डाग० (अ) ।

जाव[1] चउव्विहेण अलकारेण अलकारिए समाणे पडिपुण्णालकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सीय अणुप्पदाहिणीकरेमाणे सीय दुरुहइ, दुरुहित्ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे, तहेव[2] अम्मधाती, नवर पउमावती हसलक्खण पडसाडग गहाय सीय अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीय दुरुहइ, दुरुहित्ता उद्दायणस्स रण्णो दाहिणे पासे भद्दासणवरसि सण्णिसण्णा सेस त चेव जाव[3] छत्तादीए तित्थगरातिसए पासइ, पासित्ता पुरिससहस्सवाहिणि सीय ठवेइ, पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ ॥

११८. [4]•तए ण सा पउमावती देवी हसलक्खणेण पडसाडएणं आभरणमल्लालकार पडिच्छइ, पडिच्छित्ता हार-वारिधार-सिदुवार-छिन्न-मुत्तावलि-प्पगासाइ अंसूणि विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी उद्दायण राय एव वयासी—जइयव्व सामी ! घडियव्व सामी ! परक्कमियव्व सामी ! अस्सि च ण अट्ठे° नो पमादेयव्व त्ति कट्टु केसी राया पउमावती य समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता[5] •जामेव दिस पाउब्भुया तामेव दिसं° पडिगया ॥

११९. तए ण से उद्दायणे राया सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेइ सेस जहा उसभदत्तस्स जाव[6] सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

१२०. तए णं तस्स अभीयिस्स कुमारस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि कुडुवजागरिय जागरमाणस्स अयमेयारुवे अज्झत्थिए[7] •चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह उद्दायणस्स पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए, तए ण से उद्दायणे राया मम अवहाय नियग भाइणेज्ज केसिं कुमार रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ[8] •महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइए—इमेणं एयारुवेणं महया अप्पत्तिएण मणोमाणसिएण दुक्खेण अभिभूए समाणे अतेउरपरियालसपरिवुडे सभडमत्तोवगरणमायाए वीतीभयाओ नयराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे जेणेव चपा नयरी, जेणेव कूणिए राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कूणिय राय

---

१. भ० ९।१६०-१६२।
२. भ० ९।१६३, १६४।
३. भ० ९।१६५-२०२।
४. भ० पा०—[illegible]
५. भ० पा०—नमसित्ता जाव पडिगया।
६. भ० ९।१५०,१५१।
७. भ० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
८. भ० पा०—भगवओ जाव पव्वइए।

गोयमा ! रूवि भासा, नो अरूवि भासा ।
सचित्ता[1] भंते ! भासा ? अचित्ता[2] भासा ?
गोयमा ! नो सचित्ता भासा, अचित्ता भासा ।
जीवा भंते ! भासा ? अजीवा भासा ?
गोयमा ! नो जीवा भासा, अजीवा भासा ।
जीवाणं भंते ! भासा ? अजीवाणं भासा ?
गोयमा ! जीवाणं भासा, नो अजीवाणं भासा ।
पुव्वि भंते ! भासा ? भासिज्जमाणी भासा ? भासासमयवीतिक्कंता भासा ?
गोयमा ! नो पुव्वि भासा, भासिज्जमाणी भासा, नो भासासमयवीतिक्कंता भासा ।
पुव्वि भंते ! भासा भिज्जति ? भासिज्जमाणी भासा भिज्जति ? भासासमयवीतिक्कंता भासा भिज्जति ?
गोयमा ! नो पुव्वि भासा भिज्जति, भासिज्जमाणी भासा भिज्जति, नो भासासमयवीतिक्कंता भासा भिज्जति ॥

१२५. कतिविहा णं भंते ! भासा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा भासा पण्णत्ता, तं जहा—सच्चा, मोसा, सच्चामोसा असच्चामोसा ॥

मण-पदं

१२६. आया भंते ! मणे ? अण्णे मणे ?
गोयमा ! नो आया मणे, अण्णे मणे ।
[3]•रूवि भंते ! मणे ? अरूवि मणे ?
गोयमा ! रूवि मणे, नो अरूवि मणे ।
सचित्ते भंते ! मणे ? अचित्ते मणे ?
गोयमा ! नो सचित्ते मणे, अचित्ते मणे ।
जीवे भंते ! मणे ? अजीवे मणे ?
गोयमा ! नो जीवे मणे, अजीवे मणे ॥
जीवाणं भंते ! मणे ? अजीवाणं मणे ?
गोयमा ! जीवाणं मणे°, नो अजीवाणं मणे ।
पुव्विं भंते ! मणे ? मणिज्जमाणे मणे ? [4]•मणसमयवीतिक्कंते मणे ?

---

१. [illegible] (क, ता, ब) ।
२. [illegible] (क, ता, ब) ।
३. म० पा०—जहा भासा तहा मणे वि जाव नो ।
४. म० पा०—एवं जहेव भासा ।

मरण-पद

१३० कतिविहे ण भते ! मरणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे मरणे पण्णत्ते, तं जहा—आवीचियमरणे[1], ओहिमरणे[2], आतियतियमरणे[3], बालमरणे, पडियमरणे ।।

१३१. आवीचियमरणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा - दव्वावीचियमरणे, खेत्तावीचियमरणे, कालावीचियमरणे, भवावीचियमरणे, भावावीचियमरणे ।।

१३२. दव्वावीचियमरणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—नेरइयदव्वावीचियमरणे, तिरिक्ख-जोणियदव्वावीचियमरणे, मणुस्सदव्वावीचियमरणे, देवदव्वावीचियमरणे ।।

१३३ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइयदव्वावीचियमरणे-नेरइयदव्वावीचियमरणे ?
गोयमा ! जण्ण नेरइया नेरइए दव्वे वट्टमाणा जाइ दव्वाइ नेरइयाउयत्ताए गहियाइ बद्धाइ पुट्ठाइ कडाइ पट्ठवियाइ 'निविट्ठाइ अभिनिविट्ठाइ'[4] अभिसमण्णागयाइ भवति ताइ दव्वाइ आवीचिमणुसमय[5] निरतर मरति त्ति कट्टु । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइयदव्वावीचियमरणे, एव जाव देवदव्वावीचियमरणे ।।

१३४ खेत्तावीचियमरणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयखेत्तावीचियमरणे जाव देवखेत्तावीचियमरणे ।।

१३५ से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—नेरइयखेत्तावीचियमरणे-नेरइयखेत्तावीचियमरणे ?
गोयमा ! जण्ण नेरइया नेरइयखेत्ते वट्टमाणा जाइ दव्वाइ नेरइयाउयत्ताए गहियाइ एव जहेव दव्वावीचियमरणे तहेव खेत्तावीचियमरणे वि । एव जाव भावावीचियमरणे ।।

१३६ ओहिमरणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वोहिमरणे, खेत्तोहिमरणे,[6] °कालोहिमरणे, भवोहिमरणे°, भावोहिमरणे ।।

---

१. [illegible] (ब) ।
२. [illegible] (ब, म) ।
३. [illegible] (क, म), आदियन्तिय; (ब, म, स) ।
४. × (व) ।
५. आवीचियम° (क, म) ।
६. स० पा०—खेत्तोहिमरणे जाव भवो° ।

गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य। नियम अप-डिकम्मे ॥

१४५. भत्तपच्चक्खाणे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
'•गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य।° नियम सपडिकम्मे ॥

१४६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति' ॥

अट्ठमो उद्देसो

कम्मपगडि-पदं

१४७ कति ण भते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ। एव बधट्ठिइ-उद्देसो' भाणियव्वो निरवसेसो जहा' पण्णवणाए' ॥

१४८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति' ॥

नवमो उद्देसो

भावियप्प-विउव्वणा-पदं

१४९ रायगिहे जाव' एव वयासी—से जहानामए केइ पुरिसे केयाघडिय गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा केयाघडियाकिच्चहत्थगएण अप्पाणेण उड्ढ वेहास उप्पएज्जा ?
हता उप्पएज्जा ॥

---

१. भ० पा०—[illegible] त चेव जाव नियम सप-डिकम्मे।
२. भ० [illegible]।
३. [illegible] (क, ख, ब, म)।
४. [illegible]।
५. [illegible], गा चेय—
पयडीण भेयठिई, बधोवि य इदियाणुवाएण।
केरिसय जहन्नठिइ, बधइ उक्कोसियं वावि ॥
(वृ)।
६. भ० १।५१।
७. भ० १।८-१०।

१५६. से जहानामए जीवंजीवगसउणे सिया, दो वि पाए समतुरंगेमाणे-समतुरंगेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, सेसं तं चेव ।।

१५७. से जहानामए हंसे सिया, तीराओ तीरं अभिरममाणे-अभिरममाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा हंसकिच्चगएणं अप्पाणेणं, तं चेव ।।

१५८. से जहानामए समुद्दवायसए सिया, वीईओ वीइं डेवेमाणे-डेवेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, तहेव ।।

१५९. से जहानामए केइ पुरिसे चक्कं गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा चक्कहत्थकिच्चगएणं अप्पाणेणं, सेसं जहा[1] केयाघडियाए । एवं छत्तं, एवं चम्मं[2] ।।

१६०. से जहानामए केइ पुरिसे रयणं गहाय गच्छेज्जा, एवं चेव । एवं वइरं, वेरुलियं जाव[3] रिट्ठं । एवं उप्पलहत्थगं, एवं पउमहत्थगं, कुमुदहत्थगं, [4]°नलिणहत्थगं, सुभगहत्थगं, सुगंधियहत्थगं, पोंडरीयहत्थगं, महापोंडरीयहत्थगं, सयपत्तहत्थगं°, से जहानामए केइ पुरिसे सहस्सपत्तगं गहाय गच्छेज्जा, एवं चेव ।।

१६१. से जहानामए केइ पुरिसे भिसं अवद्दालिय-अवद्दालिय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भिसकिच्चगएणं अप्पाणेणं, तं चेव ।।

१६२. से जहानामए मुणालिया सिया, उदगंसि कायं उम्मज्जिया-उम्मज्जिया चिट्ठेज्जा, एवामेव, सेसं जहा[5] वग्गुलीए ।।

१६३. से जहानामए वणसंडे सिया—किण्हे किण्होभासे जाव[6] महामेहनिकुरंबभूए[7], पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा वणसंडकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा? सेसं तं चेव ।।

१६४. से जहानामए पुक्खरणी सिया—चउक्कोणा, समतीरा, अणुपुव्वसुजायवप्पगंभीरसीयलजला जाव[8] सद्दुन्नइयमहुरसरणादिया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा पोक्खरणीकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा?
हंता उप्पएज्जा ।।

१६५. अणगारे णं भंते! भावियप्पा केवतियाइं पभू पोक्खरणीकिच्चगयाइं रूवाइं विउव्वित्तए? सेसं तं चेव जाव विउव्विस्सति वा ।।

---

१. भ० १३।१४८,१५० ।
२. चम्मं (ब) ।
३. भ० [illegible] ।
४. [illegible] जाव से ।
५. भ० १३।१५२ ।
६. ओ० सू० ४ ।
७. °निउरम्बभूए (ख); °निकुरंबभूए (ता, ब) ।
८. ओ० सू० ६, म० वृत्ति ।

१६६. से भंते ! किं मायी विउव्वति ? अमायी विउव्वति ?
गोयमा ! मायी विउव्वति, नो अमायी विउव्वति । मायी णं तस्स ठाणस्स अणालोइय'•पडिक्कंते कालं करेइ, नत्थि तस्स आराहणा । अमायी णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते कालं करेइ°, अत्थि तस्स आराहणा ॥

१६७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव' विहरइ ॥

दसमो उद्देसो

छाउमत्थियसमुग्घाय-पदं

१६८. कति णं भंते ! छाउमत्थियसमुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! छ छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा— वेयणासमुग्घाए, एवं छाउमत्थियसमुग्घाया नेयव्वा, जहा पण्णवणाए जाव' आहारगसमुग्घाओ त्ति ॥

१६९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव' विहरइ ॥

---

७. परंपरोववन्नगा ण भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति जाव देवाउयं पकरेंति ?
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, नो देवाउय पकरेंति ॥

८ अणतर-परपर-अणुववन्नगा ण भते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेंति जाव नो देवाउय पकरेंति । एवं जाव वेमाणिया, नवर—पचिदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य परंपरोववन्नगा चत्तारि वि आउयाइ पकरेंति । सेस तं चेव ॥

९ नेरइया ण भंते ! कि अणतरनिग्गया ? परपरनिग्गया ? अणंतर-परपर-अनिग्गया ?
गोयमा ! नेरइया अणतरनिग्गया वि, 'परपरनिग्गया वि'[1], अणतर-परपर-अनिग्गया वि ॥

१०. से केणट्ठेण जाव अणतर-परपर-अनिग्गया वि ?
गोयमा ! जे ण नेरइया पढमसमयनिग्गया ते णं नेरइया अणंतरनिग्गया, जे ण नेरइया अपढमसमयनिग्गया ते ण नेरइया परंपरनिग्गया, जे ण नेरइया विग्गहगतिसमावन्नगा ते ण नेरइया अणतर-परपर-अनिग्गया । से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव अणंतर-परपर-अनिग्गया वि । एव जाव वेमाणिया ॥

११. अणतरनिग्गया णं भते ! नेरइया कि नेरइयाउयं पकरेति जाव देवाउय पकरेंति ?
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेति जाव नो देवाउयं पकरेति ॥

१२. परपरनिग्गया ण भते ! नेरइया किं नेरइयाउय पकरेति—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइयाउयं पि पकरेति जाव देवाउय पि पकरेति ॥

१३ अणनर-परपर-अनिग्गया ण भते ! नेरइया—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेति जाव नो देवाउय पकरेति । निरवसेस जाव वेमाणिया ॥

१४. नेरइया ण भते ! कि अणतरखेदोववन्नगा[2] ? परपरखेदोववन्नगा ? अणतर-परपर-खेदाणुववन्नगा ?
गोयमा ! नेरइया अणतरखेदोववन्नगा वि, परपरखेदोववन्नगा वि, अणतर-

---

१ [illegible] (क, ख, ता, ब, म, स) ।

२. °खेत्तोववन्नगा (क, ब); खेत्तोववन्नगा (ता) ।

गोयमा ! ० देवे वा से महिड्ढियतराए असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, से ण तेसिं असुभाण पोग्गलाण पक्खिवणयाए जक्खाएस उम्मादं पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्स वा [1]•कम्मस्स उदएण मोहणिज्ज उम्माय पाउणिज्जा० । से तेणट्ठेण जाव उदएण । एव जाव थणियकुमाराण । पुढविक्काइयाण जाव मणुस्साण—एएसि जहा नेरइयाण, वाणमंतर-जोइस-वेमाणियाण जहा असुरकुमाराण ।।

वुट्टिकायकरण-पदं

२१ अत्थि ण भते ! पज्जण्णे[2] कालवासी वुट्ठिकायं पकरेति[3] ?
हता अत्थि ।।

२२. जाहे ण भते ! सक्के देविंदे देवराया वुट्ठिकाय काउकामे भवइ से कहमियाणि पकरेति ?
गोयमा ! ताहे चेव ण से सक्के देविदे देवराया अब्भितरपरिसए देवे सद्दावेइ । तए ण ते अब्भितरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा मज्झिमपरिसए देवे सद्दावेति । तए ण ते मज्झिमपरिसगा[4] देवा सद्दाविया समाणा बाहिरपरिसए देवे सद्दावेति । तए ण ते बाहिरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरबाहिरगे देवे सद्दावेति । तए णं ते बाहिरबाहिरगा देवा सद्दाविया समाणा आभिओगिए देवे सद्दावेति । तए ण ते [5]•आभिओगिया देवा० सद्दाविया समाणा वुट्ठिकाइए देवे सद्दावेति । तए ण ते वुट्ठिकाइया देवा सद्दाविया समाणा वुट्ठिकाय पकरेति । एव खलु गोयमा ! सक्के देविदे देवराया वुट्ठिकाय पकरेति ।।

२३ अत्थि ण भते ! असुरकुमारा वि देवा वुट्ठिकायं पकरेति ?
हता अत्थि ।।

२४ किपत्तिय ण भते ! असुरकुमारा देवा वुट्ठिकाय पकरेति ?
गोयमा ! जे इमे अरहता भगवतो—एएसि ण जम्मणमहिमासु वा निक्खमणमहिमासु वा नाणुप्पायमहिमासु वा परिनिव्वाणमहिमासु वा, एव खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा वुट्ठिकाय पकरेति । एव नागकुमारा वि, एवं जाव थणियकुमारा । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया एव चेव ।।

तमुक्कायकरण-पद

२५ जाहे ण भते ! ईसाणे देविंदे देवराया तमुक्काय काउकामे भवति से कहमियाणि पकरेति ?

---

१. [illegible]
२. [illegible]
३. [illegible]
४. ०परिसोववण्णगा (अ, ग, ब) ।
५. स० पा०—ते जाव सद्दाविया ।

अमायीसम्मदिट्ठीउववन्नगा य। तत्थ ण जे से मायीमिच्छदिट्ठीउववन्नए[1] देवे से ण अणगार भावियप्पाण पासइ, पासित्ता नो वदइ, नो नमसइ, नो सक्कारेइ, नो सम्माणेइ, नो कल्लाण मगल देवय चेइय[2] पज्जुवासइ। से ण अणगारस्स भावियप्पणो मज्झमज्झेण वीइवएज्जा। तत्थ ण जे से अमायीसम्मद्दिट्ठीउववन्नए देवे से ण अणगार भावियप्पाण पासइ, पासित्ता वदइ नमसइ[3] •सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाण मगल देवय चेइय° पज्जुवासइ। से ण अणगारस्स भावियप्पणो मज्झमज्झेण नो वीइवएज्जा। से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ[4]—•अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए° नो वीइवएज्जा॥

३१. असुरकुमारे ण भते! महाकाए महासरीरे अणगारस्स भावियप्पणो मज्झमज्झेण वीइवएज्जा? एव चेव। एव देवदडओ भाणियव्वो जाव[5] वेमाणिए॥

३२. अत्थि ण भते! नेरइयाण सक्कारे इ वा? सम्माणे इ वा? किइकम्मे इ वा? अब्भुट्ठाणे इ वा? अजलिपग्गहे इ वा? आसणाभिग्गहे इ वा? आसणाणुप्पदाणे इ वा? एतस्स[6] पच्चुग्गच्छणया[7]? ठियस्स पज्जुवासणया? गच्छतस्स पडिससाहणया?

नो इणट्ठे समट्ठे॥

३३. अत्थि ण भते! असुरकुमाराण सक्कारे इ वा? सम्माणे इ वा जाव गच्छतस्स पडिससाहणया वा?

हता अत्थि। एव जाव थणियकुमाराण। पुढविकाइयाण जाव चउरिदियाण—एएसि[8] जहा नेरइयाण॥

३४. अत्थि ण भते! पचिदियतिरिक्खजोणियाण सक्कारे इ वा जाव गच्छतस्स पडिससाहणया वा?

हता अत्थि। नो चेव ण आसणाभिग्गहे इ वा, आसणाणुप्पयाणे इ वा॥

३५. [9]•अत्थि ण भते! मणुस्साण सक्कारे इ वा? सम्माणे इ वा? किइकम्मे इ वा? अब्भुट्ठाणे इ वा? अजलिपग्गहे इ वा? आसणाभिग्गहे इ वा? आसणाणुप्पदाणे इ वा? एतस्स पच्चुग्गच्छणया? ठियस्स पज्जुवासणया? गच्छतस्स पडिससाहणया?

हता अत्थि।° वाणमतर-जोइस-वेमाणियाण जहा असुरकुमाराण॥

---

१. °मिच्छद्दिट्ठी° (अ, क, ता, ब, म, स)।
२. वदइ (अ, क, ता, ता, ब, म, स)।
३. सं० पा०—नमंसइ जाव पज्जुवासइ।
४. सं० पा०—वुच्चइ जाव नो।
५. भ० १।२१।
६. इंतस्स (अ)।
७. पच्चुप्पच्छणया (अ)।
८. एसिं (क, ता, ता, ब, म)।
९. सं० पा०—मणुस्साण जाव वेमाणियाण।

चउत्थो उद्देसो

पोग्गल-जीव-परिणाम-पदं

४४ [1]एस ण भंते ! पोग्गले तीतमणत सासय समय लुक्खी ? समय अलुक्खी ? समय लुक्खी वा अलुक्खी वा ? पुव्वि च ण करणेणं अणेगवण्ण अणेगरूव परिणाम परिणमइ ? अहे से परिणामे निज्जिण्णे भवइ, तओ पच्छा एगवण्णे एगरूवे सिया ?
हता गोयमा ! एस ण पोग्गले तीतमणत सासय समय त चेव जाव एगरूवे सिया ।।

४५ एस ण भते ! पोग्गले पडुप्पन्न सासय समय लुक्खी ? एव चेव ।।

४६. [2]•एस ण भते ! पोग्गले अणागयमणत सासयं समय लुक्खी ? एव चेव° ।।

४७ एस ण भते ! खधे तीतमणत सासय समय लुक्खी ? एव चेव खधे वि जहा पोग्गले ।।

४८. एस ण भते ! जीवे तीतमणत सासय समय दुक्खी ? समय अदुक्खी ? समयं दुक्खी वा अदुक्खी वा ? पुव्वि च ण करणेण अणेगभाव अणेगभूय परिणाम परिणमइ ? अहे से वेयणिज्जे निजिण्णे भवइ, तओ पच्छा एगभावे एगभूए सिया ?
हता गोयमा ! एस ण जीवे तीतमणतं सासय समयं जाव एगभूए सिया । एव पडुप्पन्न सासय समय, एव अणागयमणत सासयं समय ।।

४९. परमाणुपोग्गले ण भते ! किं सासए ? असासए ?
गोयमा ! सिय सासए, सिय असासए ।।

५०. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सिय सासए, सिय असासए ?
गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासए, वण्णपज्जवेहिं[3] •गधपज्जवेहि रसपज्जवेहिं° फासपज्जवेहि असासए । से तेणट्ठेण[4] •गोयमा ! एव वुच्चइ°—सिय सासए, सिय असासए ।।

५१. परमाणुपोग्गले ण भते ! किं चरिमे ? अचरिमे ?
गोयमा ! दव्वादेसेण नो चरिमे, अचरिमे । खेत्तादेसेण सिय चरिमे, सिय अचरिमे । कालादेसेण सिय चरिमे, सिय अचरिमे । भावादेसेण सिय चरिमे, सिय अचरिमे ।।

---

१ [illegible] अज्जीवाण य जीवाण ।।
[illegible]

२. म० पा०—एव अणागयमणत पि ।
३. म० पा०—वण्णपज्जवेहि जाव फास° ।
४. म० पा०—तेणट्ठेण जाव सिय ।

सत्तमो उद्देसो

गोयमस्स आसासण-पदं

७७. रायगिहे जाव[1] परिसा पडिगया। गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी—चिरसंसिट्ठोसि मे गोयमा ! चिरसंथुओसि मे गोयमा ! चिरपरिचिओसि मे गोयमा ! चिरजुसिओसि[2] मे गोयमा ! चिराणुगओसि मे गोयमा ! चिराणुवत्तीसि मे गोयमा ! अणंतरं देवलोए अणंतरं माणुस्सए भवे, किं परं मरणा कायस्स भेदा इओ चुता दो वि तुल्ला एगट्ठा अविसेसमणाणत्ता भविस्सामो ॥

७८. जहा णं भंते ! वयं एयमट्ठं जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति-पासंति ?
हंता गोयमा ! जहा णं वयं एयमट्ठं जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति-पासंति ॥

७९. से केणट्ठेणं[3] •भंते ! एवं वुच्चइ—वयं एयमट्ठं जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति°-पासंति ?
गोयमा ! अणुत्तरोववाइयाणं अणंताओ मणोदव्ववग्गणाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमण्णागयाओ भवंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ[4]—•वयं एयमट्ठं जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति°-पासंति ॥

तुल्लय-पदं

८०. कतिविहे णं भंते ! तुल्लए पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे तुल्लए पण्णत्ते, तं जहा—दव्वतुल्लए, खेत्ततुल्लए, कालतुल्लए, भवतुल्लए, भावतुल्लए, संठाणतुल्लए ॥

८१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—दव्वतुल्लए-दव्वतुल्लए ?
गोयमा ! परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलस्स दव्वओ तुल्ले, परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलवइरित्तस्स दव्वओ नो तुल्ले। दुपएसिए खंधे दुपएसियस्स खंधस्स दव्वओ तुल्ले, दुपएसिए खंधे दुपएसियवइरित्तस्स खंधस्स दव्वओ नो तुल्ले। एवं जाव दसपएसिए। तुल्लसंखेज्जपएसिए खंधे तुल्लसंखेज्जपएसियस्स खंधस्स दव्वओ तुल्ले, तुल्लसंखेज्जपएसिए खंधे तुल्लसंखेज्जपएसियवइरित्तस्स खंधस्स दव्वओ नो तुल्ले, एवं तुल्लअसंखेज्जपएसिए वि, एवं तुल्ल-

1. भ० १।६० ।
2. चिरजुसिओसि (ता, म) ।
3. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव पासंति ।
4. सं० पा०—वुच्चइ जाव पासंति ।

अट्ठमो उद्देसो

अबाहाए अंतर-पदं

९० इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए सक्करप्पभाए य[1] पुढवीए केवतिए[2] अबाहाए[3] अतरे पण्णत्ते ?
गोयमा ! असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ॥

९१ सक्करप्पभाए ण भते ! पुढवीए वालुयप्पभाए य पुढवीए केवतिए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? एव चेव । एव जाव तमाए अहेसत्तमाए य ॥

९२. अहेसत्तमाए ण भते ! पुढवीए अलोगस्स य केवतिए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ?
गोयमा ! असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ॥

९३. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए जोतिसस्स य केवतिए [4]•अबाहाए अतरे पण्णत्ते ?०
गोयमा ! सत्तनउए जोयणसए अबाहाए अतरे पण्णत्ते ॥

९४. जोतिसस्स ण भते ! सोहम्मीसाणाण य कप्पाण केवतिए [5]•अबाहाए अतरे पण्णत्ते ?०
गोयमा ! असखेज्जाइ जोयण[6]•सहस्साइ अबाहाए० अतरे पण्णत्ते ॥

९५ सोहम्मीसाणाणं भते ! सणकुमार-माहिदाण य केवतिए अबाहाए अतरे पण्णत्ते ? एव चेव ॥

९६. सणकुमार-माहिदाण भंते ! बभलोगस्स कप्पस्स य केवतिए अबाहाए अतरे पण्णत्ते ? एव चेव ॥

९७ बभलोगस्स णं भते ! लतगस्स य कप्पस्स केवतिए अबाहाए अतरे पण्णत्ते ? एव चेव ॥

९८. लतयस्स ण भते ! महासुक्करस य कप्पस्स केवतिए अबाहाए अतरे पण्णत्ते ? एव चेव । एव महासुक्कस्स कप्पस्स सहस्सारस्स य, एव सहस्सारस्स आणय-'पाणयाण य कप्पाण'[7], एव आणय-पाणयाण[8] आरणच्चुयाण य कप्पाण, एव आरणच्चुयाण गेवेज्जविमाणाण य, एव गेवेज्जविमाणाण अणुत्तरविमाणाण य ॥

---

१ × (अ, क, ब, म) ।
२. केवति (अ, क, ता, ना, ब, म, स) प्राय ।
३ [illegible] (अ, क, ता, म) सर्वत्र, अबाहं [illegible], [illegible] (ब, म) ।
४ स० पा०—पुच्छा ।
५. स० पा०—पुच्छा ।
६ स० पा०—जोयण जाव अतरे ।
७, पाणयकप्पाण (क, म) ।
८. पाणयाण कप्पाण (अ, ब, म) ।

१०५. एस णं भंते ! उंबरलट्ठिया[1] उण्हाभिहया तण्हाभिहया दवग्गिजालाभिहया कालमासे कालं किच्चा[2] •कहिं गमिहिति ?° कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पाडलिपुत्ते नगरे पाडलिरुक्खत्ताए पच्चायाहिति । से णं तत्थ अच्चिय-वंदिय[3]-•पूइय-सक्कारिय-सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरे लाउल्लोइयमहिए यावि° भविस्सइ ॥

१०६. से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता [4]•कहिं गमिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाणं° अंतं काहिति ॥

अम्मड-अंतेवासि-पदं

१०७. तेणं कालेणं तेणं समएणं अम्मडस्स परिव्वायगस्स सत्त अंतेवासिसया गिम्ह-कालसमयंसि [5]•जेट्ठामूलमासंमि गंगाए महानदीए उभओकूलेणं कंपिल्लपुराओ नगराओ पुरिमतालं नयरं संपट्ठिया विहाराए ॥

१०८. तए णं तेसिं परिव्वायगाणं तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसंतरमणुपत्ताणं से पुव्वग्गहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुंजमाणे झीणे ॥

१०९. तए णं ते परिव्वाया झीणोदगा समाणा तण्हाए पारब्भमाणा-पारब्भमाणा उदगदातारमपस्समाणा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसंतरमणुपत्ताणं से पुव्वग्गहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुंजमाणे झीणे । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए उदगदातारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तीसे अगामियाए छिण्णा-वायाए दीहमद्धाए अडवीए उदगदातारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेंति, करेत्ता उदगदातारमलभमाणा दोच्चं पि अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—इहण्णं देवाणुप्पिया ! उदगदातारो नत्थि तं नो खलु कप्पइ अम्हं अदिण्णं गिण्हित्तए, अदिण्णं साइज्जित्तए, तं मा णं अम्हे इयाणिं आवइकालं पि अदिण्णं गिण्हामो, अदिण्णं साइज्जामो, मा णं अम्हं तवलोवे भविस्सइ । तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! तिदंडए य कुंडियाओ य कंचणियाओ य करोडियाओ य भिसियाओ य छण्णालए य अंकुसए य केसरियाओ य पवित्तए य गणेत्तियाओ य छत्तए य वाहणाओ य धाउरत्ताओ य एगंते एडित्ता गंगं

१. उंबरि° (क, ख) ।
२. सं० पा०—किच्चा जाव कहिं ।
३. सं० पा०—वंदिय जाव भविस्सइ ।
४. सं० पा०—सेसं तं चेव जाव अंतं ।
५. सं० पा०—एवं जहा ओववाइए जाव आगहणा ।

तेसि ण भते ! देवाण केवतिय काल ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! दससागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।
अत्थि ण भते ! तेसि देवाण इड्ढी इ वा जुई इ वा जसे इ वा वले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा ?
हता अत्थि ।
ते ण भते ! देवा परलोगस्स आराहगा ?
हता अत्थि ॥°

अम्मड-चरिया-पदं

११० वहुजणे ण भते ! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एव भासइ एव पण्णवेइ एव परूवेइ—एव खलु अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए [1]°आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ ।
से कहमेय भते ?
एव खलु गोयमा ! ज ण से वहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एव भासइ एवं पण्णवेइ एव परूवेइ—एव खलु अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ, सच्चे ण एसमट्ठे अहपि ण गोयमा ! एवमाइक्खामि एव भासामि एव पण्णवेमि एव परूवेमि—एव खलु अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ ॥

१११. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ ?
गोयमा ! अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स पगइभद्दयाए पगइउवसतयाए पगइपतणु-कोहमाणमायालोहयाए मिउमद्दवसपण्णयाए अल्लीणयाए विणीययाए छट्ठंछट्ठेण अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेण उड्ढ वाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स सुभेण परिणामेण पसत्थेहि अज्झवसाणेहि लेसाहि विसुज्झमाणीहि अण्णया कयाइ तदावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेण ईहापूह-मग्गण-गवेसण करेमाणस्स वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाण-लद्धी समुप्पण्णा ।
तए ण से अम्मडे परिव्वायए तीए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणल-द्धीए समुप्पण्णाए जणविम्हावणहेउ कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ ॥

---

१. [illegible] अम्मडस्स वत्तव्वया जाव ।

पक्खिवेज्जा, कोट्टिया-कोट्टिया च ण पक्खिवेज्जा, चुण्णिया-चुण्णिया च ण पक्खिवेज्जा, तओ पच्छा खिप्पामेव पडिसघाएज्जा, नो चेव णं तस्स पुरिसस्स किचि आवाह वा वावाह वा उप्पाएज्जा, छविच्छेय पुण करेइ, एसुहुम च णं पक्खिवेज्जा ॥

जंभगदेव-पद

११७ अत्थि ण भते ! जभगा देवा, जभगा देवा ?
हता अत्थि ॥

११८ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जभगा देवा, जभगा देवा ?
गोयमा ! जभगा ण देवा निच्च पमुदित-पक्कीलिया कदप्परतिमोहणसीला । जे ण ते देवे कुद्धे पासेज्जा, से ण पुरिसे महंतं अयस पाउणेज्जा । जे ण ते देवे तुट्ठे पासेज्जा, से ण महंत जस पाउणेज्जा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—जभगा देवा, जभगा देवा ॥

११९. कतिविहा ण भते ! जभगा देवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, त जहा—अन्नजभगा, पाणजभगा, वत्थजभगा, लेणजभगा, सयणजभगा, पुप्फजभगा, फलजभगा, 'पुप्फ-फल-जभगा'[1], विज्जा-जभगा अवियत्तिजभगा'[2] ॥

१२०. जभगा ण भते ! देवा कहि वसहि उवेति ?
गोयमा ! सव्वेसु चेव दीहवेयड्ढेसु, चित्त-विचित्त-जमगपव्वएसु, कचणपव्वएसु य, एत्थ ण जभगा देवा वसहि उवेति ॥

१२१ जभगाण भते ! देवाण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! एग पलिओवम ठिती पण्णत्ता ॥

१२२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[3] विहरइ ॥

नवमो उद्देसो

सरूवि-सकम्मलेस्स-पद

१२३. अणगारे ण भते ! भावियप्पा अप्पणो कम्मलेस्स न जाणइ, न पासइ, तं पु-णजीव सरूवि[4] सकम्मलेस्सं जाणइ-पासइ ?

---

१. [illegible] (वृत्ता) ।
२. [illegible] (वृत्ता)
३. भ० १।५१ ।
४. सरूव (अ) ।

सूरिय-पदं

१३२ तेण कालेण तेण समएण भगव गोयमे अचिरुग्गय वालसूरिय जासुमणाकुसुम-पुंजप्पकास लोहितग पासइ, पासित्ता जायसड्ढे जाव[1] समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ[2], °उवागच्छित्ता समणं भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता णच्चासण्णे णातिदूरे सुस्सूसमाणे नमसमाणे अभिमुहे विणएणं पजलियडे पज्जुवासमाणे° एव वयासी—किमिद भते! सूरिए? किमिद भते! सूरियस्स अट्ठे?

गोयमा! सुभे सूरिए, सुभे सूरियस्स अट्ठे॥

१३३ किमिद भते! सूरिए? किमिद भते! सूरियस्स पभा?

[3]°गोयमा। सुभे सूरिए, सुभा सूरियस्स पभा॥

१३४. किमिद भते सूरिए? किमिद भते! सूरियस्स छाया?

गोयमा! सुभे सूरिए, सुभा सूरियस्स छाया॥

१३५. किमिद भते। सूरिए? किमिद भते! सूरियस्स लेस्सा?

गोयमा! सुभे सूरिए, सुभा सूरियस्स लेस्सा°॥

समणाण तेयलेस्सा-पद

१३६ जे इमे भते! अज्जत्ताए समणा निग्गथा विहरति, ते[4] ण कस्स तेयलेस्स वीईवयति?

गोयमा! मासपरियाए समणे निग्गथे वाणमतराण देवाण तेयलेस्स वीईवयइ। दुमासपरियाए समणे निग्गथे असुरिदवज्जियाण भवणवासीण देवाण तेयलेस्स वीईवयइ।

एव एएण अभिलावेण—तिमासपरियाए समणे निग्गथे असुरकुमाराणं देवाण तेयलेस्स वीईवयइ।

चउम्मासपरियाए समणे निग्गथे गहगण-नक्खत्त-तारारूवाण जोतिसियाण देवाण तेयलेस्स वीईवयइ।

पचमासपरियाए समणे निग्गथे चदिम-सूरियाण जोतिसिदाण जोतिसराईणं तेयलेस्स वीईवयइ।

छम्मासपरियाए[6] समणे निग्गथे सोहम्मीसाणाण देवाण तेयलेस्सं वीईवयइ।

---

१. भ० १।१० ।

२. [illegible] नमसित्ता [illegible] ।

३. [illegible] एव [illegible] लेस्सा ।

४. एते (क, ता, ब, म, स), तए (ग) ।

५ तेतेणं (ब) ।

६ छमास° (स) ।

पन्नरसमं सतं

नमो सुयदेवयाए भगवईए[1]

गोसालग-पदं

१ तेण कालेण तेण समएण सावत्थी नाम नगरी होत्था—वण्णओ[2]। तीसे ण सावत्थीए नगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे[3] दिसीभाए, तत्थ णं कोट्ठए नाम चेइए होत्था—वण्णओ[4]। तत्थ ण सावत्थीए नगरीए हालाहला[5] नामं कुभकारी आजीविओवासिया परिवसति—अड्ढा जाव[6] बहुजणस्स अपरिभूया, आजीवियसमयंसि लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिजपेम्माणुरागरत्ता, अयमाउसो ! आजीवियसमये अट्ठे, अय परमट्ठे, सेसे अणट्ठे त्ति आजीवियसमएण अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ॥

२. तेणं कालेण तेण समएण गोसाले मखलिपुत्ते चउव्वीसवासपरियाए हालाहलाए कुभकारीए कुभकारावणसि आजीवियसघसपरिवुडे आजीवियसमएण अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

३ तए णं तस्स गोसालस्स मखलिपुत्तस्स अण्णदा कदायि इमे छ दिसाचरा[7] अतिय पाउब्भवित्था, त जहा—साणे, कलदे[8], कण्णियारे, अच्छिदे, अग्गिवेसायणे, अज्जुणे गोमायुपुत्ते[9] ॥

४ तए ण ते छ दिसाचरा अट्ठविहं[10] पुव्वगय मग्गदसमं 'सएहि-सएहि'[11] मतिदसणेहिं निज्जूहंति[12], निज्जूहित्ता गोसाल मखलिपुत्त उवट्ठाइसु ॥

---

१. एतद् वृत्तौ व्याख्यातं नास्ति।
२ ओ० सू० १।
३. °पुरच्छिमे (म)।
४. ओ० सू० २-१३।
५ हालाहला (ता, म)।
६. भ० २।९४।
७ दिशाचरा भगवच्छिष्याः पार्श्वस्थीभूता इति टीकाकारः 'पासावच्चिज्ज' त्ति चूर्णिकारः (वृ)।
८. कणंदे (क, ता, म)।
९. गोतमपुत्ते (क, ब, म)।
१० निमित्तमिति शेषः (वृ)।
११. सनेहिं २ (अ, क, ब, म, स)।
१२. निज्जूहंति (ता, म); निज्जुहंति (ब, स)।

भगवओ विहार-पदं

२० तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! तीसं वासाइं अगारवासमज्झावसित्ता[1] अम्मा-पिईहिं देवत्तगएहिं[2] समत्तपइण्णे एवं जहा भावणाए जाव[3] एगं देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए[4] ॥

२१ तए णं अहं गोयमा ! पढमं वासं अद्धमासं अद्धमासेणं खममाणे अट्ठियगामं निस्साए पढमं अंतरवासं[5] वासावासं उवागए[6]। दोच्चं वासं मासं मासेणं खममाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नगरे, जेणेव नालंदा बाहिरिया, जेणेव तंतुवायसाला, तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हामि, ओगिण्हित्ता तंतुवायसालाए एगदेसंसि[7] वासावासं उवागए ॥

पढम-मासखमण-पदं

२२ तए णं अहं गोयमा ! पढमं मासखमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥

२३. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते चित्तफलगहत्थगए मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं[8] दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नगरे, जेणेव नालंदा बाहिरिया, जेणेव तंतुवायसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तंतुवायसालाए एगदेसंसि भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता रायगिहे नगरे उच्च-नीय[9]-°मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसहीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, वसहीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणे° अण्णत्थ कत्थ वि वसहिं अलभमाणे तीसे य तंतुवायसालाए एगदेसंसि वासावासं उवागए, जत्थेव णं अहं गोयमा !

२४. तए णं अहं गोयमा ! पढम-मासक्खमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्ख-मामि, पडिनिक्खमित्ता नालंदं[10] बाहिरियं मज्झंमज्झेणं[11] निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता रायगिहे नगरे

---

१ आगारवासमज्झे वसित्ता (अ, स, व, म, स), अगारवासमज्झे वसित्ता (त), अगारवासे वसित्ता (ता), अगारवास—गृहवास-[illegible] इति [illegible] प्रस्तुत-[illegible] ।

२ देवत्तगएहिं (त, स, ता, म); देवलोगगतेहिं (व, स) ।

३. [illegible] १५।२६-२६ ।

४. पव्वइत्तए (ता, म) ।

५ अंतरावास (क, म, वृपा) ।

६. उवगए (ता) ।

७. एगदेसंसि (व) ।

८ जाव (अ, क, स, ता, व, म, स) ।

९. स० पा०—नीय जाव अण्णत्थ ।

१०. नालंदा (अ) ।

११ मज्झेणं २ (क, स, ता, व, म) ।

तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता मम वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता मम एव वयासी—तुब्भे ण भते ! मम धम्मायरिया, अहण्ण तुब्भ धम्मतेवासी ॥

२९ तए ण अह गोयमा ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स एयमट्ठ नो आढामि, नो परिजाणामि, तुसिणीए सचिट्ठामि ॥

दोच्च-मासखमण-पदं

३० तए ण अह गोयमा ! रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालद वाहिरिय मज्झमज्झेण निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव ततुवायसाला[1], तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता दोच्च मासखमण[2] उवसपज्जित्ताण विहरामि ॥

३१. तए ण अह गोयमा ! दोच्च[3]-मासखमणपारणगसि[4] ततुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालद वाहिरिय मज्झमज्झेण निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव रायगिहे नगरे[5] •तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे आणदस्स गाहावइस्स गिह अणुप्पविट्ठे ॥

३२ तए ण से आणदे गाहावई मम एज्जमाण पासइ, [6]•पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणदिए णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडिय उत्तरासग करेइ, करेत्ता अजलिमउलियहत्थे मम सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता मम तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता मम वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता मम विउलाए खज्जगविहीए पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे ॥

३३. तए ण तस्स आणदस्स गाहावइस्स तेण दव्वसुद्धेण दायगसुद्धेण पडिगाहगसुद्धेण तिविहेणं तिकरणसुद्धेण दाणेण मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, ससारे परित्तीकए, गिहसि य से इमाइ पच दिव्वाइ पाउब्भूयाइ, त जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुदुभीओ, अतरा वि य ण आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ॥

३४ तए ण रायगिहे नगरे सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु

---

१. ततुवाय० (ता) सर्वत्र ।
२. मासखमण (ता) ।
३. [illegible] (अ, क, ब, म, स) ।
४. [illegible] (ता, ब, म, स) ।
५ स० पा०—नगरे जाव अडमाणे ।
६ स० पा०—एव जहेव विजयस्स नवर मम विउलाए खज्जगविहीए पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे सेस त चेव जाव तच्च ।

णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए खिप्पामेव आस-णाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडिय उत्तरासग करेइ, करेत्ता अजलिमउलियहत्थे मम सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता मम तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता मम वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता मम विउलेण सव्वकामगुणिएण भोयणेण पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे ॥

४० तए ण तस्स सुणदस्स गाहावइस्स तेण दव्वसुद्धेण दायगसुद्धेण पडिगाहगसुद्धेण तिविहेण तिकरणसुद्धेण दाणेण मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, ससारे परित्तीकए, गिहसि य से इमाइ पच दिव्वाइ पाउब्भूयाइ, त जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुदुभीओ, अतरा वि य ण आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ॥

४१. तए ण रायगिहे नगरे सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एव भासइ एव पण्णवेइ एव परूवेइ—धन्ने ण देवाणुप्पिया! सुणदे गाहावई, कयत्थे ण देवाणुप्पिया! सुणदे गाहावई, कयपुण्णे ण देवाणुप्पिया! सुणदे गाहावई, कयलक्खणे ण देवाणुप्पिया! सुणदे गाहावई, कया ण लोया देवाणुप्पिया! सुणदस्स गाहावइस्स, सुलद्धे ण देवाणुप्पिया! माणुस्सए जम्मजीवियफले सुणदस्स गाहावइस्स, जस्स ण गिहसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइ पच दिव्वाइ पाउब्भूयाइ, त जहा—वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, त धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया ण लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्म-जीवियफले सुणदस्स गाहावइस्स, सुणदस्स गाहावइस्स ॥

४२ तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म समुप्पन्नसंसए समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव सुणदस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासइ सुणदस्स गाहावइस्स गिहसि वसुहार वुट्ठ, दसद्धवण्ण कुसुम निवडिय, मम च ण सुणदस्स गाहावइस्स गिहाओ पडिनि-क्खममाण पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे जेणेव मम अतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मम तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता मम वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता मम एव वयासी—तुब्भे ण भते! मम धम्मायरिया, अहण्ण तुब्भ धम्मतेवासी ॥

४३ तए ण अह गोयमा! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स एयमट्ठ नो आढामि, नो परिजाणामि, तुसिणीए सचिट्ठामि ॥

चउत्थ मासखमण-पद

४४. तए ण अह गोयमा! रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता

वहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एव भासइ एव पण्णवेइ एव परूवेइ—धन्ने ण देवाणुप्पिया ! वहुले माहणे, कयत्थे ण देवाणुप्पिया ! वहुले माहणे, कयपुण्णे ण देवाणुप्पिया ! वहुले माहणे, कयलक्खणे ण देवाणुप्पिया ! वहुले माहणे, कया ण लोया देवाणुप्पिया ! वहुलस्स माहणस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले वहुलस्स माहणस्स, जस्स ण गिहसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइ पच दिव्वाइ पाउब्भूयाइ, त जहा—वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, त धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया ण लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले वहुलस्स माहणस्स, वहुलस्स माहणस्स° ॥

५१ तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते मम ततुवायसालाए अपासमाणे रायगिहे नगरे सब्भितरवाहिरियाए मम सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेइ, मम कत्थवि[1] सुति वा खुतिं वा पवत्ति वा अलभमाणे जेणेव ततुवायसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता साडियाओ य पाडियाओ[2] य कुडियाओ य वाहणाओ[3] य चित्तफलग च माहणे आयामेइ, आयामेत्ता सउत्तरोट्ठ भंड[4] कारेइ, कारेत्ता ततुवायसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता नालद वाहिरिय मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे तेणेव उवागच्छइ ॥

५२ तए ण तस्स कोल्लागस्स सण्णिवेसस्स वहिया वहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—धन्ने ण देवाणुप्पिया ! वहुले माहणे, [5]•कयत्थे ण देवाणुप्पिया ! वहुले माहणे, कयपुण्णे ण देवाणुप्पिया ! वहुले माहणे, कयलक्खणे ण देवाणुप्पिया ! वहुले माहणे, कया ण लोया देवाणुप्पिया ! वहुलस्स माहणस्स, सुलद्धे ण देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्म°जीवियफले वहुलस्स माहणस्स, वहुलस्स माहणस्स ॥

गोसालस्स सिस्सत्तेण अंगीकरण-पदं

५३ तए ण तस्स गोसालस्स मखलिपुत्तस्स वहुजणस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए[6] •चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—जारिसिया ण मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स इड्ढी जुती[7] जसे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, नो खलु अत्थि तारिसिया अण्णस्स कस्सइ तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा इड्ढी जुती[8] •जसे वले वीरिए पुरिसक्कार°-परक्कमे लद्धे पत्ते

---

१. कत्थइ (अ, क, ग, व, म), कत्थय (ना)।
२. [illegible] (ना), कुडियाओ (वृपा)।
३. [illegible] (क, ग, ता, व, म)।
४. [illegible] (अ, ता)।
५. स० पा०—त चेव जाव जीवियफले।
६. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
७. जुत्ती (क, व, म)।
८. स० पा०—जसे जाव परक्कमे।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेण अट्ठगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेण सव्वेसि पाणाण, सव्वेसि भूयाणं, सव्वेसि जीवाण, सव्वेसि सत्ताण इमाइ छ अणइक्कमणिज्जाइ वागरणाइ वागरेति, त जहा—

लाभ अलाभ सुहं दुक्ख, जीविय मरण तहा ।

तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते तेण अट्ठगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सावत्थीए नगरीए अजिणे जिणप्पलावी, अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केवलिप्पलावी, असव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी °, अजिणे जिणसद्द पगासेमाणे विहरइ, त नो खलु गोयमा ! गोसाले मखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी[1], °अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे ° जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ, गोसाले ण मखलिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी[2], °अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केवलिप्पलावी, असव्वण्ण सव्वण्णुप्पलावी, अजिणे जिणसद्दं ° पगासेमाणे विहरइ ॥

७८ तए ण सा महतिमहालया महच्चपरिसा [3]°समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस ° पडिगया ॥

गोसालस्स अमरिस-पदं

७९ तए ण सावत्थोए नगरीए सिघाडग[4]-°तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु ° वहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—जण्ण देवाणुप्पिया ! गोसाले मखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव जिणे जिणसद्द पगासेमाणे विहरइ त मिच्छा । समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एव खलु तस्स गोसालस्स मखलिपुत्तस्स मखली नाम मख पिता होत्था । तए ण तस्स मखस्स एव चेव त सव्व भाणियव्व जाव[5] अजिणे जिणसद्द पगासेमाणे विहरइ, त नो खलु गोसाले मखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरइ, गोसाले मखलिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी जाव विहरइ, समणे भगव महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्द पगासेमाणे विहरइ ॥

८०. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते बहुजणस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते[6] °रुट्ठे कुविए चडिक्किए° मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता सावत्थि नगरि मज्झमज्झेण[7] जेणेव हालाहलाए कुभकारीए कुभकारा-

---

१. सं० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद्द ।
२. सं० पा०—जिणप्पलावी जाव पगासेमाणे ।
३. सं० पा०—जहा सिवे जाव पडिगया ।
४. सं० पा०—सिंघाडग जाव बहुजणो ।
५. भ० १५।१४-७६ ।
६. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि° ।
७. लेखमलेवकरणेन 'निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता' इति पाठो न दृश्यते । द्रष्टव्यम्—१५।२४ ।

जाव परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति, 'नो पत्तियंति'[1] नो रोयति, एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा[2] अरोएमाणा तस्स वम्मीयस्स चउत्थं पि वप्पु भिंदति। ते णं तत्थ उग्गविस चडविस घोरविसं महाविसं 'अतिकायं महाकाय'[3] मसिमूसाकालग नयणविसरोसपुण्णं अजणपुज-निगरप्पगास रत्तच्छ जमलजुयल-[4] चचलचलतजीह धरणितलवेणिभूय उक्कड-फुड-कुडिल-जडुल-कक्खड-विकड-फडाडोवकरणदच्छ लोहागर-धम्ममाण-धमधमेंतघोस अणागलियचडतिव्वरोस 'समुह तुरिय चवल'[5] धमंत दिट्ठीविस सप्प संघट्टेति ॥

९४. तए ण से दिट्ठीविसे सप्पे तेहि वणिएहि सघट्टिए समाणे आसुरुत्ते[6] •रुट्ठे कुविए चडिक्किए° मिसिमिसेमाणे सणियं-सणिय उट्ठेइ, उट्ठेत्ता सरसरसरस्स वम्मीयस्स सिहरतल द्रुहति[7], द्रुहित्ता आदिच्च निज्झाति, निज्झाइत्ता ते वणिए अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समता समभिलोएति ॥

९५ तए ण ते वणिया तेण दिट्ठीविसेण सप्पेण अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समता समभिलोइया समाणा खिप्पामेव सभंडमत्तोवगरणमायाए एगाहच्च कूडाहच्च भासरासी कया यावि[8] होत्था। तत्थ ण जे से वणिए तेसिं वणियाण हिय-कामए[9] •सुहकामए पत्थकामए आणुकपिए निस्सेसिए° हिय-सुह-निस्सेसकामए से ण आणुकपियाए देवयाए सभडमत्तोवगरणमायाए नियग नगर साहिए ॥

९६ एवामेव आणंदा! तव वि धम्मायरिएणं धम्मोवएसएणं समणेण नायपुत्तेण ओराले परियाए अस्सादिए, ओराला कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगा सदेवमणुयासुरे लोए पुव्वति, गुव्वति[10], थुव्वति[11]—इति खलु समणे भगव महावीरे, इति खलु समणे भगवं महावीरे। त जदि मे से अज्ज किंचि वि वदति तो णं तवेण तेएण एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेमि, जहा वा वालेण ते वणिया। तुम च ण आणंदा! सारक्खामि संगोवामि जहा वा से वणिए तेसि वणियाण हियकामए जाव[12] निस्सेसकामए आणुकपियाए देवयाए सभड[13]•मत्तोवगरणमायाए नियग नगर° साहिए। त गच्छ[14] ण तुम आणदा! तव धम्मायरियस्स धम्मोवए-सगस्स समणस्स नायपुत्तस्स एयमट्ठ परिकहेहि ॥

---

१. जाव (अ, क, ग, ता, ब, म, स)।
२. जाव (अ, क, ग, ता, ब, म, स)।
३. अतिगायमहाकाय (क, ग, ता, म)।
४. °जुयल (अ, क, ब, म)।
५. समुहि तुरियचवल (अ, क, ग, ता, ब), समुहियतुरियचवल (वृ)।
६. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि°।
७. दुहति (क, ता, म); दुरूहति (ग)।
८. [illegible] ता, ब)।
९. सं० पा० हियकामए जाव हिय।
१०. × (अ, क, ग, ता), गुवति (ब, म)।
११. तुवति (क, ग), × (ब, म), 'थुवति' त्ति क्वचित्, क्वचित् 'परिभमती' ति दृश्यते (वृ)।
१२ भ० १५।९२।
१३. सं० पा०—सभड जाव साहिए।
१४. गच्छाहि (ब, म)।

•मंखलिपुत्ते तवेणं तेएण एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासि° करेत्तए, नो चेव णं अरहते भगवते, पारियावणियं[1] पुण करेज्जा। जावतिए ण आणदा! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स 'तवे तेए'[2], एत्तो अणतगुणविसिट्ठतराए चेव तवे तेए अणगाराण भगवंताण, खतिखमा पुण अणगारा भगवतो। जावइए ण आणदा! अणगाराण भगवताण तवे तेए एत्तो अणतगुणविसिट्ठतराए चेव तवे तेए थेराणं भगवंताण, खतिखमा पुण थेरा भगवतो। जावतिए ण आणंदा! थेराण भगवताण तवे तेए एत्तो अणतगुणविसिट्ठतराए चेव तवे तेए अरहंताण भगवताण, खतिखमा पुण अरहता भगवतो। त पभू ण आणदा! गोसाले मखलिपुत्ते तवेण तेएण[3] •एगाहच्च कूडाहच्च भासरासि° करेत्तए, विसए ण आणदा[4]! •गोसालस्स मखलिपुत्तस्स तवेण तेएण एगाहच्च कूडाहच्च भासरासि°करेत्तए, समत्थे णं आणदा[5]! •गोसाले मखलिपुत्ते तवेण तेएण एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासि° करेत्तए, नो चेव ण अरहते भगवंते, पारियावणिय पुण करेज्जा॥

आणदथेरेण गोयमाईणं अणुण्णवण-पदं

९९. त गच्छ ण तुमं आणदा! गोयमाईण समणाणं निग्गंथाण एयमट्ठ परिकहेहि—मा ण अज्जो! तुब्भं केई गोसालं मंखलिपुत्त धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेउ, धम्मिएण पडोयारेण पडोयारेउ, गोसाले ण मखलिपुत्ते समणेहिं निग्गथेहि मिच्छ विप्पडिवन्ने॥

१०० तए ण से आणदे थेरे समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ते समाणे समणं भगवं महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जेणेव गोयमादी समणा निग्गथा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोयमादी समणे निग्गथे आमतेति, आमतेत्ता एवं वयासी—एव खलु अज्जो! छट्ठक्खमणपारणगसि समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं तं चेव सव्व जाव[6] 'गोयमाईण समणाण निग्गथाण'[7] एयमट्ठ परिकहेहि, त मा ण

---

१. परियावणिय (अ, म)।
२. तवेण (म) सर्वत्र।
३. सं० पा०—तेएण जाव करेत्तए।
४. सं० पा०—आणदा जाव करेत्तए।
५. सं० पा०—आणदा जाव करेत्तए।
६. भ० १५।८२-९१।
७. नायपुत्तस्स (अ, क, ख, ता, ब, म, स); सर्वेष्वपि आदर्शेषु 'नायपुत्तस्स एयमट्ठ परिकहेहि' इति पाठोस्ति, किन्तु प्रसङ्गानुसारी-आलोचनया नैव सङ्गच्छते। 'नायपुत्तस्स एयमट्ठ परिकहेहि' इति गोशालकस्य उक्तिरस्ति—द्रष्टव्य १५।९६। यदि एतदन्त पाठोत्र विवक्षित स्यात्तदा आनन्दस्य भगवतो निवेदनम्, भगवतश्च आनन्दस्य गौतमादिश्रमणेभ्य तदर्थज्ञापनस्य निर्देशन—एतत् सर्वं तस्मिन् पाठे नैव प्राप्त भवेत्। कथ च आनन्द भगवतः निर्देशमश्रावयित्वा गौतमादिभ्य. 'त माण अज्जो' इत्यादि निर्देश कुर्यात्? एतत् न स्वाभाविकम्। तेन प्रतीयते अत्र पाठसंक्षेपीकरणे

एएण गगापमाणेण सत्त गगाओ सा एगा महागगा। सत्त महागगाओ सा एगा सादीणगगा। सत्तसादीणगगाओ सा एगा मदुगगा[1]। सत्त मदुगगाओ सा एगा लोहियगगा। सत्त लोहियगगाओ सा एगा आवतीगगा[2]। सत्त आवतीगगाओ सा एगा परमावती। एवामेव सपुव्वावरेण एग गगासयसहस्स सत्तर सहस्सा छच्च अगुणपन्न[3] गगासया भवतीति मक्खाया।

तासि दुविहे उद्धारे पण्णत्ते, त जहा—सुहुमबोदिकलेवरे चेव, बायरबोंदिकलेवरे चेव। तत्थ ण जे से सुहुमबोदिकलेवरे से ठप्पे। तत्थ ण जे से बायरबोदिकलेवरे तओ ण वाससए गए, वाससए गए एगमेग गगावालुय अवहाय जावतिएण कालेण से कोट्ठे खीणे णीरए निल्लेवे निट्ठिए भवति सेत्त सरे सरप्पमाणे। एएण सरप्पमाणेण तिण्णि सरसयसाहस्सीओ से एगे महाकप्पे, चउरासीति महाकप्पसयसहस्साइ से एगे महामाणसे।

१. अणताओ सजूहाओ जीवे चय चइत्ता उवरिल्ले माणसे सजूहे देवे उववज्जति। से ण तत्थ[4] दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ, विहरित्ता ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतर चय चइत्ता पढमे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

२ से णं तओहिंतो अणतर उव्वट्टित्ता मज्झिल्ले माणसे सजूहे देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ, विहरित्ता ताओ देवलोगाओ आउक्खएण[5] •भवक्खएण ठिइक्खएण अणतर चय० चइत्ता दोच्चे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

३ से ण तओहिंतो अणतर उव्वट्टित्ता हेट्ठिल्ले माणसे सजूहे देवे उववज्जइ। से ण तत्थ दिव्वाइ भोगभोगाइं जाव चइत्ता तच्चे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

४ से ण तओहिंतो जाव उव्वट्टित्ता उवरिल्ले माणुसुत्तरे सजूहे देवे उववज्जइ। से ण तत्थ दिव्वाइ भोगभोगाइ जाव चइत्ता चउत्थे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

५ से ण तओहिंतो अणतर उव्वट्टित्ता मज्झिल्ले माणुसुत्तरे सजूहे देवे उववज्जइ। से ण तत्थ दिव्वाइ भोगभोगाइ जाव चइत्ता पचमे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

६. से ण तओहिंतो अणतर उव्वट्टित्ता हिट्ठिल्ले माणुसुत्तरे सजूहे देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दिव्वाइ भोगभोगाइ जाव चइत्ता छट्ठे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

---

१. मद्दुगगा(ब), मद्दुगगा(म), मच्चुगगा(वृ०)।
२ अवतीगगा (क, ख, ब, म)।
३ गुणपन्न (क म), अगुणपन्ना (ता)।
४. तत्था (ता)।
५. म० ११०—आउक्खएण जाव चइत्ता।

९ पाढाण १०. लाढाण ११. वज्जीणं १२. मोलीणं[1] १३. कासीणं १४. कोस-
लाण १५ अवाहाणं १६ सुभुत्तराण[2] घाताए वहाए उच्छादणयाए भासी-
करणयाए ।

ज पि य अज्जो ! गोसाले मखलिपुत्ते हालाहलाए कुभकारीए कुभकारावणसि अवकूणगहत्थगए, मज्जपाण पियमाणे, अभिक्खण गायमाणे, अभिक्खण नच्च-माणे, अभिक्खण[3] •हालाहलाए कुभकारीए° अजलिकम्म करेमाणे विहरइ, तस्स वि य ण वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए इमाइ अट्ठ चरिमाइ पण्णवेइ, त जहा—
१ चरिमे पाणे २ चरिमे गेये ३ चरिमे नट्टे ४ चरिमे अजलिकम्मे ५ चरिमे पोक्खलसवट्टए महामेहे ६ चरिमे सेयणए गधहत्थी ७ चरिमे महासिला-कटए सगामे ८. अह च ण इमीसे ओसप्पिणिसमाए[4] चउवीसाए तित्थगराण[5] चरिमे तित्थगरे सिज्झिस्स जाव[6] अत करेस्सं ।

ज पि य अज्जो ! गोसाले मखलिपुत्ते सीयलएणं मट्टियापाणएण आयचिण-[7] उदएण गायाइ परिसिचमाणे विहरइ, तस्स वि ण वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए इमाइ चत्तारि पाणगाइ चत्तारि अपाणगाइ पण्णवेति ।।

१२२. से कि त पाणए ?
पाणए चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—१ गोपुट्ठए २. हत्थमद्दियए ३. आतवतत्तए ४. सिलापब्भट्ठए । सेत्त पाणए ।।

१२३ से कि त अपाणए ?
अपाणए चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—१. थालपाणए २. तयापाणए ३. सिंवलि-पाणए[8] ४ सुद्धपाणए ।।

१२४ से कि त थालपाणए ?
थालपाणए—जे ण दाथालग वा दावारग वा दाकुभग वा दाकलस वा सीतलग उल्लग[9] हत्थेहि परामुसइ, न य पाणिय पियइ । सेत्त थालपाणए ।।

१२५ से कि त तयापाणए ?
तयापाणए—जे ण अब वा अबाडग वा जहा पओगपदे जाव[10] बोर[11] वा तेवरुय[12]

---

१ मालीण (अ, क, ता, ब, म) ।
२ सभुत्तराण (अ, क, म), सुभत्तराण (ग) सभुत्तराण (ता, ब), सुभत्तराण (म) ।
३. स० पा०—अभिक्खण जाव अजलिकम्म ।
४. ओसप्पिणीए (म) ।
५ तित्थगराण (अ, क, ख, ब, स), तित्थक-राण (म) ।
६ भ० १।४४ ।
७ आयचणि (अ, क, ख, ब, म) ।
८. सवलि° (अ, स); सेवलि° (ब); सव-एलि° (म) ।
९. ओलग्ग (ग) ।
१०. प० १६ ।
११. पोए (अ), पोर (क, ता, म); चोरं (ब) ।
१२. तवरुय (अ, म); तवुरुय (ता); तेंदुरुय (ब); तिंदुरुयं (ग) ।

उट्ठेइ, उट्ठेत्ता गोसालं मंखलिपुत्तं वंदइ नमंसइ[1], •वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं॰ पडिगए ॥

गोसालस्स अप्पणो नीहरण-निद्देस-पदं

१३९. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते अप्पणो मरणं आभोएइ, आभोएत्ता आजीविए थेरे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया! ममं कालगयं जाणित्ता सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेह[2], ण्हाणेत्ता पम्हलसुकुमालाए गंधकासाईए गायाइं लूहेह, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपह, अणुलिंपित्ता महरिहं हंसलक्खणं पडसाडगं नियंसेह, नियंसेत्ता सव्वालंकारविभूसियं करेह, करेत्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरुहेह[3], दुरुहेत्ता सावत्थीए नयरीए सिंघाडग[4]-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह॰-पहेसु महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा[5]-उग्घोसेमाणा एवं वदह—एवं खलु देवाणुप्पिया! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी[6], •अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे॰ जिणसद्दं पगासेमाणे विहरित्ता इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थगराणं चरिमे तित्थगरे, सिद्धे जाव[7] सव्वदुक्खप्पहीणे—इड्ढिसक्कारसमुदएणं ममं सरीरगस्स नीहरणं करेह ॥

१४०. तए णं ते आजीविया थेरा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ॥

गोसालस्स परिणाम-परियत्तणपुव्वं कालधम्म-पदं

१४१. तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सत्तरत्तंसि परिणममाणंसि पडिलद्ध-सम्मत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[8] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे॰ समुप्पज्जित्था—नो खलु अहं जिणे जिणप्पलावी[9], •अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे॰ जिणसद्दं पगासेमाणे विहरिते[10] अहण्णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए समणमारए समणपडिणीए आयरिय-उवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा

---

1. सं० पा०—नमंसइ जाव पडिगए।
2. 'ण्हाणेह' इति पाठः समीचीनः प्रतिभाति, किन्तु 'ण्हावेह, ण्हाणेह' इति रूपद्वयमपि लभ्यते।
3. [illegible] (अ, क, म, ता)।
4. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु।
5. घोसेमाणा (अ, स, व);
6. सं० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद्द।
7. भ० १।४:३।
8. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
9. सं० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद्द।
10. विहरइ (क, ता, स)।

उग्घोसेमाणा एव वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरिए । एस ण गोसाले चेव मखलिपुत्ते समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालगए । समणे भगव महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव[1] विहरइ—सवह-पडिमोक्खणग करेति, करेत्ता दोच्च पि पूया-सक्कार-थिरीकरणट्ठयाए गोसालस्स मखलिपुत्तस्स वामाओ पादाओ सुव मुयति, मुइत्ता हालाहलाए कुभकारीए कुभकारावणस्स 'दुवार-वयणाइ'[2] अवगुणति[3], अवगुणित्ता गोसालस्स मखलिपुत्तस्स सरीरग सुरभिणा गधोदएण ण्हाणेति, त चेव जाव[4] महया इड्ढिसक्कारसमुदएण गोसालस्स मखलिपुत्तस्स सरीरगस्स नीहरण करेति ॥

भगवओ रोगायंक-पाउब्भवण-पदं

१४३. तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कदायि सावत्थीओ नगरीओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

१४४ तेण कालेण तेण समएण मेढियगामे[5] नाम नगरे होत्था—वण्णओ[6] । तस्स ण मेढियगामस्स नगरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ ण साणकोट्ठए[7] नाम चेइए होत्था—वण्णओ जाव[8] पुढविसिलापट्टओ । तस्स ण साणकोट्ठगस्स चेइयस्स अदूरसामते, एत्थ ण महेगे मालुयाकच्छए यावि होत्था—किण्हे किण्होभासे जाव[9] महामेहनिकुरवभूए पत्तिए पुप्फिए फलिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे चिट्ठति । तत्थ ण मेंढियगामे नगरे रेवती नाम गाहावइणी परिवसति—अड्ढा जाव[10] वहुजणस्स अपरिभूया ॥

१४५ तए ण समणे भगव महावीरे अण्णदा कदायि पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे[11] °गामाणुगाम दूइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे° जेणेव मेढियगामे नगरे जेणेव साणकोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ जाव[12] परिसा पडिगया ॥

१४६ तए ण समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगसि विपुले रोगायके पाउब्भूए—उज्जले[13] °विउले पगाढे कक्कसे कडुए चडे दुक्खे दुग्गे[14] तिव्वे° दुरहियासे, पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतिए[15] यावि विहरति, अवि याइ लोहिय-वच्चाइ

१. भ० १५।१८१ ।
२. दाराइ (ता) ।
३. अवगुणति (ता) ।
४. भ० १५।१३६ ।
५. मेंढिय° (व), मिंढिय° (स) ।
६. ओव० सू० १ ।
७. किण्ह° (अ, क, ब, म, स) ।
८. ओव० सू० २-१३ ।
९. ओ० सू० ४ ।
१०. भ० ३।६४ ।
११. भ० पा०—चरमाणे जाव जेणेव ।
१२. भ० १।७, ८ ।
१३. भ० पा०—उज्जले जाव दुरहियासे ।
१४. × (ब), दुग्गे (वृपा) ।
१५. दाहवक्कतीए (अ, क, ता, ब, स) ।

उग्घोसेमाणा एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरिए। एस णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालगए। समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव[1] विहरइ—सवह-पडिमोक्खणगं करेंति, करेत्ता दोच्चं पि पूया-सक्कार-थिरीकरण-ट्ठयाए गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स वामाओ पादाओ सुंबं मुयंति, मुइत्ता हाला-हलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स 'दुवार-वयणाइं'[2] अवगुणंति[3], अवगुणित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेंति, तं चेव जाव[4] महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगस्स नीहरणं करेंति॥

भगवओ रोगायंक-पाउब्भवण-पदं

१४३. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कदायि सावत्थीओ नगरीओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ॥

१४४. तेणं कालेणं तेणं समएणं मेंढियगामे[5] नामं नगरे होत्था—वण्णओ[6]। तस्स णं मेंढियगामस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं साणकोट्ठए[7] नामं चेइए होत्था—वण्णओ जाव[8] पुढविसिलापट्टओ। तस्स णं साणकोट्ठगस्स चेइयस्स अदूरसामंते, एत्थ णं महेगे मालुयाकच्छए यावि होत्था—किण्हे किण्हो-भासे जाव[9] महामेहनिकुरंबभूए पत्तिए पुप्फिए फलिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे चिट्ठति। तत्थ णं मेंढियगामे नगरे रेवती नामं गाहावइणी परिवसति—अड्ढा जाव[10] बहुजणस्स अपरिभूया॥

१४५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदायि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे[11] °गामाणु-गामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे° जेणेव मेंढियगामे नगरे जेणेव साणकोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ जाव[12] परिसा पडिगया॥

१४६. तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगंसि विपुले रोगायंके पाउब्भूए—उज्जले[13] °विउले पगाढे कक्कसे कडुए चंडे दुक्खे दुग्गे[14] तिव्वे° दुरहियासे, पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतिए[15] यावि विहरति, अवि याइं लोहिय-वच्चाइं

१. भ० १५।१८१।
२. दाराइं (ता)।
३. अवगुणति (ता)।
४. भ० १५।१३६।
५. मेंढिय० (क), मिंढिय० (व)।
६. ओ० सू० १।
७. [illegible] (क, ख, ता, ब, म)।
८. ओ० सू० १-१३।
९. ओ० सू० ४।
१०. भ० ३।६४।
११. स० पा०—चरमाणे जाव जेणेव।
१२. भ० १।७, ८।
१३. स० पा०—उज्जले जाव दुरहियासे।
१४. × (ब), दुग्गे (वृपा)।
१५. दाहवक्कंतिए (अ, क, ता, ब, म)।

मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छग अतो-अतो अणु-पविसइ अणुपविसित्ता महया-महया सद्देण कुहुकुहुस्स° परुण्णे। त गच्छह ण अज्जो! तुब्भे सीह अणगार सद्दाह[1] ॥

१५० तए ण ते समणा निग्गथा समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ता समाणा समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ साणकोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव मालुयाकच्छए, जेणेव सीहे अणगारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सीह अणगार एव वयासी सीहा! धम्मायरिया सद्दावेति ॥

१५१ तए ण से सीहे अणगारे समणेहि निग्गथेहि सद्धि मालुयाकच्छगाओ पडिनिक्ख-मइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव साणकोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण जाव[2] पज्जुवासति ॥

१५२ सीहादि! समणे भगव महावीरे सीह अणगार एव वयासी—से नूण ते सीहा! झाणतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे[3] °अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगसि विउले रोगायके पाउब्भूए—उज्जले जाव छउमत्थे चेव काल करेस्सति, वदिस्सति य ण अण्णतित्थिया—छउमत्थे चेव कालगए—इमेण एयारूवेण महया मणोमाणसिएण दुक्खेण अभिभूए समाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभित्ता, जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छित्ता मालु-याकच्छग अतो-अतो अणुपविसित्ता महया-महया सद्देण कुहुकुहुस्स° परुण्णे। से नूण ते सीहा! अट्ठे समट्ठे ?

हता अत्थि।

त नो खलु अह सीहा! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स तवेण तेएण अण्णाइट्ठे समाणे अतो छण्ह मासाण[4] °पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतिए छउमत्थे चेव° काल करेस्स। अहण्ण अद्ध सोलस वासाइ जिणे सुहत्थी विहरिस्सामि, त गच्छह ण तुम सीहा! मेंढियगाम नगर, रेवतीए गाहावतिणीए गिह, तत्थ ण रेवतीए गाहावतिणीए मम अट्ठाए दुवे 'कवोय-सरीरा'[5] उवक्खडिया, तेहि नो अट्ठो, अत्थि से अण्णे पारियासिए मज्जारकडए कुक्कुडमसए, तमाहराहि, एएण अट्ठो ॥

---

१ सद्दह ([illegible]) ।
२. [illegible] ।
३ [illegible] ।
४. स० पा०—मासाण जाव काल ।
५. कवोतासरीरा (क, ब), कवोयासरीरा (ता) ।

खामेति, खामेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूरिय जाव[1] आणय-पाणयारणे कप्पे वीइवइत्ता अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं बावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं सुनक्खत्तस्स वि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं [2]•ठिती पण्णत्ता।

से णं भंते! सुनक्खत्ते देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति?

गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाणं° अंतं काहिति ॥

गोसालस्स भवब्भमण-पद

१६६ एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुसिस्से गोसाले नामं मंखलिपुत्ते से णं भंते! गोसाले मंखलिपुत्ते कालमासे कालं किच्चा कहिं गए? कहिं उववन्ने?

एवं खलु गोयमा! मम अंतेवासी कुसिस्से गोसाले नाम मंखलिपुत्ते समणघायए जाव[3] छउमत्थे चेव कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूरिय जाव[4] अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं बावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं गोसालस्स वि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

१६७ से णं भंते! गोसाले देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं[5] •अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति°? कहिं उववज्जिहिति?

गोयमा! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विंझगिरिपायमूले पुंडेसु जणवएसु सयदुवारे नगरे संमुतिस्स रण्णो भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिति। से णं तत्थ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं[6] •अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं° वीइक्कंताणं जाव[7] सुरूवे दारए पयाहिति ॥

१६८ जं रयणिं च णं से दारए जाइहिति, तं रयणिं च णं सयदुवारे नगरे सब्भिंतर-बाहिरिए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वासिहिति ॥

१६९. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते[8] •निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे° संपत्ते 'बारसमे दिवसे'[9] अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं

---

1. भ० १५।१६४।
2. सं० पा०—सेसं जहा सव्वाणुभूतिस्स जाव अंतं।
3. भ० १५।१६१।
4. भ० १५।१६५।
5. सं० पा०—ठिइक्खएणं जाव कहिं।
6. सं० पा०—बहुपडिपुण्णाणं जाव वीइक्कं-ताणं।
7. भ० ११।१४६।
8. सं० पा०—वीइक्कंते जाव संपत्ते।
9. बारसाहदिवसे (अ, क, ख, ता, ब, म, स); द्रष्टव्यम्—भ० ११।१५३ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

सिय, जइ ते तदा सुनक्खत्तेण अणगारेण पभुणा वि होऊण सम्म सहिय[1] •खमिय तितिक्खिय° अहियासिय, जइ ते तदा समणेण भगवया महावीरेण पभुणा वि[2] •होऊण सम्म सहिय खमिय तितिक्खिय° अहियासिय, त नो खलु ते अह तहा सम्म सहिस्स[3] •खमिस्स तितिक्खिस्स° अहियासिस्स, अह ते नवर—सहय सरह ससारहिय तवेण तेएण एगाहच्च कूडाहच्च भासरासि करेज्जामि ॥

१८३. तए ण से विमलवाहणे राया सुमगलेण अणगारेण एव वुत्ते समाणे आसुरुत्ते[4] •रुट्ठे कुविए चडिक्किए° मिसिमिसेमाणे सुमगल अणगार तच्च पि रहसिरेण नोल्लावेहिति ॥

१८४. तए ण से सुमगले अणगारे विमलवाहणेण रण्णा तच्च पि रहसिरेण नोल्लाविए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता तेयासमुग्घाएण समोहण्णिहिति, समोहणित्ता सत्तट्ठ पयाइ पच्चोसक्किहिति, पच्चोसक्कित्ता विमलवाहण राय सहय सरह ससारहिय तवेण तेएण[5] •एगाहच्च कूडाहच्च° भासरासि करेहिति ॥

१८५. सुमगले ण भते ! अणगारे विमलवाहण राय सहय जाव[6] भासरासि करेत्ता कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?

गोयमा ! सुमगले अणगारे विमलवाहण राय सहय जाव भासरासि करेत्ता बहूहि छट्ठट्ठम-दसम[7]-•दुवालसेहि मासद्धमासखमणेहि° विचित्तेहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे बहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणेहिति, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए[8] छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते उड्ढ चदिम जाव[9] गेविज्जविमाणावाससय वीइवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ ण देवाण अजहन्नमणुक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता । तत्थ ण सुमगलस्स वि देवस्स अजहन्नमणुक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता ।

से ण भते ! सुमगले देवे ताओ देवलोगाओ[10] •आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतर चय चइत्ता कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?

गोयमा !° महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[11] सव्वदुक्खाण अत काहिति ॥

---

१. म० पा०—सहिय जाव अहियासिय ।
२. म० पा०—हि जाव अहियासिय ।
३. म० पा०—सहिस्स जाव अहियासिस्स ।
४. म० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि० ।
५. म० पा०—तेएण जाव भासरासि ।
६. भ० १५।१८४ ।
७. म० पा०—दसम जाव विचित्तेहि ।
८. अग जाव (अ, क, ग, ता, ब, स) ।
९. भ० १५।१६५ ।
१०. म० पा०—देवलोगाओ जाव महाविदेहे ।
११. भ० २।७३ ।

प्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से णं तओहिंतो अणंतरं० उव्वट्टित्ता दोच्चं पि सीहेसु उववज्जिहिति[1] । •तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं० किच्चा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उक्कोसकाल[2]•ट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से णं ततो अणंतरं० उव्वट्टित्ता पक्खीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे[3]• दाहवक्कंतीए कालमासे कालं० किच्चा दोच्चं पि तच्चाए वालुय[4]-प्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से णं तओणंतरं० उव्वट्टित्ता दोच्चं पि पक्खीसु उववज्जिहिति[5] । •तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं० किच्चा दोच्चाए सक्करप्पभाए[6] •पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से णं ततो अणंतरं० उव्वट्टित्ता सिरीसवेसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थ[7]•वज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं० किच्चा दोच्चं पि दोच्चाए सक्करप्पभाए[8] •पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से णं तओणंतरं० उव्वट्टित्ता दोच्चं पि सिरीसवेसु उववज्जिहिति[9] । •तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं० किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति[10] ।

•से णं ततो अणंतरं० उव्वट्टित्ता सण्णीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे[11] •दाहवक्कंतीए कालमासे कालं० किच्चा असण्णीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे[12] •दाहवक्कंतीए कालमासे कालं० किच्चा दोच्चं पि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से णं ततो अणंतरं[13] उव्वट्टित्ता जाइं इमाइं खहयरविहाणाइं भवंति, तं जहा—चम्मपक्खीण, लोमपक्खीण, समुग्गपक्खीण, विययपक्खीण, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा जाइं इमाइं

१. स० पा०—उववज्जिहिति जाव किच्चा ।
२. स० पा०—तओहिंतो जाव उव्वट्टित्ता ।
३. स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा ।
४. स० पा०—वालुय जाव उव्वट्टित्ता ।
५. स० पा०—उववज्जिहिति जाव किच्चा ।
६. स० पा०—सक्करप्पभाए जाव उव्वट्टित्ता ।
७. स० पा०—सत्थ जाव किच्चा ।
८. स० पा०—सक्करप्पभाए जाव उव्वट्टित्ता ।
९. स० पा०—उववज्जिहिति जाव किच्चा ।
१०. स० पा०—उववज्जिहिति जाव उव्वट्टित्ता ।
११. स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा ।
१२. स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा ।
१३. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

अणेगसय[1]•सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा° जाइं इमाइं वणस्सइविहाणाइ भवंति, त जहा—रुक्खाण, गुच्छाणं जाव[2] कुहणाण, तेसु अणेगसय[3]•सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो° पच्चायाइस्सइ—उस्सन्न च णं कडुयरुक्खेसु, कडुयवल्लीसु।

सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे[4] •दाहवक्कतीए[5] कालमासे कालं° किच्चा जाइ इमाइ वाउक्काइयविहाणाइ भवति, त जहा—पाईणवायाण जाव[6] सुद्धवायाण तेसु अणेगसयसहस्स[7]•खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा जाइ इमाइ तेउक्काइयविहाणाइ भवति, त जहा—इगालाणं जाव[8] सूरकतमणिनिस्सियाण, तेसु अणेगसयसहस्स[9]•खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा जाइ इमाइ आउक्काइयविहाणाइ भवति, त जहा-ओसाण[10] जाव[11] खातोदगाण, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ—उस्सन्नं च णं खारोदएसु खत्तोदएसु।

सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे[12] •दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा जाइं इमाइ पुढविक्काइयविहाणाइ भवति, तं जहा— पुढवीण, सक्कराण जाव[13] सूरकताण, तेसु अणेगसय[14]•सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो° पच्चायाहिति—उस्सन्न च ण खरबायरपुढविक्काइएसु।

सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे[15] •दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा रायगिहे नगरे बाहिं खरियत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ वि ण सत्थवज्झे[16]•दाहवक्कतीए

---

१ स० पा०—अणेगसय जाव किच्चा।
२ प० १।
३. स० पा०—अणेगसय जाव पच्चायाइस्सइ।
४ स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
५ 'दाहवक्कंतीए' इति पाठः क्वचिद् दृश्यते, किन्तु सर्वत्र [illegible]।
६. प० १।
७ स० पा०—अणेगसयसहस्स जाव किच्चा।
८ प० १।
९ स० पा०—अणेगसयसहस्स जाव किच्चा।
१०. उस्साण (क, ग, व)।
११ प० १।
१२ स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
१३. प० १।
१४ स० पा०—अणेगसय जाव पच्चायाहिति।
१५ स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
१६. स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।

केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति। तत्थ वि य ण॰ अविराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति[1]।

से ण तओहिंतो अणतर चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति। तत्थ वि णं अविराहियसामण्णे कालमासे काल किच्चा सणंकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति।

से ण तओहितो एव जहा सणंकुमारे तहा बंभलोए, महासुक्के, आणए, आरणे।

से ण तओहितो[2] •अणतरं चय चइत्ता माणुस्सं विग्गह लभिहिति, लभित्ता केवल बोहि बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति। तत्थ वि य ण॰ अविराहियसामण्णे कालमासे काल किच्चा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति।

से ण तओहितो अणतर चय चइत्ता महाविदेहे वासे जाइं इमाइ कुलाइ भवति—अड्ढाइ जाव[3] अपरिभूयाइ, तहप्पगारेसु कुलेसु पुत्तत्ताए[4] पच्चायाहिति, एवं जहा ओववाइए दढप्पइण्णवत्तव्वया सच्चेववत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा जाव[5] केवलवरनाणदसणे समुप्पज्जिहिति॥

१८७. तए ण से दढप्पइण्णे केवली अप्पणो तीतद्ध आभोएहिइ, आभोएत्ता समणे निग्गंथे सद्दावेहिति, सद्दावेत्ता एव वदिहिइ—एव खलु अह अज्जो! इओ चिरातीयाए अद्धाए गोसाले नाम मंखलिपुत्ते होत्था—समणघायए जाव[6] छउमत्थे चेव कालगए, तम्मूलग च णं अह अज्जो अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरतसंसारकतार अणुपरियट्टिए, त मा ण अज्जो! 'तुब्भ केयि'[7] भवतु आयरियपडिणीए उवज्झायपडिणीए आयरियउवज्झायाण अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए, मा ण से वि एवं चेव अणादीय अणवदग्ग[8] •दीहमद्ध चाउरत॰ संसारकंतार अणुपरियट्टिहिति, जहा ण अहं॥

---

१. अतो अग्रे 'भ, म' संकेतितादर्शयो निम्नवर्ती पाठो विद्यते —
'से ण तओहितो अणतर चय चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति, केवलं बोहिं बुज्झिहिति तत्थ वि य ण अविराहियसामण्णे [illegible] किच्चा ईसाणे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति', किन्तु सौधर्मादिदेवलोकेषु [illegible] कल्पेषु [illegible] न [illegible] लभ्यते।

२. भ॰ पा॰—तओहितो जाव अविराहियसामण्णे।

३. ओ॰ सू॰ १४१।

४. पुमत्ताए (ब)।

५. ओ॰ सू॰ १४२-१५३।

६. भ॰ १५।१८१।

७. तुम केवि (ता)।

८. भ॰ पा॰—अणवदग्गं जाव संसार॰।

सोलसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. अहिगरणि २. जरा ३. कम्मे, ४. जावतिय ५ गगदत्त ६. सुमिणे य ।
७.उवओग८.लोग९ वलि[1]१०.ओहि,११ दीव १२ उदही१३ दिसा१४.थणिते[2]।१।

वाउयाय-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव[3] पज्जुवासमाणे एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! अधिकरणिसि वाउयाए वक्कमति ?
हंता अत्थि ॥

२. से भंते ! किं पुट्ठे उद्दाइ ? अपुट्ठे उद्दाइ ?
गोयमा ! पुट्ठे उद्दाइ, नो अपुट्ठे उद्दाइ ॥

३. से भंते ! किं ससरीरी निक्खमइ ? असरीरी निक्खमइ ?
[4]°गोयमा ! सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ॥

४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! वाउयायस्स णं चत्तारि सरीरया पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए, वेउव्विए, तेयए, कम्मए, । ओरालिय-वेउव्वियाइं विप्पजहाय तेयय-कम्मएहिं निक्खमइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ॥°

---

१. वलि (क, ब), पलि (ता) ।

२. पडिजा (ता [illegible]) ।

३. भ० १।४-१० ।

४ स० पा०—एवं जहा खंदए जाव से तेण-ट्ठेण नो असरीरी निक्खमइ, सूक्ष्म [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

कार्म्मणाद्यपेक्षया औदारिकाद्यपेक्षया त्वशरीरीति (वृ); वृत्ति. पाठः अस्य वृत्तिव्याख्यानस्य संवादी वर्तते । आदर्शानां संक्षिप्तपाठे 'नोअसरीरी' ति पाठो लभ्यते । असौ वृत्तिव्याख्यानात् भिन्नोऽस्ति ।

गोयमा ! सक्के ण देविंदे देवराया भवसिद्धीए, नो अभवसिद्धीए। सम्मदिट्ठीए, नो मिच्छदिट्ठीए। परित्तससारिए, नो अणतससारिए। सुलभबोहिए, नो दुल्लभबोहिए। आराहए, नो विराहए। चरिमे, नो अचरिमे। एव जहा मोउद्देसए सणकुमारे जाव[1] नो अचरिमे ॥

चेय-अचेयकड-कम्म-पदं

४१. जीवाण भते ! कि चेयकडा[2] कम्मा कज्जति ? अचेयकडा कम्मा कज्जंति ?
गोयमा ! जीवाण चेयकडा[3] कम्मा कज्जंति, नो अचेयकडा कम्मा कज्जति ॥

४२ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ[4]—°जीवाण चेयकडा कम्मा कज्जति, नो अचेयकडा कम्मा° कज्जति ?
गोयमा ! जीवाणं आहारोवचिया पोग्गला, बोंदिचिया पोग्गला, कलेवरचिया पोग्गला तहा तहा ण ते पोग्गला परिणमति, नत्थि अचेयकडा कम्मा समणाउसो ! दुट्ठाणेसु, दुसेज्जासु, दुन्निसीहियासु तहा तहा ण ते पोग्गला परिणमति, नत्थि अचेयकडा कम्मा समणाउसो ! आयके से वहाए होति, सकप्पे से वहाए होति, मरणते से वहाए होति तहा तहा ण ते पोग्गला परिणमति, नत्थिअचेयकडा कम्मा समणाउसो ! से तेणट्ठेण[5] °गोयमा ! एव वुच्चइ—जीवाण चेयकडा कम्मा कज्जति, नो अचेयकडा° कम्मा कज्जति। एव नेरइयाण वि। एवजाव[6] वेमाणियाण ॥

४३. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति जाव[7] विहरइ ॥

तइओ उद्देसो

कम्म-पदं

४४. रायगिहे जाव[8] एव वयासी—कति णं भते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तजहा—नाणावरणिज्ज जाव[9] अंतराइय, एव जाव[10] वेमाणियाण ॥

---

१. भ० ३।७३।
२. चेय° (ख)।
३. चेइ° (ता)।
४. अ० ता०—वुच्चइ जाव कज्जति।
५. अ० ता०—तेणट्ठेण जाव कज्जति।
६. पू० प० २।
७. भ० १।५१।
८. भ० १।४-१०।
९. भ० ६।३२।
१०. पू० प० २।

हंता गोयमा ! जे छिदति[1] •तस्स किरिया कज्जति, जस्स छिज्जति नो तस्स किरिया कज्जति, णण्णत्थेगेण° धम्मतराएण ॥

५० सेव भते ! सेव भते ! त्ति[2] ॥

चउत्थो उद्देसो

नेरइयाणं निज्जरा-पदं

५१ रायगिहे जाव[3] एव वयासी—

जावतिय ण भते ! अन्नगिलायए समणे निग्गथे कम्मं निज्जरेति एवतिय कम्म नरएसु नेरइया वासेण वा वासेहि वा वाससएण[4] वा खवयति ? नो इणट्ठे समट्ठे ।

जावतिय ण भते ! चउत्थभत्तिए समणे निग्गथे कम्म निज्जरेति एवतिय कम्मं नरएसु नेरइया वाससएण वा वाससएहि वा वाससहस्सेण[5] वा खवयति ? नो इणट्ठे समट्ठे ।

जावतिय ण भते ! छट्ठभत्तिए समणे निग्गथे कम्म निज्जरेति एवतिय कम्म नरएसु नेरइया वाससहस्सेण वा वाससहस्सेहि वा वाससयसहस्सेण वा खवयति ? नो इणट्ठे समट्ठे ।

जावतिय ण भते ! अट्ठमभत्तिए समणे निग्गथे कम्म निज्जरेति एवतिय कम्मं नरएसु नेरइया वाससयसहस्सेण वा वाससयसहस्सेहि वा वासकोडीए वा खवयति ? नो इणट्ठे समट्ठे ।

जावतियं ण भते ! दसमभत्तिए समणे निग्गथे कम्म निज्जरेति एवतिय कम्मं नरएसु नेरइया वासकोडीए वा वासकोडीहि वा वासकोडाकोडीए वा खवयति ? नो इणट्ठे समट्ठे ॥

५२. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जावतिय अन्नगिलायए समणे निग्गथे कम्म निज्जरेति एवतिय कम्म नरएसु नेरइया वासेण वा वासेहि वा वाससएण वा नो खवयति, जावतिय चउत्थभत्तिए—एव त चेव पुव्वभणिय उच्चारेयव्व जाव वासकोडाकोडीए वा नो खवयति ?

---

१. सं० पा०—छिदति जाव धम्मतराएण ।
२. भ० १।५१ ।
३. द्र० १।४।१० ।
४. वाससएहि (अ, क, ता, म, स) ।
५. वाससहस्सेहि (क, ता, ब) ।

से जहानामए केइ पुरिसे तत्तसि अयकवल्लसि उदगविदु पक्खिवेज्जा, से नूण गोयमा ! से उदगविदू तत्तसि अयकवल्लसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव विद्धसमागच्छइ ?

हता विद्धसमागच्छइ ।

एवामेव गोयमा ! समणाण निग्गथाण अहावायराइ कम्माइ सिढिलीकयाइ, निट्ठियाइं कयाइ, विप्परिणामियाइ खिप्पामेव विद्धत्थाइ भवंति । जावतियं तावतियं पि ण ते वेदण वेदेमाणा महानिज्जरा° महापज्जवसाणा भवति । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—जावतिय अन्नगिलायए[1] समणे निग्गथे कम्मं निज्जरेति त चेव जाव वासकोडाकोडीए वा नो खवयति ॥

५३. सेवं भते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[2] विहरइ ॥

पंचमो उद्देसो

सक्कस्स उक्खित्तपसिणवागरण-पदं

५४. तेणं कालेण तेणं समएण उल्लुयतीरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[3]। एगजंबुए चेइए—वण्णओ[4]। तेण कालेण तेण समएण सामी समोसढे जाव[5] परिसा पज्जुवासति । तेण कालेण तेण समएण सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी—एव जहेव बितियउद्देसए तहेव दिव्वेण जाणविमाणेण आगओ जाव[6] जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[7] °समण भगव महावीर वंदइ नमसइ, वंदित्ता° नमसित्ता एवं वयासी—

देवे ण भते ! महिड्ढिए जाव[8] महेसक्खे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता[9] पभू आगमित्तए ? नो इणट्ठे समट्ठे ।

देवे णं भते ! महिड्ढिए जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू आगमित्तए ? हंता पभू ।

---

१. अन्नगिलायए (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. भ० १।५१ ।
३. ओ० सू० १ ।
४. ओ० सू० २-१३ ।
५. ओ० सू० [illegible] ।
६. भ० १६।३३ ।
७. स० पा०—उवागच्छित्ता जाव नमसित्ता ।
८. भ० १।३३९ ।
९. अपरियादित्ता (क, ग, ब) ।

चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं [1]•तिहिं परिसाहिं, सत्तहिं अणिएहिं, सत्तहिं अणियाहिवईहिं, सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं बहूहिं महासामाणविमाणवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे• जाव[2] दुंदुहि-निग्घोसनाइयरवेणं जेणेव जंबुद्दीवे दीवे, जेणेव भारहे वासे, जेणेव उल्लुयतीरे[3] नगरे, जेणेव एगजंबुए चेइए, जेणेव ममं अंतियं तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तए णं से सक्के देविंदे देवराया तस्स देवस्स तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं तेयलेस्सं असहमाणे ममं अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइं पुच्छित्ता संभंतियवंदणएणं वंदित्ता जाव पडिगए ॥

५६. जावं च णं समणे भगवं महावीरे भगवओ गोयमस्स एयमट्ठं परिकहेति तावं च णं से देवे तं देसं हव्वमागए। तए णं से देवे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते! महासुक्के कप्पे महासामाणे[4] विमाणे एगे मायिमिच्छदिट्ठि-उववन्नए देवे ममं एवं वयासी—परिणममाणा पोग्गला नो परिणया, अपरिणया, परिणमंतीति पोग्गला नो परिणया, अपरिणया। तए णं अहं तं मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगं देवं एवं वयासी—परिणममाणा पोग्गला परिणया, नो अपरिणया; परिणमंतीति पोग्गला परिणया, नो अपरिणया, से कहमेयं भंते! एवं?

५७. गंगदत्तादि[5]! समणे भगवं महावीरे गंगदत्तं देवं एवं वयासी—अहं पि णं गंगदत्ता! एवमाइक्खामि भासेमि पण्णवेमि परूवेमि—परिणममाणा पोग्गला[6] •परिणया, नो अपरिणया; परिणमंतीति पोग्गला परिणया•, नो अपरिणया, सच्चमेसे अट्ठे ॥

५८. तए णं से गंगदत्ते देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने जाव[7] पज्जुवासति[8] ॥

गंगदत्तदेवस्स अप्पविसए पसिण-पदं

५९. तए णं समणे भगवं महावीरे गंगदत्तस्स देवस्स तीसे य[9] •महतिमहालियाए परिसाए• धम्मं परिकहेइ जाव[10] आराहए भवति ॥

---

१. सं० पा०—परिसाहिं जहा सूरियाभस्स जाव
२. राय० सू० ५८ ।
३. [illegible] (अ, ब, स) ।
४. [illegible] (क, ता, ब) ।
५. [illegible] (अ, ब, म) ।
६. सं० पा०—पोग्गला जाव नो ।
७. भ० १।१० ।
८. पज्जुवासंति (म) ।
९. सं० पा० —तीसे य जाव धम्मं ।
१०. ओ० सू० ७१-७७ ।

६४. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं[1] •वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वयासी—गंगदत्तस्स णं भंते ! देवस्स सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती[2] •दिव्वे देवाणुभावे कहिं गते ? कहिं° अणुप्पविट्ठे ?
गोयमा ! सरीरं गए, सरीरं अणुप्पविट्ठे, कूडागारसालादिट्ठंतो जाव[3] सरीरं अणुप्पविट्ठे। अहो णं भंते ! गंगदत्ते देवे महिड्ढिए [4]•महज्जुइए महब्बले महायसे° महेसक्खे ॥

गंगदत्तदेवस्स पुव्वभव-पदं

६५. गंगदत्तेणं भंते ! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवज्जुती से दिव्वे देवाणुभागे किण्णा लद्धे[5] ? •किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ? पुव्वभवे के आसी ? किं नामए वा ? किं वा गोत्तेणं ?
कयरंसि वा गामंसि वा नगरंसि वा निगमंसि वा रायहाणीए वा खेडंसि वा कव्वडंसि वा मडंबंसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहंसि वा आगरंसि वा आसमंसि वा संवाहंसि वा सण्णिवेसंसि वा ?
किं वा दच्चा ? किं वा भोच्चा ? किं वा किच्चा ? किं वा समायरित्ता ? कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म जण्णं गंगदत्तेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवज्जुती से दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए ?

६६. गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणापुरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[6]। सहसंबवणे उज्जाणे—वण्णओ[7]। तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे गंगदत्ते नामं गाहावती परिवसति—अड्ढे जाव[8] बहुजणस्स अपरिभूए ॥

६७. तेणं कालेणं तेणं समएणं मुणिसुव्वए अरहा आदिगरे जाव[9] सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं[10], •आगासगएणं छत्तेणं, आगासियाहिं चामराहिं, आगासफालियामएणं सपायवीढेणं सीहासणेणं, धम्मज्झएणं पुरओ° पकड्ढिज्जमाणेणं-पकड्ढिज्जमाणेणं सीसगणसंपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणु-

---

१. स० पा०—महावीरं जाव एवं।
२. स० पा०—देवज्जुती जाव अणुप्पविट्ठे।
३. राय० सू० १२३।
४. स० पा०—महिड्ढिए जाव महेसक्खे।
५. स० पा०—लद्धे जाव गंगदत्तेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए।
६. ओ० सू० १।
७. भ० ११।५७।
८. भ० २।९४।
९. भ० १।७।
१०. स० पा०—चक्केणं जाव पकड्ढिज्ज०।

नियग[1]-•सयण-सबधि°-परिजणेण जेट्ठपुत्तेण य समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्ढीए जाव[2] दुदुहि-निग्घोसनादितरवेण हत्थिणागपुर मज्भमज्भेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसववणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादिते तित्थगरातिसए पासति । एव जहा उद्दायणे जाव[3] सयमेव आभरणे ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेति, करेत्ता जेणेव मुणिसुव्वए अरहा एव जहेव उद्दायणे तहेव पव्वइए, तहेव एक्कारस अगाइ अहिज्जइ जाव[4] मासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसेइ, भूसेत्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेति, छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा महासुक्के कप्पे महासामाणे विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि जाव[5] गगदत्तदेवत्ताए उववन्ने ॥

७२. तए ण से गगदत्ते देवे अहुणोववन्नमेत्तए समाणे पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तभाव गच्छति, [त जहा—आहारपज्जत्तीए जाव[6] भासा-मणपज्जत्तीए][7] एव खलु गोयमा ! गगदत्तेण देवेण सा दिव्वा देविड्ढी[8] •सा दिव्वा देवज्जुती से दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए ॥

७३. गगदत्तस्स ण भते ! देवस्स केवतिय काल ठिति पण्णत्ता ?
गोयमा ! सत्तरस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥

७४. गगदत्ते ण भते ! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण[9] •भवक्खएण ठिइक्खएण अणतर चय चइत्ता कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! ° महाविदेहे वासे सिज्भिहिति जाव[10] सव्वदुक्खाण अत काहिति ॥

७५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[11] ॥

छट्ठो उद्देसो

सुविण-पद

७६. कतिविहे ण भते ? सुविणदसणे[12] पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे सुविणदसणे पण्णत्ते, तं जहा—अहातच्चे, पताणे, चितासुविणे, तव्विवरीए, अव्वत्तदसणे[13] ॥

---

१. सं० पा०—नियग जाव परिजणेण ।
२. भ० ६।१८२ ।
३. भ० १३।११७ ।
४. भ० ११।११८; ६।१५०, १५१ ।
५. भ० ३।१७ ।
६. भ० ३।१७ ।
७. अतो कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांश. प्रतीयते ।
८. सं० पा०—देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए ।
९. सं० पा०—आउक्खएणं जाव महाविदेहे ।
१०. भ० २।७३ ।
११. भ० १।५१ ।
१२. सुमिण० (अ) ।
१३. अवत्त० (अ, क, स, व) ।

८७. चक्कवट्टिमायरो ण भते ! चक्कवट्टिसि गब्भ वक्कममाणसि कति महासुविणे पासित्ता ण पडिबुज्झति ?
गोयमा ! चक्कवट्टिमायरो चक्कवट्टिसि गब्भ[1] वक्कममाणसि एएसि तीसाए महासुविणाण °इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता ण पडिबुज्झति, त जहा—
गय-उसभ° जाव सिहि च ॥

८८. वासुदेवमायरो ण – पुच्छा ।
गोयमा ! वासुदेवमायरो[2] °वासुदेवसि गब्भ° वक्कममाणसि एएसि चोद्दसण्ह महासुविणाण अण्णयरे सत्त महासुविणे पासित्ता ण पडिबुज्झति ॥

८९ बलदेवमायरो –पुच्छा ।
गोयमा ! बलदेवमायरो जाव एएसि चोद्दसण्ह महासुविणाण अण्णयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ता ण पडिबुज्झति ॥

९०. मडलियमायरो ण भते !—पुच्छा ।
गोयमा ! मडलियमायरो जाव एएसि चोद्दसण्ह महासुविणाण अण्णयर एग महासुविण 'पासित्ता ण'[4] पडिबुज्झति ॥

भगवओ महासुविण-दंसण-पदं

९१. समणे भगव महावीरे छउमत्थकालियाए अतिमराइयसि इमे दस महासुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धे, त जहा—
१. एग च ण मह घोररूवदित्तधर तालपिसाय सुविणे पराजिय पासित्ता ण पडिबुद्धे ।
२. एग च ण मह सुक्किलपक्खग पुसकोइलग[5] सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
३. एग च ण मह चित्तविचित्तपक्खग[6] पुसकोइलग सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धे ।
४ एग च ण मह दामदुग सव्वरयणामयं सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धे ।
५ एग च ण मह सेय गोवग्ग सुविणे पासिता ण पडिबुद्धे ।
६. एग च ण मह पउमसर सव्वओ समता कुसुमिय सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धे ।
७. एग च ण 'मह सागर'[7] उम्मीवीयीसहस्सकलिय भूयाहिं तिण्ण सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धे ।
८ एग च ण मह दिणयरं तेयसा जलतं सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धे ।

---

१. जाव (अ, म, स), जाव गब्भ (क, ता, ब, स) ।
२. स० पा०—[illegible] जाव ।
३. स० पा०—[illegible] जाव [illegible]° ।
४. जाव (अ, क, स, ता, ब, म, स) ।
५ पूसकोइल (अ, क, स, ता, ब) ।
६. चित्तपक्खगं (स, ता) ।
७. महासागर (अ) ।

ण° पडिबुद्धे, तण्ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अणते अणुत्तरे[1] •निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे° केवलवरनाणदसणे समुप्पन्ने ।

९. जण्ण समणे भगव महावीरे एग मह हरिवेरुलिय[2]•वण्णाभेण नियगेण अतेण माणुसुत्तर पव्वय सव्वओ समता आवेढिय परिवेढिय सुविणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्ण समणस्स भगवओ महावीरस्स ओराला कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोया सदेवमणुयासुरे लोए परिभमति—इति खलु समणे भगव महावीरे, इति खलु समणे भगव महावीरे ।

१०. जण्ण समणे भगव महावीरे मदरे पव्वए मदरचूलियाए[3] •उवरि सीहासण-वरगयं अप्पाण सुविणे पासित्ता ण° पडिबुद्धे, तण्ण समणे भगवं महावीरे सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगए केवली[4] धम्म आघवेति[5] •पण्णवेति परूवेति दसेति निदसेति° उवदसेति ॥

सुविण-फल-पदं

९२ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एगं महं हयपति वा गयपतिं वा[6] •नरपतिं वा किन्नरपति वा किंपुरिसपति वा महोरगपति वा गंधव्वपतिं वा° वसभपति वा पासमाणे पासति, द्रुहमाणे द्रुहति, द्रूढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव[7] सव्वदुक्खाण अंत करेति ॥

९३ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग महं दामिणि[8] पाईणपडिणायत दुहओ समुद्दे पुट्ठ पासमाणे पासति, सवेल्लेमाणे सवेल्लेइ, सवेल्लियमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव[9] बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अंत करेति ॥

९४ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग मह रज्जु पाईणपडिणायत दुहओ लोगंते पुट्ठं पासमाणे पासति, छिंदमाणे छिंदति, छिन्नमिति[10] अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति ॥

९५. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एगं मह किण्हसुत्तगं वा[11] •नीलसुत्तग वा लोहिय-सुत्तग वा हालिद्दसुत्तग वा° सुक्किलसुत्तगं वा पासमाणे पासति, उग्गोवेमाणे

---

१. सं० पा०—अणुत्तरे जाव केवल° ।
२. सं० पा०—हरिवेरुलिय जाव पडिबुद्धे ।
३. सं० पा०—मदरचूलियाए जाव पडिबुद्धे ।
४. केवलिपन्नत्त (क); केवलिपन्नत्तं (ठा० १०,१०३) ।
५. सं० पा०—आघवेति जाव उवदंसेति ।
६. सं० पा०—गयपतिं वा जाव वसभपतिं ।
७. भ० १।४४ ।
८. दाम (स) ।
९. तक्खणामेव अप्पाणं (स); तक्खणा चेव (ता)
१०. छिंदमाणमिति (ता) ।
११. सं० पा०—किण्हसुत्तग वा जाव सुक्किल° ।

पासति, तरमाणे तरति, तिण्णमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ॥

१०४. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एगं मह भवण सव्वरयणामय पासमाणे पासति, अणुप्पविसमाणे अणुप्पविसति, अणुप्पविट्ठमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ॥

१०५. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग मह विमाण सव्वरयणामय पासमाणे पासति, दुहमाणे दुहति, दूढमित्ति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ॥

गंध-पोग्गल-पदं

१०६ अह भते ! कोट्ठपुडाण वा जाव[1] केयइपुडाण वा अणुवायसि उब्भिज्जमाणाण वा[2] °निब्भिज्जमाणाण वा उक्किरिज्जमाणाण वा विक्किरिज्जमाणाण वा° ठाणाओ वा ठाण सकामिज्जमाणाण कि कोट्ठे वाति जाव केयई[3] वाति ?
गोयमा ! नो कोट्ठे वाति जाव नो केयई वाति, घाणसहगया पोग्गला वाति[4] ॥

१०७. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[5] ॥

सत्तमो उद्देसो

१०८. कतिविहे ण भते ! उवओगे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे उवओगे पण्णत्ते, एवं जहा उवओगपदं[6] पण्णवणाए तहेव निरवसेस नेयव्व[7], पासणयापदं[8] च नेयव्व[9] ॥

१०९ सेव भते ! सेवं भंते ! त्ति[10] ॥

---

1. राय० सू० ३० ।
2. स० पा०—उब्भिज्जमाणाण वा जाव ठाणाओ, रायपसेणइयसुत्ते (३०) 'उब्भिज्जमाणाणं' इत्यादीनि पदानि किञ्चिदधिकानि [illegible] लभ्यन्ते ।
3. केयई (अ, क, ख, म) ।
4. [illegible] (अ, क, व, म, स) ।
5. भ० १।५१ ।
6. प० २९ ।
7. भाणियव्व (म) ।
8. पासणापद (अ, क, ग, ता, ब, म), प० ३० ।
9. निरवसेस नेयव्व (ख) ।
10. भ० १।५१ ।

विरहिया सव्वेसि जहा पुरत्थिमिल्ले चरिमते तहेव । अजीवा जहेव उवरिल्ले चरिमते तहेव ॥

११५. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते कि जीवा पुच्छा । गोयमा ! नो जीवा, एव जहेव लोगस्स तहेव चत्तारि वि चरिमता जाव उत्तरिल्ले, उवरिल्ले तहेव, जहा[1] दसमसए विमला दिसा तहेव निरवसेस । हेट्ठिल्ले चरिमते जहेव लोगस्स हेट्ठिल्ले चरिमते तहेव, नवर—देसे पचिदिएसु तियभगो त्ति सेस त चेव । एव जहा रयणप्पभाए चत्तारि चरिमता भणिया एव सक्करप्पभाए वि । उवरिम-हेट्ठिल्ला जहा रयणप्पभाए हेट्ठिल्ले । एव जाव अहेसत्तमाए। एव सोहम्मस्स वि जाव अच्चुयस्स । गेवेज्जविमाणाण एव चेव, नवर—उवरिम-हेट्ठिल्लेसु चरिमतेसु देसेसु पचिदियाण वि मज्झिल्लविरहिओ चेव, सेस तहेव । एव जहा गेवेज्जविमाणा तहा अणुत्तरविमाणा वि, ईसिपब्भारा वि ॥

परमाणुपोग्गलस्स गति-पदं

११६ परमाणुपोग्गले ण भते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओ पच्चत्थिमिल्लं चरिमत एगसमएण गच्छति ? पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमताओ पुरत्थिमिल्ल चरिमत एगसमएण गच्छति ? दाहिणिल्लाओ चरिमताओ उत्तरिल्ल[2] •चरिमत एगसमएण° गच्छति ? उत्तरिल्लाओ चरिमताओ दाहिणिल्ल[3] •चरिमत एगसमएण ° गच्छति ? उवरिल्लाओ चरिमताओ हेट्ठिल्ल चरिमत एगसमएण[4] गच्छति ? हेट्ठिल्लाओ चरिमताओ उवरिल्ल चरिमत एगसमएणं गच्छति ? हता गोयमा ! परमाणुपोग्गले ण लोगस्स पुरत्थिमिल्ल त चेव जाव उवरिल्लं चरिमत एगसमएण गच्छति ॥

किरिया-पदं

११७ पुरिसे ण भते ! वास वासति, वास नो वासतीति हत्थ वा पाय वा बाहु वा ऊरु वा आउटावेमाणे[5] वा पसारेमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! जाव च ण से पुरिसे वासं वासति, वास नो वासतीति हत्थ वा पायं वा बाहु वा ऊरु वा आउंटावेति वा पसारेति वा, ताव च ण से पुरिसे काइयाए[6] •अहिगरणियाए पाओसियाए पारितावणियाए पाणातिवायकिरियाए° — पचहि किरियाहि पुट्ठे ॥

१. भ० १०।१।
२. स० पा०—उत्तरिल्लं जाव गच्छति।
३. स० पा०—दाहिणिल्लं जाव गच्छति।
४. एव जाव (अ, क, म, ता, ब, म, स)।
५. आउट्टावेमाणे (ता) सर्वत्रापि।
६. स० पा०—काइयाए जाव पचहि।

नवमो उद्देशो

रुयगिदप्पभाइं-रुयगिदप्पभाइ-रुयगिदप्पभाइं । सेस त चेव जाव वलिचचाए रायहाणीए अण्णेसि च जाव रुयगिदस्स ण उप्पायपव्वयस्स उत्तरे ण छक्कोडि-सए तहेव जाव चत्तालीस जोयणसहस्साइ ओगाहित्ता, एत्थ ण वलिस्स वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो वलिचचा नाम रायहाणी पण्णत्ता । एग जोयण-सयसहस्स पमाण, तहेव जाव वलिपेढस्स उववाओ जाव आयरक्खा सव्व तहेव निरवसेस, नवर—सातिरेग सागरोवम ठिती पण्णत्ता । सेस त चेव जाव[1] वली वइरोयणिदे, वली वइरोयणिदे ॥

१२२ सेव भते ! सेव भते ! जाव[2] विहरइ ॥

दसमो उद्देसो

ओहि-पदं

१२३. कतिविहा[3] ण भते ! ओही पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा ओही पण्णत्ता । ओहीपदं निरवसेस भाणियव्व[4] ॥

१२४. सेव भते ! सेव भते ! जाव[5] विहरइ ॥

इक्कारसमो उद्देसो

दीवकुमारादि-पदं

१२५ दीवकुमारा ण भते ! सव्वे समाहारा ? सव्वे समुस्सासनिस्सासा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं जहा पढमसए वितियउद्देसए दीवकुमाराण वत्तव्वया तहेव जाव[6] समाउया, समुस्सासनिस्सासा[7] ॥

गमविमर्शेय—'से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ रुयगिंदे-रुयगिंदे उप्पायपव्वए ? गोयमा ! रुयगिंदे ण तहिंगं उप्पलाणि पउमाइं कुमुयाइं जाव रुयगिंदवण्णाइं रुयगिंद-लेस्साइं रुयगिंदप्पभाइं, से तेणट्ठेणं रुयगिंदे-रुयगिंदे उप्पायपव्वए' त्ति (वृ) ।

१. भ० २।११८-१२१ ।

२. १।५१ ।

३. कतिविहे (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

४. प० ३३ ।

५. भ० १।५१ ।

६. भ० १।७४, ७५ ।

७. °निस्सासा । एव नागा वि (अ, ता, व, म, स) ।

सत्तरसमं सतं

पढमो उद्देसो

नमो सुयदेवयाए भगवईए

१ कुंजर २.संजय ३ सेलेसि, ४ किरिय ५ ईसाण ६,७. पुढवि ८,९. दग १०,११. वाऊ।
१२ एगिंदिय १३ नाग १४ सुवण्ण, १५. विज्जु १६,१७. वातग्गि[1] सत्तरसे ॥१॥

हत्थिराय-पदं

१. रायगिहे जाव[2] एवं वयासी—उदायी ण भंते ! हत्थिराया कओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता उदायिहत्थिरायत्ताए उववन्ने ?
गोयमा ! असुरकुमारेहिंतो देवेहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता उदायिहत्थिरायत्ताए उववन्ने ॥

२ उदायी णं भंते ! हत्थिराया कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोवमट्ठितियंसि[3] निरयावासंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ॥

३ से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[4] सव्वदुक्खाण अंतं काहिति ॥

४ भूयाणंदे णं भंते ! हत्थिराया कओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता भूयाणंदे हत्थिरायत्ताए उववन्ने ? एवं जहेव उदायी जाव अंतं काहिति ॥

---

१ [illegible] (ता, म, स) ।
२ भ० १।४-१० ।
३ °ट्ठितीयंसि (अ, स, व, म) ।
४. भ० २।७३ ।

गोयमा ! जाव च ण से मूले अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति तावं च ण से पुरिसे काइयाए जाव चउहि किरियाहि पुट्ठे। 'जेसिं पि य ण जीवाण सरीरेहितो कदे[1] निव्वत्तिए जाव वीए निव्वत्तिए ते वि णं जीवा काइयाए जाव चउहि किरियाहि पुट्ठा'[2]। जेसि पि य ण जीवाणं सरीरेहितो मूले निव्वत्तिए ते ण जीवा काइयाए जाव पचहि किरियाहि पुट्ठा। जे वि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे वट्टति ते वि य ण जीवा काइयाए जाव पंचहि किरियाहि पुट्ठा ॥

९. पुरिसे ण भते ! रुक्खस्स कदे पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! जावं च ण से पुरिसे रुक्खस्स कंद पचालेइ वा पवाडेइ वा तावं च ण से पुरिसे काइयाए जाव पचहि किरियाहि पुट्ठे। जेसि पि य ण जीवाण सरीरेहितो मूले निव्वत्तिए जाव वीए निव्वत्तिए ते वि य ण जीवा काइयाए जाव पचहि किरियाहि पुट्ठा ॥

१०. अहे ण भते ! से कदे अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति, तए णं भते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?
गोयमा ! जाव च ण से कदे अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति ताव च ण से पुरिसे काइयाए जाव चउहि किरियाहि पुट्ठे। जेसिं पि य ण जीवाण सरीरेहितो मूले निव्वत्तिए, खधे निव्वत्तिए जाव वीए निव्वत्तिए ते वि णं जीवा काइयाए जाव चउहि किरियाहि पुट्ठा। जेसि पि य णं जीवाण सरीरेहितो कदे निव्वत्तिए ते[3] ण जीवा काइयाए जाव पचहि किरियाहि पुट्ठा। जे वि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे वट्टति ते वि य ण जीवा काइयाए जाव पचहि किरियाहि पुट्ठा। जहा कंदे, एव जाव वीय ॥

११ कति ण भते ! सरीरगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पच सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए जाव[4] कम्मए ॥

१२. कति ण भते ! इदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच इदिया पण्णत्ता, त जहा—सोइदिए जाव[5] फासिदिए ॥

१३ कतिविहे ण भते ! जोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे जोए पण्णत्ते, त जहा—मणजोए, वइजोए, कायजोए ॥

१४ जीवे ण भंते ! ओरालियसरीर निव्वत्तेमाणे कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए। एव पुढविकाइए वि। एव जाव मणुस्से ॥

---

१. [illegible]

२. [illegible]

३. [illegible]

४. भ० १।०८।

५. भ० २।७७।

२०. एयसि[1] णं भंते ! धम्मंसि वा, अधम्मंसि वा, धम्माधम्मंसि वा चक्किया केइ आसइत्तए वा[2], •सइत्तए वा, चिट्ठइत्तए वा, निसीइत्तए वा॰ तुयट्टित्तए वा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

२१. से केण खाइ अट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ जाव सजतासंजते धम्माधम्मे ठिते ?
गोयमा ! सजत-विरत[3]-•पडिहत-पच्चक्खाता॰पावकम्मे धम्मे ठिते, धम्म चेव उवसपज्जित्ताण विहरति । असंजत[4]-•अविरत-अपडिहत-अपच्चक्खात॰-पावकम्मे अधम्मे ठिते, अधम्म चेव उवसपज्जित्ताणं विहरति । सजतासजते धम्माधम्मे ठिते, धम्माधम्म उवसंपज्जित्ताणं विहरति । से तेणट्ठेण जाव धम्माधम्मे ठिते ॥

२२. जीवा ण भते ! कि धम्मे ठिता ? अधम्मे ठिता ? धम्माधम्मे ठिता ?
गोयमा ! जीवा धम्मे वि ठिता, अधम्मे वि ठिता, धम्माधम्मे वि ठिता ॥

२३. नेराइयाण—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया नो धम्मे ठिता, अधम्मे ठिता, नो धम्माधम्मे ठिता । एवं जाव चउरिंदियाण ॥

२४. पचिंदियतिरिक्खजोणियाण—पुच्छा ।
गोयमा ! पचिंदियतिरिक्खजोणिया नो धम्मे ठिता, अधम्मे ठिता, धम्माधम्मे वि ठिता । मणुस्सा जहा जीवा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ॥

बालपंडिय-पदं

२५. अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति जाव परूवेति—एव खलु समणा पंडिया, समणोवासया बालपडिया, जस्स णं एगपाणाए वि दडे अणिक्खित्ते से ण एगतबाले त्ति वत्तव्व सिया ॥

२६. से कहमेयं भते ! एव ?
गोयमा ! जण्ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति जाव एगतबाले त्ति वत्तव्व सिया, जे ते एवमाहसु मिच्छ ते एवमाहसु । अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—एव खलु समणा पडिया, समणोवासगा बालपडिया, जस्स ण एगपाणाए वि दडे निक्खित्ते से ण नो एगंतबाले त्ति वत्तव्व सिया ॥

२७ जीवा ण भते ! कि बाला ? पडिया ? बालपडिया ?
गोयमा ! बाला वि, पडिया वि, बालपडिया वि ॥

२८. नेरइयाण—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया बाला, नो पंडिया, नो बालपडिया । एव जाव चउरिंदिया ॥

---

१. एयंसि (अ, क, ब, म, स); अत्र षष्ठीबहु- [illegible] ।
२. सं० पा०—[illegible] जाव तुयट्टित्तए ।
३. सं० पा०—विरत जाव पावकम्मे ।
४ सं० पा०—असंजत जाव पावकम्मे ।

३३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—देवे णं[1] •महिड्ढिए जाव महेसक्खे पुव्वामेव रूवी भवित्ता° नो पभू अरूविं विउव्वित्ता ण चिट्ठित्तए ?
गोयमा ! अहमेयं जाणामि, अहमेयं पासामि, अहमेयं बुज्झामि, अहमेयं अभिसमण्णागच्छामि[2], 'मए एयं'[3] नायं, मए एयं दिट्ठं, मम एयं बुद्धं, मए एयं अभिसमण्णागयं—जण्णं तहागयस्स जीवस्स सरूविस्स, सकम्मस्स, सरागस्स, सवेदस्स[4], समोहस्स, सलेसस्स, ससरीरस्स, ताओ सरीराओ अविप्पमुक्कस्स एवं पण्णायति, तं जहा—कालत्ते वा जाव सुक्किलत्ते वा, सुब्भिगंधत्ते वा, दुब्भिगंधत्ते वा, तित्तत्ते वा जाव महुरत्ते वा, कक्खडत्ते वा जाव लुक्खत्ते वा। से तेणट्ठेणं गोयमा[5] ! •एवं वुच्चइ—देवे णं महिड्ढिए जाव महेसक्खे पुव्वामेव रूवी भवित्ता नो पभू अरूविं विउव्वित्ता ण° चिट्ठित्तए ॥

३४. सच्चेव णं भंते ! से जीवे पुव्वामेव अरूवी भवित्ता पभू रूविं विउव्वित्ता णं चिट्ठित्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे[6] ॥

३५. •से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सच्चेव णं से जीवे पुव्वामेव अरूवी भवित्ता नो पभू रूविं विउव्वित्ता ण° चिट्ठित्तए ?
गोयमा ! अहमेयं जाणामि[7], •अहमेयं पासामि, अहमेयं बुज्झामि, अहमेयं अभिसमण्णागच्छामि, मए एयं नायं, मए एयं दिट्ठं, मम एयं बुद्धं, मए एयं अभिसमण्णागयं°—जण्णं तहागयस्स जीवस्स अरूविस्स, अकम्मस्स, अरागस्स, अवेदस्स, अमोहस्स, अलेसस्स, असरीरस्स, ताओ सरीराओ विप्पमुक्कस्स नो एवं पण्णायति, तं जहा—कालत्ते वा[8] •जाव सुक्किलत्ते वा, सुब्भिगंधत्ते वा, दुब्भिगंधत्ते वा, तित्तत्ते वा जाव महुरत्ते वा, कक्खडत्ते वा जाव° लुक्खत्ते वा। से तेणट्ठेणं[9] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—सच्चेव णं से जीवे पुव्वामेव अरूवी भवित्ता नो पभू रूविं विउव्वित्ता ण° चिट्ठित्तए ॥

३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[10] ॥

---

१. सं० पा०—णं जाव नो।
२. अभिसमन्नागच्छामि (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३. एयं (ता) सर्वत्र।
४. सवेदगस्स (ता, म)।
५. सं० पा०—गोयमा जाव चिट्ठित्तए।
६. सं० पा०—समट्ठे जाव चिट्ठित्तए।
७. सं० पा०—जाणामि जाव जण्णं।
८. सं० पा०—कालत्ते वा जाव लुक्खत्ते।
९. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव चिट्ठित्तए।
१०. भ० १।५१।

उववज्जित्ता पच्छा संपाउणेज्जा ? पुव्वि संपाउणित्ता पच्छा उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! पुव्वि वा उववज्जित्ता पच्छा सपाउणेज्जा, पुव्वि वा संपाउणित्ता पच्छा उववज्जेज्जा ॥

६८. से केणट्ठेण जाव पच्छा उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! पुढविक्काइयाण तओ समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए । मारणतियसमुग्घाएण समोहण्णमाणे देसेण वा समोहण्णति, सव्वेण वा समोहण्णति, देसेण वा समोहण्णमाणे पुव्वि सपाउणित्ता पच्छा उववज्जेज्जा, सव्वेण समोहण्णमाणे पुव्वि उववज्जेत्ता पच्छा सपाउणेज्जा । से तेणट्ठेण जाव पच्छा उववज्जेज्जा ॥

६९. पुढविक्काइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए[1] समोहए, समोहणित्ता जे भविए ईसाणे कप्पे पुढविक्काइयत्ताए° ? एव चेव ईसाणे वि । एवं जाव अच्चुय-गेवेज्जविमाणे, अणुत्तरविमाणे, ईसिपब्भाराए य एव चेव ॥

७० पुढविक्काइए णं भते ! सक्करप्पभाए पुढवीए समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविक्काइयत्ताए° ? एव जहा रयणप्पभाए पुढविक्काइओ उववाइओ एव सक्करप्पभाए वि पुढविक्काइओ उववाएयव्वो जाव ईसिपब्भाराए । एव जहा रयणप्पभाए वत्तव्वया भणिया, एवं जाव अहेसत्तमाए समोहए ईसिपब्भाराए उववाएयव्वो, सेस त चेव ॥

७१. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[2] ॥

सत्तमो उद्देसो

७२. पुढविक्काइए ण भते ! सोहम्मे कप्पे समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कि पुव्वि उववज्जित्ता पच्छा सपाउणेज्जा ? सेस त चेव ? जहा रयणप्पभाए पुढविक्काइए सव्वकप्पेसु जाव ईसिपब्भाराए ताव उववाइओ, एव सोहम्मपुढविक्काइओ वि सत्तसु वि पुढवीसु उववाएयव्वो जाव अहेसत्तमाए । एवं जहा सोहम्मपुढविक्काइओ सव्वपुढवीसु उववाइओ, एव जाव ईसिपब्भारापुढविक्काइओ सव्वपुढवीसु उववाएयव्वो जाव अहेसत्तमाए ॥

७३ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[3] ॥

---

१ पुढवीए पाठ (अ, क, ख, ता, ब, म, स) । २. भ० १।५१ ।
३ भ० १।५१ ।

इक्कारसमो उद्देसो

८०. वाउक्काइए ण भते ! सोहम्मे कप्पे समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणवाए, तणुवाए, घणवायवलएसु, तणुवायवलएसु वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते० ? सेस त चेव। एव जहा सोहम्मे वाउक्काइओ सत्तसु वि पुढवीसु उववाइओ एव जाव ईसिपब्भारावाउक्काइओ अहेसत्तमाए जाव उववाएयव्वो ॥

८१ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[1] ॥

बारसमो उद्देसो

एगिदिय-पदं

८२ एगिदिया णं भते ! सव्वे समाहारा० ? एवं जहा पढमसए वितियउद्देसए पुढविक्काइयाण वत्तव्वया भणिया सा चेव एगिदियाण इह भाणियव्वा जाव[2] समाउया, समोववन्नगा ॥

८३. एगिदियाण भते ! कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हलेस्सा[3] ०नीललेस्सा काउलेस्सा० तेउलेस्सा ॥

८४. एएसि ण भते ! एगिदियाण कण्हलेस्साण[4] ०नीललेस्साण काउलेस्साण तेउलेस्साण य कयरे कयरेहितो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?० विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा एगिदिया तेउलेस्सा, काउलेस्सा अणतगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ॥

८५. एएसि ण भते ! एगिदियाण कण्हलेसाण इड्ढी० ? जहेव[5] दीवकुमाराण ॥

८६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[6] ॥

---

१. भ० १।५१।
२. भ० १।७८-८१।
३. अ०, स०—कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा।
४. स० पा०—कण्हलेस्साणं जाव विसेसाहिया।
५. भ० १६।१२८।
६. भ० १।५१।

अट्ठारसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. पढमे[1] २ विसाह ३ मायदि ए य ४. पाणाइवाय ५ असुरे य ।
६. गुल ७ केवलि ८. अणगारे, ९. भविए तह १०. सोमिलट्ठारसे[2] ॥१॥

पढम-अपढम-पद

१. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे जाव[3] एव वयासी—जीवे ण भते ! जीव-भावेण कि पढमे ? अपढमे ?
गोयमा ! नो पढमे, अपढमे । एव नेरइए जाव वेमाणिए ॥

२. सिद्धे ण भते ! सिद्धभावेण कि पढमे ? अपढमे ?
गोयमा ! पढमे, नो अपढमे ॥

३. जीवा ण भते ! जीवभावेण किं पढमा ? अपढमा ?
गोयमा ! नो पढमा, अपढमा । एव जाव वेमाणिया ॥

४. सिद्धा ण—पुच्छा ।
गोयमा ! पढमा, नो अपढमा ॥

५. आहारए ण भते ! जीवे आहारभावेण किं पढमे ? अपढमे ?
गोयमा ! नो पढमे, अपढमे । एवं जाव वेमाणिए । पोहत्तिए एवं चेव ॥

६ अणाहारए ण भते ! जीवे अणाहारभावेण—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय पढमे, सिय अपढमे ॥

७ नेरइए ण भते ! जीवे अणाहारभावेण—पुच्छा । एव नेरइए जाव वेमाणिए नो पढमे, अपढमे । सिद्धे पढमे, नो अपढमे ॥

---

१. पढमा (अ, क, ख, ता, ब, म) । 'अ' प्रतावपि एषा गाथा लभ्यते ।

२ [illegible] गाथा क्वचिद्दृश्यते— ३. भ० १।४-१० ।

[illegible] ।

[illegible] ॥ (वृ),

१६. सजोगी, मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए, नवर—जस्स जो जोगो अत्थि। अजोगी जीव मणुस्स-सिद्धा एगत्त-पुहत्तेण पढमा, नो अपढमा ॥

१७. सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता एगत्त-पुहत्तेण जहा अणाहारए ॥

१८. सवेदगो जाव नपुसगवेदगो एगत्त-पुहत्तेण जहा आहारए, नवर – जस्स जो वेदो अत्थि। अवेदओ एगत्त-पुहत्तेण तिसु वि पदेसु जहा अकसायी ॥

१९. ससरीरी जहा आहारए, एव जाव कम्मगसरीरी, जस्स ज अत्थि सरीरं, नवर—आहारगसरीरी[1] एगत्त-पुहत्तेण जहा सम्मदिट्ठी। असरीरी जीवो सिद्धो य एगत्त-पुहत्तेण 'पढमो, नो अपढमो'[2] ॥

२०. पचहि पज्जत्तीहि पचहि अपज्जत्तीहि एगत्त-पुहत्तेण जहा आहारए, नवर—जस्स जा अत्थि जाव वेमाणिया नो पढमा, अपढमा। इमा लक्खणगाहा—

जो जेण पत्तपुव्वो, भावो सो तेण अपढमओ होइ।
सेसेसु होइ पढमो, अपत्तपुव्वेसु भावेसु ॥१॥

चरिम-अचरिम-पदं

२१. जीवे ण भते! जीवभावेण कि चरिमे? अचरिमे?
गोयमा! नो चरिमे, अचरिमे ॥

२२. नेरइए ण भते! नेरइयभावेण—पुच्छा।
गोयमा! सिय चरिमे, सिय अचरिमे। एव जाव वेमाणिए। सिद्धे जहा जीवे ॥

२३ जीवा ण —पुच्छा।
गोयमा! नो चरिमा, अचरिमा। नेरइया चरिमा वि, अचरिमा वि। एव जाव वेमाणिया। सिद्धा जहा जीवा ॥

२४ आहारए सव्वत्थ एगत्तेण सिय चरिमे, सिय अचरिमे, पुहत्तेण चरिमा वि, अचरिमा वि। अणाहारओ जीवो सिद्धो य एगत्तेण वि पुहत्तेण वि 'नो चरिमो, अचरिमो'[3]। सेसट्ठाणेसु एगत्त-पुहत्तेण जहा आहारओ ॥

२५ भवसिद्धीओ जीवपदे एगत्त-पुहत्तेण चरिमे, नो अचरिमे। सेसट्ठाणेसु जहा आहारओ। अभवसिद्धीओ सव्वत्थ एगत्त-पुहत्तेण नो चरिमे, अचरिमे। नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीयजीवा सिद्धा य एगत्त-पुहत्तेण जहा अभवसिद्धीओ ॥

---

१. [illegible] (क, ख, ता)।
२. [illegible] (अ, क, ख, ता, ब, म)।
३. नो चरिमा अचरिमा (क, ख, ता, ब, म)।

बीओ उद्देसो

सक्कस्स कत्तिय-सेट्ठिनाम-पुव्वभव-पद

३८. तेण कालेण तेण समएण विसाहा नाम नगरी होत्था—वण्णओ[1]। वहुपुत्तिए चेइए—वण्णओ[2]। सामी समोसढे जाव[3] पज्जुवासइ। तेण कालेण तेण समएण सक्के देविदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे—एव जहा सोलसमसए वितियउद्देसए तहेव दिव्वेण जाणविमाणेण आगओ, नवर—एत्थ आभियोगा वि अत्थि जाव[4] वत्तीसतिविह नट्टविहि उवदसेत्ता जाव पडिगए॥

३९. भतेत्ति! भगव गोयमे समण भगव महावीर[5] •वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता° एव वयासी—जहा तइयसए ईसाणस्स तहेव कूडागारदिट्ठतो, तहेव पुव्वभवपुच्छा जाव[6] अभिसमन्नागए?

४०. गोयमादि! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी—एव खलु गोयमा! तेण कालेण तेण समएण इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणापुरे नाम नगरे होत्था—वण्णओ[7]। सहसंबवणे[8] उज्जाणे—वण्णओ[9]। तत्थ ण हत्थिणापुरे नगरे कत्तिए नाम सेट्ठी परिवसति अड्ढे जाव[10] वहुजणस्स अपरिभूए, नेगमपढमासणिए, नेगमट्ठसहस्सस्स वहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कोडुवेसु य [11]•मतेसु य रहस्सेसु य गुज्झेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे मेढी पमाण आहारे आलवण चक्खू, मेढिभूए पमाणभूए आहारभूए आलवणभूए° चक्खुभूए, नेगमट्ठसहस्सस्स सयस्स य कुडुवस्स आहेवच्च[12] •पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त आणा-ईसर-सेणावच्च° कारेमाणे पालेमाणे, समणोवासए, अहिगयजीवाजीवे जाव[13] अहापरिग्गहिएहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे विहरइ॥

४१ तेण कालेण तेण समएण मुणिमुव्वए अरहा आदिगरे जहा सोलसमसए तहेव जाव समोसढे जाव[14] परिसा पज्जुवासइ॥

४२. तए ण से कत्तिए सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे एव जहा एक्कारसमसए सुदसणे तहेव निग्गओ जाव[15] पज्जुवासति॥

---

१. ओ० सू० १।
२. ओ० सू० २-१३।
३. ओ० सू० २२-५२।
४. भ० १६।३३, ३।२३।
५. भ० पा०—महावीर जाव एव।
६. भ० ३।२८-३०।
७. ओ० सू० १।
८. सहस्सबवणे (क)।
९. भ० ११।५७।
१०. भ० २।९४।
११ भ० पा०—एव जहा रायपसेणइज्जे चित्ते जाव चक्खुभूए।
१२. भ० पा०—आहेवच्च जाव कारेमाणे।
१३. भ० २।९४।
१४ भ० १६।६७,६८।
१५. भ० ११।११६।

मित्त-नाइ[1]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेह, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेह सम्माणेह, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स पुरओ॰ जेट्ठपुत्ते कुडुंबे ठावेह, ठावेत्ता तं मित्त-नाइ[2]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं॰ जेट्ठपुत्ते आपुच्छह, आपुच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरुहह, दुरुहित्ता मित्त-नाइ[3]-•नियग-सयण-संबंधि॰-परिजणेण जेट्ठपुत्तेहि य समणुगम्ममाणमग्गा सव्विड्ढीए जाव[4] दुंदुहि-निग्घोसनादियरवेणं अकालपरिहीणं चेव मम अंतियं पाउब्भवह ॥

४८. तए णं तं नेगमट्ठसहस्सं पि कत्तियस्स सेट्ठिस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव साइं-साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता विपुलं असणं[5] •पाणं खाइमं साइमं॰ उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ[6]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ॰, तस्सेव मित्त-नाइ[7]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स॰ पुरओ जेट्ठपुत्ते कुडुंबे ठावेति, ठावेत्ता तं मित्त-नाइ[8]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं॰ जेट्ठपुत्ते य आपुच्छइ, आपुच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरुहंति, दुरुहित्ता मित्त-नाइ[9]-•नियग-सयण-संबंधि॰ परिजणेण जेट्ठपुत्तेहि य समणुगम्ममाणमग्गा सव्विड्ढीए जाव[10] दुंदुहि-निग्घोसनादियरवेणं अकालपरिहीणं चेव कत्तियस्स सेट्ठिस्स अंतियं पाउब्भवंति ॥

४९. तए णं से कत्तिए सेट्ठी विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति जहा गंगदत्तो जाव[11] सीयं दुरुहति, दुरुहित्ता मित्त-नाइ[12]-•नियग-सयण-संबंधि॰-परिजणेणं जेट्ठपुत्तेणं नेगमट्ठसहस्सेण य समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्ढीए जाव[13] दुंदुहि-निग्घोसनादियरवेणं हत्थिणापुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, जहा गंगदत्तो जाव[14] आलित्ते णं भंते ! लोए, पलित्ते णं भंते ! लोए, आलित्त-पलित्ते णं भंते ! लोए जाव[15] आणुगामियत्ताए भविस्सति, तं इच्छामि णं भंते ! नेगमट्ठसहस्सेण सद्धिं सयमेव पव्वाविय जाव[16] धम्ममाइक्खियं ॥

---

१. सं० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते ।
२. सं० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते ।
३. सं० पा०—नाइ जाव परिजणेण ।
४. भ० ६।१८२ ।
५. सं० पा०—असणं जाव उवक्खडावेंति ।
६. सं० पा०—नाइ जाव सम्माणेइ ।
७. सं० पा०—नाइ जाव पुरओ ।
८. सं० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते ।
९. सं० पा०—नाइ जाव परिजणेण ।
१०. भ० ६।१८२ ;
११. भ० १६।७१ ।
१२. सं० पा०—नाइ जाव परिजणेणं ।
१३. भ० ६।१८२ ।
१४. भ० १६।७१, ६।२१४ ।
१५. भ० ६।२१४ ।
१६. भ० २।५२ ।

महावीरस्स[1] अतेवासी मागदियपुत्ते नाम अणगारे पगइभद्दए—जहा मडियपुत्ते जाव[2] पज्जुवासमाणे एव वयासी—

५७ से नूण भते ! काउलेस्से पुढविकाइए काउलेस्सेहितो पुढविकाइएहितो अणतर उव्वट्टित्ता माणुस विग्गह लभति, लभित्ता केवल वोहि बुज्झति, बुज्झित्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव[3] सव्वदुक्खाण अत करेति ?
हता मागदियपुत्ता ! काउलेस्से पुढविकाइए जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ॥

५८ से नूण भते ! काउलेस्से[4] आउकाइए काउलेस्सेहितो आउकाइएहितो अणतर उव्वट्टित्ता माणुस विग्गह लभति, लभित्ता केवल वोहि बुज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?
हता मागदियपुत्ता ! जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ॥

५९ से नूण भते ! काउलेस्से वणस्सइकाइए [5]•काउलेसेहितो वणस्सइकाइएहितो अणतर उव्वट्टित्ता माणुस विग्गह लभति, लभित्ता केवल वोहि बुज्झति, बुज्झित्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?
हता मागदियपुत्ता !° जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ॥

६०. सेव भते ! सेव भते ! त्ति मागदियपुत्ते अणगारे समण भगव महावीर[6] •वदइ नमसइ, वदित्ता° नमसित्ता जेणेव समणा निग्गथा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणे निग्गथे एव वयासी—एव खलु अज्जो ! काउलेस्से पुढविकाइए तहेव जाव सव्वदुक्खाण अत करेति । एव खलु अज्जो ! काउलेस्से आउक्काइए तहेव जाव सव्वदुक्खाण अत करेति । एव खलु अज्जो ! काउलेस्से वणस्सइकाइए तहेव जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति ॥

६१. तए ण ते समणा निग्गथा मागदियपुत्तस्स अणगारस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एव परूवेमाणस्स एयमट्ठ नो सद्दहति नो पत्तियति नो रोएति, एयमट्ठ असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोएमाणा जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एव खलु भते ! मागदियपुत्ते अणगारे अम्ह एवमाइक्खति जाव परूवेति—एव खलु अज्जो ! काउलेस्से पुढविकाइए जाव सव्वदुक्खाण अत करेति । एव खलु अज्जो ! काउलेस्से आउक्काइए जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति ! एव खलु अज्जो ! काउलेस्से वणस्सइकाइए वि जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ॥

६२. से कहमेय भते ! एव ?

---

१. [illegible] (स) ।
२. [illegible] ।
३. [illegible] ।
४. काउलेसे (अ, स) ।
५. स० पा०—एव चेव जाव ।
६. स० पा०—महावीर जाव नमसित्ता ।

७ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—छउमत्थे ण मणुस्से तेसि निज्जरापोग्गलाणं नो किचि ग्राणत्त वा नाणत्त वा ग्रोमत्त वा तुच्छत्त वा गरुयत्त वा लहुयत्त वा जाणइ-पासइ ?

मागदियपुत्ता ! देवे वि य ण ग्रत्थेगइए जे ण तेसि निज्जरापोग्गलाण नो किचि आणत्त वा नाणत्त वा ग्रोमत्त वा तुच्छत्त वा गरुयत्त वा लहुयत्त वा जाणइ-पासइ। से तेणट्ठेण मागदियपुत्ता ! एव वुच्चइ—छउमत्थे ण मणुस्से तेसि निज्जरापोग्गलाण नो किचि ग्राणत्त वा नाणत्त वा ग्रोमत्त वा तुच्छत्त वा गरुयत्त वा लहुयत्त वा जाणइ-पासइ, सुहुमा ण ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वलोग पि य ण ते ग्रोगाहित्ता चिट्ठति ॥

८ नेरइया ण भते ! ते निज्जरापोग्गले कि जाणति-पासति ? ग्राहारेति ? उदाहु न जाणति न पासति, न ग्राहारेति ?

मागदियपुत्ता ! नेरइया ण ते निज्जरापोग्गले न जाणति न पासति, ग्राहारेति। एव जाव पचिदियतिरिक्खजोणिया ॥

९. मणुस्सा ण भते ! ते निज्जरापोग्गले कि जाणति-पासति ? ग्राहारेति ? उदाहु न जाणति न पासति, न आहारेति ?

मागदियपुत्ता ! ग्रत्थेगइया जाणति-पासति, ग्राहारेति। ग्रत्थेगइया न जाणति न पासति, ग्राहारेति ॥

१० से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—ग्रत्थेगइया जाणति-पासति, ग्राहारेति ? ग्रत्थेगइया न जाणति न पासति, ग्राहारेति ?

मागदियपुत्ता ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सण्णिभूया य, ग्रसण्णिभूया य। तत्थ ण जे ते ग्रसण्णिभूया ते ण न जाणति न पासति, ग्राहारेति। तत्थ ण जे ते सण्णिभूया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—उवउत्ता य, अणुवउत्ता य। तत्थ ण जे ते ग्रणुवउत्ता ते ण न जाणति न पासति, ग्राहारेति। तत्थ ण जे ते उवउत्ता ते ण जाणति-पासति, ग्राहारेति। से तेणट्ठेण मागदियपुत्ता ! एव वुच्चइ—ग्रत्थेगइया न जाणति न पासति, ग्राहारेति। ग्रत्थेगइया जाणति-पासति, ग्राहारेति। वाणमतर-जोइसिया जहा नेरइया ॥

११. वेमाणिया ण भते ! ते निज्जरापोग्गले कि जाणति-पासति ? ग्राहारेति ?

मागदियपुत्ता ! जहा मणुस्सा, नवर—वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—माइमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य, ग्रमाइसम्मदिट्ठीउववन्नगा य। तत्थ णं जे ते माइमिच्छदिट्ठीउववन्नगा ते ण न जाणति न पासति, ग्राहारेति। तत्थ ण जे ते ग्रमाइसम्मदिट्ठीउववन्नगा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—ग्रणतरोववन्नगा य, परपरोववन्नगा य। तत्थ ण जे ते ग्रणतरोववन्नगा ते ण न जाणति न पासति, ग्राहारेति। तत्थ ण जे ते परपरोववन्नगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य, ग्रपज्जत्तगा य। तत्थ ण जे ते ग्रपज्जत्तगा ते ण न जाणति

६७ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—छउमत्थे ण मणुस्से तेसि निज्जरापोग्गलाण नो किचि आणत्त वा नाणत्त वा ओमत्त वा तुच्छत्त वा गरुयत्त वा लहुयत्त वा जाणइ-पासइ ?
मागदियपुत्ता ! देवे वि य ण अत्थेगइए जे ण तेसि निज्जरापोग्गलाण नो किचि आणत्त वा नाणत्त वा ओमत्त वा तुच्छत्त वा गरुयत्त वा लहुयत्त वा जाणइ-पासइ। से तेणट्ठेण मागदियपुत्ता ! एव वुच्चइ—छउमत्थे ण मणुस्से तेसि निज्जरापोग्गलाण नो किचि आणत्त वा नाणत्त वा ओमत्त वा तुच्छत्त वा गरुयत्त वा लहुयत्त वा जाणइ-पासइ, सुहुमा ण ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वलोग पि य ण ते ओगाहित्ता चिट्ठति ॥

६८. नेरइया ण भते ! ते निज्जरापोग्गले कि जाणति-पासति ? आहारेति ? उदाहु न जाणति न पासति, न आहारेति ?
मागदियपुत्ता ! नेरइया ण ते निज्जरापोग्गले न जाणति न पासति, आहारेति। एव जाव पचिदियतिरिक्खजोणिया ॥

६९ मणुस्सा ण भते ! ते निज्जरापोग्गले कि जाणति-पासति ? आहारेति ? उदाहु न जाणति न पासति, न आहारेति ?
मागदियपुत्ता ! अत्थेगइया जाणति-पासति, आहारेति। अत्थेगइया न जाणति न पासति, आहारेति ॥

७० से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगइया जाणति-पासति, आहारेति ? अत्थेगइया न जाणति न पासति, आहारेति ?
मागदियपुत्ता ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सण्णिभूया य, असण्णिभूया य। तत्थ ण जे ते असण्णिभूया ते ण न जाणति न पासति, आहारेति। तत्थ ण जे ते सण्णिभूया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—उवउत्ता य, अणुवउत्ता य। तत्थ ण जे ते अणुवउत्ता ते ण न जाणति न पासति, आहारेति। तत्थ ण जे ते उवउत्ता ते ण जाणति-पासति, आहारेति। से तेणट्ठेण मागदियपुत्ता ! एव वुच्चइ—अत्थेगइया न जाणति न पासति, आहारेति। अत्थेगइया जाणति-पासति, आहारेति। वाणमतर-जोइसिया जहा नेरइया ॥

७१. वेमाणिया ण भते ! ते निज्जरापोग्गले कि जाणति-पासति ? आहारेति ?
मागदियपुत्ता ! जहा मणुस्सा, नवर—वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—माइमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य, अमायिसम्मदिट्ठीउववन्नगा य। तत्थ ण जे ते माइमिच्छदिट्ठीउववन्नगा ते ण न जाणति न पासति, आहारेति। तत्थ ण जे ते अमायिसम्मदिट्ठीउववन्नगा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—अणतरोववन्नगा य परपरोववन्नगा य। तत्थ ण जे ते अणतरोववन्नगा ते ण न जाणति न पासति, आहारेति। तत्थ ण जे ते परपरोववन्नगा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगा य, अपज्जत्तगा य। तत्थ ण जे ते अपज्जत्तगा ते ण न जाणति

गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय तिरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पण्णत्ते ॥

११४ चउपएसिए ण भते ! खधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे, सिय चउवण्णे, सिय एगगधे, सिय दुगधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय तिरसे, सिय चउरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पण्णत्ते ॥

११५ पचपएसिए ण भते ! खधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे, सिय चउवण्णे, सिय पचवण्णे, सिय एगगधे, सिय दुगधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय तिरसे, सिय चउरसे, सिय पचरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पण्णत्ते ।°
जहा पचपएसिओ एव जाव असखेज्जपएसिओ ॥

११६. सुहुमपरिणए ण भते ! अणतपएसिए खधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
जहा पचपएसिए तहेव निरवसेस ॥

११७ बादरपरिणए ण भते ! अणतपएसिए खधे कतिवण्णे [1]°जाव कतिफासे पण्णत्ते ? °
गोयमा ! सिय एगवण्णे, जाव सिय पचवण्णे, सिय एगगधे, सिय दुगधे, सिय एगरसे जाव सिय पचरसे, सिय चउफासे जाव सिय अट्ठफासे पण्णत्ते ॥

११८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[2] ॥

सत्तमो उद्देसो

केवलि-भासा-पदं

११९ रायगिहे जाव एव वयासी—अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति—एव खलु केवली जक्खाएसेण आइस्सइ, एव खलु केवली जक्खाए-सेण आइट्ठे समाणे आहच्च दो भासाओ भासति, त जहा—मोस वा, सच्चामोस वा, से कहमे[illegible] ! एव [illegible]

गोयमा ! एगे कायपणिहाणे पण्णत्ते । एव जाव वणस्सइकाइयाण ।।

१२८. वेइदियाण—पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहे पणिहाणे, पण्णते त जहा—वइपणिहाणे य, कायपणिहाणे य । एव जाव चउरिदियाण । सेसाण तिविहे वि जाव वेमाणियाणं ।।

१२९. कतिविहे ण भते ! दुप्पणिहाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते, त जहा—मणदुप्पणिहाणे, जहेव पणिहाणेण दडगो भणिओ तहेव दुप्पणिहाणेण वि भाणियव्वो ।।

१३० कतिविहे ण भते ! सुप्पणिहाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते, त जहा—मणसुप्पणिहाणे, वइसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे ।।

१३१ मणुस्साण भते ! कतिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते ? एव चेव ।।

१३२ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[1] विहरइ ।।

१३३ तए ण समणे भगव महावीरे[2] •अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता° बहिया जणवयविहार विहरइ ।।

कालोदाइ-पभितीणं पंचत्थिकाए संदेह-पदं

१३४ तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नगरे । गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव पुढविसिलापट्टओ । तस्स ण गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामते बहवे अण्णउत्थिया परिवसति, त जहा—कालोदाई, सेलोदाई,[3]•सेवालोदाई, उदए, नामुदए, नम्मुदए, अण्णवालए, सेलवालए, संखवालए, सुहत्थी गाहावई ।।

१३५. तए ण तेसि अण्णउत्थियाण अण्णया कयाइ एगयओ सहियाण समुवागयाण सण्णिविट्ठाण सण्णिसण्णाण अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—एव खलु समणे नायपुत्ते पच अत्थिकाए पण्णवेति, त जहा—धम्मत्थिकाय जाव पोग्गलत्थिकाय ।
तत्थ ण समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए पण्णवेति, त जहा—धम्मत्थिकाय, अधम्मत्थिकाय, आगासत्थिकाय, पोग्गलत्थिकाय । एग च णं समणे नायपुत्ते जीवत्थिकाय अरूविकायं जीवकाय पण्णवेति ।
तत्थ ण समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अरूविकाए पण्णवेति, त जहा—धम्मत्थिकाय, अधम्मत्थिकाय, आगासत्थिकाय, जीवत्थिकाय । एग च ण

१४२. तए णं से मद्दुए समणोवासए ते अण्णउत्थिए एव वयासी—
अत्थि ण आउसो! वाउयाए वाति ?
हंता अत्थि।
तुब्भे णं आउसो! वाउयायस्स वायमाणस्स रूवं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे।
अत्थि ण आउसो! घाणसहगया पोग्गला ?
हंता अत्थि।
तुब्भे ण आउसो! घाणसहगयाण पोग्गलाणं रूव पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे।
अत्थि णं आउसो! अरणिसहगए अगणिकाए ?
हंता अत्थि।
तुब्भे णं आउसो! अरणिसहगयस्स अगणिकायस्स रूवं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे।
अत्थि ण आउसो! समुद्दस्स पारगयाइ रूवाइ ?
हंता अत्थि।
तुब्भे णं आउसो! समुद्दस्स पारगयाइ रूवाइं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे।
अत्थि ण आउसो! देवलोगगयाइ रूवाइ ?
हंता अत्थि।
तुब्भे ण आउसो! देवलोगगयाइ रूवाइं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे।
एवामेव आउसो! अहं वा तुब्भे वा अण्णो वा छउमत्थो जइ जो जं न जाणइ न पासइ तं सव्वं न भवति, एवं भे सुबहुए लोए न भविस्सती ति कट्टु ते अण्णउत्थिए एवं पडिभणइ, पडिभणित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं[1] अभिगमेणं जाव[2] पज्जुवासति ॥

भगवया मद्दुयस्स पसंसा-पदं

१४३. मद्दुयादी! समणे भगवं महावीरे मद्दुयं समणोवासगं एवं वयासी—सुट्ठु णं मद्दुया! तुमं ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहु णं मद्दुया! तुमं ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, जे णं मद्दुया! अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा वागरणं वा अण्णायं अदिट्ठं अस्सुतं अमुयं अविण्णायं बहुजणमज्झे आघवेति पण्णवेति परूवेति[3]

१. [illegible] (अ, क, ख, ता)।
२. भ० [illegible]।

३. भ० पा०—पण्णवेति जाव उवदंसेति।

१४९ पुरिसे ण भते ! अंतरे हत्थेण वा [1]•पादेण वा अगुलियाए वा सलागाए वा कट्ठेण वा किलिचेण वा आमुसमाणे वा समुसमाणे वा आलिहमाणे वा विलिहमाणे वा, अण्णयरेण वा तिक्खेण सत्थजाएण आछिदमाणे वा विछिदमाणे वा, अगणिकाएण वा समोडहमाणे तेसि जीवपएसाण किचि आबाह वा विबाह वा उप्पाएइ ? छविच्छेद वा करेइ ?
नो इणट्ठे समट्ठे° । नो खलु तत्थ सत्थ कमति ।।

देवासुर-सगाम-पद

१५० अत्थि ण भते ! देवासुराणं सगामे, देवासुराण सगामे ?
हता अत्थि ।।

१५१. देवासुरेसु ण भते ! सगामेसु वट्टमाणेसु किण्णं तेसि देवाण पहरणरयणत्ताए परिणमति ?
गोयमा ! जण्ण ते देवा तण वा कट्ठं वा पत्त वा सक्कर वा परामुसति[2] तण्णं तेसि देवाणं पहरणरयणत्ताए परिणमति ।
जहेव देवाण तहेव असुरकुमाराण ? नो इणट्ठे समट्ठे । असुरकुमाराणं निच्चं विउव्विया पहरणरयणा पण्णत्ता ।।

देवस्स दीवसमुद्द-अणुपरियट्टण-पदं

१५२. देवे ण भते ! महिड्ढिए जाव महेसक्खे पभू लवणसमुद्द अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छित्तए ?
हता पभू ।।

१५३ देवे णं भते ! महिड्ढिए [3]•जाव महेसक्खे पभू धायइसंड दीव अणुपरियट्टित्ता ण हव्वमागच्छित्तए ?°
हता पभू । एव जाव[4] रुयगवर दीव[5] •अणुपरियट्टित्ता ण हव्वमागच्छित्तए ?°
हता पभू । तेण पर वीईवएज्जा, नो चेव ण अणुपरियट्टेज्जा ।।

देवाणं कम्मक्खवण-काल-पद

१५४. अत्थि ण भंते ! देवा जे अणते कम्मसे जहण्णेण एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेण पचहि वाससएहि खवयति ?
हता अत्थि ।।

---

१. [illegible]
२. [illegible]
३. म० वा०—एवं धायइसंड दीव जाव हंता ।
४. ओ० ३ ।
५. म० वा०—दीव जाव हता ।

निद्ध-लुक्खाइं, अण्णमण्णबद्धाइ, अण्णमण्णपुट्ठाइ, 'अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइं'[1], अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति ?

हंता अत्थि। एवं जाव अहेसत्तमाए॥

२०१. अत्थि ण भते! सोहम्मस्स कप्पस्स अहेदव्वाइ ? एव चेव। एव जाव ईसिपब्भाराए पुढवीए॥

२०२ सेव भते! सेव भते! जाव[2] विहरइ॥

२०३. तए ण समणे भगव महावीरे[3] •अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता° बहिया जणवयविहारं विहरइ॥

सोमिलमाहण-पदं

२०४ तेण कालेण तेण समएण वाणियगामे नाम नगरे होत्था—वण्णओ। दूतिपलासए चेइए—वण्णओ। तत्थ ण वाणियगामे नगरे सोमिले नाम माहणे परिवसति अड्ढे जाव[4] बहुजणस्स अपरिभूए, रिव्वेद[5] जाव[6] सुपरिनिट्ठिए, पचण्ह खडियसयाणं, 'सयस्स य'[7], कुडुबस्स आहेवच्चं[8] •पोरेवच्चं सामित्त भट्टित्त आणा-ईसर-सेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे° विहरइ। तए णं समणे भगव महावीरे जाव समोसढे जाव[9] परिसा पज्जुवासति॥

२०५ तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स अयमेयारूवे[10] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—एव खलु समणे नायपुत्ते पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे[11] इहमागए[12] •इहमपत्ते इहसमोसढे इहेव वाणियगामे नगरे °दूतिपलासए चेइए अहापडिरूव[13] •ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ। त गच्छामि ण समणस्स नायपुत्तस्स अतिय पाउब्भवामि, इमाइ च णं एयारूवाइ अट्ठाइ[14] •हेऊइ पसिणाइ कारणाइ° वागरणाइ पुच्छिस्सामि, त जइ मे से इमाइ एयारूवाइं अट्ठाइ जाव वागरणाइं वागरेहिति ततो ण वदीहामि नमसीहामि जाव पज्जुवासीहामि, अह मे से इमाइ अट्ठाइ जाव

---

१ जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

२ भ० १।५१।

३ सं० पा० — महावीरे जाव बहिया।

४ [illegible]

५ [illegible], रिउव्वेद (क, ख)।

६ [illegible]

७ [illegible]

८ सं० पा० — आहेवच्च जाव विहरइ।

९. ओ० सू० १८।१३७।

१०. सं० पा० — अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था।

११. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

१२. सं० पा० — इहमागए जाव दूतिपलासए।

१३. सं० पा० — अहापडिरूव जाव विहरइ।

१४ सं० पा० — अट्ठाइ जाव वागरणाइ।

२२२. तए णं से सोमिले माहणे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव[1] अहा-परिग्गहिएहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

२२३. भंतेति ! भगव गोयमे समणं भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—पभू ण भते ! सोमिले माहणे देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे। जहेव सखे तहेव निरवसेस जाव[2] सव्वदुक्खाण अतं काहिति ॥

२२४. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[1] विहरइ ॥

तइओ उद्देसो

पुढविकाइय-पदं

५. [1]रायगिहे जाव एव वयासी—सिय भते ! जाव[2] चत्तारि पच पुढविक्काइया एगयओ साधारणसरीर वधति, बधित्ता तओ पच्छा आहारेति वा परिणामेंति वा सरीर वा वधति ?

नो इणट्ठे समट्ठे। पुढविक्काइयाण पत्तेयाहारा पत्तेयपरिणामा पत्तेय सरीर वधति, वधित्ता तओ पच्छा आहारेति वा परिणामेंति वा सरीर वा वंधति ॥

६ तेसि ण भते ! जीवाण कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?

गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा, तेउलेस्सा ॥

७ ते ण भते ! जीवा कि सम्मदिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी[3] ? सम्मामिच्छदिट्ठी ?

गोयमा ! नो सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, नो सम्मामिच्छदिट्ठी ॥

८ ते ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?

गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी, नियमा दुअण्णाणी, त जहा—मतिअण्णाणी य, सुयअण्णाणी य ॥

९. ते ण भते ! जीवा किं मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ?

गोयमा ! नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी ॥

१०. ते ण भते ! जीवा किं सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता ?

गोयमा ! सागारोवउत्ता वि, अणागारोवउत्ता वि ॥

११ ते ण भते ! जीवा किमाहारमाहारेति ?

गोयमा ! दव्वओ ण अणंतपदेसियाइ दव्वाइ—एव जहा पण्णवणाए पढमे आहारुद्देसए जाव[4] सव्वप्पणयाए[5] आहारमाहारेति ॥

१२. ते ण भते ! जीवा जमाहारेति त चिज्जति, ज नो आहारेति त नो चिज्जति, चिण्णे वा से ओद्दाइ पलिसप्पति वा ?

हंता गोयमा ! ते ण जीवा जमाहारेंति तं चिज्जति, ज नो आहारेति जाव पलिसप्पति वा ॥

---

१ इह केन द्वारगाथा क्वचिद् दृश्यते—
सिय लेस्सदिट्ठिणाणे,
जोगुवओगे तहा किमाहारो ।
पाणाइवाय उप्पायठिई,
समुग्घाय उव्वट्टी (वृ) ।

२ यावत्करणाद् द्वौ वा त्रयो वा (वृ) ।

३. मिच्छादिट्ठी (क, ख, ता, ब, म, स) ।

४. प० २८।१ ।

५. सव्वप्पयाए (ब) ।

ठिती उव्वट्टणा य जहा[1] पण्णवणाए सेस त चेव । वाउकाइयाण एव चेव, नाणत्त नवर – चत्तारि समुग्घाया ॥

२३. सिय भते ! जाव चत्तारि पच वणस्सइकाइया—पुच्छा ।
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । अणता वणस्सइकाइया एगयओ साहारणसरीर वधति, वधित्ता तओ पच्छा आहारेति वा परिणामेंति वा सरीर वा वधति । सेस जहा तेउकाइयाण जाव उव्वट्टति, नवर—आहारो नियम छद्दिसि, ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त, सेस त चेव ॥

थावरजीवाणं ओगाहणाए अप्पाबहुत्त-पद

२४. एएसि ण भते ! पुढविकाइयाण आउ-तेउ-वाउ-वणस्सइकाइयाण सुहुमाण वादराण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाण जहण्णुक्कोसियाए ओगाहणाए कयरे कयरे-हितो[2] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! १. सव्वत्थोवा सुहुमनिओयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा २ सुहुमवाउक्काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ३. सुहुमतेउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ४ सुहुम-आउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ५ सुहुम-पुढविक्काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ६. वादर-वाउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ७. वादर-तेउक्काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ८. वादर-आउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ९ वादरपुढवि-काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा १०,११. पत्तेय-सरीरवादरवणस्सइकाइयस्स वादरनिओयस्स एएसि ण पज्जत्तगाण एएसि ण अपज्जत्तगाण जहण्णिया ओगाहणा दोण्ह वि तुल्ला असखेज्जगुणा १२ सुहुमनिगोयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा १३ तस्सेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १४. तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १५ सुहुमवाउकाइयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा १६. तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १७ तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १८-२० एव सुहुमतेउक्काइयस्स वि २१-२३ एव सुहुमआउक्का-इयस्स वि २४-२६ एव सुहुमपुढविकाइयस्स वि २७-२९ एव वादरवाउका-इयस्स वि ३०-३२. एव वादरतेउकाइयस्स वि ३३-३५ एव वादरआउकाइ-यस्स वि ३६-३८ एव वादरपुढविकाइयस्स वि सव्वेसि तिविहेण गमेणं भाणि-यव्व, ३९ वादरनिगोयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा

१. [illegible]
२. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

ठिती उव्वट्टणा य जहा[1] पण्णवणाए सेस त चेव । वाउकाइयाण एव चेव, नाणत्त नवर – चत्तारि समुग्घाया ॥

२३. सिय भते ! जाव चत्तारि पच वणस्सइकाइया— पुच्छा ।
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । अणता वणस्सइकाइया एगयओ साहारणसरीरं वंधति, वधित्ता तओ पच्छा आहारेति वा परिणामेति वा सरीर वा ववति । सेस जहा तेउकाइयाण जाव उव्वट्टति, नवर—आहारो नियम छद्दिसि, ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त, सेस त चेव ॥

थावरजीवाणं ओगाहणाए अप्पावहुत्त-पद

२४. एएसि ण भते ! पुढविकाइयाण आउ-तेउ-वाउ-वणस्सइकाइयाणं सुहुमाण वादराण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाण जहण्णुक्कोसियाए ओगाहणाए कयरे कयरेहितो[2] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! १. सव्वत्थोवा सुहुमनिओयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा २ सुहुमवाउक्काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ३. सुहुमतेउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ४. सुहुमआउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ५ सुहुमपुढविक्काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ६. वादरवाउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ७. वादरतेउक्काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ८. वादरआउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ९ वादरपुढविकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा १०,११ पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइयस्स वादरनिओयस्स एएसि ण पज्जत्तगाण एएसि ण अपज्जत्तगाण जहण्णिया ओगाहणा दोण्ह वि तुल्ला असखेज्जगुणा १२ सुहुमनिगोयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा १३. तस्सेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १४. तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १५ सुहुमवाउकाइयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा १६. तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १७ तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १८-२० एव सुहुमतेउक्काइयस्स वि २१-२३ एव सुहुमआउक्काइयस्स वि २४-२६ एव सुहुमपुढविकाइयस्स वि २७-२९ एव वादरवाउकाइयस्स वि ३०-३२ एवं वादरतेउकाइयस्स वि ३३-३५ एव वादरआउकाइयस्स वि ३६-३८ एव वादरपुढविकाइयस्स वि सव्वेसि तिविहेणं गमेण भाणियव्वं, ३९ वादरनिगोयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा

---

१. प० ४,६ ।

२. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

सरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमवाउसरीराणं[1] जावइया सरीरा से एगे सुहुमतेउसरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमतेउकाइयसरीराणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमे आउसरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमआउक्काइयसरीराणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमे पुढविसरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमपुढविकाइयसरीराणं जावइया सरीरा से एगे बादरवाउसरीरे, असंखेज्जाणं बादरवाउक्काइयाणं जावइया सरीरा से एगे बादरतेउसरीरे, असंखेज्जाणं बादरतेउकाइयाणं जावइया सरीरा से एगे बादरआउसरीरे, असंखेज्जाणं बादरआउकाइयाणं जावइया सरीरा से एगे बादरपुढविसरीरे। एमहालए णं गोयमा! पुढविसरीरे पण्णत्ते॥

पुढविकाइयस्स सरीरोगाहणा-पदं

३४. पुढविकाइयस्स णं भंते! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता?

गोयमा! से जहानामए रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स वण्णगपेसिया तरुणी बलवं जुगवं जुवाणी अप्पायंका [2]•थिरग्गहत्था दढपाणि-पाय-पास-पिट्ठंतरोरु-परिणता तलजमलजुयल-परिघनिभबाहू उरस्सबलसमण्णागया लंघण-पवण-जइण-वायाम-समत्था छेया दक्खा पत्तट्ठा कुसला मेहावी निउणा° निउण-सिप्पोवगया तिक्खाए वइरामईए सण्हकरणीए तिक्खेण वइरामएणं वट्टावर-एणं एगं महं पुढविकाइयं जतुगोलासमाणं गहाय पडिसाहरिय-पडिसाहरिय पडिसंखिविय-पडिसंखिविय जाव इणामेवत्ति कट्टु तिसत्तक्खुत्तो ओप्पीसेज्जा, तत्थ णं गोयमा! अत्थेगतिया पुढविक्काइया आलिद्धा अत्थेगतिया पुढविक्का-इया नो आलिद्धा, अत्थेगतिया संघट्टिया अत्थेगतिया नो संघट्टिया, अत्थेग-तिया परियाविया अत्थेगतिया नो परियाविया, अत्थेगतिया उद्दविया अत्थेग-तिया नो उद्दविया, अत्थेगतिया पिट्ठा अत्थेगतिया नो पिट्ठा, पुढविकाइयस्स णं गोयमा! एमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता॥

पुढविकाइयस्स वेदणा-पदं

३५. पुढविकाइए णं भंते! अक्कंते समाणे केरिसियं वेदणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ?

गोयमा! से जहानामए—केइ पुरिसे तरुणे बलवं [3]•जुगवं जुवाणे अप्पातंके थिरग्गहत्थे दढपाणि-पाय-पास-पिट्ठंतरोरुपरिणते तलजमलजुयल-परिघनिभ-बाहू चम्मेट्ठग-दुहण-मुट्ठिय-समाहत-निचितगत्तकाए उरस्सबलसमण्णागए लंघण-पवण-जइण-वायाम-समत्थे छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेहावी निउणे°

---

१. सुहुमवाउकाइयाणं ति क्वचित्पाठः (वृ)।

२. सं० पा०—वण्णओ जाव निउणसिप्पोवगया, नवरं—चम्मेट्ठ-दुहण-मुट्ठियसमाहयणिचिय-गत्तकाया न भण्णति, सेसं तं चेव जाव निउण°।

३. सं० पा०—बलवं जाव निउण°।

सरीरे, असखेज्जाणं सुहुमवाउसरीराण[1] जावइया सरीरा से एगे सुहुमतेउसरीरे, असखेज्जाण सुहुमतेउकाइयसरीराण जावइया सरीरा से एगे सुहुमे आउसरीरे, असखेज्जाण सुहुमआउक्काइयसरीराण जावइया सरीरा से एगे सुहुमे पुढवि-सरीरे, असखेज्जाण सुहुमपुढविकाइयसरीराण जावइया सरीरा से एगे बादर-वाउसरीरे, असखेज्जाणं बादरवाउक्काइयाण जावइया सरीरा से एगे बादर-तेउसरीरे, असखेज्जाण बादरतेउकाइयाण जावइया सरीरा से एगे बादरआउ-सरीरे, असखेज्जाण बादरआउकाइयाण जावइया सरीरा से एगे बादरपुढवि-सरीरे। एमहालए ण गोयमा! पुढविसरीरे पण्णत्ते॥

पुढविकाइयस्स सरीरोगाहणा-पदं

३४. पुढविकाइयस्स ण भते! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता?
गोयमा! से जहानामए रण्णो चाउरतचक्कवट्टिस्स वण्णगपेसिया तरुणी बलव जुगव जुवाणी अप्पायका [2]°थिरग्गहत्था दढपाणि-पाय-पास-पिट्ठतरोरु-परिणता तलजमलजुयल-परिघनिभबाहू उरस्सबलसमण्णागया लघण-पवण-जइण-वायाम-समत्था छेया दक्खा पत्तट्ठा कुसला मेहावी निउणा° निउण-सिप्पोवगया तिक्खाए वइरामईए सण्हकरणीए तिक्खेण वइरामएण वट्टावर-एण एग मह पुढविकाइय जतुगोलासमाण गहाय पडिसाहरिय-पडिसाहरिय पडिसखिविय-पडिसखिविय जाव इणामेवत्ति कट्टु तिसत्तक्खुत्तो ओप्पीसेज्जा, तत्थ ण गोयमा! अत्थेगतिया पुढविक्काइया आलिद्धा अत्थेगतिया पुढविक्का-इया नो आलिद्धा, अत्थेगतिया सघट्टिया अत्थेगतिया नो सघट्टिया, अत्थेग-तिया परियाविया अत्थेगतिया नो परियाविया, अत्थेगतिया उद्दविया अत्थेग-तिया नो उद्दविया, अत्थेगतिया पिट्ठा अत्थेगतिया नो पिट्ठा, पुढविकाइयस्स ण गोयमा! एमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता॥

पुढविकाइयस्स वेदणा-पदं

३५. पुढविकाइए ण भते! अक्कते समाणे केरिसियं वेदणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ?
गोयमा! से जहानामए—केइ पुरिसे तरुणे बलवं [3]°जुगव जुवाणे अप्पातके थिरग्गहत्थे दढपाणि-पाय-पास-पिट्ठतरोरुपरिणते तलजमलजुयल-परिघनिभ-बाहू चम्मेट्ठग-दुहण-मुट्ठिय-समाहत-विचितगत्तकाए उरस्सबलसमण्णागए लघण-पवण-जइण-वायाम-समत्थे छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेहावी निउणे°

---

१. सुहुमवाउकाइयाण इति क्वचित्पाठ (वृ)।

२. स० पा०—वण्णओ जाव निउणसिप्पोवगया, नवर—चम्मेट्ठ-दुहण-मुट्ठियसमाहयणिचिय-गत्तकाया न भणति, सेस त चेव जाव निउण°।

३. सं० पा०—बलव जाव निउण°।

४३. सिय भंते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

४४. सिय भंते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो[1] इणट्ठे समट्ठे ॥

४५. सिय भंते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

४६ सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

४७. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

४८. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

४९. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

५० सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

५१ सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

५२ सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

५३. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एते सोलस भंगा ॥

५४. सिय भंते ! असुरकुमारा महासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं चउत्थो भंगो भाणियव्वो, सेसा पण्णरस भंगा खोडेयव्वा । एवं जाव थणियकुमारा ॥

५५. सिय भंते ! पुढविक्काइया महासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
हंता सिया । एवं जाव—

५६. सिय भंते ! पुढविक्काइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?
हंता सिया । एवं जाव मणुस्सा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥

५७ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. सदृशप्रकरणेपि पूर्ववर्तिसूत्रेषु 'गोयमा' इति पदं लभ्यते । अस्मिन्नुत्तरवर्तिसूत्रेषु च एतत् पदं न दृश्यते ।

गोयमा ! अट्ठविहा कम्मनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा —नाणावरणिज्जकम्म-
निव्वत्ती जाव अतराइयकम्मनिव्वत्ती । एव जाव वेमाणियाणं ॥

८२. कतिविहा ण भते ! सरीरनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा सरीरनिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—ओरालियसरीरनिव्वत्ती
जाव कम्मासरीरनिव्वत्ती ॥

८३ नेरइयाण भते ! कतिविहा सरीरनिव्वत्ती पण्णत्ता ? एवं चेव । एवं जाव
वेमाणियाण, नवर—नायव्व जस्स जइ सरीराणि ॥

८४. कतिविहा ण भते ! सव्विदियनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा सव्विदियनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—सोइदियनिव्वत्ती
जाव फासिदियनिव्वत्ती । एव[1] नेरइयाण जाव थणियकुमाराणं ॥

८५ पुढविकाइयाण—पुच्छा ।
गोयमा ! एगा फासिदियनिव्वत्ती पण्णत्ता । एव जस्स 'जति इंदियाणि'[2] जाव
वेमाणियाण ॥

८६. कतिविहा ण भते ! भासानिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा भासानिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—सच्चभासानिव्वत्ती,
मोसभासानिव्वत्ती, सच्चामोसभासा निव्वत्ती, असच्चामोसभासानिव्वत्ती ।
एव एगिदियवज्ज जस्स जा भासा जाव वेमाणियाणं ॥

८७. कतिविहा णं भंते ! मणनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा मणनिव्वत्ती पण्णत्ता त जहा—सच्चमणनिव्वत्ती जाव
असच्चामोसमणनिव्वत्ती । एव एगिदियविगलिदियवज्ज जाव वेमाणियाण ॥

८८ कतिविहा ण भते ! कसायनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा कसायनिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—कोहकसायनिव्वत्ती
जाव लोभकसायनिव्वत्ती । एव जाव वेमाणियाण ॥

८९. कतिविहा ण भते ! वण्णनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा वण्णनिव्वत्ती त जहा—कालावण्णनिव्वत्ती जाव सुक्किला-
वण्णनिव्वत्ती । एव निरवसेस जाव वेमाणियाण । एवं गधनिव्वत्ती दुविहा
जाव वेमाणियाण । रसनिव्वत्ती पंचविहा जाव वेमाणियाण । फासनिव्वत्ती
अट्ठविहा जाव वेमाणियाण ॥

९० कतिविहा ण भते ! सठाणनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! छव्विहा सठाणनिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—समचउरससठाणनिव्वत्ती
जाव हुंडसठाणनिव्वत्ती ॥

---

१. एव जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) । २ जदिंदियाणि (ता) ।

गोयमा ! दुविहा उवओगनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—सागारोवओगनिव्वत्ती, अणागारोवओगनिव्वत्ती । एवं जाव वेमाणियाणं[1] ॥

१०१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

नवमो उद्देसो

करण-पदं

१०२. कतिविहे णं भंते ! करणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वकरणे, खेत्तकरणे, कालकरणे, भवकरणे, भावकरणे ॥

१०३. नेरइयाणं भंते ! कतिविहे करणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वकरणे जाव भावकरणे । एवं जाव वेमाणियाणं ॥

१०४. कतिविहे णं भंते ! सरीरकरणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे सरीरकरणे पण्णत्ते, तं जहा—ओरालियसरीरकरणे जाव कम्मासरीरकरणे । एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जति सरीराणि ॥

१०५. कतिविहे णं भंते ! इंदियकरणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे इंदियकरणे पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियकरणे जाव फासिंदियकरणे । एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जति इंदियाइं । एवं एएणं कमेणं भासाकरणे चउव्विहे, मणकरणे चउव्विहे, कसायकरणे चउव्विहे, समुग्घायकरणे सत्तविहे, सण्णाकरणे चउव्विहे, लेसाकरणे छव्विहे, दिट्ठीकरणे तिविहे, वेदकरणे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—इत्थिवेदकरणे, पुरिसवेदकरणे, नपुंसगवेदकरणे । एए सव्वे नेरइयादी दंडगा जाव वेमाणियाणं, जस्स जं अत्थि तं तस्स सव्वं भाणियव्वं ॥

१०६. कतिविहे णं भंते ! पाणाइवायकरणे पण्णत्ते ?

---

१. अतोग्रे 'अ, क, व, स' प्रतिषु सङ्ग्रहणीगाथे दृश्येते—
जीवाण निव्वत्ती,
कम्मप्पगडी सरीरनिव्वत्ती ।
सव्विंदियनिव्वत्ती,
भासा य मणे कसाया य ॥१॥
वण्ण रस गंध फासे,
संठाणविही य होइ बोद्धव्वा ।
लेसा दिट्ठी नाणे,
उवओगे चेव जोगे य ॥२॥

वीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

१. बेइंदिय २. मागासे, ३. पाणवहे ४. उवचए य ५. परमाणू ।
६. अंतर ७. बंधे ८. भूमी, ९. चारण १०. सोवक्कमा जीवा ॥१॥

बेइंदियादि-पदं

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच बेंदिया एगयओ साहारणसरीरं बंधंति, बंधित्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधंति ?
नो इणट्ठे समट्ठे । बेंदिया णं पत्तेयाहारा पत्तेयपरिणामा पत्तेयसरीरं बंधंति, बंधित्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधंति ॥

२. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! तओ लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा । एवं जहा एगूणवीसतिमे सए तेउक्काइयाणं जाव[1] उव्वट्टंति, नवरं—सम्मदिट्ठी वि मिच्छदिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छदिट्ठी, दो नाणा दो अण्णाणा नियमं, नो मणजोगी, वइजोगी वि कायजोगी वि, आहारो नियमं छद्दिसिं ।

३. तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सण्णाति वा पण्णाति वा मणेति वा वईति वा—अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे रसे, इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेदेमो ?
नो इणट्ठे समट्ठे, पडिसंवेदेंति पुण ते । ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं, सेसं तं चेव । एवं तेइंदिया वि, एवं चउरिंदिया वि, नाणत्तं इंदिएसु ठितीए य, सेसं तं चेव, ठिती जहा[2] पण्णवणाए ॥

४. सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच पंचिंदिया एगयओ साहारणसरीरं बंधंति ? एवं जहा बेंदियाणं, नवरं—छल्लेसा, दिट्ठी तिविहा वि, चत्तारि नाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए, तिविहो जोगो ॥

---

१. भ० १९।२२ ।   २. प० ४ ।

अत्थिउद्देसो तहेव इह वि भाणियव्वं, नवरं—अभिलावो जाव[1] धम्मत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव ओगाहित्ता णं चिट्ठति । एवं जाव पोग्गलत्थिकाए ॥

१२. अहेलोए णं भंते ! धम्मत्थिकायस्स केवतियं ओगाढे ?
गोयमा ! सातिरेगं अद्धं ओगाढे । एवं एएणं अभिलावेणं जहा बितियसए जाव[2]—

१३. ईसिपब्भारा णं भंते ! पुढवी लोयागासस्स किं संखेज्जइभागं ओगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! नो संखेज्जइभागं ओगाढा, असंखेज्जइभागं ओगाढा, नो संखेज्जे भागे ओगाढा, नो असंखेज्जे भागे ओगाढा, नो सव्वलोयं ओगाढा । सेसं तं चेव ॥

अत्थिकायस्स अभिवयण-पदं

१४. धम्मत्थिकायस्स णं भंते ! केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मे इ वा, धम्मत्थिकाये इ वा, पाणाइवायवेरमणे इ वा, मुसावायवेरमणे इ वा, एवं जाव परिग्गहवेरमणे इ वा, कोहविवेगे इ वा जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे इ वा, रियासमिती इ वा, भासासमिती इ वा, एसणासमिती इ वा, आयाणभंडमत्तनिक्खेवसमिती इ वा, उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिती[3] इ वा, मणगुत्ती इ वा, वइगुत्ती इ वा, कायगुत्ती इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते धम्मत्थिकायस्स अभिवयणा ॥

१५. अधम्मत्थिकायस्स णं भंते ! केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा—अधम्मे इ वा, अधम्मत्थिकाए इ वा, पाणाइवाए इ वा जाव मिच्छादंसणसल्ले इ वा, रियाअस्समिती इ वा जाव उच्चारपासवण[4]°खेलसिंघाणजल्ल°पारिट्ठावणियाअस्समिती इ वा, मणअगुत्ती इ वा, वइअगुत्ती इ वा, कायअगुत्ती इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते अधम्मत्थिकायस्स अभिवयणा ॥

१६. आगासत्थिकायस्स णं [5]°भंते ! केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता ?°
गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा—आगासे इ वा, आगासत्थि-

---

१. भ० २।१३६-१४५ ।
२. भ० २।१४७-१५३ ।
३. °खेलजल्लसिंघाण° (ख, म, स) ।
४. सं० पा०—उच्चारपासवण जाव पारिट्ठावणिया° ।
५. सं० पा०—पुच्छा ।

ओग्गहे[1] •ईहा अवाए° धारणा, उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे, नेरइयत्ते, असुरकुमारत्ते जाव वेमाणियत्ते, नाणावरणिज्जे जाव अंतराइए, कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा, सम्मदिट्ठी मिच्छदिट्ठी सम्मामिच्छदिट्ठी, चक्खुदंसणे अचक्खुदंसणे ओहिदंसणे केवलदंसणे, आभिणिबोहियनाणे जाव विभंगनाणे, आहारसण्णा भयसण्णा मेहुणसण्णा परिग्गहसण्णा, ओरालियसरीरे वेउव्वियसरीरे आहारगसरीरे तेयगसरीरे कम्मगसरीरे, मणजोगे वइजोगे कायजोगे, सागारोवओगे, अणागारोवओगे, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते नण्णत्थ आयाए परिणमंति ?

हंता गोयमा ! पाणाइवाए जाव सव्वे ते नण्णत्थ आयाए परिणमंति ॥

गब्भं वक्कममाणस्स वण्णादि-पदं

२१. जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे 'कतिवण्णं कतिगंधं'[2] [3]•कतिरसं कतिफासं परिणामं परिणमइ ?

गोयमा ! पंचवण्णं, दुगंधं, पंचरसं, अट्ठफासं परिणामं परिणमइ ॥

२२. कम्मओ णं भंते ! जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ ? कम्मओ णं जए नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ ?

हंता गोयमा ! कम्मओ णं जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ°, कम्मओ णं जए नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ ॥

२३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[4] विहरइ ॥

चउत्थो उद्देसो

इंदियोवचय-पदं

२४. कतिविहे णं भंते ! इंदियोवचए पण्णत्ते ?

गोयमा ! पंचविहे इंदियोवचए पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियोवचए, एवं बितिओ इंदियउद्देसओ निरवसेसो भाणियव्वो जहा[5] पण्णवणाए ॥

२५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे जाव[6] विहरइ ॥

---

१. सं० पा०—ओग्गहे जाव धारणा ।
२. कतिवण्णे कतिगंधे (अ, क, ख, ता, म) ।
३. सं० पा०—एवं जहा बारसमसए पंचमुद्देसे जाव कम्मओ ।
४. भ० १।५१ ।
५. प० १५।२ ।
६. भ० १।५१ ।

२. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसा निद्धा देसे लुक्खे, ४ सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसा निद्धा देसा लुक्खा, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, एवं एए कक्खडेण सोलस भगा, सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं मउएण वि सोलस भगा, एव वत्तीस भगा, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे, एए वत्तीस भगा, सव्वे कक्खडे सव्वे सीए सव्वे निद्धे देसे गरुए देसे लहुए, एत्थ वि वत्तीस भगा, सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए, एत्थ वि वत्तीसं भगा, एव सव्वे एते पचफासे अट्ठावीस भगसय भवति ।

जइ छप्फासे ? १ सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा, एव जाव १६ सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए देसा सीया देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा, एए सोलस भगा, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भगा, सव्वे मउए सव्वे गरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भगा, सव्वे मउए सव्वे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भगा, एए चउसट्ठि भगा, सव्वे कक्खडे सव्वे सीए देसे गरुए देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं जाव सव्वे मउए सव्वे उसिणे देसा गरुया देसा लहुया देसा णिद्धा देसा लुक्खा, एत्थ वि चउसट्ठि भगा, १ सव्वे कक्खडे सव्वे निद्धे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे जाव सव्वे मउए सव्वे लुक्खे देसा गरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा, एए चउसट्ठि भगा, सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे कक्खडे देसे मउए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव जाव सव्वे लहुए सव्वे उसिणे देसा कक्खडा देसा मउया देसा निद्धा देसा लुक्खा, एए चउसट्ठि भगा, सव्वे गरुए सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे जाव सव्वे लहुए सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा सीया देसा उसिणा, एए चउसट्ठि भगा, सव्वे सीए सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए जाव सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा गरुया देसा लहुया, एए,चउसट्ठि भगा, सव्वे एते छप्फासे तिण्णि चउरासीया भगसया भवति ।

जइ सत्तफासे ? १ सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसा लुक्खा ४, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसा उसिणा

एगत्तएहि। ताहे कक्खडेणं एगत्तएण, मउएणं पुहत्तएण, एवं चउसट्ठि भगा कायव्वा। ताहे कक्खडेण पुहत्तएण, मउएण एगत्तएण चउसट्ठि भंगा कायव्वा। ताहे एतेहिं चेव दोहि वि पुहत्तेहि चउसट्ठि भंगा कायव्वा जाव देसा कक्खडा देसा मउया देसा गरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा एसो अपच्छिमो भंगो। सव्वे एते अट्ठफासे दो छप्पन्ना भगसया भवति। एव एते बादरपरिणए अणतपएसिए खधे सव्वेसु सजोएसु बारस छन्नउया भगसया भवंति॥

परमाणु-पद

३७ कतिविहे ण भते! परमाणू पण्णत्ते ?
गोयमा! चउव्विहे परमाणू पण्णत्ते, त जहा—दव्वपरमाणू, खेत्तपरमाणू, कालपरमाणू, भावपरमाणू॥

३८. दव्वपरमाणू ण भते! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—अच्छेज्जे, अभेज्जे, अडज्झे, अगेज्झे॥

३९. खेत्तपरमाणू ण भते! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—अणद्धे, अमज्झे, अपदेसे, अविभाइमे॥

४० कालपरमाणू [1]°ण भते! कतिविहे पण्णत्ते ?°
गोयमा! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे॥

४१ भावपरमाणू ण भते! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—वण्णमते, गधमंते, रसमते, फासमते॥

४२. सेव भते! सेव भते! त्ति जाव[2] विहरइ॥

छट्ठो उद्देसो

पुढविआदीणं आहार-पद

४३. पुढविक्काइए ण भते! इमोसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते! किं पुव्वि उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा? पुव्वि आहारेत्ता पच्छा उववज्जेज्जा?
गोयमा! पुव्वि वा उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा एव जहा सत्तरसमसए

---

१ म० पा०—पुच्छा।

२ भ० १।५१।

४९ आउयाए ण भते ! सोहम्मीसाणाण सणंकुमार-माहिंदाण य कप्पाण अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणोदहि-घणोदहिवलएसु आउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? सेस त चेव । एव एएहि चेव अतरा समोहओ जाव अहेसत्तमाए पुढवीए घणोदहि-घणोदहिवलएसु आउक्काइयत्ताए उववाएयव्वो । एव जाव अणुत्तरविमाणाणं ईसीपब्भाराए य पुढवीए अतरा समोहए जाव अहेसत्तमाए घणोदहि-घणोदहिवलएसु उववाएयव्वो ।।

५० वाउक्काइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एव जहा सत्तरसमसए वाउक्काइयउद्देसए तहा इह वि, नवर—अतरेसु समोहणा नेयव्वा, सेस त चेव जाव अणुत्तरविमाणाण ईसीपब्भाराए य पुढवीए अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए घणवाय-तणुवाए घणवाय-तणुवायवलएसु वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, सेस त चेव जाव से तेणट्ठेण जाव[1] उववज्जेज्जा ।।

५१ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[2] ।।

———

सत्तमो उद्देसो

बंध-पदं

५२ कतिविहे ण भते ! बधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे बधे पण्णत्ते, त जहा—जीवप्पयोगबधे, अणतरबधे, परपरबधे ।।

५३. नेरइयाण भते ! कतिविहे बधे पण्णत्ते ? एव चेव । एव जाव वेमाणियाण ।।

५४. नाणावरणिज्जस्स ण भते ! कम्मस्स कतिविहे बधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे बधे पण्णत्ते, तं जहा—जीवप्पयोगबधे, अणतरबधे, परपरबधे ।।

५५. नेरइयाण भते ! नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कतिविहे बधे पण्णत्ते ? एव चेव । एव जाव वेमाणियाण । एव जाव अतराइयस्स ।।

---

१. भ० १७।७८-८० ।
२. वाचनान्तराभिप्रायेण तु पृथिव्यब्वायु- विषयत्वादुद्देशकत्रयमिदमतोऽष्टम (वृ) ।

४९. आउयाए ण भते ! सोहम्मीसाणाण सणंकुमार-माहिंदाण य कप्पाणं अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणोदहि-घणोदहिवलएसु आउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? सेस त चेव। एव एएहि चेव अतरा समोहओ जाव अहेसत्तमाए पुढवीए घणोदहि-घणोदहिवलएसु आउक्काइयत्ताए उववाएयव्वो। एव जाव अणुत्तरविमाणाण ईसीपब्भाराए य पुढवीए अतरा समोहए जाव अहेसत्तमाए घणोदहि-घणोदहिवलएसु उववाएयव्वो ॥

५०. वाउक्काइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एव जहा सत्तरसमसए वाउक्काइयउद्देसए तहा इह वि, नवर—अतरेसु समोहणा नेयव्वा, सेस त चेव जाव अणुत्तरविमाणाण ईसीपब्भाराए य पुढवीए अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए घणवाय-तणुवाए घणवाय-तणुवायवलएसु वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, सेस त चेव जाव से तेणट्ठेण जाव[1] उववज्जेज्जा ॥

५१. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति[2] ॥

सत्तमो उद्देसो

बंध-पदं

५२. कतिविहे ण भते ! बधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे बधे पण्णत्ते, त जहा—जीवप्पयोगबधे, अणतरबधे, परपरबधे ॥

५३. नेरइयाण भते ! कतिविहे बधे पण्णत्ते ? एवं चेव। एव जाव वेमाणियाण ॥

५४. नाणावरणिज्जस्स ण भते ! कम्मस्स कतिविहे बधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे बधे पण्णत्ते, त जहा—जीवप्पयोगबधे, अणंतरबधे, परंपरबधे ॥

५५. नेरइयाण भते ! नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कतिविहे बधे पण्णत्ते ? एव चेव। एव जाव वेमाणियाण। एव जाव अतराइयस्स ॥

---

१. भ० १७।७८-८०।

२. वाचनान्तराभिप्रायेण तु पृथिव्यब्वायु-विषयत्वादुद्देशकत्रयमिदमतोऽष्टम (वृ)।

अट्ठमो उद्देसो

समयखेत्ते ओसप्पिणि-उस्सप्पिणि-पदं

६२ कति णं भंते ! कम्मभूमीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! पन्नरस कम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा पंच भरहाइं, पंच एरवयाइं, पंच महाविदेहाइं ॥

६३. कति णं भंते ! अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! तीसं अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पंच हेमवयाइं, पंच हेरण्णवयाइं, पंच हरिवासाइं, पंच रम्मगवासाइं, पंच 'देवकुराओ, पंच उत्तरकुराओ'[1] ॥

६४ एयासु णं भंते ! तीसासु अकम्मभूमीसु अत्थि ओसप्पिणीति वा उस्सप्पिणीति वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६५ एएसु णं भंते ! पंचसु भरहेसु, पंचसु एरवएसु अत्थि ओसप्पिणीति वा उस्सप्पिणीति वा ?
हंता अत्थि । एएसु णं पंचसु महाविदेहेसु नेवत्थि ओसप्पिणी, नेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो !

पंचमहव्वइय-चाउज्जाम-धम्म-पदं

६६. एएसु णं भंते ! पंचसु महाविदेहेसु अरहंता भगवंतो पंचमहव्वइयं[2] सपडिक्कमणं धम्मं पण्णवयंति ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
एएसु णं पंचसु भरहेसु, पंचसु एरवएसु, पुरिम-पच्छिमगा दुवे अरहंता भगवंतो पंचमहव्वइयं[3] सपडिक्कमणं धम्मं पण्णवयंति, अवसेसा णं अरहंता भगवंतो चाउज्जामं धम्मं पण्णवयंति । एएसु णं पंचसु महाविदेहेसु अरहंता भगवंतो चाउज्जामं धम्मं पण्णवयंति ॥

तित्थगर-पदं

६७. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए कति तित्थगरा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउवीसं तित्थगरा पण्णत्ता, तं जहा—उसभ-अजिय-संभव-अभिनंदण-

---

१. देवकुरुओ पंच उत्तरकुरुओ (अ, क, ख, ब, म) ।
२ पंचमहव्वइयं पंचाणुव्वइयं (ता, स) ।
३ पंचमहव्वइयं पंचाणुव्वइयं (ता) ।

गोयमा ! जावतिए ण उसभस्स अरहओ कोसलियस्स जिणपरियाए एवइयाइ संखेज्जाइ आगमेस्साण चरिमतित्थगरस्स तित्थे अणुसज्जिस्सति ॥

७४ तित्थ भते ! तित्थ ? तित्थगरे तित्थ ?
गोयमा ! अरहा ताव नियम तित्थकरे, तित्थ पुण चाउवण्णे[1] समणसंघे, त जहा—समणा, समणीओ, सावया, सावियाओ ॥

७५ पवयण भते ! पवयण ? पावयणी पवयण ?
गोयमा ! अरहा ताव नियम पावयणी, पवयण पुण दुवालसंगे गणिपिडगे, त जहा—आयारो[2] °सूयगडो ठाण समवाओ विआहपण्णत्ती णाया-धम्मकहाओ उवासगदसाओ अतगडदसाओ अणुत्तरोववाइयदसाओ पण्हावागरणाइ विवाग-सुय ° दिट्ठिवाओ ॥

उग्गादीणं निग्गथधम्माणुगमण-पदं

७६. जे इमे भते ! उग्गा, भोगा, राइण्णा, इक्खागा, नाया[3], कोरव्वा—एए ण अस्सि धम्मे ओगाहति, ओगाहित्ता अट्ठविह कम्मरयमल पवाहेति, पवाहेत्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?
हता गोयमा ! जे इमे उग्गा, भोगा,[4] °राइण्णा, इक्खागा, नाया, कोरव्वा—एए ण अस्सि धम्मे ओगाहति, ओगाहित्ता अट्ठविह कम्मरयमल पवाहेति, पवाहेत्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण° अत करेति, अत्थेगतिया अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति ॥

७७. कतिविहा ण भते ! देवलोया पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा देवलोया पण्णत्ता, त जहा—भवणवासी, वाणमतरा, जोतिसिया, वेमाणिया ॥

७८ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

———

नवमो उद्देसो

विज्जा-जंघा-चारण-पदं

७९. कतिविहा ण भते ! चारणा पण्णत्ता ?

---

१. चाउवण्णाइण्णे (व, स, वृ), चाउवण्णे (वृपा)।
२. सं० पा०—आयारो जाव दिट्ठिवाओ।
३. नाता (अ, क, ब)।
४. स० पा०—त चेव जाव अत।

णस्स जंघाचारणलद्धी नामं लद्धी समुप्पज्जति। से तेणट्ठेणं[1] °गोयमा ! एवं वुच्चइ° —जंघाचारणे-जंघाचारणे ॥

८५. जंघाचारणस्स णं भंते ! कहं सीहा गती, कहं सीहे गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे[2] °जाव किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं। देवे णं महिड्ढीए जाव महेसक्खे जाव इणामेव-इणामेव त्ति कट्टु केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं तिहिं अच्छरानिवाएहिं° तिसत्तक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छेज्जा, जंघाचारणस्स णं गोयमा ! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए पण्णत्ते[3] ॥

८६. जंघाचारणस्स णं भंते ! तिरियं केवतिए गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं रुयगवरे दीवे समोसरणं करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता तओ पडिनियत्तमाणे बितिएणं उप्पाएणं नंदीसरवरदीवे समोसरणं करेति करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता इह चेइयाइं वंदति, जंघाचारणस्स णं गोयमा ! तिरियं एवतिए गतिविसए पण्णत्ते ॥

८७. जंघाचारणस्स णं भंते ! उड्ढं केवतिए गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं पंडगवणे समोसरणं करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता तओ पडिनियत्तमाणे बितिएणं उप्पाएणं नंदणवणे समोसरणं करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता इह चेइयाइं वंदति, जंघाचारणस्स णं गोयमा ! उड्ढं एवतिए गतिविसए पण्णत्ते। से णं तस्स ठाणस्स अणालोइय-पडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा। से णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते कालं करेति अत्थि तस्स आराहणा ॥

८८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव[4] विहरइ ॥

दसमो उद्देसो

आउय-पदं

८९. जीवा णं भंते किं सोवक्कमाउया ? निरुवक्कमाउया ?
गोयमा ! जीवा सोवक्कमाउया वि, निरुवक्कमाउया वि ॥

---

१. म० पा०—तेणट्ठेणं जाव जंघाचारणे।
२. म० पा०—एवं जहेव विज्जाचारणस्स नवरं तिसत्तखुत्तो।
३. पण्णत्ते, सेसं तं चेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
४. भ० १।५१।

गोयमा ! नेरइया कतिसंचिया वि, अकतिसंचिया वि, अवत्तव्वगसंचिया वि ॥

९८ से केणट्ठेण जाव अवत्तव्वगसंचिया वि ?
गोयमा ! जे णं नेरइया संखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया कतिसंचिया, जे णं नेरइया असंखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया अकतिसंचिया, जे णं नेरइया एक्कएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया अवत्तव्वगसंचिया । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव अवत्तव्वगसंचिया वि । एवं जाव थणियकुमारा ॥

९९ पुढविक्काइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! पुढविकाइया नो कतिसंचिया, अकतिसंचिया, नो अवत्तव्वगसंचिया ॥

१०० से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जाव नो अवत्तव्वगसंचिया ?
गोयमा ! पुढविकाइया असंखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति । से तेणट्ठेणं जाव नो अवत्तव्वगसंचिया । एवं जाव वणस्सइकाइया[1] । बेंदिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया ॥

१०१ सिद्धाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! सिद्धा कतिसंचिया, नो अकतिसंचिया, अवत्तव्वगसंचिया वि ॥

१०२. से केणट्ठेणं जाव अवत्तव्वगसंचिया वि ?
गोयमा ! जे णं सिद्धा संखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा कतिसंचिया, जे णं सिद्धा एक्कएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा अवत्तव्वगसंचिया । से तेणट्ठेणं जाव अवत्तव्वगसंचिया वि ॥

१०३ एएसि णं भंते ! नेरइयाणं कतिसंचियाणं अकतिसंचियाणं अवत्तव्वगसंचियाण य कयरे कयरेहिंतो[2] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया अवत्तव्वगसंचिया, कतिसंचिया संखेज्जगुणा, अकतिसंचिया असंखेज्जगुणा । एवं एगिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं अप्पाबहुगं । एगिंदियाणं नत्थि अप्पाबहुगं ॥

१०४ एएसि णं भंते ! सिद्धाणं कतिसंचियाणं अवत्तव्वगसंचियाण य कयरे कयरेहिंतो[3] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा कतिसंचिया, अवत्तव्वगसंचिया संखेज्जगुणा ॥

---

१. वनस्पतयस्तु यद्यप्यनन्ता उत्पद्यन्ते तथाऽपि प्रवेशनकं विजातीयेभ्य आगतानां यस्तत्रोत्पादस्तद्विवक्षितं, असङ्ख्याता एव विजातीयेभ्य उद्वृत्तास्तत्रोत्पद्यन्त इति सूत्रे उक्तम् (वृ) ।
२. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

समज्जियाण य कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया छक्कसमज्जिया, नोछक्कसमज्जिया संखेज्जगुणा छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा, छक्केहि समज्जिया असंखेज्ज-गुणा, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा। एवं जाव थणिय-कुमारा ॥

११० एएसि णं भंते ! पुढविकाइयाणं छक्केहि समज्जियाणं, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जियाण य कयरे कयरेहिंतो[2] °अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविक्काइया छक्केहि समज्जिया, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा। एवं जाव वणस्सइकाइयाणं। बेइंदियाणं जाव वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं ॥

१११. एएसि णं भंते ! सिद्धाणं छक्कसमज्जियाणं नोछक्कसमज्जियाणं जाव छक्केहि य नोछक्केण य समज्जियाण य कयरे कयरेहिंतो[3] °अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया, छक्केहि सम-ज्जिया संखेज्जगुणा, छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा, छक्कसम-ज्जिया संखेज्जगुणा, नोछक्कसमज्जिया संखेज्जगुणा ॥

वारससमज्जियादि-पद

११२ नेरइया णं भंते ! किं वारससमज्जिया ?, नोवारससमज्जिया ? वारसएण य नोवारसएण य समज्जिया ? वारसएहि समज्जिया ? वारसएहि य नोवारस-एण य समज्जिया ?
गोयमा ! नेरइया वारससमज्जिया वि जाव वारसएहि य नोवारसएण य सम-ज्जिया वि ॥

११३. से केणट्ठेणं जाव समज्जिया वि ?
गोयमा ! जे णं नेरइया वारसएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया वारस-समज्जिया। जे णं नेरइया जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं एक्कारसएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया नोवारससमज्जिया। जे णं नेरइया वारसएणं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं एक्कारसएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया वारसएण य नोवारसएण य

---

१. सं० पा० —कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
३. सं० पा० — कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

ते णं नेरइया चुलसीतीएहिं समज्जिया। जे णं नेरइया नेरहिं चुलसीतीएहि य अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा[1] •दोहि वा तीहिं वा°, उक्कोसेणं तेसीतीएण पवेसणएण[2] पविसंति ते ण नेरइया चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया। से तेणट्ठेण जाव समज्जिया वि। एवं जाव थणियकुमारा। पुढविक्काइया तहेव पच्छिल्लएहि दोहि, नवर—अभिलाओ चुलसीतीओ। एवं जाव वणस्सइ-काइया। बेदिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया॥

११९. सिद्धाण—पुच्छा।
गोयमा! सिद्धा चुलसीतिसमज्जिया वि, नोचुलसीतिसमज्जिया वि, चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया वि, नो चुलसीतीहि समज्जिया, नो चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया॥

१२०. से केणट्ठेण जाव समज्जिया?
गोयमा! जे ण सिद्धा चुलसीतीएण पवेसणएण पविसंति ते ण सिद्धा चुलसीति समज्जिया। जे ण सिद्धा जहण्णेण एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेण तेसीतीएण पवेसणएण पविसंति ते ण सिद्धा नोचुलसीतिसमज्जिया। जे ण सिद्धा चुलसीतीएण अण्णेण य जहण्णेण एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्को-सेण तेसीतीएण पवेसणएण पविसंति ते ण सिद्धा चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया। तेणट्ठेण जाव समज्जिया॥

१२१. एएसि ण भंते! नेरइयाण चुलसीतिसमज्जियाण नोचुलसीतिसमज्जियाण[3]।
—सव्वेसि अप्पाबहुग जहा छक्कसमज्जियाण जाव वेमाणियाण, नवर—अभिलाओ चुलसीतीओ॥

१२२. एएसि ण भंते! सिद्धाण चुलसीतिसमज्जियाण, नोचुलसीतिसमज्जियाण, चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जियाण य कयरे कयरेहितो[4] •अप्पा वा? बहुया वा? तुल्ला वा°? विसेसाहिया वा?
गोयमा! सव्वत्थोवा सिद्धा चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया, चुलसीतिसमज्जिया अणतगुणा, नोचुलसीतिसमज्जिया अणतगुणा॥

१२३. सेव भंते! सेव भंते! त्ति जाव[5] विहरइ॥

---

१. स० पा०—एक्केण वा जाव उक्कोसेण।
२. जाव (अ, क, ग, ता, ब, म, स)।
३. पू०—भ० २०।१०९।
४. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया।
५. भ० १।५१।

६. ते णं भंते ! साली-वीही-गोधूम-जव-जवजवगमूलगजीवे कालओ केवच्चिरं[1] होति ?
गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण असंखेज्ज काल ॥
७. से ण भते ! सालो-वीहो-गोधूम-जव-जवजवगमूलगजोवे पुढवीजीवे, पुणरवि साली-वीही-जव-जवजवगमूलगजीवे केवतिय काल सेवेज्जा ? केवतिय काल गतिरागति करेज्जा ? एव जहा उप्पलुद्देसे। एएण अभिलावेण जाव[2] मणुस्स-जीवे, आहारो जहा[3] उप्पलुद्देसे, ठिती जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण वासपुहुत्तं, समुग्घाया, समोहया, उव्वट्टणा य जहा[4] उप्पलुद्देसे ॥
८. अह भते ! सव्वपाणा जाव सव्वसत्ता साली-वीही-गोधूम-जव-जवजवगमूलग-जीवत्ताए उववण्णपुव्वा ?
हता गोयमा ! असति अदुवा अणतखुत्तो ॥
९ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

२-१० उद्देसो

१० अह भंते ! साली-वीही[5]-॰गोधूम-जव-॰-जवजवाण—एएसि ण जे जीवा कदत्ताए वक्कमति ते ण भते ! जीवा कओहिंतो उववज्जति ? एव कदाहि-गारेण सच्चेव मूलुद्देसो अपरिसेसो भाणियव्वो जाव असति अदुवा अणतखुत्तो ॥
११ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥
१२ एव खधे वि उद्देसओ नेयव्वो। एव तयाए वि उद्देसो भाणियव्वो। साले वि उद्देसो भाणियव्वो। पवाले वि उद्देसो भाणियव्वो। पत्ते वि उद्देसो भाणि-यव्वो। एए सत्त वि उद्देसगा अपरिसेस जहा मूले तहा नेयव्वा। एव पुप्फे वि उद्देसओ, नवर—देवा उववज्जति जहा[6] उप्पलुद्देसे। चत्तारि लेस्साओ, असीति भगा। ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेण अगुलपुहुत्त, सेसं त चेव ॥
१३ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥
१४. जहा पुप्फे एव फले वि उद्देसओ अपरिसेसो भाणियव्वो। एव बीए वि उद्देसओ। एए दस उद्देसगा ॥

---

१ केवचिर (अ, क, स, ब)।
२. भ० ११।३०-३४।
३. भ० ११।३५।
४ भ० ११।३७-३९।
५. स० पा०—वीही जाव जवजवाण।
६. भ० ११।२।

पंचमो वग्गो

१८. अह भंते ! उक्खु-उक्खुवाडिय-वीरण-इक्कड-भमास-सुंठि[1]-सर-वेत्त-तिमिर-सतपोरग[2]-नलाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं जहेव वंसवग्गो तहेव एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा, नवरं—खंधुद्देसे देवो उववज्जति। चत्तारि लेस्साओ, सेसं तं चेव ॥

छट्ठो वग्गो

१९. अह भंते ! सेडिय[3]-भंतिय[4]-कोंतिय-दब्भ-कुस-पव्वग-पोदइल[5] अज्जुण आसाढग-रोहियंस-सुय[6]-वखीर[7]-भुस[8]-एरंड-कुरुकुंद[9]-करकर सुंठ विभंगु महुरतण[10] थुरग[11]-सिप्पिय-सुंकलितणाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं जहेव वंसवग्गो ॥

सत्तमो वग्गो

२० अह भंते ! अब्भरुह[12]-वोयाण[13]-हरितग-तंदुलेज्जग-तण-वत्थुल-पोरग[14]-मज्जार-पाइ[15]-विल्लि[16]-पालक्क-दगपिप्पलिय- दव्वि-सोत्थिक-सायमंडुक्कि[17]-मूलग-सरिसव-अंबिलसाग-जियंतगाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं जहेव वंसवग्गो ॥

---

१. मुंडे (अ); सुंठे (क, ख, ता)।
२. सतवोरग (ख)।
३. सेढिय (स)।
४. भंतिय (अ), भात्तिय (क); भंति (ता); भंतेय (ब)।
५ पदेइल (अ); वोदइल (ता)।
६. मुत (क, ख, ब, स)।
७. पमखीर (ता)।
८. भूस (अ, क, ता, ब)।
९. कुडकुरुकुंद (ता)।
१०. वहुरयण (क, ब), महुरयण (ख)।
११. छुरग (ता)।
१२. अज्भरुह (क, ख, ता, ब)।
१३ वेताण (अ), वायाण (ख)।
१४ वोरग (अ); चोरग (स)।
१५ याइ (ख, म)।
१६ विलि (ता); चिल्लि (ब)।
१७. सायमंडुक्कि (ख, ता, म)।

१७५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त। एव जहा सत्तमगमगो जाव[1] भवादेसो। कालादेसेण जहण्णेण वावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीइं वाससहस्साइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ८॥

१७६ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण वावीसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि वावीसवाससहस्सट्ठितीएसु, एस चेव सत्तमगमगवत्तव्वया जाणियव्वा जाव भवादेसो त्ति। कालादेसेण जहण्णेण चोयालीस वाससहस्साइ, उक्कोसेण छावत्तर वाससयसहस्स, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा ९॥

१७७ जइ आउक्काइयएगिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति—कि सुहुमआउ० ? बादरआउ० ? एव चउक्कओ भेदो भाणियव्वो जहा पुढविक्काइयाणं॥

१७८ आउक्काइए ण भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से ण भंते ! केवइकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु उक्कोसेणं वावीसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। एव पुढविक्काइयगमगसरिसा नव गमगा भाणियव्वा, नवरं—थिवुगाविदुसठिए। ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण सत्त वाससहस्साइं। एव अणुवधो वि। एव तिसु वि गमएसु। ठिती सवेहो तइयछट्ठसत्तमट्ठमनवमेसु गमएसु—भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ, सेसेसु चउसु गमएसु जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण असखेज्जाइ भवग्गहणाइ। ततियगमए कालादेसेण जहण्णेण वावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण सोलसुत्तर वाससयसहस्स, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। छट्ठे गमए कालादेसेण जहण्णेण वावीस वाससहस्साइं अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। सत्तमे गमए कालादेसेण जहण्णेण सत्त वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण सोलसुत्तर वाससयसहस्स, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा। अट्ठमे गमए कालादेसेण जहण्णेणं सत्त वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठावीस वाससहस्साइ चउहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। नवमे[2] गमए भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ,

---

१. भ० २४।१७४।

२. भ० २४।१७४।

वि, मिच्छादिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। दो नाणा, दो अण्णाणा नियम। नो मणजोगी, वइजोगी कायजोगी वि। उवओगो दुविहो वि। चत्तारि सण्णाओ। चत्तारि कसाया। दो इंदिया पण्णत्ता, त जहा—जिब्भिदिए य फासिदिए य। तिण्णि समुग्घाया। सेस जहा पुढविक्काइयाण, नवर—ठिती जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण बारस सवच्छराइ। एव अणुबधो वि। सेस त चेव। भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण सखेज्जाइ भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण सखेज्जं काल, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १॥

१८५ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो एस चेव वत्तव्वया सव्वा २॥

१८६. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो एस चेव बेंदियस्स लद्धी, नवरं—भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइ अडयालीसाए सवच्छरेहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ३॥

१८७ सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि एस चेव वत्तव्वया तिसु वि गमएसु, नवर—इमाइ सत्त नाणत्ताइ—१ सरीरोगाहणा जहा पुढविकाइयाण २. नो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी ३ दो अण्णाणा नियम ४. नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी ५. ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त ६ अज्झवसाणा अपसत्था ७. अणुबधो जहा ठिती। सवेहो तहेव आदिल्लेसु दोसु गमएसु, तइयगमए भवादेसो तहेव अट्ठ भवग्गहणाइ। कालादेसेणं जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ४-६॥

१८८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, एयस्स वि ओहियगमगसरिसा तिण्णि गमगा भाणियव्वा,[1] नवर—तिसु वि गमएसु ठिती जहण्णेण बारस सवच्छराइ, उक्कोसेण वि बारस सवच्छराइ। एव अणुबधो वि। भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ। कालादेसेण उवजुजिऊण भाणियव्व जाव नवमे गमए जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ बारसहि सवच्छरेहिं अब्भहियाइ, उक्कोसेणं अट्ठासीति वाससहस्साइ अडयालीसाए सवच्छरेहि अब्भहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ७-९॥

१८९. जइ तेइदिएहितो उववज्जति० ? एव चेव नव गमगा भाणियव्वा, नवर—आदिल्लेसु तिसु वि गमएसु सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग,

---

१. भ० २४।१८४-१८६।

वि, मिच्छादिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। दो नाणा, दो अण्णाणा नियमं। नो मणजोगी, वइजोगी कायजोगी वि। उवओगो दुविहो वि। चत्तारि सण्णाओ। चत्तारि कसाया। दो इंदिया पण्णत्ता, तं जहा—जिब्भिंदिए य फासिंदिए य। तिण्णि समुग्घाया। सेसं जहा पुढविक्काइयाणं, नवरं—ठिती जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण बारस संवच्छराइं। एवं अणुबंधो वि। सेसं तं चेव। भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेण संखेज्जाइं भवग्गहणाइं। कालादेसेण जहण्णेण दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेण संखेज्जं कालं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १॥

१८५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो एस चेव वत्तव्वया सव्वा २॥

१८६. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो एस चेव बेंदियस्स लद्धी, नवर—भवादेसेणं जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ। कालादेसेणं जहण्णेणं बावीस वाससहस्साइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइ अडयालीसाए संवच्छरेहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ३॥

१८७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि एस चेव वत्तव्वया तिसु वि गमएसु, नवर—इमाइ सत्त नाणत्ताइ—१. सरीरोगाहणा जहा पुढविकाइयाण २ नो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी ३ दो अण्णाणा नियम ४ नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी ५. ठिती जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्त ६ अज्झवसाणा अपसत्था ७ अणुबंधो जहा ठिती। संवेहो तहेव आदिल्लेसु दोसु गमएसु, तइयगमए भवादेसो तहेव अट्ठ भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइ चउहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ४-६॥

१८८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, एयस्स वि ओहियगमगसरिसा तिण्णि गमगा भाणियव्वा,[1] नवर—तिसु वि गमएसु ठिती जहण्णेण बारस संवच्छराइ, उक्कोसेण वि बारस संवच्छराइ। एव अणुबंधो वि। भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ। कालादेसेण उवजुंजिऊण भाणियव्व जाव नवमे गमए जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ बारसहि संवच्छरेहिं अब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइं अडयालीसाए संवच्छरेहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ७-९॥

१८९. जइ तेइंदिएहिंतो उववज्जति० ? एव चेव नव गमगा भाणियव्वा, नवर—आदिल्लेसु तिसु वि गमएसु सरीरोगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभाग,

---

१. भ० २४।१८४-१८६।